सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला

(८५)

धर्मशास्त्रीय-व्यवस्था-संग्रहः

संशोधकः

श्री[illegible]झाः

वाराणसेय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः





धर्मशास्त्रीयव्यवस्थासंग्रहः

सरस्वतीभवनप्रकाशनमाला—८५

प्रधानसम्पादकः

पं० कुबेरनाथशुक्लः, एम. ए. व्याकरणाचार्यः

प्रथमं संस्करणम्
१९५७

धर्मशास्त्रीयव्यवस्थासंग्रहः

सम्पादकः
श्रीसुभद्रशर्मा
राजकीयसरस्वतीभवनपुस्तकालयाध्यक्षः

प्रकाशकः
उत्तरप्रदेशशासकीयमुद्रणालयाध्यक्षः

प्राप्तिस्थानम्—
उत्तरप्रदेशशासकीयमुद्रणालयाध्यक्षः
इलाहाबाद

मूल्यम् ......

मुद्रक :

खण्डेलवालमुद्रणालयः मानमन्दिरम्, वाराणसी

समर्पणपद्यानि

राजनीतिनिपुणोऽपि प्रत्याख्यातप्रियानृतव्याजः ॥
प्रेमोल्लसितसमाजः समाजनीयः सभासद्भिः ॥ १ ॥

आधुनिकोऽपि निबद्धश्रद्धः प्राचीनपद्धतौ सुकृती ॥
धृतसंस्कृतसाहित्योद्धरणधुरश्चिद्विलासरसमधुरः ॥ २ ॥

श्रीसम्पूर्णानन्दोऽप्यानन्दतु मत्समर्पितं विन्दन् ॥
धर्मोत्तमव्यवस्थासंग्रहमुल्लासितं सद्यः ॥ ३ ॥

भवदादेशमहिम्ना ग्रन्थोऽयं वै प्रकाशितः श्लाघ्यः ॥
स्फुरतु भवत्करतलयोः सहस्रपत्रश्रिया निहितः ॥ ४ ॥

राज्यधुराभिर्भवतः सुबन्धुराभिर्न शान्तिमनुभवतः ॥
वस्त्वन्तरे लघुन्यपि प्रवृत्तिरुच्चैरुदाहार्या ॥ ५ ॥

इति श्रीसुभद्रस्य

वक्तव्य

सन् १६५४ ई० में काशिक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के उपाधिवितरणोत्सव के अवसर पर सरस्वती-भवन के कुछ चुने हुए हस्त-लिखित ग्रन्थों को प्रदर्शनी हुई थी। उसमें इस राज्य के मुख्य-मन्त्री डाक्टर श्री सम्पूर्णानन्दजी तथा भूतपूर्व शिक्षामन्त्री ठाकुर श्री हरगोविन्द सिंह जी ने धर्मशास्त्रीयव्यवस्था-संग्रह की तीन पुस्तकें देखकर इन्हें प्रकाशित कराने की इच्छा व्यक्त की। तदनन्तर शीघ्र ही प्रशासकीय आदेश हुआ कि इस ग्रन्थ के अविलम्ब प्रकाशन की व्यवस्था की जाय। अतः इसे जनता के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है।

यह बात सर्वविदित है कि भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के आरम्भिक दिनों में न्यायालयों की यह व्यवस्था थी कि वहां धर्मशास्त्र के ज्ञाता पण्डित तथा शरियत के जानकार मौलवी इस कार्य के लिये नियुक्त थे कि वे व्यवहार-निर्णयाधिकारियों की सहायता संबद्ध धर्मशास्त्र की दृष्टि से किया करें। सन् १८२४ ई० के आरम्भ से लेकर सन् १८३६ साल तक की कलकत्ते की सदर दीवानी अदालत द्वारा उससे संबद्ध प्रधानतया पण्डित वैद्यनाथ मिश्र से धर्मशास्त्र के विषय में जितनी जिज्ञासायें की गयी थीं तथा उन्होंने जो परामर्श दिये थे वे ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किये जा रहे हैं। इस प्रसंग में यह भी ज्ञातव्य है कि आरम्भिक वर्षों में पण्डित रामतनुशर्मविद्यावागीश भी पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के साथ परामर्श दिया करते थे, तथा मिश्रजी की अस्वस्थता की अवधि में उनके इस कार्य का सम्पादन पण्डित हीरानन्द मिश्र ने किया था।

पण्डितजी के पास अदालत से जो प्रश्न आते थे, प्रमाण सहित उनका जो उत्तर वे देते थे, उनकी प्रतिलिपि पण्डितजी अपने पास रख लेते थे। इन्हीं प्रतिलिपियों के आधार पर यह ग्रन्थ संपादित हुआ है। एक प्रति के आरम्भ में लिखा हुआ है 'श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य पुस्तकमिदम्।'

इस व्यवस्था-संग्रह में अदालतों द्वारा की गयी जिज्ञासाओं की भाषा बङ्गला है तथा पण्डितों ने उनके उत्तर संस्कृत में दिये हैं। अनेक अपील के मुकदमों में ऐसा भी हुआ था कि छोटी अदालतों से पण्डितों की तथा वादियों एवं प्रतिवादियों द्वारा उपस्थापित स्वतन्त्र पण्डितों की व्यवस्थायें भी पुनर्निरीक्षण के हेतु सदर दीवानी अदालत के पण्डित के पास भेजी जाती थीं। इस प्रकार की व्यवस्थाओं में भाषा विषयक नियमों में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। व्यवस्थायें बङ्गाक्षर में लिखी गयी हैं, यहाँ तक कि हिन्दी के वाक्य भी उसी लिपि में हैं। हाँ, पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के हस्ताक्षर देवनागर में हैं।

हिन्दुओं के उत्तराधिकार आदि से संबन्धित विषयों के नियम आज तक बहुत बदल चुके हैं, तथा इन व्यवस्थाओं के निर्णय बहुत अंशों में अमान्य हो गये हैं, पर इनका निजी महत्त्व कई दृष्टियों से स्पष्ट है। सर्वप्रथम तो १९वीं शताब्दी के पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत के समाज की स्थिति का बहुत कुछ परिचय हमें विश्वसनीय रूप से इसकी सहायता से प्राप्त होता है। वङ्गभाषा में उस समय का इतना बड़ा गद्य ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हमें इसकी सहायता से इस भाषा की ध्वनियों तथा पदों का विवरण बहुत-कुछ ज्ञात हो सकता है। इनके अतिरिक्त भारतीय न्याय-व्यवस्था के इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री इस ग्रन्थ में निहित है।

इस प्रकार के इस ग्रन्थ से अधिक से अधिक विद्वान् लाभ उठावें इस ध्येय से इसे बङ्गला लिपि में नहीं छापकर देवनागरी लिपि में मुद्रित कराया गया है। बङ्गला भाग की भाषा में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया गया, पर संस्कृत अंशों में जो बहुत सी अशुद्धियाँ थीं उनका संशोधन कर दिया गया है। वङ्गलिपि में अथवा मूलकोष में व—ब का भेद नहीं है——इस बात को दृष्टि में रखकर इन दोनों व्यञ्जनों के स्थान पर बाङ्गला में 'व' ही लिखा गया है, एवं संस्कृत से भिन्न भाषाओं के 'ब' वाले शब्द भी संस्कृत में भी वकार से ही लिखे गये हैं। संस्कृत भाग में उद्धृत वचनों के मूल ग्रन्थों का पत्रादि निर्देश यथासंभव दिया गया

है। अन्तिम भाग में पड़ने वाले ऐसे वचन जो बार-बार पूर्व भाग में आ चुके हैं उनके लिए ऐसा निर्देश प्रायः नहीं दिया गया है।

खेद के साथ लिखना पड़ता है कि हमें कई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हो सके, अतः उनके वचनों के पाठों का मिलान हम नहीं कर सके हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में हमें महाविद्यालय के प्रधानाचार्य पण्डित श्री कुबेरनाथ शुक्ल ने बार-बार प्रोत्साहन देकर सहायता की है। पुस्तकालय के हस्तलिखित ग्रन्थविभाग के मेरे साथियों में पण्डित श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य ने विभिन्न प्रकार से समय-समय पर सहयोग दिया है, पण्डित श्रीचन्द्रभानु पाण्डेय तथा पण्डित श्रीनिशाकान्त पाठक ने प्रतिलिपि बनाने में सहायता की थी, पण्डित तारकनाथजी ने आरम्भ से लेकर समाप्ति तक किसी न किसी रूप में मेरे इस कार्य में हाथ बँटाया है, पण्डित श्रीरघुनाथ पाण्डेय संस्कृत के प्रूफ-संशोधन में मेरे निरन्तर सहयोगी रहे हैं तथा इस कार्य में समय-समय पर पण्डित श्रीराजाराम भट्टभट्टने भी सहयोग दिया है।

मैं इन सब साथियों का ऋणी हूँ, साथ-साथ यह भी व्यक्त करना आवश्यक समझता हूँ कि इस ग्रन्थ की त्रुटियों का उत्तरदायित्व एकमात्र मुझ पर ही है, मेरे इन सहायकों पर नहीं।

मुझे दुःख है कि प्रेस के कर्मचारियों की असावधानी के कारण तथा मेरे दृष्टि-दोष के कारण बहुत सी अशुद्धियों का संशोधन ग्रन्थ के आरम्भिक भाग में नहीं हो सका है। टाइपों के टूटने तथा प्रूफ की अस्पष्टता के कारण भी कई स्थानों पर त्रुटियां रह गयी हैं। अतः सावधान रहने पर भी शुद्धिपत्र कुछ लम्बा हो गया है। तदर्थ मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में मैं अपने माननीय गुरुदेव डा० श्री सुनीतिकुमारचटर्जी तथा कलकत्ता हाइकोर्ट के न्यायाधीश श्री प्रशान्तविहारीमुखर्जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इसे देखकर इसकी भूमिका की रचना में एवं ग्रन्थ के वङ्गाक्षर में भी प्रकाशित कराने के हेतु मेरी सब प्रकार की सहायता करने की उदारता प्रकट की है।

इस ग्रन्थ के वैशिष्ट्यों का निदर्शन बृहद् भूमिका के बिना नहीं हो सकता है। इस कार्य में कुछ अधिक समय लगेगा, तथा एतदर्थ मेरा कलकत्ते में कुछ सप्ताह बिताना आवश्यक है, जो अभी तक संभव मालूम नहीं पड़ रहा है। अतः भूमिका की प्रतीक्षा में ग्रन्थ के प्रकाशन में विलम्ब न कर इसे विद्वानों के समक्ष इस आशा से रख रहा हूँ कि सहृदय विद्वानों की दृष्टि इस पर पड़ेगी, तथा जिस भूमिका के लिखने की जो सुविधा मुझे नहीं हो सकी है, उसमें उनका भी सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

श्रीसुभद्रझा

१९ चैत्र १८७९ शकाब्द



उद्धृतग्रन्थनामादिसूची

क्रमाङ्कः	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशननिधापनस्थानम्	लिखितमुद्रितविवरणम्	विशेषविवरणम्
१	असं.	अत्रिसंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता सन् १३१६ वं०	मुद्रित०	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
२	आसं.	आपस्तम्बसंहिता	,,	,,	,,
३	उसं.	उशनःसंहिता	,,	,,	,,
४	उत.	उद्वाहतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० १८९५	,,	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशितम् (२ संस्करणम्)
५	कल्पत	कल्पतरुः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, ग० सं० कालेज, काशी,	लिखित०	पुस्तकसंख्या १४०६१
६	कास्मृ.	कात्यायनस्मृतिः	आर्यसंस्कृतिप्रेस, पूना, ई०, सन १९३३	,,	पी० वी० काणे
७	कापु	कालिकापुराणम्		,,	
८	कृत्यक.	कृत्यकल्पतरुः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, गं० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या ११९७४।१३४७६
९	गात.	गायत्रीतन्त्रम्	चन्द्रप्रभाप्रेस, काशी, ई० सन १८९७	मुद्रित०	हरिदासगुप्तेन प्रकाशितम्
१०	गौसं.	गौतमसंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ वङ्गाब्द.	,,	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
११	तित.	तिथितत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८९५	,,	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशितम् (२ संस्करणम्)
१२	दसं.	दक्षसंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ वङ्गाब्द	,,	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करण)
१३	दच.	दत्तकचन्द्रिका	सूर्यप्रेस, कलकत्ता	,,	मधुसूदनस्मृतिरत्नप्रकाशित०
१४	दमी.	दत्तकमीमांसा	,,	,,	,,
१५	दत्तद.	दत्तकदर्पणः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, ग० सं० कालेज, काशी,	लिखित०	पुस्तकसंख्या १२३०५
१६	दत्तकौ.	दत्तककौमुदी	,,	,,	,, १२९९२
१७	दाभा.	दायभागः	सिद्धेश्वरप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८९३	मुद्रित०	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)

क्रमाङ्कः	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशननिधापनस्थानम्	लिखितमुद्रितविवरणम्	विशेषविवरणम्
१८	दात.	दायतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८६५	मुद्रित०	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)
१९	दायक्रसं.	दायक्रमसंग्रहः	भवानीपुरमुवरवनप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८७८	,,	—
२०	दानम.	दानमयूखः	गुजरातीप्रेस, मुम्बई, ई० सन १९२४	,,	—
२१	दिव्यत.	दिव्यतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८६५	,,	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)
२२	देवत.	देवप्रतिष्ठातत्त्वम्	,,	,,	,,
२३	द्वैतनि.	द्वैतनिर्णयः	सांगवेदविद्यालयप्रेस, रामघाट, काशी, संवत् १९९५	,,	सूर्यनारायणशुक्लप्रकाशित०
२४	द्वैतप.	द्वैतपरिशिष्टम्	सरस्वतीभवनपुस्तकालय, ग० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या १३३४१
२५	धको.	धर्मकोशः	आर्यसंस्कृतिप्रेस, पूना, ई० सन १९३७	मुद्रित०	लक्ष्मणशास्त्रीजोशीप्रकाशित०
२६	नास्मृ.	नारदस्मृतिः	एशियाटिकसोसाइटी, कलकत्ता	,,	—
२७	नामस.	नारदीयमनुसंहिता	गवर्नमेण्टप्रेस, त्रिवेन्द्रुम्, ई० सन् १९२९	,,	के० साम्बशिवशास्त्रिसंशोधित०
२८	परासं.	पराशरसंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ वङ्गाब्द.	,,	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
२९	प्रयोत.	प्रयोगतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८६५	,,	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, (२ संस्करणम्)
३०	प्रायवि.	प्रायश्चित्तविवेकः	सिद्धेश्वरप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८९३	,,	,,
३१	बृस्मृ.	बृहस्पतिस्मृतिः	राजकीयप्राच्यविद्याविमर्शालय०, बडोदा, संवत् १९९८	,,	श्रीरङ्गस्वामिशर्मणा सम्पादिता,
३२	मस्मृ.	मनुस्मृतिः	गुजरातीप्रेस, मुम्बई, ई० सन १९१३	,,	,,
३३	मठप्र.	मठप्रतिष्ठातत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० १८६५	,,	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, (२ संस्करणम्)
३४	मलत.	मलमासतत्त्वम्	,,	,,	,,

क्रमाङ्कः	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशननिधापनस्थानम्	लिखितमुद्रितविवरणम्	विशेषविवरणम्
३५	मदपा.	मदनपारिजातः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, ग० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या ११९१५।१२०४२।
३६	मभा.	महाभारतम्	आर्यसंस्कृतिप्रेस, पूना, ई० सन १९३७	मुद्रित०	
३७	मिता.	मिताक्षरा	निर्णयसागरप्रेस, मुम्बई, ई० सन १९०९	"	—
३८	यमसं	यमसंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ वङ्गाब्द	"	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
३९	यास्मृ.	याज्ञवल्क्यस्मृतिः	निर्णयसागरप्रेस, मुम्बई, ई० सन १९०९	"	—
४०	वसिसं.	वसिष्ठसंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ वङ्गाब्द	"	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
४१	बाल.	बालम्भट्टी	मद्रास, ब्रह्मवादिन्प्रेस, ई० सन १९१२।	"	—
४२	विचि.	विवादचिन्तामणिः	कलकत्तासारसुधानिधिप्रेस, संवत् १८६४	"	—
४३	विच.	विवादचन्द्रः	दरभंगानगर्यां विद्यापतियन्त्रालये मुद्रितः	"	—
४४	विर.	विवादरत्नाकरः	एशियाटिकसोसाइटी, ई० सन १८५३ शकाब्द०, १९३१	"	—
४५	विसे.	विवादार्णवसेतुः	वेङ्कटेश्वरप्रेस, मुम्बई, संवत् १९४५	"	—
४६	विभ:	विवादभङ्गार्णवः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय, ग० सं० कालेज काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या १२३८९।
४७	विस्मृ.	विष्णुस्मृतिः	एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, ई० सन १८८१	मुद्रित०	—
४८	विमि.	वीरमित्रोदयः	सुचारुप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८७५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, व्यवहाराध्यायः।
			चौखम्बासंस्कृतसिरीज, बनारस " १९३०		जयकृष्णदासहरिदासगुप्तप्रकाशित० "
४९	वैधसू०.	वैखानसधर्मसूत्रम्		"	

क्रमाङ्कः	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशननिशापनस्थानम्	लिखितमुद्रितविवरणम्	विशेषविवरणम्
५०	व्यत.	व्यवहारतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८६५ संस्कृतपाठशालाप्रेस, कलकत्ता, ई० १८२८	मुद्रित०	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्) कमिटीसाहेबप्रकाशित०
५१	व्यमयू.	व्यवहारमयूखः	गुजरातीप्रेस मुम्बई, ई० सन १९२३	,,	याज्ञवल्क्यस्मृतिटीका०
५२	व्यमातृ.	व्यवहारमातृका	एशियाटिकसोसाइटी, कलकत्ता ई० सन १९१२	,,	—
५३	व्यमा.	व्यवहारमाधवः	कलकत्ता, शकाब्द १८२०	,,	चन्द्रकान्ततर्कालङ्कारप्रकाशित०
५४	व्यासं.	व्याससंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता सन, १३१६ वं०	,,	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
५५	शसं.	शङ्खसंहिता	,,	,,	,,
५६	शुच.	शुद्धिचन्द्रिका	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, ग० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या १३२६३
५७	शुत.	शुद्धितत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता ई० स० १८६५	मुद्रित०	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)
५८	शुवि.	शुद्धिविवेकः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, ग० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या १२५२३
५९	शूक.	शूद्रकमलाकरः	निर्णयसागरप्रेस, बम्बई	मुद्रित०	
६०	स्मृच.	स्मृतिचन्द्रिका	मुम्बई ,, ई० सन १९१८	,,	जगन्नाथरघुनाथघारपुरेप्रकाशित०
६१	हासं.	हारीतसंहिता	वङ्गवासी प्रेस; कलकत्ता, सन १३१६ वङ्गाब्द	,,	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)

———

अनुपलब्धपुस्तकनामानि—

१—व्यवहारकौस्तुभः

२—दायरहस्यम्

३—व्यवहारचिन्तामणिः

४—दत्तकदीधितिः

५—गौतमप्रश्नः

६—भक्तामरस्तुतिः

७—व्यवस्थार्णवः

८—धर्मरत्नम्



व्यवस्था-पत्र-संग्रहः

श्रीर्ज्जयतितराम्

१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इंरेजी १८२४ साल तारिख १० माह जुलाइ मताबक वङ्गला १२३१ साल तारिख २८ आषाढ रोज शनिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर बैठके ·····।

वावु हरप्रकाश सिंह ·····आपीलाण्ट।

मृत वाजा[1] देलगञ्जन देओ ·····रष्पाडण्ट।

सन हालेर २५ मार्च्च मासेर हओया ए आदालतेर परिसप्टेर जवावे सन हालेर १५ मेइ मासेर लिखित एलाका वारानसेर प्रवनसन कोटेर हाकिमदिगेरा पाठानो रिटरन ओ ताहार सम्बिलितेर रोवकारि ओ कागजात सहित लम्वरे पँहुछिया दृष्टे आइल। ताहार पर लाला राधाकृष्ण ओ मौलवि गोलाम एजदानि उकिलेरा मृत राजा देलगञ्जन देओयेर स्त्री रागी[2] गोलाव कोञरेर तरफ हइते आपनादिगेर नामिक एक केता ओकागचनामा[3] द्वारा ओ मौलवी नेयामत आलि वावु शुभनाथ सिंहेर तरफ हइते आपन नामिक एक केता ओकागचनामा[3] दाखिल करिया हाजिर हइल। हाल शनेर ३ जुलाइ मासेर दाखिल हओया वावु हरकनाथ सिंहेर सओयाल इत्यादि। ऐ सओयालेर सम्पर्कीय कागजात सम्वलित ताहार उकिल मुनशी हसन आलिर हाजिरिते दृष्टे (आ)इल। जाना गेल जे सरकारेर आइने राखा ओ राजार कथा नाहि, ओ इंरेजी १७९३ सालेर एगार

१. राजा।
२. राणी गोलाव कोञर।
३. ओकालतनामा।

आइन अनुसारे, जे इंरेजी १७९५ सालेर चौयल्लिष आइन मते वारानसेर एलाकाते जारि हय, ये व्यक्ति धन ओ वृत्ति राखिया मरे ताहार धन ओ वृत्ति, यदि हिन्दु हय शास्त्र माफिक ओ यदि मशलमान हय शरा माफिक, ताहार उत्तराधिकारिदिगेर मध्ये विभाग हइवेक। ओ ए मकर्द्दमाते मजुत कागजात अनुसारे आर एइ दृष्टे ये राजा देलगञ्जन देओ अकस्मात दालानेर छात पडिया मरियाछे प्रकाश वटे ये ऐ व्यक्ति मरण पर्य्यन्त आपन धन ओ वृत्तिर उपर दखिल ओ कावेज छिल, ओ जखन मरणेर किछु अनुमान छिल ना आपन समद्दे कोन व्यक्तिके आपन धन ओ वृत्तिर उपर कखनो दखिल ओ कावेज कराइयाछिल ना। अतएव आमार निकट ताहार स्त्री राणी गोलाव कोङरेर दखल एजाहार नितान्त अमूलक ओ अनर्थक वटे; ओ फले ए मकरदमार काजिया उपस्थित हओन पर्य्यन्त कहारो दखल छिलो ना, ओ तिन पद्धेरइ दखल ना थाकन प्रकरणे इंरेजी १८१३ सालेर षष्ठ आइनेर निःसम्पर्क प्रकाश वटे। ए कारण शास्त्रेर आज्ञा जानान निमित्ते पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल करण आवश्यक हइल। ओ जाना गेल ये राजा भओयावल[1] देओ राजा ईश्वरि वक्स देओ ओ राजा देलगञ्जन देओ ओ वावु आहुलाल[2] सिंह ओ वावु शुभनाथ सिंहके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ ऐ चारि पुत्रेर मध्ये प्रथम राजा ईश्वरि वक्स देओ अप्राप्तव्यवहार एक पुत्र, ये ताहार नाम जाना गेलो ना, ओ वड स्त्री राणी सिउराज कोङर ओ छोट स्त्री राणी अभिमान कोङरके उत्तराधिकारि राखिया मरिल। ताहार पर ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्र मरिल। तदपरे वावु आहुलाल सिंह वावु हरकनाथ ओ वावु जयनाथ सिंहके उत्तराधिकारि राखिया मरिल। ताहार पर राजा देलगञ्जन देओ राणी गोलाव कोङरके उत्तराधिकारि राखिया निःसन्तान

१. भयावलदेव।
२. आल्हाद सिंह

मरिल, ओ वावु शुभनाथ सिंह अद्यापि वर्तमान आछे। अतएव ए अदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने जिज्ञासा जाय ये पश्चिम देशेर शास्त्रमते राजा देलगञ्जन देओवेर त्यक्त धन ओ वृत्ति कोन व्यक्तिके, अर्थात् ताहार स्त्री राणी गोलाव कोङरके किम्वा ताहार भ्राता शुभनाथ सिंहके अथवा ताहार भ्रातुष्पुत्र हरकनाथ सिंह ओ जयनाथ सिंहके अर्शे, ओ एइ सओयालेर जवाव लिखने मृत व्यक्ति ये राजा छिल ताहार पर दृष्टि करिवेन ना। ऐ व्यक्तिरा अन्य २ लोक हओने जे प्रकार जवाव लिखितेन सेइ प्रकार जवाव लिखिवेन; ओ पण्डितदिगेर जवाव दाखिल हओन परे पुनर्व्वार कागजात दृष्टे आनिया मनाशीव हुकुम देओया जाइवेक, ओ एइ रोवकारि सओयालेर स्थाने जाना जाय, इहार नकल पण्डितदिगके समर्पण करा जाय।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र पुत्रपौत्रप्रपौत्रपर्य्यन्तरहितो देलगंजननामा कश्चन व्यक्तिविशेषो गोलावकोमराख्यां पत्नीमेकां शुभनाथसिंहनामानमेकं सोदरभ्रातरं हरकनाथ-सिंह-जयनाथसिंहनामानौ द्वौ भ्रातुष्पुत्रौ च संरक्ष्य मृतः। तत्र तदीयविभक्त-स्थावरास्थावरधने तत्पत्न्या गोलावकोमराख्याया एवाधिकारः। मओया-[१] बलदेवसंज्ञकः चतुरः पुत्रान्[२] ईश्वरीवक्शदेव-देलावगंजनदेव-वावु-आल्हाद-सिंह-वावु-शुभनाथसिंहानुत्तराधिकारिणः संरक्ष्य मृतस्तत्र तेषान्तद्धन-मविभक्तं चेत्तदा देलगंजनयोग्यांशे सोदरभ्रातुः शुभनाथसिंहस्याधि-कारः, तत्पत्नी यावज्जीवमन्नाच्छादनभागिनीति पश्चिमदेशप्रचलित-मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

---

१. मओवलदेवसंज्ञकः

२. पुत्रानिथ

अत्र प्रमाणम्

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षराग्रन्थधृत (पृ-२१७) याज्ञवल्क्य-वचनम् (२,१३५) ॥ १ ॥

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि इत्यादि तद्धृत-बृहद्विष्णु-वचनम् ॥ २ ॥

पत्नी गृह्णीयात् इत्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम् । इति मिताक्षरा (पृ० २१७)-लिखनम् ॥ ३ ॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति मनुवचनञ्चेति (९, १८७) ।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

२—लम्बर २०४२

२ सदर देमनी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर हुजुर हइते ।

दुल्ली पाडे ँ ओ गयरह आपीलाण्टान्

काशी पाँडे ओ गयरह रष्पाडण्टानेर

२०४२ लम्वरेर मकद्दमाते इङ्गरेजी सन १८२४ सालेर २९ जुलाइ मासेर रोवकारिर लिखित वेहारेर शास्त्रमते आइन्दा मङ्गलवार दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त जवाव दाखिल करणेर म्यादे ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथ मिश्रेर नामे सओयाल एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वेहारदेशेर चलितशास्त्रमते कोन व्यक्तिके, जे से आपन पितार एक पुत्र वटे, दत्तक प्रकारे पुत्रताते लओन सिद्ध वटे कि ना।

द्वितीय सओयाल—

स्थावर किंवा अस्थावर साधारण ओ अविभक्त धनेर हेवा दाता व्यक्तिर अंशेर सम्बन्धे सिद्ध वटे किना।

तृतीय सओयाल—

महाब्राह्मणीय वृत्ति हस्तान्तर योग्य वटे कि ना। आर यद्यपि कयेक जन ब्रह्मणेर मध्ये साधारणे थाके ताहार मध्ये कोनो व्यक्तिके विभाग ना हओने विक्रय किम्वा हेवा प्रकारे आपन हिस्या हस्तान्तर करणेर क्षमता आछे कि ना।

चतुर्थ सओयाल—

महाब्राह्मणीय वृत्ति जे ताहार उपर अंशीरा दिन नियुक्त पाला प्रकारे दाखिल ओ भोगी थाके शास्त्रानुसारे एक पालार अंशी दिगेर अंश समस्त अंशीगणेर मध्ये साधारण ओ अविभक्त, किम्वा ऐ पालार अंशीदिगेरइ पृथक् ओ विभक्त जाना जाय इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्। यः कश्चित्[2] स्वपितुर्जनकस्यैक एव पुत्रः स च वेहारदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेणान्यस्य दत्तकपुत्रतां न प्राप्नोतीति।

---

१. श्रीजर्यतितराम्—व्यप०।

२. कश्चित—व्यप०।

अत्र प्रमाणम् —

नैकपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं कथञ्चन ।[१]

बहुपुत्रेण कर्त्तव्यं पुत्रदानं प्रयत्नतः ॥ इति दत्तकमीमांसा (पृष्ठ ६६) दत्तकचन्द्रिका (पृष्ठ ११) धृत-शौनकवचनम् ।

न त्वेवैकं पुत्रं दद्यात्[२] प्रतिगृह्णीयाद्वा स हि सन्तानाय पूर्व्वेषाम्. इति मिताक्षरा-(२/२१३)-दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिका (पृष्ठ १०)-धृतवसिष्ठवचनम् ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम् । सामुदायिकानेकस्वत्वास्पदीभूताविभक्त-साधारणस्थावरास्थावरधने स्वामिनां मध्ये कश्चित् सर्व्वेषां स्वामिनामनुमतिं विना स्वांशं कल्पयित्वा तस्य दानं कर्त्तुं न शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम् —

अविभक्ता विभक्ता वा सपिण्डाः स्थावरे समाः ।

एको ह्यनीशः सर्वत्र दानाधमनविक्रये ॥ इति मिताक्षरा[३] (पृष्ठ २१६) धृत-व्यासवचनम् ।

निक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्व्वस्वं चान्वये सति ।

आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्तमानेन देहिना ।

अदेयान्याहुराचार्या यच्च साधारणं धनम् ॥ इति दत्तकमीमांसा (पृष्ठ ११२) धृत-नारदवचनम् ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम—

महाब्राह्मणानां वृत्तिर्म्महाब्राह्म(ण)भिन्नगमनयोग्या न भवति, महाब्राह्मणानामेव प्रेतश्राद्धभोजन-प्रेतोद्देश्यकशय्या-वाहनादि-

---

१. कदाचन इति पाठो दत्तकमीमांसायाम :

२. न त्वेकं पुत्रं दद्यात्···धर्मकोषधृत व० स्मृ० १५/१-८, मिता०-२/१३० द० मी०—१११

३. "सपिण्डाः" इत्यस्य स्थाने "दायदा" इति वा पाठः ; स्मृ० च० १९१; कस्योक्तिरियमिति मिताक्षराया ज्ञातुं न शक्यते ।

४. द० मी० पृ० ११२, ध०को०—७९८

दान-स्वीकर्तृत्वेन तेषां वृत्तिर्महाब्राह्मणैकयोग्यत्वात्। तत्र यदि बहूनां महाब्राह्म(णा)नां साधारण्यविभक्ता सा वृत्तिर्भवति तदा तेषां मध्ये कस्यचिदप्येकस्य विभागं विनाऽन्येषामंशिनामनुमतिं विना तस्यांशं कल्पयित्वा विक्रयदानक्षमता नास्तीति।

अत्र प्रमाणम् :—

वस्त्रालङ्कारशय्यादि पितुर्यद्वाहनादिकम्।

गन्धमाल्यैः समभ्यर्च्य श्राद्धभोक्त्रे समर्पयेत्[1]॥ इति मिताक्षरा-(पृ० २/११६) लिखित-बृहस्पति-वचनम् (पृष्ठ ३४६)।

निक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्वस्वं चान्वये सति—इत्यादिदत्तकमीमांसा-धृतनारदवचनञ्च।

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र बहूनां महाब्राह्मणानां काचिद् वृत्तिस्तस्यां वृत्तौ एतद्दिनोत्पन्नानि द्रव्याण्येतेषाम्, एतद्दिनोत्पन्नान्यन्येषामितिरीत्या ते नियुक्ता भोगिनश्च। तत्र एकदिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनो दिनान्तरोत्पन्नद्रव्यभोगिभ्यो विभक्ता एव। तद्दिनोत्पन्नं द्रव्यं तद्दिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनामसाधारणं विभक्तं भवति। किन्तु एकदिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनां तद्दिनोत्पन्नं द्रव्यं साधारणमविभक्तञ्चेति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम् :—

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानान्तदेकदेशेषु विषयतया व्यवस्थापनम्॥ इति मिताक्षरा (पृ० २१३) लिखनम्।

श्रीर्जयतितराम् **श्रीवैद्यनाथमिश्रेण**

---

[1] ध०को०—१२२३, 'समर्पयेत्'इत्यस्य स्थाने 'तदर्पयेत्' इति धर्मकोषस्थः पाठः।

३—द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके सञ्ओयाल एइ ये—

सञ्ओयाल

ए आदालतेर पण्डितेरा कल्य द्विप्रहरेर मध्ये ए विषयेर जवाब दाखिल करेन—ये जिला सारन साकिनेर हिन्दुजाति एक व्यक्ति दुइ सहोदर भ्रातार दुइ पुत्र ओ अन्य दुइ सहोदर[1] भ्रातार कएक जन पौत्र उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, ओ ऐ देशेर चलित शास्त्रमते मृतव्यक्तिर त्यक्त धन केवल ताहार भ्रातृपुत्रदिगेके अर्शे, किंवा ताहार भ्रातृपुत्रदिग्गे एवं ताहार अन्य सहोदर दुइ भ्रातार पौत्र दिग्गेइ अर्शे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। यत्र सारणदेशीयहिन्दुजातीयः कश्चन व्यक्तिविशेषः चतुर्णां सोदरभ्रातृणां मध्ये द्वयोर्भ्रात्रोर्द्वौ पुत्रौ द्वयोर्भ्रात्रोः कतिपयपौत्रां[2]श्चोत्तराधिकारिणः संरक्ष्य मृतस्तत्र तदीयधने पुत्रपौत्रप्रपौत्ररूपापत्यपत्न्यादिभ्रातृपर्य्यन्तानपत्यधनाधि-कार्यभावे तत्सोदरभ्रातुष्पुत्रयोरधिकारो न तु तयोः सतोः[3] भ्रातुःपौत्राणाम्-इति तद्देशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः इत्यादिमिताक्षरादि-ग्रन्थ (पृ० २।१३५) धृत-याज्ञवल्क्य-वचनम्। १।

---

१. सहोदक-व्यप०।

२. पौत्राश्च-व्यप०।

३. सत्वे-व्यप०।

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि ॥ इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थ (पृ० २|१३५) धृत-विष्णु-वचनम्[1] । २ ।

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।
यस्त्वासन्नतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत् ॥
इत्यादि बृहस्पति[2]वचनञ्चेति । ३ ।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४—रोवकारि मिसिल आदालत देवोयानि सदर तारिख २५ माह आगस्त सन् १८२४ ई० मतावक १० माह भाद्र सन् १२३१ बाङ्गला ए अदालतेर काएम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत जान हरवट हारिएटीन साहेवेर वैठके ।

मुसम्मात दिपु आपीलाण्ट
गौरिशङ्कर रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिल वावु जगन्नाथ सिंह ओ रेष्पाडण्टेर एइ चारिकार उकिलगण मुनशी आमजद आलि ओ मुनशी आमिनर्द्दिन आहमद सालि हाजीर आसिल । एइ सनेर जुन मासेर ३० तारिखेर हुकुम मते रेष्पाडण्टेर उकिलगणेर दाखिल करा व्यवस्था तर्ज्जमा हइया ऐ तारिखे दाखिल हइया रेष्पा-डण्टेर दरखाश्त सम्वि(म्वलि)त पडा गेल । रेष्पाडण्टेर उकिलगण जिज्ञासा कालीन जाहिर करिलेक जे गणेशदत्त शर्म्मा ओ त्रिपाठी वेदमणि शर्मा ओ चातुर्व्वेदि विश्वम्भरदत्त शर्मा ओ रामनाथ शर्म्मा ओ विक्रम शर्म्मा ऐ जुन मासेर ३० तारिखेर

---

१. "बृहद्विष्णु-व्यप०"
२. ध० कोष—१५१८ 'बृहस्पति' इत्यस्यस्थाने 'मनु'—इति पाठः—व्यप० ।

दाखिल हओया व्यवस्थार लेखक पण्डितगण सहर आजिमाबाद साकिमेर प्रधान पण्डित बटेन, किन्तु ताहार मध्ये केह आदालतेर पण्डिति कर्म्म किम्वा सरकारेर अन्य कर्म्म राखे ना इति। अतएव यद्यपि एमत वाजे पण्डितगणेर व्यवस्थार उपर ये सरकारेर चागजगणेर मध्ये नाइ आदालतेर प्रत्यह(थ) हइते पारे ना। किन्तु एइ हृष्टे ये एइ मकर्द्दमार तजविज ओ निष्पत्तिकालीन एइ आदालतेर पूर्व्वेर पण्डित शोभाशास्त्रिर माजुलि प्रयुक्त एक पण्डित अर्थात् रामतनुविद्यावागीशेर व्यवस्था लओया गियाछे, एइ क्षण शोभाशास्त्रिर एओजे वैद्यनाथ मिश्र पण्डित नियुक्त हइयाछेन हुकुम हइल, ये एइ मकर्द्दमार कागज नथि वैद्यनाथ मिश्रेर हाओयाले करा जाय, तवे एइ सनेर फेब्रुओवरि मासेर ६ तारिखेर रोवकारिर लिखित मओयाल सकलेर जवाव सुवे वेहारेर महाल सकल सहर पाटना प्रभृतिर चलित शास्त्रमते महरम ओ दशहरार तातिलेर पर १५ दिवसेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेन। तवे ताहार परे ए आदालतेर काएम मकाम हाकिमेर विवेचनाय एइ केताय जे उचित जाना जाइवेक हुकुम देओया जाइवेक इति।

रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख ६ फेपरओरि सन १८२४ इङ्गरेजी मतावक वङ्गला १२३० साल तारिख १८ माघ रोज सोमवार आदालत मजकुरार काएम मकाम हाकिम श्रीयुत जान हरवट हारिएटीन साहेवेर बैठके।

मुसम्मात दिपु पापड आपीलाएट
गौरीशङ्कर रेष्पाडएट

आपिलाएटेर उकिल वावु जगन्नाथ सिंह ओ खोद रेष्पाडएट ओ ताहार उकिल मुनशी दादारवक्स ओ लाला आउधलाल हाजिर हइल। एइ मासेर ३ तारिखेर हुकुममते सेरस्तादार एक केता कैफियत ताहार लिखित विषयेर मजमुने ओ अनुप सिंहेर

सन्तानेर कुरशीनामा एक केता दाखिल करिवेन[1]। द्दष्टे आइल। तदपरे उभयेर उकिलेरा ऐ कुरशीनामार सत्यतार उपर स्वीकार करिवेक इति। ए मकर्द्दमार समस्त कागचेर अनुमोदने जाना गेल ये रष्पाडएट मुद्दइ एइ एजहारे सहर अजिमावादेर मध्ये जियातास्वुल महल्वा साकिमेर[2] गुलु चौधुरि पितामहेर ओ पितार स्वोपार्जित मालामाल मिलकियत ओ मकररि ग्राम सकल ओ शोना ओ रूपार अलङ्कार ओ ओ काँचा पाका वाटी सकल ओ ओगाहि पटी[3] ओ शतरञ्जी ओ गालिचा विछाना ओ पितलिया हाडी आदि वासन ओ पोषाकी कापड ओ दोशाला आदि वस्त्र सकल ये मिलकियत मकररि ग्राम सकल ओ ओगाहि पाटार उपर स्वत्व ओ वाटी सकल ओ अलङ्कार ओ शतरञ्जी ओ गालिचा आदिर किम्मत एकुने आन्दाजि मवलग ९००१ टाका निचेर लिखित माफिक हइवेक राखिया फसली १२१३ सालेर आश्विन मासे मुईइके ओ आपन भ्रातुष्पुत्र जगुके उत्तराधिकारि राखिया मरिलेक, ओ पूर्व्वाधिकारि मरणेर पर आपन पूर्व्वाधिकारिर त्यक्त धनेर उपर दखिल ओ भोगी हइल। ताहार[5] पर आमार भ्राता जगु फसली १२१६ सालेर १० माघ मासे केवल आमाके उत्तराधि(कारी) राखिआ मरिल। एइ क्षणे ऐ जगु(र) स्त्री मसम्मात दिपु त्यक्त धनेर उपर दखिल हइया दसु नाम जगुर भागिनेयके आपन मालिक मक्तार जानिया समस्त धन, वस्त्र ओ ग्राम आदिर उपस्वत्व भोग कराइते छे, ओ आमाके, जो उत्तराधिकारि वटी, वेदखल करे इति। जगु वावुर स्त्रि दीपु ओ ऐ जगु वावुर भागिनेय दसुलालेर उपर

१, करिलेन—इति साधीयान् पाठः

२, साकिनेर इति साधीयान् पाठः।

३, ओगाहि कुठी।

४. 'ओगाहिपाटी' इत्यपि पठितुं शक्यते।

५. ताहार ताहार—इति व्यप०।

दावि करिलेक, ओ मुद्दइर उकिल प्रवनसन कोटेर रद्द जवावे वेओरा वयान करिलेक जे आमार मओक्कल गुलु वावुर त्यक्त धने दावि राखे, ओ गुलु वावुर मृत्युर पर गुलु वावुर सहोदर भ्रातार पुत्र जगु दखिल रहिल, जगुर मृत्युर पर आमार मओक्कल व्यतित, जे गुलु वावुर खुडतुता भ्रातुष्पुत्र हय, गुलु वावुर अन्य उत्तराधिकारि नाइ इति। ओ मुद्दाआलेहेरा प्रवनसन कोर्ट आदालतेर जवावे ओ वद्द[1] जवावे[2] ओ एइ क्षण दसुनाखेर[3] मृत्युर पर मसम्मात दिपु आपीलाण्ट ए आदालतेर दाखिल करा आरजी मजुवाते अनुपसिंहेर त्यक्त धन ताहार पुत्रदिग्गेर मध्ये, अर्थात् आपीलाण्टेर पति जगु वावुर पितामह भोलानाथ ओ रष्पाडण्टेर पितामह शम्भुनाथेर सहित, विभाग हओन, ओ ऐ भोलानाथेर मौरसी हिस्यार दुइ केता वाटी व्यतित विरोधि समुदय धन गुलु वावुर निकट, ताहार पिता भोलानाथेर त्यक्त धन हइते, जे ऐ भोलानाथ हरनाथ सेठीर कन्या के विवाह करिया छिल, उपार्ज्जन हओन ओ गुलु वावुर भ्रातुष्पुत्र जगन्नाथ वावुर उत्तराधिकारित्व-सत्वे गुलु वावुर एकरार जे गुलु वावुर मृत्युर पर ऐ एकरार मते ओ भ्रातुष्पुत्र सम्पर्केगुलुवावुर मृत्युर आइयाम फसली ११११२ सालेर माह आश्विन हइते आपन मृत्यु फसली १२१६ सालेर माघमास पर्य्यन्त मुद्दइर ओ अन्य काहारो विना दाओया ओ आपत्तिते गुलु वावुर त्यक्त धनेर पर दखिल रहियाछे। एजाहार मुद्दइर उत्तराधिकारित्व सत्वेर उपर अस्वीकार हइल, ओ शास्त्रमते आपन उत्तराधिकारित्व-सत्वेर जाहेर करिलेक, ओ प्रवनसन कोटेर जओयावे मुद्दाआलेहेरा जाहेर करियाछिल जे हरनाथ सेठीर स्त्री भोलानाथेर प्रथम पुत्र वस्तीरामेर माहा(ता)मही ये, एइ भोलानाथ हरनाथ

---

१. रद्द।

२. जवा ये ओ इति व्यप०।

३. दसुनाथेर इति साधीयान् पाठः।

सेठीर कन्याके विवाह करियाछिल, ऐ वस्तीरामके आपन पुत्र करिया लइया समस्त धन, वस्त्र ओ ओगाहि कुठीर[1] कारवारेर कर्त्ता करियाछिल। यथा वस्तीराम आपन जीवद्दशापर्य्यन्त ओगाहि ओ गयरहेर कारवार करियाछे, ऐ वस्तीरामेर मृत्यु पर अर्द्दैक[2] ओगाहि कारवारेर आञ्जाम गुलु वावु करियाछे, ओ वस्तीरामेर अर्द्धेक हिस्यार आञ्जाम ताहार पुत्र जगुलाल ओ दौहित्र दशुलाल दियाछे। यथा ओगाहिर कारवारे अनेक टाका महाजनेर देना हइयाछिल दसुलाल आपन मातार अलङ्कार विक्रय करिआ महाजनान् देनाते दियाछे। एइ त्तणह महाजनान् देना वाकी आछे इति। किन्तु इङ्गरेजी १८१३ सालेर १७ आपरेल मासेर हओया प्रवनसन कोटेर रोवकारिते मुद्दाआलेहेदिगेर उकिल एइ विषय जिज्ञासाकालीन ये आपन जवाव दाविते लिखियाछे ये वस्तीरामके ऐ वस्तीरामेर माहा(ता) मही हरनाथ सेटीर[3] स्त्री आपन पुत्र करिया लइयाछे। जखन ऐ वस्तीराम अन्येर सन्तानेर मध्ये दाखिल हइल गुलुर मृत्युर पर वस्तीरामेर पुत्र जगु गुलुर उत्तराधिकारित्वे कि प्रकार आदालते हाजिर हइया मकद्दमार सओयाल जवाव करियाछे। जवाव दिलेक ये वस्तीराम आपन महा(ता)महीर दत्तक हइआ छिल ना, जवाव दाविते सहक्रमे लेखा गियाछे, ओ वस्तीराम आपन जीवद्दशाय आपन पुत्र जगुके गुलुर स्थाने समर्पन करिया छिल, ओ एइ हेतुते जगु गुलुर उत्तराधिकारित्वे आदालते हाजिर हइया नालिष करियाछिल इति। अर्थात् गुलु वावु मुद्दइ सिवनजिवुल्वा ओ दोरदान खातुन मुद्दाआलेहेदिगेर मकद्दमाते ये मौजे मभरिया ओ अनेर ए विवरावत ऐ गुलुर जीवद्दशाते सहर पाटनार आदालते तजविजेर निचे छिल। ऐ गुलुर उत्तराधिकारि

---

१. पाटीर।
२. अर्द्धेक।
३. सेठी।

तलवे इस्ताहार जारि हओन कालीन जगु वावु उत्तराधिकारित्वे प्रकारे मुद्दइरा काएम मकाम हइया हाजिर हइया इङ्गरेजी १८०७ सालेर ११ युन मासेर हओया ऐ आदालतेर डिकरि आपन सत्वे हासील करिलेक, ओ इङ्गरेजी १८२० सालेर २२ नवम्वर मासेर हओया ए आदालतेर सावेक चतुर्थ हाकीमेर हुकुम करा तहकिकाते गुलु वावुर पितामह अनुपसिंहेर त्यक्त ताहार मृत्युर पर ताहार पुत्र भोलानाथेर दखली साहताज मगल महल्वार छोटो दुइ केता वाटी व्यतित विरोधिय अन्य किछु माल अनुप सिंहेर त्यक्त साव्यस्थ हय नाइ, ओ ऐ छोटो दुइ केता वाटीर परिवर्त्ते ये भोलानाथेर हिस्या हय ऐ महल्वार अनुप सिंहेर त्यक्त ओ ताहार पुत्र ऐ मुद्दइर पितामह शम्भुनाथेर दखली। वड एक केता पाका वाटी हिजरि १२२२ साल मतावक फसली १२२५ सालेर २२ सहरस ६ वान तारिख स्वयं मुद्दइर निकट हइते लाला मूलचन्द्रेर निकट विक्रय हइल। यथा स्वयं लाला मूलचन्द्रेर जंवानवन्दिते तहकिकह हइल, ओ यद्यपि अनुपसिंहेर त्यक्त मालामाल ताहार पुत्र भोलानाथ ओ शम्भुनाथेर मध्ये विभाग हओन दीर्घकालगत हओन हेतुते आपीलाण्टेर मानित साक्षीदिगेर साक्षाते उचित मत साव्यस्थ हइल ना। तत्रापि पृथक २ वाटीते ऐ दुइ भ्रातार उत्तराधिकारिदिगेर प्रथम दखल हेतुते ओ रष्पाडण्टेर मानित साक्षीर द्वाराय दीर्घकाल पर्य्यन्त एकान्न ओ साधारणेर कारवार साव्यस्थ ना हओने आपिलाण्टेर पति जगु वावुर[1] मुरष भोलानाथ ओ मुरष शम्भुनाथेर मध्ये पूर्व्वे विभाग हओनेर द्रुत वोध हय। अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल उभयेर उकिलगणेर स्वीकार करा कुरशीनामा सम्वलित ए आदालतेर पण्डितदिगके

१. वावुव मुरष।

समर्पन[1] करा जाय ये सुवे बेहारेर चलित शास्त्रमते एक सप्ताहेर मध्ये एइ सवोयालेर जवाव व्यवस्था दाखिल करेन ।

प्रथम सवोयालः—

उपरे उल्लेख करा विषय सकलेर ओ ऐ कुरशीनामार दृष्टे जगु वावुर मृत्युर पर गुलु वावु ओ जगु वावुर त्यक्त धनेर उपर कोन व्यक्ति उत्तराधिकारित्वेर सत्व राखे, ओ यद्यपि जगु वावुर स्त्री मसम्मात दिपु जीवद्दशा पर्य्यन्त ऐ धनेर उपर सत्व राखे, ताहार मृत्युर पर कोन व्यक्ति के वर्तिवे ।

द्वितीय सवोयालः—

यद्यपि जगु वावुर पिता[1] वस्ती रामके ताहार मातामही हरनाथ सेठीर स्त्री आपन कर्त्ता पुत्र करिया थाके, ए हेतुते जगु वावुर खुडा गुलुवावुर त्यक्त धनेर उपर जगुवावुर उत्तराधिकारित्व स्वत्व नष्ट हय कि ना इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् ।

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतजानहरववटहारिएटीन-साहेव-धर्म्माधिकरण-लिखित-प्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तदाज्ञापितवंशावलीपत्रं चावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम् ।

अनूपसिंहसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पूर्वमासीत्तस्य पुत्रौ भोलानाथशम्भूनाथौ । तयोर्म्मध्ये भोलानाथोऽनूपसिंहस्य हर्म्म्यत्रयमध्ये लघुहर्म्म्यद्वयमादाय विभागपत्रादिकमकृत्वापि यद्यासीत्, शम्भूनाथोऽपि तथैव बृहत्तदायैकहर्म्यमादायासीत्तथापि तद्दिनमारभ्य भोलानाथशम्भूनाथयोः पृथक् पृथक् स्थितिः[2] वाणिज्यकरणकृष्यादिना । एवं तयोः पुत्रपौत्राणामपि

१. पितार स्त्रीराम-व्यप० ।

२. स्थिति-व्यप० ।

पृथगेव स्थितिः, वाणिज्यकरणकृष्यादिना[1]। एवं शम्भूनाथगृहीतानूपसिंहीयबृहदेकहर्म्यस्य केवलं[2] तत्पौत्रगौरीशंकरकर्तृकविक्रयेणापि चानूपसिंहधनस्य विभाग एव निश्चितः। एवं निश्चिते विभागे भोलानाथपुत्रः कश्चित् गुल्लुवाबुसंज्ञकः सोदरभ्रातृपुत्रादीनुत्तराधिकारिणः संरुध्य मृतः। तदीयसमस्त-स्थावरास्थावरधनं तत्सोदरभ्रातृपुत्रेण जग्गुवाबुसंज्ञकेनोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तमिति। तदीयधनमपि जग्गुवाबुसंज्ञकस्य स्वत्वास्पदीभूतं जातम्। अतो जग्गुवाबुसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वास्पदीभूतं यावद्धनं तदुत्तराधिकारिणा(म्) भवति। अतस्तद्धने जग्गुवाबुसंज्ञकस्य पत्नी दीपुनाम्नी भवत्यधिकारिणी। तत्पुत्राद्यन्वयाभावात् तन्मरणोत्तरं तदानीं वर्तमानानां तस्या भर्तृसपिण्डादीनां मध्ये य आसन्नतरः सपिण्डादिस्तस्य (तद्धनं) भविष्यतीति वेहारदेशप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

विभागस्य निह्नवेऽपलापे ज्ञातिभिः पितृबन्धुभिः मातृबन्धुभिः मातुलादिभिः साक्षिभिः पूर्वोक्तलक्षणैः लेख्येन च विभागपत्रेण विभागभावना विभागनिश्चयो[3] *ज्ञातव्यः, तथा यौतकैः पृथक्कृतैर्गृहक्षेत्रैश्च*—इति मिताक्षरा (पृष्ठ २३१।) लिखनम् ॥१॥

दानग्रहणपशवन्नगृहक्षेत्रपरिग्रहाः।
विभक्ता नापृथग् ज्ञेयाः पाकधर्म्मागमव्ययाः ॥२॥
येषामेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वरिक्थतः।
विभक्तानवगच्छेयुर्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥३॥ इति विवादचिन्तामणि (३१।१०४)-वीरमित्रोदय-व्यवहारमयूखाद्यनेक-ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नामसं० १४।३६)।

---

१. कृष्यादिना च व्यप०।

२. केवल-व्यप०।

३. 'निश्चयो' इत्यस्य स्थाने 'निर्णयो' मिताक्षरायाम्।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ॥
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः —इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥ ४ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्

यद्यपि जगुवाबुसंज्ञकस्य पिता वस्तीरामः स्वमातामह्या हरनाथसेटी[1] संज्ञकस्य स्त्रिया कृत्रिमपुत्रः कृतः, कृत्रिमपुत्रस्यैव मिथिलादेशे कर्तापुत्र इति प्रसिद्धिः, तथापि कृत्रिमपुत्रस्य जनकादिसपिण्डानां पुत्रत्वकरस्य च धनाधिकारित्वम्, तदुभयोः श्राद्धाधिकारित्वञ्च मैथिलग्रन्थकारसंमतं मिथिलादेशप्रचलितं च । अतो जगुवाबुसंज्ञकस्य पितृव्य(स्य) गुल्लुवाबु-संज्ञकस्य मरणोत्तरं तदीयधने जग्गुवाबुसंज्ञकस्योत्तराधिकारित्वेन स्वत्व-नाशो न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्

स च पुत्रत्वकरस्यापि पिण्डप्रदः निजपित्रादीनां(च) पिण्डप्रदत्वं तस्य तिष्ठत्येव[2] इति शुद्धिविवेके[3] रुद्रधरोपाध्यायलिखितम् (पृ० ३१ ख० पङ्क्ति ६)।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिः शरणम्**
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

---

१ हरनाथसेठी ।
२ तिष्ठेत्येव—व्यप० ।
३ सच पुत्रत्वकरस्य पिण्डप्रदः इति शुद्धिविवेकपाठः ।

श्रीर्ज्जयतिराम्

५ रोवकारि मिछिल आदालत देओयानी सदर इङ्गरेजी १८२४ साल तारिख २६ अकतुवर मतावक ११ माइ कार्त्तिक सन १२३१ वाङ्गला रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय[1] हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके—

शेख गोलाम आली— वनाम—मिरज एवराहिम वेग

मुनशी दादारवक्श उकिल विद्यमाने आसिया आपन नामिक एक केता ओकालतनामा सायेलेर तरप हइते दाखिल करिलेक। तत परे हालसालेर १० आगस्ति मासेर लिखित वारानसेर कोट आपीलेर रिटरन ताहार सम्वलितेर रोवकारि ओ मकद्दमार रोयदाद सहित पँहुछिया ए आदालतेर दाखिल करा सओलादिर सङ्गे अद्य दृष्ट आइल। हुकुम हइल जे ए आदालतेर शरवे अधिकारीरा ५ लंवम्वे[2] वरावत शेख गोलाम आलीर दाओयार आरजि ओ १० लंवरे वरावत श्रीमति धनवंत ओ श्रीमति धन्नार सओयाल २० लंवरे वरावत मिरजा एवराहिम वेग मुद्दाआलेहेर दाखिल करा दाविर जवावेर मजमुन वेत्ता हइया फतोआ लिखेन जे आमिर वक्शेर त्यक्त धन ऐ मुद्दइ के अर्शों, किम्वा[3] ताहार माता ओ भगिनी सकल ओ भ्राता सकल कें ये अद्यापि हिन्दु जातितें छिर[4] आछे, ओ ए आदालतेर पण्डितेरा ५ ऐ तिन कागचेर मजमुनेर वेत्ता हइया ऐ सओयालेर जवाव वारानशेर शास्त्रानुसारे लिखेन। तवे फतोया ओ व्यवस्था दृष्ट हओन परे जे उचित हुकुम देओया जाइवेक।

---

१ द्वितीत-व्यप०।

२ लम्बरेर वावत—इति साधीयान् पाठः।

३ किम्वा किम्वा-व्यप०।

४ स्थिर।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। प्रभारोज्ञापितपत्रत्रयार्थपरिज्ञानेन मिखक्शनाम्नी काचित् स्त्री पूर्वं हिन्दु-जातीया आसीत्, तज्जातिस्थितया तया यदुपार्जितं तत् स्वमात्रे दत्त्वा पश्चाद्यवन[1]जातीयेन मिरजाएवराहिमवेगसंज्ञकेन सह स्थिता, बहुकालं तद्गृहे[2] एव स्थित्वाऽकृतप्रायश्चित्तैव मृतेति ज्ञातम्। तत्र तस्या यवनजाति-संसर्गे[3]णाकृतप्रायश्चित्तया हिन्दु-जाति-बहिर्भूतत्वाद्यवनजातिस्थितया तया यदुपार्जितं[4] द्रव्यजातं तत्र हिन्दुजातिस्थितानां तन्मातृभगिन्यादीनां तत्सम्बन्धा-भावात् न तद्धनाधिकार इति वाराणस्यादि[5]प्रचलितंमिताक्षरादिग्रन्था-नुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

याजनं योनिसंबन्धं स्वाध्यायं सहभोजनम्।

कृत्वा सद्यः पतत्येव पतितेन न संशयः॥

इति मिताक्षरादि (पृष्ठ ४१४) ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

महापातकादौ व्यवहार्य्यत्वं निषिद्धम्—इति मिताक्षरा—

(पृष्ठ ३७५) लिखितम् ॥२॥

---

१ पश्चाद्यवच-व्यप०।

२ तद्गृज—व्यप०।

३ संसर्गेण—व्यप०॥

४ उपार्श्रितम्—व्यप०

५ वारानश्यादि०—व्यप०।

पुरुषस्य यानि पतननिमित्तानि स्त्रीणामपि तान्येव—इति मिताक्ष-राधृतशौनकवचनञ्चेति ॥३॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्री हरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

लम्बर २२६७

६ रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर इङ्गरेजी १८२४ साल तारिख २३ माह नवम्वर मतावक वाङ्गला १२३१ साल ९ माह अग्रहायण रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्री युत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके ।

रामसेवक सिंह आपीलाण्ट

मृत हाजारि दमन सिंह ओ गायरह रेष्पाडण्टान्

रेष्पाडण्ट दिगेर उकिल मौलवि नेयामत आलि हाजिर हइया १३ हाल मासेर हुकुमानुसारे निवेदन करिलेक ये हाजारि हरशहाय सिंहेर भ्राता रामशहाय सिंह अप्राप्त-व्यवहार वटे, ओ मृत हाजारिदमन सिंहेर स्त्री ओ दुइ कन्या वारान-सेर शास्त्रानुसारे सत्वाधिकारि नाइ, ए निमित्ते केवल हाजारि हरशहाय सिंहेर तरफ हइते ओकालतनामा दाखिल हय । हुकुम हइल ये ए रोवकारिर नकल ओ १३ तारिखेर हाल मासेर रोव-कारिर नकल एइ प्रश्नेते ये मृत हाजारिदमनसिंहेर त्यक्त धन ताहार उत्तराधिकारिदिगेर विवरण अनुसारे, जाहा १३ तारिखेर रोवकारिते लेखा गिया छे, कोन व्यक्ति के अर्शे, पण्डित दिगेके

समर्पण करा जाय, पण्डित दिगेर जवाव दाखिल हओन परे उचित हुकुम देओया जाइवेक इति।

१३ हाल मासेर रोवकारि एइ—ये हाल सालेर १९ आक्तुवर मासेर लिखित वारानसेर प्रवनसन कोटेर एक केता रिटरन ताहार सम्वलितेर रोवकारिर सहित लम्वर पहुँछिया पडा गेल, जाना गेल—ये पूर्व्व इङ्गरेजी १८२० साले १७ जुलाई मासेर टीकासिंह सूत्रधर ओ गुरुदत्त तेओयारिर एजाहारे प्रतिपन्न हय जे हाजारि दमनसिंह रामशहाय ओ हरशहाय नाम दुइ पुत्र आर दुइ कन्या ओ एक स्त्री उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, आर ए आदालते केवल हाजारि हरशहायसिंहेर तरफ हइते ओकालत नामा मौलवी नेयामत आलि उकिलेर नामे दाखिल हय, अतएव ऐ उकिलके जिज्ञासा गेलो ये कि निमित्ते पाच जन उत्तराधिकारिर मध्ये केवल एक उत्तराधि(कारि) ओकालत नामा दियाछे। जवाव दिलेक रष्पाडएटदिगेर मध्ये राम सेठनसिंहेर स्थाने जे कलिकाता सहरे मजुत आछे जानिया निवेदन करिवेक। ए मते हुकुम हइल जे एइ क्षण स्थकित थाके, उकिल आइन्दा रिटरन पडिवार दिवस पर्य्यन्त आपन करार माफिक आमार आपने इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।[1]

यत्र हाजारीदमनसिंहसंज्ञकः कश्चित्[2] रामसहायसिंहहरसहायसिंह-

१—अप्रप्त-व्यप०।

२—कश्चित व्यप०।

संज्ञकौ द्वौ पुत्रौ पत्नीमेकां द्वे च कन्ये संरक्ष्य मृतस्तत्र तदीयधने द्वौ पुत्रावधिकारिणौ भवतः, तयोः सतोः[1] तत्पत्न्यास्तत्कन्ययोर्वा नाधिकार इति वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र[2] प्रमाणम्

उत्पत्त्यैवार्थस्वामित्वं लभत[3] *इत्याचार्याः*—इति मिताक्षरादि (पृ० १६६) ग्रन्थधृतगौतमवचनम्। १

तस्मात्पैतृके पैतामहे च द्रव्ये जन्मनैव स्वत्वम्—इति मिताक्षरालिखितम्॥ २

अनपत्यस्य धनं[4] *पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि*—इत्यादि मिताक्षरादि (पृ० २१७) ग्रन्थधृतवृहद्विष्णुवचनञ्चेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

लम्वर २२०४

सओयाल—

७ सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर हुजुर हइते २२२४ लंवरेर वावत।

१—सत्वे—व्यप०।

२—अप्रप्रमाणम्—व्यप०।

३—'लभते' इत्यस्य स्थाने 'लभेत' इति पाठः मिता०।

४—'वृहद्विष्णु०' इत्यस्य स्थाने 'वृद्धविष्णु०' इति पाठः मिता०।

५—अपुत्रधनमिति वा पाठः

जगमोहन मुखोपाध्याय प्रभृति आपिलाण्टान
पञ्चानन चट्टोपाध्याय प्रभृति रष्पाडण्टानेर

मकर्द्दमाते इङ्गरेजी १८२४ सालेर २५ नवम्बर मासेर रोवकारिर लिखित ए आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अगौणे जवाव दाखिलकरण हुकुमे सञोयाल एइ ये

कुशलचन्द्र चट्टोपाध्याय मानिक ठाकुरानी स्त्री ओ ताराचान्द्र ओ निमाइचरण पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ निमाइचरण लुइधर पुत्रके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ लुइधर पञ्चानन ओ ईश्वरचन्द्र दुइ पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ कुशलचन्द्रेर द्वितीय पुत्र ताराचान्द्र गोलकमनि कन्या ओ शशिमुखि स्त्रीके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ गोलकमनि जगमोहन मुखोपाध्याय ओ गोपीमोहन पुत्रगणके राखिया मरिल, तदपरे ताराचान्द्रेर स्त्री शशीमुखी मरिल, ओ मानिक ठाकुराणि आपन पुत्र ताराचान्द्र ओ निमाइचरणेर मृत्युर पर मरिल। वङ्गदेशेर शास्त्रमते कुशलचन्द्रेर अर्द्धेक त्यक्त धनेर, जे ताहार पुत्र ताराचान्द्रेर स्वत्व छिल, एइ क्षण निमाइचरणेर पौत्र पञ्चानन ओ ईश्वरचन्द्रके स्वत्व वर्त्ते, किम्वा ताराचान्देर कन्या गोलकमणिर पुत्र जगमोहन मुखोपाध्याय ओ गोपीमोहन मुखोपाध्यायेर सत्व वटे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइश.मट्साहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधोजातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कुशलचन्द्रचट्टोपाध्यायस्ताराचांदनिमाइचरणसंज्ञकौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतस्तयोर्म्मध्ये निमाइचरणसंज्ञकः लुइधरसंज्ञकं

पुत्रमुत्तराधिकारिणं संरक्ष्य मृतः, लुइधरोऽपि पञ्चानन-ईश्वरचन्द्रसंज्ञकौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, एवं ताराचाँदसंज्ञकोऽपि शशिमुखीनाम्नीं पत्नीमुत्तराधिकारिणीं संरक्ष्य मृतः, शशिमुख्यपि जगमोहन मुखोपाध्याय-गोपीमोहनमुखोपाध्यायसंज्ञकौ द्वौ दौहित्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृता, तत्र कुशलचन्द्रधनाढ्यस्य तत्पुत्रताराचाँदसंज्ञकस्वामिकधनस्याधिकारिणौ ताराचाँदसंज्ञकस्य दौहित्रौ जगमोहनमुखोपाध्याय-गोपीमोहनमुखोपाध्यायौ भवतः। न तु दौहित्रयोः सतो भ्रातुष्पौत्राणामधिकारः-इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो[2] गोत्रजो बन्धुः।

इत्यादि दायभागादि(पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (पृ० २१६)।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्री हरिः शरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

श्रीर्ज्जयतितराम्

सदर देओयानी आदालतेर पण्डितगणेर स्थाने सओयाल—मुञ्ज[3] कि, ओ कोन वैदिक कर्म्मते व्यवहार्य्य हयः। ओ शास्त्रानुसारे स्वर्णकार जातिदिगेर प्रति ऐ मुञ्ज[1] व्यवहार करणे निषेध आछे कि ना। यद्यपि स्यात् निषेध थाके, तवे कोन शास्त्रानुसारे, एवं वाङ्गलादेशेर स्वर्णकारदिगेर प्रति ताहार चलन आछे कि ना, आर कंपिनी वहादूरेर सरकारेर शासित देशसकलेर मध्यगत कोन देशे ऐ मुञ्ज[1] व्यवहार्य्य आछे कि ना। अतएव

१ सरवे—व्यप०

२ 'तत्सुतो' इत्यस्य स्थाने—'तत स्ततो'—व्यप०।

३ मुञ्ञ—व्यप०।

शास्त्रानुसारे ए सओयालेर जवाव लिखिया दाखिल करेन इति।

जवावव्यवस्था

प्रभुक्तप्रश्नानुसारेण उत्तरं लिख्यते—

मुञ्जस्तृणविशेषः। तथाहि कस्मिंश्चिद्देशे वाराणस्यादौ मध्यदेशादौ च भाषायां 'काशा' इति प्रसिद्धोऽ परः[1] कश्चिन्मिथिलादेशादौ 'शरकाशा' इति प्रसिद्धो, वङ्गदेशादौ शरपाता इति प्रसिद्धः, कश्चिद् दीर्घपरिमाण-स्तृणवृत्तः, तस्य पुष्पगर्भकोषावरणरूपो मुञ्जः, भाषायाञ्च 'मुञ्ज' इति प्रसिद्धः। एवं तद्व्यवहारश्च ब्राह्मणजातेर्मौञ्जीनिबन्धनात्मक उपनयन संस्काररूपवैदिककर्म्मणि मेखलानिर्म्माणे। एवं स्वर्णकारजातीनां शूद्र-रूपत्वेन तादृशमुञ्जनिर्म्मित मेखलाव्यवहारः शास्त्रबोधितो न भवति। यद्यद् वैदिकं कर्म्म लोके प्रसिद्धं भवति तत्तत्सर्व्वं तत्तत्कर्म्मविधायकशास्त्रा-देवेति स्वर्णकारजातेरुपनयनविधायकशास्त्राभावात् निषेधवचनाच्च मुञ्ज-निर्मितमेखलाव्यवहारस्य निषेध एव। एवं वङ्गदेशीयस्वर्णकारजातीं[2]नां तादृशमुञ्जनिर्मितमेखलाव्यवहारो नास्त्येव। एवं श्रीमत्सरकार-कंपिनीवाहादूराख्यसार्व्वभौमराजशासितदेशानाम्मध्ये कस्मिंश्चिदपि देशे स्वर्णकारजातीनां मौञ्जीनिबन्धनात्मक उपनयनसंस्काररूपवैदिककर्म्मण्य-धिकाराभावात् तादृशमुञ्जनिर्मितमेखलाव्यवहारो नास्तीति शास्त्रानु-सारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

'मुञ्जःशरः।' इति संस्कारतत्त्वे[3] रघुनन्दनभट्टाचार्य्यव्याख्यानम्।

मौञ्जीनिबन्धनुमुपनयनम् इति—मन्वर्थमुक्तावल्यां द्वितीयाध्याये कुल्लूक[4]भट्टव्याख्यानम् (२।२७) ॥२॥

मौञ्जी त्रिवृत्[5] समा श्लक्ष्णा कार्या विप्रस्य मेखला।

---

१ पर कस्मिंश्चिद्—व्यप०। २ जातानां व्यप०। ३स्मृत० भाग १ (पृ० ६३०)
४ कुल्लुक—व्यप०। ५ तृवृत—व्यप०।

क्षत्रियस्य तु मौर्वी ज्या वैश्यस्य शणतान्तवी[१]—इति मनुवचनम् (२।४२)॥ ३॥

दण्डाजिनोपवीतानि मेखलाञ्चैव धारयेत्—इत्यादिमिताक्षरादिधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (१।२९)॥४

पालाशादिदण्डमजिनं कार्ष्णादि, उपवीतं कार्पासादिनिर्मितं, मेखलां मुञ्जादिनिर्मितां ब्राह्मणादिर्ब्रह्मचारी धारयेत् इत्यादि मिताक्षरा (पृ० ९) लिखनम्॥५

द्विजानां षोडशैव स्युः शूद्राणां द्वादशैव हि।
पञ्चैव मिश्रजातीनां संस्काराः कुलधर्मतः॥
वेदव्रतोपनयनमहानाम्ना महाव्रतम्।
विनाद्वादश शूद्राणां सस्काराणामभन्तत[१]:—

इति शूद्रकमलाकर (पृ० १६) धृतशारङ्गधरवचनञ्चेति॥६॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल इंरेजि मिसिल मुञ्जेर सञ्ओयालेर[१] जवाव।

श्रीर्ज्जयतितराम्

९—रोवकारि मिशिल आदालत देमानी सदर इङ्गरेजी १८२५ साल तारिख ४ माह जानओरि मतावक वाङ्गला १२३१ माह पौष रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके—

---

१ सञ्ओयालेच—व्यप०।

श्रीमति हेमलता चौधुरानी आपीलाण्ट
श्रीमति पद्ममणि रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिलगण मुनशी महाम्मद पाना ओ मुनशी दादार वक्स ओ सदासुक पण्डित, ओ रेष्पाडण्टेर उकिलगण मुनशी हसन आली ओ ओजरदारान राममणि दास्यार उकिल मुनशी फकिर महाम्मद ओ गौरकिशोर मजुमदारेर[२] उकिल मुनशी गोलाम वतुन[१] ओ स्वयं गौरकिशोर मजुमदार हाजिर हइल। मकर्द्दमा पूर्व्व इङ्गरेजी १८२४ सालेर जुलाइ मासेर १४ ओ १५ ओ आगस्त मासेर २१ तारिख सकले तृतीय हाकिमेर वैठके रोवकार और प्रवनसन कोट आदालतेर कागज सकल १ लम्वर अवधि ८५ लम्वर पर्य्यन्त पडा गिया स्थकित छिल, ओ एइ क्षण आमार वैठके रोवकार हइया प्रवनसन कोटेर कागज सकल १ लम्वर हइते तथाकार फएसला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर दाखिल हओया आरजी मजुवात ओ जवाव ओ उजरदारान राममणि दास्यार सओयाल ओ गौरकिशोर मजुमदारेर सओयाल दृष्टी आइल। तत्परे राममणि दास्यार उकिलइ ये मकर्द्दमार सम्पर्क्के[३] आपीलाण्ट ओ रेष्पाडण्टेर कोनो सत्व ना-करण ओ राममणि दास्यार ताहार सत्व अधिकारि थाकन ओ ऐ राममणि दास्यार दाखिल करा वंशावलीपत्र अनुसारे ऐ राममणि आपन पितामातार धनेर उपर स्थायी हओयार प्रार्थनाय विवरणे एक कीता सओयाल लम्वरे····· दाखिल करिलेक, पडा गेल। तदन्तर गौरकिशोर मजुमदारेर ओजरदारेर उकिल स्थाने, जे ताहार ओजरेर सओयाल ७१ लम्वरे दाखिल आछे, जिज्ञासा गेलो जे तोमार मक्तेर मातार नाम कि छिल, ओ से कोन सने मरियाछे। जवाव दिलेक जे ताहार नाम नारायणि छील, ओ

१—वतुल—इति साधीयान् पाठः। २—मजुमदार—व्यप०।
३—सम्पर्क्के—व्यप०।

वाङ्गला ११८९ साले आमार मक्लेर मातामह चौधरि रघुराम-रायेर मृत्युर पर आमार मक्लेर मातुल रामकिशोर रायेर समुखे मरियाछे। पुनर्व्वार जिज्ञासा गेलो जे कोन आपीले कि निमित्ते तोमार मक्लेर तरप हइते ओजरेर सओयाल गुजरे नाइ। जवाव दिलेक जे आमार मक्ल ऐ रामकिशोर रायेर कन्या राममणिर पुत्र सकल एकथार मरण वार्ता हइते अज्ञात छिल, न तु वा कोट आपीले ओजरेर सओयाल गुजराइत। तत्परे ऐ राममणि दास्यार उकिल स्थाने जिज्ञासा गेल जे तोमार मओक्ल कोट आपीले मकर्द्दमा दाएर थाकनकालीन कि निमित्ते ओजरेर सओयाल गुजराए नाइ। जवाव दिलेक जे असार मक्ल वाङ्गला १२२५ साले वृन्दावन तीर्थे गीयाछिल, मकर्द्दमा निष्पत्तेर परे आशीयाछे, ए कार(ण) कोट आपीले ताहार तर्प हइते सओयाल गुजरे नाइ। ताहार परे आपीलाण्ट ओ रष्पाडण्टेर उकिलान स्थाने जिज्ञासा गेल जे पूर्व्व पुरुस रघुराम चौधुरि दुइ पुत्र व्यतित नारायणि नाम एक कन्याओ राखिया मरियाछे कि ना; यद्यपि राखिया थाके गौरकिशोर मजुमदार ओजर-दार ऐ नारायणिर पुत्र वटे कि ना। आपीलाण्टेर उकिलेरा जवाव दिलेक जे आमरा नारायणिर वार्ता ज्ञात नाइ, एवं गौर किशोर मजुमदार ताहार कन्यार पुत्र एहाओ जानि ना, ओ रष्पाडण्टेर उकिल आरजि करिलेक जे चौधुरि रघुरामराय कोन कन्या राखिया मरे नाइ, ओ ऐ गौरकिशोर मजुमदार ऐ रघुराम रायेर कन्यार पुत्र नहे, वरं कोटेर फयसलार परे ऐ मजुमदार आमार मओक्कलार तरप हइते आपनाके मोक्तारकार कहिया मकर्द्दमार सओयाल जवावेर कारण आमार निकट रुजु छिल, ओ तत्कालीन आपन दौहित्रेर कोन उल्लेख करे नाइ, शेष द्वितीय पक्षेर सहित योग करिया दौहित्र मुख्य हइयाछे। ओजरदारेर[१] सओयाल गुजराइया छे। परे राम-

१ ओजरेर—व्यप०।

मणि ओजरदारेर उकिल स्थाने जिज्ञासा गेल जे तोमार मश्रोकला गौरकिशोर मजुमदारेर एजाहार सत्य कहे कि मिथ्या। जवाव दिलेक जे आमार मश्रोकलार पाठानो वंशावलि पत्रानुसारे गौरकिशोर मजुमदार यथार्थरूप रघुराम रायेर कन्या नारायणिदास्यार पुत्र बोध हय, वरं हुकुम अनुसारे सादा कागजे वंशावलि पत्र... लंवरे गुजराइवेक। जाना गेल जे वाङ्गला १२०१ सालेर १४ भाद्रमासेर लिखित पद्ममणि रष्पाडण्टेर दाखिलकरा अनुमति पत्र जे, कोटेर नथी २३ लंवरे आछे, कोट आपीले ताहार कोन साव्यस्त हय नाइ। ओ यद्यपि स्यात् इङ्गरेजी १८१६ साले १३ आगस्त मासेर हओया ३८ लम्वर वावत केलेकटुरिर रोवकारिते रष्पाडण्टेर पतिर अनुमतिर उल्लेख आछे। किन्तु ऐ रोवकारिर मजमुने जाना जाय जे रष्पाडण्ट ताहार आपन कथार सत्यतार कोन दस्तावेज तत्कालीन उपस्थित करे नाइ, ओ ताहार पति मरणेर मुद्दत २२ वाइष वत्सर परे उल्लेख हइयाछे। अतएव अनुमति पत्र एवं ऐ रूप आपीलाण्टेर ससुर रामचन्द्र रायेर तरप हइते लेखा जाओन एजाहारे वाङ्गला १२१६ सालेर ३ आश्विन मासेर लिखित २८ लंवरेर एकरारनामा प्रत्ययेर किछु सत्यता राखे ना। ओ इहाओ जाना जाइतेछे ऐ रष्पाडण्ट एइ क्षण पर्य्यन्त ताहार आपन पतिर विना अनुमतिते किम्वा अनुमतिते कोन व्यक्तिके आपन पुत्रताते लय नाइ। वाकी रहिल उत्तराधिकारित्वेर कथा, अर्थात् ऐ जे रष्पाडण्टके द्वितीय सने ताहार पति रामकुमार राय ओ पतिर भ्राता रामजीवन ओ रामकमल रायेर त्यक्त धनेर मध्य किछु आर्शिवेक कि ना। आर जाना जाइतेछे जे उभय पक्षइ ए कथा स्वीकृत[1] आछे। रष्पाडण्टेर पति आपन पिता रामकेशव रायेर सम्मुखे[2] मरि-

१. सिकृत–व्यप०। २. समुख्ये–व्यप०।

याछे, ओ ताहार दुइ भ्राता ऐ रामकिशोर रायेर मृत्युर परे मरियाछे। एवं ताहाओ जाना गेल जे ए मकर्दमा उभय पक्ष व्यतित ऐ रामकेशव रायेर कन्या राममणि ऐ रामकेशव रायेर सहोदर ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्र रायेर मध्यम पुत्र रामलोचन रायेर स्त्री चन्द्रावली एइ क्षण पर्य्यन्त वर्त्तमान आछे, ओ कोट आपीलेर समस्त कागजे रघुरामराय चौधुरि(र) कन्या नारायणिर कोनो उल्लेख जे गौरकिशोर मजुमदार आपन.के ऐ नारायणिर पुत्र कहे पाओया जायना, ओ ए आदालते आपीलाण्ट ओ रष्पांडण्टेर उकिलेरा अपनादिगेके नाराय-णिर उत्पत्ति हइते ओ गौरकिशोरमजुमदारेर दौहित्रता हइते अज्ञात जाहेर करितेछे। अतएव हुकुम हइल जे ए आदालतेर पण्डितेरा उपरेर विवरण करा वृत्तान्त ओ कोर्टेर नथिर २७ लंवरेर दाखिलि वंशावलि पत्र जे एइ मकर्दमार विवरण माफिक वोध हइते छे पडिया ओ वुझिया वङ्गदेशेर शास्त्र अनुसारे व्यवस्था लिखिया देन जे रामकेशवरायेर पुत्र राम-कुमाररायेर अंश हइते जे ऐ रामकुमारराय पितार सम्मुखे[1] मरियाछे, ओ ऐ रामकुमाररायेर सहोदर भ्राता रामजीवन राय ओ रामकमल रायेर हिस्सा हइते, जे ताहारा आपनादिगेर पितार मृत्युर पर निःसन्तान मरियाछे दत्तक करणेर कथा उपत्त्येय[2] पद्ममणि के स्त्रीत्व वावत किछु अंशे कि ना। यदि अंशे, कि परिमान अंशे। उचित जे परस्व दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त एइ सओयालेर जवाव दाखिल करेन। ओ पण्डित-दिगेर जवाव दाखिल हओय परे ताहार मजमुन दिष्टे उभयेर साक्षि सोननेर आवश्यक ओ अनावश्यक विषय उचित हुकुम देओया जाइवेक।

---

१. समुख्ये—व्यप०। २. उपलव्ये—इति साधीयान् पाठः।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितपत्रप्रतिरूपपत्रान्तर्गतप्रश्नमेवं तदाज्ञापितवंशावलीपत्रं चावलोक्यावगत्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र रघुरामरायस्य द्वौ पुत्रौ, रामचन्द्ररायरामकेशवरायसंज्ञकौ स्थितौ। तयोर्म्मध्ये रामकेशवस्य त्रयः पुत्राः रामकुमाररामजीवनरामकमलसंज्ञकाः। तेषां मध्ये पितरि जीवत्येव यद्यनपत्यो रामकुमारः पद्ममणिनाम्नीं स्त्रियं सरंक्ष्य मृतः, पश्चाद्रामकेशवोऽवशिष्टौ द्वौ पुत्रा वुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, तत्र रामकेशवस्वामिकधने तु पितरि जीवति रामकुमारस्य मरणात् स्वत्वनिवृत्तेस्तत्पत्न्याः पद्ममण्याः स्वभर्तृपैतृकधने नाधिकारः, किन्तु ग्रासाच्छादनभागित्वं स्वभर्त्तुरसाधारणधने चोत्तराधिकारित्वेन यावज्जीवम[1]धिकारः; एवं रामजीवनरामकमलयोर्म्मध्ये मातरि शङ्करीदास्यां सत्यां यद्येको मृतस्तदा तद्योग्यांशभागित्वं तन्मातुः शङ्करीदास्याः। एवं सत्यां च मातरि द्वयोर्म्मरणञ्चेत्तदा तन्मातुर्द्वयोर्धनाधिकारित्वम्। एवं मृतायां च मातरि तयोर्द्वयोर्मरणञ्चेत्तदा यदि रामकेशवस्य कन्यायाः राममण्याः पुत्राःस्थितास्तदा तेषां तयोर्धनाधिकारः; तेषां मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तन्मातृ[2] राममण्या अधिकारः। यदि रामजीवन रामकमलयोः सतोरेव तयोर्माता शङ्करीदासी मृता, रामकेशवदौहित्राश्च मृतास्तदा राममण्यास्तयोर्भगिन्या न तद्धनाधिकारः। किन्तु तयोर्म्मरणोत्तरं रघुरामरायतत्पुत्रतत्पौत्रतत्प्रपौत्राणां मध्ये ये आसन्नास्तदानीं विद्यमानास्तेषांमधिकारः। तेषां मरणोत्तरं तेषां ये उत्तराधिकारिणस्तेषामधिकार इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागदायतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

१—यावज्जीवम्—व्यप०।

२—तन्मातुराममण्या व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

उद्र्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम्।
भजेरन् पैतृकं रिक्थमनीशास्ते हि जीवतोः[1]॥

इति दायभागादिग्रन्थ (पृ० ११) धृतमनुवचनम् (९।१०४) ॥१॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः।
अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति तद्धृत देवल-वचनम् (पृ० १३) ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ (पृ० १५१) धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥३॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावेपित्दौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग (पृ० २०८) लिखनञ्चेति।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्री हरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

———

श्रीर्ज्जयतितराम्

१०—सदर देमानी आदालतेर कायेम मकाम प्रथम हाकिम श्री युत जान हरवरट हारिङ्टीन साहेवेर हजुर हइते ए आदालतेर पण्डितदिगेर नाम।

श्याम सुन्दर महेन्द्र आपिलाण्ट
कृष्ण चन्द्र अमरवरराय पापड रेष्पाडण्टेर
२४ ६६ लंवरेर वावत मकर्द्दमाते अंगरेजी १८२५ सालेर

१—जीवितोः—व्यप०।
२—दाय० २।१४

१२ फिवरवरी मासेर रोजकारिर लिखित ए मक्र्दमाते मुद्दइर दाखिल करा ९५ लंबरेर दस्तावेज चटार अर्थात् लिखन ओ जिला कटकेर कमिसनर साहेवेर काचारीते दाखिल हओया उभयेर सओयाल ओ जवाव दृष्टे सुवे उडिस्यार चलित शास्त्रानुसारे एक सप्ताहेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करण निर्वन्धे सवाल एइ ये—

लंबर २४६६

श्यामसुन्दरमहेन्द्र आपीलाण्ट

कृष्णचन्द्रभ्रमरवरराय रेष्पाडण्ट

यद्यपि विरोधीय राज्य ओ जमीदारिर दखिलकार राजा रामचन्द्र ऐ दस्तावेजेर मजमूने लिखन मुद्दइर निकट लिखिया थाके। तत्परे ऐ राज्य ओ जमीदारीते मुद्दइके विना दाखिलकार करणे मरिया थाके, ऐ लिखनेर लिखित त्यागकरण अच्छियत ताहार साव्यस्त हओन प्रकारे मुद्दइ सत्वेर ताहार लिखित राज्य ओ जमिदारीर दान ओ अच्छियत ओ राजा रामचन्द्रेर औरस पुत्र फुल विवाहेर स्त्रीर गर्भजात कृष्णचन्द्र महेन्द्र आसल मुद्दा आलेहेर उत्तराधिकारित्व-सत्व असिद्धतार लिपिते ऐ सुवार चलित शास्त्रानुसारे वलवत्तर ओ गुणदायक वटे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रथम जवाव व्यवस्था—रामतनुविद्यावागीश—

राज्ञा रामचन्द्रेण मानसिंहस्य राज्ञो दत्तकपुत्रकृष्णचन्द्रभ्रमरवरसंज्ञकस्य कर्त्तृत्वादिकरणार्थं कृष्णचन्द्रभ्रमरवरासन्निधानेऽपि यल्लिखितं तल्लिखनानुसारेण दानकरणादध्यन्त्करणाच्च रामचन्द्रस्वत्वास्पदीभूतराज्यादौ तत्स्वत्वत्यागानन्तरं कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्य स्वत्वं जातम्। एवं रामचन्द्रलिखना(नु)रोधात् दासीगर्भजातः कृष्णचन्द्रमहेन्द्रस्तु पितृद्विट्, अतस्तद्राज्यादौ तस्य स्वत्वं भवितुं नार्हति इत्योड्रदेशचलितमनुमिताद्दरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् (५।१५२) ॥१॥

मनसा पात्रमुद्दिश्य भूमौ तोयं विनिःक्षिपेत् ।
विद्यते सागरस्यान्तो दानस्यान्तो न विद्यते ॥ इति नारदवचनम्[1] ॥२॥

भूमिं दत्त्वा तु यः पत्रं कुर्य्याच्चन्द्रार्कसाक्षिकम् ।
अनाच्छेद्यमनाहार्य्यं दानलेख्यन्तु तद्विदुः ॥ इति बृहस्पति(पृ० ६१)-वचनम्[2] ॥३॥

पितृद्विट् पतितः (षण्ढो) यश्च स्यादौपपातिकः ।
औरसा अपि नैतेंऽशं लभेरन् क्षेत्रजाः कुतः ॥
इति नारदवचनञ्च[3] इति (पृ० १९५) ॥४॥

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतिराम्

द्वितीय व्यवस्था—वैद्यनाथमिश्र—

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुक्तजानहरवरटहारिएटीन-साहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभोराज्ञापितवादिप्रतिवादिनोः प्रश्नोत्तरपत्रार्थपरिज्ञानेन राज्ञा

---

१. दानमयूखे नारदः—(पृष्ठ० १२)। तत्र "दानस्यान्तो न विद्यते" इत्यस्य स्थाने "तस्यान्तो नैव विद्यते" इति पाठः ।

२. बृह०—धको०—३६४ । तत्र "चन्द्रार्कसाक्षिकम्" इत्यस्य स्थाने "चन्द्रार्क-कालिकम्" इति पाठः । "तद्विदुः" इत्यस्य स्थाने "तदभृगुः" इति पाठः व्यप० संग्रहे ।

३. नार०—पृ० १९५ । तत्र "औरसाः" इत्यस्य स्थाने "ओरसाः" इति पाठः ।

त्रिलोचनसिंहेन फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नो राजा रामचन्द्रः शौर्येण तदुत्तराधिकारित्वेन वा समस्तमेव पैत्रं राज्यं प्राप्य कतिपयदिनान्युपभुज्य फुलविवाहितायां स्त्रियां कृष्णशरणनामानं कृष्णचन्द्रमहेन्द्रप्रसिद्धं[1] पुत्रमुत्पाद्य[2] कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्यैतद्धर्माधिकरणप्रतिवादिनोऽन्तिके चर्चावसंज्ञकं[3] पत्रं प्रेषयित्वा मृत इति ज्ञातम्। तत्र यदि तद्देशे फूलविवाह-शब्देन शास्त्रोक्तगान्धर्वविवाह उच्यते तदा गान्धर्वविवाहसंस्कृतायां पत्न्यामुत्पन्नो[4] राजा रामचन्द्रः स्वपितुः मुख्य एवौरसः पुत्रः, तथा रामचन्द्रस्य फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नः कृष्णचन्द्रमहेन्द्रो मुख्य एवौरसः पुत्रः। यदि च तद्देशे दास्येव फूलविवाहिताशब्देनोच्यते तदा दास्यामुत्पन्नो[4] राजा रामचन्द्रस्तथापि स्वपितुरौरस एव। उभयथा राजा रामचन्द्रः शूद्र एव। शूद्रेण विवाहितायां[5] स्त्रियामुत्पन्नो दास्यामुत्पन्नश्च धनाधिकारी भवत्येव। सति पुत्राद्यन्वये[6] धनाधिकारिणि विद्यमाने सर्वस्वदानं तदनुमत्या क्रमागतस्वार्जितस्थावरदानं चासिद्धम्। अतो रामचन्द्रप्रेषितपत्रलिखितत्यागकरणादिवृत्तान्तेन रामचन्द्रस्वामिकराज्यादौ कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्यैतद्धर्माधिकरणप्रतिवादिनः स्वत्वं न भवति। एवं रामचन्द्रेण फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नस्य कृष्णचन्द्रमहेन्द्रस्य तदुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वनाशो न भवति—इति उत्कलदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

एक एवौरसः पुत्रः पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः—इत्यादि मनुवचनम् (९।१६३)॥५॥

स्वं कुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुताहते।

---

१. कृष्णचन्च—व्यप०।

२. उत्पास्य—व्यप०।

३. "चटाव" इत्यपि भवितुमर्हति।

४. उतपन्नो…व्यप०।

५. विवाहितया—व्यप०।

६. ०द्यन्नये—व्यप०।

नान्वये[१] सति सर्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम्[२]।। इति मिताक्षरा-वीर-मित्रोदयादि (पृ० ६५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्[३] (२।७५) ।।२।।

पुत्रपौत्राद्यन्वये[४] विद्यमाने सर्वं धनं न दद्यात्—इति मिताक्षरा-(पृ० २४५)लिखनम् ।।३।।

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते[५] च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव—इति मिताक्षरा(याज्ञ० २।११३ पृ० २००)लिखनम् ।।४।।

जातोऽपि दास्यां शूद्रेण कामतोंऽशहरो भवेत् ।
मृते पितरि कुर्य्युस्तं भ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ।।
अभ्रातृको हरेत्सर्वं दुहितॄणां सुतादृते—इति मिताक्षरा-वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३३–४ पृ० २१६)वचनञ्चेति।।५।।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—————

श्रीर्ज्जयतितराम्

११ एइ मकर्द्दमाते प्रथमेते श्रीयुत कुर्टनी इशामिट साहेब द्वितीय हाकिमेर वैठकेते सञ्ओयाल। एइ ये

सञ्ओयाल—

जेला साहाबाद साकिनेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदर भ्रातार पुत्रके पुत्रताते लइलेक। ताहार पर ए व्यक्तिर औरस पुत्र जन्मिल। ऐ व्यक्तिर मृत्युर पर ताहार त्यक्त धनेर मध्ये

१. नान्नये—व्यप० ।
२. प्रतिग्रहम्—व्यप० ।
३. स्वकुटुम्बविरोधेन—व्यप० ।
४. पुत्रपौत्रयद्यन्नये—व्यप० ।
५. स्वार्जिते पैत्रादि०—व्यप० ।

औरस पुत्र कि परिमान ओ दत्तक पुत्र कि परिमान पाइवेक, उचित-ये अतिशीघ्र एइ सओयालेर जवाव ऐ देशेर शास्त्रानुसारे दाखिल करेन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइ शमिटसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कश्चित् हिन्दूजातीयः शाहावादप्रदेशीयः सोदरभ्रातृपुत्रं[1] दत्तकत्वेन गृहीत्वानन्तरमौरसपुत्रमेकमुत्पाद्य मृतः, तत्र तदीयसमस्तस्थावरास्थावरधनं चतुर्द्धा विभज्य भागत्रयमौरसः[2] पुत्रो गृह्णीयात्[3], दत्तकपुत्रस्त्वेकं भागं गृह्णीयादिति शाहावादप्रदेशादिचलितमिताक्षरादत्तकमीमांसादिग्रन्थानुसारिणी[4] व्यवस्था इति।

तत्र प्रमाणम्—

तस्मिंश्चेत् प्रतिगृहीते औरस उत्पद्यते[5]।

चतुर्थभागभागी स्यात्···दत्तकः॥ इति मिताक्षरा(याज्ञ०२।१३२)-दत्तकमीमांसादि(द०मी० १०३)धृतवशिष्ठवचनम्[6]॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१. भ्रातृपुत्र—व्यप०।

२. मौरसः—व्यप०।

३. गृह्णीत—व्यप०।

४. दत्तमीमांसा०—व्यप०।

५. उतपद्यते—व्यप०।

६. तस्मिन् दत्तके प्रतिगृहीते यद्यौरस उत्पद्यते तदा दत्तकश्चतुर्थांशं लभते न समांशमित्यर्थः इति द०मी० पाठः।

श्रीर्ज्जयतितराम्

सओयाल—

१२—योगि जातिर स्त्री स्वामिर मरणेर पर आपन इच्छाते स्वामिर सहित दग्ध हइते पारे कि ना।

जवाब-व्यवस्था

योगिजातेः स्त्री स्वामिमरणानन्तरं स्वेच्छया स्वामिसहगमनं कर्त्तुमर्हतीति।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल रेजेष्टर मेघनाटन साहेबेर निकट।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

१३—सओयाल—

रामकृष्णेर चारि पुत्र, वड पुत्र रामहरि, द्वितीय रामचन्द्र, तृतीय पुत्र राममोहन, चतुर्थ पुत्र रामकान्त। ताहार मध्ये रामहरिर आपन ऐ तिन भ्राता ओ पिता मर्त्तमाने[2] दुइ पुत्र राखिया मृत्यु हय। रामहरि आपन उपार्जन[3] द्वारा धन सञ्चय करिया दुइ पुत्रेर नामे उइल अर्थात[4] विभागपत्र करिया देन। राम

१. श्रीर्ज्ज यतितराम्—व्यप०।
२. वर्त्तमाने इति साधीयान् पाठः।
३. उपार्ज्जन—व्यप०।
४. अर्थात—व्यप०।

कृष्ण ओ रामचन्द्र ओ राममोहन ओ रामकान्त प्रत्येके एइ धनेर अंशेर दाओया करे। यद्यपि ऐ धन रामहरि आपन धन ओ आपन शरीरायास द्वारा उपार्जन करिया थाके, ताहाते ताहारा किम्बा के के, एवं ताहादिगेर मध्ये कोन व्यक्ति ऐ धनेर कत अंश पाइते पारे। यद्यपि ऐ धन पितार धन ओ ताहार साहाज्यताते[1] एवं सुपारिष द्वारा उपार्जन करिया थाके ताहाते ताहारा कि रूप अंश पाइबे। एकान्न किम्बा पृथकान्न थाकिले ऐ धन ग्रहणेर कि विशेष इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[2]

जवाबव्यवस्था

प्रभुकृतप्रश्नानुसारेणोत्तरं लिख्यते। यत्र चतुर्णां सोदरभ्रातॄणां मध्ये एको भ्राता पृथगन्नस्थितोऽपृथगन्नस्थितो वा विद्यमाने पितरि विद्यमानेषु त्रिषु भ्रातृषु चास्मदर्जितसमस्तधनमस्मत्पुत्रयोरित्यभिप्रायेण[3] विभागपत्रं कृत्वा मृतस्तत्र यदि तद्धनं यदि पितृधनोपघातेन पितुः शरीरायासेन वा उपार्जितं स्यात्तदा तदुपार्जितसमस्तधनास्यार्द्धभागित्वं पितुरवशिष्टार्द्धभागस्य पञ्च भागान् कृत्वा भागद्वयमुपार्जकस्यैकैको भागस्त्रयाणां भ्रातॄणाम्। यदि च पितृधनानुपघातेन पितुः शरीरायासव्यापारव्यतिरेकेणोपार्जितं स्यात्तदा तद्भ्रातॄणां न तद्धनाधिकारः, किन्तु समुदायद्रव्यस्यार्द्धभागित्वं पितुरर्द्धभागित्वमुपार्जकस्य। उभयपक्ष एवोपार्जकपुत्रयोरुपार्जकभागभागित्वम् इति वङ्गदेशप्रचलितदायतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्।

द्व्यंशहरोऽर्द्धहरो वा पुत्रवित्तार्जनात्पिता—

इति दायभाग(पृ ४६, २।६५)दायतत्त्वादि(दात०–२४,५)–ग्रन्थधृतकात्यायन(पृ ८५१)वचनम्।

---

१. साहाय्यताते—इति साधीयान् पाठः।

२. श्रीर्ज्ज यतितराम्—व्यप०।

३. ०स्मदुजर्ज्जत—व्यप०।

तत्र पितृद्रव्योपघातेन पुत्रार्जितवित्तस्यार्द्धं पितुरर्जकस्य पुत्रस्यांशद्वयमितरेषामेकैकांशिता[1], अनुपघाते पितुरंशद्वयमर्जकस्यापि तावदेव इतरेषामनंशित्वम्--इति दायभाग(पृ० ५१ २।७१)ग्रन्थलिखितैतद्वचनव्याख्यानञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

१४--लम्बर २३३६

रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इंरेजी सन १८२५ साल तारिख ५ माह आपरेल मताबक बाङ्गला सन १२३१ साल २४ चैत्र रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके--

प्रियागसिंह आपीलाण्ट

अजध्यासिंह रेष्पाण्डण्ट

आपीलाण्टेर उकिलगण मुनसी महम्मद प(ना)ह ओ लाला आयुधलाल[2] ओ रेष्पाण्डण्टेर उकिलगण नबि नेयामत आली विद्यमाने आइल। मकर्द्दमा रोबकार हइल। कोर्ट आपीलेर दाखिल हओया कागज लम्बर हइते तथाकार फयसला पर्य्यन्त ओ ए आदालते दाखिल हओया आरजि मजुवात ओ जबाब ओ २३३६ लम्बरे मकर्द्दमार कागजसकल पडागेल। तदपरे आपिलाण्टेर

१. ०कांशता—व्यप।

२. आयुधलाल आयुधलाल—व्यप०।

उकिलेरा सनहिंसिंह ओ मुसम्मात पाना आपीलाण्ट बालमुकुन्द रष्पाडण्टेर मकर्द्दमाते इंरेजि १८१३ साले २० आपरेल मासेर हुओया एक केता फयसला(र) नकल ओ जिला त्रिहोटेर देओयानी आदालतेर पण्डितेर एक केता व्यवस्थार नकल ओ जिला साहाबादेर देओयानी आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल छय टाका मूल्येर फेरस्त द्वारा लम्बरे दाखिल करिल हष्टे आइल। तत्परे ए आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल करागेल एइ बयाने जे जिला साहाबाद साकिमेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदर भ्रातार पुत्रके पुत्रताते लइलेक। ताहार पर ऐ व्यक्तिर औरस पुत्र जन्मिल। ऐ व्यक्तिर मृत्युर पर ताहार त्यक्त धनेर मध्ये औरस पुत्र कि परिमान ओ दत्तक पुत्र कि परिमान पाइवेक। उचित जे अतिशिघ्र एइ सओयालेर जवाव ऐ देशेर शास्त्रानुसारे दाखिल करेन इति। सन १८२५ साल इङ्गरेजी तारिख ५ आपरेल यथा पण्डितेरा जवाव दाखिल करिलेक, ताहार तरजमार विवरण एइ ये, यद्यपि जिला साहाबाद साकिनेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदरभ्रातृपुत्रके अपन पुत्रताते लइलेक। ओ तत्परे ऐ व्यक्तिर औरस पुत्र जन्मिलेक। ताहार मृत्युर पर ताहार स्थावरास्थावर समुदाय धन चारि अंश हइया, ताहार मध्ये हइते तिन अंश ताहार औरस पुत्रके ओ एकांश ताहार दत्तक पुत्रके वर्त्तिवेक। जिला साहाबाद ओ गयरहेर चलित मिताक्षरा ओ दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थानुजाइ एइ व्यवस्था। इहार प्रमाण मिताक्षरा दत्तकमीमांसा ग्रन्थसकलेर लिखित वसिष्ठमुनिर[1] वचन। अर्थ एइ—यद्यपि कोन व्यक्ति प्रथम दत्तक ग्रहण करिया थाके ओ तदपरे ताहार औरस पुत्र जन्मे, से प्रकारे ताहार मृत्युर पर दत्तक[2] पुत्रके चतुर्थ अंश वर्त्तिवेक इति। यथा ए

---

१. मणिर—व्यप०।

२. दत्त—व्यप०।

आदालतेर पण्डितदिगेर जवाव अनुसारे उचित छिल जे कोटेर डिगरि रष्पाडण्टेर दाविर अर्द्धेकेर, कारण जे पूर्व्व हइते अर्द्धेक त्यक्त धनेर उपर दखिल आछे, हइतो। ओ वृत्तान्त एइ ये आपील आदालतेर पण्डितेर जवाव अनुसारे दाओयार तिन एवं चौथाइर डिगरि हइयाछे। पण्डितेर स्थाने आपीलेर हाकिमेर सओयालेर बयान—जद्यपि हिन्दु जाति कोन व्यक्ति आपन[1] भ्रातुष्पुत्रके दत्तक करे, ओ ताहार दत्तक करणेर पर दत्तकग्रहीतृस्त्रीर एक पुत्र जन्मे। अतएव ए प्रकारे ऐ व्यक्तिर त्यक्त धनादि दत्तक ओरस[2] पुत्रेर सहित शास्त्रानुसारे कि प्रकार विभाग हइवेक। कोट आपीलेर पण्डितेर जवावे(र) तरजमार विवरणइहार मिताक्षरा ओ व्यवहारमयूख प्रभृति शास्त्रानुसारे ऐ व्यक्तिर त्यक्त धनके दुइ अंश करिया परे एक अंशके चारि अंश करा जावेक। सेइ चारि अंशेर एकांश दत्तक पुत्रके वर्त्तिवेक, ओ अवशिष्ट समुदाय त्यक्त धन ऐ औरस पुत्रेर सत्व—वशिष्ठमुनि ओ कात्यायनमुनिर कथित एइ कथा। अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितदिगके समर्पन करा जाय। ये आपिल आदालतेर पण्डितेर जवावे ये तदनुसारे मृत[3] व्यक्तिर समस्त धन मध्ये सोलो आनार चोद्दं आना औरस पुत्रके ओ दुइ आना दत्तक पुत्रके वर्ते–शुद्ध वटे कि अशुद्ध, ओ यदि शुद्ध हय, तवे कि प्रकारे ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर व्यवस्थाते सम्यक धनेर तिन चौथाइ, ये सोल आनार बार आना हय, औरस पुत्रे(र) सत्व, ओ चतुर्थांश[4] अर्थात् चारि आनार

---

१. आपन आपन—व्यप०।

२. औरस—इति साधीयान् पाठः।

३. मृत्यु—व्यप०।

४. चर्थांश—व्यप०।

दत्तक पुत्रेर सत्व लिखियाछे[1]। उचित ये कल्य दुइ प्रहरेर मध्ये एइ सओयालेर जवाव दाखिल करेन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्थापत्र।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशवोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

एतद्विवादविषये कोर्टआपीलाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन यत्तत्स्थानाधिपतिकृतप्रश्नोत्तरव्यवस्थापत्रे दत्तकपुत्रस्य ग्रहीतृधनाष्टमांश-भागित्वं लिखितम्, तल्लि(खि)तवशिष्ठवचनकात्यायनवचनाभ्यामेवमिदानीं तद्देशप्रचलितग्रन्थैश्च नायाति। तथा हि तल्लिखितवचनयोर्म्मध्ये वशिष्ठ-वचनस्यायमर्थः—दत्तकपुत्रे गृहीते सति यद्यौरसपुत्र उत्पद्यते तदा दत्तकपुत्रश्चतुर्थभागभागीति, एवं कात्यायनवचनस्यायमर्थः—औरसपुत्रे उत्पन्ने[2] सति दत्तकादयः पुत्राश्चतुर्थांशभागिन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

———

श्रीर्ज्जयतितराम्[3]

१५—रोवकारि मिसिल आदालत नेजामत इङ्गरेजी १८२५ साल तारिख ६ माह जुन मतावक सन १२३२ वाङ्गला २५ माह

---

१. लिलिया छे—व्याप०।

२. उतपन्ने—व्यप०।

३. श्रीज्र्यति—व्यप०।

জ্যেষ্ঠ রোজ সোমবার আদালত মজকুরার প্রথম হাকিমের কাএম মোকাম শ্রীযুত কুর্টনী ইশমিট সাহেবের বৈঠকে।

ধর্ম্মচন্দ্র ও গয়রহ সায়েলান

সাএলদীগের উকিল সদাসুকপণ্ডিত হাজীর হইল। মৌজে ভূলুপুরের মণ্ডলহায়ের পুজারি-কর্ম্মে ভোজকজাতি ও শিব-নর্মাল্য-গ্রাহক কালুরামের বহালি বিষয়ে অন্য ২ বয়ান সম্বলিত সহর বারানশের মেজষ্টর সাহেব ও এলাকা বারানশের দায়ের সায়র আদালতের দ্বিতীয় হাকিমের হুকুমসকলের নারা-জীতে সায়েলদিগের সত্মোয়াল, হুলাসীরাম ও মানিকচন্দ্রের নামিক মুক্তারনামা ও ঐ উকিলের নামিক ওকালতনামা ও ইঙ্গরেজী সন ১৮২০ সালের ৫ ও ১৬ মেই ও সন ১৮২৩ সালের ৯।১০ আক্তুবর ও ২ দিজম্বর ও ১৮২৪ সালের মার্চ্চ মাসের লিখিত সহর বারানশের ফৌজদারি আদালতের ৬ কীতা রোবকারির নকল ইঙ্গরেজি সন ১৮২৪ সালের ৩ আপরেল ও সন হালের ২৯।৩১ মার্চ্চ ও ২৮ ও ৩০ আপরেল মাসের হওয়া এলাকা বারানশের দায়ের সায়ের আদালতের ৬ কেতা রোবকারির নকল ও ৪ কেতা এজাহারের নকল ও ৬ কেতা দরখাস্তের নকল ইত্যাদি দস্তাবেজা সহিত, জে হাল মাসের ৪ তারিখ দাখিল হইয়াছীল, তারাচন্দ্র ও লালচন্দ্রের উকিল মুনশী হসন আলীর হাজিরিতে, জে আপন নামিক তাহাদিগের পক্ষে ওকালত-নামা দাখিল করিলেক, দরপেশ হইয়া দৃষ্টী আইল। তদপরে সায়েল-দিগের উকিল পণ্ডিতদিগের[1] ব্যবস্থার তরজমায় নকল ইঙ্গরেজী অক্ষর ও পাঠে দাখিল করিলেক, পড়াগেল। পরে জিজ্ঞাসা গেল জে উভয়ের মানিত শালিষদীগের হাল সালের জানওরি মাসের ২১ তারিখের পাঠানো কৈফিয়ত কোতা। জবাব দিলেক 'মজুদ নাই'।

১. পণ্ডিত পণ্ডিত—ব্যপ০।

पुनराय जिज्ञासा गेल जे पाठशालार पण्डितेरा एमत लिखेन नाइ जे कालूराम पूजारिर वहालिर योग्य नहे, वरं एइ लिखिया छेन जे कोनो व्यक्ति भोजक पूजारि थाकने शास्त्रानुसारे हानि नाइ। आर एइ लिखिया छेन जे अतएव देवालय स्वतंत्र की साधारण थाकनेर विवरण आमारदीगेर निटक प्रकाश नाइ। यदि साधारण हय ओ अतएव ओ कालूरामके रहित करावार योग्य जाने, रहितेर योग्य बटे, ओ यदि वहाल राखनेर योग्य जाने, वहालिर योग्य वटे। अतएव जिज्ञासा जाय जे तोमार मओक्लेर सओयाले कि निमित्ते व्यवस्थार मजमुनेर व्यतिक्रम लिखियाछे। जवाव दिलेक जे सओयाल लिखन पर्य्यन्त व्यवस्था पहुँछिया छिल ना। परे व्यवस्थार इङ्गरेजीर तरजमाय जे दिगम्वरिदीगेर ओ सेतम्वरिदिगेर देवालय साधारण हय, कि स्वतन्त्र, ओ यद्यपि साधारण हय, ताहार पुजारि रहित ओ नियुक्त करण एक श्रेणीर क्षमताते हइते पारे, किम्वा दुइ श्रेणीरेइ क्षमतार आवश्यक राखे। आर कोन व्यक्ति भोजक जाति हओन प्रकारे ऐ देवालयेते तहाके पूजारि हओनेर निषेध शास्त्रानुसारे वोध हय कि ना। उचित् ये सायेलदीगेर सओयाल ओ एइ रोवकारि ओ इङ्गरेजी १८२४ सालेर ६ मार्च ओ १८२३ सालेर १० आक्तुवर मासेर लिखित सहर वारानशेर फौजदारि आदालतेर रोवकारि ओ सन हालेर २९ मार्च्च ओ २८।३० आपरेल हओया वारानशेर कोट सरकटेर रोवकारि अवगत हइया ऐ सओयाल सकलेर जवाव वुधवार पर दिवस दुइ प्रहर पन्तर्य्य[1] दाखिल करेन इति।

---

१. पर्यन्त—प्रति साधीयान् पाठः।

श्रीज्जंयतितराम्[1]

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुक्तकुर्टनीइशमिट-साहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तदाज्ञापितैतद्धर्म्माधिकरण-वादिनां प्रश्नपत्रम् अङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यचतुर्विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय-मार्चमासीयषष्ठदिवसलिखितत्रयोविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयाकतूबरमासीय-दशमदिवसलिखितवाराणस्यधिकरणफौजदारिसंज्ञकधर्म्माधिकरणलिखित-विचारपत्रपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयमार्चमासीयोनत्रिंशद्दिवसीयतादृ-शाब्दीयाष्टाविंशतिदिवसीयत्रिंशद्दिवसीयापरेलमासीयवाराणस्यधिकरणक[2]-कोटसरकटसंज्ञकधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्राणि[3] चावलोक्य यादृश-बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

उपरिलिखितपत्राणामर्थानवगत्य वादिप्रतिवादिनोर्द्वयोरेव पारश-नाथाख्यदेवोपासकत्वमिति निश्चितम्। पारशनाथाख्यदेवोपासना च धर्म्मशास्त्रे न[4] क्वापि लिखितेति। पारशनाथाख्यदेवोपासकान्तर्गतयोर्दिगम्बर-श्वेताम्बरयोस्तद्देवालयः साधारणः, पृथक् पृथग्देवालयद्वयं वेत्यत्रापि धर्म्मशास्त्रालिखितत्वेन[5] धर्म्मशास्त्रानुसारेण तद्देवालस्य साधारण्या-साधारण्यनिश्चयो भवतुं नार्हति। परन्तु पञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय-मार्चमासीयोनत्रिंशद्दिवसीयवाराणस्यधिकरणक—कोर्ट-सरकट-संज्ञक-धर्म्मा-धिकरणलिखितविचारपत्रेण विवादास्पदीभूतमन्दिरद्वयमध्ये एकं[6] मन्दिरं दिगम्बराणामसाधारणमित्युभयवादिसिद्धमिति गम्यते। ततस्तस्मिन्न-

---

१. श्रीर्ज्जयतितराम्—व्यप०।

२. वारानस्यधिकरणक०—व्यप०।

३. सवकठ—व्यप०।

४. ०ण—व्यप०।

५. धर्म्मशास्त्रलिखितत्वेन—व्यप०।

६. एकं एकं—व्यप०।

साधारणे मन्दिरे पूजकनियोगकरणं दोषसहितपूजकत्यागकरणं च दिगम्बराणामिच्छया भवति ।

द्वितीयञ्च मन्दिरं तयोर्द्वयोर्मध्ये कस्यासाधारणं भवतीत्युपरिलिखितपत्रैर्नावगम्यते इति । द्वितीयं मन्दिरं तयोर्द्वयोः साधारणं चेत् तदा तत्र पूजकनियोगकरणं दोषसहितपूजकस्य त्यागकरणञ्च तयोर्द्वयोरेवेच्छया भवति । यदि च तयोर्मध्ये एकस्यासाधारणं तन्मन्दिरमिति निश्चयो भवति तदा यस्यासाधारणं तन्मन्दिरं भवति तदिच्छयैव तत्र पूजकनियोगकरणं दोषसहितस्य पूजकस्य त्यागकरणमिति लोके व्यवहारसिद्धमपि । अथ च धर्मशास्त्रोक्तभूर्जकण्टकजातीय एव लोकभाषायां भोजक जातिशब्देन प्रसिद्धः । स च भूर्जकण्टकः षोडशवर्षपर्यन्तमुपनयनसंस्कारहीनस्वरूपव्रात्याद्[1] ब्राह्मण्यामुत्पन्नो[2] भवति (कुल्लूकः—मनुः—१०।२१) । व्रात्यस्य तूपनयनसंस्कारहीनत्वेन पतितत्वाद् ब्राह्मणजात्युक्तकर्मानर्हत्वम् । अतः सुतरां व्रात्योत्पन्नस्य भूर्जकण्टकशब्दवाच्यस्य भाषायां भोजक-जातिशब्देन प्रसिद्धस्य धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणकर्मानर्हत्वम्—इति मनुमिताक्षराविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थानुसारेणोत्तरम् ।

तत्र प्रमाणम्—

कामादिति अत्याज्यत्यागे ऋत्विजः ।
सदृत्विक्त्यागे[4] याज्यस्य च पणशतद्वयं दण्डः ॥
सदोषस्य तु त्यागे न दोषः इत्यर्थः ।
इति (पृ० ३३।१५-१६) विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥१॥
द्विजातयः सवर्णासु जनयन्त्यव्रतांस्तु यान् ।
तान् सावित्रीपरिभ्रष्टान् व्रात्यानिति विनिर्दिशेत् ॥
इति मनुवचनम् (१०।२०) ।

---

१. व्रात्यादिप्राद्ब्राह्म—व्यप० ।
२. उतपन्न०—व्यप० ।
३. ऋत्विक्०—विवादचि० ।

व्रात्यात्तु जायते विप्रात् पापात्मा भूर्जकण्टकः।
आवन्त्यवाटधानौ च पुष्पधः शैख एव च ॥
इति मनुवचनम् (१०।२१)।
उपनयनकालस्य परमावधिमाह—
आ[1]षोडशाद्द्वाविंशाच्चतुर्विंशाच्च वत्सरात्।
ब्रह्मक्षत्रविशां काल[2] औपनायनिकः परः ॥
अत ऊर्द्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मबहिष्कृताः।
सावित्रीपतिता व्रात्या व्रात्यस्तोमादृते[3] क्रतोः ॥ इति मिताक्षरा-लिखनम् (या० स्मृ० १।३७-३८)।

श्रीर्ज्जयतितराम् — श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण — श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

१६—रोबकारि मिसिल अदालत नेजामत सदर इङ्गरेजी १८२५ साल तारिख २२ माह सेतम्बर मतावक वाङ्गला १२३२ साल ७ आश्विन रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार काएम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत् कुटनी इशमिट साहेबेर बैठके।

धर्मचन्द्रप्रभृति — शायेल

सायेलदिगेर उकिल सदासुख पण्डित ओ ताराचान्द, सेताम्बरिर उकिल मुनशी मुहम्मद पानाह ओ मुनशी हशन

---

१. आषोडशात्—व्यप०।
२. ०च वतसरात—व्यप०।
३. कालश्चौपनायनिकः परः—व्यप०।
४. व्रात्यस्तोमात् क्रतोर्विनेति—व्यप०।

आलि हाजिर हइल। हुजुरेर तलव करा वारानशेन (वाराणसेय) पाटशाला(र) पण्डितदिगेर व्यवस्था असुद्ध, ओ ए आदालतेर पण्डितदिगेर व्यवस्था यथार्थ थाकन ओ शायेलदिगेर श्रेणीमत कोनो भोजाक जाति ठाकूर-पूजार कर्म्मेर योग्य ना हओन विशये ओ जती जाति पपाकर द्वाराय, जे ताहादिगेर नाम एइ दरखास्तेर निचे लेखा गियाछे, ए विषयेर ताहाकीकातेर प्रार्थनार सायेलदिगेर शओयाल अन्य-हेतु सम्वलित, ये हाल मासेर १७ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य....कार पहुच्छा, हाल शनेर १२ आगस्त मासेर लिखित वारानशेर कोर्ट शरकटेर रिटरन ओ रोवकारि इत्यादि कागज ओ पाटशालार पण्डितदिगेर जवाव सम्वलित पडा गेल। जाना गेल जे पाटशालार पण्डितेरा हाल शालेर २९ जुन मासेर हुकुम माफिक कालुराम भोजक पूजा करणेर योग्य हओन विशये द्वितीय व्यवस्था लिखियाछेन। अतएव हुकुम हइल ये ए आदालतेर[1] पण्डितेरा हालेर व्यवस्था सुन्दर रूप अनुमोदने पडीया ताहारदिगेर तजविजे शास्त्रानुसारे याहा हय लिखिया दाखिल करेन, ओ यद्यपि आपनदिगेर पूर्व्व व्यवस्थार कोन विशय परिवर्त्तकरण विवेचना करेन ताहार वेओरा कैफियत लिखेन, ओ सोमवार दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त जवाव दाखिल करेन; ताहा दृष्टेर परे उचित हुकुम देओया याइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाव व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपति–स्थानाभिषिक्त–श्रीयुत–कुर्टनी इशमिट साहेव-धर्म्माधिकरण–समर्पित–वाराणस्यधिकरणक–श्रीमत्–सरकार-कंपिनी

१. आदालतेरा पाटशालार हालेर—व्यप० ।

वहादुराख्य-सार्व्वभौम-पाठशालास्थ-पण्डित-लिखित-व्यवस्था-पत्रम-वलोक्य विविच्य च शास्त्रानुसारेण पर्य्यवसितार्थो लिख्यते। उपरिलिखित-व्यवस्थापत्रे यानि प्रमाणानि लिखितानि तानि विश्वम्भरवास्तुशास्त्रस्थानि जातिविवेकस्थानि बालम्भट्टकृताचाराध्यायस्य मिताक्षराटीकारूपग्रन्थ-स्थानीति (?) लिखितम्। परन्तु केषां मुनीनां तानि वचनानीति तत्र न लिखितम्। तेषां ग्रन्थानामिदानीं प्रचाराभावात् कुत्रापि तदनुसारेण व्यवस्था न दीयते। केनापि यद्यप्यप्रचरिततत्तद्ग्रन्थानुसारेणैव तत्तत्पण्डितै-र्व्यवस्था दत्ता। परन्तु तद्व्यवस्थालिखितवचनजातैर्भोजकजातिर्द्देवमन्दिरे देवपूजार्थं नियोक्तव्य इति नायाति। तथा हि भोजकजातेरुत्पत्तिप्रकार-द्वयं लिखितम्। तैस्तद्वचनजातैः षोडशवर्षपर्य्यन्तमुपनयनसंस्काररहीन-स्वरूपव्रात्याद्विप्राद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नो भूर्जकण्टकजातिरित्येकः प्रकारः। द्वितीयश्च तस्मादेव भूर्जकण्टकाद् ब्राह्मण्याम् (उत्पन्नः) आवर्तकजातिः, आवर्तकाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नः कटधानजातिः, कटधानाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नः पुष्पशेखरजातिः, पुष्पशेखरजातीयायां स्त्रियां ब्राह्मणेनो[1]त्पन्नो भोजक-जातिरिति।

स एव भोजको मागध इत्यनयोर्पक्षयोर्म्मध्ये पूर्व्वः पक्षस्तेषामभिमत-श्चेत्तदा पूर्व्वपक्षोक्तभूर्जकण्टकस्य देवपूजार्थं देवमन्दिरे नियोगः शास्त्रानु-सारेण न सम्भवति, संस्कारहीनस्य व्रात्यस्य सावित्रीपतितत्वेन धर्म्मशास्त्रोक्त-ब्राह्मण[2]जात्युक्तकर्म्मानधिकारित्वात्। तदुत्पन्नस्य भूर्जकण्टकस्यापि सावित्रीपतितत्वेन सुतरां धर्म्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्मा[3]नर्हत्वम्। द्वितीयः पक्षस्तेषाममिमतश्चेत्तदा द्वितीयपक्षोक्तभोजकजातेर्देवपूजार्थं देवमन्दिरे नियोगः शास्त्रानुसारेण कदाचिदपि न सम्भवति, सावित्रीपतित-

---

१. ब्राह्मनो०—व्यप०।

२. ०जत्युक्त०—व्यप०।

३. कर्म्मनर्ह०—व्यप०।

व्रात्यवंशोद्भवायां पुष्पशेखरायां स्त्रियां ब्राह्मणेनोत्पन्नस्य भोजकस्य तदभिमत-मागधाभिधस्य पतितस्त्रीजातत्वेन पतितत्वात्, मागधत्वेन वर्णसङ्करत्वाद्[1] धर्म्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्म्मानर्हत्वम् ।

यत्तु तैरुक्तं क्वचित्[2] पुस्तके भूर्जकण्टकस्य पूजकत्वविषये निषेधाभावाद् देवमन्दिरे देवपूजार्थं नियुक्तो भोजकजातीयः कालूरामाख्यो निष्कासयितुमयुक्त एव, तदपि न—

अत ऊर्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मबहिष्कृताः । (यास्मृ० १।३८)
इत्यादिना योगीश्वरेण,
सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्य्यविगर्हिताः । (२।३९)

इत्यनेन मनुना [च] धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्म्ममात्र एव तस्यानधिकारविधानात् ।

यत्तूक्तम्—भोजकापेक्षया निकृष्टस्य देवलकादेर्धर्म्मशास्त्रे देवपूजकत्वमुक्तम्, तत्र प्रमाणं किमपि न लिखितं तैरस्माभिरपि न दृष्टं क्वापि, अतस्तदपि हेयमेव । तस्मादस्माभिर्लिखिता पूर्व्वव्यवस्थाऽस्मिन् विवादे परावर्तनयोग्या न भवतीति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

१. °शङ्कर०—व्यप० ।
२. क्वचित—व्यप० ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

लम्वर २३०२
१७ जानकीनाथराय प्रभृति आपीलाण्टान्
गङ्गागोविन्दवन्द्योपाध्याय रस्पाडण्ट
सओयाल

सदर देओयानी आदालतेर कायेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनि इशमिट साहेवेर हुजुर हइते जानकीनाथराय प्रभृति आपिलाण्टान गङ्गागोविन्द(वन्द्यो)पाध्याय रष्पाडण्टेर २३०२ लम्वरेर मोकद्माते अंगरेजी १८२५ सालेर २९ जुन मासेर लिखित ए आदालतेर पण्डितानेर नामे कल्य दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन प्रमाणेर तफसील संवलित जवाव दाखिल करणे हुकुम। सवाल एइ ये :—

प्रथम सओयाल—१

वङ्गदेश निवासी एक जन ब्राह्मण आपन मातार त्यक्त धनेर उपर दखिल थाकिया वैमात्रेय भ्राता ओ स्त्री उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, ओइ त्यक्त धन स्त्रीके वर्त्तिवे, कि वैमात्रेय भ्राताके ?

द्वितीय सओयाल—२

यद्यपि स्त्रीके वर्त्ते, तवे स्त्री निःसन्ताना मरिले, ओइ त्यक्त धन वैमात्रेय भ्राताके आर्शिवे कि ना ?

तृतीय सओयाल—३

ओइ दुइ जनेर मातामह पृथक थाकन, एक वैमात्रेय भ्रातार उत्तराधिकारि द्वितीय वैमात्रेय भ्राता हओने शास्त्रमतो[1] निषेध आछे कि ना ?

---

१ शास्त्रमते—इति साधीयान् पाठः।

चतुर्थ सओयाल—४

यद्यपि प्रथम सओयालेर जवावानुसारे मृत व्यक्तिर त्यक्त धन स्त्रीके पतिर ऋण परिशो(ध)नार्थे ओ ताहार स्वर्गार्थे किम्वा अन्य हेतुते किम्वा आपन इच्छा ओ मतक्रमे ओइ सम्यक धन किम्वा तार मध्ये कतोक विक्रय ओ हेवाकरणेर क्षमता आछे कि ना ?

पञ्चम सओयाल—५

यद्यपि प्रपौत्र ओ पुत्रेर दौहित्रेर वैमात्रेय भ्राता वर्त्तमान आछे, ओइ दुइ जनेर मध्ये दौहित्रेर स्त्री, जे पतिमरणेर परे ताहार धनेते दखिलकार छिलो, निः सन्ताना मरिले पर मातामहेर त्यक्त धन कोन व्यक्तिके अर्शे ?

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुत्कुर्टनीइशमिटसाहेव-धर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

वङ्गदेशीयः कश्चन ब्राह्मणः स्वमातृत्यक्तधनं प्राप्य तद्धन आयत्तत्वं सम्पाद्य स्वपत्नीमुत्तराधिकारिणीं स्ववैमात्रेयभ्रातरञ्चोत्तराधिकारिणं संरक्ष्य मृतस्तत्र तद्धनं यदि स्वमातुस्त्रीधनं स्यादथवा तस्याः पैतृकं धनमुत्तराधि-कारित्वेन तत्संक्रान्तं स्याद्, उभयथाप्युत्तराधिकारित्वेन पुत्रेण प्राप्तं तद्धनं पुत्रमरणानन्तरं पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, तत्र च सत्यां पत्न्यां तस्या एवाधिकारो न तु वैमात्रेयभ्रातुरिति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । इत्यादि दायभागादि(दाभा० ११।४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण तद्धनाधिकारिण्याः पत्न्या मरणोत्तरं दुहितृदौहित्रपितृमातृसहोदर[1]भ्रातृपर्य्यन्ताभावे तद्धने वैमात्रेयभ्रातुरधिकार इति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणम् ॥ १ ॥ *तत्रापि प्रथमं सोदरस्तदभावे वैमात्रेयः*—इति दायभागादिग्रन्थ (दाभा०—११।५।७)[2] लिखनम् ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

भिन्नमातामहकवैमात्रेयभ्रातृधने भिन्नमातामहकापरवैमात्रेयभ्रातुरधिकारे शास्त्रानुसारेण निषेधो नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणम् ॥ ३ ॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण मृतस्य धनिनः पत्न्या गृहीतधनायाः पतिकृतकुटुम्बभरणार्थर्णपरिशोधनार्थं स्वशरीरधारणार्थं भर्तृकुटुम्बभरणार्थं पत्युरावश्यकश्राद्धाद्यर्थं च तद्धनविक्रयाधिकारः । एवं पतिस्वर्गार्थधनानुसारेण दानाधिकारोऽपि । परन्तु यावद्धनविक्रयेण[3] पतिकृतकुटुम्बभरणार्थर्णपरिशोधनं पतिश्राद्धादि पतिकुटुम्बभरणं स्वशरीरधारणञ्च भवति तावद्धनविक्रय एवाधिकारो, न त्वधिकधनविक्रये । यदि च समुदायधनविक्रय-

१. सहदर०—व्यप० ।
२. भ्रातरस्तथेत्युक्तभ्रातुरधिकारावसरे प्रथमं सोदरो गृह्णीयादित्यर्थः । तस्य त्वभावे सापत्नो भ्राता, एकप्रभवत्वेन तस्यापि भ्रातृशब्दार्थत्वात् । (दाभा० ११।५।७) ।
३. °विक्रयते—व्यप० ।

व्यतिरेकेण पतिकृतकुटुम्बभरणार्थर्णपरिशोधनादिकमेव न भवति तदा तदर्थं समुदायधनविक्रयेऽप्यधिकारः, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा समुदायधनस्य यत्किञ्चिद्धनस्य वा दानविक्रयाधिकारः।

अत्र प्रमाणम्—

'कर्त्तुकामेन[1] वा भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया।

अप्रपन्नापि सा दाप्या धनं[2] यद्यात् श्रितं स्त्रिया॥

इति विवादभङ्गार्णव (१ विवाभ०पृ०२०६) विवादार्णवसेतु(पृ० ३०) धृतनारदवचनम्[3] (पृ० ५१)॥ १॥

यदि भर्तृधनं स्त्रिया गृहीतमप्र(पन्ना)पि स्वीकारमकुर्वत्यपि शोधयेत्। यदि तु मृत्युकाले भर्त्रा त्वया मम ऋणं देयमित्याज्ञापिता स्वीकारं करोति तदाऽगृहीतधनापि शोधयेत्—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् (१, पृ० २०६ ख)॥ २॥

एवञ्च *पत्युरौर्द्ध्वदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतमिति*—इति दायभागलिखनम् (११।१।६१) ॥३५॥

वर्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम्, तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (११।१।६२)॥ ४॥

रिक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इत्यादि विवादभङ्गार्णवादि(१, पृ०२१४ ख) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्[4] (२।५१)॥ ५॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्[5] कथञ्चन—इति भारताद् (१३।४७।२४) अपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकार इति दायरहस्य लिखनञ्चेति॥ ६॥

---

१. मर्तुकामेन—विभसे०।

२. धनं यद्याश्रित स्त्रिया—विभसे०।

३. न स्त्री पतिकृतं दद्यादृणं पुत्रकृतं तथा। अभ्युपेतादृते यद्वा सह पत्या कृतं भवेत्॥ नामसं० (पृ०२४)। विवादार्णवसेतौ धृतमिदं नारदीयं वचनं नारदमनुसंहितायां बहुभिर्भिन्नैः पदैः पठितम्।

४. रिक्थग्राह ऋणं दाप्य—इति यास्मृ०पाठः, ऋक्थग्रही व्यप०।

५. दायात्—इति पाठान्तरम्। पितृवित्तात् इति—धर्मकोशस्थः पाठः।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण धनाधिकारिणि दौहित्रेऽवगते सति दौहित्र-मरणानन्तरं गृहीतधनायास्तत्पत्न्या मरणोत्तरं दौहित्रवैमात्रेयभ्रातुरधिकारो न तु प्रभुलिखितप्रश्नार्थावगतधनाधिकारिदौहित्रप्रमातामहप्रपौत्रस्य वर्त्तमानस्याधिकार इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ५ ॥

अत्र प्रमाणम्—

तृतीयप्रश्नोत्तरविहितप्रमाणम् ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

———

नंवर २५३९

१८. रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर अंरेजी १८२५ साल तारिख ३ माह अगस्ति मतावक वाङ्गला १२३२ साल तारिख २० माह श्रावण रोज वुधवार आदालत मजकुरार काएम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके :—

मृत राजा अरिमर्द्दनशाहि आपिलाण्ट
शिवदयाल उपाध्याय रष्पाडण्ट

हाल शालेर १६ जुन मासेर लिखित जिला गोरकपुरेर जज साहेवेर एक किता रिटरन ताहार शामिलेर रोवकारि आदि सम्वलित लम्वर पहुँछियाछे, अद्य पडा गेलो। हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितेरा हाल सनेर २२ जुन मासेर हओया जिला गोरकपुरेर देमानी आदालतेर रोवकारिर मजमुन वोध करिया कल्य दुइ प्रहर पर्य्यन्त निवेदन करेन जे ऐ देशेर शास्त्रा-

नुसारे देलमर्द्दनशाहि ओ समशेरशाहि दुइ सहोदर भ्राता, ओ पृथ्वीपतिशाहि सहोदर भ्रातुष्पुत्र, एहार मध्ये मृत राजा अरिमर्द्दनशाहिर उत्तराधिकारि कोन व्यक्ति वोध हय। ओ मुनसी महम्मद पनाह ओ लाला अवधलाल ये प्रकाशे ताहादिगेर नासिक ओकालतनामा ओइ देलमर्द्दनशाहिर तरफ हइते पँहुछियाछे ताहा कल्यकार मिशिले दाखिल करेन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशार्थवोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्रानपत्यः पत्न्यादिपितृपर्य्यन्तरहितो राजा अरिमर्द्दनशाहिसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो दलमर्द्दनशाहि-शमशेरशाहिसंज्ञकौ द्वौ सोदरभ्रातरौ पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकमेकं सोदरभ्रातृपुत्रं च संरक्ष्य मृतः, तत्र तत्सोदरभ्रातरौ दलमर्द्दनशाहिशमशेरशाहिसंज्ञकावेव तदुत्तराधिकारिणौ। सतोः सोदरभ्रात्रोः सोदरभ्रातृपुत्रस्य पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकस्य न तदुत्तराधिकारित्वमिति। अत्र राज्ञोऽरिमर्द्दनशाहिसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वविषये विवदमानानां अंगरेजशब्दप्रतिपाद्यपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय— जुनमासीयद्वाविंशतिदिवसीयगोरखपुरसंज्ञकप्रदेशाधिकरणकदेमानी-आदालत-संज्ञकधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रनिविष्टानां त्रयाणां मध्ये राज्ञी वदनकुमारिनाम्नी काचित् स्त्री यद्यपि लिखिता, परन्तु तस्याः कश्चिद् वृत्तान्तस्तद्विचारपत्रे न लिखित इति सा राज्ञी राजा-अरिमर्द्दनशाहि-संज्ञकस्य का भवतीति न ज्ञातः। अतएव सा राज्ञी राज्ञोऽरिमर्द्दनसाहि-संज्ञकस्योत्तराधिकारिणी भवति न वेत्यपि न लिखितः। एवं तत्पत्रनिविष्टानां त्रयाणां मध्ये पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकस्य धनिनो राज्ञः सोदर-

भ्रातृपुत्रश्चाहं राज्ञो दत्तकपुत्रः, एवं तमलिकनामाख्यं पत्रं राज्ञा मह्यं दत्तमित्यादिवृत्तान्तो यद्यपि तत्पत्रे लिखितः, किन्तु यथाशास्त्रं दत्तकपुत्र-ग्रहणं तेन राज्ञा कृतं न वेत्यस्य, एवं तमलिकनामाख्यं पत्रं तस्मै राज्ञा दत्तं न वेत्यस्य च तत्पत्र(ा)लिखितत्वेन तस्य दत्तकपुत्रत्वादिसिद्धिर्भवति न वेत्यपि निश्चयः कर्त्तुं न शक्यत इति गोरखपुर-संज्ञक-प्रचलित-मिताक्षरा-वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । तत्सुताः—

इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २१६)वीरमित्रोदय (पृ० ६०२)प्रभृति-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि तद्धृतबृहद्विष्णुवचनम् (मिता० पृ० २१७; वीर० पृ० ६०३) ॥२॥

अनन्तरः[1]सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् । इत्यादि मनु(९।१८७)-वचनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिः शरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

श्रीर्जयतितराम्

१९. प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके सवोयाल एइ ये—

पण्डितदिगेर स्थाने सवोयाल :—

१. अनन्तरसपि०—व्यप० ।

ये हिन्दु ब्राह्मण हय, सोदरा दुइ भगिनीके विवाह करिया छोइ दुइ जनकेइ एकत्र आपन वाटीते राखिते पारे कि ना, वचन ओ कोन ग्रन्थेर लिखित ताहा सहित जवाव तलव इति।

पण्डितदिगेर आरजि सन १८२५, १३ सेतम्बर दाखिल हइल।

कल्य हुजुर हइते एइ मजमुने हुकुम हइयाछे ये हिन्दु ब्राह्मण जाति दुइ सहोदरा भग्नीके विवाह करिया एकत्र ऐ दुइ जनके आपन वाटीते राखिते पारे कि ना-वचन ओ ग्रन्थेर नाम सम्वलित आमरा जवाव दाखिल करि। खोदावन्द सहोदरा दुइ भगिनीके विवाह-करण ओ ताहादिगेके एकत्र आपन वाटीते राखन वङ्गदेशे सम्यक प्रकारे ओ पश्चिमदेशे कोनो स्थले चलित आछे। ये विषयेर दलिल धर्म्मशास्त्रेर ग्रन्थे एइ क्षण पर्य्यन्त पाइ नाइ। तलाष करितेछि, पाइले हुजुरे समर्पन करा प्रश्नेर जवाव दाखिल करिव।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेव-धर्म्माधिकरणलिखित(म्)केनचिद् ब्राह्मणेनैकोदरप्रसूते द्वे कन्ये विवाह्य स्वगृहे स्थापयितुं शक्यते न वेत्यर्थकप्रश्न[1]पत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

वङ्गदेशे सर्व्वत्र, पश्चिमदेशेऽपि क्वचिदेकेनैकोदरप्रसूते द्वे कन्ये ततोप्यधिकतरा[2] विवाह्य स्वगृहे स्थाप्यन्ते इति व्यवहारः। अत्र विषये

१. प्रश०—व्यप०।

२. ततोप्यधिकारा—व्यप०।

यद्यपीदानीं प्रसिद्धधर्म्मशास्त्रे क्वापि विधिनिषेधौ न लिखितौ, तथापि पुराणादौ मुनीनां तादृशाचारदर्शनात्तदनुसारेणेदानीन्तनानामपि तादृशाचारः। अतएव तत्तद्देशाचारानुसारेणैव तत्तद्देशीयव्यवहारनिश्चयो भवितुमर्हतीति धर्म्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

यावत् सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति।
सर्व्वं तद्यौवनाश्वस्य मान्धातुः क्षेत्रमुच्यते॥ (९।६।१०)
शशबिन्दोर्दुहितरि बिन्दुमत्यामधान्नृपः।
पुरुकुत्समम्बरीषं मुचुकुन्दञ्च योगिनम्॥ (९।६।३८)
तेषां स्वसारः पञ्चाशत् सौभरिं वव्रिरे पतिम्। (९।६।३९-१)
वृतःस राजकन्याभिरेकः पञ्चशतावरः॥ (९।६।४३-२)
एवं गृहे वसन् कालं विरक्तो न्यासमास्थितः।
वनं जगामानुययुस्तत्पत्न्यः पतिदेवताः॥ (९।६।५३)

इति श्रीभागवतीयनवमस्कन्धे सौभर्य्युपाख्यानम्॥ १॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्त्तिताः।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥

इतिवीरमित्रोदय[1]ग्रन्थ(धको०—पृ० १६४१, स्मृच०पृ० १०, धर्मास्तत्प्र०—इति पाठान्तरम्,)धृतबृहस्पतिवचनम्॥ २॥

जातिजानपदान् धर्माञ्श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपादयेत्॥

इति मनुवचनञ्चेति (८।४१)॥३॥

श्रीर्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

१. श्लोकोऽयं वीरमित्रोदये न दृष्टः।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

सओयाल—

२०. रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर इंरेजि १८२५ साल तारिख ८ नवेम्वर मोतावक वाङ्गला १२३२ साल तारिख २४ कार्त्तिक रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार कायेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठक—

कुन्दनगिर	आपिलाण्ट
दुर्गागिर ओ गायरह	रेष्पाडण्टान

एइ सनेर तारिख १३ सेतम्वर माहार जेला कानपुरेर यजसाहेवेर एक केता रोवकारिर सम्वलित रिटरन'''लम्वरे प्राप्त हइया अद्य पडा गेल। हुकुम हइल ये ए अदालतेर पण्डितेरा एइ सनेर तारिख १० आगष्ट माहार गुजरान शिवराजपुरेर कायेम मोकाम थानादार सयिद कादेर आलिर आरजि दृष्टि करिया आरज करेन ये गङ्गा वाखन[2] यवन जातीया वेश्यार गर्भ्भे जन्मिया ओ आपनार ज्ञानावस्थावधि हिन्दुर धर्म्म आचरण स्वीकार करिया छे, ओ ताहार पिता हिन्दु छिल, एतत्प्रयुक्त शास्त्रानुसारे हिन्दुर गणनाय आसिवेक कि ना, एवम् ए आदालतेर आरवावशरा उपरे उक्त कागज पडिया फतओया लेखेन ये ऐ व्यक्ति अपनार यवनि मातार त्यक्त धनेर उत्तराधिकारि (शरा) नुसारे हइते पारे कि ना। पण्डितदिगेर ओ आरवावशरा-प्रभृतिर (व्यवस्था) अवलोकनानन्तर उचित हुकुम देओया याइवेक इति।

---

१. श्रीजंयति०—व्यप०।

२. ०वाकस—इ ति साधीयान् पाठः।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेब-धर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमेवं तत्समर्पित-अंगरेजी-शब्दप्रतिपाद्य[1] पञ्च-विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीयदशदिवसलिखितशिवराजपुरग्राम-स्थस्थानपालप्रतिनिधि-सैयद-कादर-अली-संज्ञकस्य विज्ञप्तिपत्रमवलोक्य यादृशार्थबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

उपरिलिखितप्रश्नपत्रसमर्पितपत्राभ्यां गङ्गाबक्ससंज्ञकस्य यवन-जातीयवेश्यागर्भ्भजातत्वेन लिखितस्य स्वज्ञानावधि हिन्दुजातीयधर्म्मा-चरणेऽपि तत्पितुर्हिन्दुजातित्वेऽपि हिन्दुजातावन्तर्भावः शास्त्रानुसारेण भवितुं न शक्यते। प्रत्युत[2] गङ्गावक्सपितुर्हिन्दुजातीयस्य उमरावगिर-संज्ञकस्य सन्न्यासिनो[3] ज्ञानकृतयवनीगमनेनाकृतप्रायश्चित्तस्य यवन-जातितुल्यत्वेन तत्पुत्रस्य तज्जन्यत्वेन यवनीगर्भ्भजातित्वेन च सुतरां यवन-जातीयत्वमेवेति कान्धपुराख्यप्रदेशप्रचलितमनुमिताच्चरानुसारिणी व्यवस्था-इति।

तत्र प्रमाणम्—

चण्डालान्त्यस्त्रियो गत्वा भुक्त्वा च प्रतिगृह्य च।
पतत्यज्ञानतो विप्रो ज्ञानात्साम्यन्तु गच्छति॥

---

१. पतिपाद्य—व्यप०।

२. प्रत्यत—व्यप०।

३. सन्यासि—व्यप०।

इति मनुसंहिता (११।१०५)मिताक्षरादिग्रन्थ[1]धृतमनुवचनम् ।

श्रीर्ज्जयतितराम्   श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण   श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल कावेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनि इशमिट साहेवेर वैठके—

———

२१. सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर सओयाल—

यद्यपि दुइ जन हिन्दु ब्राह्मण जाति सरिकिमते मदिरार वोतल सकल क्रय विक्रयेर वाणिज्य करे। ए प्रकार वाणिज्य वङ्ग-देशे ओ पश्चिमदेशेर शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि असिद्ध; ओ यद्यपि असिद्ध हय सरिकीर शेष[2] हइले पर एक अंशीके अन्य अंशीर उपर ताहार लभ्येर अंश दाओया अर्शे कि ना। उचित ये ए विषयेर जवाव अगौणे दाखिल करेन इति।

जवाव-व्यवस्था

ब्राह्मणजातेर्मंदिरापात्रव्यापारः शास्त्रसिद्धो न भवति। यद्यपि निन्दितत्वेन तेन कर्म्मणा द्वयोर्ब्राह्मणयोः संभूयकारिणोरुत्पन्नं धनम् तत्र द्वयोः समांश इति शास्त्रानुसारिणी व्यवस्था।

तत्र प्रमाणम्—

याजनाध्यापनप्रतिग्रहैर्द्विजो धनमर्ज्जयेत्[3]—इति दायभाग[4]मिताक्षरा-(पृ० ३१.२)धृतमनुवचनम्[5] (१०।७६) ॥१॥

---

१. वचनमिदं मिताक्षरायामुपपातकशुद्धिप्रकरणे (यास्मृ० ३।२६५) नोपलभ्यते।

२. शेष शेष—व्यप० ।

३. मर्ज्ज्येत्—व्यप० ।

४. षण्णां तु कर्म्मणामस्य त्रीणि कर्म्माणि जीविका।
याजनाध्यापने चैव विशुद्धाच्च प्रतिग्रहः ॥
इति मनुस्मृतिवचनम्। तथा च मिताक्षरायाम् ॥

५. दायभागे वचनमिदं नोपलब्धम्।

यदा तु स्वत्वं लौकिकं तदा—

असत्प्रतिग्रहादिलब्धस्यापि स्वत्वात् इति मिताक्षरा (पृ० १६८-१६६) लिखनञ्चेति ॥२॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

श्रीर्जयतितराम्

सओयाल

२२. नानाशास्त्राध्यापक श्रीयुत वैद्यनाथमिश्र तथा श्रीयुत रामतनुविद्यावागीशपण्डितान् सदर देओयानि आदालत सच्चरित्रेषु—

यदि स्यात् कोन व्यक्तिर दुइ पुत्र थाके, सेइ व्यक्ति आपन जीवत्समाने आपनार जमीदारी सेइ दुइ पुत्रके समर्पण करे, आर ताहार कतक दिवस परे ओइ कर्त्ता व्यक्तिर वर्त्तमाने ताहार ज्येष्ठ पुत्र एक स्त्री राखिया ताहाके पोष्यपुत्र राखिवार निमित्तक अनुमति पत्र लिखिया दिया मृत्यु हय। ताहार कतक दिवस परे ओइ कर्त्ता व्यक्ति, अर्थात् पुत्रदिगेर पितार, परलोक हय। तवे शास्त्रानुजाय ओइ कर्त्ता व्यक्तिर ज्येष्ठ पुत्रेर स्त्री जमीदारीर हिस्सा पाइते पारे कि, केवल खोरपोष पाय। यदि स्यात् खोरपोष पाय, तवे कर्त्ता व्यक्तिर कनिष्ठ पुत्रेर नाम संवलित ओइ स्त्रीलोकेर नाम सेरस्ताते दाखिल करा आवश्यक कि; कि प्रकार, शास्त्रानुजाय जाहा यथार्थ हय इहार विवेचना करिया अतित्वराय प्रत्युत्तर लिखिवेन इति। २२ फिवरवरि—

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था-पत्र ।

रोवडाख्यस्थानाधिपतिप्रेषितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-नुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि पित्रा द्वयोः पुत्रयोः स्वस्वामिकसमस्तस्थावरास्थावरधनं समर्पितम्, ततःकिञ्चित्कालानन्तरंजीवत्येव पितरि तयोर्मध्ये ज्येष्ठः पुत्रः स्वजायां प्रति दत्त-कपुत्रकरणार्थमनुमतिपत्रं लिखित्वा दत्त्वा मृतः, तदनन्तरं कनिष्ठपुत्रं संरक्ष्य तयोः पिता मृतः स्यात्, अत्र प्रभोः पत्रलिखितसमर्पणशब्दस्यार्थद्वयं भवति। स्वस्वत्वत्यागपूर्व्वकपरस्व[1]त्वापादनरूपं दानम्,सत्यपि स्वस्वत्वे धनसंरक्षणार्थ-माज्ञाकरणं च । तत्र यदि पित्रा स्वस्वत्वत्यागपूर्व्वकपरस्वत्वापादनरूपं[2] दानं कृतं स्यात्तदा तद्दानेन पितुः स्वत्वापगमात् पुत्रयोरेव तद्धनं जातम् । अतो जीवत्यपि पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्यानुमत्या भविष्यत्तत्पत्नीकृतदत्तकः पुत्र-स्तद्धने स्वपितृयोग्यांशं लब्धुमर्हति । यदि तदनुमत्या तत्पत्नीकृतो दत्तकः पुत्रो नैव भविष्यति तथापि दानपक्षे स्त्रीत्वेन तत्पत्न्यपि स्वभर्तृयोग्यांशभागिनी भवति । यदि च पित्रा सत्यपि स्वस्वत्वे धनसंरक्षणार्थमाज्ञा कृता स्यात्तदा तदाज्ञया पितुः स्वत्वाविनाशेन पुत्रयोस्तद्धनं न जातम् । अतो जीवति पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्य तद्धनांशयोग्यताविरहेण तद्धने स्त्रीत्वेन तत्पत्न्या नाधिकारः। किन्तु पत्यनुमत्या भविष्यद्दत्तकस्य पितामहधने यादृशोंऽशो भविष्यति तादृशांशसंरक्षणकर्तृत्वेन भविष्यद्[3]दत्तकस्याप्राप्तव्यवहारकाल-पर्य्यन्तं राज्ञा सा नियोक्तव्या । ततः सर्व्वथैव कर्त्तुः कनिष्ठपुत्रनामसहितं तस्या(पि)नाम राजस्थानेऽवश्यं लेख्यम्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभाग-व्यवहारतत्त्वप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

---

१ °परस्वत्वादान°—व्यप° ।

२ °परसत्वापादान°—व्यप° ।

३. भविष्यत्°—व्यप° ।

तत्र प्रमाणम्—

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्व्वकपरस्वत्वापादनं[1]दानम्—इति (याज्ञवल्क्यस्मृति-टीकासुबोधिनी पृ० ७४१) कुल्लूकभट्टलिखनम् ॥ १ ॥

न भ्रातरो न पितरः पुत्रा रिक्थहराः पितुः—इति मनुवचनम् ॥ २ ॥ (६।१८५)।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाय०-११।१।४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ३ ॥ (२।१३५)

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति दायभागादिग्रन्थधृत-देवलवचनम् (दाय ६१।१८) ॥ ४ ॥

पुत्रान्[2] द्वादश यानाह नृणां स्वायम्भुवो मनुः ।
तेषां षड्बन्धुदायादाः षडदायादबन्धवाः ॥
औरसः क्षेत्रजश्चैव दत्तः कृत्रिम एव च ।
गूढोत्पन्नोऽपविद्धश्च दायादा बान्धवाश्च षट् ॥
—इति मनुवचनद्वयम् ॥५॥ (६।१५८-१५९)

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्तिं च येऽभिकांक्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥
—इति दायभागादि(ग्रन्थ–, दाय-१।४५)धृतमनुवचनम्[3] ॥६॥

अभावे बीजिनो माता तदभावे तु पूर्व्वजः ।
—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ६४६५)धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ३० २।३३) ॥७॥

---

१. °पादानं—व्यप० ।

२. पुत्रान—व्यप० ।

३. व्यासवचनमिदमिति धर्म्मकोषाज्ज्ञायते, मिताक्षरायाम् (१।११२) इदमुद्धृतम् । मनुस्मृतौ तु एतन्न दृश्यते । मनोर्वचनमिदमिति दायभागेऽप्युल्लिखितम् ।

अप्राप्तव्यवहाराणां[१] धनं व्ययविवर्जितम् ।
न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु प्रोषितानां तथैव च ॥

—इति दायभाग(पृ० ६२ ३।१६)धृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥८॥ (८४५)।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल बोरडरमनु

———

श्रीर्जयतितराम्

२३—सदर नेजामत आदालतेर पण्डितदिगेर नामे सओयाल।

श्रीहट्टनिवाशि एक व्यक्ति आपन दाशी, ताहार चारि पुत्र ओ एक कन्या सहित मूल्य निर्धार्य्य करिया अन्य कोनो व्यक्तिर निकट विक्रय करिते चाहे। ताहारा अर्थात् ऐ दाशी-प्रभृतिरा आदालते एइ रूप दरखास्त गुजराइलेक ये आमरा आपन मनिवेर सेवा करिते सम्मत आछि, तथापि आमारदिगेर मनिव शत्रुता करिया जाहार निकट आमारदिगेके विक्रय करिते उद्यत हइयाछे ताहार सहित एइ प्रकार योग करियाछे ये आमादिगेके भिन्न देशे निया पृथक २ भिन्न २ स्थाने विक्रय करे। अतएव जिज्ञासा जाय—श्रीहट्टदेशेर चलित शास्त्रमते एइरूप विक्रयेर स्थाने दासदिगेर ए प्रकार ओजर सिद्ध हय कि ना; यदि सिद्ध हय तवे ऐ दास-व्यक्तिरा आपनादिगेर स्वीकारमत अन्यत्रक जन क्रयकर्त्ता निर्दिष्ट करिते पारे कि ना; किम्वा ताहार निद्धार्य्य हओया मूल्य यद्यपि कोन प्रकारे मजुत करिते पारे, मूल्येर टाका आदाय करिया खालाश पाइते पारे कि ना इति।

---

१. बालपुत्रे मृते ऋक्थं रक्षेत् तत्तन्तुबन्धुभिः—कास्मृसा० ८४५॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

प्रभुक्तप्रश्नानुसारेणोत्तरं लिख्यते—उपरिलिखितप्रश्नार्थावगमेन शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानां मध्ये एतत्प्रश्नलिखितदासप्रभृतयो गृहजाता अवगम्यन्ते। तत्र च गृहजात-क्रीत-लब्ध-दायप्राप्तात्मविक्रेतॄणां पञ्चानां दासानां स्वामिप्रसादं विना न दास्यमोक्षः। तथा च यदि दासविक्रये प्रसन्नः स्वामी गृहजातादीनां पञ्चानां दासानां स्वकल्पितमूल्यद्वारा विक्रयेण दास्यमोक्षमिच्छति तदा प्रभुत्वात् स्वातन्त्र्याच्च[1] स्वामिसेवां कर्तुमिच्छतामपि दासानां विक्रयं कर्तुमर्हति। तत्र यदि स्वामिनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशात् स्वकल्पितदासमूल्यग्रहणे दासानामात्यन्तिकं दुःखं स्यात्तदा दासनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशादन्यस्मात् क्रेतुः सकाशाद्वा तदेव स्वकल्पितदासमूल्यं गृहीत्वा स्वामिनो गृहजातादिदासमोक्षणं शास्त्रीययुक्तिसिद्धं भवितुमर्हति, दासनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशादन्यस्मात् क्रेतुः सकाशाद्वा स्वकल्पितदासमूल्यग्रहणेऽपि स्वामिनः क्षतिविरहात्[2]। परन्तु गृहजातादयो दासाः स्वधनात् स्वामिकल्पितमूल्यं दत्त्वा कदाचिदपि दास्यान्न मुच्यन्ते दासधनेऽपि स्वामिनः प्रभुत्वात्—इति वङ्गदेशान्तर्गतश्रीहट्टप्रदेशप्रचलितविवादभङ्गार्णवदायक्रमसंग्रहदायभागप्रभृतिग्रन्थ(ा)नुसारिणी व्यवस्थेति।

तत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः।
अन्ना[3]कालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः॥

---

१. स्वातन्त्र्या च—व्यप०।

२. विरहात—व्यप०।

३. अनाका०—व्यप०। अशनादिभृतस्तद्वदाधत्तः स्वा०…नामसं०। अनाकाल०—धको०।

मोक्षितो[1] महतश्चर्णाद् युद्धे प्राप्तः पणे जितः ।
तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः[2] कृतः ॥
भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः[3] ।
विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥

—इति विवादभङ्गार्णव(१ विवाभ० ५१६ क)दायक्रमसंग्रह (पृ० ५२)धृतनारदवचनम् (नामसं०-पृ० ६६), गृहजातो दास्यामुत्पन्नः[4] —इति दायक्रमसंग्रहव्याख्यानम् (पृ० ५२) ॥ २ ॥

एतेषां गृहजातादिचतुर्णामात्मविक्रेतुश्च स्वामिप्रसादं विना न दास्यमोक्षः—इति दायक्रमसंग्रहलिखनम् (पृ० ५४) ॥ ३ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥

—इति व्यवहारतत्त्वादि(स्मृत० २।पृ० १६६)ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ०—१।१११) ॥ ४ ॥

भार्य्या पुत्रश्च दासश्च त्रय एवाधनाः[5] स्मृताः ।
यत्ते समधिगच्छन्ति यस्यैते[6] तस्य तद्धनम् ॥

---

१. ऋणाच्च मोक्षितोऽनल्पाद् युद्धप्राप्तः—नामसं० ।

२. प्रव्रज्यापसृतः—नामसं० ।

३. °हृतः—धको० ।

४. °मुत्पन्नः—व्यप० ।

५. एव धनाः—व्यप० ।

६. यस्यैते तस्यैतत्—इति विवाभ० पाठः ।

इति विवादभङ्गार्णव(१ विवाभ० ५.३३क)दायभाग[1]दायतत्त्वादिग्रन्थधृतमनुवचनम् (८।४१६)चेति ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

एइ व्यवस्था दाखिल अंगरेजी मिसिलते दासेर विषय ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

२४—प्रश्न—यत्र कश्चिद् एतावत्[2]-कालपर्य्यन्तमर्थाद्दशवर्षपर्य्यन्तं विंशतिवर्षपर्य्यन्तं वा तव दास्यमहं करिष्यामीति परिभाष्य स्थितः, तत्र दास्यावस्थायामुत्प[3]न्नान्यपत्यानि स्वामिनो दास्यं कर्तुमर्हन्ति न वेति। यद्यर्हन्ति तदा पितुर्दास्यकालपर्य्यन्तमधिकं न्यूनं वेति च।

एतस्योत्तरम्—

प्रभुक्तप्रश्नानुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितदासः शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानां मध्ये क्रीतदासः। क्रीतदासस्य[1] मोक्षः क्रीतकाल[3]व्यपगमेनैव। दास्यावस्थायां क्रीत[4]क्रीतकालदासेनोत्पन्नानामपि दास्यमोक्षः पित्रा सहैव—इतिशास्त्रीययुक्तिसिद्धा व्यवस्था।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

एइ व्यवस्था दाखिल आशिषटएट साहेवेर निकटे।

---

१. न च भार्य्या पुत्रश्चेत्यादिवद् अस्वातन्त्र्याभिप्रायमिति वाच्यम्, तदानीं स्वत्वे प्रमाणाभावात्। भार्य्यादिषु तु यत्ते समधिगच्छन्ति अर्जयन्तीति स्वत्वे सिद्धे युक्तमस्वातन्त्र्यवर्णनम्—इति दायभागे (पृ० १२) मनुवचनसंकेतः। वचनमिदं दासतत्त्वे न दृष्टम्।

२. एतावता—व्यप०।

३. उतपन्ना०—व्यप०।

४. कृत०—व्यप०।

श्रीर्ज्जयतितराम्

ल० २३००

२५—सदर देओयानी आदालतेर पण्डितदिगेके सओयाल करा याइतेछे।—ई० १८२६ सालेर मार्च्चमासेर १३ तारिखे ऐ सदर देओयानी आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत ओलीयम नसेष्टर साहेव ओ चतुर्थ हाकिम श्रीयुत ओलीयम डोविन साहेवेर वैठके—

मृत भवानीचरणचन्द्रेर उत्तराधिकारी राधावन्धवचन्द्र ओ गयरह— आपीलाण्टान—

मृत गोविन्दचन्द्रचौधुरिर उत्तराधिकारी जगतचन्द्र चौधरी ओ गयरह— रेष्पाडण्टान—

हुकुम हइल ये मृत राजा चित्रसेनेर प्रधाना रानी आपीलाण्ट ओ कनिष्ठा रानी रेष्पाडण्डेर ५३२ लम्वरेर मोकद्दमार ओ जगतचन्द्रसेन आपीलाण्ट ओ केशवानन्दगोस्वामी ओ गयरह रेष्पाडण्टेर ८३२ लम्वरेर मोकद्दमार दाखिल हओया दुइ केता व्यवस्था एवं १६ लम्वरेर भवाणीचरणेर नामिक मकररी पाट्टा ओ ११ लम्वरेर गाविन्दचन्द्रेर नामिक मकररी पाट्टा ओ ऐ पाट्टाजातेर सम्पर्कीय दुइ केता रसीद ल० १७२२ तोमारदिगके अर्पण करा जाय। उचित[1] ये नीचेर लिखित सओयालेर जओयाव ३ तिन दिवसेर मध्ये दाखिल करेन।

उपरेर लिखित मोकद्दमार दाखिल हओया व्यवस्थाते जाना याइतेछे ये देवशेवार भूमि हइते जाहा उत्पन्न हय ताहा देवतार वस्तु वटे, ओ शास्त्रानुसारे देवतार भूमि विक्रय कि दान कि वन्धककरण सिद्ध नहे, आर केवल देवतार सेवार निर्व्वाह ओ सरववाह हओनेर अर्थे देवत्र भूमिर रक्षणापेक्षणेर क्षमता देवत्र

१. उचित—व्यप०।

करणीया व्यक्ति अर्थात् देवत्र भूमिर रक्षक ११ ओ १६ लम्बरेर पाट्टार न्याय अन्य कोनो व्यक्तिके पुत्रपौत्रादिक्रमे सेलामीर टाका (देओया पूर्व्व हय ना)। एतावता पनेर टाकार बदले मकररी जमाते मकररी पाडा देय। एमत् पाट्टा शास्त्रमते सिद्ध बटे, कि सेवाती व्यक्तिर ऐ पाट्टा देओनेर क्षमता नाहि; ओ पाट्टा देओयानीर व्यक्तिर मृत्यु परे ये व्यक्तिके ताहार रक्षणापेक्षणकरण उत्तराधिकारित्वे अर्शे से ऐ पाट्टा रहित करणेर ओ देवत्र भूमिर नूतन वन्दवस्त करणेर क्षमता राखे ना, ओ ए विषये वाङ्गलादेशेर चलित शास्त्रानुसारे किछु हुकुम कि व्यवहार आछे कि ना ओ एमत् मोकद्दमार सिद्ध असिद्ध हओन एइ अर्थे ये ऐ मकर्द्दमार देवत्र वस्तुर लाभ ओ क्षति हओने सम्पर्क[1] राखे (कि ना) इति—

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुत - अलीयमनशष्ठरसाहेवचतुर्थाधिपतिश्रीयुत - अलीयमडोरणसाहेवतदुभयधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं षोडशाङ्काङ्कितैकादशाङ्काङ्कितमकररीपाटासंज्ञकपत्रद्वयं त(त्-)सम्बन्धिसप्तदशाङ्काङ्कितद्वादशाङ्काङ्कितरसीदसंज्ञकपत्रद्वयञ्चावलोक्य विविच्यच यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

देवसेवार्थोत्सृष्टभूम्यादिस्तदुत्पन्नञ्च द्रव्यं देवस्वम्। देवस्वभूम्यादिविक्रय-दान-बन्धक-करण-क्षमता देवार्थभूम्युत्सर्जकस्य[2] तदुत्तराधिकारिणां वा नास्ति। केवलं देवसेवानिर्व्वाहार्थं देवस्वभूम्यादे रक्षणा-वेक्षणादिकर्त्तृत्वं यो देवसेवां कारयति स एव वङ्गदेशे[3] सेवाइतशब्देनप्रसिद्धो यद्यन्यस्मै कस्मैचिद् देवार्थं दर्शनीयमुद्रा गृहीत्वा प्रभुसमर्पितोपरिलिखितमकररीपाटासंज्ञकपत्रद्वयलिखितरीत्या मकररीपाट्टासंज्ञकं नियमपत्रं

---

१. सर्म्पर्कं—व्यप०।
२. ०भूम्युत्सर्ज०—व्यप०।
३. वङ्गदेशा—व्यप०।

ददाति तदा तन्नियमपत्रं वङ्गदेशचलितव्यवहारानुसारेण च सिद्धं भवति, नहि देवस्वभूमेर्मकररीपाट्टासंज्ञकनियमपत्रदानं विक्रयो न च दानं न वा वन्धको भवति । मूल्यग्रहणप्रयुक्तस्वस्वत्वनाशकव्यापारस्यैव विक्रयपदार्थत्वेन स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वोत्पत्त्यनुकूलव्यापारस्य दानपदार्थत्वेन चाधमर्णेनोत्तमर्णसमीपे ऋणपरिशोधनकालपर्य्यन्तं विश्वासार्थं स्थापितस्य स्वकीयद्रव्यस्य वन्धत्वेन च देवस्वभूमौ मकररीपाट्टासंज्ञकपत्रदातुः स्वत्वा[1] भावेन मूल्यग्रहणपूर्व्वकतन्निवृत्तेर्वा दानप्रकारेण वा तन्निवृत्तेरसम्भवात्, वन्धनेन स्थापनाभावाच्च । यथा राज्ञा ग्रामाधिपतिना वा स्वकीयग्राम-क्षेत्रादिः प्रत्याब्दिककरग्रहणार्थमन्यस्यै प्रजायै वा कालनियमं कृत्वा अकृत्वा वा पुत्रपौत्रादिक्रमेण प्रत्यब्दमेता मुद्रा दत्त्वा त्वयैतद्[2] ग्रामः क्षेत्रादिर्वा भुज्यतामिति नियमपत्रं पाट्टासंज्ञकपत्रं मकररीपाट्टासंज्ञकं वा दत्त्वा सम-र्प्यते[3], तथा देवसेवार्थोत्सृष्टभूमिरपि वङ्गदेशसेवाइतपदवाच्ये[4]नोपरिलिखित-रीत्या समर्प्यते[5] इति वङ्गदेशव्यवहारः । देवस्वभूमावेतादृशव्यवहारसिद्धौ तद्भूमाव[6]तिवृष्ट्यानावृष्ट्या वा शस्यानुत्पादेऽपि नियमितद्रव्यसाध्यदेवसे-वाया अवाधः, इत्येव लाभः । तदसिद्धौ अतिवृष्ट्यादिदोषेण शस्यानुत्पा-दाद्देवसेवावाधोऽपि भवितुं शक्नोति, इत्येव क्षतिः । एवञ्चै[7]तद्विवादे यद्युपरिलिखितमकररीपाट्टासंज्ञकपत्रद्वयान्तर्गतषोडशाङ्काङ्कितश्री देवमुद्रा-ङ्कित नियमपत्रं तत्सम्बन्धिरसीदसंज्ञकपत्रञ्च वङ्गदेशे सेवाइतशब्दवाच्या या राज्ञा देवसेवार्थं दर्शनीयमुद्रा देवकोषे निवेश्य पुत्रपौत्रादिक्रमेण प्रत्यब्द-मेता मुद्रा दत्त्वा भुज्यतामित्युपरिलिखितनियमपत्रमन्यस्मै[8] कस्मैचित् षोड-

---

१. सत्वाभावेन—व्यप० ।
२. त्वयैतत्—व्यप० ।
३. समर्पते—व्यप० ।
४. पदवाक्येन—व्यप० ।
५ समप्यते—व्यप० ।
६. ततभूमा—व्यप० ।
७. चैतत्—व्यप० ।
८. मन्यस्यै कस्यै—व्यप० ।

शाधिकद्वादशशताब्दे दत्तं तन्नियमपत्रेऽन्यस्याधिककरदातुरुपस्थितिं यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामितिलिखनाभावात् तन्नियमपत्रदात्र्याः सेवाइतशब्द-वाच्याया मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तस्या एव। देवसेवार्थोत्सृष्टभूमे रक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वं यस्य भवति स तु तत्पत्रमकर्म्मण्यं कृत्वा नियम-पत्रान्तरं दातुं न शक्नोति—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थ-मुक्तावलीविवादभङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

तत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति॥
—इति मनुवचनम् ॥१॥ (११।२६)

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्।
—इति कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥ २ ॥ (मनु० ११।२६)

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्तिताः।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥
—इति बृहस्पतिवचनम् ॥ ३ ॥ (११।२६)

एकत्र बन्धस्यान्यत्रबन्धदानवद् एकत्र वशीभूताया भूमेरन्यत्र वशी-भवनमयोग्यमिति भूमिसमर्पणसमये अन्यस्याधिककरदातुरुपस्थितिं यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्येव प्रतिज्ञा कर्तव्या—इति विवादभङ्गार्णव-(१ विवाभ० पृ० ३१० ख)लिखनम् ॥ ४ ॥

एकत्र बन्धीभूतद्रव्यस्यान्यत्रबन्धकरणे परबन्धस्यैव एकत्र वशीकृत-

---

१. कुल्लुक—व्यप०।
२. °वा मेनो०—व्यप०।
३. पापी परे०—व्यप०।
४. गृघ्नो—व्यप०।
५. देशजातिकुलादीनां ये धर्म्मास्तत्प्रवर्तिताः इति वृस्मृ०पाठः।

द्रव्यस्यान्यत्र वशीकरणेऽपि असिद्धिरेव-इति विवादभङ्गार्णवलिखनञ्चेति (१ विवाभ० पृ० ३१६ क) ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपति–श्रीयुतश्रोलियमलसेष्टरसाहेवैतद्धर्म्माधिकरणचतुर्थाधिपति — श्रीयुतश्रोलियमडोरनसाहेवैतदुभयधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं षोडशाङ्काङ्कितैकादशाङ्काङ्कितमकररीपाटासंज्ञकपत्रद्वयं, तत्सम्बन्धिसप्तदशाङ्काङ्कित-[१] द्वादशाङ्काङ्कितरसीदसंज्ञकपत्रद्वयमवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

देवसेवार्थो(त्सृष्ट)भूमिरक्षकः सेवाइतशब्देन (उच्यते) । यद्यसावन्यस्मै कस्मैचित् देवार्थदर्शनीयमुद्रा गृहीत्वा प्रभुसमर्पितोपरिनिश्चितमकररीपाटासंज्ञकपत्रद्वयम् लिखितरीत्या मकररीपाटासंज्ञकं पत्रं ददाति तदा तन्मकररीपाटासंज्ञकं पत्रं वङ्गदेशचलितव्यवहारानुसारेण शास्त्रानुसारेण च सिद्धंभवति । एवञ्च तन्मकररीपाटासंज्ञकपत्रदातृसेवायितकर्त्तु[२]र्म्मरणानन्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तस्या एव । देवसेवार्थभूमे रक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वं यस्य भवति स यदि तन्मकररीपाटासंज्ञकपत्रेऽन्यस्याधिककरदातु[३]रुपस्थितिं यावत्प्रतिवर्षं त्वया भुज्यताम्—इति लिखनं (करोति),न चेत्तदा तन्मकररीपाटासंज्ञकं पत्रमकर्म्मण्यं कृत्वा नूतनवन्दोवस्तसंज्ञकमायामं कर्तुं न शक्नोति । एवञ्च देवसेवार्थभूमौ मकररी-पाटासंज्ञकपत्रदानं व्यवहारानुसारेण शास्त्रानुसारेण च सिद्धं चेत्, अतिवृष्ट्याऽनावृष्ट्या वा तद्भूमौ[४] शस्यानुत्पादेऽपि नियमितद्रव्यसाध्यदेवसेवाया अबाधः–इत्येव लाभः। तदसिद्धावतिवृष्ट्यादि-

१ सप्तदशाङ्काङ्कितद्वाशा व्यप० ।
२ सेवाइत व्यक्तुर्म्मरण—व्यप० ।
३ ०पस्थितं यायत—व्यप० ।
४ तत्भूमौ—व्यप० ।

दोषेण शस्यानुत्पादाद्[1] देवसेवाबाधोऽपि भवितुं शक्नोति-इत्येव-क्षतिः-इति वङ्गदेशप्रचलितमनुविवादभङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्म्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत्[2]-इतिमनुवचनम् (८।४१) ॥१॥

एकत्र बन्धद्रव्यास्यान्यत्रबन्धदानवत् एकत्र वशीभूताया भूमेरन्यत्र वशीभवनमयोग्यम्-इति भूमिसमर्पणसमयेऽन्यस्याधिककरदातुरुपस्थितिं-याचत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्येव प्रतिज्ञा कर्तव्या—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् (१ पृ० ३१० ख) ॥ २ ॥

एकत्र बन्धीभूतद्रव्यस्यान्यत्रबन्धकरणे परबन्धस्येव एकत्र वशीकृतद्रव्यस्यान्यत्रवशीकरणेऽपि, असिद्धिरेव—इतिविवादभङ्गार्णवलिखनञ्चेति (१ विवाभ० पृ०३१६क) ॥ ३ ॥

श्रीजर्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

सवाल

२६ सदर देमानी आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत ओलियम लसेष्टर साहेव ओ चतुर्थ हाकिम श्रीयुत ओलियम डोरण साहेवेर हुजुर हइते ओइ आदालतेर पण्डितगणेर प्रति अंगरेजी १८२६ साल १० अपरेल तारिकेर रोवकारिर हुकुमानुसारे—

राधावल्लभचन्द्र ओ गयरह आपीलाण्टान
जगच्चन्द्रचौधुरी ओ गयरह रेष्पाण्डण्टान

पूर्व्वे मोकद्दिमासकले लंवर ५३२ ओ ८३२ वावत ये व्यवस्थासकल दाखिल हइयाछे ताहार सत्वे देवोत्तर भूमिर

---

१ °नुत्सादात्—व्यप० ।
२ प्रतिपादयेत्—मस्मृ० ।

सेवाइतेर लिखित पुत्र-पौत्रादि क्रमे मोकररी पाटा सिद्ध हओनेर विषये तोमरा आपनारदिगेर मत उत्तरे लिखिया छ। अतएव पुनर्व्वार जिज्ञासा करा जाइतेछे ये हिन्दुलोकेर कोनो शास्त्रे मोकररी पाटार प्रस्ताव आछे; प्रवल सन्देहेर द्वाराय यदि एमत कोनो प्रस्ताव शास्त्रे पावा जाइतेछे ना, तवे पश्चाद्[1]ग्रन्थकारगनेर ग्रन्थेर मध्ये कोनो ग्रन्थे ताहार प्रस्ताव आछे, ओ तोमारदिगेर उत्तरेर लिखनानुसारे व्यवहार ओ ओइ व्यवहारेर सिद्धतार प्रस्ताव कोन ग्रन्थे पावा जाइतेछे। ये हेतुक एक्षणे एइ विषयेर सन्देह आछे ये कोनो वचन ए विषयेर जन्मे नाइ, वरं हिन्दुलोकेर ग्रन्थे ओ ए विषयेर प्रसङ्गमात्र नाइ—ओ ए विषयेर विचार पूर्व्व व्यवस्थासकल ओ चलित आइनसकलेर अनुसारे आदालतेर हाकिमानेर सहितइ सम्पर्क राखे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[2]

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतओलियमलसेष्टरसाहेवैत[3]द्धर्म्माधिकरणचतुर्थाधिपतिश्रीयुत— ओलियमडोरणसाहेवैतदुभयधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

हिन्दुजातेर्धर्म्मशास्त्रीयस्मृतिचन्द्रिकावीरमित्रोदय-व्यवहारमातृकाव्यवहारचिन्तामणि-विवादभङ्गार्णवग्रन्थेषु लोके भाषायां मकररीपाटाशब्देन प्रसिद्धस्य शास्त्रोक्तशासनपत्रस्यास्ति प्रस्तावः। एवमस्मदुत्तरलिखितव्यवहारस्य तादृशव्यवहारसिद्धतायाश्चोपरिलिखितग्रन्थेभ्यः प्राप्तत्वात्—इत्युपरिलिखितग्रन्थानुसारेणोत्तरम्।

---

१. पश्चात् व्यप०।

२ श्रीर्ज्जयति०—व्यप०।

३ वैतद्धर्म्मा०—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

राजलेख्यं स्थानकृतं स्वहस्तलिखितं तथा।
लेख्यं तु त्रिविधं प्रोक्तं भिन्नं तद् बहुधा पुनः॥

—इति वीरमित्रोदय[1]ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० ६।८) ॥१॥

तत्रशासनं निरूपयितुमाह याज्ञवल्क्यः

शासनं कारयेद्धर्म्यं[4] स्थानवंशाभिसंयुतम् ॥ (बृस्मृ० ६।१६)
दत्त्वा भूमिं निबन्धं वा कृत्वा लेख्यं तु कारयेत्।
आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञाना[2]य पार्थिवः॥ (यास्मृ० १।३१८)

निबन्धो वाणिज्यादिकरादिभिः प्रतिवर्षं प्रतिमासं वा किञ्चिद्धनमस्मै ब्राह्मणायास्यै देवतायै देयमित्यादिप्रभुसमयलभ्यमित्यर्थः। भूमिमिति ग्रामारामादीनामुपलक्षणार्थम्। अतएव बृहस्पतिः—

दत्त्वा भूम्यादिकं राजा ताम्रपट्टे[3]ऽथवा पटे।
शासनं कारयेद्धर्म्यं स्थानवंशाभिसंयुतम्॥

—इतिस्मृतिचन्द्रिकालिखनम्। २ (स्मृचव्य० २।५५)

योगीश्वरः शासनमाह :—

भूमिं दत्त्वा निबन्धं वा कृत्वा लेख्यं तु कारयेत्।
आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञानाय पार्थिवः॥ (यास्मृ० १।३१८)

पटे वा ताम्रपट्टे वा स्वमुद्रोपरिचिह्नितम्—इत्यादिवीरमित्रोदय(पृ० ३५६)व्यवहारचिन्तामण्यादिग्रन्थलिखनम्॥ ३॥

ताभिश्च वर्षोपयुक्तकरदानेन वर्षोपयुक्तस्वत्वमर्ज्यते। तद्वर्षे च राज्ञा तद्भूमेरन्यत्र दानविक्रयणादिकरणं न सिद्ध्यति। यदि तु प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्यादि प्रतिज्ञाभवत् तदा तु यावद्वर्षेष्वेव स्वत्वानुमतेः कदापि दानविक्रयादिकं न कर्तव्यमिति विवादभङ्गार्णवलिखनम्॥४॥ (१ विवाभ० पृ० ३०८ कख)

---

१. लिखित तावद् द्विविधं स्वहस्तकृतमन्यत्कृतञ्च—वी० मि० पृ० ५२०, यास्मृ० २।८५ व्यमा० ३३६ तमे पृष्ठे वचनमिदमुद्धृतमिति धको०।
२. ०परिज्ञामाय—व्यप०।
३. ताम्रपत्रेऽथवा पटे इति बृस्मृ० पाठान्तरम्, ताम्रपट्टे तथा पटे स्मृचव्य० ५५
४. ०द्धर्मम्—बृस्मृ०।

देशाचाराविरुद्धं यद्व्यक्ताधिविधि¹लक्षणम् ।
तत्प्रमाणं स्मृतं लेख्यमविलुप्तक्रमाक्षरम् ॥

—इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतनारदवचनम् । (नामसं०२।११३) ॥५॥
पृ० ५२) ।

व्यवहारो हि बलवान् धर्म्मस्तेनावहीयते ।

—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० १६६)व्यवहारमातृका(पृ० २८४)धृतनारद-वचनम् । (नामसं—१।३४) ॥६॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्म्महानिः प्रजायते ॥ —इति तत्तद्ग्रन्थधृत (व्यमा० २८२ : २६४)बृहस्पतिवचनम्, *युक्तिर्लोकव्यवहारः*³—इति तत्तद्ग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीर्जयतितराम् **श्रीहरिः शरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

---

२७ सदर देमानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे मित्रजितसिंहेर ओ श्रीमति मनुविवी सायलार मकद्दमाते तिन रोजेर मध्ये पश्चिमदेशेर एवं वङ्गदेशेर शास्त्रमते यवाव दाखिल करणेर हुकुमे इंगरेजी १८२६ शालेर ३० मे मासेर रोवकारिर लिखित सवाल एइ—एक व्यक्ति क्षत्रिर स्त्री, ये ताहार आपन स्वामीर त्यक्त धने दाखिलकार छिल, ताहार आपन स्वामीर

---

१. ०धिकृतल०—नामसं० ।
२. मिताक्षरा इति पठनीयः २।८६ ॥
२. युक्तिर्न्यायः स च लोकव्यवहारः इति व्यवहारमात्रिका—व्यत० पृ० १६६ ।

মাতুল পুত্র রাখিয়া মরিয়াছে। অন্য উত্তরাধিকারী না থাকন এবং ঐ মৃত স্ত্রী-ব্যক্তীর দত্তক পুত্র না থাকন কালীন ঐ স্ত্রীর ত্যক্ত ধন ঐ পুত্র পাইতে পারে কি না ইতি।

यथावव्यवस्था(I)

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते :—

यत्र कस्यचिद् अनपत्यस्य क्षत्रियस्य स्त्री स्वस्वामित्यक्तधने भोगवती आसीत्, स्वस्वामिमातुलपुत्रं संरक्ष्य मृता[1]स्यात्, तत्र यदि तस्याः स्वामिनः पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादि—मातृ[2]ष्वस्रीयपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकारिणो न स्युः, तदापश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण एवं वङ्गदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णव-ग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादिमातुलपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिणो यदि न स्युःतदा वङ्गदेशीयतत्तद्ग्रन्थानुसारेण अथ च वङ्गदेशीयश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारूपग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादिमातृष्वस्रीय पर्य्यन्ता धनाधिकारिणो यदि स्युः, तदा वङ्गदेशीयतद्ग्रन्थानुसारेण एवञ्चैतन्मतत्रय एव मृतायास्तस्याः स्त्रिया यदा दत्तकः पुत्रो नास्ति तदा च तस्याः स्त्रियास्त्यक्तधनं तत्स्वामिमातुल-पुत्र आदावेव[3] बन्धुत्वेन प्राप्तुं शक्नोति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाक्रमसंग्रह - विवादार्णवसेतु - विवादभङ्गार्णवादि-ग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था।

---

१ मृता—व्यप०।

२. °स्वस्रीय०—व्यप०।

३. आद्येव—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थलिखितयाज्ञवल्क्य-वचनम् (यास्मृ० २।१३५) । १

गोत्रजाभावे बन्धवो धनभाजः । बन्धवश्च त्रिविधाः ।

आत्मबन्धवः पितृबन्धवो मातृबन्धवश्चेति ॥

यथोक्तम्—

आत्मपितृष्वसुः[1] पुत्रा आत्ममातृष्वसुः सुताः ।

आत्ममातुलपुत्राश्च[2] विज्ञेया आत्मबान्धवाः ॥

पितुः पितृष्वसुः पुत्राः पितुर्मातृष्वसुः सुताः ।

पितु(र्)मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः पितृबान्धवाः ॥

मातुः पितृष्वसुः पुत्रा मातुर्मातृष्वसुः सुताः ।

मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबान्धवाः ॥

इति । तत्र चान्तरङ्गत्वात् प्रथममात्मबन्धवो धनभाजस्तदभावे पितृ-बन्धवस्तदभावे मातृबन्धवः—इति क्रमो वेदितव्यः—इति मिताक्षरादि-(मिता० २।१३, पृ० २१३) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तदभावे मातुलस्तदभावे मातुलपुत्रस्तदभावे मातुलपौत्रस्तदभावे मातामहदौहित्रोऽधिकारी—इत्यादिश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत(दाय)क्रमसंग्रह ग्रन्थलिखनम् । (१०।१५, पृ० ६) ॥ ३॥

---

१. आत्मपितृष्वसुः पुत्रा पितृमातृ०—व्यप० ।

२. पितुर्मातुल०—व्यप० ।

तत्र प्रथमं[1] मातुलस्तदभावे मातृष्वस्रीयस्याधिकारस्तदभावे मातुल-पुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका रूपग्रन्थलिखनम् । ॥ ४ ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

——

२८ लंवर—

रोवकारी मिसिल आदालत देमाना सदर अंगरेजी १८२६ साल तारीख ७ माहे दिशम्वर मतावक वाङ्गला १२३३ साल २३ माहे अग्रहायण रोज वृहस्पतिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशसिट साहेवेर वैठके ।

श्रीमति सुलक्षणा— आपीलाण्ट
श्यामाप्रसादनन्दी ओ गयरह रष्पाडण्टान

सन हालेर २० लंवर (नवम्वर) मासेर लिखित जिला मेंदनीपुरेर जजसाहेवेर एक किता रिटरन, ताहार सामिलेर रोवकारी ओ गयरह संवलित पहुचिया अद्य श्यामाप्रसादनन्दी ओ लक्ष्मीनारायणचौधुरीर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ व्रजलालचौधुरीर उकिल मुनसी दादारवकश ओ सदासुख पण्डित ओ आनन्दलालचौधुरी ओ नन्दलालचौधुरि ओ मसम्मात हरिप्रियामणी राणीर[2] उकील सदासुख

१. तत्रापि प्रथमं मातामहस्तदभावे मातुलतत्पुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति दायभागटीकायां कृष्णतर्कालङ्कारलिखनम् (पृ० २१८, ११।६ परि०)

२. हरिप्रियामणी रणीर—व्यप० ।

पण्डितेर हाजीरीते तीनि आदालतेर कागजात सहित दरपेस हइया पडा गेलो। तत्परे व्रजलालचौधुरीर उकीलेरा अयोध्याप्रसाददास मुदइ श्यामाप्रसादनन्दी ओ गैरह मुद्दाआलेहेर मोकद्दिमाते अंगरेजी १८२२ सालेर मार्च्च मासेर हओया एलाका कलिकातार कोर्ट आपीलेर एक किता रोवकारिर नकल० नंवरे दाखिल करिलेक, दृष्टि आइलो। जाना गेलो ये आदालतेर साविक तृतीय हाकिम अंगरेजी १८२२ सालेर १४ शितम्बर मासेर हओया हुकुमे एइ लिखियाछेन ये विरोधी निष्पत्ति पर्य्यन्त मृत मधुसूदनेर हिस्सा सरवराहकारेर इलाकाते थाके, ओ ताहार हिस्सार मोनफा सरवराहकारेर निकट आमानत थाके, ओ कि प्रकारे विरोधी निष्पत्ति हय, ओ कोन व्यक्तिर स्वत्व—ए विषयेर किछु तजवीज करेन नाइ, अतएव ए विषयेर हुकुम सादर करण आवश्यक हइलो, ओ अंगरेजी १८११ सालेर माइ मासेर लिखित ए आदालतेर फयसलार दृष्टे वोध हय जे दौहित्रदिगेर मध्ये अर्थात् डिगरीदारानेर मध्ये एक जन मरिले, ताहार हिस्सा कोन व्यक्तिके अर्शिवेक। ओइ फयसलाते ए विषयेर किछु हुकुम नाइ। आर अंगरेजी १८२२ सालेर मार्च्च मासेर ११ एगारह तारिकेर हओया कलिकाता(र) कोटेर रोवकारीते अन्य मोकद्दिमाते, अर्थात अयोध्याराम मुदइ वनाम श्यामाप्रसादनन्दी ओ गैरह मुद्दाआलेहेर मोकद्दिमाते सम्पर्क राखे, एइ हुकुम आछे ये मधुसूदन मुद्दाआलेहेर पिता अन्य उत्तराधिकारीरा मोकद्दिमार तदविर करे, ओ ओइ रोवकारी अन्य मोकद्दिमार सम्पर्कीय ए मोकद्दिमाय प्रवेश हइते पारे ना। वरं ओइ रोवकारीर गरज अयोध्याराम मुदइर मोकद्दिमार········छिलो। मृत मधुसूदनेर उत्तराधिकारीदिगेर विरोध निष्पत्तिर···छिलो ना, ओ से मोकद्दिमाते ओइ मुदइर नालिस कलिकातार कोटे डिसमिस हइया मृत मधुसूदनेर उत्तराधिकारीदिगेर विरोधेर किछु निष्पत्ति कोटे हय नाइ।

आर जाना जाय ये छय ६ जन दौहित्र अर्थात डिगरी(दारदिगे)र-मध्ये केवल ओइ मधुसूदन मरियाछे। बाकी पाच जन। ताहार मध्ये मृत व्यक्तिर सहोदर भ्राता तिनि एइ क्षण पर्य्यन्त बर्तमान आछे, ओ ब्रजलालचौधुरीर स्त्री हरिप्रियामणीर गर्भे अन्य दौहित्र जन्मे नाइ, आर मधुसूदनचौधुरीर पिता ब्रजलाल-चौधुरी ओ माता हरिप्रिया ओ सहोदर तीनि भ्राता, आनन्दलाल ओ नन्दलाल ओ गङ्गानारायणचौधुरीके राखिया मरियाछे। अतएव हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितान् स्थाने सवाल करा जाय ये ओइ प्रकारे मृत मधुसूदनेर अंश कोन व्यक्तिके अर्शे; ताहार पिता आदि उत्तराधिकारिदिगेके किंवा मृत राजा जादवरायेर, ये ओइ छय जनेर मातामह छिलो, ताहार बाकी पाच जन दौहित्रके अर्शे। उचित ये अंगरेजी १८११ सालेर २७ माइ मासेर हओया ए आदालतेर फयसलार मजमून ज्ञात हइया दायभागशास्त्र मते ये सेइ शास्त्र मते ए मोकद्दिमा ए आदालते निष्पत्ति हइयाछे; ओइ सवालेर यवाव परसु दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचनग्रन्थेर वेओरा सम्वलित दाखिल करेन। पण्डितदिगेर यवाव दाखिल हइले पर उचित हुकुम देया जाइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपमवलोक्यैवं तत्समर्पितांगरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकादशाधिकाष्टादश[2]शताब्दीयमाइमासीयसप्तविंशतिदिवसीयैतद्धर्म्मा-

---

१. श्रीर्ज्ज यति०—व्यप०।
२. ०काष्टा०—व्यप०।

धिकरणीयजयपत्रार्थमवगत्य च यादृशश्चोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। यत्र मधुसूदनचौधुरीसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो व्रजलालचौधुरीसंज्ञकं पितरं हरिप्रियामणीनाम्नीं मातरमानन्दलाल-नन्दलालगङ्गानारायणचौधुरीसंज्ञकान् त्रीन् सोदरभ्रातॄन्[1] संत्यज्य मृतः तत्रोपरिलिखितैतैर्[2]द्धर्म्माधिकरणीयजयपत्रानुसारेणोत्तराधिकारित्वेन मधुसूदनचौधुरीसंज्ञकस्वत्वास्पदीभूतांशस्य तदीयधनत्वेन तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारो न तु पूर्व्वस्वाम्युत्तराधिकारिणाम्। तत्र च तत्पुत्र-पौत्र-पत्नी-दुहितृ-दौहित्र-पर्य्यन्ताभावे तत्पितु(र्)व्रजलाल-चौधुरीसंज्ञकस्याधिकारः, (अ)सति पितरि मातृ-सोदर-भ्रात्रादीनाम्, एवं मृतस्य राज्ञो यादवरामरायस्य पूर्व्वधनस्वामिनोऽवशिष्टा(नां) पञ्चदौहित्राणां नाधिकारः—इति दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि दायभागादि(दाभा॰ पृ॰ १५१,११।११।४)ग्रन्थधृतविष्णुवचनम् (विष्णु॰ १७।४)।१

दौहित्रस्याभावे पितुर्न्न मातुः—इत्यादि दायभागग्रन्थ (दाभा॰ पृ॰ १८५, ११।३।१)लिखनम्।२

तदभावे पिता तदभावे माता तदभावे भ्राता—इत्यादि श्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारूपग्रन्थ(दाभा॰ टी॰ पृ॰ २१८, प॰ १२)-लिखनञ्चेति।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिः शरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

१. भ्रात्रीन्—व्यप॰।

२. तैते धर्म्मा॰—व्यप॰।

सवाल

२९—सदर देमानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर हजुर हइते कमलाकान्तघोशाल ओ गैरह वनामे रामहरिनन्दिग्रामी ओ गैरहेर मोकद्दमाते अंगरेजी १८२६ सालेर १३ दिशम्बर मासे रोवकारीर लिखित अदालत मजकुरार पण्डितानेर नामे परसु दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन ओ प्रमाणेर वेओरा संवलित यवाव तलव मजमुने सवाल एइ ये—

गोवर्द्धननन्दिग्रामी नरेन्द्रनित्यानन्दग्रामी ओ शीताराम-नन्दिग्रामी दुइ पुत्र(के) उत्तराधिकारी राखिया मरिलो, ओ नरेन्द्र-नित्यानन्द एक पुत्र गोपीनाथके राखिया मरिलो, ओ सीताराम एक पुत्र सहदेव नाम ओ एक कन्या, (या)हार नाम प्रकाश नाइ, उत्तराधिकारी राखिया मरिलो। ओ ओइ गोपीनाथ तीनि पुत्र रामहरिनन्दिग्रामी ओ गौरहरिनन्दिग्रामी ओ हारुनन्दिग्रामी-के राखिया मरिलो; ओ सहदेव निःसन्तान मरिलो, ओ ताहार भगिनी एक कन्या राखिया मरिलो, ओ ओइ सहदेव आपन जीवद्दशाते भगिनीर मृत्युर पर आपन भगिनीर कन्यार जीव-द्दशाते ताहार आपन भगिनीर पुत्र रामशङ्करघोशालके कयेक विघा ब्रह्मोत्तर ओ देवत्तर भूमि दातव्य करियाछे; ओ ताहार दानपत्र लिखिया दियाछे; ओ ग्रहीताके दातव्य करा भूमिर उपर दखिल कराइया ताहार तीनि वत्सर परे मरियाछे; ओ दानकालीन गोपीनाथनन्दिग्रामीर पुत्र रामहरी ओ गौरहरी ओ हारु नन्दिग्रामी वर्त्तमान छिलो, एवं आछे। ओ ओइ गोपीनाथ मरियाछे, ओ दाता व्यक्तिर मृत्युर कएक वत्सर परे ग्रहीता व्यक्ति मरियाछे। ताहार पुत्रेरा दान करा-भूमीर उपर दखिल हइयाछे। वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे ओइ

सहदेवेर लिखिया देया हेवा सिद्ध, कि असिद्ध, ओ ताहा असिद्ध हओन प्रकारे दान करा भूमि कोन व्यक्ति के अर्शे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

यथात्र व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र गोवर्द्धननन्दिग्रामीसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो नरेन्द्रनित्यानन्दनन्दिग्रामीसीतारामनन्दिग्रामीसंज्ञकौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, नरेन्द्रनित्यानन्दोऽपि गोपीनाथसंज्ञकमेकं पुत्रं संरक्ष्य मृतः, एवं सीतारामोऽपि सहदेवनामानमेकं पुत्रमेकां कन्यां च संरक्ष्य मृतः, एवं गोपीनाथो रामहरी-गौरहरी-द्वारूसंज्ञकान् त्रीन् पुत्रान् संरक्ष्य मृतः, तत्रोपरिलिखितसहदेवः स्वजीवनदशायां स्वभगिनीदौहित्राय रामशङ्करघोशालाय यदि कतिपयविघाशब्दवाच्यां[2] कांचिद् ब्रह्मत्रभूमिं देवत्रभूमिञ्च दत्त्वा, तस्याश्च दानपत्रं लिखित्वा दत्त्वा, तस्यां च ग्रहीतुराय[3]त्तत्वं सम्पाद्य संवत्सरत्रयानन्तरमनपत्य एव मृतस्तदा दानकाले इदानीं च गोपीनाथपुत्रेषु रामहर्य्याद्युपरिलिखितेषु त्रिषु सत्स्वप्यविभक्तायां भूमौ स्वांशयोग्यायाः विभक्तायां च स्वांशरूपाया वा ब्रह्मत्रभूमेर्यद्दानं कृतं तद् वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धं भवति, स्वतन्त्रस्वामिकृतत्वात्, एवं दानपत्रलिखिताया देवत्रभूमेर्य्यद्दानं तन्न सिद्ध्यति[4], देवत्रभूमौ केवलं देवताया एव स्वत्वं देवभिन्नानां केषाञ्चिदपि स्वत्वाभावात्। किन्तु देवत्रभूमेः संरक्षणावेक्षणादिकर्त्तृत्वं लोकानामेव व्यवहाराद् दृश्यते। तत्र यद्यनेन केनचिद् भूम्यधिपतिना देवसेवार्थं काचिद् भूमिर्न्नियमिता तत्संरक्षणादिकर्तृत्वं तद्देवपूजकत्वं वा सहदेवाय, तत्पूर्व्वपुरुषाय वा दत्तं स्यात्तदा

---

१. श्रीर्ज्जयति०—व्यप०।

२. ०वाच्या काचित् ब्रह्मत्रभूमिर्देवत्रभूमिश्च दत्ता…दत्ता—व्यप०।

३. रायत्तत्रं—व्यप०।

४ ग्दिद्धसि—व्यप०।

तदेव स्वकर्तव्यस्ववशीभूतसंरक्षणादिकर्तृत्वं तद्देवपूजकत्वं वा यदि महदेवेनोपरिलिखितरामशङ्करघोशालाय दत्तं स्यात्तदा, यदि वा स्वयमेव महदेवेन देवसेवार्थं स्वीयकाचिद्भूमिर्न्नियमिता तस्याः संरक्षणादिकर्तृत्वं तद्देवपूजकत्वं वा तस्मै दत्तं स्यात्, तदा चैतदुभयविधं दानं लोकव्यवहारात्सिद्ध्यतीति, अतः शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं भवितुमर्हतीति वङ्गदेशचलितदायभागमनुव्यवहारतत्त्व[1]व्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

स्व[3]भागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्यु[4]र्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते[5] स्वधनस्य वै ॥

इति दायभागादि(दाभा० २।२९, पृ० ३५)ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० १५७, १४।४२) । १

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् । (मस्मृ० ५।१५२) । २

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः—इति मनुवचनम् (मस्मृ० ८।१९९) । ३

व्यवहारो हि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते[6]—इति व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थ(व्यत० पृ० १९९)धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ८, १।३४)[2]

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिः शरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

---

१. ०लदेव०—व्यप० ।
२. ०तत्व०—व्यप० ।
३. स्वानंशान्—नामसं० ।
४. कुर्य्युर्यथे०—व्यप० ।
५. मीशते—नामसं० ।
६. नापचीयते—नामसं० ।

सवाल

३०—सदर देवानी अदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुटनी इशमिट साहेबेर हजुर हइते ओइ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अंगरेजी १८२५ सालेर १८ दिशम्बर मासेर रोवकारिर लिखित भवानीलालेर नामे हरीशवीवीर मोकद्दिमाते परसु दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा संवलित यवाव दाखिल करनेर हुकुमे सवाल, एइ ये—

एक व्यक्ति हिन्दु, कायस्थ जाति, स्त्री ओ पिताके राखिया मरिलो। ताहार पर पिता स्त्रीके, ये प्रथम मृत व्यक्तिर माता नहे, आर अप्राप्त-व्यवहार पुत्र ओ भगिनीर पुत्रके राखिया मरिलो। पश्चात् ऐ अप्राप्त-व्यवहार पुत्र निःसन्तान मरिलो। तत्परे ऐ पितार स्त्री, ये अप्राप्त-व्यवहार पुत्रेर मृत्युर परे ऐ पितार त्यक्त धनेर उपर दखिलकार हइयाछिलो, आपन पतिर भगिनीर पुत्रके, ये उपरे उल्लेख हइलो, ऐ त्यक्त धनेर असियतनामा लिखिया दिया ग्रहीताके दान करा वस्तुर उपर दखिल ना कराइतेइ मरिलो मैथिलदेश ओ वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे ऐ असियतनामा प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री थाकने ओ सिद्ध ओ चलित वटे, कि ना ? आर यद्यपि असियतनामा लिखा ना हइतो, एइ स्वीकार करा जाय उत्तराधिकारित्वक्रमे ऐ त्यक्त धन द्वितीय मृत व्यक्तिर भगिनीर पुत्रके किम्वा प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्रीके अर्पितो इति।

श्रीर्जयतितराम्[1]

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीया(धि)पति - श्रीयुत-कुटनीइशमिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

१. श्रीर्ज्जयतितराम्—व्यप०।

यदि कश्चित्कायस्थजातिः स्वस्त्रियं स्वपितरञ्च संरक्ष्य मृतस्तदनन्तरं तत्पिता तद्विमातरमप्राप्तव्यवहारं पुत्रञ्चैकं स्वभगिनीपुत्रञ्च संरक्ष्य मृतः, पश्चादप्राप्तव्यवहारः स पुत्रोऽप्यनपत्य एव मृतः, तदनन्तरमप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य पितुः पत्नी तस्मिन्विवादास्पदीभूतधने भोगवती भूत्वा स्वपतिभगिनीपुत्राय उपरिलिखिताय तस्यैव स्वायत्तीभूतधनस्य[1] असियतनामाख्यं पत्रं लिखित्वा दत्त्वा गृहीततत्पत्रं तत्पत्रलिखितवस्तुषु[2] भोगमकारयित्वा मृता स्यात्तदा मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण च तदेव[3] असियतनामाख्यपत्रं प्रथममृतव्यक्तेः स्त्रियां सत्यामसत्यां[4] वा सिद्धं प्रचलितं (च) भवितुं न शक्नोति। एवञ्च विवादास्पदीभूतधने उत्तराधिकारिणामयं क्रमः[5]। तथाहि जीवति पितरि प्रथममृतो यः पुत्रस्तदीयविभक्तमसाधारणञ्च धनं तत्पत्नी मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण च प्राप्तुमर्हति; यदि च तस्य स्वोपार्जितं धनं साधारणं स्थितं तदा तत्पत्नी तद्योग्यांशं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण प्राप्तुमर्हति, न तु मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, तद्देशीयग्रन्थकारैः साधारणधने विभागे सत्येव पत्न्याधिकारालखनात्। एवञ्च प्रथममृतव्यक्तेर्विभक्तासाधारणधनातिरिक्तं विवादास्पदीभूतं धनं एतदुभयविधतदीयधनाभावे च समस्तमेव विवादास्पदीभूतं धनं मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, अथ च तस्यैव पुत्रस्य विभक्तासाधारणं धनं विना तदुपार्जितसाधारणधनेऽपि तद्योग्यांशञ्च विना विवादास्पदीभूतं धनम्, एतत्त्रिविधधनाभावे च समस्तमेव विवादास्पदीभूतं धनं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण प्रथमपुत्रमरणोत्तरं तत्स्त्रियां सत्यामपि तत्पितुः स्वत्वास्पदीभूतम्, अतस्तस्मिन्मृते तस्याप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य उपरिलिखितपितृस्वत्वास्पदीभूतयावद्धनाधिकारे जाते सति तद्धनं तदीयमेव जातम्। अतस्तस्मिननपत्ये[6] मृते

१. ०धनस्यासि०—व्यप०।
२. गृहीतस्तत्पत्रलिखित०—व्यप०।
३. देवासि०—व्यप०।
४. सत्याम्वा—व्यप०।
५. ॰मयक्र०—व्यप०।
६. तस्मिन्नपत्ये—व्यप०।

तदुत्तराधिकारिणामेव तद्धनाधिकारः। तत्र च तत्पत्न्यादिसगोत्रपर्य्यन्ताभावे तत्पितुर्भागिनेयस्य अ(ा)त्मबन्धुत्वेन मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, एवं पत्न्यादितत्पितामहप्रपौत्रपर्यन्ताभावे तत्पितामहदौहित्रत्वेन वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण चाधिकारः। एवञ्च सति प्रथममृतव्यक्तेः स्त्री उपरिलिखितपतिस्वत्वास्पदीभूतधनाभावे एतद्धनादेव ग्रासाच्छादनाधिकारिणीति—इतिमिथिलादेशचलितविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थानुसारिणी वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था।

तत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां[1] स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः।
नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिवित्तात्[2] कथञ्चन॥

इति विवादचिन्तामणि(विचि० पृ० २३८)दायभागादि(दाभा० पृ० १७३,११।१।६०)लिखितमहाभारतवचनम् (भारत-१३।४६७।२४)। १

अपहार ऐच्छिकं दानविक्रयादिकम्—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् (पृ० २३८)। २

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि विवादचिन्तामण्यादि(विचि० पृ० २३५)ग्रन्थधृतविष्णुवचनम् (विस्मृ० पृ० ४६)। ३

इदं च *विभक्तपतिधनपरम्*—इति विवादचिन्तामणिलिखनम् (पृ० २३४)। ४

---

१. स्त्रीणां तु पतिदायाद्यम्—भारतम्।

२. ०वित्तात—व्यप०, ०दायात—दाभा०।

अतोऽविशेषेणैव विभक्तत्वाद्यनपेक्ष्यैव[1]। अपुत्रस्य भर्त्तुः कृत्स्न-धने पत्न्यधिकारः—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० १६६, ११।१।४६)। ५

'सगोत्राभावे बन्धुः'—याज्ञवल्क्य(वचना)त्, स (च) स्वबन्धुः पितृबन्धुर्मातृबन्धुश्च।

आत्मपितृष्वसुः[2] पुत्रा आत्ममातृष्वसुः[2] सुताः ॥
आत्ममातुलपुत्राश्च[3] विज्ञेया आत्मबान्धवाः।

पितुः पितृष्वसुः[2] पुत्रा पितुर्मातृष्वसुः[2] सुताः।
पितुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया पितृबान्धवाः ॥

मातुः[5] पितृष्वसुः[2] पुत्राः मातुर्मातृष्वसुः[2] सुताः।
मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः मातृबान्धवाः ॥

एतेषां क्रमेणाधिकारः—इति विवादचिन्तामणिलिखनम् (पृ० २४२)। ६

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्ति-[6]क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० २०८-९)। ७

अविभागे तु शङ्खः।

भ्रातृभार्याणां (च) स्नुषाणाञ्च न्याय(तः प्र)वृत्तानामनपत्यानां पिण्डमात्रं गुरुर्दद्यात् ॥

---

१. ०नपेक्ष्यैव—दाभा०।
२. ०स्वसुः—व्यप०।
३. ग्रात्म०—व्यप०।
४. पितुर्मा०—व्यप०।
५. मातुपि०—व्यप०।
६. प्रत्याशक्ति०—व्यप०।

जीर्णानि वासांस्यविक्रतानि[1]—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखनञ्चेति (पृ० २३६)

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

———

३१—रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर इङ्गरेजि १८२६ साल तारिख २८ माह देशम्वर मतावक वाङ्गला १२३३ साल तारिख १४ पौष रोज वृहस्पतिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके—

मृत गौरीप्रसादचौधुरि आपिलाण्ट
मसम्मात जयमालाचौधुराणी रेष्पाडण्ट

मृत्युञ्जयशर्म्मा शायेलेर उकिल सदासुखपण्डित विद्यमाने आइल। जयमालाचौधुराणी मुद्दाआलेहेर जमिदारि निलाम द्वाराय शायेलेर पाओना डिगरिर टाका देयानेर वावत। शायेलेर दरखास्त नामञ्जुरिर विषये कोर्ट आपिलेर तृतीय हाकिमेर मञ्जुर राखा सहर ढाकार जजसाहेवेर हुकुमेर असम्मतिते ओ ऐ चौधुराणीर जमिदारिर किछु निलाम करिया डिगरिर लिखित टाका देओयानेर निमित्ते कोर्ट आपीलेर हाकिमदिगेर नामे ए आदालतेर हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय शाएलेर दरखास्त ऐ उकिलेर नामिक ओकालतनामा ओ सन हालेर १ मेइ मासेर लिखित जाहाङ्गीरनगरेर कोर्टेर रोवकारिर नकल आर कोर्टे दाखिल हओया शाएलेर सओयालेर नकल सम्वलित जे हाल मासेर २३ तारिखे ए आदालते दाखिल हइयाछिल अद्य दरपेष हइया दृष्टे आइल। जाना गेल ये इङ्गरेजि १८१४

---

१ °स्यभिहृतानि'—व्यप०।

शालेर १६ देशम्वर मासेर हश्रोया ए आदालतेर फयशला अनुसारे गोविन्द्रप्रसादचौधुरिर त्यक्त परगने काशीमपुर शाशन-वाशन गयरह जमिदारिर आट आना रकमेर मध्ये ऐ गोविन्द प्रसादचौधुरिर प्रथमा स्त्री मसम्मात् पार्व्वतीचौधुराणिर दत्तक पुत्र गौरिप्रसादचौधुरिर स्वत्व अर्द्धेक परिमाने, श्रो ऐ चौधुरिर द्वितीया स्त्री मसम्मात जयमालार दत्तक पुत्र शिव-प्रसादेर स्वत्व[1] द्वितीय अर्द्धेक परिमाणे साव्यस्थ हइयाछे। श्रो ए आदलतेर फएशलार परे द्वितीय स्त्रीर दत्तक पुत्र शिवप्रसाद-निःसन्तान मरिल; श्रो ताहार मृत्यु हश्रोन हेतुते ऐ गौरिप्रसाद चौधुरिर ताहार त्यक्त चारि आना स्वत्वेर दाश्रोया करिलेक, श्रो ए आदालतेर पण्डितेरा इङ्गरेजी १८१७ शालेर ७ फेवरश्रोयारि मासे प्रथम हाकिमेर सश्रोयालेर जवावे एक केता व्यवस्था एइ मजमुने, ये शिवप्रसादचौधुरीर त्यक्त चारि आना अंश ऐ अप्राप्त-व्यवहारेर ग्रहीतृ-माता जयमालाके अर्शे, ताहार भ्राता गौरीप्रसादके अर्शे ना, दाखिल करिलेन। ताहार पर तारिणी-प्रसाद अप्राप्त-व्यवहार पुत्र राखिया ऐ गौरीप्रसाद मरिल, श्रो इङ्गरेजि १८१६ शालेर ३१ आगष्ट मासे मृत्युञ्जय शर्म्मा शाएल ऐ जयमालार नामे, ये ए क्षण पर्य्यन्त वर्तमान आछे, प्रकाश हय, ६७९।-)॥२ गण्डार डिगरि सहर ढाकार देश्रोयानी आदा-लत हइते पाइल; श्रो चाहितेछे ये ए चारि आना हिस्या किम्वा ताहार मध्ये किछु आपन हासिल करा डिगरिर टाका पाश्रोनेर कारण विक्रय कराय, श्रो तमसुकेर तारिख ये ए मृत्युञ्जयेर दाश्रोयार मूल वटे अनिर्णय···। आर मसम्मात जयमाला-चौधुराणीर एजहार, एइ जे आमार एक कन्या, ताहार सन्तान जन्मे नाइ सम्भावना आछे; श्रो द्वितीय कन्या पति-वर्तमाना, ताहार गर्भज, अप्राप्त-व्यवहार एक पुत्र आछे, श्रो आमि स्वयं

---

१. सत्व-व्यप०।

द्वितीय एक पुत्रके दत्तक करियाछि। ए प्रकारे ए आदालतेर पण्डितदिगेर (स्थाने) जिज्ञासा जाय ये जयमालार एजहार सत्य-प्रकारे ऐ चारि आना अंश, किम्वा ताहार मध्ये किछु मृत्युञ्जय शर्म्मार पाओया डिगरि निमित्ते विक्रय हइते पारे कि ना, ओ ताहार एजहार मिथ्या हओन प्रकारे ताहार मृत्युर पर ऐ चारि आना हिस्या ताहार सपत्नीर पौत्र अर्थात् गौरीप्रसादचौधुरिर पुत्र तारिणीप्रसादचौधुरिके, किम्वा कोन व्यक्तिके अर्शिवेक, आर ताहार एजहार (प्रकारे) ताहार दुइ कन्या ओ एक दत्तक पुत्र थाकनेय विषये मिथ्याइ स्वीकार करणेर जवाव वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे मङ्गलवार दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त दाखिल करेन इति।

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनी — इशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

मृत्युञ्जयशर्म्मणः प्राप्तजयपत्रलिखितमृणं यदि शिवप्रसादस्यावश्यकश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदेहिकक्रियार्थं स्वभरणपोषणार्थं वा तन्मात्रा जयमालया कृतं तत्परिशोधनं यदि स्वसंक्रान्ततदीयांशविक्रयं विना न भवति तदा जयमालोपस्थापितवृत्तान्तस्य सत्यत्वेऽसत्यत्वे वा तदर्थमुपरिलिखितऋणपरिशोधनोपयुक्तस्य तदीयांशान्तर्गतस्य विक्रयो भवितुमर्हति, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा जयमालया कृतस्य ऋणस्य परिशोधनार्थम्। यथा पतिधने पत्न्याः पतिश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदेहिकक्रियार्थं पतिकृतकुटुम्बभरणार्थर्ण-परिशोधनार्थं स्वभरणपोषणार्थसाधने विक्रयेऽशक्तावधिकारस्तथा पुत्रधने मातुरपि। एवञ्च जयमालामरणोत्तरं स एवांशस्तत्सपत्नीपौत्रस्य तारिणीप्रसादचतुर्धरिणस्य पूर्व्वधनस्वामिशिवप्रसादभ्रातृपुत्रस्य भविष्यति, यतः पुत्रधनस्योत्तराधिकारित्वेन मातृसंक्रान्तत्वेऽपि गृहीतपुत्रधनाया मातुरुपरमे पूर्व्वधनस्वामिपुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं

भवति। तत्र च तद्भ्रातृपर्य्यन्ताभावे[1] सुतरां भ्रातृपुत्रस्यैवाधिकारः, सति भ्रातृपुत्रे पितृदौहित्रस्यानधिकारात्, स्वामिमरणोत्तरमेकत्रीकृतस्य द्वितीय-दत्तकशास्त्रलिखितत्वाच्च—इतिवङ्गदेशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कार-कृतदायभागटीकाक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्:—

रिक्थग्राह[2] ऋणं दाप्यः—

इत्यादिविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ(१विवा १७६ख)धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।५१)। १

पत्नी तद्धनं भुञ्जीतैव, परं न तु तस्य दानाधानविक्रयान् कर्तुमर्हति। तदाह-कात्यायनः

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥ (कास्मृ० ६२१)

इतिदायभाग(पृ० १७१)ग्रन्थलिखनम्॥२॥

एवञ्च पत्यु[3]रौर्द्ध्वदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतम्। अतएव वर्तना[4]शक्तावाधानमपि, तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इत्यादि दायभाग-ग्रन्थलिखनम्। (पृ० १६३, ११। १।६१-६२)

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः।
पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ[5] भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिदायभागादिग्रन्थ (दाभा० पृ० १५१) लिखितयाज्ञवल्क्यवचनम्॥ (२।१३५)५।

---

१ पर्य्यन्त०—व्यप०।

२ ऋक्थग्राही—व्यप०।

३ पत्युरोर्द्ध०—व्यप०।

४ वर्त्तमाना०—व्यप०।

५ पितरौ भ्रातरस्त०—व्यप०।

भ्रातृपौत्रस्याभावे पितुर्दौहित्रस्याधिकारः—इति (दाय)क्रमसंग्रहलिखनञ्चेति (पृ० ६)। ६

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्।

३२—यत्र धनिनः सप्तमपुरुषज्ञातिमातुलपुत्रौ विद्येते तत्र तयोर्म्मध्ये जीमूतवाहनकृतदायभागमते धनिनो मातुलपुत्रस्यैव धनित्यक्तधने धनिनिमृतेऽधिकारः, विज्ञानेश्वरकृतमिताक्षरामते तु तयोर्म्मध्ये सप्तमपुरुषज्ञातिरेवाधिकारी न तु मातुलपुत्र इति—

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

९३ व्यवस्था दाखिल सदर देमानीका रजिष्टर साहेव श्री मेघनाटन साहेवका हजूर कलकत्तेका कोर्ट आपील आदालतिके हाकिमान्क सवालके यवाव इति—

श्रीवैद्यनाथपण्डित

सवाल

३३—आगम केत्ने प्रकार है? सप्त प्रकार आगम कोन पुस्तकमे लिखा हो? मिताक्षरा किम्वा अन्य कोइ ग्रन्थमे लिखा हो इति।

यवाव

शास्त्रोक्त आगम सप्त प्रकार, ओ सप्त प्रकार आगम मिताक्षरा वीरमित्रोदय ओ गैरह ग्रन्थमे लिखा है इति।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ यवाव दाखिल नाएव रजिष्टर श्रीयुत विष्ट साहेबका हुजुरमो इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रथम सवाल

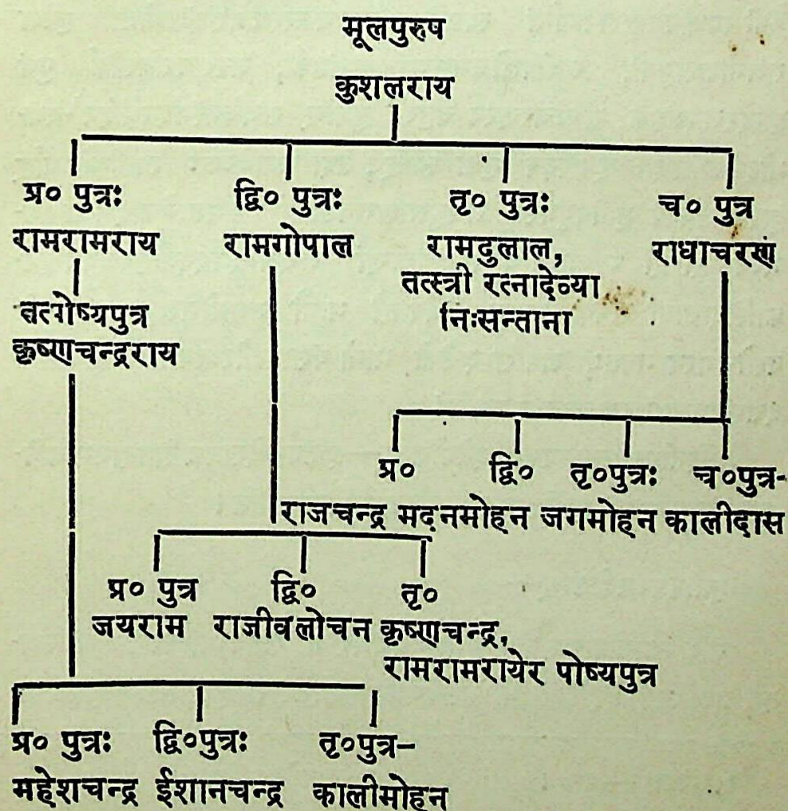
३४—कुशलरायेर चारि पुत्रेरा ओहार त्यक्त जमिदारी प्रभृतीर अंश सकलेर उपर समान अंशते दखिलकार थाकिया कुशलरायेर तृतीय पुत्र रामदुलाल आपन स्त्री रत्नादेव्याके राखिया निःसन्तान मरे, ओ ऐ स्त्रीलोक आपन जीवत्दशा पर्य्यन्त आपन स्वामीर त्यक्त जमिदारी-प्रभृतीर अंशेर उपर दाखिल थाकिया राजीवलोचन ओ कृष्णचन्द्र ओ रामगोपालेर पुत्रगण, जयरामरायेर पुत्र हरिहरराय, ओ राधाचरणेर चारि पुत्र, राजचन्द्र ओ गयरहेर समक्षे मरिलो। अतएव रत्नादेव्या मजकुरार मृत्युर पर ताहार स्वामी अर्थात् कुशलराय मजकुरेर तृतीय पुत्र रामदुलालरायेर त्यक्त अंश शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर मध्ये काहाके, की परिमान अर्शे इति।

द्वितीय सवाल

रामगोपालरायेर औरस पुत्र कृष्णचन्द्रके रामदुलालराय पोष्यपुत्रकरण प्रयुक्त कृष्णचन्द्र मजकुर रामदुलालेर त्यक्तेर

स्वत्वे ताहार स्त्री रत्नादेव्यार मृत्युर पर आपन सहोदर भ्राता राजीवलोचन ओ पितृव्यपुत्रगण राजचन्द्र (ओ) गयरहेर सहित समान मर्य्यादा राखिवेक, कि ओहारदिगेर सम्पर्के ओहार स्वत्व न्यून किम्वा अधिक हइवेक इति।

यद्यपि रामगोपालरायेर पुत्र जयरामराय रत्नादेव्यार समक्षे मरियाथाके, ए प्रयुक्त ताहार पुत्र हरिहरराय रत्नादेव्या मजकुरार मृत्युर पर राजीवलोचन ओ गयरह रामदुलालेर भ्रातुष्पुत्रगणेर न्याय ऐ रामदुलालेर त्यक्त विषयेर अंशे स्वत्वाधिकारी हइवेक, किम्वा रत्नार समक्षे ताहार पितार मृत्यु हओन प्रयुक्त स्वत्वाधिकारी हइवेक इति।



श्रीर्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

प्रभुसमर्पितवंशावलीपत्रानुसारेण प्रश्नानुसारेण चोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र कुशलरायस्य चत्वारः पुत्राः स्वपितृत्यक्तसराजकरस्थावराद्यंश-चतुष्टयं कृत्वा स्वस्वांशभोगवन्तः स्थिता[१]:, तेषां मध्ये कुशलरायस्य तृतीय-पुत्रो रामदुलालः स्वपत्नीं रत्नादेवीं संरक्ष्य अनपत्य एव मृतः, ततो रत्ना-देवी स्वजीवनकालपर्य्यन्तं स्वपतित्यक्तसराजकरस्थावराद्यंशभोगं कृत्वा रामगोपालपुत्रौ, राजीवलोचनकृष्णचन्द्रसंज्ञकौ, जयरामरायस्यैकं पुत्रं हरिहररायसंज्ञकं, राधाचरणस्य चतुरः[२] पुत्रान् राजचन्द्रमदनमोहन[३]-जग-मोहनकालिदासान् संरक्ष्य मृता स्यात्, तदा रत्नादेव्याः स्वामिनोऽर्थात् कुशलरायस्य तृतीयपुत्रस्य रामदुलालरायस्यांशं समस्तमेकादशधा वि-भज्य द्वौ द्वौ भागौ राधाचरणपुत्राणां राजचन्द्रमदनमोहनजगमोहन-कालिदासानां प्रत्येकं भवतः, तथैव द्वौ भागौ रामगोपालपुत्रस्य राजी-वलोचनस्य भवतः, अवशिष्टश्चैको भागो वंशावलीपत्रावगतरामरामराय-दत्तकपुत्रस्य कृष्णचन्द्रस्य भवति।

द्वितीयप्रश्नस्याप्यर्थादिदमेवोत्तरम्—इतिवङ्गदेशप्रचलितदायभागवि-वादभङ्गार्णवदत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थानुसारिणीव्यवस्थेति।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि रामगोपालरायस्य पुत्रो जयरामरायो रत्नादेव्यां सत्यां मृतः स्या-त्, तदा तत्पुत्रो हरिहररायो रत्नादेव्या मरणोत्तरं रामदुलालभ्रातुष्पुत्रराजी-

---

१. स्थित०—व्यप०।　　　　३. मदन्मोहन—व्यप०।

२. चतुर पुत्रान्—व्यप०।

वलोचनादिवद् रामदुलालत्यक्तधने अधिकारी न भवति, सत्यां रत्नादेव्यां मृतस्य जयरामरायस्य हरिहररायपितुस्तद्धने स्वत्वाभावात्। हरिहररायस्य तु रामदुलालभ्रातृपौत्रत्वेन सत्सु भ्रातृपुत्रेषु भ्रातृपौत्रस्य हरिहररायस्य तद्धनाधिकाराभावाच्च (नाधिकारः) इति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमद्वितीयप्रश्नोत्तरप्रमाणान्तर्गतप्रथमद्वितीयप्रमाणमेव। अत्र यद्यपि द्वितीयप्रश्ने कृष्णचन्द्रस्य रामदुलालरायदत्तकपुत्रत्वं लिखितं तथापि वंशावलीपत्रेण कृष्णचन्द्रस्य रामरामरायदत्तकपुत्रत्वं निश्चित्येयं व्यवस्था दत्ता। कृष्णचन्द्रस्य रामदुलालरायदत्तकपुत्रत्वं निश्चितं भवति चेत्तदा तन्निश्चयोत्तरं तदुत्तरं दास्यामीति—

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल रजेष्टर साहेब श्रीयुत मेघनाटन साहेबके हजुर कलकत्तेका कोर्ट आपील आदालतीको हाकिमानके सवालके यवाबमो कुरशोरनामा, मै सवाल।

सवाल

३५—जिले कानपुर साकिनेर एक हिन्दु जमीदार तीन स्त्री राखितो। ओ ताहार एक स्त्रीर गर्भे एक पुत्र ओ द्वितीय स्त्रीर गर्भे ओ एक पुत्र एवं अन्य स्त्रीगर्भ पाँच पुत्र छिलो। ओ जमीदार मजकुर ओइ सात पुत्र वर्त्तमान राखिया लोकान्तर हय। जमीदार मजकुरेर पैतृक जमीदारी ओइ सात सन्तानेर मध्ये की प्रकार अंश हइवेक इति।

सवाल

यदि स्यात् जमीदार मजकुरेर सन्तान सकलइ तीन स्त्रीर मध्ये एकेर गर्भजात हइया सकलइ परलोक प्राप्त हय तबे ओइ स्त्रीर कोनो सन्तान ना थाकाते ताहारदिगेर पैतृक हिस्सा की रूप वण्टक हइवेक, एवं कोन कोन व्यक्तिके अर्शिवेक इति।

यथावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र कस्यचित् कानपुरप्रदेशीयस्य हिन्दुजातेर्भूस्वामिनस्तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्या गर्भे एकः पुत्रो द्वितीयस्या अपि गर्भे एकः पुत्र एवमन्यस्या गर्भे पञ्च पुत्राः स्थिताः; स भूस्वामी यद्युपरिलिखितसप्तपुत्रान् संरक्ष्य मृतः स्यात्तदा तद्भूस्वामिनः[1] पैतृकं सराजकरस्थावरं समं सप्तधा विभज्य सप्तपुत्राणां प्रत्येकमेकैकांशो भवतीति—

तत्र प्रमाणम्—

अत[2] ऊर्द्ध्वं पितुः पुत्रा विभजेयुर्धनं समम्—इति मिताक्षरा(पृ० ५७५, यास्मृ० २।११४)वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतनारदवचनम्[3](धको० पृ० ११५२)।

यद्युपरिलिखितभूस्वा(मि)नस्तिसृणां[4] स्त्रीणां मध्ये एकस्या गर्भजाताः सन्ततयः सर्व्वाः परलोकं गतास्तदा तस्या मृतसन्तानायाः कस्या-

---

१. तत्भू०—व्यप०।

२. पितयु र्द्ध्वं गते पुत्रा विभजेरन् धनं क्रमात्—नास्मृ० पृ० १७९। पितयु परते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः—नास्मृ सं० पृ० १४९।

३. वीरमित्रोदये वचनमिदं न दृष्टम्। तत्रै तदर्थकम् विभजेरन् सुताः पित्रोरुर्द्ध्वमृक्थमृणं समम्—इति (यास्मृ० २।११७) धृतम्।

४. तिसृणाम्—व्यप०।

(ब्रि)द्वर्त्तमानसन्ततेरभावेन तासां सतीनां पैतृकधनांशस्यायं विभागप्रकारः—यद्युपरिलिखितप्रश्नलिखितससपत्नभ्रातॄणां पैतृकं (धनं) सराजकरस्थावरमविभक्तं स्यात्तदा वर्त्तमाना ये सापत्नभ्रातरस्ते एव मृतानां सापत्नभ्रातॄणां योऽशस्तस्य तत्पुत्रपौत्रप्रपौत्रसोदरभ्रातृपर्य्यन्ताभावे समानांशभागिनो भवन्ति। यदि च ते प्रथमं परस्परं विभक्ताः पुनर्विभक्तं धनं मिश्रीकृत्यैकत्रैकधर्म्मेण संसृष्टाः सन्तः केचन मृतास्तदा येन येन सह ते संसृष्टाः (सन्तस्ते) स्थितास्तेषामेव[1] तद्धनम्, न त्वसंसृष्टानां पुत्राद्यभावेऽपि भवति। एतत्पक्षद्वये मृतानां धनग्राहिण्यः सकाशात् तत्तत्पत्न्यः तत्तन्मातरो[3]वा यावज्जीवमन्नाच्छादनभागिन्यः[4]। यदि च तेषां तद्धनं विभक्तमथवोपरिलिखितरीत्या ते संसृष्टा न स्थितास्तदा तेषां पुत्रपौत्रप्रपौत्ररूपापत्यपत्नीदुहितृदौहित्रपर्य्यन्ताभावे तेषां माता तत्तदंशभागिनी भवति—इति कानपुरप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थ-(मिता० पृ० २१६)धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥१॥

सोदराणामभावे भिन्नोदरा धनभाजः—इति मिताक्षरालिखनम् (पृ० २२२) ॥ २ ॥

संसृष्टिनस्तु संसृष्टी—इत्यादि तद्धृतं मिता० पृ० २२५)याज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३८) ॥ ३ ॥

---

१. °णामंशो तत्तत्०—व्यप०।

२ °मेवलतुद्धनं न त्वत् पुत्राद्यभावे भवति—व्यप०।

३ °पत्नी माता वा—व्यप०।

४. °भागिनी—व्यप०।

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्-इतिमिताक्षरा-लिखनम् (मिता० पृ० २१७) ॥ ४ ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल रजिष्टर साहेब श्रीयुत मेघनाटनसाहेबका हजुर कलकत्तेका सदर कमिसनरके श्रीयुत राससाहेब सदर देमानी आदालतीके पञ्चम हाकिमके सवालके यवाब ।

३६—श्रीयुत रेजष्टर मेघनाटन साहेबेर हैते सवाल—प्रसादसिंह नामे एक व्यक्ति राजपूतेर औरसे धानक जाति स्त्रीर गर्भे जन्मियाछे । इहाते यद्यपि ताहार पितार सहित ताहार मातार विवाह हैइया ना थाके, खोरपोष पाओानेर योग्यता राखे, कि ना-एइ सवालेर यवाब हिन्दुस्थानि पण्डित लिखिया देन इति ।

यवाबव्यवस्था

यदि कश्चित् प्रसादसिंहो राजपुतवीजतो[1] धानकजातीयस्त्रीगर्भे उत्पन्न-स्तत्र यद्यपि तत्पित्रा सह तन्मातुर्विवाहो नाभूत् तथापि अन्नाच्छादनं प्राप्तुं[2] शक्नोतीति ।

श्रीर्जयतितराम

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

एइ व्यवस्था दाखिल रेजस्टर श्रीयुत मेकनटन साहेबेर हुजुरे—

---

१. राजपूत वीजते—व्यप० ।

२. प्राप्त०—व्यप० ।

सओयाल

३७—यद्यपि त्रिहोत जिला निवासी कोन व्यक्तिर भ्रातुष्पुत्र-थाके से व्यक्ति दौहित्रके कृत्रिम पुत्र करिते पारे कि ना ?

यन्त्र

तीरभुक्तिप्रदेशीयेन केनचिदनपत्येन तद्देशचलितकेशवमिश्रकृतद्वैत-परिशिष्टरुद्रधरोपाध्यायकृतशुद्धिविवेकादिग्रन्थविवेचनया मनुवचनानुसारेण तद्देशीयपूर्व्वापरव्यवहारानुसारेण च सत्यपि भ्रातृपुत्रे दौहित्रः कृत्रिमपुत्रः कर्त्तुं शक्यते इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

एइ व्यवस्था दाखिल श्रीयुत रेजेष्टर मेकनटन साहेवेर हजुरे।

सओयाल

३८—एक विधवा स्त्रिलोक आपन पतिर अनुमतिते शास्त्रोक्त-विधि मत एक वालकके दत्तक करिलेक। ए प्रकारे ऐ स्त्रीर जीव-द्दशाते ताहार मृत पतिर धन पाओनेर सत्वाधिकारी ऐ दत्तक हय कि ना।

यन्त्र

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रप्रतिरूपमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्येकया विधवया स्त्रिया पत्यनुमत्या शास्त्रोक्तविधिना एको बालको दत्तकः कृतः स्यात्तदा तस्यां स्त्रियां जीवन्त्यामपि तस्या मृतपतिधनप्राप्तेः

स्वत्वाधिकारी स एव दत्तकः पुत्रो भवति शास्त्रोक्तमुख्यगौणपुत्राणामेवं पौत्रप्रपौत्राणां वाभाव एव पत्न्यादीनामधिकाराभिधानात्—इति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

एवं मुख्यगौणपुत्राननुक्रम्यैतेषां दायग्रहणे क्रममाह—

पिण्डदोऽशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः—(यास्मृ० २।१३२) इति—मिताक्षरालिखनम् (पृ० २१४) ॥ १ ॥

मुख्यगौणसुता दायं गृह्णन्ति-इति निरूपितम् । तेषामभावे सर्व्वेषां दायादक्रम उच्यते । पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—(यास्मृ० २।१३५) इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (पृ० २१६) ॥२॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल इङ्गरेजी मिशील

———

सओयाल

३९—ये मकद्दमाते ऐ सओयाल करा गियाछे—आजमिर देशेर सम्पर्कीय छिल। जिज्ञासा जाइतेछे ये वङ्ग देश दायभाग मते दत्तक पुत्रेर सत्वे ऐ आज्ञा सिद्ध वटे, कि ना। यदि सिद्ध ना हय ताहार हेतु वचन प्रमाण सम्वलित निवेदन करेण इति। २६ शेतम्बर सन १८२६ इंरेजि।

यथार्थ-व्यवस्था

वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थमते दत्तकपुत्रस्य स्वत्वे इयमेव व्यवस्था प्रमाणं भवतीति ।

श्रीदुर्जयः ततराम्　　　　　　श्रीहरिः शरणम्

श्रीरघुनाथमिश्रेण　　　　　　श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४०—सदर देवानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टेन्नी इशमिट साहेवेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अप्राप्त-व्यवहार शिवनाथघोषेर पक्षे अश्विनवामवसुर[1] नामे भानुमतीदास्यार मकद्दमाते इङ्गरेजि १८२७ शालेर ७ फिवरओरि मासेर रोवकारिर लिखित पारस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयालात, एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वङ्ग देशनिवासी एक व्यक्ति हिन्दु आपन तालुक हइते आपन स्त्रीके किछु भूमि पृथक करिया दिया ओ स्त्रीके ताहार उपर दखिल कराइया ताहार कएक वत्सर परे ऐ स्त्रीके ओ ताहार गर्भज तिन पुत्र राखिया मरियाछे। पश्चात् ऐ तिन पुत्रेर मध्ये एक जन स्त्री राखिया मरियाछे। तत्परे प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री वाकी दुइ पुत्र राखिया मरियाछे। जिज्ञासा करा जाइतेछे ये ऐ भूमिते मृत पुत्रेर स्त्रीर पत्यंशेर दाओया अर्शे कि ना ? ॥ १ ॥

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री ऐ पुत्रेर मृत्युर पूर्व्वे किम्वा ताहार पर ऐ सम्यक भूमिर हेवानामा वाकी दुइ पुत्रेर एक

[1] अश्विनरामवसु—इति साधीयान् पाठः ।

जनार पुत्रके लिखिया दिया थाके, ओ गृहीताके हेबार[1] भूमिते दखिल कराइया थाके। ए प्रकार हेवा सिद्ध ओ दातोर अन्य पुत्रदिगेर स्वत्वनाश बोधक वटे कि ना ॥ २ ।

तृतीय सओयाल—

यद्यपि प्रथम मृत व्यक्तिर ऐ भूमि पृथक करिया देओन काल पर्य्यन्त केवल ऐ तिन पुत्रेर मध्ये एक जन, अर्थात् गृहीतार पिता, जन्मिया थाके; ए प्रकारे शास्त्रेर आज्ञाते उतराधिकारित्व स्वत्व ओ हेवा सिद्ध तार विषये विशेष आछे कि ना ? ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

यवान-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइश मिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र वङ्गदेशीयः कश्चन हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वकीयसराजकरस्थावरात् स्वस्त्रियै काञ्चिद्भूमिं पृथक्कृत्य दत्त्वा तदुपरि तस्याश्च भोगं कारयित्वा कतिपयवत्सरानन्तरं तां स्त्रियं तद्गर्भजांस्त्रीन् पुत्रांश्च संरक्ष्य मृतः, पश्चात्तेषां त्रयाणां मध्ये कश्चिदेकः पुत्रः स्वस्त्रियं संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं प्रथममृतव्यक्तेः स्त्री तदवशिष्टौ द्वौ पुत्रौ संरक्ष्य मृता स्यात् तत्र तद्भूमौ मातरि जीवन्त्यां मृतस्य पुत्रस्य स्त्री पत्यंशं[2] कल्पयितुं प्राप्तुं[3] न र्हति। मातरि मृतायामेव विद्यमानानां पुत्राणां पुत्रत्वेन मातृधने स्वत्वात्तस्या

१ हेवाव—व्यप।

२ पत्यशं—व्यप०।

३ प्राप्तं—व्यप०।

दायत्वं भवति, जीवन्त्याञ्च मातरि मृतस्य मातृधने स्वत्वोत्पत्त्यभावेन दायत्वाभावात् तत्स्त्रियाः सुतरां तद्धनानधिकारित्वात् इति ।

अत्र प्रमाणम्—

पूर्व्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्युपरमे[1] *यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः* - इति दायभागग्रन्थलिखितम् (पृ० ५) ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि प्रथममृतव्यक्तेः स्त्री तत्पुत्रमरणात् पूर्व्वं तदनन्तरं वा तस्याः सर्व्वस्या एव भूमेर्दानपत्रमवशिष्टयोर्द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये एकस्य पुत्राय लिखित्वा दत्त्वा ग्रहीतुर्दानकृतभूमौ भोगं कारितवती स्यात्तदैतादृशदानं सिद्धं भवितुम्, एवं दात्र्या अन्यपुत्रादीनामुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वनाशबोधकञ्च भवितुं नार्हति,यतो भर्त्तृदत्तस्थावरात्मकसौदायिकस्त्रीधने स्त्रिया दानाद्यनधिकारस्य विशेषतो दायभागादिग्रन्थलिखितत्वेनोपरिलिखितविवादास्पदीभूतधनस्य भर्त्तृदत्तस्थावरात्मकसौदायिकस्त्रीधनत्वमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।
भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम्—इत्यादि दायभागादि(दाभा० पृ० ७६, ४।२२)ग्रन्थलिखितकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ९०१) ॥ १ ॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्त्तितम् ।
विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि—इति तद्धृत(दाभा० पृ० ७६, ४।२२)कात्यायनवचनम् (कास्मृ० ९०५) ॥ २ ॥

स्थावरेऽपि भर्त्तृदत्तमात्रे स्त्रिया दानाद्यनधिकारः । यथाह नारदः—

---

१ तत्स्वाम्योपरमे—दाभा० ।

भर्त्रा प्रीतेन यद्दत्तं स्त्रियै तस्मिन् मृतेऽपि तत् ।

सा यथाकाममश्नीयाद् दद्यात् वा स्थावराहते ॥—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० ७६-७७, ४।२३, नास्मृ० पृ० ५६) ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि प्रथममृतव्यक्तिकर्त्तृकतद्भूमिपृथक्करणदानकालपर्य्यन्तं तेषां त्रयाणां पुत्राणां मध्ये केवलमेक एव अर्थाद् ग्रहीतुः पितैवोत्पन्नोऽभूद्, एतस्मिन् प्रकारे सत्यपि शास्त्राज्ञायामुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वविषये एवं दानसिद्ध्यसिद्धिविषये च विशेषो नास्ति—इति वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इंगरेजि १८२७ शाल २४ माहे आपरेल मतालक (मतावक) वाङ्गला १२३४ शाल १२ माहे वैशाख रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके ।

नवकिशोरदास सायेल

सायेलेर उकिल मुनसी गोलाम वतुल हाजीर हइल । सायेलेर सओयालेर लिखित निवेदनेर अनुमोदने ओ दस्तावेजातेर दृष्टे सायेलेर दखली स्थान हइते शरवराहकार महकुफी ओ अन्य २ विषय सम्वलित ए आदालतेर हुकुम सादर हओनेर

१. प्रथक—व्यप० ।

प्रार्थनाय ऐ सओयाल ओ जगन्नाथ चक्रवर्त्तिर नामिक मक्तार-नामा ओ ऐ उकिलेर नामिक ओकालतनामा ओ इंगरेजी १८२६ शालेर २० शेतम्बर मासेर हओया जिला मयमनसिंहेर आदालतेर रोवकारिर नकल ओ सन हालेर जनओरि मासेर २०।२७ तारिखेर लिखित जाहाङ्गीर[1]नगरेर कोर्ट आपीलेर रोवकारिर नकल दुइ केता सम्वलित, जे हाल मासेर २१ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य पडा गेल। तदपरे सदासुखपण्डित उकिल सओयालेर शामिल दस्तावेजातेर दृष्टे सरवराहकार वहालीर प्रार्थनाय एक केता सओयाल रामशङ्करराय ओ शोनारामसरकारेर नामिक मक्तारनामा ओ आपन नामिक ओकालतनामा ओ वाङ्गला पाठ ओ अक्षर वाङ्गला १२३१ शालेर १३ पौष मासेर लिखित नवकिशोरदासेर लिखिया देया एक केता एकरारनामार नकल सम्वलित अप्राप्त-व्यवहार मोहनदासेर माता राजेश्वरिदासीर पक्ष हइते दाखिल करिलेक, दृष्टि आइल। ओ मुनशी हयदर आली उकिल हाजिर हइया रामकिशोररायेर तरफ हइते ताहार हिस्या क्रोक हइते खालाश पाओनेर मजमुने एलाका जाहाङ्गीरनगरेर कोर्टेर हाकिमदिगेर हुकुम वहालिर प्रार्थनाय अन्य विषय सम्वलित एक केता सओयाल मये रघुनाथरायेर नामिक मक्तारनामा ओ आपन नामेर ओकालतनामा दाखिल करिलेक, पडा गेल। तदपरे सायेलेर उकिलेर ६ थाने जिज्ञाशा गेल जे आट भ्रातार मध्ये चारि भ्राता जे आपन स्त्री राखिया निःसन्तान मरियाछे से चारि भ्रातार नाम कि छिल। जवाव दिलेक जे शिवमोहन ओ व्रजकिशोर ओ शोभाराम ओ कुञ्जकिशोर। ताहार मध्ये कुञ्जकिशोरेर स्त्री ओ शिवमोहनेर स्त्री मरियाछे, ओ शोभारामेर स्त्री ओ व्रजकिशोरेर स्त्री वर्त्तमान आछे। जाना गेल जे नवकिशोर

---

१. जाहाजाहाङ्गीर०—व्यप।

दासेर सञोयाले लेखा आछे ये आसार भ्राता गौरकिशोरराय ससार त्यागी हइया आपन अस्थावर वस्तु आपन स्त्री राजेश्वरी दास्याके ओ स्थावर वस्तु आसाके दिया वैराग्य धर्म्माश्रय करिया देशान्तार हइया बहु काल परे पुनराय आपन बाटीते आसियाछिल। तत्कालीन गोपीमोहनदास नामे एक पुत्र राजेश्वरीदास्यार गर्भे जन्मियाछे। किन्तु शास्त्रमते ससम्मात मजकुरार ओ ताहार पुत्रेर सत्व मिलकियते रहे नाइ इति। एमते हुकुम हइलो जे ए आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने दुइ सञोयाल करा जाय। एक, एइ ये यद्यपि ऐ नवकिशोरदासेर एजहार सत्य हय, मन्यत हओया जाय राजेश्वरीदास्यार ओ ताहार पुत्र गोपीमोहनदासके गौरकिशोरदासेर मिलकियत अर्शे कि ना?'

द्वितीय, एइ ये सहोदर आट भ्रातार मध्ये दुइ भ्रातार निःसन्तान दुइ स्त्री जे अद्यापि वर्त्तमान आछे ताहारदिगेर पतित्यक्त दुइ अष्टम अंशेर सत्वाधिकारिणी बटे कि ना। उचित[1] ये शनिवार पर्य्यन्त बङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे एइ दुइ सञोयालेर जवाब दाखिल करेण। पण्डितदिगेर व्यवस्था दृष्टे उचित[1] हुकुम देया जाइवेक।

जवाबव्यवस्था।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यर्थिनवकिशोरदासोपस्थापितवृत्तान्तान्तर्गतनवकिशोरदाससम्प्रदानकगौरकिशोररायकर्तृकस्वस्वत्वास्पदीभूतस्थावरधनविषयकं स्वस्त्रीराजेश्वरी-

१. उचित्—व्यप०।

दासीसम्प्रदानकगौरकिशोररायकर्तृकतत्स्वत्वास्पदीभूत[1]स्थावरधनविषयकञ्च दानं सत्यत्वेन मन्यमानं सन्निरुपाधिकं स्यात्तदा राजेश्वरीदास्यास्तत्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य[2] वा गौरकिशोररायकर्तृकनवकिशोरदाससम्प्रदान-कस्वस्वत्वास्पदीभूतधनान्तर्गतनिरुपाधिदानकृतस्थावरवस्तुषु[3] नाधिकारः। किन्तु पतिलिखितराजेश्वरीदासीसम्प्रदानकनिरुपाधिदानकृतास्थावरवस्तुषु राजेश्वरीदास्या भवत्येवाधिकारः, न तु तत्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य। एवं यद्यप्युपस्थापितगौरकिशोररायकर्तृकसंसारत्यागस्य वैराग्य-धर्म्माश्रयणवृत्तान्तस्य च सत्यत्वेन मन्यमानत्वेऽपि राजेश्वरीगर्भजातस्य गोपीमोहनदासस्य गौरकिशोररायौरसस्य तत्कृतोपरिलिखितदानविषयीभूत-स्थावरास्थावरातिरिक्ततत्स्वत्वास्पदीभूतस्थावरास्थावरवस्तुषु तत्स्वत्वो-परमेऽधिकारः। यदि च उपरिलिखितं दानं सोपाधिकं स्यात्तदा तदुपाधि-निश्चयं विना सोपाधिदानकृतस्थावरास्थावरवस्तुषु राजेश्वरीदास्यास्त-त्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य वा अधिकारो भवति न वेति निश्चयो भवितुं न शक्नोति।

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान्[4] यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते[5] स्वधनस्य वै[6]॥ इति दायभागादि-(दाभा० पृ० ३५, २।३१)ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नास्मृसं० पृ० १५७, १४।४२)॥ १॥

उत्पत्त्यैवार्थ[7]स्वामित्वं लभेत इति आचार्या इति गौतमवचनम्। (गौध०१०।४८)। *तदपि पितृस्वत्वोपरमेऽङ्गजत्वस्य[8] स्वामित्वहेतुत्वेनोत्प-त्तिमात्रसम्बन्धेनान्यसम्बन्धाधिकेन* जनकधने पुत्राणां स्वामित्वात्तद्धनं[9]

---

१. ०भूत०—व्यप०।
२. गोपी०—व्यप०।
३. ०दानं—व्यप०
४. स्वानंशान्—नास्मृसं।
५. सर्वमीशंते—नास्मृसं०।
६. ते—नास्मृसं०।
७. ०र्थं स्वामित्वान्लभ०—व्यप०।
८. ०त्वाद्धनम्०—व्यप०।
९. ०जत्वहेतुत्वेनोत्पत्ति०—व्यप०।

पुत्रो लभेत, नान्यः सम्बन्धीत्याचार्या मन्यन्ते इत्यर्थकम्—इतिदायतत्त्व-लिखनम् (पृ० २) ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

अष्टानां सहोदरभ्रातॄणां मध्ये द्वयोर्भ्रात्रोरनपत्ये द्वे स्त्रियौ विद्यमाने स्याताम्, तयोः स्वस्वपतित्यक्ताष्टभ्रातृसाधारणं समुदायधनान्तर्गतस्वस्वपति-योग्यांशेऽधिकारः—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वविवादभङ्गार्णव-विवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि-(दाभा० पृ० १५१, ११।१।४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२, १३५) ॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

४२—रोवकारि मिसिल आदालत नेजामत इङ्गरेजी १८२७ शाल तारिख १ मेइ मतावक १९ माह वैशाख सन १२३४ वाङ्गला रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके—

शङ्करदास— शायेल ।

शायेल हाजिर हइलो। हाल सनेर २९ मार्च्च मासेर लिखित आजिमावादेर कोर्ट सरकोटेर एक केता रिटरन ताहार सम्वलितेर रोवकारि ओ मकर्द्दमार कागजात समेत पहुछिया ए आदालते दाखिल हओया सओयाल आदि सहित अद्य पडागेल। हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल कराजाय ये यद्यपि मन्यंत हओया जाय ये शङ्करदासपटन-

ओयार सायेल ४४ टाका नगद किम्वा ५० टाकार एक केता तमकसुक रामचरनपटनओयार स्थाने लिखाइया लइया आपन स्त्री मसम्माँत रघुवंशीयाके ऐ रामचरण स्थाने समर्पन करिया थाके, ओ रामचरण ऐ स्त्रीके आपन स्त्रीत्व व्यवहारे आनियाथाके ओ स्वयं ऐ स्त्री आपन आशल पतिर दौरात्म्येर एजहारे रामचरणपटनओयारेर निकट थाकिते सम्मत थाके। ए प्रकारे शङ्करदास शायेलेर निमित्ते स्वामित्व स्वत्व वाकि रहियाछे कि ना। आर ऐ स्त्री ऐ रामचरणेर निकटे रहिवेक, किम्वा आशल पति तलब करण प्रकारे, सम्मत किम्वा असम्मत हय, पुनराय आशल पतिर निकट जाइवेक। उचित ये फोजदारिर कागजातेर मजमुन विवेचना करिया ए विषयेर जवाव पश्चिम देशेर शास्त्रानुसारे शनिवार पर्य्यन्त दाखिल करेन। तत्‌कालीन उचित हुकुम देया जाइवेक इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितफौजादारिसंज्ञकधर्म्माधिकरणीय[1]पत्राणि चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यर्थिशङ्करदासपटनओयारेण चतुश्चत्वारिंशद्राजतमुद्राः किं वा[2] पञ्चाशद्राजतमुद्राणामेकमृणलेख्यं[3] रामचरणपटनओयारसकाशाल्लेखयित्वा गृहीत्वा स्वस्त्री रघुवंशीयानाम्नी तद्रामचरणस्थाने समर्पितेति मन्यमानं स्याद्, एवं रामचरणपटनओयारो रघुवंशीयया सह स्वस्त्रीवद्

१ °करणीर—व्यप० ।
२ किम्वा—व्यप० ।
३ °कं ऋण०—व्यप० ।

व्यवहारं कृतवान् स्याद्, अथ च सा स्त्री स्वकीयपाणिग्राहकपतिदौरात्म्योपस्थापनेन रामचरणपटनओयारस्य सन्निधौ स्थातुं सम्मता स्यादेतादृशप्रकारे सत्यप्यर्थिनः शङ्करदासस्य पतित्वप्रयुक्तस्वत्वमस्त्येव; एवं सा स्त्री स्वपतिकृताह्वाने[1] सति तत्सन्निधौ स्थातुमसम्मता सम्मता वा पुनः स्वकीयपाणिग्राहकपतिसन्निधौ गन्तुं योग्या भवति, यतः प्रभुसमर्पितफौजदारीसंज्ञकधर्म्माधिकरणीयपत्रजातविवेचनया अर्थिशङ्करदासकर्तृकस्वस्त्रीविक्र(य)स्य दानस्य वानवगमात्, प्रत्युत रक्तगोपालनामकसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तेनोपरिलिखितऋणलेख्यश्च[2] अर्थिशङ्करदासकर्तृकस्वीकाराभावावगमात् ; एवं रघुवंशीयोपस्थापितवृत्तान्तेन तस्या रामचरणपटनओयारस्थानस्थितौ पतिदौरात्म्यमात्रस्यैव प्रयोजकत्वावगमात्, अथ च रामचरणपटनओयारोपस्थापितवृत्तान्तेन तस्याः पतिभगिनीपतित्वसम्बन्धेन तत्सन्निधानस्थित्यवगमाच्च। एवं रामचरणपटनओयारसंज्ञकप्रत्यर्थिनिर्द्दिष्टसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तेनार्थिशङ्करदासकर्त्तृकरामचरणसकाशात् चतुश्चत्वारिंशद्राजतमुद्राग्रहणपूर्व्वकमेताश्चतुश्चत्वारिंशद्राजतमुद्रा मया गृहीता इयं रघुवंशीयानाम्नी स्त्री त्यक्तेत्यर्थकलेख्यदानं प्रतीयते। परन्तु तल्लेख्यस्य प्रभुसमर्पितपत्रेष्वदर्शनेन मुद्राग्रहणस्यापि सन्देहः। यद्यपि मुद्रा गृहीतास्तदा तत्पत्रजातनिविष्टऋणलेख्यस्य किमावश्यकत्वमिति। यदि च प्रत्यर्थिरामचरणनिर्द्दिष्टसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तस्यैव सत्यत्वेन स्वीकारस्तथाप्येतादृशदारविक्रयस्य[3] शास्त्रानुसारेण व्यवहारानुसारेण च सिद्धिर्भवितुं नार्हति। अथ च यदि कश्चित् शास्त्रव्यवहारविरुद्धं कर्म्म करोति तं दण्डयित्वा राज्ञा तत्कार्य्यमवश्यं परावर्त्तनीयम्। तस्माद्रामचरणसकाशात् गृहीता रघुवंशीयानाम्नी स्त्री अर्थिना शङ्करदासेन स्वभर्त्रा यत्नतो भरणीया—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखस्मृतिचन्द्रिकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

---

१ °ह्वाने०—व्यप०।

२ °लेख्यश्च—व्यप०।

३ °दरवि०—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

निःक्षेपः पुत्रदाराश्च[1] सर्व्वस्वं चान्वये[2] सति ।
आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्त्तमानेन देहिना ॥
अदेयान्याहुराचार्या यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम्—इति मिताक्षरा(पृ० २४४)वीरमित्रोदयस्मृतिचन्द्रिका(पृ० १९१)व्यवहारमयूखादिग्रन्थलिखित-नारदवचनम् (नामसं०, पृ० ८६ ५।४,५) । १ ।

गृह्णा[3]त्यदत्तं यो[4] मोहाद् यश्चा[5]देयं प्रयच्छति ।
दण्ड[6]नीयावुभावेतौ धर्म्मज्ञेन महीक्षिता—इति (मिता० पृ० २४६; २।१७६)वीरमित्रोदय(वीमि० पृ० ३९३)स्मृतिचन्द्रिकादिग्रन्थ-(स्मृच० पृ० १९४)धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ९१, ५।११; नास्मृपृ० १४०, ७।१२) । २ ।

अदत्तादेयग्रहणाद् गृहीतस्य परावर्त्तनमपि कार्य्यमिति गम्यते—इति वीरमित्रोदय(पृ० ३९४)ग्रन्थलिखनम्[7] ॥ ३ ॥

रक्षेत् कन्यां पिता विन्नां पतिः पुत्रास्तु[8] वार्द्धके ।
अभावे ज्ञातयस्तेषां न स्वातन्त्र्यं क्वचित् स्त्रियाः ॥
इति मिताक्षरा(पृ० २५)वीरमित्रोदयादि(वीमि० पृ० १५०)-ग्रन्थलिखितयाज्ञवल्क्यवचनम् (१,८५) ४ ।

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने ।
रक्षन्ति स्थावरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥
इति मिताक्षरादि[9]ग्रन्थधृतमनुवचनञ्चेति (मस्मृ० पृ० ३४६) ५ ।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

---

१ निक्षेपं पुत्रदारं च—नास्मृ सं० । २ सर्व्वस्व चान्न०—व्यप० ।
३ गृह्णत्य०—व्यप० । ४ लोभाद्—मिता० ।
५ ०यंचा—नास्मृ० सं०, यच्चादेय०—व्यप० ।
६ अदेयदायको दण्ड्यस्तथादत्तप्रतीक्षकः—नास्मृ०, तथादेयस्य दायकः—नमस० ।
७ गृहीतस्यपरावर्तनमपि महीक्षिता कार्यम्—स्मृतिचन्द्रिकायाम् ।
८ पुत्राश्च—?।४ स्मृ० ।
९ मिताक्षरायान्तु-क्वचिदपि स्त्रीणां नैव स्वातन्त्र्यम्—इति लभ्यते ।

४३—आदालत आपिल एलाके अजिमावाद—

शदर देओयानी आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल-जवाव—यद्यपि एक व्यक्ति गयाओयाल ब्राह्मण आपन सहोदरा भगीनि ओ ताहार पतिर नामे वाटीर दानपत्र, ये ताहार नकल पाठान याइतेछे, एइ प्रकार करियाथाके ये आपन जीवदशा पर्य्यन्त ऐ वाटीते थाकिया आमार मृत्युर परे उहारा आमार क्रिया कर्म्म करिवेक; ओ सहोदरा भगिनी, ओ ताहार पति दातार पूर्व्वे मरियाछे, ओ ताहार परे दाता मरियाछे, ए प्रकारे शास्त्रानुसारे ऐ जायगा सहोदरा भगिनी ओ ताहार पतिर उत्तराधिकारिदिगेके अर्शीवेक, किम्वा दातार उत्तराधिकारि दिगेके इति। शन १८२७ इङ्गरेजि तारिख ५ माहे मार्च्च मतावक २२ माहे फाल्गुण सन १२३४ फशली लेखा गेल—

रोवकारि मिशील आदालते दे(ओ)यानी सदर इंरेजी सन १८२७ साल तारिख १५ मेइ मतावक—

लच्छिराम— आपीलाण्ट—

मशम्मात आनन्दिवाइ— रेष्पाडण्ट—

शन हालेर ५ मार्च मासेर लिखित अजिमावादेर प्रवनशल कोर्टेर एक केता सार्टपिकिट ताहार सामिलेर रोवकारि आदि सहित पहुछिया अद्य दृष्टि आइल। हुकुम हइल ये पण्डितदिगेर स्थाने जवाव शनिवार पर्य्यन्त दाखिल कराइया दृष्टि करा जावे इति।

इंरेजी शन १८२७ शालेर २६ मेइ व्यवस्था दाखिल हइया पाटन पाठानेर हुकुम सारद हइल—

श्रीजयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितसप्तविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयमेइमासीयपञ्चदशदिवसीयविचार-

पत्रलिखिताज्ञानुसारेण तत्समर्पितपाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकोटापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयविचारपत्रादिनिविष्टप्रश्नपत्रमेवं दानपत्रप्रतिरूपपत्रञ्चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यद्येकः कश्चिद् गयावालब्राह्मणः स्वकीयसहोदरभगिनीनामकमेवं तत्पतिनामकञ्च वाट्या दानपत्रमेतत्प्रकारेण लिखितवान्[1]—स्वजीवनपर्य्यन्तं तस्यां वाट्यामहं स्थास्यामि[2]; अस्मन्निधनानन्तरं तावस्मत्क्रियाः करिष्यतः,एवं दातरि विद्यमाने सति तौ जायापती मृतौ स्यातामेवं तदनन्तरं दाता मृतश्चेत् एतत्प्रकारे सति उपरिलिखितदानपत्रलिखितरीत्या शास्त्रानुसारेण सा वाटी दातुः सहोदरभगिन्यास्तत्पत्युश्चोत्तराधिकारिणामेव भवति, न तु दातुरुत्तराधिकारिणाम्; यतो दानपत्रे श्रीविष्णुपदे सहोदरभगिनीतत्पत्युभयसम्प्रदानकं कुशोदकग्रहणपूर्व्वकसङ्कल्पकरणपूर्व्वकवाट्यादिसर्व्वस्वत्यागात्मकधर्म्मार्थदानं मया कृतमिति दात्रा लिखितम्। एतादृशवैधदानेन तदनन्तरकाल एव दातुः स्वत्वनिवृत्तिः, ग्रहीतुः स्वत्वोत्पत्तिश्च भवति। एवं दात्रा सम्प्रदानभूतयोस्तयोर्जायापत्योः ससन्तानयोः स्वायत्तीभूतग्रहादिनिष्ठायत्तत्वसम्पादनमपि कृतमित्यपि लिखितम्। अथ च दानादिना बद्धे[3] तद्गृहे तौ सम्प्रदानभूतौ जायापती दानपत्रानुसारेण तिष्ठतामायत्तत्वञ्च कुरुताम्, अस्मत्स्वत्वमद्यावधि किञ्चिदपि नास्तीतिदानपत्रलिखनेन दातुः स्वत्वविनाशस्य सम्प्रदानभूतयोस्तयोः स्वत्वस्य च दृढीभूतत्वेनावगमात्। अतएव दानकृतवाट्यां यावज्जीवं दातुः स्थितेः सम्प्रदानकर्तृकदातुः श्राद्धाद्यौर्ध्वदेहिकक्रियाकरणभावस्य च सम्प्रदानस्वत्वोत्पत्तिप्रतिब(न्ध)कोपाधित्वं न सम्भवति, उपरिलिखितप्रकारैर्दानस्य वैधत्वेन धर्म्मप्रयोजनकत्वेन भोगद्वारा पूर्णतया सम्पन्नत्वेन च सोपाधित्वाभावात्—इति पाटलिपुत्रप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

---

१. लिखितवान—व्यप०। ३. वध्ये—व्यप०।
२. °स्याम्यस्मन्निध°—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

देशे काल[1]उपायेन द्रव्यं श्रद्धासमन्वितम् ।

पात्रे प्रदीयते यत्तत् सकलं धर्म्मलक्षणम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-(मिताप्पृ० ३) धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (१।६) ॥ १ ॥

प्रदीयते यथा न प्रत्यावर्त्तते तथा परस्वत्वावसानं त्यज्यते ।

एतद्धर्म्मस्योत्पादकम्—इति मिताक्षरालिखनम् (पृ० ३) ॥ २ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् (५।१५२) ॥ ३ ॥

स्वामी रिक्थक्रयसंविभागपरिग्रहाधिगमेषु (गौध० १०।३८) ।

ब्राह्मणस्याधिकं लब्धम्—(गौध० १०।३९) ।

क्षत्रियस्य विजितम् (गौध० १०।४०) ।

निर्व्विष्टं वैश्यशूद्रयोः (गौध० १०।४१) इति मिताक्षरा (पृ० १३५) वीरमित्रोदयव्यवहारमयूखा(व्यम०८६ उत्त०)दिग्रन्थधृतगौतमवचनम् ॥४॥

तत्र च हिरण्यवस्त्रादावुदकदानानन्तरमेवोपादानादिसम्भवात्—इत्यादिमिताक्षरालिखनम् (पृ० १४१) ॥ ५ ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४४—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर इङ्गरेजि १८२७ शाल तारिख १४ माहे जुन मताबक बाङ्गला १२३४ शाल १ आषाढ़ रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिद साहेबेर बैठके—

राममोहनघोष ···बनामे······ रामधनराय···ओ गयरह ····शायेलेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल हाजिर हइल । सन हालेर ३१ मेइ मासेर हओया रोवकारिर लिखित पञ्चम हाकिमेर हुकुमानुसारे खास आपीलेर सओयाल ओ गयरह तत्सम्पर्कीय

१ काले—व्यप० ।

कागजात आमार वैठके उपस्थित हइया इष्टे आइल। उभयेर एक वारे जाना जाइतेछे ये विरोधि लाट अर्थात् लाट परला वर्द्धमानेर काछारि मोकामे रासयात्रा दिवस निलाम हइया छे। मुद्दैदिगेर एजहार एइ रूप जाना याइतेछे ये आमरा रासयात्रार दिवस वाकि टाका जमिदारेर आमलाल निकट नियाछिलाम, जमिदारेर आमला रासयात्रार दिवस हओनेर ओजरे से दिवस वाकीर टाका लओनेर स्वीकार ना करिया जवाव दिलेक ये कल्य आइस, लओया जाइवेक, ओ आमरा गेले परे यात्रार दिवस हओनेओ महालेर द्वितीय वन्दवस्त करिलेक, आर इङ्गरेजि ८१९ शालेर अष्टम आइनेर द्वादश धाराते हुकुम आछे-निलाम, अर्थात् द्वितीय वन्दवस्त, ये एइ आएन निर्दिष्ट हओयार पूर्व्वे हइया थाके, तत्सम्पर्केओ ऐ डाँडा ये ऐ आइनेर एकादश धाराते लेखाआछे, निलाम-अर्थात् द्वितीय वन्दवस्त, पूर्व्व प्रसिद्ध ओ विना शठताय ओ देश व्यवस्थार मत हओन नियमेओ वर्त्तिवेक। यथा सन्देह हइतेछे ये शास्त्रानुसारे एइ प्रकार कार्य रासयात्रार दिवस सिद्ध ना हय, विशेषतो रासयात्रार दिवस कहिया वाकीर टाका लओने अस्वीकार हइया, आगत कल्य ताहा लओनेर करार करिया, वाकिदारदिगेक् विदाय दिया, परे सेइ दिवस रासयात्रार दिवस हओनेओ वाकि दाविर हेतुते महालेर द्वितीय वन्दवस्त ये वाकिदारदिगेर असाक्षाते करायाय सिद्ध रहिवेक ना। एइ प्रयुक्त ए विषये वङ्गदेशेर शास्त्रेर जिज्ञासा करण आवश्यक हइलो। ए कारण हुकुम हइलो ये आदालतेर पण्डितेरा वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त ए विषयेर जवाव लिखिया गुजराएन ये मुद्दैदिगेर एजहार सत्य ओ रासयात्रार दिवस निलाम हओन सत्वेओ ए प्रकार कार्य्य यथार्थ ओ सिद्ध हइते पारे कि ना, ओ पण्डितदिगेर जवाव दाखिल हइले परे उचित हुकुम देओया जाइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यर्थिवृत्तान्तस्य सत्यत्वं स्यात्तदैतादृशकार्य्यस्य छलकृतत्वेन, अथ चार्थिनोऽवशिष्टकरदानानुकूलव्यापारे सत्यपि सराजकरभूस्वाम्यधिकृतैस्तत्करमगृहीत्वा करदानानुरूपोपाधिसम्बन्धेन[1] भूस्वामिकृतदाननिमित्तमर्थिनां भोगोपयुक्तं स्वत्वं यत्र तस्य प्रयासान्तरकरणेन निष्पन्नत्वाच्च सिद्धिर्भवितुं[2] नार्हति; यतः सराजकरभूस्वामिसकाशात् करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन[3] तत्कृतदानात् प्रजादीनां भोगोपयुक्तं स्वत्वमुत्पद्यते। तत्स्वत्वञ्च करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन[4] तिष्ठति, तदभावे गच्छति। प्रकृते त्वर्थ्युपस्थापितवृत्तान्तेन अर्थिकर्तृककरदानाभावानवगमात् सुतरां करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन भूस्वामिनो दाननिमित्तमर्थिनां भोगोपयुक्तं स्वत्वं गन्तुं न शक्नोति। अथ च भाषायां निलामशब्दवाच्यस्य द्वितीयबन्दवस्तशब्देन प्रसिद्धस्य द्वितीयप्रयासस्य रासयात्रादिवसीयत्वेन[5] सिद्धिर्भवति न वेत्यस्येदानीं वङ्गदेशचलितग्रन्थेष्वलिखनात्—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम्।
यत्र वाप्युपाधिं पश्येत् तत्सर्वं विनिवर्त्तयेत्[6]॥

—इति मनुवचनम् (८।१६५)॥ १॥

---

१. सम्बन्देन—व्यप०। २. सिद्धि०—व्यप०।
३. म्बन्देन—व्यप० ४. ०न तिति०—व्यप०।
५. दियशीयत्वेन—व्यप०। ६. निविर्त्तयेत—व्यप०।

ताभिश्च वर्षो(प)युक्तकरदानेन वर्षोपयुक्तस्वत्वमर्ज्यते। तद्वर्षे च राज्ञा तद्भूमेरन्यत्र दानविक्रयणादिकरणं न सिद्ध्यति। यदि तु प्रतिवर्षं भुज्यतां त्वया-इत्यादि प्रतिज्ञाभवत्तदा तु यावद्वर्षेष्वेव स्वत्वानुमतेः कदापि दानविक्रयादिकं न कर्त्तव्यम्। यदि तु प्रजा करं न ददाति तदा सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धमिति अन्यत्र दातुं शक्नोतीति—इति विवादभङ्गार्णवलिखिनम् (१ विवाभ० पृ०२०८ क. ख) ॥ २ ॥

करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन राज्ञो दाननिमित्तमेव प्रजानां स्वामित्वं[१] जायते। अन्यत्र गमने च करदानाभावे उपाध्यसिद्ध्या दानासिद्धिः। न च राजसम्बन्धतुल्यसम्बन्धापत्तिरिति वाच्यम्, राज्ञस्तथाविधेच्छाभावात्। तथाहि-एतस्यां मम भूमौ मत्स्वत्वे विद्यमान एव निकृष्टं भोगोपयुक्तं तव स्वत्वं भवतु-इति राज्ञस्तुष्टया तादृशमेव स्वत्वं जायते—इति (१ विवाभ० पृ० ३१० क) विवादभङ्गार्णवलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४५—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर हजुर हइते आदालत मजकुरार पण्डितदिगेर नामे इङ्गरेजी १८२७ शालेर ३ जुलाइ मासेर रोवकारि लिखित छन्दासिंह आपिलाण्ट मशम्मात दुर्गाकुमार रेस्पाण्डेण्टेर मकद्दमाते वृहस्पतिवार दिवा दुइ प्रहरेर मध्ये वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा सम्वलित जवाब दाखिल करणेर हुकुमे सओयालसकल, ये एइ—

प्रथम सओयाल—

पाटना सहर निवासी एक व्यक्ति हिन्दु आपन तिन स्त्री ओ चारि कन्या थाकिते आपन धन आपन तिन स्त्रीर मध्ये एक

---

१. सामित्वं—व्यप०।

स्त्रीर भ्राताके ओ तिन स्त्रीर मध्ये द्वितीय स्त्रीर गर्भज कन्यार पतिके फशली १२१६ शालेर ४ माघ तारिखे लिखिया दिया फशलि १२१९ शालेर २ वैशाख तारिखे ऐ तिन स्त्री ओ चारि कन्याके राखिया मरियाछे। तद्देशेर शास्त्रानुसारे ऐ दानासा सिद्धि हइते पारे कि ना इति।

द्वितीय सओयाल—

ऐ व्यक्ति ओ ताहार तिन स्त्रीर मध्ये दुइ स्त्री मरणेर परे तृतीय स्त्रीर तिन कन्यार मध्ये[1] एक कन्या आपन दुइ भगिनीर विना सराकते, आपन मातार विद्यमाने, आपन[2] भ्रातार पत्नी-दिगेर मध्ये एक जन निःसन्तान मरण हेतुते ऐ दाता व्यक्तिर त्यक्त धनेर अर्द्धेकेर दाओया करिलेक। ऐ दान मिथ्या हओन प्रकारे मृत कर्त्ता व्यक्तिर कन्यार पक्ष हइते ए प्रकार दाओया, थे मुद्दइयार मातार सम्मति क्रमे हइयाछे, सिद्ध हइते पारे कि ना इति।

तृतीय सओयाल—

ऐ दानेर सिद्धताते मुद्दाइयार माता प्रभृति ऐ मृत व्यक्तिर स्त्रीरदिगेर एक वार यद्यपि ऐ कन्यार दाओयार पूर्व्व संघटन हइयाथाके कन्यार दाओयार निषेधि बोधक वटे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

१. मध्ये मध्ये०—व्यप० ।

२. आपन मातार पत्नी०—व्यप० ।

यद्येकः कश्चित् पाटलिपुत्राख्यनगरनिवासी हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वकीयानां तिसृणां स्त्रीणामेवं चतसृणां कन्यकानां विद्यमानानां मध्ये तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्याः स्त्रिया भ्रात्रे द्वितीयस्याः कस्याश्चिज्जामात्रे स्वस्वत्वास्पदीभूतधनस्य[१] दानपत्रं लिखित्वा दत्त्वोपरिलिखितास्तिस्रः[२] स्त्रियश्चतस्रः कन्यकाश्च संरक्ष्य मृतश्चेत्तदा तद्दानपत्रं यदि तिसृणां स्त्री(णा)मन्नाच्छादनोपयुक्तं द्रव्यमेवं चतसृणां कन्यकानां मध्ये या न विवाहितास्तासां विवाहकालपर्य्यन्तमन्नाच्छादनोपयुक्तं द्रव्यमथ च विवाहोपयुक्तं द्रव्यं विनाऽवशिष्टधनस्य चेत्तदा तद्दानपत्रलिखितदत्तधनस्य दानमेतत्प्रकाराभावे चोपरिलिखितान्नाच्छादनाद्युपयुक्तद्रव्यं विनाऽवशिष्टधनस्य दानञ्च सिद्धं भवितुं शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

स्वं कुटुम्बाविरोधेन[३] देयम्—इत्यादि मिताक्षरा(पृ० २४४)वीरमित्रोदय(पृ० ६५१)व्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।७५)॥ १ ॥

स्वमात्मीयं कुटुम्बाविरोधेन (कुटुम्बानुपरोधेन) कुटुम्बभरणावशिष्टमिति यावत्तद्द्यात् तद्भरणस्यावश्यकत्वात्। तथा च[४] मनुः-
वृद्धौ च मातापितरौ साध्वी भार्य्या सुतः शिशुः (८।३५)–इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २४४)।

देयस्वरूपमाह नारदः[५] (नामसंपृ० ८६, ५।६)

द्रव्यं कुटुम्बभरणाद्[६] यत्किञ्चिदतिरिच्यते।
तद्देयमुप[७]हृत्यान्यद् ददद्दोषमवाप्नुयात्[८]—इति।

---

१. स्वत्वस्प०—व्यप०। २. °तिस्रः स्त्रियाश्च०—व्यप०।
३. कुटुम्बविरोधेन–व्यप०। ४. यथाह०—मिता०।
५. स एव—व्यप०। ६. भरणात्०—व्यप०।
७. उपहृत्यान्यान्नतदद्दो०–व्यप०। उपहृत्यान्यं०–स्मृच०।
८. दददागः समाप्नु०—नामस०।

अन्यद्[1] उपहृत्य भर्त्तव्यकुटुम्बमनवरुध्येत्यर्थः[2]। उपरोधश्च (निस्वतया)-भोजनाच्छादनादि[3]राहित्यनिबन्धनतोऽत्राभिमतो[4], न ताम्बूलादिभोगसाधनवैकल्यनिबन्धनः—इत्यादि (वीमि० पृ० ३६४)स्मृतिचन्द्रिका[5](पृ०१६०) ग्रन्थलिखनम् । ३ ।

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याद्देयं[6] वैवाहिकं वसु—इति स्मृतिचन्द्रिका-(पृ० १६०) ग्रन्थलिखितदेवलवचनम् । ४ ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तद्व्यक्तेस्तिसृणां तत्स्त्रीणां मध्ये द्वयोः स्त्रियोश्च मरणोत्तरं तृतीयस्याः स्त्रियाः कन्याः, आसां मध्ये एकस्याः कन्यकायाः स्वकीय भगिनीद्वय-साधारण्यं विना विद्यमानायां स्वमातरि सा परमातॄणां मध्ये एकस्याः निःसन्तानायाः मरणेन तस्या दातृव्यक्तेस्त्यक्तधनार्द्धप्राप्तिस्तद्दानस्य मिथ्यात्वप्रकारे सत्यपि तन्मातृसम्मत्यापि[7] सिद्धा भवितुं न शक्नोति, यतस्तस्याः पूर्व्वमधिकारिण्यां मातरि विद्यमानायां तस्याः स्वत्वमेव नोत्पद्यते इति—

अत्र प्रमाणम्—

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि मिताक्षरादि(मिता०पृ०२१७)ग्रन्थधृतबृहद्विष्णुवचनम् (विस्मृ०१७।६–७) । १ ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तद्दानं दातृव्यक्तेरुत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्पत्तिप्रतिबन्धकं चेदर्थिन्या मातृप्रभृतीनामर्थान्मृतव्यक्तेः स्त्रीणां ततत्कन्याया धनप्राप्तीच्छाया[8] पूर्व्वकालीनस्य स्वीकारस्य तद्दानसाधकत्वेन निर्द्दिष्टस्य तत्कन्यायास्तद्धनप्राप्तिनिषेधकत्वं विना साधकत्वं नास्ति—इति पाटलिपुत्राख्य-

१. अन्यम्—स्मृच० ।
२. उपरुध्ये०—स्मृच० ।
३. ०दनोच्छेदनीव०—स्मृच० ।
४. अत्रामतो०—स्मृच० ।
५. वीरमित्रोदय०—व्यप० ।
६. पितृद्रव्यं०—स्मृच० ।
७. ०सम्मत्यपि—व्यप० ।
८. ०च्छयाः—व्यप० ।

नगरप्रभृतिचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

(स्व)स्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनञ्च दानम्—इति सुबोधिनीलिखनम्[1] (पृ० ७४१)

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

———

४६—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इंरेजि १८२७ शाल तारिख २२ माहे जुलाइ मतावक वाङ्गला १२३४ शाल २९ आषाढ रोज वृहस्पतिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके।

छन्दासिंह आपिलाण्ट

मसम्मात दुर्गाकोङर रेष्पाडण्ट

ए आदालतेर पण्डितेरा हाल मासेर ३ तारिखेर हुकुमानुसारे व्यवस्था लम्बरे दाखिल करिलेन। आपिलण्टेर उकिल मुनशी महम्मद पनाह ओ लाला आउधलालेर हाजिरिते हष्टे आइल। तत् परे मुनशी दादार वक्श ओ मौलवी गोलाम एजदानी उकिलेरा आपनादिगेर नामिक एक केता ओकालतनामा ओ ए आदालतेर नाएव तहविलदारेर दस्तखति आपनादिगेर मेहनतानार[2] वावत मवलग २६६।।।. आनार रशीद ओ हाल शनेर ९ जुन मासेर हओया आजिमावादेर कोटेर रोवकारिर नकल दुइ

---

१. मिताक्षरा इति—व्यप० ।

२. मेहनतानाव वावत०—व्यप० ।

टाका मूल्यकेहर वण्ड[1] द्वाराय रेष्पाडण्टेर पत्त हइते लम्बरे दाखिल करिलेक, पडागेल। तत् परे रेष्पाडण्टेर उकिलदिगेर स्थाने जिज्ञासा करागेल ये फयशला जारि महकुफिर बावत तोमादिगेर मञ्चोक्केलार ओजर कि। जवाव दिलेक ये आमारदिगेर मञ्चोकेलार ओजर एइ ये फयशला जारि हइयाछे, ओ मञ्चोकेलारा दखल पाइयाछे। हुकुम हइल ये ए आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने चतुर्थ शञ्चोयाल करा जाय। से, एइ ये सहर पाटना निवासी एक व्यक्ति हिन्दु तिन स्त्री राखिया, ये ताहार मध्ये एक स्त्री निःसन्ताना, ओ एक स्त्रीर तिन कन्या, ओ एक स्त्रीर एक कन्या जन्मियाछे, मरियाछे। ओ ताहार परे जे स्त्री निःसन्ताना छिल मरियाछे। तद्देशशास्त्रानुसारे मृत स्त्रीर अंश कोन व्यक्तिके, ओ ताहार दाओया करणेर क्षमता कोन व्यक्तिके अर्शे। उचित् ये एइ सञ्चोयालेर उत्तर[2] परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त ग्रन्थ ओ वचनेर वेओरा सम्वलित दाखिल करेण। ताहार परे उचित हुकुम देओया जाइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्येकः कश्चित् पाटलिपुत्राख्यनगरनिवासी हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषस्तिस्रः स्त्रिय एवं तासां तिसृणां स्त्रीणा मध्ये एकस्या एकां कन्यामेकस्यास्तिस्रः कन्यका एकां निःसन्तानाञ्च[3] संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं निःसन्ताना स्त्री मृता चेत्तदा मृतायास्तस्या निःसन्तानायाः स्त्रियाः पतित्यक्तधनांशो

१. ०रण्ड—व्यप०।
२. इदवार—व्यप०।
३. एका निःसन्तानाश्च—व्यप०।

जीवन्तीनां तत्तत्पत्नीनामेव भवति, एवं तत्प्रातीच्छाकरणक्षमतापि तत्तत्पत्नीनामेव, यतोऽनपत्यपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तन्मरणोत्तरं तद्धनं तद्भर्त्तुरुत्तराधिकारिणामेव भवति। तत्र च भर्त्तुरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे पत्न्या एव प्राधान्यम्—इति पाटलिपुत्राख्यनगरप्रभृतिचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः—इति वीरमित्रोदयादि-(वीमि० पृ० ६२७)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ९२१) ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृत मिता० पृ० २१७)बृहद्विष्णुवचनम् ॥ २ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

४७—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट शाहेवेर हुजुर हइते राय वंशीधर बनामे मनोहर लाल ओ गयरहेर मकर्द्दमाते इङ्गरेजी १८२७ शालेर २४ जुलाइ मासेर रोवकारिर लिखित परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा सम्वलित जवाव दाखिल करणेर हुकुमे आदालत मजकुरारार पण्डितदिगेर नामे सओयाल सकल, एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वेहार जिला निवासी एक व्यक्ति हिन्दु कायेत जाति पितृधन विभाग करणेर परे दुइ भ्रातष्पुत्र ओ चारि दौहित्र राखिया

९

मरियाछे। ऐ देशेर शास्त्रानुसारे ताहार त्यक्त धन ताहार भ्रातुष्पुत्रदिगके अर्श कि ताहार दौहित्रदिगेके ?

द्वितीय सञोयाल—

यद्यपि ऐ व्यक्ति पितृधन विना विभाग करणे मरितो ताहार त्यक्त धन कोन व्यक्तिके अर्शितो ?

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि वेहाराख्यप्रदेशनिवासी कश्चिदेकः कायस्थजातिः पितृधनविभागकरणानन्तरं द्वौ भ्रातुष्पुत्रौ चतुरो दौहित्राँश्च[1] संरक्ष्य मृतः स्यात्तदा तत्त्यक्तधने चतुर्णां दौहित्राणामधिकारो, यतो दौहित्रेषु विद्यमानेषु विभक्तधने भ्रातृपुत्राणां नाधिकार इति।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादि(वीमि० ६०२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तद्व्यक्तिविशेषः पितृधनविभागमकृत्वा मृतस्तदा पितृधने तद्योग्यांशो भ्रातृपुत्रयोरेव भवति, न तु दौहित्राणां विभक्तधन एव पत्नीदुहितृदौहित्राणामधिकारस्य मिताक्षरादिग्रन्थलिखितत्वात्, अविभक्तधने तेषामधिकारस्यालिखितत्वाच्च, वरं बालम्भट्टकृतमिताक्षराटीकायां[2] विभक्तधन एव दौहित्राधिकारस्याविभक्तधने तदधिकाराभावस्य च स्पष्टीकृतत्वाच्चेति[3]

१. दौहित्राश्च—व्यप०। २. बालमभट्ट०—व्यप०। ३. पष्टीकृ०—व्यप०।

वेहाराख्यप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयबालम्भट्टकृतमिताक्षराटीकादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

एवं दौहित्रभ्रातृसुतसमवाये मृतस्य विभक्तत्वे दौहित्रस्य बलवत्त्वस्य अंशहरणे सत्त्वेऽपि पिण्डादौ स एव बलवान्, अविभक्तत्वे तु पितुः[1] भ्रातृसुतानामेवांशहरत्वादपि—इति व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षराटीकायां (पृ० २०) बालम्भट्टलिखनम्॥ १॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४८—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे स्वयं ओ आपन अप्राप्त-व्यवहार भ्राता आनन्दीलालेर ओयाली रामधुमन्लाल सायेलेर मकर्द्दमाते इङ्गरेजी १८२७ शालेर २९ आगष्ट मासेर रोवकारिर लिखित सायेलेर सओयाल ओ आजिमावादेर कोटेर फयशला ये ताहाते आदालतेर सओ-याल ओ तथाकार राधाकृष्णपण्डितेर जवाव लिखा आछे दृष्ट ओ सम्पूर्ण अनुमोदन परे वचन ओ ग्रन्थेर वेओराते परस्व पर्य्यन्त जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल, एइ ये—

सओयाल—

राधाकृष्णपण्डितेर लिखिया देया आपिल आदालतेर सओ-यालेर जवाव मिताक्षरा पुथि मत प्रसिद्ध वटे कि ना, अर्थात् दुइ दाओयार मध्ये सायेलदिगेर मासी जितकोँरेर दाओया किम्वा सायेलदिगेर दाओया प्रसिद्ध वटे, अथवा दुइ दाओयाइ मिथ्या

---

१. पितुरिति पाठो नास्ति बालम्भट्टकृतटीकायाम्।

ओ पण्डितेर जवाव प्रसिद्ध।

राधाकृष्णपण्डितेर व्यवस्था, एइ ये—

पतिमरणानन्तरं तत्पत्नी तद्धनमु(पभु)ज्य दुहितृर्विहाय[1] मृता। तत्रैका दुहितृमती, द्वितीया पुत्रवती, द्वेऽपि विधवे, तृतीयास्ति[2] यौवना सभर्त्तृका अनपत्या। तर्हि तद्धने ताः समांशभागिन्यो भवितुमर्हन्ति, दौहित्रौ तु न तद्धनहारिणौ। *पत्नी दुहितरश्चैव*—इति मिताक्षराधृतयाज्ञवल्क्यवचनात् (२।१३५)।

अङ्गादङ्गात् सम्भवति पुत्रवद् दुहिता नृणाम्।

तस्मात् पितृधनं त्वन्यः कथं गृह्णाति मानवः—इति (मिता॰ पृ॰ २२१) वृहस्पतिवचनात्, *सदृशी सदृशेनोढा*—इति वचनाच्च।

त्रिवेदिश्रीराधाकृष्णशर्म्मणाम्।

श्रीर्ज्जयतितराम्

सदर देओयानी अदालतेर सओयालेर जवाव व्यवस्था—

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितार्थिनिवेदनपत्रं चैवं पाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयजयपत्रं तदन्तर्गततद्धर्म्माधिकरणीयप्रश्नमेवं राधाकृष्णाख्यपण्डितलिखिततत्प्रश्नोत्तरं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

विवादास्पदीभूतं धनं यदि ज्ञानकोमराख्यायाः पतिमरणानन्तरं तदीयधनत्वेनोत्तराधिकारित्वेन तत्संक्रान्तं स्यात्, अथ च तिस्र एव दुहितरो निर्धनाः[3], सर्व्वा एव वा सधनास्तदा राधाकृष्णाख्यपण्डितलिखितकोर्टआपीलाख्यधर्म्माधिकरणप्रश्नोत्तरं मिताक्षराग्रन्थसम्मतं[4] भवति। यदि च तिसृणां दुहितॄणां मध्ये एका निर्धना द्वे वा[5] निर्द्धने तदा तत्पण्डितस्योत्तरं

१. दुहितृ॰—व्यप॰। २. तृतीया तृतीया॰—व्यप॰।
३. निद्धना॰—व्यप॰। ४. सर्म्म॰—व्यप॰।
५. द्वेवा॰—व्यप॰।

तद्ग्रन्थसम्मतं न भवति, मिताक्षरायां दुहितुः पितृधनाधिकारप्रकरणे अप्रतिष्ठितानामर्थान्निर्धनानां दुहितॄणामभाव एव प्रतिष्ठितानामर्थात् सधनानां दुहितॄणामधिकारविधानात्। एवं चैतत्पक्षे द्वयोर्द्धनप्राप्तीच्छयोर्मध्ये अर्थिनो मातृष्वसुर्जीतकोमराख्यायास्तत्समस्तधनप्राप्तीच्छा केवलं तस्या एव निर्धनत्वे, द्वयोर्निर्धनत्वे तद्धनार्द्धप्राप्तीच्छा, तिसृणां निर्धनत्वे तत्तृतीयांशप्राप्तीच्छैव तद्ग्रन्थसम्मता भवति। यदि च विवादास्पदीभूतं धनं ग्यानकोमराख्यायास्तदीयशुल्काभिन्नं स्त्रीधनं भवति, अथ च तिसृणां मध्ये पुत्रवत्याः सधनत्वे जीतकोमराख्यायास्तद्धनार्द्धप्राप्तीच्छा तद्ग्रन्थसम्मता भवति, मिताक्षरायां दुहितॄणां मातुस्तादृशस्त्रीधनाधिकारप्रकरणे प्रतिष्ठितानामर्थान्निर्द्धनानाम् अनपत्यानां वा दुहितॄणामभाव एव प्रतिष्ठितानामर्थात् सधनानां सापत्यानां वा दुहितॄणामधिकारविधानात्। एवं तिसृणां मध्ये द्वयोः पुत्रपौत्ररूपापत्यरहितत्वावगमात् पुत्रवत्या निर्द्धनत्वे, जीतकोमराख्यायास्तद्धनतृतीयांशप्राप्तीच्छैव तद्ग्रन्थसम्मता भवति, तत्प्रकरणे मिताक्षरायां निर्द्धनानपत्ययोर्द्विविधयोरेव दुहित्रोः प्रथममधिकारविधानात्। अर्थिनां तद्धनप्राप्तीच्छा चोपरिलिखितपक्षद्वय एव विद्यमानत्वात् तन्मातृप्रभृतिषु तद्ग्रन्थसम्मता न भवतीति।

अत्रप्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षराग्रन्थधृत(पृ० २१७)याज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५)॥ १॥

अप्रतिष्ठिताप्रतिष्ठितानां समवाये अप्रतिष्ठितैव तदभावे प्रतिष्ठिता—इति दुहितुः पितृधनाधिकारप्रकरणे मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ०-२२१) ॥ २ ॥

अप्रतिष्ठिता निर्द्धना अनपत्या वा—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २२१, खपुस्तके) ॥ ३ ॥

प्रतिष्ठिताऽप्रतिष्ठितासमवायेऽप्रतिष्ठिता गृह्णाति, तदभावे प्रतिष्ठिता। यथा गौतमो मुनिः स्त्रीधनं दुहितॄणामप्रत्तानामप्रतिष्ठितानां चेति। तत्र शब्दात् तत्र प्रत्तानां प्रतिष्ठितानाञ्च। अप्रतिष्ठिता निर्द्धना अनपत्या

वा। एतच्च शुल्कव्यतिरेकेण—इत्यादि दुहितॄणां मातुः स्त्रीधनाधिकार-प्रकरणे मिताक्षराग्रन्थलिखनं चेति (पृ० २२९) ॥ ४ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

———

सओयाल—

४९—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर हुजुर[1] हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे इङ्गरेजि १८२७ सालेर ११ शेतम्वर मासेर रोवकारि लिखित अभिमानवाय[2] सा(ए)लेर मकर्द्दमाते परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त वारानश देशेर शास्त्रानुसारे वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा सम्वलित जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल, एइ ये—

हिन्दु चारि व्यक्ति टीका लइया आपनादिगेर मिलकियतेर मौजा एक व्यक्ति हिन्दुर निकट वन्धक राखिलेक। ताहार परे वन्धक दाता चारि जनेर मध्ये एक जन चाहिलेक ये ऐ[3] वन्धकेर वेवाक टाका दिया समस्त मौजार वन्धक छाडाय, ओ वन्धक ग्रहीता वाकि वन्धक दाता तिन जनेर असम्मति जानाइया एक जन वन्धक दातार स्थाने समुदाय वन्धकि टाका लओन ओ समस्त मौजार वन्धक हइते छाडन स्वीकार न करिया चहिलेक ये ऐ एक व्यक्ति वन्धक दातार स्थाने वन्धक वावद चतुर्थ अंश टाका लइया ताहार अंश परिमाण अर्थात् वन्धकि मौजार चतुर्थ अंश छाडिया दिया वाकि वारय आना मौजार उपर पूर्व्व मत वाकि तिन जन वन्धक दातार पक्ष हइते वन्धक

१. हुजुरा इते०—व्यप० २. अभिमानराय—इति साधीयान् पाठः।
३. ०येक वन्ध करे—व्यप०

छाडान पर्य्यन्त दाखिलकार थाके। अतएव जिज्ञासा जाइते छे। यद्यपि यथार्थइ वाकि तिन जन वन्धक दाता आपन २ हिस्यार वन्धक चतुर्थ वन्धक दातार पक्ष हइते छाडानेते सम्मत ना थाके, ताहारदिगेर असम्मति वाकी वारय आना हिस्यार वन्धक छाडानेते निषेधि वटे, किम्वा चतुर्थ वन्धक दाताके वर्त्तें ये निजे समस्त वन्धकि टाका आदाय करिया आपन हिस्यार उपर अधिकार प्रकारे ओ वाकि तिन जन वन्धक दातार हिस्यार उपर वन्धक ग्रहीता प्रकारे दखल पान इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रश्नार्थेन प्रश्नपत्रलिखिताशेष[1]शास्त्रोक्तचतुर्विधाध्यन्तर्गताकृतकालात्मक-भोग्याधित्वनिश्चयात्, तत्र यदि चतुर्भिर्हिन्दुजातीयैर्मुद्रा[2] गृहीत्वा स्वस्व-त्वास्पदीभूतग्राम एकस्य कस्यचित् हिन्दुजातीयस्य निकटे बन्धकीकृतः,तदनन्तरं बन्धकदातॄणां चतुर्णां मध्ये एकः कश्चिद् बन्धकग्रामस्य समस्तमुद्रा दत्त्वा सम्पूर्णग्रामो बन्धकात् मोक्तव्य इतीच्छति, तत्र यदि बन्धकीभूतग्रामश्चतुर्णां साधारणश्चेत्,तदा तदन्तर्गतत्रयाणां यथार्थभूता स्वस्वयोग्यांशमोचनासम्म-तिः सुतरामवशिष्टद्वादशाणकपरिमितांशत्रयस्य[3] बन्धकमोचने प्रतिबन्धिका भवति। एवं चतुर्थबन्धकदातुरवशिष्टबन्धकदातॄणां त्रयाणां सम्मतिश्चेत् तदैव समस्तमुद्रा दत्त्वा स्वांशे स्वामित्वेनावशिष्टबन्धकदातॄणां त्रयाणामंशे बन्धकग्रहीतृत्वेना[4]यत्तत्वप्राप्तिर्भवितुमर्हति, यतः साधारणधने सर्व्वेषामंशिना-मनुमतिं विना तन्मध्ये एकस्य कस्यचिद्दानाधमनविक्रयक्षमता नास्तीति। अतः सुतरां साधारणधनाधिमोचनाक्षमताप्यर्थसिद्धैव। यदि च बन्धक भूतग्रामे तेषामंशनिर्णयश्चेत्तदा बन्धकदात्रन्तर्गतत्रयाणामनुमतिं विनापि-

---

१. ०ताषेशशा०—व्यप०। ३. ०त्रयाणां०—व्यप०।
२ चत्वारो हिन्दुजातीया—व्यप०। ४. ०गृहीतृ०—व्यप०।

चतुर्थबन्धकदाता पृथङ्[1] निर्दिष्टस्वांशं बन्धकान्मोचयितुमर्हति—इति वाराणसीप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यस्थत्वाद्[2] एकस्यानिश्चयत्वात् सर्व्वाभ्यनुज्ञावश्यं कार्य्या। विभक्तेषु (तूत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्याय सर्वाभ्यनुज्ञा, न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन। अतो) विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्धयत्येव इति व्याख्येयम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (मिता० पृ० २००)॥

श्रीर्ज्जयतितराम्   श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण   श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

५०—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे इङ्गरेजि १८२७ सालेर ११ शेतम्बर मासेर रोवकारीर लिखित भवानीचरणदत्त सायेलेर मकर्द्दमाते निचेर लिखित दस्तावेजेर अनुमोदन पूर्व्वक परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा सम्वलित जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयालः—

एइ ये, सनातन हालदारेर स्त्री मुषम्मात जानकी, ये आपन पतिर मृत्यु परे वाङ्गला १२३२ सालेर २९ चैत्र मासेर हओया दस्तावेज भवानीचरणदत्तके लिखिया दियाछे, मुशम्मात मजकुरार पक्ष हइते ए प्रकार दस्तावेज लिखिया देओन वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे सिद्ध छिल कि ना; ओ दस्तावेज लिखार एक वतसर परे मुशम्मात मजकुरार मृत्यु हओन हेतुते ऐ दस्तावेज जे तत्सम्पर्के मशम्मात मजकुरार पतिर भ्रातारा ओ भ्रातुष्पुत्रेरा प्रतिवन्धक ओ स्वीकार आछे मिथ्या हय कि ना इति।

---

१. पृथक्—व्यप०। २. ०मध्यगत्वा०—व्यप०।

श्रीर्जयतितराम्

जत्रावन्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितवाङ्गलाख्यद्वात्रिंशदधिकद्वादशशताब्दीयोनत्रिंशद्दिवसीयचैत्रमासीयदस्तावेजसंज्ञकपत्रञ्चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि सनातनहालदारस्त्रिया जानक्या पतिमरणानन्तरमुपरिलिखितदस्तावेजसंज्ञकपत्रं भवानीचरणदत्ताय लिखित्वा दत्तं तत्र तत्पत्रलिखितवृत्तान्तस्य सत्यत्वञ्चेत्तदैतादृशपत्रदानं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धमासीत्, यतोऽनपत्यपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वे पत्न्या वर्त्तनाद्यशक्तौ तदुपयुक्ततद्धनाधानविक्रयणं शास्त्रानुमतं भवति। वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तद्धनरक्षणस्यावश्यकत्वेन[१] सुतरां तद्धनरक्षणार्थं तदुपयुक्तस्य तद्धनस्याधानविक्रयणं शास्त्रसम्मतं भवति। प्रकृते तूपरिलिखिततत्पत्रेण जानक्याः स्वामिमरणानन्तरं तत्पतिप्रत्यर्थिकतत्पतिभ्रात्राद्यर्थिकतत्पत्रलिखितविवादद्वयनिष्पत्तेरुत्तराधिकारित्वेन केवलं तस्या एव कर्त्तव्यत्वेन तत्र तस्या अशक्तया उपरिलिखितदस्तावेजसंज्ञकपत्रलिखितधनदानात् तद्विवादनिष्पत्त्या अवश्यं तत्पतिकर्त्तव्यस्वधनरक्षणवत् तत्पत्रलिखितधनादवशिष्टसमुदायपतित्यक्तधनरक्षणार्थत्वात् तत्पत्रस्य इत्यवगमात्, एवं तत्पत्रलिखनादनन्तरमेकसंवत्सरानन्तरं जानक्या मरणेन तत्पत्रं तस्याः पत्युः[२] भ्रातृभिरेवं तत्पतिभ्रातुष्पुत्रैश्च प्रतिबन्धमस्वीकृतञ्च मिथ्या भवितुं नार्हति,यतस्तत्पत्रेण तल्लिखनसमये तत्पतिभ्रातृभिस्तत्पुत्रैर्व्वा उपरिलिखितविवादद्वयान्तर्गतैकस्मिन् विवादे विरोधित्वेन तया सह विवादं

---

१. रक्षणस्यावस्यावस्यक०—व्यप०।

२ पतिः पतिः—व्यप०।

कृत्वा तत्पत्रलिखनतस्तस्या निवारणं न कृतमित्यवगमाद्[1], इदानीं तस्या मरणेन तत्पत्रास्वीकारस्य तत्प्रतिबन्धस्य च अप्रयोजकत्वात्—इति वङ्ग-देशचलितदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अतएव वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम्। तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इति दायभागलिखनम् (पृ० १७३, ११।१।६२)। १।

तथा च भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्व्वीत—इति विवादभङ्गार्णव(२ विवाभ० पृ० ३१६ क)लिखनञ्चेति॥ २॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

५१—सदर देमानी आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत आलक्ष सुन्दर राश साहेवेर हुजुर हैते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे इंराजि १८२७ सालेर ११ सेतम्वर मासेर रोवकारिर लिखित १८५७ लम्वरेर[2] वावत गणेश आपीलाण्ट विनसिया[3] रष्पाडण्टेर मकद्दमाते वारानश देशेर चलित शास्त्र मते वृहस्पतिवार पर्य्यन्त जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल सकल एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वारानश साकिनेर कलुजाति एक स्त्रीलोकेर विवाह कोन व्यक्तिर सहित हइयाछिल, ओ ताहार स्वामि अनुद्देश हइल,

---

१. °गमात—व्यप०।
२ लम्वरे वावात—व्यप०।
३. विलसिया—इति साधीयान् पाठः।

ओ ऐ स्त्रीलोक ताहार स्वामि अनुद्देश हओयार तेर वत्सरेर परे ताहार पतिर कनिष्ठ भ्रातार सहित शाङ्गा करिते पारे कि ना, ए प्रकार (शाङ्गा) शास्त्र अनुसारे सिद्ध हय कि ना।

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि ए प्रकार शाङ्गा सिद्ध हय, ओ ऐ स्त्रीलोकेर द्वितीय पति ऐ स्त्रीलोक व्यक्ति ओ आपन पिता ओ तिन सहोदरभ्राताके राखिया मरियाछे, ओ समस्त धन साधारण कि असाधारण हय, ए दुइ प्रकार मृत व्यक्तिर अस्थावर त्यक्त धन कोन व्यक्तिके (अर्शे) इति।

जवाव व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतआलकशराडरधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

शास्त्रे शाङ्गाइशब्दवाच्यकार्य्यस्य प्रस्तावो नास्ति। परन्तु यदि वाराणसीप्रदेशीयानां[1] तैलकारजातीयानां प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकसगाइशब्दवाच्यस्य व्यवहारश्चेत् तदा प्रश्नपत्रलिखितशास्त्रालिखितप्रकारकं[2] सागाइशब्दवाच्यं कार्य्यं[3] कर्त्तुं शक्नोति। एवमेतत्प्रकारकं सागाइशब्दवाच्यं तत्कार्य्यमुपरिलिखितव्यवहारसिद्धमिति चेत्तदा शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं भवितुं शक्नोति, व्यवहारस्य शास्त्रानुसारेण बलवत्त्वादिति।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत्॥

इति—मनुवचनम् (८।४१)। १।

---

१ वारनसी०—व्यप०। ३. ०काकार्य्यं—व्यप०।
२ शास्त्रप्रश्नलि०—व्यप०।

यस्मिन् देशे यदाचारो[1] व्यवहारः कुलस्थितिः।
तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः॥

—इति मिताक्षरादि(मितापृ० १०५)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (१।३४३)। २।

स्पष्टशास्त्रानुपलम्भे तु देशव्यवहारानुरोध्येव[2] निर्णयः कार्य्यः। इत्यप्याह स एव।

तस्मात् शास्त्रानुसारेण राजकार्य्याणि साधयेत्, वाक्याभावे तु सर्व्वेषां देशदृष्टमतं नयेत्—इति वीरमित्रोदयलिखनम्। ३।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि प्रश्नपत्रलिखितसगाइशब्दवाच्यं कार्य्यं प्रथमप्रश्नोत्तरलिखित-व्यवहारानुसारेण सिद्धं चेदथ च तस्या एव स्त्रिया द्वितीयपतिस्ताँ स्त्रियमेवं स्वपितरं त्रीन् स्वसोदरभ्रातॄन्[3] च संरक्ष्य मृतः स्यादेवं तदीयसमस्तस्थावरधनं पित्रा भ्रातृभिश्च सह[4] साधारणं चेत्तदा तद्योग्यस्तदीयस्थावरधनांशः[5] भ्रातॄणां च भवति; यदि च केवलं पित्रा सह धनं[6] साधारणं चेत्तदा केवलं पितुरेव; यदि वा केवलं भ्रातृभिः सह साधारणं चेत्तदा केवलं भ्रातॄणामेव भवति; यद्यसाधारणं तद्धनं चेदथ च तद्देशीयानां तज्जातीयानां[7] यथा विवाहिता स्त्री असाधारणपतिधने अधिकारिणी भवति तथैव सगाइ-संज्ञककार्य्यकृत् स्त्र्यपि तद्धने अधिकारिणी भवतीतिव्यवहारश्चेत्तदा सा शास्त्रानुसारेणापि[8] तद्धनं प्राप्तुं शक्नोति। एवं व्यवहारो न चेत्तदा धनस्यासाधारणत्वपक्षे तत्पितुरेव(तद्धनम्)—इति वाराणसी[9]प्रचलितमनु-मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

---

१. य आ०—यास्मृ०।
२. °रोध्येरनि०—व्यप०
३. सोदर भ्रातुः स्वसंरक्ष्य—व्यप०।
४. °भिःस्वसह—व्यप०।
५. धनांश—व्यप०।
६. धनं सह साधा०—व्यप०।
७. तज्ञातीयानां—व्यप०।
८. शास्त्रं प्राप्तं शक्नोति—व्यप०।
९. वाराणशी—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

तदुपरिलिखितमेव । १ ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरादि(मिता॰ पृ॰ २१६)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति (२।१३५) । २ ।

श्रीर्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

नं॰ १८६७

५२—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानी सदर इङ्गरेजी १८२७ साल तारिख १५ माह सेतम्वर मोतावक वाङ्गला १२३४ साल रोज शनिवार आदालत मजकुरार पञ्चम हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेवेर वैठके—

गणेश आपीलाण्ट

मुशन्मति वेलसिया रेष्पाडण्ट

एइ मासेर ११ तारिखेर हुकुमानुसारे ए आदालतेर पण्डितगण लम्वरे व्यवस्था दाखिले करिलेर दृष्टे आसिया द्वितीय सओयाल उचित हइल। अतएव हुकुम हइल ये ए रोवकारिर नकल एइ हुकुमे पण्डितगणके समर्पण करा जाय ये नीचेर लिखित सओयालेर जवाव तातिलेर परे दाखिल करेन।

सओयाल—यद्यपि एइ मत सङ्गाइ वारानश देशे सिद्ध हय आर ऐ दाखिल करा व्यवस्थार लिखित द्वितीय सओयालेर जवाव मते वोध हइते (छे ना) ये साङ्गाइ स्त्रीर द्वितीय पतिर त्यक्त धन किछु साङ्गाइ स्त्रिके अंशिवेक कि ना; यदि ना अंशे तवे ऐ स्त्रिर भरण पोषणेर अवधारण काहार जिम्वा थाकिवेक इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणपञ्चमाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि वाराणस्यादिप्रदेशे[1] एतादृशसगाइशब्दवाच्यं कार्य्यं व्यवहारानुसारेण सिद्धं[2] भवति, एवं सगाइशब्दवाच्यकार्य्यकृत्स्त्रिया द्वितीयपतित्यक्तधनं यदि तत्पित्रा तद्भ्रातृभिश्च सह किंवा केवलं तद्भ्रातृभिः सह साधारणं चेत्तदा सगाइशब्दवाच्यकार्य्यकृत्स्त्रीस्वामित्वेन किञ्चिदपि तद्धनात् प्राप्तुं[3] न शक्नोति। एवं चेत्तदा तस्याः स्त्रिया भरणपोषणं यावज्जीवनमेतद्विवादे पूर्व्वलिखितास्मद्व्यवस्थान्तर्गतद्वितीयप्रश्नोत्तरव्यवस्थानुसारेण तस्या द्वितीयपतित्यक्तसाधारणधनाधिकारिभिरेव कार्य्यम्। तत्र तस्य साधारणधनाधिकारिणो यदि पिता भ्रातरश्च सर्व्वे भवन्ति तदा तैः सर्व्वैरेव कर्त्तव्यम्, यदि च केवलं तत्पिता भवति अधिकारी तदा तेनैव कर्तव्यम्, यदि च केवलं तद्भ्रातर एव भवन्ति तदा तैरेव[4] कर्तव्यम्—इति वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षरालिखनम् (पृ० २१७)। १।

भरणं चास्य कुर्व्वीरन् स्त्रीणामाजीवनं[5] क्षयात्—इत्यादि मिताक्षरा-(पृ० २२०)वीर मित्रोदय[6](पृ० ६३६ ख)ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नास्मृ० पृ० १६६)। २।

---

१. वारानस्यादि०—व्यप०। २. सिद्ध सिद्धं०—व्यप०। ३. प्राप्तं—व्यप०।
४. तेनैव०—व्यप०। ५. जीवित—नास्मृ०।
६. स्त्रीणामनपत्यानां भरणमात्रं नारदेन प्रतिपादितमिति वीमि०ग्रन्थे। नारदवचनं तु तत्र नोपलब्धम्।

स्वर्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।
अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥

इति वीरमित्रोदयादि(वीमि० पृ० ६५४ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन-वचनं चेति (कास्मृ० ६२२) । २ ।

श्रीर्ज्जयतितराम्   श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण   श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

५३ – जिला गाजिपुरेर फौजदारि आदालतेर रोवकारि तारिख ५ छेतम्वर सन १८२७ इङ्गरेजी हेनरि छिओनानओन फण्ड साहेव मेजेष्टरेर[1] वैठके ।

सरकार   मुद्दइ
ओमराओ राय शतिर ओयारिशा—
ओ दण्डधारि चौवे ओ झामराय   मुद्दाआलेहेम ।
ओ परस आहिर

कारण सुषम्मात रामकलिर शति हओा थानादानिवने इवसालि । अद्य मकद्दमा रुवकार हइल । मुद्दाआलेहेमे जओा-व, ओ ओदनराय ओ सिओदयाल[2] ओ वनओारि ओ सिव-जोरराय ओ रामदेहलराय ओ आकुहुराय ओ अच्युत आनन्द ओ हरनाम रा(य)ओ रओसन आली ओ दस्त साक्षीदिगेर एजाहार दस्तुर मत लिखा जाइया मकद्दमार मिछिल सामिल पडागेल । जे हेतुक एइ मकद्दमार कएक प्रकरण वोध करा आव-श्यक, अतएव हुकुम हइल ये ओमराओ राय एक सउ टाकार जामिन दिया हाजिर थाके, एवं अन्य अन्य आसामीयान साक्षी-यान सहित विदाय हये । एक किता इङ्गराजी चिटी एक विषयेर

---

१. मेजेष्टर वेटेर ।   २. सिओददयाल—व्यप० ।

जिज्ञासा पूर्वक जे ब्राह्मण जाति व्यतिरिक्त सती स्त्रीलोकेर प्रति-स्वामीर मृत्यु संवाद श्रवणेर परे कत दिवस किम्वा काल अनुमरण हइवार रीति निरूपित आछे—सदर नेजामते पाठान जाय इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

यवावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

पतिमरण[1]श्रवणानन्तरं ब्राह्मणजातिव्यतिरिक्ता स्त्री यद्यनुमरण-मिच्छति तदा शीघ्रमेवानुमरणं कर्त्तुमर्हतीति शास्त्रे लिखितम्। किन्तु शीघ्रशब्दस्यार्थः कश्चिद् विशेषतो न लिखितः। परन्तु अनुमरणस्यायं व्यवहारः पतिमरणश्रवणानन्तरमनुमरणकर्त्त्री ब्राह्मणजातिव्यतिरिक्ता स्त्री प्रथमतोऽनुमरणमहं कारिष्यामितीच्छति[2]। तत्र यदि कश्चिल्लौकिकः प्रति-बन्धश्चेत्तदा तत्प्रतिबन्धकदूरी[3]करणानन्तरमपिशीघ्रमेवानुमरणं करोति। अथवा अनुमरणेच्छायां कृतायामपि यदि सा रजस्वला भवति तदा रज-स्वलाशौचानन्तरमपि अनुमरणं करोतिइति च व्यवहारः—इति गाजिपुरा-ख्यादिप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अयञ्च सकल एव सर्व्वासां स्त्रीणामगर्भिणीनामबालापत्याना-माचण्डालं साधारणो धर्म्मः-इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २५)।१।

दयितं यान्यदेशस्थं मृतं श्रुत्वा पतिव्रता ॥
समारोहति[4] दीप्तेऽग्नौ[5] तस्याः शक्तिं निबोधत ॥
यदि प्रविष्टो नरकं बद्धः पाशैः सुदारुणैः।
संप्राप्तो यातनास्थानं गृहीतो यमकिङ्करैः ॥

---

१. पतिमरणा श्रवण०—व्यप०। ४. समारोहेत—(वीमि० पृ० १५२)।
२. ०मीतीच्छति—व्यप०। ५. शीघ्राग्नौ—व्यप०।
३. दुरी करण०—व्यप०।

तिष्ठते विवशो[1] दीनो बध्यमानः[2] स्वकर्म्मभिः ।
व्यालग्राही यथा व्यालं बलाद्[3] गृह्णात्यशङ्कितः ।
तद्वद्भर्त्तारमादाय दिवं[4] याति तपोबलात् ।
तत्र सा भर्तृपरमा स्तूयमानाप्सरोगणैः ।
क्रीडते पतिना सार्द्धं यावदिन्द्राश्चतुर्द्दश ॥

इति व्यासवचनञ्चेति[5] । २ ।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

एइ व्यवस्था दाखिल इङ्गरेजि मिसिल सती विषयेर —

५४—सदर देओयानि आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर हुजुर हइते कालिप्रसादराय सायेलेर मकद्दमाते इङ्गरेजी १८२७ सालेर ३० आक्तुवर मासेर रोवकारिर लिखित मते परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे इङ्गरेजी १८२४ सालेर २२ दिजम्बर मासेर लिखित जिला वर्द्धमानेर रोवकारी ओ इं० हाल सालेर १६ आपरेल मासेर लिखित कलिकातार कोर्टेर रोवकारि ओ सायेलेर सओयालेर मजमुन सकलेर अनुमोदने जवाव दाखिल करार हुकुमे आदालत मजकुरेर पण्डितगणेर नामे सओयाल ।

यद्यपि इहार परे मृत पार्व्वतीचरणेर भगिनी मशम्मात श्यामासुन्दरी गर्भ्भे एक पुत्र जन्मे । ऐ पार्व्वतीचरणेर पितामही मुशम्मात राशमणिर त्यक्त वस्तु ऐ पुत्रेर स्वत्व हइवेक कि ना ? यदि हइवेक, एइ क्षण ऐ वस्तु मसम्मात श्यामासुन्दरीर जिम्माय किम्वा

---

१. विवशा०—व्यप० । २. वेष्टमानः—वीमि० ।
३. बिलादुद्धरते बलात्—वीमि० । ४. तेनैव सह मोदते—वीमि० ।
५. कपोतिकाचित्राङ्कोपाख्यानम्० ।

पार्व्वतीचरणेर खुडागण अर्थात् कालीप्रसादराय ओ दुर्गा-सुन्दररायेर जिम्याय राखा जाइवेक; ओ यद्यपि उहार खुडा-गणेर जिम्वाय रहिवेक, विरोधीय वस्तु हस्तान्तर ना करण कराते उहाद्दिगेर स्थान हइते जामिन लओया शास्त्रेर आज्ञा सम्मत वटे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितेङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुर्व्विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयद्वाविंशतिदिवसीयदिशम्वरमासीयवर्द्धमानजिलाख्यधर्म्माधिकरणीयविचारपत्रमथ च इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यसप्तविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयषोडशदिवसीयापरेलमासीयकलिकाताकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयविचारपत्रमेतद्धर्म्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रञ्चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

उपरिलिखितपत्रजाते रामसुन्दररायमरणानन्तरं तत्त्यक्तधनं तत्पुत्रेण पार्व्वती[1]चरणेन प्राप्तमिदं ज्ञातमिति, विवादास्पदीभूतधनं पार्व्वतीचरणस्यैव जातम्। अतस्तन्मरणानन्तरं तद्धनं तदुत्तराधिकारिणामेव भवति। तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपितामहपर्य्यन्ताभावे तत्पितामह्या राशमण्या उत्तराधिकारित्वेन तद्धनं प्राप्तम्। राशमण्यां मृतायामेतत्परं यद्यपि मृतस्य पार्व्वतीचरणस्य भगिन्याः श्यामासुन्दर्य्या गर्भे एकः पुत्रो जनिष्यते तथापि पार्व्वतीचरणपितामहीरासमणिसंक्रान्ततदीयधने भविष्यतः पार्व्वतीचरणपितृदौहित्रस्याधिकारो न भविष्यति, यतो विवादास्पदीभूतधनस्योत्तराधिकारित्वेन पार्व्वतीचरणपितामहीसंक्रान्तत्वे तन्मरणोत्तरं तस्याः पूर्वमधिकारिपितामहादपि पूर्वमधिकारिणः पितृदौहित्र-

१ ०चरणेव—व्यप०।

स्याधिकारप्रतिपादकशास्त्राभावात्—इति वङ्गदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कार-दायभागटीकाविवादभङ्गार्णवदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

भ्रातृपौत्राभावे पितृदौहित्रः तदभावे पितामहः तदभावे पितामही—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् (पृ० २१८) ॥ १ ॥

दौहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहो धनाधिकारी आसन्नत्वात् तदभावे पितामही—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् (२ विवाभ० पृ० ३६४ ख) ॥ २ ॥

दौहित्रान्तस्वसन्तानाभावे पितुरधिकारवत् पितृदौहित्रान्तसन्ताना-भावे पितामहाधिकारः[2], *सांदृष्टिकन्यायसिद्धत्वाद् धनिभोग्यप्रपितामह-पिण्डदातृत्वाच्च पितामहाभावे पितामही*—इति दायक्रमसंग्रहलिखन-ञ्चेति (पृ० ७) ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

५५—नं० ७१५५ आपील सदर आमीन—

रोवकारि आदालत देओयानी जिला वर्द्धमान इंरेजि १८२७ साल ११ जुन प्रथम रेजेष्टर श्रीयुत मेस्तर जान एङ्गलेश हारिणी-साहेवेर वैठके ।

रामप्रशादवन्द्योपाध्याय — आपीलाण्ट

आपन अप्राप्त-व्यवहारा कन्या

अन्नपूर्णादेव्यार पक्ष हइते

श्रीमतिदेव्या ओ गयरह — रष्पाडण्टान

सुवर्णादेव्या — ओजरदार

---

१ भ्रातृपुत्राभावे भ्रातृपौत्रः...तदभावे पितृदौहित्रः...तदभावे पिता०—दायभाग-टीकापाठः ।

२. पितामहस्य, सांदृष्टिक०—दायक्रमसंग्रहपाठः ।

ए मकद्दमार विवरण दृष्टे एइ जिलार पण्डितेर उपर व्यवस्था तलवे एइ सओयाल हइयाछिल। ये यद्यपि इइ भग्नि पितृधने दखिलकार हइया, ताहार मध्ये एक जन भग्नि ओ दुइ पुत्र समक्षे मरे, तवे मृत व्यक्तिर धन भग्निके अर्शिवेक, किम्वा ताहार पुत्रदिगेके अर्शिवेक। ताहाते एइ रूप व्यवस्था पहुछिल ये मृतार धन ताहार भग्निके अर्शिवेक। एइ रूप आसार तलव करण मते एलाका कलिकातार कोट आपिल आदालतेर पण्डितेर निकट हइते ये व्यवस्था पहुछियाछे जिलार व्यवस्था ऐक्यता हइल। किन्तु विचारेर दाँडाते हजुरेर विवेचना सम्मत ना हइया उपरेर लिखित सओयाल एइ वेओराते ये दाओया करा वस्तु साधारण ओ पृथक थाकन प्रकारे उपरेर वेओरा करा कोन उत्तराधिकारिके अर्शिवेक—इंरेजि चिटी द्वारा हुगुलि जिलाते पाठान गियाछिल। हुगुलि जिलार पण्डित ए जिलार व्यवस्थार नितान्त व्यतिक्रम, अर्थात् दाओया करा वस्तु साधारण किम्वा पृथक, दुइ प्रकारेइ पुत्रदिगेके अर्शिवेक लिखियाछे। अतएव व्यवस्थार व्यतिक्रम हओने सन्देह उत्पत्ति हइया ताहार निष्पत्ति कारण सदर देओयानि आदालतेर व्यवस्था तलव करण आवश्यक वोध हइया हुकुम हइल ये सओयाल एइ रोवकारिर नकल द्वारा जज साहेवेर समीपे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय ये सओयालेर व्यवस्था सदर देओयानी आदालत हइते आनाइया ए आदलते पाठायेन इति।

रोवकारि आदालते देओयानी जिला वर्द्धमान तारिख १९ माह जुन शन १८२७ शाल मेस्तर हेनरि मेरट जज साहेवेर वैठके—

रामप्रसादवन्द्योपाध्याय आपीलाण्ट
आपन अप्राप्त-व्यवहारा कन्या
अन्नपूर्णादेव्यार पक्ष हइते— रस्पाडण्टान्
श्रीमतिदेव्या ओ गयरह

सुवर्णादेव्या— ओजरदार

एइ मासेर ११ तारिखेर लिखित ए जिलार रेजेष्टर साहेवेर रोवकारिर एक केता नकल एक मृता स्त्रीर भग्नि ओ दुइ पुत्रेर उत्तराधिकारत्वेर[1] विशये ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था कोट आपिल आदालतेर व्यवस्थार सहित ऐक्य, ओ जिला हुगुलिर आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार सहित व्यतिक्रम हओन मजमुने एक केता सओयाल सम्वलित सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था हासिल करणेर कारण ऐ सओयाल सदर देओयानी आदालते पाठानेर प्रार्थनाय उपुल हइल। हुकुम हइल ये साहेव मौषुकेर आसल रोवकारि ऐ सओयाल सम्वलित एइ रोवकारिर नकल आमार इंरेजि चिटिर सामिल सदर देओयानि आदालतेर प्रवल प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय इति—

सओयाल—

यद्यपि कोन व्यक्ति आपन दुइ कन्या वर्त्तमाना राखिया, फौत् करे। ताहार पर ऐ दुइ कन्यार एक कन्या आपन दुइ पुत्र ओ भग्निके राखिया फौत् करे। इहाते मृता कन्यार विशय ताहार भग्निके अर्शे, कि ताहार पुत्रदिगेर अर्शे ? इहार संसृष्ट मते ओ विभाग प्रयोगे पृथक २ शास्त्रानुसारे जवाव लिखिवेन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कश्चिद्व्यक्तिविशेषः स्वकीये द्वे कन्ये संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं द्वयोः कन्ययोर्मध्ये एका कन्या द्वौ पुत्रौ एकां भगिनीञ्च संरक्ष्य मृता स्यात्, तत्र सा कन्या यदि अविवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी चेत्तदा, यदि च

[1] उत्तराधिकारत्वे च—व्यप०।

विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, परन्तु तस्याः सा भगिनी वन्ध्या, पुत्रहीना विधवा चेत्तदा च, तस्याः पितृत्यक्तधनांशे तत्पुत्रयोरधिकारः। यदि च सा कन्या विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, अथ च तस्याः सा भगिनी वन्ध्या, पुत्रहीना विधवा वा नो चेत्तदा तद्भगिन्याः, अर्थात् पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(याः)वा, अधिकारः। पितृधने ऊढाया दुहितुरधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं पितुरुत्तराधिकारिणामेव क्रमेण तद्धनं भवति। तत्र च पितुरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपत्नीपर्यन्ताभावे दुहितुरेव प्राधान्याद् विभक्तेऽविभक्ते वा व्यावहारिकसंसृष्टिनि, असंसृष्टिनि वा सति पूर्व्वाधिकारिणी तदनन्तराधिकारिणां वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण अधिकाराभावाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-दायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्न्यभावे दुहिता...तत्रापि प्रथमं कुमारी...तत्रायं विशेषः। कन्या जाताधिकारा पश्चात् परिणीता सती अविद्यमानपुत्रा यदि म्रियेत तदा तत्पितृदाये सपुत्रायाः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः। न तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधनं एव तेषामधिकारात्। कुमार्य्यभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः, तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः। वन्ध्यापुत्रहीनविधवयोस्तु पुत्रद्वारेण पार्व्वणपिण्डदा-नोपकाराभावात्, पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोरसत्त्वेऽपि नाधिकारः···सर्व्व-दुहित्रभावे दौहित्रस्याधिकारः—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० ३-४) विवादा-र्णवसेतु[१](पृ० ४३-४४)प्रभृतिग्रन्थलिखनम्॥ १॥

१. पत्न्यभावे कुमारी धनाधिकारिणी।···तदभावे चोढा···तत्रायं विशेषः। कन्या जाताधिकारा पश्चात्परिणीता अविद्यमानपुत्रा यदि मृता तदा तत्पितृदाये सपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारो न तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात्। तदभावे पुत्रवती सम्भावितपुत्रा च तुल्याधिकारिणी एतयोरेकतराभावे अन्यतरा-धिकारः।···स्वपुत्रद्वारा पार्वणपिण्डदातृतया द्वयोरुपकाराविशेषाच्च।···वन्ध्यापुत्र-हीनविधवयोस्तु नाधिकारः।···तयोरभावे दौहित्रः—इति विवादार्णवसेतुपाठः।

एवञ्च दुहितुरप्यधिकारे जाते तस्यां मृतायां तदभावोक्ताः पितृधनाधिकारिणो गृह्णीयुः न तु दुहितृधनाधिकारिणः—इति दायभाग(पृ० १७४) ग्रन्थलिख(न)ञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

नम्बर २५६५

५६—रोवकारी मिसिल आदालते देओयानी सदर तारिख २४ माहे जानओरि सन १८२८ इङ्गरेजी मतावेक १२ माहे माघ सन १२३४ वाङ्गला रोज वृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरलेन सिलि साहेवेर वैठके—

देविदयाल प्रभृति आपीलाण्टान

हरहोरसिंह रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी महम्मद पाणाह विद्यमान आशील। ए मकद्दमा गत दिवस रेष्पाडण्टेर असाद्याते आमार वैठके रोवकार, ओ जिलार आदालतेर कागज-सकल १० लम्वर पर्य्यन्त पडागिया स्थकित छिल। पुनराय अद्य रोवकार हइया ऐ आदालतेर वाकि कागज-सकल फयशला पर्य्यन्त ओ कोट आदालतेर तावत् कागज ओ ए आदालतेर समुदय कागज पडागेल। यथा ए मकद्दमार सम्पर्के नातक हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे एइ विषय जानन जे हरहोरसिंहेर वाशे वैशन शास्त्रानुसारे सान्यवस्थ वटे कि ना आवश्यक हइल। अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल सहित ए मकद्दमार समस्त कागज एइ आदालतेर पण्डीतगणके एइ हुकुमे समर्पण करा जाय ये मकद्दमार दाखिल हओया सम्यक कागज ओ सकल दस्तावेज दृष्टी करिया व्यवस्था लेखेन ये हरहोरसिंहेर वाशे

वैशन शास्त्रानुसारे साव्यवस्थ वटे कि ना; ओ व्यवस्था दाखिल हओन परे उचित हुकुम सादय हइबेक इति ।

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरनेलसेलिसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवंतत्समर्पितैतद्विवादपदविषयनि - विष्टपत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

हरहोरसिंहनिर्द्दिष्टसाद्द्युपस्थापितवृत्तान्तेन वाराणस्यधिकरणककोट-आपीलाख्यधर्म्माधिकरणनिविष्टसप्तदशाङ्काङ्कितव्यवस्थापत्रेणैव[1] मष्टादशा - ङ्काङ्कितत‌द्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण चैवं तद्व्यवस्थापत्रलिखितप्रश्नत्रयेण चैव-मेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातैश्च हरहोरसिंहः स्वपितुर्जनकस्यैक एव पुत्रः, एवं जनकपितृमरणानन्तरं तन्मात्रा वा मनेवाजसिंहाय भाषायां राशशिनी-शब्दप्रतिपाद्यदत्तकपुत्रकरणार्थं दत्त इति ज्ञातम् । एतादृशवृत्तान्ते सति हरहोरसिंहस्य वा मनेवाजसिंहकर्तृकं भाषायां राशनसिनीशब्दप्रतिपाद्य-दत्तकपुत्रत्वं सिद्धं भवितुं न शक्नोति । एकमात्रपुत्रो दत्तकपुत्रकरणार्थं न दातव्यः—शास्त्रे[5] निषेधस्मरणात्, भर्त्तुरनुमतिं विना स्त्रियाः पुत्रदान-निषेधाच्च । अथ च हरहोरसिंहनियुक्ते रूङ्कानशब्दवाच्ये यद्व्यवस्थापत्रं वाराणस्यधिकरणककोटापिलाख्यधर्म्माधिकरणे निविष्टं तद्व्यवस्थापत्रे तत्प्रतिरूपपत्रे चेदमेव लिखितम् । काचिदेकपुत्रा तत्पुत्रभरणपोषणा-[2] द्यसमर्था स्त्री स्वकीयमेकपुत्रं दत्तवती[3] । आवयोः सकलकार्य्यकारी अयं पुत्रः अस्तु । अतएवायं द्व्यामुष्यायणः पुत्रः सिद्धो भवतीति तदतीवा-शुद्धम् । तादृक्[4] संविदः सत्यत्वस्य प्रभुसमर्पितपत्रजातैरेव प्राप्तत्वात्, पत्युरनु-मतिं विना केवलभरणाद्यसमर्थया मात्रा दत्तस्यैकमात्रपुत्रस्य द्व्यामुष्याय-णस्य शास्त्रालिखितत्वाद्, भर्त्तुरनुमतेः प्रभुसमर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्र-जातैरेवप्राप्तत्वाच्च । अथ च जिलाख्यधर्म्माधिकरणनिविष्टपत्रान्तर्गत-

१. पत्रेन०—व्यप० । २. भवनपोषणाद्यसर्था०—व्यप० ।
३. स्वकियत देक पुत्रमलेनशत विदादत्तवति०—व्यप० ।
४. तादृश०—व्यप० । ५. इति शास्त्रे—व्यप० ।

तद्धर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रमेवं पाठशालास्थपण्डित-लिखितव्यवस्थापत्रं च शुद्धमशुद्धं वेत्यस्माभिर्न लिख्यते,[1] यतस्तद्व्यव-स्थाद्वये हरद्दोरसिंहस्य दत्तकपुत्रत्वसिद्ध्यसिद्ध्योः प्रस्तावश्च नास्ति; इत्यत-स्तस्यानावश्यकत्वमेव—इति वाराणस्यादिप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदय-व्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभदत्तकमीमांसादत्तकदीधितिदत्तक-चन्द्रिकादत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

मात्रा भर्त्तुरनुज्ञया[2] प्रोषिते प्रेते वा भर्त्तरि पित्रा वोभाभ्यां वा सवर्णाय यो यस्मै दीयते स तस्य दत्तकः पुत्रः ।

यथाह मनुः—

माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि ।

सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्रिमः सुतः ॥—इति (९।१६८)।

आपद्ग्रहणादनापदि न देयः । दातुरयं प्रतिषेधः । तथा एकपुत्रो न देयः । "न त्वेवैकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वेति वशिष्ठस्मरणात्", तथा *"अनेक-पुत्रसद्भावेऽपि ज्येष्ठो न देयः । ज्येष्ठेन जातमात्रेण पुत्री भवति मानवः"*—इति (मनु०—९।१०६)।

तस्यैव पुत्रकार्य्यकरणे मुख्यत्वात्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २१३-१४) ॥ १ ॥

अपुत्रेणेति पुं(स्त्व)श्रवणात् न स्त्रिया अधिकार इति गम्यते । अतएव वशिष्ठः । न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् (पृ० ७) ॥ २ ॥

नैकपुत्रेण कर्त्तव्यं पुत्रदानं कदाचन ।

बहुपुत्रेण कर्त्तव्यं पुत्रदानं प्रयत्नतः ॥—इति दत्तकचन्द्रिकादत्तक-मीमांसादि (पृ० ६६)ग्रन्थधृतशौनकवचनञ्चेति (पृ० ११) ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

---

१. लिखितो०—व्यप० । २. भर्त्रनुज्ञया०—व्यप० ।

५७—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख ५ माह मार्च्च सन १८२८ इङ्गरेजी मताबक २३ माह फालगुण सन १२३४ वाङ्गला रोज वुधवार ऐ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेवेर वैठके—

जयरामगिर वनाम मयागिर ओ देविगिर

साएल हाजीर आशील। इं० १८२७ शालेर १३ आगस्त माशेर लिखित मरसीदावादेर प्रवलसिएल कोटेर एक केता रिटरन तथाकार रोवकारि सहित ओ तहार सम्वलित मकद्दमार रोएदाद पौछिया ऐ सनेर जुलाइ माशेर २३ तारिखे दृष्टी हओया साएलेर सओयाल प्रभृति, ताहार समपर्कीय कागज-सकल अद्य दृष्टे आशिल। यथा साएलेर सओयाल सम्पर्के चुडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्व शास्त्र विवेचना करण उचित वोध हइलो, अतएव हुकुम हइलो ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितगनके अर्पण कराजाय ये निचेर लिखित सओयालेर जवाव सोमवार पर्य्यन्त दाखिल करेण।

सओयाल—यद्यपि एक व्यक्त गोसाञी आपन गुरुर मृत्युर पर उहार त्यक्त धने दाखिल हइया अन्य व्यक्तिके आपन चेला नियुक्त करे, ओ ताहार पर आपन चेलार असम्मतिते आपन गुरुर त्यक्त धन ओ आपन स्वोपार्ज्जित (धन)के गुरुर त्यक्त धन सम्वलित किम्वा पृथक् अन्य स्थाने हस्तान्तर करे। वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे एमत हस्तान्तर सिद्ध वटे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्येतत्प्रश्नलिखितकश्चित्संन्यासिगोस्वामी स्वगुरोर्मृत्योः परं तत्त्यक्तधने आयत्तत्वं सम्पाद्यान्यं कञ्चिद्व्यक्तिविशेषं शिष्यत्वेन नियुक्तवान्।

तदनन्तरं तच्छिष्यानुमतिं विना स्वगुरुत्यक्तधनं स्वोपार्जितधनं चैकीकृत्य पृथग्वान्यस्य कस्यचिन्निकटे हस्तान्तरं[1] कृतवान् स्यात्तत्र तद्धनं यदि देवसेवार्थं नियमितं भवति तदा देवस्वत्वास्पदीभूततद्धने हस्तान्तरकर्त्तुः स्वत्वाभावेन, यदि च तद्धनमतिथिसेवार्थं नियमितं तत्रायं नियमश्चेदे-तद्धनादतिथिसेवैतत्स्थाननियुक्तेन कर्त्तव्या, न तु दानविक्रयावपि, तदा च शिष्यानुमत्या तदननुमत्या वा हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुं नार्हति; यतः शास्त्रानुसारेण[2] पोष्यवर्गाभरणे नरकं भवति। अथ च संन्यासिनामिदानीन्तनानां प्रायशोऽतिथिसेवाव्यवहारो वर्त्तते। अथ चातिथिसेवार्थं धननियमोऽपि वर्त्तते। तद्धनदानविक्रयावपि न भवत इत्यपि व्यवहारः। व्यवहारस्यापि शास्त्रसिद्धप्रमाणत्वात्। अथ च संन्यासिनामनेके सम्प्रदाया अनेकाः श्रेण्यस्तत्रैतत्प्रश्नलिखितसंन्यासिनो गोस्वामिनो गुरुपरम्परा-यामेतद्व्यवहारश्चेत् शिष्यानुमतिं विना गुरुणा गुरुपरम्परागतधनस्य हस्तान्तरं न कर्त्तव्यं तदा तादृशव्यवहारात् शिष्यानुमतिं विना गुरुपरम्परा-गतधनस्य हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण भवितुं नार्हति। यदि च तद्गुरु-परम्परायां तादृशव्यवहारो न चेत्, तदैतत्प्रश्नलिखितधनं यदि देवसेवार्थ-मतिथिसेवार्थं वा नियमितं न भवति तदा च स्वोपार्जितस्य गुरुपरम्परागत-स्य वोभयविधधनस्यास्य[3] संन्यासिज्ञातिव्यवहारात् शिष्यानुमतिं विनापि गुरुणा हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, अतः शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं भवितुमर्हति। व्यवहारस्य शास्त्रसिद्धप्रमाणत्वमुपरि लिखितमेव—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाव्यवहारतत्त्व-व्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः।

स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति।—इति मनुवचनम् (११।२६)।१।

---

१. हस्तान्तरं—व्यप०। २. शास्त्रानुसारेणापोष्य—व्यप०।
३. धनस्यास्म ज्ञातसन्यासिव्य०—व्यप०।

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं[1] धनं देवस्वम्—इति कुल्लूकभट्टव्याख्यानमिति (पृ० ४३०) । २ ।

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतस्स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम् (८।१९९) । ३ ।

व्यवहारो हि बलवान् धर्म्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ४) व्यवहारमातृकादि(पृ० २८२)ग्रन्थधृतनारदवचनम् । (पृ० १७) १।४०) ।४।

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।
नरकं पीडने चास्य तस्माद्यत्नेन तं भरेत् ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृत(दाभा० पृ० ३३)मनुवचनम्[2] । ५ ।

पिता माता गुरुर्भार्य्या प्रजा दीनाः समाश्रिताः ।
अभ्यागतोऽतिथिश्चैव पोष्यवर्ग उदाहृतः ॥—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारधृतमनुवचनम्[3] (दाभाटी० पृ० ३४) । ६ ।

जातिजानपदान् धर्म्मान्छ्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनं चेति (८।४१) । ७ ।

श्रीर्ज्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

—इङ्गराजि दस्तखत—

१. देवता तदर्थम०—यप० ।
२ मनुस्मृतौ वचनमिदं नोपलभ्यते ।
३. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते यद्यपि वाक्यमिदं "मनुनैवोक्तम्" इति दायभागटीकालिखनम् ।

शश्रोयाल—

५८—एक व्यक्ति सामन्त रजपूत जातीय राजा प्रथमा ओ द्वितिया दुइ बनिता ओ द्वतीया वनितार एक दुहिता ओ स्थावर ओ अस्थावर वस्तु स्वर्णादि राखिया निहतो अर्थात् मृत्यु हय। तद्परे ए निहतो व्यक्तिर द्वतिया वनितार एक दौहित्र हय। ऐ द्वतिय वनिता ओ ताहार दुहिता ओ दुहितार पुत्र वर्त्तमान आछे। ए क्षणे ऐ राजार प्रथमा वनिता आपन स्वामीर फौतेर पर ऐ सकल वस्तुते दखिलकार थकिया आपन सपत्नीर साम्वत्सरेर भरण पोषणेर वेतन दिया आपन सजातीय चरि वत्सरेर वयक्रमेर एक व्यक्तिके पौष्यपुत्र राखियाछे। एमते प्रस्ता जिज्ञासा करा जाइतेछे। ऐ युतं राजार द्वितीया वनितार दौहित्र वर्त्तमाने प्रथमा वनिता आपन स्वामीर विना अनुमतिते पौष्यपुत्र करिते पारे कि ना। यदि पारे कोन शास्त्रेर मत, ओ शे शास्त्रेर नाम की, ओ कोन वचन ओ प्रमाण ताहा एइ शश्रोलेर पृष्ठे लिखियादेन। इति इं शन १८१८ साल, तारिख ७ मार्च्च।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते प्रश्नपत्रलिखितस्य राज्ञो द्वितीयवनितया दौहित्रे विद्यमाने सति प्रथमा वनिता स्वस्वाम्यनुमतिं विना दत्तकपुत्रं कर्त्तुं न शक्नोति—इति दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३)दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद् वाऽन्यत्रानुज्ञानाद् भर्त्तुः—इति दत्तक-मीमांसा(पृ० ७)दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३)दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठ-वचनम्।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

नं० २६१८

५९—रोवकारि मिषिल आदालत देओानि सदर तारिख १३ माह मार्च्च सन १८२८ इङ्गरेजी मोतावक २ चैत्र सन १२३४ वाङ्गला रोज वृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम कटवरट थरनेल सिली साहेवेर वैठके—

नफरमित्र ओ राजीवमित्र— आपीलाण्टान
रामकुमारचट्टोपाध्याय प्रभृति— रेष्पाडण्टान

आपीलाण्टानेर उकिलगण मुनशी हयदरालि ओ मुनशी गोलाम वतुल रेष्पाडण्टानेर उकीलगणेर मध्ये एक जन मौलवि करम्-होशेन हाजिर आशील। पूर्व्वे एइ मकद्दमा एइ मासेर ११ ओ १२ तारिख सकले रोवकार हइया ओ शहर आदालत ओ प्रविनशल कोटेर कागजसकल तथाकार फयशला सहित पडागिया दिवा आवसान हेतु स्थकित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया खाप आपीलेर सओाल याहा मौछुवातेर स्थाने करार दियाछे ओ ताहार जवाव इङ्गरेजी १८२४ शालेर १७५२९ (?) जुलाइ मासेर हओया ए आदालतेर रोवकारि सकल ओ आदालतेर समुदाय कागज पडागेल। जानागेल ये एइ मकद्दमाय सहरेर पण्डितेर निकट हइते दुइ व्यवस्था ओ कोटेर पण्डितेर निकट हइते एक व्यवस्था दाखिल हइयाछे, ओ ऐ व्यवस्थासकल परस्पर अनैक्य। अतएव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितगणेर निकट व्यवस्था लओन उचित वोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल नीचेर लिखित सओ(ा)लसकल लिखिया मकद्दमार समुदाय कागज सहित एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय।

प्रथम सओयाल। एइ जे यद्यपि रामकृष्णमित्रेर[१] स्त्री मुसम्मात धनमणि आपन पतिर मृत्युर पर आपन पतिर अंश ओ त्यक्त

१. वाइ कृष्ण०—व्यप० ।

यावत मलहि किसमतेर उपर, याहा उत्तराधिकारित्व प्रकारे उहाके पौछियाछे, दखिल हइया ताहा आपन दौहित्र मानिक-लालके हेवा करिया थाके; एमत हेवा सिद्ध वटे कि ना।

द्वितीय। एइ ये यद्यपि हेवानामा लिखिया देओन परे मुस-म्मात[1] सजकुरा ऐ लिखित वस्तुके पुनराय रष्पाटएटानेर पिता डोमनचट्टोपाध्यायेर निकट विक्रि करियाथाके, एमत विक्री करार ऐ मुसम्मातर[2] ज्ञमता छिल कि ना। ओ यदि स्यात् हेवा ओ विक्रय दुइओ सिद्धि ना हय तवे ऐ वस्तु आपीलाएटान्के, ये धनमणिर पतिर भ्रातुष्पुत्र वटे, अर्शे कि ना?

तृतीय[3]। यद्यपि धनमणि एखन पर्य्यन्त जीवमान थाके तवे ऐ वस्तुते उहार स्वत्वाकी आछे कि ना। उचित ये पण्डितगण मकद्दमार समुदाय कागज दृष्टि करिया वङ्गदेश चलित शास्त्रा-नुसारे व्यवस्था दाखिल करेण इति।

श्रीहरिःशरणम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरनेलसिलीसाहेवधर्माधिकरण-लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिवि-ष्टपत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

उपरिलिखितपत्रान्तर्गतमुरुसिदा[4]वादाख्यनगरसम्बन्धिधर्म्माधिकरणीय-जयपत्रेणैकत्रिंशदङ्काङ्कितविचारपत्रेण तद्धर्माधिकरणनियुक्तपण्डितसंबन्धि-प्रश्नपत्रेण चैवं कोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयजयपत्रेणैकादशाङ्काङ्कितविचा-रपत्रेण तद्धर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नपत्रेण च रामकृष्णमित्र-मरणानन्तरं तत्त्यक्तधनं गङ्गागोविन्दमित्रेण तत्पुत्रेणोत्तराधिकारित्वेन-प्राप्तमिति ज्ञातम्। अतो रामकृष्णमित्रस्वत्वास्पदीभूतयावद्धने तस्यैव

१. असम्मात—व्यप०। २. असम्मातर—व्यप०।
३. द्वितीय—व्यप०। ४. मुरुसिदावादाभ्य—व्यप०।

स्वत्वं जातम् । अतस्तस्यानपत्यस्य पत्नीमारभ्य पितृपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहितस्य मृतस्य चोत्तराधिकारित्वेन तन्मात्रा धनमन्या तद्धनं प्राप्यायत्तत्वं सम्पाद्य[1] माणिक्यलालनाम्ने स्वदौहित्राय दत्तं चेत्, तदा तद्दानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतो दानपत्रे धनमन्या लिखितं मया स्वेच्छया तुभ्यमेतद्भाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यं धनं दत्तम्, अतएव स्वेच्छया स्त्रिया दानाद्यधिकारस्योत्तराधिकारित्वेन संक्रान्तधने शास्त्रासिद्धत्वात् । यथा पतित्यक्ते पत्नीसंक्रान्ते धने पत्न्याः स्वेच्छया दानाद्यनधिकारस्तथापुत्रत्यक्तेऽपि मातृसंक्रान्ते धने मातुरपीति ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिदायात् कथञ्चन ॥—इति दायभाग-(पृ० १७३)विवादभङ्गार्णवादि(पृ० २ विवाभ० ३२१ क०)ग्रन्थधृत-भारतवचनम् (१३।४७।२४) । १ ।

नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिदायात् कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयादौ नाधिकारः—इति दायरहस्यलिखनम् । २ ।

यद्वा पत्नीत्युपलक्षम् । स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्य—इतिदायभागादिग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण शास्त्रासिद्धदानपत्रलिखनानन्तरं धनमणी तद्दानपत्रलिखितवस्तुनः पुनरेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनां पितुः[2]डोमनचट्टोपाध्याय(स्य) सन्निधौ विक्रयं कृतवती स्यात्तदैतादृशविक्रयकरणे तस्या धनमण्याः क्षमता नासीत्, यतो विक्रयपत्रे स्वीकृतसंक्रान्तधनस्य[3] विक्रये शास्त्रोक्तावश्यकानां हेतूनामलिखनात् प्रभुसमर्पितावशिष्टपत्रजातैरप्राप्तत्वाच्च शास्त्रोक्तविक्रयहेतोर्विना पतित्यक्तधने यथा पत्न्या विक्रये नाधिकारस्तथा पुत्रत्यक्तधने मातुरपि नाधिकारः । एवञ्चोपरिलिखितप्रकारेण

---

१. समपाद्य—व्यप० । २. पितृ०—व्यप० ।
३. ०नस्य शास्त्रोक्तहेतूनां विक्रये आवश्यकानामलि०—व्यप० ।

दानविक्रययोरसिद्धौ सत्यां विवादास्पदीभूतधनान्तर्गतगङ्गागोविन्दमित्रस्य पूर्व्वस्वत्वास्पदीभूतभाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यपरिमितवस्तुषु यदि गङ्गागोविन्दमित्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थ-लिखितक्रमेण पत्नीमारभ्य पितामहपुत्रपर्य्यन्तानपत्यस्य धनाधिकारिणो न स्युस्तदैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनां गङ्गागोविन्दमित्रस्य पितामहपौत्राणामधिकारो भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणत्रयम् । तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदर-स्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रस्तदभावे पितृवैमात्रेयपुत्रः— इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि धनमणी एतत्कालपर्य्यन्तं जीवति तदा विवादास्पदीभूतधनान्त-र्गतभाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यपरिमितं यद्रायकृष्णमित्रमरणोत्तरं तत्पुत्रेण गङ्गागोविन्दमित्रेण प्राप्तं तद्धने धनमण्या मातृत्वेन स्वत्वम-स्त्येव, यतो गङ्गागोविन्दमित्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररूपापत्यपत्नीदुहितृदौहित्र-पितृपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकारिराहित्यात्[1] प्रभुसमर्पितपत्रजातैरवगमादुपरि-लिखितप्रकारेण दानविक्रययोरसिद्धत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्री-कृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवदायरहस्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

तृतीयप्रश्नोत्तरप्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा तत्सुतः—इत्यादि दाय(पृ १५१) भागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ।

अत्र यद्यपि विवादास्पदीभूतं धनं भाषायामेकादशगण्डाधिकैकाणाक-परिमितमिति विक्रयपत्रादिना ज्ञातम्, किन्तु तन्मध्ये भाषायामष्टादशगण्डा-शब्दप्रतिपाद्यं यद्धनमण्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तस्यैवेदमुत्तरं प्रभुसम-

१. ०राहित्यस्य—व्यप० ।

र्पितप्रश्नपत्रानुसारेण दत्तं, नावशिष्टस्य भाषायां त्रयोदशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यस्य नवकान्तविश्वासविक्रीतस्य तद्विषयकप्रभुप्रश्नाभावात्-इतिनिवेदनमिति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

नम्बर २५६५

६०—रोवकारि मिसिल आदालते देओानि सदर तारिख ९ माह आपरेल शन १८१८ इङ्गरेजी मोतावक २९ माह चैत्र शन १२३४ वाङ्गला रोज वुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरनेल सिली साहेवेर वैठके ।

मुसम्मात ज्ञानकौँओर ओ जयाकौओर आपिलण्टान
दुःखवहनसिंह ओ दोवदत्त रष्पाडण्टान

आपिलण्टनेर उकिलगण मौलवि गोलाम इजदाणी ओ लाला आउधलाल, रष्पाडण्टानेर उकिलगणेर मध्ये एक जन सदासुकपण्डित हाजीर आसिल । कल्य एइ मकर्द्दमा रोवकार हइया नालिशी आरजि पडागिया दिवा अवसान प्रयुक्त स्थकित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया प्रविन्शन कोर्टेर वाकि कागज़ फयशला पर्य्यन्त ओ आदालते दाखिल हओया आरजि मजुवात ओ जवाव प्रभृति समस्त कागज गृष्ट आशील । यथा ए माकर्द्दमार सम्वन्धे चुडन्त हुकुम स(ा)दर हओनेर पूर्व्व ए आदालतेर पण्डितगणेर स्थाने व्यवस्था लओन उचित हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल मकर्द्दमार समुदय कागज सम्वलित एइ सओयाले ए आदालतेर पण्डितगणेर हाओला कराजाय ये मुसम्मात ज्ञानकौँओर आपन पिता केहरसिंहेर त्यक्त स्थावर वस्तुते ए आदालतेर डिकरि अनुसारे

उत्तराधिकारि प्रकारे कावेज हइयाछे, ओ मुसम्मात मजकुरा वन्धुसिंह नामे एक पुत्र ओ उम्मेदकौँओर ओ देओमुरत ओ नन्नाकौँओर नामिक तिन कन्या वा त ओ उहार पुत्र वन्धुसिंह जयाकौँओर नामे एक स्त्रि राखिया निःसन्तान मरिल। तत्परे मुसम्मात देओमुरत द्वितीय कन्या दुइ पुत्र अर्थात् रष्पाडण्टान-के राखिया मृत्यु हइल, ओ ताहार पर उहार तृतीय कन्या मुसम्मात नन्नाकौँओर मृत वन्धुसिंहेर स्त्री मुसम्मात जया-कौँओरके ऐ समुदाय वस्तु किम्वा ताहार हइते किञ्चित दान करणेर त्तम निःसन्तान मरिल। अतएव मैथिल ओ पश्चिम देशेर चलित शास्त्रानुसारे ज्ञानकोँङरके (अपत्य) ना थाकाते तवे ताहार मृत्युर पर उहार सत्याधिकारि कोन व्यक्ति हइवेक। उचित ये कागज-सकल दृष्टी ओ अनुमोदन करिया एइ सओयालेर जवाव शास्त्रेर प्रमाण सहित सप्ताह मध्ये दाखिल करि(वे)न इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जयान्वव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरनेलसिलीसाहेवधर्म्माधिक-रणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषय-निविष्टपत्रजातञ्चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतषड्विंशत्यङ्काङ्कितपूर्व्वलिखितैतद्धर्म्माधिकरणीय-जयपत्रानुसारेण केहरसिंहाजितसिंहयोर्विभक्तयोर्द्वयोः सोदरभ्रात्रोर्मध्ये केहर-सिंहस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य समस्तविभक्तस्थावरधनांशे तद्दुहितुर्ज्ञानकोङराख्याया उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति, ज्ञानकोङ-राख्याया मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसा-रेण चोपरिलिखितपैतृकसमुदायस्थावरधनांशस्य तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्य वा

तैतत०१.—व्यप०।

मृतस्वपुत्रबन्धुसिंहपत्नीं जयाकोमराख्यामुद्दिश्य दानकरणे क्षमता नास्ति, यतः शास्त्रे लिखितं पुत्रप्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्यापि दानानधिकारः। अत एव पत्नीतो जघन्याया दुहितुरर्थात् पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने प्रधानाधिकारिण्याः पत्न्याः पश्चादधिकारिण्या उत्तराधिकारित्वेन विभक्तपितृधनाधिकारे जातेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्य सुतरां दानाधिकारित्वेनोपरिलिखितपैतृकसमुदायस्थावरधनांशस्य दानकरणक्षमताथाः सुतरां दूरापास्तत्वाद्विवादास्पदीभूतधनस्य ज्ञानकोमराख्याया स्त्रीधनत्वाभावाच्च। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतोनचत्वारिंशदङ्काङ्कितदानपत्रेणावशिष्टपत्रजातैश्चादृष्टार्थदानानवगमात्, पैतृकसमुदायस्थावरधनांशदानावगमाच्च। एवञ्चोपरिलिखितप्रकारेण ज्ञानकोमराख्याया उपरिलिखितपैतृकसमस्तस्थावरधनांशस्य तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्य वा दानकरणक्षमतायामसत्यां, तस्या मरणोत्तरं तद्धनं धनिनः केहरसिंहस्योत्तराधिकारिणामेव भवति; यतः शास्त्रानुसारेण पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं तद्धनं तत्पत्युरुत्तराधिकारिणामेव यथा भवति तथा शास्त्रविवेचनया पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य विभक्तधने दुहितुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं तद्धनं तत्पितुरुत्तराधिकारिणामेव भवति। प्रकृते तु मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतवंशावलीषट्कलिखितस्य धनिनः केहरसिंहस्य पितुः कृष्णसिंहस्य पितृपितामहप्रपितामहादिसन्ततीनां मध्ये यः कश्चित् केहरसिंहस्यासन्नतरः सपिण्डो ज्ञानकोमराख्याया मरणोत्तरं स्थास्यति स एवाधिकारी भविष्यति, यतो ज्ञानकोमराख्यायाः पितुर्धनिनः केहरसिंहस्योत्तराधिकारित्वं प्रश्नपत्रलिखितानाम्, अर्थात् ज्ञानकोमराख्याया मृतपुत्रबन्धुसिंहपत्न्या जयाकोमराख्याया एवं तत्प्रथमकन्याया उमेदकोमराख्याया एवं तद्द्वितीयकन्याया देवमूर्त्तिकोमराख्यायाः पुत्रयोरर्थादेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनोरेव, एतद्भिन्नानामुपरिलिखितवंशावलीषट्कलिखितानां मध्ये कस्यचिदपि मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण न भवति, यतो मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण धनाधिकारिशृङ्खलाया-

मेतादृशानां पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य सम्बन्धिनामुल्लेखाभावात्, पश्चिम-देशचलितशास्त्रानुसारेणोपरिलिखितवंशावलीषट्कलिखितस्तुतीसिंहाख्यो, यो धनिनः केहरसिंहस्य दौहित्रः, स यदि ज्ञानकोमराख्याया मरणोत्तरं स्था-स्यति तदा तस्याधिकारो भविष्यति, यतः प्रश्नपत्रलिखितानामुपरिलिखिता-नामेवमुपरिलिखितवंशावलीषट्कलिखितानामन्येषां च पश्चिमदेशचलित-शास्त्रानुसारेण ज्ञानकोमराख्यायाः पितुर्धनिनः केहरसिंहस्योत्तराधिकारित्वं न भवति, यतः पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसार्य्यपुत्रधनाधिकारिशृङ्खलाया-मेतादृशापुत्रसम्बन्धिनामुल्लेखाभावात्—इति मिथिलादेशचलितविवाद-चिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रादिग्रन्थानुसारिणी पश्चिमदेशचलित-मिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानु-सारिणी च व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

भारते (१३।४५।१२) :—

स्त्रीणां[1] स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः।
नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन॥

अपहारमैच्छिकदानविक्रयादिकम्—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३८) लिखनम्॥ १॥

यथेष्टविनियोगार्थं तु कन्यायाः पितृधनग्रहणं दूरापास्तमेव—इति वीरमित्रोदय (पृ० ६५६) ग्रन्थलिखनम्॥ २॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥

इति विवादरत्नाकरवीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ९२१)॥३॥

स्वपुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे साध्वी भार्य्या तदभावे दुहिता तदभावे माता तदभावे पिता तदभावे भ्राता तदभावे तत्पुत्रस्तदभावे आसन्न-

१. स्त्रीणां तु पतिदायाद्यमुपभोगफलं स्मृतम्—महाभा०।

सपिण्डस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसपिण्डः—इत्यादि विवादचिन्तामणि-(पृ० २४३)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाग्—इति मिताक्षरा(पृ० २२१) ग्रन्थ-लिखनञ्चेति ॥ ५ ॥

दुहित्रभावे दौहित्रः—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

सञोयाल—

६१—यदि कोन ग्रहस्तेर कन्याके ताहार पिता-माता मूल्यादि ना लइया काहारो नफरेर सङ्गे विवाह देय, एवं विवाह देओया कालिन ऐ कन्यार पिता-माता ऐ कन्याके दासि करिया देओयार कोनो लिखित पडित अथवा अङ्गिकार ना करे, तवे सेइ कन्या ओ ताहार गर्भजात सन्तानसकल यथाशास्त्र दासि ओ नफर हइते पारे कि ना ? एवं कोन शास्त्रानुसारे ए विषयेर निषेध कि विधिर व्यवस्था हय सेइ व्यवस्थार श्लोक ओ भाषाते विवरण अवगत हओया आवश्यक[1] इति ।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कस्यचिद् गृहस्थस्य कन्याया विवाहस्तत्पित्रा मात्रा वा मूल्यादिक-मगृहीत्वा कस्यचिन्नफरशब्दवाच्येनार्थाद्दासेन सह कारितः, एवं विवाह-समये तस्याः पित्रा मात्रा वा दासीत्वेन दानस्य किञ्चिल्लिखितादिकमथवा स्वीकरणं न कृतं स्यात्तत्र यदि प्रश्नपत्रलिखितगृहस्थशब्द[2] (वाच्यः ?) कस्यचिद् दासो(न)भवति, तत्कन्यापि कौमारावस्थायां कस्यचिद् दासी न स्थिता तदा, यदि वा प्रश्नपत्रलिखितगृहस्थशब्देन (वाच्यः) कस्यचिद्दासो

१ आविस्तक—व्यप० ।

२. ०शब्देन कस्य०—व्यप० ।

भवति, तत्कन्यापि कौमारावस्थायां कस्यचिद्दासी स्थिता, कस्यचिद्दासेन सह विवाहे तस्याः स्वामिनो यद्यनुमतिस्तदा च सा परिणेतृदासेश्वरस्य दासी भवितुं शक्नोति। एवञ्च सत्येतत्पक्षद्वये तस्या गर्भजाताः सन्ताना अपि तत्परिणेतृदासेश्वरस्य दास्यो दासाश्च भवितुं शक्नुवन्ति, उपरिलिखित-प्रकारेण तस्या दासीत्वेन तद्गर्भजातसन्तानानामपि शास्त्रोक्तपञ्चदश-दासान्तःपातिगृहजातात्मकप्रथमदासत्वात्। यदि च सा कन्या कौमारा-वस्थायां कस्यचिद्दासी स्थिता किन्तु कस्यचिद्दासेन सह विवाहे तस्याः स्वा-मिनो नानुमतिस्तदा च सा कन्या परिणेतृदासेश्वरस्य दासी भवितुं न शक्नोति, किन्तु पूर्व्वस्वामिन एव दासी भवति; एवं सत्येतत्पक्षे गर्भ-जाताः सन्ताना अपि एकस्य दासोत्पन्नत्वेन द्वितीयस्य दास्युत्पन्नत्वेन च द्वाभ्यामेव स्वामिभ्यां विभज्य ग्रहीतव्या भवन्ति—इति वङ्गदेशचलित-विवादभङ्गार्णवक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

दासेनोढा त्वदासी या सापि दासीत्वमाप्नुयात्।
यस्माद् भर्त्ता प्रभुस्तस्याः[1] स्वाम्यधीनः प्रभुर्यतः॥

इतिविवादभङ्गार्णव (१ विवा० पृ० ५३५ क)(दाय)क्रमसंग्रहादि-(दायक्र०पृ० ५४)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ७२५)।१।

सा च द्विविधा। कस्यापि न दासी, अन्यदासी च। तत्र पूर्व्वा दासोढात्वमात्रेणैव दासेश्वरस्य दासी, परा च तत्प्रभोरनुमतिसहकारेण अनुमता च न दासी—इति क्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् (पृ० ५४)। २।

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः।
अन्ना[3]कालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः॥
मोक्षितो महतश्चर्णाद् युद्धे प्राप्तः पणे जितः।
तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्या[2]वसितः कृतः॥

---

१ तस्याम्—दाक्रसं०। २ ०प्रव्रज्यापसृत—नामसं०।
३ अशनादिभृतस्तद्वदाधत्तः स्वामिना च यः। ऋणाच्च मोक्षितोऽनल्पाद् युद्धप्राप्तः पणे जितः—नामसं०।

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः[1] ।
विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः॥

इतिविवादभङ्गार्णव (१ विवा० ५१६ क) दायक्रमसंग्रहादि (दाक्रसं०—पृ० ५२) ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नामसं० —पृ० ६६) ॥३॥ ०॥ ०॥

एवञ्च यद्यप्यननुमत्या[2] दासेन दासी परिणीता तदा च स्वस्वस्वामिनोरेव दासदास्यौ, तयोरपत्यन्तु द्वाभ्यामेव स्वामिभ्यां विभजनीयम्—इति (दाय)क्रमसंग्रहग्रन्थलिखनञ्चेति (पृ० ५५) ॥ ८॥ ०॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६२—सदर देओयानि आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर रास साहेवेर हजुर हइते अप्राप्त-व्यवहार राजा शशीभूषणदेवरायेर पत्ते अशी ? कमलाकान्तचक्रवर्ति अपिलाण्ट गुरुगोविन्दचौधुरि रष्पाडण्टेर मकद्दमाय इङ्गरेजी १८२८ सालेर १३ माह सेतम्बर मतावक वाङ्गला १२३५ शालेर ३० माह भाद्र रोज शनिवारेर हओया रोवकारिर लिखित ऐ आदालतेर पण्डितगणेर नामे आएन्दा मिसिले जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल—

सओयाल—

कागज-सकलेर द्वाराय पष्ट आछे ये वङ्गदेश निवासि राम शङ्कर राय नामिक एक व्यक्ति आपन जमिदारिर मध्ये एक ग्राम आपन माता राजराजेश्वरीर भरण ओ पोषणेर परिवर्त्ते याहा नगद निर्दिष्ट छिल आपन माताके एइ प्रकार ओ एइ नियमे सोपर्द्द करिल ये ऐ ग्रामेर विक्रय कवाला कृष्णप्रसादनन्दी एक

---

१ प्रव्रज्यापसृतः कृतः—नामसं० । २ यद्यनुमत्या—दाक्रसं० ।

व्यक्तीर बिनामे लिखिया अन्य कोन व्यक्तिके ताहा विक्रय ओ हेबा ना करण, ओ ऐ राजराजेश्वरि आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त ताहार उपस्वत्वे भोगवान थाकन, ओ ऐ मुसम्मातेर मृत्युर पर ऐ ग्राम ऐ रामसङ्करेर पुत्रेर हस्ते सम्वलित आपन मातार स्थान हइते एक किता एकरारनामा, ओ कृष्णप्रसादनन्दि फरजि व्यक्ति हइते ऐ मुसम्मातेर लिखिया देओया एकरारनामार मजमुन मतो द्वितीय एक किता एकरारनामा लिखाइया लइल। तत् परे यखन सरकारेर बाकी खाजानार जन्ये समुदय महालेर, याहा ऐ रामशङ्करराय ओ ताहार पुत्र मोहनचन्द्रेर नामे कालेकटरिर सिरस्ताते लेखाजाय, निलामेर इस्तहार कालेकटरि सिरस्ता हइते लटके, तखन ऐ राजराजेश्वरि ऐ रामशङ्करेर अभिप्राय ओ फरजि व्यक्ति कृष्णप्रसादेर सम्मतिते ये ग्राम ऐ रामशङ्कर आपन माता मुसम्मात राजराजेश्वरिके नगद ग्रास अच्छादनेर परिवर्त्ते दियाच्छिल द्वितीय एक व्यक्तिर हस्ते सम्यक प्रकारे विक्रय करिल। ओ ऐ कृष्णप्रसादनन्दिर नाम हइते कवाला लेखा गेल। अतएव जिज्ञासा करा याइतेछे ये ऐ रामशङ्करेर पुत्र मोहनचन्द्र प्राप्त-व्यवहार थाकने, ओ द्वितीय विक्रीर सम्बन्धे ताहार अनुमति ना थाकने, ओ ऐ मोहनचन्द्रेर अप्राप्त-व्यवहारे ऐ द्वितीय विक्रिर सम्बन्धे उहार अनुमति थाकने, फरजी व्यक्ती कृष्णप्रसादनन्दिर लिखिया देओया द्वितीय विक्रयपत्र, याहा रामशङ्कर ओ ताहार माता मुसम्मात राजराजेश्वरिर अभिप्राय मते हइयाछे, बङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे सिद्धि ओ सङ्गत वटे कि ना इति।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दरराससाहेवधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकरामशङ्कररायकर्त्तृकस्वस्वत्वास्पदीभूतसराजकर-स्थावरान्तर्गतैकग्रामसम्बन्धिप्राथमिकछलविक्रयस्यार्थात् स्वमात्रे राजराजे-

श्वर्यै यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वभोगार्थं तद्ग्रामसमर्पणस्य प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकाभ्यां राजराजेश्वरीलिखितसंवित्पत्रकृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरलिखितसंवित्पत्राभ्यां राजराजेश्वर्य्यां यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वभोगोपयुक्तमात्रस्वत्वोत्पादकत्वपर्य्यवसायित्वेन तद्ग्रामसम्बन्धिन्यां भूमौ रामशङ्कररायस्य स्वत्वाविनाशकत्वात्, प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण राजराजेश्वर्यै तद्ग्रामसमर्पणेन रामशङ्कररायस्य तद्भूमौ स्वत्वविनाशकयोर्वास्तवं दानविक्रययोरनवगमाच्च, एवञ्च सति पितृस्वत्वे विद्यमाने पुत्रस्वत्वाभावबोधकवङ्गदेशचलितशास्त्रेण प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण तद्ग्रामसम्बन्धिन्यां भूमौ मोहनचन्द्रस्य पितू रामशङ्कररायस्य स्वत्वे विद्यमाने मोहनचन्द्रस्य स्वत्वोत्पत्तिर्न भवति। नहि राजराजेश्वरीलिखितसंवित्पत्रेण राजराजेश्वरीमरणोत्तरं मोहनचन्द्रस्य स्वत्वं रामशङ्करस्य स्वत्वविनाशो वा तद्ग्रामे तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वे वा भवति। उपरिलिखितप्रकारेण राजराजेश्वर्य्यां यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वमात्रस्वामित्वेन तद्ग्रामस्वामित्वाभावात् स्वमरणोत्तरं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वास्वामित्वात् राजराजेश्वरीलिखितैतादृशसंवित्पत्रस्य धर्म्मशास्त्रोक्तस्वत्वोत्पादकहेत्वनन्तःपातित्वाच्च। एवञ्च सति जीवन्त्यां राजराजेश्वर्यां रामशङ्करराये च जीवति सति सर्व्वथैव तद्ग्रामस्य तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वस्य चास्वामिनो मोहनचन्द्रस्य तद्ग्रामसम्बन्धिद्वितीयविक्रये अनुमतेरनावश्यकत्वेन तस्यप्राप्तव्यवहारतायां तदनुमतावसत्यामप्राप्तव्यवहारतायां च तदनुमतौ सत्यामपि द्वितीयविक्रयस्य तद्ग्रामसम्बन्धिभूस्वामिरामशङ्कररायाभिप्रायेण कृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरानुमत्या चोपरिलिखितप्रकारेण यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वस्वामिराजराजेश्वरीकृतत्वेनैवं यदा राजग्राह्यकरग्रहणार्थं समुदायस्य सराजकरस्थावरस्य यत्तद्रामशङ्कररायतत्पुत्रमोहनचन्द्रयोर्नाम्ना केलटरीसंज्ञकराजस्थाने लिखितं तस्य निलामसंज्ञकविक्रयाज्ञा तत्स्थानाधिपतिना दत्ता, तदा उपरिलिखितप्रकारेण जातत्वेन च सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वेन तत्प्रमाणभूतं कृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरनाम्ना लिखितं द्वितीयविक्रयपत्रं यत्तद्राजराजेश्वरीरामशङ्करोभयसम्मत्या जातं शास्त्रानुसारेण सिद्धं सङ्गतञ्च भवति, यतः स्वामिसम्मत्या अस्वामिकृतोऽपि विक्रयः शास्त्रसिद्धः—इति वङ्गदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावली-

दायभागदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।
यत्र वाप्युपधिं पश्येत्तत्सर्वं विनिवर्त्तयेत् ॥

इति मनुवचनम्(८,१६५) ॥ १ ॥

योगशब्दश्छलवाची । छलेन ये बन्धकविक्रयदानप्रतिग्रहाः क्रियन्ते न तत्त्वतो, अन्यत्रापि निःक्षेपादौ यत्र छद्म जानीयात्,वस्तुतो निःक्षेपादि न कृतं तत्सर्व्वं निवर्त्तते । इति मन्वर्थमुक्तावल्यां (पृ० ३०३.) कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥ २ ॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।
अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते ॥

इति दायभाग(पृ० १२)दायतत्त्व(पृ० ३)विवादभङ्गार्णवादि(२ विवा० ५ क)ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ ३ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।
प्रयोगः कर्म्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥ इति मनुववचनम् (१०,११६) ॥ ४ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥

इति दायभागादि(पृ० ३५)ग्रन्थधृतनारद (१३।४२—४३)वचनम् ॥ ५ ॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति व्यवहारोऽपि तथा—इति विवादभङ्गार्णव(१ विवा०३०३ ख) लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

६३—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख २० माह माइ सन १८२८ इ० मोतावक ८ माह ज्यैष्ठ सन १२३५ वाङ्गला रोज मङ्गलवार एइ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर रास साहेवेर वैठके—

रत्नसिंह साएल

साएल हाजिर आसिल। साएलेर सओयाल एक आना छय दाम तेर कौडी नओ वुडिर। मकद्दमा ताहार त्रिगुण उपस्वत्व मवलग १३२।=।।।४ उनिष दामा तिन कौडीर तायदादे खास आपिल मञ्जुर करणेर विषय एलाके आजिमावादेर प्रविनसन क्रोटेर हाकिमगणेर नामे हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय मसम्मात धुपु ओ फथेसिंह ओ नियधारिसिंह ओ धोकलसिंह ओ कानायासिंहेर पक्षेर आपन नामिक मोक्तारनामा ओ एइ सनेर फेरवओरि माहेर ९ तारिखेर लिखित अजिमावादेर आपील आदालतेर एक कीता रोवकारिर नकल ओ इं १८२२ शालेर डिसम्वर मासेर १६ तारिखेर लिखित जेला वेहारेर रेजष्टर साहेवेर डिगरिर नकल एक केता ओ इं० १८२५ शालेर माइ मासेर ११ तारिखेर लिखित ऐ जिलार जज साहेवेर डिगरिर नकल सहित ये गत दिवस हुजुरे दाखिल हइयाछिल अद्य दृष्टे आसिल। यथा शाएलेर सओयालेर सम्वन्धे चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्व ए आदालतेर पण्डितदिगेर उपर सओयाल करा उचित वोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितगणके एइ हुकुमे अर्पन करा जाय ये निचेर लिखित सओयालेर जवाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेन।

सओयाल—यद्यपि जिले वेहार निवासिनी हिन्दु एक स्त्री आदालत हइते आपन पतिर हिस्या वावत एक आना छय दाम तेर कौडी नओ वुडी जमिदारिर डिगरि हासिल

करिया ऐ रकमेर भूमि सकल स्वतन्त्र करिया लओनेर ओ ऐ डिगरि मते ताहार उपर दखिल हओनेर अनुमति डिगरिते लिखा थाकनेओ आपन हिस्यार भूमि सकल पृथक करिया ना लइया हिस्यार सदी मते ताहार उपस्वत्व लइया पुत्र सन्तान ना राखिया मरे, एवं ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ कन्यार पुत्रगण आपनादिगके ऐ हिस्यार स्वत्वाधिकार ओ एवं ऐ स्त्रीर पतिर भ्रातार सन्तानरा ऐ हिस्या आवश्यक थाकन एजहारे ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ कन्यार पुत्रगणेर स्वत्वेर अस्वीकारे आपनादिग्के ऐ रकमेर स्वत्वाधिकार करार देय—एमत अवस्थाय डिगरि हओया रकम वण्टक किम्वा अवण्टक वोध हवेक, ओ ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ दौहित्रगणके अथवा ताहार पतिर भ्रातार सन्तान-गणके अर्षिवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दररासससाहेवधर्म्माधि-करणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रभुकृतप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते यदि तत्प्रभुपत्रलिखितायाः स्त्रिया जीवतः पत्युरंशो विभक्तो जातः स्यात्तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहित-त्वेन तत्पतिभ्रातृपुत्रादिभिर्बलात्कारेण विभक्तं तत्पत्यंशं गृहीत्वा समुदायध-नमस्माकं साधारणमेव, नात्र विभागो जातः, अतएवेयं[1] पत्यंशयोग्यं प्राप्तुं नार्हतीत्युक्त्वा[2] तस्यै विभक्तः पत्यंशो न दत्तश्चेत्तदा यदि सा धर्म्माधिकरणे निवेदनं कृत्वा स्वपत्युर्विभक्तांशस्य जयपत्रं प्राप्तवती, तज्जयपत्रलिखित-धनस्य पृथक्कृत्य[3] ग्रहणस्यान्ते सति[4] तज्जयपत्रे लिखिते सत्यपि सा पृथक्-

---

१. ०अत्र वेयं—व्यप०। २. प्राप्तं नर्हतीत्युक्त्वा त स वि०—व्यप०।
३. पृथक०—व्यप०। ४. ग्रहणस्यान्तमतो तज्जयपत्रे लिखितायां सत्यामपि—व्यप०।

कृत्य तद्गृहीत्वा तदुपयुक्तोपस्वत्वं गृहीत्वा च मृताचेत् तथापि तज्जयपत्र-लिखितधनं विभक्तमेवावगम्यते । एवं[1] मृतायास्तस्याः स्त्रिया दुहितुस्त-दभावे दौहित्राणां तत्राधिकारस्तस्याः पत्युर्भ्रातृपुत्रादीनां नाधिकारः । यदि च तस्याः स्त्रिया जीवतः पत्युरंशो विभक्तो न जातश्चेत्तदा प्रभुकृत-प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण तथा अविभक्तधने पतियोग्यांशस्थावरोत्पन्नोपस्व-त्वग्रहणेऽपि तज्जयपत्रलिखितधनमविभक्तमेवावगम्यते । एतत्पक्षे तद्धने तस्याः पतिभ्रातृपुत्रादीनामधिकारः, न तु तद्दुहितॄणाम्, तदभावे दौहि-त्राणां वा—इति वेहाराख्यप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमा-धवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभमिताक्षराटीकासुबोधिनीव्यवहाराध्यायबाल-म्भट्टकृतमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तदेकदेशेषु विषयतया व्यवस्थापनम्—इति मिताक्षरा (पृ० १९७) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

विभागशब्दस्त्वनेकस्वाम्यानां द्रव्यसमुदायविषयाणां तत्तदेकदेशे व्य-वस्थापने शक्तः—इति वीरमित्रोदय (पृ० ५२२) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्न्यभावे दुहितरोऽपुत्रविभक्ता संसृष्टिधनभाजः (विमि० पृ० ५५६)। *दुहितुरभावे दौहित्रः*—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् (पृ० ६६१)॥ ३ ॥

एवं दौहित्रभ्रातृसुतसमवाये मृतस्य विभक्तत्वे दौहित्रस्य बलवत्त्व-स्यशांहरणे सत्त्वेऽपि पिण्डादौ स एव बलवान् । अविभक्तत्वे (तु) तद्-भ्रातृसुतानामेवांशहरत्वादपि—इति व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षराटीकायां बालम्भट्ट (पृ० ८२०) लिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिः शरणम्**
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

---

१. एत—व्यप० ।

२. °तस विभक्तः—व्यप० ।

६४—रोवकारि मिसिल आदालत दिमानि सदर तारीख ७ माह आगष्ट सन १८२८ अङ्गरेजी मतावक १४ माह श्रावण सन १२३(१) वाङ्गला रोज वृहस्पतिवार ओइ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर रास साहेवेर वैठके—

गङ्गाधरवाचस्पति साएल

साएलेर उकील मुनसी फकिर महम्मद हाजिर आइलो। साएलेर हस्त हइते फतेहपुर परगणार मौजे आमरसिर वन्धक खालास विषये वारानसेर कोर्ट आपीलेर हाकिमानेर हुकुमेर असम्मतिते ओ ताहार वन्धक हओनेर विषये एइ[1] आदालत हइते उचित हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय अन्य हेतु सम्वलित साइलेर सओयाल ओइ उकिलेर नामिक उकालतनामा ओ एइ[1] सनेर आपरेल मासेर..... तारिखेर लिखित वारानशेर आपील आदालतेर रोवकारीर नकल ओ इं १८ (?) सालेर आगष्ट मासेर..... तारिखेर लिखित जिला फतेपुरेर आदालतेर एक-क्किता रोवकारिर नकल सम्वलित याहा[2] एइ मासेर २ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आसिल। यथा साइलेर सओयालेर सम्वन्धे हुकुम सादर हओनेर पूर्व्व शास्त्रेर विवरण ज्ञात हओन उचित वोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये आदालतेर पण्डित-गण निचेर लिखित सओयालेर जवाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

सओयाल

यद्यपि वारानश देसेर कोन जमिदारि चारि सरीकेर मध्ये एकत्र ओ साधारणे थाके, ओ जमिदारीर सरीकगण मध्ये दुइ जने आपन २ अवण्टक हिस्या काहारोनिकट वन्धक राखे, तवे एइ प्रकार वन्धक वारानस देसेर चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे

१. राइ—व्यप०। २. माहा—व्यप०।

किं ना ? ओ ताहा सिद्धि हओन विषये अन्य सरिकेर अनुमति[1] आवश्यक कि ना इति।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दरराससाहेबधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि वाराणसीप्रदेशीया काचित्सराजकरभूश्चतुर्णामंशिनां मध्ये एकत्र साधारणे वर्त्तते। अथ च सराजकरभुवोंऽशिनां मध्ये द्वावविभक्तस्वस्वांशं कस्यचिन्निकटे बन्धकीकृत्य स्तः, तदैतादृशबन्धककरणमवशिष्टयोर्द्वयोरंशिनोरनुमतिं विना सिद्धं न भवति। अतएव तत्सिद्ध्या[2]अंश्यन्तरानुमतिरावश्यकी—इति वाराणसीप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वादेकस्यानीश्वरत्वात् सर्व्वाभ्यनुज्ञा अवश्यं कार्य्या। विभक्तेषु तु (उत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्य्याय सर्वाभ्युनज्ञा न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन। अतो) विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्ध्यत्येवेति व्याख्येयः--इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम्॥ १॥ ०॥ ०॥ ०॥

एइ सवाल सोलही अगस्ति १६ रोज शनिवार प्रहर पाँच घण्टाके वखत मिला, ओ एकैसा २१ अगस्ति रोज वृहस्पतिवार चारि घण्टाके······व्यवस्था दाखिल किया सिरस्तामोँ।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

१. अनुमतिर—व्यप०। २. सिद्धावंश्यन्तरानुमति—व्यप०।

नं० २५५३

६५—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ११ माह आगस्त सन १८२८ इङ्गरेजि मताबक २८ माह श्रावण शन १२३५ बाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरनेल शेलि साहेवेर वैठके—

जयरामधामि स्वयं ओ मृत वखोरिधामिर स्त्री दिपुधामिनिर अप्राप्तव्यवहार पुत्र रामचन्द्र धामिर पत्ते अलि प्रकारे—

आपिलाण्ट

मुशनधामि रष्पाडण्ट

स्वयं आपिलाण्ट ओ रष्पाडण्टेर उकिल मौलवि गोलाम एजदानि हाजिर आसिल। ए मकद्दमा इं १८२७ सालेर २५ आगस्त मासेर हओथा रोवकारिर लिखित सावेक द्वितीय हाकिमेर हुकुम मते एइ मासेर सावेक ६ ओ ७ तारिखे रोवकार हइया ओ जिलार आदालतेर दाखिल हओया कागज सकल १ लम्वर हइते तथाकार फयशला ओ प्रवणसन कोर्टेर कागज सकल तथाकार फयशला ओ ए आदालतेर कागज सकल १ लम्वर हइते ३३ लम्वर तक पडागिया दिवा अवशान प्रयुक्त स्थकित छिलो, पुनराय अद्य उपस्थित हइया ए आदालतेर वाकि कागज सकल इं १८२७ शालेर २५ आगस्त मासेर लिखित सावेक द्वितीय हाकिमेर राय सम्वलित दृष्ट आसिल। जानागेल ये जिला वेहारेर जज साहेव ऐ जिलार आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे आपिलाण्टेर पूर्व्व पुरुस भोलाधामि ओरफे लछुमन धामि ओ मृत वखोरिधामिर दावि डिकरि करेन। प्रवनसन कोर्टेर हाकिमगण शास्त्रानुसारे भोलाधामि ओरफे लक्ष्मणधामिके मशम्मात नेवाजो मतोफिया पुष्यपुत्र करण ओ मशम्मात मजकुरा वृत्ति रामशिला प्रभृति ऐ धामिके दान करणेर क्षमता ना थाकन ज्ञान करिया जेलार डिगरि रद करियाछेन। किन्तु

१२

मकर्द्दमार कागजसकलेर मते जाना जाइतेछेना ये ए विषयेर कोन एक व्यवस्था कोर्ट आपिलेर पण्डित हइते लओया गियाछे। ओ ए आदालतेओ एखन पर्य्यन्त एइ आदालतेर पण्डितगण हइते कोन व्यवस्था दाखिल हय नाइ। अतएव ए मकद्दम(ा)र चूडन्त हुकुम सादर हओयार पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन उचित बोध हइया, हुकु(म) हइल ये एइ रोवकारिर नकल तिन आदालतेर कागजसकल सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय। उचित ये एइ आदालतेर पण्डितगण तिनो आदालतेर नथि विलक्षण अनुमोदने दृष्टि करिया जेला वेहारेर चलित शास्त्रानुसारे एइ विषयेर व्यवस्था दाखिल करेण ये प्रकृतार्थे मसम्मात नेवाजोके भोला ओरफे लक्ष्मणधामिके पुष्यपुत्र लओन ओ ताहाके वृत्ते रामशिला प्रभृति हेवाकरणेर क्षमता छिल कि ना ताहा दाखिल हओनेर पर ये हुकुम इनसाफेर उपयुक्त हय सादर हइवेक इति।

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरनेलसिलीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं चावलोक्य विविच्य च[१] यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

नेवाजोनाम्न्या लक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनाम्नो दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणे क्षमता वास्तवं नासीत्, भर्त्तुरनुमतिं विना स्त्रिया दत्तकपुत्रग्रहणानधिकारात्, प्रभुसमर्पितपत्रजातान्तर्गतैकस्मादपि पत्रात्तस्या नेवाजोनाम्न्या दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारप्रयोजकभर्त्रनुमतेरनवगमात्, वरं तत्पत्रजातान्तर्गताष्टत्रिंशदङ्काङ्कितकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयविचारपत्रैणैवं जिलाख्यधर्म्माधिकरणीयप(त्र)सम्बन्धिप्रश्नपत्राभ्यामथ च जिलाख्यधर्म्माधिकरणीयपत्रजातान्तर्गतसप्तविंशत्यंङ्काङ्कितकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयजयपत्रलिखित-

१. त—व्यप०।

-त्तद्विवादप्रत्यर्थिनी नेवाजोनाम्नी दत्तोत्तरतात्पर्य्यार्थेन च भर्त्रनुमत्यभावस्य निश्चितत्वेनावगमात्। एवं तस्या नेवाजोनाम्न्या रामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्मै लक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनाम्ने¹ दानकरणक्षमतापि वास्तवं नासीत् तत्पत्रजातान्तर्गतैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रेणैवं कोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयजयपत्रेणाथ च एतद्धर्म्माधिकरणीयपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितैतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतस्य रामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्या नेवाजोनाम्न्याः पतिधनत्वेनावगमाद् अथ च तत्पत्रजातान्तर्गतैतद्धर्म्माधिकरणीयचतुरङ्काङ्कितमाधवरामनामकार्थिसम्बन्धिविवादनिविष्टनेवाजोनाम्नीप्रत्यर्थिनीदत्तोत्तरपत्रेणैवं कोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितैतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतरामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्या नेवाजोनाम्न्याः पत्युः क्रमागतत्वेनावगमाच्च। ²यतस्तदुपरिलिखितप्रकारकपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्यापि पत्न्या दानानधिकारः। प्रकृते तु तत्पत्रजातान्तर्गतजिलाख्यधर्म्माधिकरणीयचतुर्विंशत्यङ्काङ्कितलक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनामकोद्देश्यकदानपत्रेण विवादास्पदीभूतधनस्यादृष्टार्थकदानानवगमाद् वरं विवादास्पदीभूतोपरिलिखितप्रकारकसमस्तपतिधनस्य स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च नेवाजोनाम्नीकर्त्तृकदानावगमाच्च—इति वेहाराख्यप्रदेशचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ७)दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३) दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा उर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥

---

१. °धाम०—व्यप०। २. यतदुपरि०—व्यप०।

इति वीरमित्रोदयादि(वीमि० ख पृ० ६२७)ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ६३१)वचनम् ॥ २ ॥

स्त्रीणां[1] स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।
नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिवित्तात्[2] कथञ्चन ॥

इति वीरमित्रोदयादि(वीमि० ख पृ० ६२८)ग्रन्थधृतभारत(१३।४७।२४) वचनञ्चेति ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्　　　　　　श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण　　　　　श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

नं० २६८४

६६—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख १९ माह आगस्त सन १८२८ इं मतावक माह ५ भाद्र सन १२३५ बाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत रावःरट हालडन राटरि साहेवेर वैठके ।

राजा गिरीशचन्द्रराय　　　　　　　　　　आपिलाण्ट

मृत राजा ईशानचन्द्रदेवरायेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण राजःकोङर नरहरिचन्द्रदेवराय प्रभृतिर र्ॲछि राजा उमेशचन्द्रराय—
रेस्पाडण्ट—

आपिलाण्टेर उकिल मुनसि गोलाम मण्डल, रेस्पाडण्टर उकिल सदासुक पण्डित हाजिर आसिल । एइ मकर्द्दमा कल्य रोवकार हइया प्रविशन कोटेर कागजसकल १ लम्बर हइते तथाकार फयशला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर दाखिल हओया

---

१. स्त्रीणां तु पतिदायाद्यमुपभोगफलं स्मृतम्—भार० ।　२. ०पतिवृत्तात्—व्यप० ।

आरसि[1] मजुयात पडागिया दिवा अवशान प्रयुक्त स्थकित स्थिल। पुनराय अद्य उपस्थित हइया ए आदालते दाखिल हइया जवाव दृष्टे आसिल। देशेर सर्व्वकालेर डाँडा आछे ये हिन्दु जाति ये पितार मृत्युर परे ताहार धन ओ वस्तु उत्तराधिकारिगणेर मध्ये वण्टक हय। किन्तु ताहार वहिर्भूत उभयेर पूर्व्व पुरुष मृत राजा कृष्णचन्द्रराय आपन जीवद्दशाय कोटेर नथिते दाखिल हओया हेवानामाय आपन समुदाय वस्तु अन्य पुत्रगणेर नैराशे आपिलाण्टेर पितामह ज्येष्ठ पुत्र राजा शिवचन्द्ररायके लिखिया दियाछे। यद्यपि ऐ राजा हइते देशेर ओ नियमेर डाँडार वहिर्भूत हइयाछे, तथा[2] च राजार दानकारण ओ हेवानामा लिखिया देओनेर क्षमता ताहाके छिल। किन्तु यथा ऐ हेवानामाते लेखा गियाछे ये कोङर शम्भुचन्द्रदेवरायेर अधिक पुष्य शालियाना मवलग १५००० हाजार टाका ओ कोङर महेशचन्द्रदेवरायेर शालियाना मवलग १०००० हाजार टाका ओ कोङर नरहरिचन्द्रदेवराय अप्राप्तव्यवहार प्रभृतिर पिता कोङर ईशानचन्द्रदेवरायेर[3] शालिआना मवलग १०००० हाजार टाका ओ मृत भैरवचन्द्रदेवरायेर पुष्यपुत्र माधवचन्द्र देवरा(ये)र २५०० आडाइ हाजार टाका ओ मृत कोङर हरचन्द्रदेवरायेर पोष्यपुत्र यज्ञचन्द्ररायेर[4] शालिआना मवलग २५०० आडाइ हाजार टाका मशहरा देयाइया पाइवेन इति, ओ हेवानामार मजमुनेर द्वाराय राजार आकांक्षा स्पष्ट वोध हइतेछेना ये मशहरा-पाउयागणेर मृत्युर पर ताहादिगेर उत्तराधिकारिगण मशहरा देइया पाइवेन, किम्वा वन्ध हइवेक। ओ आमार वुद्धे आइसे ये अन्य पुत्रगणेर जन्ये येसकल मशहरा नियुक्त राखियाछे[5] ताहा फलितार्थे जामिदारि[6] प्रभृतिर अंशेर वदले ये ताहारो ओहार स्वत्वाधिकार छिल, हइयाछे। ओ ऐ हेतुते ऐ मशहरा

१. आरजि—इति साधीयान् पाठः। २. तत्रा च—व्यप०।
३. देवराय—व्यप०। ४. यज्ञचन्द्रराय शलि०—व्यप०।
५. रागिया छे—व्यप०। ६. जमिदारिरि प्रभृ०—व्यप०।

प(१)इया गणेर उत्तराधिकारिगणसकल आपन आपन पूर्व्व पुरुष-गणेर सत्वे नियुक्त हओया मशहरा, याहा उहादिगेर पूर्व्व पुरुष-गणेर जमिदारि प्रभृतिर हिस्यार वदले वटे, पाओनेर वलवान स्वत्वाधिकारि वोध हय। किन्तु ऐ हेवानामाय मशहरार विस्तारित लेखा ना थाकन सन्देह प्रयुक्त ये ऐ मशहरासकल ताहा पाइयागणेर जीवदशा पर्य्यन्त वहाल थाकिवेक, किम्वा ताहारदिगेर मृत्युर पर ओहादिगेर उत्तराधिकारिगणकेओ अर्शिवेक। ऐ विषयेर उचित हुकुम सादर हओया अनुचित। अतएव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्व सन्देह छेदनार्थे एइ आदालतेर पण्डितगण हइते एइ विषय जिज्ञासा करण उचित हइल ये यद्यपि मृत राजा कृष्णचन्द्ररायेर अन्य पुत्रगण पितृ-जमिदारिर प्रभृति मालामालेर अंश हइते नैराश हइवेन, ओ जमिदारि प्रभृतिर अंशेर वदले उहारदिगेर जन्ये मशाहेरा नियुक्त हइल, ए प्रयुक्त मशाहेरा पाओइयागणेर जीवदशा तक, किम्वा ताहारदिगेर मृत्युर परे उहादिगेर उत्तराधिकारीगणकेओ ऐसकल मशाहेरा अर्पन पण्डितगणेर विवेचनाय हय। उचित ये हेवानामार मजमुन सुन्दर प्रकार ज्ञात हइया ऐ विषयेर जवाव आएन्दा मङ्गलवारेर दश घण्टा पर्य्यन्त दाखिल करेन। अतएव हुकुम हइलो ये एइ रोवकारिर नकल हेवानामा सहित पण्डितगणके अर्पन करा जाय ओ अद्य मकदमा स्थकित थाके इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणपञ्चमाधिपतिश्रीयुतरावर्टहालडनराटरिम्राहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य तत्समर्पितदानपत्रार्थमवगत्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि मृतस्य राज्ञः कृष्णचन्द्ररायस्यान्ये ये पुत्राः पैतृकसराजकरभू[१]

१. °सरजकर०—व्यप०।

प्रभृतिधनांशान्निरस्ता[1]: अथ च सराजकरभूप्रभृतेरंशविनिमये तेषां प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितप्रकारेण वार्षिकं नियुक्तम्। अतो वार्षिकग्राहिणां मरणानन्तरं तेषामुत्तराधिकारिणामपि तत्समस्तवार्षिकसमर्पणमस्मद्विवेचने सिद्धं भवति, यतः प्रभुसमर्पितदानपत्रेण मृतराजकृष्णचन्द्ररायकर्तृकराजशिवचन्द्ररायोद्देश्यकस्वत्वास्पदीभूतसराजकरभूप्रभृतिधनदानावगमात्। तत्र यदि राजशिवचन्द्ररायमरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणां तद्दानाधीनराजशिवचन्द्ररायस्वत्वास्पदीभूतसराजकरभूप्रभृतिधनाधिकारस्तदा तद्दानपत्रलिखितवार्षिकदानाधीनदानपत्रलिखितवार्षिकग्राहिस्वत्वास्पदीभूतवार्षिकधने तेषां मरणानन्तरं तद्वार्षिकग्राह्युत्तराधिकारिणामप्यधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वाद्, दानस्य उभयत्र तुल्यत्वाद् वार्षिकस्य तेषां सराजकरभूप्रभृतिधनांशविनिमयत्वात्। यतस्तद्दानेन वार्षिकग्राहिणां स्वत्वोत्पत्तिरत एव तदुत्तराधिकारिणां तद्वार्षिकस्य दायत्वेन स्वत्वोत्पत्तेर्निष्प्रत्यूहत्वात्। अथ च दानपत्रलिखितप्रकारेण स्वपुत्रभैरवचन्द्रदेवस्य औरसपुत्रापेक्षया जघन्यदत्तकपुत्रमाधवचन्द्रदेवसंज्ञकस्वपौत्रोद्देश्यकवार्षिकदानेन स्वपुत्रहरचन्द्रदेवस्य दत्तकपुत्रयज्ञचन्द्रदेवसंज्ञकस्वपौत्रोद्देश्यकवार्षिकदानेन च एवं मया यो नियमः कृतस्तस्योल्लङ्घनं तैरेवं त्वया च कदाचिदपि न कर्त्तव्यम्; यदि कश्चित् कदाचिदेतन्नियमस्यान्यथाचरणोद्युक्तस्तदा तदन्यथाचरणं लोकतो धर्म्मतश्च राजसन्निधौ चाग्राह्यमितिदानपत्रलिखनेन च मृतस्य राज्ञः कृष्णचन्द्ररायस्य तथाभिप्रायावगमाच्च—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम्। (५।१५२)॥ १॥

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः।
प्रयोगः कर्म्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च॥—इति मनुवचनम्। (१०।११५)

---

१. ॰निरस्तः—व्यप॰।

ततश्च पूर्व्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्योपरमे यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)ग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

नं० २५९०

६७—रोवकारि मिखिल आदालत देओयानि सदर तारिख २५ माह सेतम्बर सन १८२८ इं मतावक ११ माह आश्विन सन १२३५ वाङ्गला रोज वृहस्पतिवार ऐ आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत उलियम नसष्टर साहेवेर वैठके ।

जयमणिदेव्या प्रभृति	**आपिलाण्टगण**
फकिरचन्द्रचक्रवर्त्ति	**रष्पाडण्ट**

आपिलाण्टगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ रष्पाडण्टेर उकिलगण मुनशी दादार वक्स ओ प्राणचन्द्रचट्टोपाध्याय हाजीर आसिल। ए मकद्दमा एइ सनेर आगष्ट मासेर २६ तारीखे आमार वैठके रोवकार हइया ए मकद्दामार खास आपिल मञ्जुरिर हेतु सम्वलित इं १८२३ सालेर नवम्वर मासेर ८ ओ इं १८२४ सालेर जानओरि मासेर ७ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोवकारि-सकलेर दृष्टे वोध हइल ये ए मकद्दमा शास्त्रे सम्पर्क राखन ओ शास्त्रेर हेतुसकल यथार्थ विवेचना ना हओन दृष्टे ताहार आपिल मञ्जूर हइयाछे। अतएव समुदय कागज दृष्ट हओनेर पूर्व्वे ऐ आदालतेर पण्डितगण हइते निचेर सओयालसकलेर जवावे व्यवस्था लओन उचित वोध हइया हुकूम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितगणके समर्पण करा जाय, ये ऐ

सब्ओयालसकलेर जवाव वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

प्रथम सब्ओयाल। यद्यपि एक व्यक्ति पैतृक देवोत्तर भूमि-सकल ओ देवसेवार पालि राखिया आपन स्त्री ओ पुत्र ओ पुत्रवधुर समक्षे मरे, ओ कथक दिवसान्तर मृत व्यक्तिर पुत्र ओ माता ओ स्त्री राखिया निसन्तान मरे, तवे दुइ स्त्रिलोक अर्थात् सासुडि ओ पुत्रवधुर मध्ये के ऐ त्यक्त धनेर स्वत्वाधिकारिणी हइवेक।

द्वितीय सब्ओयाल। यदि स्यात् मृत व्यक्तिर पुत्रेर मृत्युर पर सासुडि ओ पुत्रवधु अनक्य प्रयुक्त ऐ सकल देवोत्तर भूमि सेवार पालि हिस्या करिया लइया ताहार नादावि आपनादिगेर हिस्या दान विक्रयेर क्षेमतार नियमे लिखित ओ पडित करिया थाके, तवे शास्त्रानुसारे देवोत्तर भूमि ओ ठाकुरसेवार पालि वावत एमत लिखित पडित सिद्धि कि ना ?

तृतीय सब्ओयाल। यदि दुइ स्त्रीलोक नादाविर लिखित पडि-तेर अनुसारे देवोत्तर भूमिसकल ओ सेवार पालिते दखिल हइया ऐ सासुडि आपन पुत्रवधुर जिवद्दशाते आपन अंशेर देवो-त्तर भूमिसकल ओ सेवार पालि काहारो निकट वन्धक राखेन, किम्वा आपन परकालेर कर्मेर पैतृके अथवा पतिर ऋण परि-शोधनार्थ काहार हस्ते विक्रय करिया थाके, तवे एमत विक्रय-सिद्धि इहवे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतअलियमनसष्टरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्येकः कश्चित् पित्राद्यायत्तभूतां समस्तां देवत्रभूमिमथ च देवसेवायाः कालिकांशं च संरक्ष्य विद्यमानायां स्वपत्न्यां स्वपुत्रे च विद्यमाने पुत्रवध्वां च विद्यमानायां मृतः, ततः किञ्चित्कालानन्तरं मृतव्यक्तेः पुत्रोऽपि स्वमातरं स्वपत्नीं च संरक्ष्य निःसन्तान एव मृतः, तदा द्वयोः श्वश्रूपुत्रवध्वोर्म्मध्ये पुत्रवधूरेवोपरिलिखितप्रकारकधनेऽधिकारिणी भवति, यत उपरिलिखितप्रकारेण पितृमरणोत्तरं तत्त्यक्तधने तत्पुत्रस्याधिकारे[1] जाते सति तद्धनं तत्पुत्रस्यैव जातम्। अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तद्धनाधिकारः। तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये तस्य प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या एव प्राधान्यमिति—

अत्र प्रमाणम्—

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८)लिखनम्॥ १॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ(दाभा० पृ० १५१)धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५)॥ २॥ ०॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि मृतव्यक्तेः पुत्रस्य मरणानन्तरं श्वश्रूपुत्रवध्वोरनैक्येन तत्समस्तदेवत्रभूमिमथ चदेवसेवायाः कालिकांशं च विभज्य ताभ्यां गृहीत्वा तस्य देवत्रभूम्यादेः स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छया कल्पितस्वस्वांशदानविक्रयत्त्वमतानियमेन लिखितं कृतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण देवत्रभूमेर्देवसेवायाश्च कालिकांशस्यैतादृशं लिखितं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण पुत्रवध्वा एव पतित्यक्तधनाधिकारित्वेन तस्याश्च तद्धने स्वेच्छयादानविक्रयैतादृशविभागकरणत्त्वमताविरहाद् देवत्रभूमौ देवभिन्नानां केषाञ्चिदपि स्वत्वाभावाच्चेति—

---

१. अधिकारो०—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥—इति मनु (११।२६) वचनम् ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं[1] धनं देवस्वम्—इति कुल्लूकभट्ट (पृ० ४३०) व्याख्यानम् ॥ २ ॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥—इति दायभागादि (पृ० १७१)ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ९२१)वचनम् ॥३॥०॥०॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि द्वे स्त्रियौ[2] स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छया लिखितानुसारेण समस्तदेवत्रभूमौ[3] देवसेवांशे चायत्तत्वं सम्पादितवत्यौ[4], तयोर्मध्ये श्वश्रूर्जीवन्त्यां स्वपुत्रवध्वां तल्लिखनानुसारेण स्वांशभूतत्वेन मन्यमानां या देवत्रभूमेस्तथाविधस्य देवसेवांशस्य च कस्यचिन्निकटे बन्धकमथवा स्वस्वर्गार्थोल्लेखेनाथवा पतिकृतर्णापाकरणार्थोल्लेखेन विक्रयं वा कृतवती तदैतादृशविक्रयकरणं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण तस्यास्तद्धनस्वामित्वाभावाद्, द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छालिखितस्यासिद्धत्वेन तल्लिखितानुसारेणापि तस्यास्तद्धनस्वामित्वाभावाच्च-इति वङ्गदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत् ॥—विवादभङ्गार्णवादि (१ विवा २१७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ०—६१२)वचनम् ॥ १ ॥

---

१. ०देवतातदर्थमु०—व्यप०। २. स्त्रियो०—व्यप०।
३ देवत्र देवत्र भूमो—व्यप०। ४. संपादितवत्यो०—व्यप०।

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥–इति मनु (८।१९९)
वचनञ्चेति ॥ २ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

६८—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १ माह दिशम्वर सन १८२८ इं मतावक १७ माह अग्रहायण शन १२३५ वाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कट-वरट थरलेन सिलि साहेवेर वैठके ।

मृत वावु अभयनारायणसिंहेर स्त्री मुसम्मात पुनितकोङर ओ कन्या मुसम्मात अस्यमेधकोङर— साएल ।

साएलानेर उकिलगण मुनशी दादार वक्स ओ मुनशी महम्मद आलि खा ओ वावु रूपनारायणसिंह, द्वितीय पक्षेर उकिल सदा-सुक पण्डित हाजिर आसिल । एइ सनेर नवम्वर मासेर २९ तारिखे उभयेर दाखिल करा सओयाल प्रभृति ताहार सम्पर्कीय कागजसकल आमार वैठके उपस्थित हइया दिवा अवसान प्रजुक्त स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया ऐ कागजशकल एइ सनेर २७ आगस्त ओ २५ सितम्वर मासेर लिखित द्वितीय हाकिम ओ पञ्चम हाकिमेर राय सम्वलित दृष्टे आसिल । तत् परे वावु रूपनारायणसिंहेर उकिल इं १८२७ शालेर मार्च्च मासेर २४ तारि-केर निवेदित आजिमावादेर प्रविनसन कोर्टेर दाखिल हओया जेला त्रिहोतेर कालेकटर साहेवेर सओयालेर एक किता नकल ओ इङ्गरेजि छय किता चिटिर नकल दाखिल करिल, पडागेल । यथा

एइ मकद्दमार चूडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्व ए आदालतेर पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन उचित हइल अतएव हुकुम हइल ये ए आदालतेर दाखिल हओया कागजसकलेर सम्वलित एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितगणके समर्पण करा जाय ये ए आदालतेर पण्डितगण ऐ कागजसकलेर दृष्टे मैथिल देसेर चलित शास्त्रानुसारे निचेर लिखित सओयालेर जवाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

सओयाल—

चौधरिरी आजितसिंहेर तिन पुत्र। प्रथम वावु दिगविजयसिंह, द्वितीय वावु सर्व्वजितसिंह, तृतीय वावु उमराओसिंह छिल। उमराओसिंह तृतीय पुत्र निस्वन्तान मरिल। वावु दिगविजयसिंहेर पुत्र वावु भुपनारायनसिंह ओ वावु सर्व्वजितसिंहेर पुत्र वावु रञ्जीतसिंह उत्तराधिकारित्व स्वत्वे आपनर पितार माल ओ मिलकियते भोगवान् छिलेन। ताहारद्विगेर मृत्युर पर वावु भुपनारायणसिंहेर पुत्र वावु अभयनारायणसिंह ओ वावु रञ्जितसिंहेर पुत्र वावु रूपनारायणसिंह आपनर पितार त्यक्त धन ओ वस्तुते दखिलकार हइया वावु अभयनारायणसिंह मुसम्मात पुनितकोङर स्त्री ओ मुसम्मात अस्यमेधकोङर कन्या, ओ तृतीय पुरुसिय खुडतात भ्राता वावु रूपनारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय। अतएव जिज्ञासा जाय जे यद्यपि वावु अभयनारायणसिंह आपन मृत्युर पूर्व्वे तालुक केवल नारायणपुर प्रभृतिर अर्द्धक-हिस्यार उपर आपन खुडतुता भ्राता वावु रूपनारायणसिंहेर साधारणे दखिल थाकिया मरिया थाके तवे ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त वस्तु कोन व्यक्तिके अर्थात् स्त्री, किम्वा कन्या, किम्वा वावु रूपनारायणसिंहके अर्सिवेक। ओ यद्यपि ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त अर्द्धेक हिस्या ताहार मृत्युर पूर्व्व विभाग हइया ऐ मृत व्यक्ति विभाग अनुसारे ताहार उपर भोगवान हइया मरिया थाके तवे ऐ व्यक्तिगणेर मध्ये कोन व्यक्तिके मृत व्यक्तिर त्यक्त वस्तु अर्सिवेक इति।

श्रीजयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरलेनसिलीसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्ट-पत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि मृतबाबुअभयनारायणसिंहः स्वमृत्योः पूर्वं केशवनारायणपुर-प्रभृतिसराजकरस्थावरस्यार्द्धांशे[1] स्वपितृव्यपुत्रबाबुरूपनारायणसिंहस्य साधा-रण्येन भुञ्जानस्सन् मृतस्तदा तस्या एव मृतव्यक्तेस्त्यक्तं केशवनारायण-पुरप्रभृतिसराजकरस्थावरस्यार्द्धांशं[2] बाबुरूपनारायणसिंहः सपिण्डत्वेन साधा-रण्यप्रतियोगित्वेन च प्राप्तुं शक्नोति, प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विवादास्पदीभूत-क्रमागतसराजकरस्थावरान्तर्गतकेशवनारायणपुरप्रभृतिग्रामाणां तत्तद्ग्रामा-न्तर्गताया भूमेर्वा अंशपरिच्छेदानवगमाद् वरं तत्पत्रजातान्तर्गतरेजीशब्द-प्रतिपाद्यपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयचतुर्थदिवसलिखित-तीरभुक्तिप्रदेशीयकलकटरपदाभिषिक्तसाहेवलिखितविचारपत्रेणैवं[3] सप्त-विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमासीयपञ्चमदिवसलिखितकलकटरपदा-भिषिक्तसाहेवकृतनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतस्य केशवनारायणपुर-प्रभृतिसराजकरस्थावरस्याभयनारायणसिंहरूपनारायणसिंहयोस्साधारण्याव-गमाद् एतादृशक्रमागतसाधारणधने पत्नीदुहित्रोरधिकारप्रतिपादकं मिथि-लादेशचलितशास्त्राभावाच्च। यदि च तस्या एव मृतव्यक्तेस्त्यक्तार्द्धांशो विभक्तः, सा च मृतव्यक्तिर्विभागानुसारेण तदुपरि आयत्तत्वं सम्पाद्य मृता, तदोपरिलिखितानां मध्ये पुनीतकोमराख्या, तत्पत्नी, तस्या एव मृतव्यक्ते-स्त्यक्तधनं प्राप्तुं शक्नोति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्याः प्रधानाधिकारित्वात्[4]—इति मिथिलादेशचलितविवादरत्नाकरविवादचिन्ता-मणिविवादचन्द्रद्वैतनिर्णयद्वैतपरिशिष्टादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

---

१. °र्द्धशे°—व्यप०। २. स्याद्धंश—व्यप०।
३. पत्रेणेवं—व्यप०। ४. °त्यात्—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।
पत्न्येव दद्यात् तत्पिण्डं कृत्स्नमंशं लभेत च ॥—इति विवादरत्नाकर (पृ० ५११)विवादचिन्तामण्यादि(पृ० २३६)ग्रन्थधृतवृद्धमनुवचनम् ॥ १ ॥

इदञ्च *विभक्तपतिधनपरम्*—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३७) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अविभक्ते[1] *मृते पत्यौ तस्यांश एव नाभूदिति*[2] *किमियं गृह्णातु । न च सैवांशप्रतियोगिनी प्रापकाभावात् । न चैतान्येव वाक्यानि प्रापकाणि तेषां*[3]*विभक्तधनपरत्वेनाप्युपपत्तेः*—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३७)-ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

भ्रातृभार्य्यायां विधवायां पत्याहितगर्भायां तद्देवरादीनां विभागे प्रक्रान्ते[4] *तस्या अपि शङ्कितपुत्रप्रसवायां*[5] *दायं*[6] *आप्रसवं स्थाप्यः । स च तस्याः पुत्रे जाते*[7] *तत्पुत्रस्यैव भवति पुत्रेऽनुत्पन्ने तु देवरादिभिर्ग्राह्यः*—इत्यादि विवादचिन्तामणि (पृ० २३८) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

विभक्तानामपि यत्रांशपरिच्छेदो न जातस्तन्मध्यगमेव तिष्ठति तेन तत्र साधारणत्वमेव—इति विवादचिन्तामणि (ख वि० चि० पृ० १६१) द्वैतपरिशिष्टादिग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि[8] *तद-*

---

१. अविभक्तप्रमीते तु पत्यौ०—विचि० ।
२. ०भूतः किमि०—विचि० ।
३. एषां—विचि० ।
४. प्राप्ते—विचि० ।
५. शाङ्कित०—व्यप ।
६. भाग०—विचि० ।
७. पुत्रे अनुत्पन्ने—विचि०ः।
८. तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—अंशोऽयं विवादचिन्तामणौ नोपलभ्यते ।

भावे बन्धुगामि—इत्यादि विवादचिन्तमण्यादि(विचि० पृ० २३५)ग्रन्थ-लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

६९—सहर श्रीरामपुरेर देमानि आदालतेर जज साहेबेर हुजुर हइते सदर देमानि आदालतेर पण्डितेरदिगेर प्रति सओयाल—

यदि कोन व्यक्ति तिन पुत्र वर्त्तमाने लोकान्तर हय, परे ऐ तिन पुत्रेर मध्ये ताहादिगेर ज्येष्ठ भ्राता अन्न प्रार्थक्य हइया पैतृक सर्व्व-साधारणेर एक बागान, याहाते कतक प्रजार वसति आछे एवं ताहादिगेर तिन भ्रातार अंशेर भिन्न२ सिमा चिह्नित हय नाइ, ताहार तिन अंशेर एक अंश कोन अन्य व्यक्तिके विक्रय करे। ताहाते यदि आर दुइ भ्राता प्रतिवादि हइया हाकिमेर निकट नालिस करिया ऐ तिन अंशेर एक अंश, याहा ताहादिगेर ज्येष्ठ भ्राता विक्रय करे, ताहार यथार्थ मूल्य दिया खरिदेर प्रार्थना राखे, तवे ऐ तिन अंशेर एक अंश खरिद करिते काहार अधिकार हय: ऐ दुइ भ्रातार, अथवा ऐ खरिदारेर—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे लिखिवेन इति। शन १८२८, ७ मेइ मों शन १२३५, २६ वैशाख।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषस्त्रीन् पुत्रान् संरक्ष्य मृतस्तदनन्तरं तेषां त्रयाणां पुत्राणां मध्ये ज्येष्ठः पृथगन्नो भूत्वा पितृत्यक्तभ्रातृत्रयसाधारणैकात्मकसप्रजक-भूमेस्त्रयाणां भ्रातॄणां विभागव्यञ्जकसीमाचिह्नरहिताया अंशत्रयमध्ये एकमंश-मन्यस्मै कस्मैचिद् विक्रयं कृतवान्[1], कर्त्तुमिच्छति वा, तत्र यद्यवशिष्टौ द्वौ

---

१. कस्मैचित्त—व्यप०। २ प्रतिवादिनो—व्यप०।

भ्रातरौ प्रतिवादिनौ[1] भूत्वा राजसन्निधौ निवेदनं कृत्वा तेषां त्रयाणामंशानामेकमंशमर्थाज्ज्येष्ठभ्रात्रा विक्रीतं, विक्रेतव्यं वा, तस्य यथार्थ[2] मूल्यं दत्त्वा क्रेतुं प्रार्थयतस्तथापि तेषां[3] त्रयाणामंशानामेकमंशं क्रेतुं यस्मै उपरिलिखितविक्रय[4]-कर्त्ता प्रसन्नस्सन् विक्रेतुमिच्छति तस्यैवाधिकारः, यत इदानीं वङ्गदेशचलित-धर्मशास्त्रे क्रयकर्तुर्विचारो न लिखितः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥—इति दायभाग(पृ० ३५)-विवादभङ्गार्णव(१ विभ० ख ४२३)विवादार्णवसेतु (पृ० ८३)प्रभृतिग्रन्थधृत-नारद(नामसं० १३।४२-४३)वचनम्॥ १॥

तथा च विभक्तस्येवाविभक्तस्थावरस्यापि[5] स्वामिकृतदानादि सिद्धय[6]-त्येव अक्षपातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादितिभावः—इति श्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० ३५) लिखनञ्चेति॥ २॥ ०॥ ०॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

———

७०—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ८ माह आपरेल सन १८२९ ई० मतावक २७ माह चैत्र शन १२३५ वाङ्गला रोज वुधवार ऐ आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत अलियम नसष्टर साहेवेर वैठके—

---

१. प्रतिवादिनो—व्यप०। २. यथार्थमूल्य—व्यप०।
३. तेषा—व्यप०। ४. दुपरिलिखित—व्यप०।
५. तथा च विक्रभक्तस्यैवाविभ०—व्यप०। ६. सिद्धत्वे च—व्यप०।

राजचन्द्रराय   सायेल

एइ सनेर मारच मासेर १४ तारिखेर सायेलेर मकद्दमार कागज सकल रोवकार ओ दृष्टी हइया कोरक करा भूमि निलामेर निषेधि हुकुम सादर[1] हओन परे अनुमोदनार्थे स्थकित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइया अन्य कागज सकल दृष्ट करागेल। यथा ए मकद्दमार सम्पर्के हुकुम हओनेर पूर्व्वे देवोत्तर भुमिसकलेर सम्वन्धे शास्त्रेर कथन आज्ञा विवेचना करा उचित हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय, ये निचेर सओयालसकलेर जवावे दुइ सप्ताह मध्ये शास्त्रानुसारे व्यवस्था दाखिल करेण।

प्रथम सओयाल—यद्यपि शास्त्रानुसारे देवोत्तर भूमिसकल विक्रय करण एकान्त सिद्ध नहे। अतएव ताहार उपस्वत्व विक्रय करण (सिद्ध) हइवेक कि ना?

द्वितीय सओयाल—सरवराहकारि कीम्वा सेवाइती प्रयुक्त देवोत्तर भूमि अथवा ताहार उपस्वत्वे सेवाइतेर किछु स्वत्व हय कि ना, ओ यद्यपि हय, ताहार किछु निर्द्दिष्ट आछे कि ना? येमन एक विघा देवोत्तर भूमि किम्वा ताहार उपस्वत्व एक टाकार मध्ये सेवाइतेर स्वत्व कि परिमान हइवेक?

तृतीय सओयाल—यद्यपि देवोत्तर भूमि किम्वा ताहार उपस्वत्वे सेवाइतेर स्वत्व परिमाने निर्द्दिष्ट हइयाथाके, तवे सेवाइतेर देनार निमित्ते सेवाइतेर स्वत्वेर परिमानेर भूमि अथवा ताहा हइते ये परिमाने उपस्वत्व सेवाइतके(?)सकल हइते पारे विक्रय-हइवेक कि ना?

चतुर्थ सओयाल—यद्यपि ये भूमिसकले किम्वा ताहार उपस्वत्वते सेवाइतेर स्वत्त्व वत्तिया समुदय देवोत्तर भूमिसकलेर सम्वलित थाके, ओ सिमा चिह्नओ भिन्न ना हइया थाके, तवे समुदय देवोत्तर भुमि, किम्वा ता हइते किञ्चित् वण्टक ना

१. सोदर—व्यप०।

हओन हेतुक सेवाइतेर देनार जन्ये विक्रयेर योग्य हइवेक, किम्वा किछुइ नाइ इति ।

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतालियमनसष्टरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयापरेलमासीयाष्टमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तन्मासीयषोडशदिने सपादघटिकाद्वयाधिकसमये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यतः शास्त्रानुसारेण देवत्रभूमीनां विक्रयकरणं कदाचिदपि न सिध्द्यति अतएव तदुत्पन्नोपस्वत्वस्यापि देवमात्रस्वत्वेन तदितरस्वत्वाभावात्तद्विक्रयकरणमपि न सिध्द्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥—इति मनुवचनम् (मनुस्मृ० ११।२६) ॥ १ ॥

प्रतिमा देवता । तदर्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम् ॥—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लूकभट्टलिखनम् (पृ० ४३०) ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम् (मस्मृ० ८।१९९) ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

भाषायां सरवराहकारशब्दवाच्यस्य सेवाइतशब्दवाच्यस्य वा भाषायां सरवराहकारीकर्म्मप्रयुक्तं सेवाइतीकर्मप्रयुक्तं वा देवत्रभूमौ तदुत्पन्नोपस्वत्वे वा किञ्चिदपि न स्वत्वं धर्म्मशास्त्रीयप्रमाणाभावादिति ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण देवत्रभूमौ तदुत्पन्नोपस्वत्वे वा सेवाइतशब्दवाच्यस्य स्वत्वाभावेन तद्देयपरिशोधनार्थं देवत्रभूमेस्तदुत्पन्नोपस्वत्वस्य

वा विक्रयो भवितुं नार्हति। चतुर्थप्रश्नोत्तरमप्यर्था(दा)यातमिति न पृथग् लिखितम्। —इति मन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणी[1] व्यवस्था—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० २७६६

७१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख १५ माह आपरेल शन १८२९ इं मताबक ४ साह वैशाख सन १२३६ वाङ्गला रोज वुधवार ऐ आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत मान्तकिओ हेनरि टरम्वल साहेवेर वैठके।

वावु गङ्गाप्रसादनारायण आपीलाण्ट

वावु लछमिनारायण रष्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिल मुनसी दादारवस्क ओ रष्पाडण्टेर उकिल लाला आउधलाल हाजिर आसिल। ए मकद्दमा एइ सनेर मारच मासेर ३१ तारिखेर हुकुम मते अद्य आमार वैठके रोवकार हइया प्रविशन कोटेर दाखिल हओया नालिसी आरजी प्रभृति कागच सकल तथाकार फयसला पर्य्यन्त ओ ए आदालते दाखिल हओया आपीलेर मजुवात ओ ताहार जओयाव प्रभृति कागजसकल गत मारच मासेर ३१ तारिखेर ए आदालतेर तृतीय हाकिमेर विस्तिर्म्म[2] रोवकारि सम्वलित पडागेल। यथा वोध हइल ये मुद्दाआलेहे, एइ क्षणकार आपीलाण्ट, एइ विषयेर आपत्ति राखे ये उभयेर पूर्व्व पुरुष मृत वांवु नरसिंहनारायणसिंहेर कनिष्ठ भ्राता वावु फतेनारायणसिंहेर स्त्री मुसम्मात रामकोडरेर सालिसि शास्त्रानुसारे सिद्ध ओ जारि हओनेर योग्य नहे। अतएव ओ एवं जिला ओ कोर्टेर पण्डितगणेर दाखिल करा व्यवस्थासकल ओ एइ हप्टे

---

१. मन्नादि०—व्यप०। २. विस्तीर्ण्ण—इति साधीयान् पाठः।

ये एकथा लस्रोन वटे ऐ विषयेर सम्मन्धे शास्त्रेर आज्ञासकल ज्ञात हस्रोन उचित हइया ए मकद्दमार सम्पर्कें चूडन्त हुकुम छादर हस्रोनेर पूर्व्व हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितगणके अर्पण करा जाय—ये निचेर सस्रोयालसकलेर जवाव दुइ दिवसेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेण।

प्रथम सस्रोयाल—जिला वारानश चलित शास्त्रानुसारे स्त्रिलोकेर सालिसी सिद्ध वटे कि ना ?

द्वितीय सस्रोयाल—यद्यपि दुइ व्यक्ति, नैकट्य कुटुम्व, उभयेर विरोध ओ आपत्ति निष्पत्त्येर जन्ये, याहा उहादिगेर मध्ये थाके, आपन वंशेर एक स्त्रीलोक्के, ये दुइ व्यक्तिर विस्वासी हय, आपनारदिगेर अभिप्राये सालिष नियुक्त करिया थाके, ओ ऐ स्त्रीलोक निष्पत्ती करिया देय। तवे एमत स्त्रीलोकेर सालिसी शास्त्रेर आज्ञासकलेर मते सिद्ध ओ ताहार फयसला जारि हस्रोनेर योग्य हइवेक कि ना ? इति।

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणपञ्चमाधिपतिश्रीयुतमान्तकिहेनरीटरम्वलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयापरैलमासीयपञ्चदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तन्मासीयषोडशदिने चतुर्थप्रहरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

मिताक्षरावीरमित्रोदयग्रन्थानुसारेण स्त्रीकृतव्यवहारनिर्णयोऽसिद्ध एव। विवादचिन्तामणिविवादचन्द्रनारदस्मृत्याद्यनुसारेणापन्निवारणार्थं स्त्रीकृतोऽपि व्यवहारनिर्णयः सिद्ध्यति।

अत्र प्रमाणम्—

बलोप(१)धिविनिर्वृत्तान्व्यवहारान्निवर्तयेत्।
स्त्रीनक्तमन्तरागारबहिःशत्रुकृतांस्तथा॥

---

१. असर्यं०—व्यप०।

इति मिताक्षरा(पृ० १४३)व्यवहारचिन्तामणिधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।३१)॥ १॥

स्त्रीषु रात्रौ[1] बहिर्ग्रामादन्तर्वेश्मन्यरातिषु ।
व्यवहारः कृतोऽप्येषु पुनः कर्तव्यतामियात् ॥

इत्यादि वीरमित्रोदयव्यवहारचिन्तामणिग्रन्थधृतनारदवचनम्(नामसं० १,३७) ॥ २ ॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।
विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्र(पृ० १४७)नारदस्मृत्यादिधृतनारदवचनम्(नामसं० २।२२) ॥ ३ ॥

आपत्प्रतीकारार्थं स्त्रीकृतमपि प्रमाणमेव,अनापदीत्यभिधानात् —इति विवादचन्द्रग्रन्थलिखनम् (पृ० १४७) ॥ ४ ॥

अनापदीत्यनेनापत्प्रतीकारार्थं स्त्रीकृतान्यपि प्रमाणान्येवेत्युक्तम्—इति व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि द्वयोः सन्निहितसम्बन्धिनोर्विरोधस्यापत्तेश्च कस्याश्चिन्निष्पत्त्यर्थं[1] स्ववंशसम्बन्धिनी एका काचित् स्त्री, या तदुभयोर्विश्वस्ता[2], ज्येष्ठा, श्रेष्ठा च, स्वस्वाभिप्रायेण स्वसम्बन्धिविवादनिर्णयकर्तृत्वेन द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां नियुक्ता सती सैव स्त्री तद्विवादनिर्णयं कृतवती स्यात्तदैवंविधविवादनिर्णयो मिताक्षरा[3]वीरमित्रोदयग्रन्थानुसारेण सिद्धो भवितुं तत्कृतजयपत्रं चापिप्रचलितं भवितुं नार्हति, व्यवहारमाधवग्रन्थानुसारेण च तन्निर्णयः सिद्धो भवितुं तत्प्रमाणभूतं तज्जयपत्रं च प्रचलितं भवितुमर्हति, प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां तदधिकारस्य तस्यै दत्तत्वेन तद्विवादनिष्पत्तेस्तदधीनत्वात् "यदि च तत्समये तया स्त्रिया यदि विवादनिर्णयो न भविष्यति तदा अस्माकं महत्पापं[4] भविष्यति"—इति ज्ञात्वा द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां विश्वस्ता

१. निष्पत्त्यर्थं—व्यप० । २. °तदुभयोविश्वस्तो°—व्यप० ।
३. °मितक्षराक्षा°—व्यप० । ४. महदापविष्य°—व्यप० ।

ज्येष्ठा श्रेष्ठा सा स्त्री तदापन्निवारणाय[1] विवादनिर्णायकत्वेन नियुक्ता तदा तत्स्वीकृतविवादनिर्णयो व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रनारदस्मृत्याद्यनुसारेण सिद्धो भवितुं तत्प्रमाणभूतं तत्कृतजयपत्रं च प्रचलितं भवितुमर्हति–इति सारणदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रव्यव-हारमाधवनारदस्मृत्यनुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणान्युपरिलिखितानि सर्व्वाण्येव।

गुरुः स्वामी कुटुम्बी च पिता ज्येष्ठः पितामहः।
विवादानर्थ[2] पश्येयुः स्वाधीने विषये नृणाम्।।–इति व्यवहारमाधव-(पृ० २४) ग्रन्थधृतव्यासवचनञ्चेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—०—

नम्बर २७८९

७२—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर ४ माह माइ सन १८२९ इं मतावक २३ माह वैशाख सन १२३६ वाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरटथरलेनसिलि साहेवेर वैठके।

मुसम्मातदुलादेइ ओ सोनोसिंह — आपिलाण्टान्
क्षेमाजितराय ओ किर्त्तिराय — रष्पाडण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल लाला आउधलाल, ओ रष्पाडण्टानेर उकिल मुनशी दादार वक्स हाजिर आसिल। ए मकद्दमा पूर्व्वे एइ सनेर आपरेल मासेर २७ ओ २८ ओ २९ तारिख सकले रोवकार हइया, ओ जिलार आदालतेर समुदय कागज १ नम्बर हइते तथाकार फयशला पर्य्यन्त ओ प्रविनसन कोर्टेर कागजसकल फयश-

१. ०न्निवारक विवादनिर्णयकत्वे—व्यप०। २. विवादानपि—धर्मकोषः, पृ० ६४।

ला सहित ओ ए आदालतेर समस्त कागज ओ देमाजितराय प्रभृतिर नामिक सेक मछाहेर आलि प्रभृतिर मकद्दमा जिलार आदालतेर समस्त कागज ओ कोर्टेर कागज १० लम्बर पर्य्यन्त पडागिया, दिवा अवसान प्रयुक्त स्थकित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइया ऐ मकद्दमा वावत कोर्टेर वाकी कागज दृष्टे आसिल। तत् परे रष्पाडएटेर उकिल इं १८२१ शालेर जुन मासेर २८ तारिखेर लिखित जिला वेहारेर आदालतेर एक किता फयशलार नकल इं १८२५ शालेर माइ मासेर २५ तारिखेर लिखित आजिमावादेर प्रविनसन कोर्टेर एक किता फयशलार नकल ओ इं १८२७ शालेर सेतम्वर मासेर ६ ओ १३ तारिखेर लिखित ऐ प्रविनसन कोर्टेर दुइ किता रोवकारिर नकल ओ फशलि ११९९ सालेर रमजानेर १५ तारिखेर लिखित धर्म्मनारायणेर लिखा एक किता सराकतनामा ओ इं १७९४ शालेर लवम्वर मासेर २० तारिखेर लिखित सैयद महम्मद, ओ सैयद होसेन आलि ओ सैयद रोस्तम आलि ओ सैयद आलि आमजद-मुद्दइगणेर उकिल सैयद केरामत होसेनेर लिखा एक किता राजिनामार नकल १२ टाका मूल्येर फेहरस्तेर द्वाराय लम्वरे दाखिल करिल, पडागेल। यथा ए मकद्दमार चुडन्त हुकम सादर हओनेर पूर्व्व एइ आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित वोध हइल, अतएव हुकम हइल ये मकद्दमार कागज सहित एइ रोवकारिर नकल पण्डितके समर्पण करा जाय। उचित ये पण्डित मौ······प मकद्दमार समस्त कागजेर अनुमोदने निचेर लिखित दुइ सओयालेर जवाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

प्रथम सओयाल—यद्यपि विरोधीय वस्तु वण्टक हइयाथाके, ऐ अवस्थाय मुसम्मात दुलारदेइ आपिलाण्ट आपन जीवद्दशापर्य्यन्त केवल भरण-पोषण पाइवेक, किम्वा आपन पतिर त्यक्तहिस्याय दखिलकार थाकिया ताहार उपस्वत्वे भोगवान थाकिवेक ओ ताहा दानेर क्षमता राखिवेक कि ना इति।

द्वितीय सओयाल—विरोधीय वस्तु अवष्टक थाकने मुसम्मात सजकुरा प्रथम सओयालेर विस्तिर्ण सत्व-सकल हइते कोन स्वत्वेर स्वत्वाधिकारि वटे इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरलेनसिलीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमैमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यत्तन्मासीयषष्ठदिने यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि विवादास्पदीभूतं वस्तु विभक्तमभूत्तदा दुलारदेइनाम्नी एतद्धर्म्माधिकरणार्थिनी स्वजीवनपर्य्यन्तं पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्वपतित्यक्तविभक्तधनांशे आयत्तत्वं सम्पाद्य तदुपस्वत्वे भोगवती स्थास्यति । एवं तद्वस्तुनो आवश्यकादृष्टार्थं विना दानक्षमता तस्या न स्थास्यति, यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽप्यावश्यकादृष्टार्थं विना तद्धनस्य दानकरणक्षमता नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

तस्मादपुत्रस्य स्वर्यातस्या[१]*संसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकलमेव गृह्णातीतिस्थितम्*—इति मिताक्षरा(पृ० २२१)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी गृह्णीयादित्येद्वचनजातं विभक्तस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।
नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥

इति—वीरमित्रोदयादि (विमि० ख० पृ० ६२८) ग्रन्थधृतमहाभारतवचनम् (१३।४७।२४) ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

---

१. व्यालस्य—व्यप० ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतं धनमविभक्तं चेत्तदैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनी दुलारदेइ-नाम्नी प्रथमप्रश्नलिखितस्वत्वसमुदायान्तर्गतकेवलं यावज्जीवं भरणपोषण-प्राप्तिरूपप्रथमप्रकारोपयुक्तस्वत्वाधिकारिणी भवति, प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विवा-दास्पदीभूतधनस्य विभागानवगमात्—इति वेहारदेशप्रचलितमिताक्षरावीर-मित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वर्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयादि-(वीमि० ख० पृ० ६५४)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनं (कास्मृ० ९२२) चेति ।१।

१८ मै सन हाल, दो प्रहर बाद दाखिल किया—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० १७९३

७३—रोवकारी मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ६ माह माइ सन १८२९ इं० मतावक २५ माह वैशाख सन १२३६ वाङ्गला रोज वुघवार ऐ आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत मान्तेगिओ हेनरि टरम्वल साहेवेर बैठके ।

गोवर्द्धनलाल— आपिलाण्ट

मोहनलाल ओ मृत सोहनलालेर उत्तराधिकारि गङ्गाप्रसाद—

रेष्पाडण्टान

आपिलाण्टेर उकिल मुनशी दादार वकस ओ रेष्पाडण्टा-नेर मध्ये मोहनलाल रेषपाडण्टेर उकिल लाला आउधलाल हाजिर आसिल। अद्य ए मकद्दमा तरतिव[1] लम्वर मते आमार

---

1 तबनिव—व्यप० ।

निकट रोवकार हइया इं १८२८ सालेर मारच मासेर ३१ तारिखेर लिखित ए आदालतेर परिसिप्टेर उत्तरे एइ सणेर आपरेल-मासेर १६ तारिखेर लिखित जिला रामगडेर जज्साहेवेर[1] पाठानो-विवरण ताहार समभिव्याहारीय[2] रोवकारि प्रभृति कागजातसकल सहित लम्बरे पौहुछिया पडागेल। यथा वेचुसिंह ओ द्वितीय वेचुसिंह सात्तिगण, ओ गङ्गाप्रसादेर पिता मोहनलाल ओ भ्राता जोगललालेर एजाहारे ओ रेष्पाडण्टगणेर मध्ये एक रेष्पाडण्ट मृत सोहनलालेर स्त्री मुसम्मात घोपार दरखास्ते ऐ मृत व्यक्ति गङ्गाप्रसादके पोष्यपुत्र लओन साव्यस्थ हइल, अतएव हुकुम हइल जे मृत रेष्पाडण्टेर स्थाने गङ्गाप्रसादेर नाम लेखा जाय। ताहाओ लेखागेल, ओ गङ्गाप्रसाद ऐ मृत व्यक्तिर उत्तराधिकारि साव्यस्थ हओनेओ स्वयं किम्वा उकिलेर द्वाराय ए अदालते हाजिर हय नाइ, अतएव ऐ व्यक्तिर सम्बन्धे ए मकद्दमार तजविज एकसपार्टि प्रकारे कराजाय। किन्तु प्रकाश हय ये जद्यपि अन्यकेह मृत सोहनलालेर उत्तराधिकारि ओ गङ्गाप्रसादेर पोष्यपुत्रता मिथ्या हओनेर दावि करे। एइ हुकुम ताहारे दावि ओ स्वत्वेर तजविजेर निषेधीय हइवेकना। ततपरे प्रविनसन कोठ दाखिल हओया लालिसि आरजि प्रभृति कागजसकल तथाकार फयसला पर्य्यन्त ए आदालते दाखिल हइया आपिलेर मजुवात ओ ताहार जवाव पडागेल। जानागेल जे ए मकद्दमार तजविज सास्त्रे सम्पर्क राखे। अतएव ए मकद्दमार सम्मन्धे चूड(।)न्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे सास्त्रे(र) आज्ञासकल ज्ञात हओनार्थे व्यवस्था लओन उचित वोध हइया हुकुम हइल ये ए मकद्दमा अद्य स्थकित थाके, ओ एइ रोवकारिर नकल ७० लम्बरेर इं १८१९ सालेर जानओरि मासेर १७ तारिखेर लिखित हेवानामा[3] दस्तावेज सहित ए आदालतेर पण्डितके समार्पन कराजाय, जे पश्चिम देशेर, जाहाते रामगड जिला थाकिवेक, चलित शास्त्रानुसारेनिचेर

१ साहेवेर—व्यप०। २. समम्यारीय—व्यप०। ३. हेरानामा—व्यप०।

लिखित सत्रोयालसकलेर जवावे एक सप्त(I)ह मध्ये व्यवस्था लिखिया दाखिल करेन।

प्रथम सञोयाल—यद्यपि हिन्दु जाति हइते एक व्यक्ति आपन कृत स्थावर वस्तुसकल आपन पुत्रगण हइते एक पुत्रके दान करिया, दान गृहीताके ताहार दखल देओयाय। अतएव ऐ दान गृहीतार अन्य भ्रातागण थाकनेओ ताहार स्वत्वे ऐ दान सिद्धि हइवेक कि ना, ओ दातार मृत्युर पर आपन आपन अंश पाओनेर जन्ये अन्य भ्रातागणेर दावि अर्शं कि ना ?

द्वितीय सञोयाल—यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दुर पाच पुत्र, ओ ताहारद्विगेर मध्ये ये पुत्र भ्रातागण हइते कनिष्ठ छिल अन्ध थाके, ओ ऐ व्यक्ति आपन कृत अस्थावर वस्तुसकल चार पुत्रके, याहारा अन्ध नहे, सुस्थ स्वरिर वटेन, दिया आपन कृत स्थावर वस्तु, जाहा मूल्येर द्वाराय चारि पुत्रेर एक २ पुत्रेर अस्थावर वस्तुर अंश हइते तुल्यकिम्वा नून थाके, अन्ध पुत्रके आपन विशय उपज्जन करण हइते अक्षम थाकन दृष्टे दान करिया थाके, तवे ऐ दान एमत पुत्रेर स्वत्वे सिद्धि ओ यथार्थ हइवेक कि ना ?

तृतीय सञोयाल—चण्डाल १ वागदि २ साहा ३ सुँडी ४ काँओरा ५ धोपा ६ ओ डोम ७—एइ कय व्यक्तिर सुकृतिपत्रेर द्वाराय शपथ हय कि ना इति।

सञोयाल सुप्रीम कोर्टादालतिका मेघनाटन साहेवका हुकुम से यवाव देना होगा इति।

नकलयवाव

प्रश्नपत्रलिखितजातीयानां शास्त्रानुसारेण स्वीकृतिपत्रद्वारा शपथो भवितुं न शक्नोति प्रमाणाभावादिति—

एतद्धर्म्माधिकरणपञ्चमाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरम्वलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमेमासीयषष्ठदिवसलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति-

रूपपत्रं यत्तन्मासीयनवमदिने यामद्वयानन्तरं (मया) प्राप्तं तदवलोक्य एवं तत्समर्पितदानपत्रञ्च विविच्य यादृशश्चोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्येकः कश्चित् हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वोपार्जितं सर्व्वमेव स्थावरं स्वपुत्राणां मध्ये एकस्मै पुत्राय दत्त्वा दानग्रहीतुस्तदुपरि आयत्तत्वं सम्पादितवान् स्यात्तत्र तद्दानं यदि पित्रा सर्व्वपुत्रानुमत्या कृतं तदा तद्दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तरेषु विद्यमानेष्वपि[1] तदर्थं तद्दानं सिद्धं भवितुं शक्नोति, एवं दातुर्म्मरणानन्तरं दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तराणां स्वयोग्यांशप्रातीच्छा न सम्भवति । यदा च पित्रा तद्दानं सर्व्वपुत्रानुमत्या न कृतं तदा तद्दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तरेषु सत्सु तदर्थं तद्दानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, एवं दातुर्म्मरणानन्तरं दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तराणां स्वस्वयोग्यांशप्राप्त्यर्थं तत्प्रातीच्छा सम्भवत्येव, यतः सर्व्वपुत्रानुमतिं विना पितुः स्वार्जितस्थावरस्यापि दानकरणक्षमताया अभावेन न तत्कृतदानेन तेषां तत्र स्वत्वविच्छेदाभावात् । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितदानपत्रेण तद्दाने दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तराणामनुमतेरनवगमाच्च ।

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव—इति मिताक्षरा(पृ० २००)वीरमित्रोदय[2](ख० पृ० ५३२)व्यवहारमाधव(पृ० ३३२) व्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्ज्जितम् ।
असम्भूय सुतान् सर्व्वान् न दानं न च विक्रयः ॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्तिं तेऽपि हि कांक्षन्ति न दानं न च विक्रयः ॥—इति उपरिलिखितग्रन्थधृतव्यास(मिता० पृ० २००)वचनद्वयञ्चेति ॥ २ ॥

---

१. विद्यमाणे०—व्यप० ।

२. स्थावरादौ तु स्वार्जिते पित्रादिपरम्पराप्राप्ते पुत्रादिपारतन्त्र्यं तुल्यमेवेति पाठः वीमि० ख ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्येकस्य कस्यचित् हिन्दुजातीयस्य पञ्चपुत्राः, एतेषां मध्ये यः सर्व्वेभ्यो भ्रातृभ्यः कनिष्ठ आसीत् सोऽन्धः, एवं स एव व्यक्तिविशेषः स्वोपार्जितमस्थावरं सर्व्वं वस्तु अन्धभिन्नेभ्यः स्वस्थशरीरेभ्यश्चतुर्भ्यः[१] पुत्रेभ्योऽदत्त्वा स्वोपार्जितं स्थावरं वस्तु यन्मूल्यद्वारा चतुर्णां पुत्राणाम् एकैकपुत्रांशास्थावरधनांशात् तुल्यं न्यूनं वा भवति, तदन्धपुत्राय तद्दृष्ट्वा दत्तवान्। अयं च स्वयं धनोपार्ज्जनाक्षमः। तत्रापि सर्व्वपुत्रानुमत्या दत्तञ्चेत् सिद्ध्यति, नो चेन्न सिद्ध्यति, इति पश्चिमदेशान्तर्गतरामगडजिलाख्यावान्तरदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणानि त्रीण्युपरिलिखितान्येव ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७४। रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख २७ माह माइ सन १८२९ इं मतावक १५ माह ज्यैष्ठ सन १२३६ वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम नसष्टर साहेवेर वैठके।

हलधरमुखोपाध्याय	आपिलाण्ट
अन्नपूर्नादेव्या प्रभृति	रष्पाडण्टान्

आपिलाण्टेर उकिल मुनशी सोहेन आलि ओ स्वयं आपिलाण्ट हाजिर आसिल, ओ रष्पाडण्टानेर उकिल सदासुक पण्डित काहिलिर······आपत्ये हाजिर हइलो ना। एइ मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे ए मकर्द्दमा आमार वैठके उपस्थित

१. स्वस्थशरीरिभ्यश्च०—व्यप०।

हइया नालिषि आरजि प्रभृति प्रविनसन कोर्टेर कागचसकल ६६ लम्वर पर्य्यन्त पडागिया स्थकित छिल,अद्य पुनराय उपस्थित हइया प्रविणसन कोर्टेर वाकि कागजसकल तथाकार फयशला पर्य्यन्त ओ आपिलेर मजुवात ओ ताहार जवाव पडागेल। समस्त कागजेर अनुमोदने यद्यपि रष्पाडएटानेर मध्ये एक रष्पाडएट अन्नपूर्नादेव्यार लिखा एजाहार आपिलेएटेर दरपेष करा इं १८(?)७ शालेर जुन मासेर १२ तारिखेर लिखित २६ लम्वरेर दानपत्र निदर्शनेर सत्यतार प्रति पूर्ण सन्देह हइतेछे। किन्तु चूडान्त हुकुम (सादर) हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डित हइते नीचेर विस्तीर्ण हेतुसकलेर विवेचना कारण उचित वोध हइया हुकुम हइल ये प्रविनसन कोटेर नथिर १ नम्वरेर वाङ्गला १२११ शालेर आश्विन मासेर १ तारिखेर लिखित मृत वलराम भट्टाचार्य्येर लिखा मोक्तारनामा ओ च्छाव्विस २६ लम्वरेर दानपत्र एइ रोवकारिर नकल सहित ए आदालतेर पण्डितके समर्पण करा जाय, ये ऐ निदर्शनसकलेर उपर अनुमोदन करिया, वाङ्गालार चलित शास्त्रानुसारे नीचेर लिखित प्रश्न सकलेर जवाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

प्रथम सओयाल—मुसम्मात अन्नपूर्नार दान सिद्ध वटे कि ना, ओ द्वितीय व्यक्तिगणेर अंशेर सम्मन्धे ताहा असिद्ध हओने अन्नपूर्णादेव्यार स्वयं अंश वावत सिद्ध हइवेक कि ना। ओ यद्यपि सिद्ध हय, उहार कि परिमाण अंश हइवेक।

द्वितीय (सओयाल)—वलरामभट्टाचार्य्येर लिखा मोक्तारनामा मते मुद्दाआलेहेके किछु अंश अर्शे कि ना,ओ वलरामभट्टाचार्य्यके ताहार आपन एक स्त्री उहार मृत पुत्रेर स्त्री ओ उहार मृत पुत्रेर स्त्री ओ अविवाहिता एक कन्या थाकनेओ मुद्दाआलेहेके अंश देओनेर क्षमता छिल किना इति।

१. लिखित शास्त्रानु साकलेर—व्यप०।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतालियमनष्टरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयसप्तविंशतिदिवसीयमेइमासीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितकोर्टापिलाख्यधर्म्माधिकरणनिविष्टपत्रान्तर्गतोनविंशत्यङ्काङ्कितवाङ्गलाब्दैकादशाधिकद्वादशशताब्दीयाश्विनमासीयप्रथमदिवसीयमृतबलरामभट्टाचार्यलिखितमोक्तारनामासंज्ञकपत्रमेवं षड्विंशत्यङ्काङ्कितदानपत्रञ्च यज्जुनमासीयपञ्चदशदिने सार्द्धघटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

अन्नपूर्णाकृतदानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतः प्रभुसमर्पितमोक्तारनामासंज्ञकपत्रदानपत्राभ्यां विवादास्पदीभूतधनस्यान्नपूर्णादेव्याः पत्युर्बलरामभट्टाचार्य्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्योत्तराधिकारित्वेन तत्सङ्क्रान्तत्वेनावगमेन, तस्याश्च स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा तद्धने दानानधिकारात्। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितदानपत्रेण स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च दानावगमात्, पत्न्यां विद्यमानायामन्येषामर्थाद् दुहित्रादीनां केषाञ्चिदपि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धनेऽधिकारप्रतिपादकवङ्गदेशचलितशास्त्राभावेनांशविवेचनाया[1] अनावश्यकत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः—इति दायभागादि (दाभा पृ० १७१) ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६२१)। १।

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलःस्मृतः।
नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिवित्तात् कथञ्चन॥—इति भारतादपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम्॥२॥

---

१ धनेकारकार०—व्यप०।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति (पृ० २१६, २।१३५) ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

बलरामभट्टाचार्य्यलिखितमोक्तारनामासंज्ञकपत्रानुसारेण प्रत्यर्थिनः किञ्चिदप्यंशत्वेन प्राप्तुं नार्हन्ति, तत्पत्रेण प्रत्यर्थिनामंशप्राप्तिप्रयोजकस्य तत्स्वत्वोत्पत्तिप्रयोजकस्य प्रत्यर्थिन उद्दिश्य बलरामभट्टाचार्य्यकृतस्य दानादेरनवगमात्। बलरामभट्टाचार्यस्य पत्न्यामेकस्यां पुत्रवध्वामदत्तायां कन्यायामेकस्यां विद्यमानायामपि स्वातन्त्र्याद्बाधकाभावाच्च प्रत्यर्थिनोऽशदानक्षमता आसीत्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायरहस्यश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

जुनमासस्य षड्विंशतिदिने शुक्रवासरे घटिकाधिकयामद्वये दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—————

नं० २४९६

७५—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ३ माह जुन शन १८२९ इं मतावक २२ माह ज्यैष्ठ शन १२३६ वाङ्गला रोज वुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम नसष्टर साहेवेर वैठके—

आकवरराय प्रभृति मोकलेशगण आपिलाण्टान्

यदुनाथसिंह ओ साहेवसिंह प्रभृति रेष्पाडण्टान्

रेष्पाडण्टानेर मध्ये रामप्रतापसिंह एक रेष्पाडण्ट हाजिर आसिया ए मकद्दमार सानि तजविजेर प्रार्थनाय एक किता सओयाल वारानशेर पाठशालार ओ कलिकातार कालेजेर पण्डितगणेर दुइ किता व्यवस्था ओ ताहार एक किता इङ्गरेजि तरजमा ओ १७५७ लम्वरेर मकद्दमा ओ ए मकद्दमा वावत इं १८२३

सालेर माइ मासेर १० (तारिखेर) ओ एइ सनेर फेवरुओरि मासेर २४ तारिखसकलेर लिखित आखेरि दुइ किता रोवकारिर नकल सम्वलित लं दाखिल करिल। एइ सनेर फेवरुओरि मासेर २४ तारिखेर हओया ए आदालतेर फयशला सहित पडागेल। यथा रष्पाडएटाणेर सओयालेर उपर चूडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वं १७५७ लम्वरेर मकद्दमा वावत इंरेजि १८२१ शालेर फेवरओरि मासेर २ तारिखेर हओया रोवकारिर लिखित सओयालेर जवावे ए आदालतेर एइक्षणकार पण्डित हइते व्यवस्था लओन ओ इहा अवगत हओन ये ऐ लम्वरेर सरेर नथिते ३३ लम्वरे ग्रथित ए आदालतेर पूर्व्वेर पण्डितदिगेर व्यवस्था शास्त्रानुसारे यथार्थ वटे कि ना उचित हइल। अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि ओ इं १८२१ शालेर फेव्रुओरि मासेर २ तारिखेर हओया ए आदालतेर रोवकारिर लिखित सओयाल ओ ताहार जवावे ए आदालतेर पूर्व्वेर पण्डितगणेर व्यवस्था ओ रष्पाडएटेर दाखिल करा दुइ किता व्यवस्था सहित ए आदालतेर एइक्षणकार पण्डितके समर्पण करा जाय, जे इं १८२१ शालेर फेवरओरि मासेर २ तारिखेर हओया रोवकारिर लिखित सओयालेर ओ समर्पित व्यवस्था सकर मजमुनसकलेर अनुमोदने चलित शास्त्रानुसारे व्यवस्था एइ कैफियत सम्वलित, ये पूर्व्वेर पण्डितगणेर व्यवस्था शास्त्रेर आज्ञानुसारे कि, ताहार किछु विपर्य्यय वटे, लिखिया दुइ सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति।

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतालियमनशष्टरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजुनमासीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गताज्ञापितं तद्विचारपत्रम् एवमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयफेवर(अरि)मासीयद्वितीयदिवसीयैतद्धर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तदुत्तरञ्चैतद्धर्म्माधिकरणनियुक्ताभ्यां पूर्व्वपण्डिताभ्यां लिखितं व्यवस्थापत्र-

मेवमेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनिविष्टं व्यवस्थाद्वयञ्च यत्तन्मासीयैकादशदिने घटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि कस्यचित्[1] साधारणसराजकरस्थावरस्य कतिचिदंशिनः क्रयकर्त्ता-रश्च, येषामुपरि तत्स्थावरसम्बन्धिराजकरदानसंरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वभारः स्थितस्ते, तावदप्राप्तव्यवहारेष्वंश्यन्तरेषु विद्यमानेष्वेवं तेषामनुमतिं विना[2] राजकरदानार्थं कस्यचिन्निकटे तस्यैव सराजकरस्थावरस्य विक्रयं कृतवन्तः स्युस्तदा स विक्रयः सिद्धो भवितुं प्रचलितुञ्च न शक्नोति, प्रभुकृतप्रश्नलि-खि(ता)यामवस्थायां सत्यां साधारणस्थावरधने सर्व्वेषामंशिनामनुमतिं विना एकस्य द्वयोर्बहूनां[3] वा स्वस्वांशयोग्यस्य समुदायस्य वा दानाधमनवि-क्रयानधिकाराद्, इदानीं वेहारदेशप्रचलितग्रन्थेषु प्रभुसमर्पितवाराणस्यधिकर-णकपाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रे कलकत्ताख्यमहानगरसंबन्धि[4]-पाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रे चाप्राप्तव्यवहारेषु अंश्यन्तरेषु सत्सु प्राप्तव्यवहारैरंशिभिः साधारणसराजकरस्थावरसमुदायस्य[5] स्वस्वांशयोग्यस्य वा राजकरदानार्थं विक्रयः कर्त्तुं शक्यते, तैश्च कृतो विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोतीत्येतद्विधायकस्य प्रमाणस्यालिखितत्वाच्च, शास्त्रानुसारेण बालकाना-मर्थादप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य सर्व्वतोभावेन राज्ञो रक्षकत्वेन राजकरदानार्थ-मप्राप्तव्यवहाराणां विक्रयस्य भवितुमशक्यत्वाच्च[6]—इति वेहारदेशचलित-मनुमिताक्षरामिताक्षराटीकासुबोधिनीवीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयू-खव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

एवञ्चैतद्धर्म्माधिकरणनियुक्ताभ्यां पूर्व्वपण्डिताभ्यां पूर्व्वं या व्यव-स्था दत्ता सा वेहारदेशचलितशास्त्रसिद्धैव । नहि तस्यां व्यवस्थायां कश्चित्तद्-व्यतिक्रमोप्यस्ति—इति अगस्तिमासस्य चतुर्थदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

---

१. कस्यचित—व्यप० ।
२. तेषामतिमतिम्विधना०—व्यप० ।
३. बहूणां—व्यप० ।
४. संवधि—व्यप० ।
५. स्थावरस्य—व्यप० ।
६. °मशक्तत्वाच्च०—व्यप० ।

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरस्य समस्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।
नैकः कुर्य्यात्क्रयं दानं[1] परस्परमतं विना ॥—इति वीरमित्रोदयादि-(वी० मि० ख० पृ० ५८६) ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥ १ ॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्य[1]गत्वादेकस्यानीश्वरत्वात्सर्वाभ्यनुज्ञा अवश्यं कार्य्या, विभक्तेषु तूत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्याय सर्वाभ्यनुज्ञा, न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन । अतो विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्धयत्येव—इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

अत्रापि त्वविभक्तानुज्ञामन्तरेण दानाद्यसिद्धिः साधारणत्वाद्[3] द्रव्यस्य । विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि दानादिकमुपपद्यते—इत्यादि मिताक्षराटीकासुबोधिनी (पृ० ६११) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

बालदायादिकं रिक्थं[4] तावद्राजानुपालयेत्[5] ।
यावत्स स्यात् समावृत्तो यावच्चातीतशैशवः ॥ —इति मनु(८।२७)-वचनञ्चेति ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० २५५३

७६—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ४ माह आगस्त सन १८२९ इं मतावक २१ माह श्रावण सन १२३६ वाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत वावरट हालडन राटरि साहेवेर वैठके ॥—

---

१. मध्यस्थत्वात्—मिता० । २. दायं—व्यप० ।
३. साध्यकत्वात्—व्यप० । ४. ऋकथम्—व्यप० ।
५. राज्ञा—व्यप० ।

जयरामधामि स्वयं ओ छिं प्रकारे मृत वखेरि-
धामिर स्त्री दिपु धामिनिर अप्राप्तव्यवहार पुत्र

रामचन्द्रधामिर पक्षे— आपिलाण्ट—

सुशानधामि— रष्पाडण्ट—

आपिलाण्ट स्वयं ओ रष्पाडण्टेर उकिल मौलवि गोलाम एजदानि हाजिर आसिल। एइ सनेर जुन मासेर ३० तारिखेर हओया जेला वेहारेर जजसाहेवेर एक किता रिटरण, ताहार सम्वलित रोवकारि प्रभृति पौंचिया अद्य एइ मकर्द्दमार नथि सम्वलित रोवकार हइया जिलार आदालतेर कागजसकल १ लम्वर हइते तथाकार फयशला पर्य्यन्त ओ प्रविनशन कोर्टेर कागजात फयशला सहित ओ ए आदालतेर समस्त कागज इंराजि १८२७ शालेर आगस्त मासेर २५ तारिखेर हओया एइ आदालतेर पूर्व्वेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कोरटनि इषमिट साहेवेर ओ इं० १८२८ शालेर १५ सेतम्वर मासेर लिखित ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरलेन सिली साहेवेर रायसकलेर सम्वलित पडागेल। ये हेतुक ए मकद्दमाते स्त्रीलोकेर पक्ष हइते पोष्यपुत्र राखा जाओन विशये जेलार आदालतेर नथिर गृथित व्यवस्थासकल ओ ए आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्थार मध्ये एइ प्रकार अनैक्य हइयाछे ये जिला वेहारेर आदालतेर नथिर व्यवस्था लेखा आछे ये स्त्रीलोके स्वामिर विना अनुमतिते पोष्यपुत्र राखनेर क्षमता राखे ओ ए आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्थाय लेखागियाछे ये स्त्रीलोक स्वामीर अनुमति व्यतीत पोष्यपुत्र राखार क्षमता[1] हवेक ना। अतएव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर[2] पूर्व्व वेहारदेशेर चलित शास्त्र ओ धामिदिगेर वंसेर[3] डाँडा ओ व्यवहार ये यद्यपि कोन स्त्रीलोके पतिर अनुमति व्यतीत पोष्यपुत्र राखिया थाके, ऐ पोष्यपुत्र शास्त्रानुसारे उहारदिगेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार दृष्टे सिद्ध हइ-

१ क्षमता ना हवेक—व्यप०। २ हओरेर—व्यप०। ३ वंसेव डाँडा—व्यप०।

याछे कि ना—अवगत हओन आवश्यक हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये ऐ जिलार जजसाहेव साक्रिम ऐ जिलार तिन चारि जन प्रधान पण्डितगणेर द्वाराय तथाकार चलित शास्त्रेर आज्ञा सकल ओ धामिगणेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार उपरेर लिखित प्रकारे तहक्किकात् करिया ये साव्यस्त हय ताहार-कैफीयत लओयाजिमा कागजसकलेर सम्बलित, ओ यद्यपि कखन ओ धामिरदिगेर पोष्यपुत्र विषय याहा पतिर अनुसति व्यतीत राखियाछे, अन्य कोन एक मकर्द्दमा ऐ जिलार आदालते उपस्थित ओ निष्पत्ति हइयाथाके सेइ मकर्द्दमार आशल रोयदाद-ओ पाठाएन एक मास मेयादे परिसिष्टेर लेफाफा जेला वेहारेर जजसाहेवेर निकट पाठान याय, ओ एइ रोवकारिर द्वितीय नकल एइ कारण ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओ-याला कराजाय ये ऐ पण्डित एइ कथासकलेर जवाव ये एइ मक-र्द्दमा वावत ताहान दाखिल करा व्यवस्था ओ जेला वेहारेर आदा-लतेर नथिर गृथित व्यवस्थासकले ये ये ग्रन्थेर नामसकल लेखा आछे, ऐ सकल व्यवस्था ऐ सकल ग्रन्थेर वचनसकलेर मते वटे कि ना, एइ रोवकारिर नकल पाओनेर तारिख हइते एक सप्ताह मध्ये दखिल करेण इति ।

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावरटहालडनराटरीसाहेवधर्म्माधिक-रणलिखितैतदब्दीयागस्तिमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रं यत्तन्मासीयचतुर्विंशतिदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य याद्दशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

अस्मल्लिखितव्यवस्थाया वेहारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणीय-व्यवस्थाभिः सह विरोधे इदमेव कारणम्—दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तक-दीधितिदत्तकदर्पणदत्तककौमुदीवीरमित्रोदयव्यवहारमयूखादिदत्तकविषयक-ग्रन्थमात्र एव 'न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वाऽन्यत्रानुज्ञानाद् भर्त्तुः' इति स्त्रियाभर्त्त्रनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधकवशिष्ठवचनस्य लिखि-तत्वात् कस्मिंश्चिदपि वेहारदेशचलितग्रन्थे कस्यचिदपि मुनेरेताद्दशं वचनं

लिखितं नास्ति तद्वचनानुसारेण स्त्रियाभर्त्रनुमतिं विनापि दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारो भवेत्। यद्विषयस्य मुनिवचनेन ग्रन्थमात्र एव निषेधो लिखितः[१] स विषयः शास्त्रानुसारेण सिद्धो भवितुं न शक्नोति। एवं जिलाख्यधर्म्माधिकरणीयपत्रजातान्तर्गताश्चतस्रो व्यवस्थास्तासां प्रतिरूपाणि,[२] एवञ्च मिलित्वा सप्तव्यवस्थासु च बहोरभट्टलिखितपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितव्यवस्थायां द्वात्रिंशदङ्काङ्कितव्यवस्थायां च भर्त्रनुमतिं विनापि स्त्रिया दत्तकत्वेन गृहीतः पुत्रस्त्यक्तुं न शक्यत इति यत्तेन पण्डितेन लिखितं तन्न शास्त्रसम्मतं भवति। यस्मिन् विषये यस्याः स्त्रियाः सामर्थ्यं नास्ति तया कृतः स विषयो निवृत्तो भवितुं न शक्नोत्यर्थात् सिद्धो भवितुं शक्नोतीत्येतद्विधायकशास्त्राभावात्। एवं याज्ञवल्क्यस्य मुनेरिदं वचनं "यदि काचित् स्त्री पत्यनुमतिं विना कस्यचिद्दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणं कृतवती[३] स्यात्तदा सा स्त्री स्वयं तं दत्तकपुत्रं त्यक्तुं न शक्नोति। अनुमत्यभावेन यदि यस्याः पतिस्त्यक्तुमिच्छति तदा स दत्तकपुत्रस्त्यक्तो भवितुं शक्नोति"–इति पञ्चविंशत्यङ्काङ्कितव्यवस्थायां यत्तेन पण्डितेन लिखितं तदतीवनिम्मूलं याज्ञवल्क्यस्य मुनेरन्यस्य कस्यचिद्वा मुनेरेतादृशार्थप्रतिपादकवचनाभावात्।

अथ च पञ्चविंशत्यङ्काङ्कितलीलाधरपण्डितलिखितव्यवस्थायां पूर्व्वं यत् प्रभुप्रश्नस्योत्तरे पतिपुत्रविहीना[४] स्त्री रीत्यनुसारेण शास्त्राज्ञानुसारेण[५] (च) दत्तकपुत्रं ग्रहीतुं[६] शक्नोति स[७] सिद्धो भवति इति यल्लिखितं तत्र शास्त्राज्ञाया अयमर्थो विवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थेषु लिखितः—स्त्री पत्युरनुमत्या, यदि पतिर्नास्ति तदा ज्ञात्यनुमत्या, दत्तकपुत्रं कर्त्तुं शक्नोति स सिद्धो भवति-इति यत्तेन पण्डितेन लिखितं तदतीवाशुद्धं मिथिलादेशचलितविवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थेष्वपि "न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद् वा" इत्यत्र "अनुज्ञानाद्भर्त्तुः" इति स्त्रिया भर्त्रनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधकवशिष्ठवचनस्य लिखितत्वात्। पत्युरभावे ज्ञात्य-

१. लिखित—व्यप०। २. प्रतिरूप—व्यप०। ३. कृतं—व्यप०।
४ विहिना—व्यप०। ५. ०ज्ञानानु०—व्यप०। ६. गृहीतुं—व्यप।
७. सः—व्यप०।

नुमत्या स्त्रिया दत्तकपुत्रो ग्राह्य इत्यस्यालिखितत्वाद् वरं तदन्तर्गतमिथिला-देशचलितविवादचिन्तामणिग्रन्थे दत्ताप्रदानिकप्रकरणे "विशेषेण भर्त्तर्नुमतौ सत्यामपि स्त्रिया दत्तकपुत्रग्रहणे नाधिकारस्तदङ्गव्याहृतिहोमबाधादितिवर्त्तु-लार्थः" इति लिखितत्वाच्च। एवं जिलाख्यधर्म्माधिकरणीयपत्रजातान्तर्गत-व्यवस्थासु यद्यद्ग्रन्थानां नामानि लिखितानि सन्ति ताः सर्व्वा एव व्यव-स्थास्तत्तद्ग्रन्थधृतमुनिवचनानां सम्मता न भवन्ति; यतस्तत्तद्ग्रन्थेषु सर्व्वेष्वे-वान्येषु ग्रन्थजातेष्वपि विशेषेण "न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वाऽन्यत्रा-नुज्ञानाद् भर्त्तुः" इति स्त्रिया भर्त्रनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधक-वशिष्ठवचनस्य लिखितत्वात्। कस्मिंश्चिदपि वेहारदेशचलितग्रन्थे वेहार-देशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणीयव्यवस्थासु वा कस्यचिदपि मुनेरेता-दृशं वचनं लिखितं नास्ति यद्वचनानुसारेण स्त्रिया भर्त्रनुमतिं विनापि दत्त-कपुत्रग्रहणाधिकारो भवेदिति।

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वाऽन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः—इतिदत्तक-मीमांसा(पृ० ७)दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३)दत्तकदीधितिदत्तकदर्पण(पृ० १ क, पं० १२)दत्तककौमुदी(पृ० १ क, पं० १२)वीरमित्रोदयव्यवहारमयूख-विवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥ १ ॥

अत्र[1] *च निमित्तं भर्त्रनुज्ञानं, ततश्च विधवाया भर्त्तभावेनानुज्ञानास-म्भवान्निर्निमित्तकप्रतिप्रसवाप्रवृत्त्या प्रापकान्तराभावाच्च नाधिकारः इति सर्व्ववादिसम्प्रतिपन्नमेव*—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् (पृ० १२-१३) ॥ २ ॥

भर्त्रनुज्ञानेऽपि स्त्रिया न ग्रहणाधिकारः, तदङ्गव्याहृतिहोमबाधा-दिति वर्त्तुलार्थः। ननु 'अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः' इत्यविशेषेण श्रवणाद् भर्त्तर्नुज्ञादानवत् ग्रहणेऽपि स्त्र्यधिकारसिद्धौ तदङ्गविद्याप्रयुक्तिरपि तस्याः कल्पते, इति चेत्, सत्यं सहत्वेन तस्या अधिकार इष्टिवन्न पृथक्त्वेन बाधसा-पेक्ष्यविध्यापत्तेः—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

१ तत्र—दत्तमी०।

शीतम्बरमासस्योनविंशतिदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७७—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १८ माह आगस्त शन १८२६ इं मतावक ३ माह भाद्र शन १२३६ वाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत रावरट हालडन राटरी साहेवेर वैठके ।

सिओवकसमिछर वनाम देविप्रसादपाडे प्रभृति

साएलेर उकिल मुनशी होसेन आलि हाजिर आसिल । परगणे घेसुवार मौजे पलाण एडिहार अर्द्धेकेर उपर आमल ओ दखल देयाइया पाओनेर मकर्ह्मार तृगुण सदर जमा ९०३ टाकार शंख्याय खास आपिल मञ्जुरिर प्रार्थनाय ५० टाकार मूल्येर इष्टम्प कागजेर उपर सायेलेर सओयाल, याहा ऐ उकिलेर नामिक उकालतनामा इं १८२७ सालेर माइ मासेर १५ तारिखेर लिखित वारानशेर प्रविनशन कोटेर फयशलार नकल सहित, याहा ऐ सनेर अक्तुवर मासेर २९ तारिखे दुइ टाकार मूल्येर फेहरस्त द्वाराय दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आसिल । हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एखने आपिलेर सम्पकिय कागजसकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओला करा जायये ऐ पण्डित ऐ कागजसकलेर ए दौहित्र मातामहेर दत्त कता सिद्धि हओन सम्वलित कोट आपिलेर पण्डितेर व्यवस्था ये ताहार खोलासा मजमुन कोटेर फयसलार लिखा आछे, अनुमोदने ऐ ऐ व्यवस्थार सिद्धता ओ असिद्धता लिखेन, ओ पण्डितेर व्यवस्था दाखिल हओन पर्य्यन्त सैयद रहमत आलिर खास आपिलेर

सओयाल मञ्जुर ओ नामञ्जुर हओनेर चूडन्त हुकुम सादर हओन स्थकित थाके इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्।

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतराबरटहालहनराटरिसाहेबधर्म्माधिकरणलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यत्तदब्दीयदिसम्बरमासीयाष्टाविंशतिदिवसीयप्रभ्वाज्ञान्त-[1]रानुसारेण तदब्दीयतन्मासीयत्रिंशद्दिने घटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

दौहित्रो मातामहस्य दत्तकः सिद्धो भवतीत्येतदर्थप्रतिपादककोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखिता व्यवस्था, यस्याः तात्पर्यार्थः कोर्टापीलाख्ये धर्म्माधिकरणीयजयपत्रे लिखितः, सा व्यवस्था शास्त्रसिद्धा न भवति। प्रभुसमर्पितपत्रजातैरर्थिप्रत्यर्थिनो[2]र्द्वयोरेव ब्राह्मणजातीयत्वनिश्चयेन ब्राह्मणजातौ दौहित्रो मातामहस्य दत्तको भवितुं न शक्नोतीति शास्त्रे निषेधाद्—इति वाराणस्यादिप्रचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकदर्पणदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

दौहित्रो भागिनेयश्च शूद्रैश्च[3] क्रियते सुतः।
ब्राह्मणादित्रये नास्ति भागिनेयः सुतः क्वचित्॥ इति दत्तकमीमांसा-(पृ० ५६)दत्तकचन्द्रिका (पृ० ७)दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थधृतशौनकवचनम् ॥ १ ॥

तथा च भागिनेयपदं दौहित्रस्याप्युपलक्षणमेव—इति दत्तकमीमांसा-(पृ० ६६–६७)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

---

१. प्रभोराज्ञा०—व्यप०। २. प्रत्यर्थिनौ०—व्यप०। ३. शूद्राश्च—व्यप०।

*तथापि भागिनेयदौहित्रवर्ज्जं विरुद्धसम्बन्धापत्त्या पुत्रत्वबुद्ध्यनर्ह-भ्रातृपितृव्यमातुलवर्ज्जं च त्रयाणां वर्णानां स्वसमानवर्ण एव—इति दत्तक-*दीधितिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥—

त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयोनविंशतिदिने घटिकात्रया-धिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० २८२२

७८—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १६ माह सितम्बर सन १८२९ इं मतावक १ माह आश्विन सन १२३६ वाङ्गला रोज वुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरलेन[1] सिली साहेवेर वैठके।

आनन्दनाथराय आप्राप्तव्यवहारेर उछिगन भवानीप्रसाद-चौधुरि ओ विश्वनाथ चङ्गदार—

आपीलाण्टान—

राणी जगदम्वा— रष्पाडण्ट—

आपिलाण्टगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि, रष्पाडण्टेर उकिल सदासुख पण्डित हाजिर आसिल। ए मकद्दमा पूर्व्वे एइ मासेर ७ ओ ८ ओ ९ ओ १० ओ १५ तारिखसकले रोवकार ओ प्रविनशन कोटेर कागजसकल १ लम्बर हइते तथाकार फयशला पर्य्यन्त ए आदालतेर आरजी मजुवात ओ जवाव पडागिया दिवा अवसान प्रयुक्त स्थकित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया ए आदालतेर वाकी समस्त कागज एइ शनेर आगस्त मासेर १५ तारिखेर हओया ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तेगिओ हेनरि

---

१. थरलेल—व्यप०।

टरम्वल साहेवेर राय संवलित पडागेल। तत्परे रष्पाडण्टेर उकिल चारि टाका मूल्येर फेहरेस्तेर द्वाराय विश्वनाथशर्म्मा चङ्गदार ओ भैरवनाथशर्म्मार जवावेर १ किता नकल ओ वाङ्गला अक्षर ओ मजमुणेर एक किता दस्तावेजेर नकल लम्वरे दाखिल करिल, दृष्टे आसिल। यथा चूडन्त हुकुम सादर हओनेर जवाव लओया उचित हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ मकद्दमा वावत दुइ आदालतेर समुदय कागच एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके समर्पण क(र)ा जाय ये ऐ पण्डित समस्त कागजेर दृष्टे ओ अनुमोदने एइ विषयेर सओयालेर जवाव ये यद्यपि विरोधीय ग्रामसकल देवसेवा वावत ओ ताहार उपर सरकारेर खाजाना मकरर थाके, ऐ प्रकारे देवतार सेवाइत व्यक्तिके ऐ सकल ग्राम विक्रय करार क्षमता आछे कि ना, ओ वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे एमत विक्रय सिद्ध ओ यथार्थ वटे कि ना, एइ रोवकारिर नकल पाओनेर तारिख हइते पञ्च दिवसेर मध्ये लिखिया दाखिल करेण इति।

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरलेनसिलीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयसितम्वरमासीयषोडशदिवसलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यत्तन्मासीयाष्टादशदिने यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं, तदवलोक्य विविच्य च यादृशवोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि विवादास्पदीभूताः सर्व्वे ग्रामा देवतानां सराजका भवन्ति, तदा देवतायाः सेवाइतव्यक्तिशब्दवाच्यस्य व्यक्तिविशेषस्य तेषामेव ग्रामाणां विक्रयकरणे क्षमता नास्ति, एवमेतादृशविक्रयो वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थो भवितुं सिद्धो भवितुञ्च न शक्नोति। प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विवादास्पदीभूताः सर्व्वे ग्रामा एतादृशविक्रयात् पूर्व्वमेतदर्थमेव नियमिता स्थिताः—यथा एतेषां ग्रामाणां राजग्राह्यकरं राज्ञे दत्त्वा अवशिष्टैरेतद्ग्रामोत्पन्नैर्देवतानां

सेवा भविष्यतीत्यवगमादेतादृशवृत्तान्ते सति देवतायाः सेवाइतशब्दवाच्यस्य तत्र संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वं विना राजग्राह्यकरस्य राज्ञे समर्पणञ्च विना किञ्चिदपि स्वत्वाभावात् तत्तद्ग्रामाणां दानविक्रयकरणक्षमताया दूरापास्तत्वाद्, अथ च शास्त्रानुसारेणास्वामिकृतविक्रयस्य दानस्य वा राज्ञा परावर्त्तनीयत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागवि[1]वादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः।

स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥—इति मनुवचनम् (११।२६) ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं[2] धनं देवस्वम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लूकभट्टलिखनम् (पृ० ४३०) ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम् (८।१९९) ॥ ३ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादार्णवसेतु (पृ० १३४)विवादभङ्गार्णवादि(१ विवाभ पृ० ३१७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन-(कास्मृ० पृ० ७६)वचनञ्चेति ॥ ४ ॥

सितम्बरमासस्य पञ्चविंशतिदिने मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

परमात्मने नमः—

महामहिमश्रीयुक्तगवनरमेण्टसंस्कृतपाठशालास्थ

पण्डितवर्गेषु—

---

१. मुक्तवली—व्यप०। २. ०देवतातदर्थं०—व्यप०।

७९—कोनो व्यक्ति आपन सकर तालुकेर मध्ये कोन कोन ग्राम देवसेवार्थ देवतार नामे नियमित करिया, किञ्चित्काल देवसेवादि करिया, कनिष्ठ पुत्रके ऐ देवसेवार्थ सकर स्थावर अर्पण पूर्व्वक देवसेवार्थ अनुमति करिया परलोकगामी हयेन। परे ऐ कनिष्ठ पुत्र बहुकाल देवसेवक रूपे प्रसिद्ध थाकिया, ऐ स्थावरेर करग्रहण राजस्वदान देवसेवादि करिया, ऐ स्थावर देवनाम सम्वलित आपन नामे दस्तखत करिया विक्रय करेन। ऐ विक्रय सिद्ध हय कि ना। इहार व्यवस्था गौडदेश प्रचलित शास्त्रानुसारे लिखिते आज्ञा हय इति।

देवनाम्ना नियमितस्य सकरस्थावरस्य तद्देवसेवकेन देवनामसंवलितस्व[१]-नामाङ्कितपत्रं कृत्वा कृतो विक्रयः सिद्ध एव। किन्त्वियान् विशेषः—विक्रेतुर्यथा करग्रहणराजस्वप्रदानादिसम्पादकं लोकसिद्धं स्वत्वं तत्रासीत् क्रेतुरपि तादृशमेव लौकिकं स्वत्वं तत्र जातं देवस्वत्वस्य विजातीयक्रेतृस्वत्वं प्रत्यबाधकत्वात्, स्वकरोपादानाय राजकृतविक्रये देवस्वत्वस्य क्रेतृस्वत्वाबाधकत्ववत् स्वपितृकृतदानाद् विक्रेतृकनिष्ठपुत्रस्वत्ववद् विक्रयमकृत्वा तस्मिन् मृते तदुत्तराधिकारिस्वत्ववच्च—इति गौडदेशप्रचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकामिताक्षराग्रन्थविदाम्परामर्शः ॥ ० ॥

राज्यान्तराधिकारिणः सकाशान्नृपतिना क्रीतेऽपि राज्यान्तरादौ विक्रेतृस्वत्वसजातीयकरग्रहणोपयोगिस्वत्वमेव तत्रास्य जायते, न तु दायप्रतिगृहीतभूम्यादिवृत्तिस्वत्वसजातीयस्वत्वं तत्रत्यानां तत्र तत्र भूम्यादौ तथाविधस्वत्वसत्त्वेन तद्विरोधात् तादृशस्वत्वोत्पत्त्यसम्भवात् समानजातीययोः स्वत्वयोर्व्विरोधादिति[२]। तथा स्वत्वधारावारणाय सजातीयस्वत्वं प्रतिस्वत्वं विरोधीति सजातीयमितिकरणात् क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्व्वर्त्तिनि तादृशस्थावरादौ क्रेत्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादे न व्यभिचार इति च दायभागटीकाकृच्छ्रीकृष्णतर्कालङ्कारलिखनम्। अनेन यस्मिन् द्रव्ये यस्य यादृशं स्वत्वं तेन तद्द्रव्यविक्रये क्रेतुस्तस्मिन् द्रव्ये तादृशमेव[३] स्वत्वं जायते इति स्फुटमव-

१. सम्वलित—व्यप०। २. स्वात्वयोः—व्यप०। ३. ०मेवमेव—व्यप०।

गम्यते। उच्यते–लौकिकमेव स्वत्वं लौकिकार्थक्रियासाधनत्वाद् व्रीह्यादिवद्, अपि च प्रत्यन्तवासिनामप्यदृष्टशास्त्रव्यवहाराणां स्वस्वव्यवहारो दृश्यते, क्रयविक्रयादिदर्शनात्। किञ्च नियतोपायकं स्वत्वं लोकसिद्धमेवेति न्यायविदो मन्यन्ते इत्यादि मिताक्षरालिखनम् (पृ० १९७)। एतेन स्वत्वस्य लौकिकत्वात् (देव)सेवकस्यापि तत्र स्थावरे विजातीयस्वत्वमस्त्येव। अन्यथा उदासीना अपि तत्स्थावरस्य करग्रहणादिकं देवसेवाञ्च कुर्य्युरिति।

परमात्मने नमः—

श्रीरामचन्द्रशर्म्मणाम्।

श्रीहरिः शरणम्।

नवद्वीपस्थ—

महामहिमश्रीयुक्तपण्डितवर्गेषु[1]—

८०–तत्तद्देवसेवार्थं तत्तद्देवनाम्ना नियमितस्य सकरस्थावरस्य बहुकालकृत-तत्तद्देवसेवकेन तत्तद्देवतानामसंवलितस्वनामाङ्कितपत्रं कृत्वा कृतो विक्रयः सिद्ध एव। तत्र विक्रेतृनिरूपितकरग्रहणोपयोगिराजस्वदानसम्पादक-लौकिकस्वत्वसजातीयक्रेतृस्वत्वोत्पत्तौ बाधकाभावात्स[2]जातीयस्वत्वं प्रति स्वसजातीयस्वत्वप्रतिबन्धकतया देवस्वत्वादेर्व्विजातीयतया तादृशस्वत्वम्प्रत्य बाधकत्वाद्—इति विदुषाम्परामर्शः ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

गौडदेशचलितदायभागटीकाकृच्छ्रीकृष्णतर्कालङ्कारभट्टाचार्य्यलिखनम्—राज्यान्तराधिकारिणः सकाशान्नृपतिना[3] क्रीतेऽपि राज्यान्तरादौ विक्रेतृस्वत्वसजातीयकरग्रहणोपयोगि स्वत्वमेव तत्रास्य जायते, न तु दायप्रतिगृहीतभूम्यादिवृत्तिस्वत्वसजातीयस्वत्वं तत्रत्यानां, तत्र तत्र भूम्यादौ तथाविधस्वत्वसत्त्वेन तद्विरोधात् तादृशस्वत्वोत्पत्त्यसम्भवात् समानजातीययोः स्वत्वयोर्व्विरोधादिति (दाभाटी० पृ०१०), तथा स्वत्व-

---

१ यथा ७९ अङ्किते व्यवस्थापत्रे तथा इहाप्यासीदित्यनुमीयते।

२ ०स्वजातीय०—व्यप०। ३ सकाशान्नृप०—व्यप०।

धारा(वा)रणाय सजातीयस्वत्वं प्रति स्वत्वं विरोधीति सजातीयमिति करणात्। क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्व्वर्त्तिनि तादृशस्थावरादौ क्रेत्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादेऽपि न व्यभिचारः (दाभाटी० पृ० ६) इति च ॥०॥

श्रीहरिः— श्रीजगदीशो जयति
श्रीरामलोचनशर्म्मणाम् श्रीकालिकाप्रसादशर्म्मणाम्
श्रीहरिः— श्रीहरिः—
श्रीराममोहनशर्म्मणाम् श्रीरघुनाथशर्म्मणाम्
श्रीहरिः शरणम् श्रीहरिः—
श्रीरामचन्द्रशर्म्मणाम् श्रीकाशीनाथशर्म्मणाम्
श्रीहरिः— श्रीहरिः—
श्रीरामशर्म्मणाम् श्रीभोलानाथशर्म्मणाम्
श्रीहरिः— श्रीहरिः—
श्रीकालीप्रसन्नशर्म्मणाम् श्रीराधानाथशर्म्मणाम्
श्रीहरिः— श्रीहरिः—
श्रीकालीदासशर्म्मणाम् श्रीहरिश्चन्द्रशर्म्मणाम्

श्रीरामः—

श्रीरामसुन्दरशर्म्मणाम्

———

विद्यामन्दिरस्थपण्डितवर्गेषु—

८१—कश्चन स्वाधिकृतसकरग्रामान्तर्वर्त्तिकियद्ग्रामान् देवसेवार्थं नियम्य, देवतानाम्ना विख्याप्य, कियत्कालं देवसेवादिकं कृत्वा कनिष्ठपुत्रं तद्देवसेवार्थं तद्ग्रामाधिकारित्वेन संस्थाप्य, लोकान्तरं गतः। अनन्तरं तत्कनिष्ठपुत्रो देवसेवकत्वेन प्रसिद्धिमवलम्ब्य, तद्ग्रामसम्बन्धिकरग्रहण-

नियमितराजस्वप्रदानदेवसेवादिकं बहुकालं कृत्वा, तद्ग्रामान् देवनामसंवलितस्वनामाङ्कितपत्रेण विक्रीतवान्। तत्कृततद्विक्रयः स्वस्वत्वास्पदद्रव्यसम्बन्धितया सिद्ध्यत्येवेति विदुषां परामर्शः—

अत्र प्रमाणम्—

अत्रोच्यते। "लौकिकमेव स्वत्वं लौकिकार्थक्रियासाधनत्वात् व्रीह्यादिवत्" इत्युपक्रम्य, "अपि च प्रत्यन्तवासिनामप्यदृष्टशास्त्रव्यवहाराणां स्वत्वव्यवहारो दृश्यते, क्रयविक्रयादिदर्शनात्। किञ्च नियतोपायकं स्वत्वं लोकसिद्धमेवेतिन्यायविदो मन्यन्ते" इत्यादि मिताक्षराकृद्भिः (पृ०१९७) स्वत्वस्य लौकिकत्वेन स्थिरीकृतत्वात्, लोके देवसेवार्थनियमितसकरस्थावरस्य स्वस्वत्वसंग्रहीतृस्वत्वजनकदानादिदर्शनात्[1] च स्वस्वत्वध्वंसपरस्वत्वोत्पादनरूपदानान्यथानुपपत्त्या, सकरभूमिदेवसेवार्थनियामकदेवसेवकस्यापि तत्र स्वत्वमिति स्थितम्। स्वत्वस्य च यथेष्टविनियोगप्रयोजकत्वेन द्रव्ये स्वकीयं यादृशं स्वत्वं तादृशस्वत्वजनकदेवसेवककर्तृकविक्रयसिद्धिर्निराबाधेति युक्तिः। तादृशस्थावरस्य करग्रहणराजस्वप्रदानदेवसेवादिप्रयोजकतादृशविक्रेतृस्वत्वसंक्रेतृस्वत्वोत्पत्तौ[2] तु "पराजितनृपतिराज्यान्तर्वर्तितत्तत्पुरुषीयक्रमागतस्थावरादौ जयादिना जेतुर्नृपतेः करग्रहणोपयोगिस्वत्वोत्पादे तथा क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्वर्त्तिनि तादृशस्थावरादौ क्रेत्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादेऽपि न व्यभिचारः"-इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारलिखनं (पृ० ६) तुल्यस्थानीयत्वेन प्रमाणम् ॥०॥

श्रीहरिर्ज्जयति—
श्रीरामरत्नशर्म्मणाम्

श्रीहरिः—
श्रीपार्व्वतीचरणशर्म्मणाम्

श्रीगुरुर्ज्जयति—
श्रीहरनाथशर्म्मणाम्

श्रीहरिः—
श्रीजगन्मोहनशर्म्मणाम्

श्रीहरिः—
श्रीनाथुरामशर्म्मणाम्

श्रीहरिः—
श्रीयोगध्यानमिश्राणाम्

---

१. ०समगृहीतृ०—व्यप०। २. ०समक्रेतृ०—व्यप०।

श्रीहरिःशरणम्— श्रीशङ्करोजयति—
श्रीलक्ष्मीनारायणशर्म्मणाम् श्रीशम्भुचन्द्रशर्म्मणाम्
श्रीहरिः— श्रीविष्णुर्जयति—
श्रीजयगोपालशर्म्मणाम् श्रीनिमाइचन्द्रशर्म्मणाम्
श्रीहरिः— श्रीहरिः—
श्रीहरिप्रसादशर्म्मणाम् श्रीगंगाधरशर्म्मणाम्

श्रीहरिर्ज्जयति—
श्रीपीताम्बरशर्म्मणाम्

८२—प्रथमप्रश्न—

यद्यपि कोन व्यक्ति जामि सम्पत्त[1] कोन वस्तु ओ एक स्त्री ओ दुइ कन्या राखिया मृत्यु हय। परे ऐ स्त्री ऐ दुइ कन्यार प्रतिपालन ओ आविश्वक खरचेर निमित्ते ऐ जमिर मध्ये किछु विक्रय करिया मृत्यु हय। परे ऐ दुइ कन्यार अवशिष्ट जमि विभाग करिया लइया एक कन्या आपन अंश आपन भग्निके विक्रय करे। आर ऐ भग्निर तिन सन्तान। ताहार मध्ये एक वय-प्राप्त, आर दुइ नावालग। एमत स्थले ऐ वेक्त्या आपन नावालग पुत्रदेर भरण-पोषण ओ आवश्यक खरचेर जन्य आपन वयप्राप्त ओ नावालग ओ स्वामी सकले एकान्ने थाकिया स्वामि ओ वयप्राप्त पुत्रेर सन्मतिते ऐ दुइ पुत्र नावालग थाकिते उपरेर लिखित वस्तु वन्धक किम्वा विक्रय करिले शास्त्र सम्मंत सिद्ध हइते पारे कि ना इति।

द्वितीय प्रश्न—

कोन नावालग व्यक्तिदिगेर पिता ओ माता थाकिते नावालग वेक्तिदेर मालिक शास्त्र सम्मत अन्य केह हइते पारे कि ना।

---

१. समपक्ष—साधीयान् पाठः।

एइ दुइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर वचन ओ तस्य भाशा इहार पार्श्वे लिखिवेन इति। शन १८२९ तारिख १० जुन मो शन १२३६ साल वां तां २९ ज्यैष्ठ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

यवावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयलवम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोमवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्‌व्यक्तिविशेषः कांचिद्[1] भूमिमेकां पत्नीं द्वे कन्ये च संरक्ष्य मृतः स्यात्,तदनन्तरं सैव मृतस्य पत्नी तयोरेव द्वयोः कन्ययोः[3] प्रतिपालनार्थं स्वकीयावश्यकव्ययार्थं च तस्या भूमेः किञ्चिद्विक्रयं कृत्वा मृता स्यात्, तदनन्तरं ते एव द्वे कन्येऽवशिष्टां भूमिं विभज्य,गृहीत्वा तयोर्म्मध्ये एका कन्या, प्रभुसमर्पितविचारपत्रावगतो यस्तदीयावश्यकव्ययस्तदर्थं स्वांशं स्वभगिन्या निकटे विक्रीतवती स्यात् , एवं क्रयकर्त्र्यां भगिन्यास्त्रयः सन्तानाः[2], तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो द्वावप्राप्तव्यवहारौ, एतादृशवृत्तान्ते सति सैव क्रयकर्त्री अप्राप्तव्यवहारेण स्वपुत्रेणाप्राप्तव्यवहाराभ्यां स्वपुत्राभ्यां च स्वपतिना च सहैकान्ने स्थिता सती,स्वपत्यनुमत्या प्राप्तव्यवहारस्वपुत्रानुमत्या च सतोर्द्वयोरप्राप्तव्यवहारयोः स्वपुत्रयोरुपरिलिखितवस्तुनो बन्धकं विक्रयं वा कृतवती स्यात्, तदा स बन्धको विक्रयो वा शास्त्रतः सिद्धो भवितुं शक्नोति । यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि पत्न्या स्वभरणपोषणार्थं स्वकीयावश्यकव्ययाथ च तद्धने दानाधमनविक्रयाधिकारः तथा पत्न्यभावे दुहितुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि

---

१. काचिद्—व्यप० । २. सत्ताना०—व्यप० । ३. कन्ययो—व्यप० ।

तस्या अप्यावश्यकव्ययार्थं स्वभरणपोषणार्थं च तद्धने दानाधमनविक्रयाधिकारोऽस्त्येव; सत्यां पुत्रवत्यां दुहितरि दौहित्रस्यानधिकारादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ।।—इति दायभागा(दाभा० पृ० १७२)दिग्रन्थधृतभारतवचनम् (मभा०—१३।४७।२४) ।। १ ।।

नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिवित्तात्कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम् ।।२।।

अतएव वर्त्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इति दायभाग(पृ० १७३)ग्रन्थलिखम् ।। ३ ।।

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० १८४)ग्रन्थलिखनम् ।। ४ ।।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाभा० पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५)वचनम् ।। ५ ।।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जीवति पितरि जीवन्त्यां च मातरि अप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य प्रश्नपत्रलिखितमालिकशब्दवाच्योऽर्थात् संरक्षणकर्त्ता, अन्यः कश्चिच्छास्त्रतो भवितुं नार्हति, अप्राप्तव्यवहाराणां पित्र्यपेक्षया मात्र्यपेक्षया चान्येषां सुहृत्तरत्वाभावात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायरहस्यविवादभङ्गार्णवव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अभावे बीजिनो माता तदभावे तु पूर्व्वजः ।—इति व्यवहारतत्त्वादि(पृ० ६५)ग्रन्थधृतनारद (नासं०-२।३५)वचनम् ।। १ ।।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयनवमदिनसम्बन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

८३—रोवकारि सिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १४ दिशम्बर शन १८२९ इं० मतावक १ माह पौष शन १२३६ बाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तकियू हेनरी टरम्बल साहेवेर वैठके—

कृष्णलोचन प्रभृति आपिलाण्ट

तारामणिदास्या प्रभृति रेष्पाडेण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल सदासुक पण्डित, रेष्पाडेण्टगणेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल हाजिर आसिल। एइ मकर्द्दमा एइ मासेर ९ तारिखे आमार वैठके रोवकार हइया जिलार आदालतेर, ओ प्रविशन कोटेर फयसलासकल ओ इं० १८२७ सालेर जानेओरि मासेर १० ओ १८ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोवकारिसकल ओ खास आपिलेर दरखास्त, याहा मजुवात करार देया जाय, ओ ताहार जवाव ओ ए आदालतेर दाखिल हओया अन्य कागजसकल पडागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया जिला ओ कोर्ट आदालतेर नालिसि आरजि प्रभृति कागजात पडागेल। ये उभयेर पूर्व्वाधिकारि आदित्यराम चारि पुत्र राखिया मरे। प्रथम रामदुलाल ओ राधामोहन ओ गोविन्दप्रसादेर पिता कृष्णप्रसाद; द्वितीय ए मकर्द्दमार आसल मुद्दाआलेहेगण गङ्गाधरनाग ओ गदाधरनागेर पूर्व्वाधिकारि देविप्रसाद; तृतीय मुद्दइगणेर पूर्व्वाधिकारि कालिकाप्रसाद; चतुर्थ शम्भुनाथः ओ चारि भ्रातागण आपनारदिगेर पूर्व्वाधिकारिर मृत्युर पर पृथक हइया पितृत्यक्त वस्तु कण्टक[1] करिया दखिल हइलेन। ये कालिन कालिकाप्रसाद राधाकान्त नामे एक पुत्र ओ अन्नपूर्णा नामे एक स्त्री, ओ मुद्दइगणेर माता राजेश्वरी नामे एक कन्या राखिया मरे। ताहार परे ऐ राधाकान्तह अप्राप्तव्यवहार समये मरिल। ओ ताहार मृत्युर पर रामदुलाल प्रभृति कालिकाप्रसादेर उच्छि-

१. वण्टक—इति साधीयान्पाठः।

यत ओ ऐ राधाकान्तेर हेवार एजहारे मृत कालिकाप्रसादेर समस्त पैतृक ओ कृत[1] वस्तुसकलेर उपर दखिल हइलेन। तत्कालिन-प्रथमत गङ्गाधरनाग प्रभृति मृत कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तुर-मध्ये तृतीय अंशेर दाविते, ओ ताहार परे मृत व्यक्तिर स्त्री मुशाम्मात अन्नपूर्णा ओ कन्या मुशाम्मात राजेश्वरि ऐ मृत व्यक्तिर समुदाय त्यक्त वस्तुते दखल पाओनेर जन्ये आपनादिगेर सत्वेर एजहारे आदालते नालिश करिलेन, ओ इं० १८०६ शालेर दिशम्वर मासेर ३१ तारिखेर जिलार जज साहेवेर तजविजे रामदुला(ल)नाग प्रभृतिर एजहारि हेवा साव्यस्त हओन कारण दुइ मकद्दमार मुदइगणेर दावि डिसमिष हइल, ओ इं० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे अपिलेर आदालते गङ्गाधरनाग प्रभृतिर मकद्दमा सम्वन्धे जिलार फयशला वहाल थकिल, ओ राजेश्वरिर मकद्दमाय आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे एइ साव्यस्थे, ये कालिकाप्रसादेर मृत्युर पर ताहार त्यक्त (धन) उहार-पुत्र राधाकान्तके अर्शे, ओ राधाकान्तेर मृत्युर पर मुदइगण हइते एक जन मुशम्मात राजेश्वरिर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण, कृष्णलोचन प्रभृतिर स्वत्व हइया जिलार फयशला वद्द[2] ओ एइ हुकुमे डिकरि हइल ये राजेश्वरि आपिलाण्ट आपन अप्राप्तव्यवहार पुत्रगणेर स्वत्वे विरोधीय तालुकेर उपर दखल पाय, ओ मुशम्मात अन्नपूर्न्ना राधाकान्तेर त्यक्त वस्तु हइते भरण-पोषण पाइवेक इति। ओ ताहार खास आपिल पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे ए आदालते नामञ्जुर हइल, ओ ए मकद्दमार नालिशेर एइ मूल ज्ञान हइल-ये यत्कालिन मुशाम्मातान् अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तु दखल पाओनेर दाविते नालिश करिलेन। तत्कालिन एइ मकद्दमार मुद्दाआलेहगण गङ्गाधरनाग प्रभृति वाङ्गला १२१३ सालेर २० भाद्र मतावक इं०१८०६ शालेर ४ सेतम्वर मासेर लिखित ८४ लम्वरे गृथित गङ्गाधरनाग प्रभृतिर भग्नि-

१. क्रीत–इति साधीयान् पाठः। २. रद्द–इति साधीयान् पाठः।

पति दुर्गाचरण नामे ऐ मुशम्मातान हइते एइ खोलासा मजमुने एक किता एकरार लेखाइयाछे—ये मकद्दमाय[1] ये परिमान खरच हइवेक तोसरा दिवा, ओ आमरा आदालत हइते डिगरि पाइले कालिकाप्रसादेर त्यक्त हइते आमादिगेर सोल आना स्वत्व हइते ।≈आनार कमेर विक्रय कवाला लिखियादिव, ओ ताहार पर यखन इं० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे आपिल आदालत हइते ऐ राजेश्वरिर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण कृष्णलोचन प्रभृतिर स्वत्वे डिकरि हइल एइ मकद्दमार मुद्दइगणेर माता मुशम्मात राजेश्वरि हइते वाङ्गला १२१६ शालेर १४ पौष मतावक इं० १८२२ सालेर दिशम्वर मासेर २७ तारिखेर लिखित ८५ लम्वरे गृथित विरोधीय रकम वावत कवाला, ओ ऐ तारिखेर लिखित मवलग १५०० टाका निर्व्वन्धे ८६ लम्वरेर रसिद लिखाइया ताहार द्वाराय विरोधीय वस्तुर उपर दखिलकार हइलेन, ओ आपिलाण्टान, अर्थात मुद्दइगण, ऐ छय आना रकमेर उपर दखल पाओनेर जन्ये एइ दलिले गङ्गाधरनाग प्रभृतिर नामे नालिस करियाछे ये उहार-दिगेर माता मुशम्मात राजेश्वरि शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर स्वत्व हस्तान्तर करणेर क्षमता राखित ना, ओ रेष्पाडण्टान ताहार जवावे जाहेर करे ये उहारद्दिगेर माता राजेश्वरि नष्ट उद्धार, अर्थात् उहा-द्दिगेर स्वत्व स्थिर राखन जन्ये ताहा हइते किछु विक्रय करिलेक; अतएव एमत विक्रय शास्त्रानुसारे सिद्धि थाकिवेक इति। ये हेतुक उपरेर लिखितसकल हइते पष्ट आछे ये अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरिर पक्ष हइते कालिकाप्रसादेर त्यक्तेर सम्वन्धे उहाद्दिगेर स्वत्व दृष्टे ओ केवल आदालतेर खरचार जन्ये ८४ लम्वरेर एकराननामा निदर्शन लिखित हइयाछे, ओ ऐ मुशम्मातेर नालिसि मकद्दमाय इं० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखेर लिखित प्रविशन कोटेर डिकरि आपिलाण्टगणेर स्वत्व दृष्टे हइयाछे, ऐ मुशम्मा-तानेर स्वत्वे हय नाइ ओ इहाओ पष्ट आछे ये सरकारेर चलित

१. ये मकद्दमाय ये मकद्दमाय—व्यप० ।

आइनसकल अनुसारे ऐ मुशम्मातानेर मफलसिते नालिस करणेर द्यमता छिल, ओ आदालतेर खरचार निमित्तकओ एवं आपिलाण्टगणेर प्रतिपालनार्थं उहादिगेर गुजराणेर कोनो हेतु ना थाकन प्रयुक्त ८५ लम्बरेर कवालार लिखित मुल्येर टाका देओन विषय ए मकद्दमार मुद्दाआलेहेगणेर एजहार विसिष्ट रूपे प्रतिपन्न नहे। केनना आपिलाण्टगणेर पिता रामलोचन वर्त्तमान थाकने उहादिगेर भरण ओ पोषणेर भार ताहार पर उचित छिल। उहादिगेर माता राजेश्वरिर पर छिलना। अतएव चूडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्व ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल मकद्दमार कागज सम्वलित ए आदालतेर पण्डितके एइ हुकुमे समर्पन कराजाय ये उपरे जे प्रकार लेखागेल मकद्दमार अवस्थार पर अनुमोदन परे एवं ८४ ओ ८५ लम्बरेर एकरारनामा ओ कवाला दस्तावेजात ओ साक्षिगणेर एजहारसकल दृष्टे याहा इं० १८२४ सालेर आगस्त मासेर १० तारिखेर हओया कोटेर हुकुम मते लओया गियाछे, ओ एइ दृष्टे ये कोनओ करार विक्रयेर दस्तावेज लिखित कालिन राजेश्वरिर स्वामी रामलोचन, अर्थात् मुद्दइगणेर पिता, जिवबान् छिल, ओ एवं पूर्व्वेर मकद्दमार विरोधीय वस्तु हरण कारक व्यक्तिर हस्त हइते निकालन जन्ये सरकारेर आइन मते पूर्व्वेर नालिश उपस्थित करणार्थे आदालतेर किछु खरचार आविश्वक[1] छिल नाइहार व्यवस्था एक सप्ताह मध्ये लिखेन—ये ऐ विक्रय वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे सिद्धि वटे कि ना ? इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

यथावद्व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरम्वलसाहेवधर्म्माधिक-

१. आवश्यक—इति साधीयान् पाठः।

रणलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताव्दीयदिशम्वरमा-सीयचतुर्द्दशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवा-दविषयनिविष्टपत्रजातान्तर्गतचतुरशीत्यङ्काङ्कितसंवित्पत्रं[1] पञ्चाशीत्यङ्काङ्कित-विक्रयपत्रं, साक्षिणां साद्धयपत्रजातं च यत्तदव्दीयतन्मासीयत्रयोविंशतितम-दिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति, मृतराधाकान्तत्यक्तधने तत्पितृदौहित्रत्वेनैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनां कृष्णलोचनप्रभृतीनां स्वत्वे, एतद्ध-र्म्माधिकरणाज्ञायां जातायामपि तन्मातृराजेश्वर्य्यास्तद्धनस्वामित्वस्य सर्व्वथैव दूरापास्तत्वेन, तत्कृतैतादृशप्रभुकृतप्रश्नपत्रलिखितविक्रयः सिद्धो न भवति, प्रभुसमर्पितचतुरशीत्यङ्काङ्कितसंवित्पत्रे अन्नपूर्णया[2] राजेश्वर्य्या चेत्येव लिखितं —मदीयैतद्विवादे यावान् व्ययो भविष्यति, स भवता देयः, अस्माभिः षोडशाण-कपरिमितविवादास्पदीभूतसराजकरस्थावरसमुदायात् षडाणकाः स्वस्वत्व-त्यागपूर्व्वकं तुभ्यं दत्ताः। अतएवैतादृशनियमलिखनमेवैतद्विक्रयस्य मूलम्। तत्र च शास्त्रानुसारेणान्नपूर्णायाः राजेश्वर्य्या वा तद्धनस्वामित्वस्याजातत्वेन, धर्म्माधिकरणविचारेणापि तथा पर्य्यवसानेन च, तत्कृततत्संवित्पत्रस्य तन्नियमानाक्रान्तत्वाद्, अस्वामिकृतविक्रयस्य शास्त्रानुसारेण परावर्त्तनीयत्वा-च्च इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यव-स्था ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनु (पृ० २०९) वचनम् ॥ १ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गार्णवादि (१ विवाभ० पृ० ३१७ ख) ग्रन्थधृतकात्यायन (कास्मृ पृ० ७६) वचनञ्चेति ॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

---

१. सम्वित—व्यप०। २. वन्नपूर्णापा—व्यप०।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयपञ्च-मदिने मङ्गलवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० ८ इं शन १८२७

८४—रोवकारि कोट आपिल, एलाका मरसिदाबाद, तारिख ९ माहे जानेओरि, शन १८२९ इं, मताबक २७ माहे शन १२३५ वाङ्गला, रोज शुक्रवार काएममोकाम हाकिम श्रीयुत रावट हेनरि नेंछवट साहेवेर बैठके ।

वदनचन्द्रसिंह मतालके मरशिदाबाद
ओ अप्राप्तव्यवहार
रामनारायणघोषेर पिता
जिवनकृष्णघोष आपिलाण्टान
राधानाथसिंह रष्पाडण्ट

तालुक कमलनयन वाटी प्रभृतिर हिस्याय दखल पाओन..... मवलग १३८ । ८ गण्डा मकद्दमा ।

एइ मकद्दमार मिछिल भिन्न २ तारिखसकले रोवकार हइया ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे स्थकित[1] छिल, अद्य पुनराय आपिलाण्टेर उकिल रामप्रानराय, रष्पाडण्टेर उकिल चैतन्यप्रसादरायेर हाजिरिते ए मकद्दमा उपस्थित हइल । यथा आपिलाण्टगणेर उकिल ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार पर अमत, ओ उचित मत आमारो विश्वास हइल ना । ओ मकद्दमार व्यवस्था एइ ये कृपानाथेर दुइ पत्र, प्रथम मुरलिमजुमदार, द्वितीय

१. स्थकत—व्यप०

भवानीमजुमदार, ओ एक कन्या ओ दौहित्र राखिया मृत्यु हय; ओ मुरलिर अंश ताहार दौहित्र पाइयाछे ओ भवानीमजुमदारेर चारि पुत्र, प्रथम हरगोविन्द, द्वितीय गङ्गाप्रसाद, तृतीय कालीप्रसाद, चतुर्थ रामप्रसाद छिल। ताहार मध्ये गङ्गाप्रसाद निःसन्तान ओ हरगोविन्द नफर नामे आपन एक पुत्र ओ तिन-कन्या राखिया पितार समक्षे मरे। तत्परे भवानीमजुमदारेर मृत्युर पर प्रथम कालीप्रसाद, ताहार पर रामप्रसाद निःसन्तान मरे। तदपरे ऐ नफरो निःसन्तान मरे। तत्परे प्रथम रामप्रसादेर स्त्री, ताहार पर हरगोविन्देर स्त्री मरे। ओ हरगोविन्देर दौहित्रगण वर्त्तमान ओ राधानाथ, ये रामप्रसाद ओ हरगोविन्द प्रभृतीर पितामह कृपानाथेर दौहित्र वटे, हरगोविन्देर दौहित्रगणेर नामे त्यक्त वस्तुर दाविदार हइल। अतएव उपरेर लिखित अवस्थाय त्यक्त वस्तु कोन व्यक्तीके अर्शे-इहार व्यवस्था शदर आदालतेर पण्डित-गण हइते लओन आविश्यक। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल इङ्गरेजी चिठीर मध्ये कुरशीनामा ओ सओयाल सहित सदरेद रेजेष्टर शाहेवेर हुजुरे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय जे साहेव मौसुफ शदरेर पण्डीतगण हइते ऐ सओयालेर जवाव लइया एइ आदालते पाठान, ओ ए मकद्दमा स्थकित थाके इति।

वदनचन्द्रसिंह ओ गयरह	आपिलाण्टा(न)
राधानाथसिंह	रष्पाडण्ट

एइ मकद्दमार विवरण एइ ये कृपानाथ आपन दुइ पुत्र, अर्थात् मुरलिमजुमदार ओ भवानी मजुमदार, आर एक कन्या ओ दौहित्र राखिया मृत्यु हय। मुरलिमजुमदारेर हिस्या ताहार दौहित्रे पाइयाछे, आर भवानीमजुमदार मजकुरेर चारि पुत्र, प्रथम हरगोविन्द, द्वितीय गङ्गाप्रसाद, तृतीय कालीप्रसाद, चतुर्थ रामप्रसाद छिल। ओ चारि जणेर मध्ये गङ्गाप्रसाद निःसन्तान, ओ हरगोविन्द नफर नामे एक पुत्र ओ तिन कन्या राखिया आपन पितार सम्मुखे मृत्यु हय। तदपरे ऐ भवानीमजुमदारेर मृत्युर पर प्रथम

कालीप्रसाद, ताहार पर रामप्रसाद निःसन्तान परलोक हय। तद्परे नफरेर मृत्यु हय। ताहार पर प्रथम रामप्रसादेर स्त्री, तद्परे हरगोविन्देर स्त्री मृत्यु हय, श्रो हरगोविन्देर दौहित्ररा वर्त्तमान आछे। कृपानाथेर दौहित्र, अर्थात् रामप्रसाद श्रो हरगोविन्द श्रो गयरहेर पितामहेर दौहित्र राधानाथ तेय्य वस्तुर दावि हरगोविन्देर दौहित्रद्धिगेर नामे राखे। ए जन्ये शद्रेर पण्डितद्धिगेर निकट शास्त्रानुसारे व्यवस्था एइ विषय लओया आविश्यक ! ये उपरेर प्रकरणानुसारे एइ वस्तु के पाइते पारे। अतएव कुरसिनामा दृष्टे इहार श्रो ए शास्त्रानुसारे लिखेन इति। तारिख ६ जानेओरि। सन १८२९ इं०।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेवं वंशावलीपत्रञ्चावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति गङ्गाप्रसादस्य द्वितीयपुत्रस्य निःसन्तानस्य भवानीमजुमदारे पितरि विद्यमाने सति मृतस्य पितृस्वत्वास्पदीभूतधने स्वत्वानुत्पादात्, तदनन्तरं मृतस्य भवानीमजुमदारस्यांशे जीवति पितरि मृतस्य प्रथमपुत्रस्य हरगोविन्दस्य पुत्रो नफरसंज्ञको भवानीमजुमदारस्य तदानीं विद्यमानौ तृतीयचतुर्थौ द्वौ पुत्रावर्थात् कालीप्रसादरामप्रसादौ च एते त्रय एव समानाधिकारिणो जातास्तत्रापि नफरसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वास्पदीभूततत्पितृयोग्यतृतीयांशे तत्पितुर्हरगोविन्दस्य दौहित्राणामर्थाद् रामनारायणवदनचन्द्रदोलगोविन्दानामधिकारो, यतो नफरसंज्ञके स्वपितृयोग्यतृतीयांशाधिकारिण्यनपत्ये पत्नीमारभ्य पितृपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहिते मृते सति तन्मातुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तद्धने तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारः, तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये प्रभुसमर्पितवंशावलीपत्रेण नफरसंज्ञकस्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तस्य पितृदौहित्रात् पूर्व्वमधिकारिणोऽसत्त्वावगमाद्। अथ च विशिष्टांशद्वये रामप्रसादस्य पितामहकृपानाथदौहित्रस्यार्थाद्राधानाथस्याधिकारो यतो रामप्रसादे भ्रातरि जीवति सति मृतस्य कालीप्रसादस्यांशे भ्रातृत्वेन रामप्रसादस्याधिकारे जाते सति तद्धनं रामप्रसादस्यैव जातम्। अतस्तस्मिन्ननपत्ये मृते सति तत्स्वत्वास्पदीभूत-

यावद्धने अर्थाद् भवानीमजुमदारस्यांशस्य त्रिधा विभक्तस्यांशद्वये रामप्रसाद-स्त्रियाः शास्त्रानुसारेण पतिस्वत्वास्पदीभूतधनाधिकारिण्या नफरसंज्ञके राम-प्रसादभ्रातृपुत्रे मृते सत्यपि जीवन्त्यास्तस्या मरणोत्तरं तद्धने रामप्रसादस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेवाधिकारः, तत्र च तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये प्रभु-समर्पितवंशावलीपत्रेण रामप्रसादस्य पितामहप्रपौत्रपर्य्यन्तस्य पितामह-दौहित्रात् पूर्व्वमधिकारिणोऽसत्त्वावगमाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभाग-श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्था-नुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते॥—इति दायभाग(पृ० १३) श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका,(पृ० १३) विवादभङ्गार्णव (२ विवाभ० पृ० ५ क) विवादार्णवसेत्वादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ १ ॥

यथा पैतामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन् मृते तत्पुत्राणामपि, न तत्र सन्निकर्षविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः—इति दायभाग (पृ० २६) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारी बोद्धव्यः—इति दायभाग (पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता[1] दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभागा-दि(दाभा पृ० १७१)ग्रन्थधृतकात्यायन (कास्मृ० ६२१)वचनम्[2] ॥४॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम् । स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभाग (पृ० १८४) ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । तत्सुतः—इत्यादि दायभागादि-(पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५)वचनम् ॥ ६ ॥

---

१ क्षन्ता—व्यप० । २ चवनम्—व्यप० ।

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्ति-क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तदभावे पुत्रःपितृदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका-(पृ० २१८) रूपग्रन्थलिखनम् ॥ ८ ॥

तदभावे पितामहदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१८) रूपग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ६ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्नः—

८५—यद्यपि कोन स्त्रीलोकेर स्वामी वायुग्रस्त अर्थात् वातुल हय। तत्कालीन ऐ वातुल व्यक्तिर पैतृक वस्तु विक्रयार्थे ऐ व्यक्ति आपन स्त्रीके अनुमति[1] देया, ना देया तुल्य। एमते ऐ स्त्रीलोक आपन श्वशुरेर श्राद्धेर देना परिशोध ओ ऐ वातुल स्वामीर चिकित्सा कारण आपन स्वामीर पैतृक कोन वस्तु ऐ स्वामीर विना अनुमतिते विक्रय करे। ताहा सिद्ध हइते पारे किना। इहार प्रत्युत्तर शास्त्रानुसारे वचन ओ ताहार भाषा एइ प्रश्नेर पार्श्वे लिखिवेन। इति शन १८२६ शाल, तारिख ६ मेई। मोतावक शन १२३६ शाल तारिख २८ वैशाख ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कस्याश्चित् स्त्रियाः पतिर्वायुग्रस्तस्तत्समये तेनैव वायुग्रस्तेन पत्या स्वपैतृकधनविक्रयार्थं स्वपत्न्यै अनुमतिदानमदानञ्च तुल्यमिति मत्वा सा स्त्री[2]-

---

१. अनुमनु देया—व्यप०। २. सान्वीय—व्यप०।

श्वशुरस्य आवश्यक[1]श्राद्धार्थर्णपरिशोधनार्थम्[2] एवं तस्यैव वायुग्रस्तस्य पत्युः चिकित्सार्थं तत्स्वत्वास्पदीभूतस्य तत्पैतृकस्य कस्यचिद्वस्तुनस्तस्यैव पत्युरनुमतिं विना विक्रयं कृतवती स्यात्तदा स विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोति, यतः शास्त्रानुसारेण प्रेतश्राद्धकरणाद्यर्थं चिकित्सार्थं वा येन केनापि सम्बन्धिना दासेन वा कृतं तदुपयुक्तमृणं विक्रयादिकञ्च सिद्ध्यति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बार्थेऽध्यधीनोपि व्यवहारं यमाचरेत् ।
स्वदेशे वा विदेशे वा तं ज्यायान्न विचालयेत् ।। इति मनु (पृ० ८ । १६७) वचनम् ।। १ ।।

कुटुम्बार्थमशक्ते तु[3] गृहीतं व्याधितेऽथवा[4] ।
उपप्लवनिमित्तञ्च[5] विद्यादापत्कृतन्तु[6] तत् ।। २ ।।
कन्यावैवाहिकञ्चैव प्रेतकार्य्येषु यत्कृतम् ।
एतत्सर्व्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ।। इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ६५)दायतत्त्व(पृ० ३०)विवादभङ्गार्णवादि(१ विवा १६६ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन(का० स्मृ० ५४२-५४३)वचनम् ।। ३ ।।

अत्रेदमवधेयम् । *कुटुम्बभरणादिरूपयादृशयादृशकार्य्ये उपस्थिते दासकृतमृणं प्रभुणा शोधनीयमिति प्रतीयते, तादृशतादृशकार्य्यनिष्पत्त्यर्थं प्रभुधनविक्रयो सिद्ध्यति । तदतिरिक्त एव स्वाम्यनुमतपदेन बोध्यते*—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१ विवा ३३० क)लिखनञ्चेति ।। ४ ।।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. आवस्यक—व्यप० ।
२. परिसोधन०—व्यप० ।
३. अशक्तेन इति पाठः व्यत० ।
४. व्याधितेन इति पाठः व्यत० ।
५. निमित्ते—कास्मृ० ।
६. कृते-तु—कास्मृ० ।

८६—रोवकारि आदालत देओयानि जिला यशर जिला मजकुरेर जज श्रीजान वित्रभ्यार्फटविष्ट साहेबेर वैठके सन १८२९ शाल ६ माइ मतावेक सन १२३६ शाल वाङ्गला २५ वैशाख रोज वुधवार।—

गङ्गागोविन्दसेन फरियादि
रामलोचनसाहा आशामि

सकर्द्दमा डिगरि जारि

अद्य फरियादिर उकिल वैद्यनाथ मजुमदार ओ मुनशी माहामुद छादक ओ वैद्यनाथ मुनशी ओ ओजरदार चित्रामणिर उकिल गोलकचन्द्र चौधुरी ओ गुरुप्रसाद मुनशी हाजिर हइलेन। हाल सनेर ७ आपरेल ओ २२ मार्च्च तारिखेर दाखिल हओा फरियादिर दरखास्त ओ माहा(जन) मजकुरेर १३ तारिखेर दाखिल हओया चित्रामणिर ओजरेर दरखास्त दृष्टि करागेल। यद्यपि ए सकर्द्दमार डिगरि जारिर कागज कलिकातार प्रविनसियान कोट आदालतेर पाठान गियाछे, किन्तु एइ आदालतेर प्रस्तुत कागजातेर द्वाराय जानागेल। ए मकर्द्दमार विवरणः—एइ ये, आसामि मजकुर फरियादिके जानिन[1] दिया कोट आपवडेछेर सिरिस्तार कर्त्तार निकट राजा शशिभूषणदेवराय नावालगेर जमिदारि इजारा लइया, ताहार मालगुजारि परिशोध ना कराते फरियादिर तालुक निलाम हइया इजारार वाकि मालगुजारि ९६०० टाका उसुल हइयाछे। फरियादि ताहार नालिष करिया आसामि मजकुरेर पर मवलग मजकुरेर डिगरि पाइयाछे। सेइ डिगरि जारि करिया आसामिर कीर्तिनगरेर वसति वाटी ओ नीलेर कुटी ओ गरु ओ घोडा निलाम करिया, मवलगे १०२९४।।० टाका वसुया पाइयाछिल। आसामिर पिता रामजिसाहा विक्रिर वस्तुके आपनार वलिया, निलाम असिद्ध करिवार[2] दरखास्त करिया-

१. जामिन—साधीयान् पाठः। २. करियार—व्यप०।

छिल। ताहाते सदर देश्रोयानिर हाकिमेरदिगेर विचारे ऐ वस्तुर निलाम असिद्ध हइया फैरियादिके नालिष करिवार आज्ञा हइयाछिल। एमते फरियादि मजगुर नीलेर कुटी ओ वसती वाटीर दाविते दुइ लम्वरे रामलोचनशाहा ओ रामजिशाहा दुइ जनेर नामे एइ आदालते नालिष करिले। ए आदालतेर पूर्वकार जज साहेवेर विचारे नीलेर कुटी ओ वसति वाटीर अधिपति ओ कर्त्ता आशामि रामलोचनसाहाके-वोध हइया करियादिव-दुइ नालिष डिगरि हइयाछिल। परे आसामिर पिता रामजिसाहा साहेव सौछफेर फयशलाते नाराज हइया एइ ओजरे आपिल करियाछिल ये नीलेर कुटी, वसति वाटी, मजकुर आमार हक, आमार पुत्र रामलोचनसाहार सहित कोनो विषय नाइ। परे इङ्गरेजि शन १८२८ शालेर १७ सेतम्वर तारिखे कलिकातार क्रोट आपिलेर हाकिमेरदिगेर विचारे एइ हेतुक एइ आदालतेर दुइ फयशला असिद्ध हइयाछे। ये कुटि ओ वसति वाटीर प्रति डिगरिर टाकार देन्दार रामलोचनसाहार आधिपत्यता आदालते सुस्पष्ट प्रकाश हइलना। ओ रामजिसाहा आपन नामेर एक पाट्टा ओ मोनसफेर तिन केता फयशला कुटि मजकुरेर जायगा आपन साव्यस्त कारण दरपेष करिलेक। आर पितृ वर्त्तमाने पितृवस्तु पुत्रेर देनाय विक्रि हइते पारेना। एइ त्तणे फरियादि शन १२३५ शालेर फाल्गुण मासे रामलोचनसाहार पिता रामजि साहार मृत्यु हइयाछे, ओ रामलोचन मजकुर आपन पितार तावत विषयेर सत्वाधिकारि हइयाछे वलिया सेइसकल आपन पाओना डिगरिर टाका उसुलेर जन्य ऐसकल विषय क्रोक ओ निलामेर दरखास्त करियाछे। ताहाते क्रोटेर हुकुम हइले परे रामलोचन आसामिर स्त्री चित्रामणि दरखास्त गुजराइलेक जे आमार श्वशुर रामजिसाहार येकिछु जोतजमा ओ निष्कर भूमि ओ वसति वाटी समेत् एमारत् ओ नीलेर कुटी ओ तैजसादि ओ अलङ्कार आदि स्थावर ओ अस्थावर आपन स्वकृत ये करि-

যাছিলেন তাহা আপন মৃত্যুর পূর্ব্বে শন ১২৩৫ শালের ১৬ মাঘ তারিখে আমাকে দান করিয়া ঐ তারিখ মজকুর দানপত্র লিখিয়া দিয়াছেন; আমার স্বামি রামলোচনসাহা আমার শ্বশুরের অবাধ্য ছিলেন। তাহার দেনার জন্য আমার শ্বশুরের দত্ত বস্তু আমার হক, তাহা ক্রোক বিক্রি হইতে পারেনা। পরে তলবানুসারে চিত্রামণির উকিল শন ১২৩৫ শালের ১৬ মাঘ তারিখের এক কেতা দানপত্র প্রকাশ্য রামজিসাহা দাতার লিখিত চিত্রামণি গ্রহীতার নামে বাঙ্গলা ভাষা ও অক্ষরেতে লিখিত এই অদালতের রেজষ্টর সাহেবের নিশানিতে দরপেষ করিলেক। তাহা দৃষ্টে ফরিয়াদির উকিল বৈদ্যনাথ মজুমদারের স্থানে জিজ্ঞাসা করাগেল যে চিত্রামণির নামের রামজিসাহার দানপত্রের সত্যতাতে তোমার মওকেলের কিছু আপত্য আছে কি না। জবাব দিলেক যে এমত দানপত্র লিখিত পঠিত হওয়ার সম্ভব বটে। কিন্তু এমত ধারার দস্তাবেজ লিখিবার কারণ কেবল আমার মওকেলের ডিগরির টাকা জীর্ণ করিবেক। চিত্রামণির উকিলের স্থানে জিজ্ঞাসা করাগেল যে রামলোচনসাহা ব্যতিরেক রামজিসাহার আর পুত্র আছে কি না। জবাব দিলেক যে রামলোচন ভিন্ন রামজিসাহার আর পুত্র নাই ইতি। তজবিজ হইলো যে চূডন্ত হুকুম প্রকাশের পূর্ব্বে এ মকদ্দমাতে এই কথা জ্ঞাত হওয়া আবশ্যক হইল যে চিত্রামণির দাখিল করা দানপত্র শাস্ত্রানুসারে সিদ্ধ হইবার যোগ্য বটে কি না।

এ বিষয় শাস্ত্রজ্ঞদিগের নিকট তিন কথা প্রশ্ন করা উচিত হইল। প্রথমতো এই—যদ্যপি দানপত্রের লিখিত বস্তু রামজিসাহার স্বোপার্জিত হয়, আর রামজিসাহা ঐ বস্তুর দান বিক্রয়ের স্বত্বাধিকারি করিয়া পুত্র পৌত্র বর্ত্তমান থাকিতে ঐ বস্তু আপন পুত্রবধূকে দান করে, এমত সর্ব্বস্বান্ত দানপত্র যথাশাস্ত্র গ্রাহ্যের যোগ্য কি না। ও দ্বিতীয়ত্ব—যদ্যপি সেই সকল বস্তু রামজি মজকুরার পৈতৃক হয়, তবে এমত দান আপন পুত্রবধূকে দেয়া সিদ্ধ হয় কি না। তৃতীয়ত্ব—যদ্যপি দানের বস্তুর মধ্যে কিছু পৈতৃক, ও

किछु रामजिसाहार स्वकृत हय, ताहा हइले एमत दानपत्रेर द्वाराय ताहा हस्तान्तर करा सम्यक प्रकारे सिद्ध, कि असिद्ध, किम्वा कतो सिद्ध,कतो असिद्ध। एइ आदालतेर पण्डित श्रीश्रीराम तर्कालङ्कार विदाय हइया आपन वाटी गियाछेन। ए जन्य हुकुम हइल ये दानपत्र मजकुरेर नकल समेत रोवकारिर नकल सम्वलित ओ ताहार वाङ्गला तरजमा इङ्गरेजि लिपि समभिव्याहारे सदर देओयानि आदालतेर हाकिमेरदिगेर निकट पाठान जाय एइ प्रार्थनाय ये सदर देओयानि आदालतेर हाकिमेरा अनुग्रहपूर्व्वक कागजात् मजकुरान् ऐ आदालतेर पण्डितेरदिगेर स्थाने दिया हुकुम करिवेन—ये एइ मकर्द्दमार तावत विषयेर पर दृष्टि करिया प्रश्नसकलेर उत्तर शास्त्रानुसारे लिखेन। लेखा हओनेर परे ताहार उत्तर एइ आदालते अनुग्रह करिया पाठान। आर आदालतेर नाजिरेर नामे परयाना लेखा जाय। नाजिर दोशरा हुकुम प्रकाश हओ। पर्य्यन्त आपन नाएव मपश्वलेर पाठाइया फरियादिर दरखास्तेर निचेर लिखित वस्तु माफिक यावेत्ता क्रोक करिया, एक जन् पेयादा ताहार रक्षार्थ नियुक्त करे, ये क्रोकी वस्तु स्थानान्तर हइते ना पाय। पेयादार वेतन फरियादिर स्थाने लय।

आर एइ मकर्द्दमार डिगरि जारिर आसल कागजेर नकल ना राखिया क्रोट आपिल आदालते पाठान गियाछे, आर अरियादिर[1] नालिषि मकर्द्दमार आसल कागज ये ताहाते नीलेर कुटि ओ वसति वाटीते रामलोचनेर स्वत्व आछे—एइसकल कागज दृष्टि करा आवश्यक। ए जन्ये पुनराय हुकुम हइल ये एक प्रस्त चुम्वक रोवकारि सेइसकल कागज अनुग्रह मते पाठानेर प्रार्थनाय क्रोट आपीले पाठान जाय इति।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं दानपत्रञ्चावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

---

१. फरियादिर—साधीयान् पाठः।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानपत्रलिखितं वस्तु रामजीसाहासंज्ञकस्य स्वोपार्ज्जितं भवति एवं रामजीसाहासंज्ञकः स्वपुत्रवधूं तद्वस्तुनो दानविक्रयस्वामिनीं कृत्वा पुत्रे विद्यमाने पौत्रेषु च विद्यमानेषु सर्व्वं धनं तस्यै दत्तञ्चेत्तदा तद्दानं प्रभुसमर्पितविचारपत्रदानपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति शास्त्रानुसारेण छलकृतत्वेन क्रोधकृतत्वेन च सिद्धं भवितुं न शक्नोति, शास्त्रानुसारेण क्रोधकृतदानस्य छलकृतदानस्य च राज्ञा परावर्त्त्यत्वात्। प्रभुसमर्पितविचारपत्रदानपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति एकमात्रपुत्रस्य पितुर्व्यवहारयोग्ये तस्मिन्नेकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने अप्राप्तव्यवहारेषु कतिपयेषु पौत्रेषु विद्यमानेष्वपि तेषामन्नाच्छादनोपयुक्तं धनमसंरक्ष्य स्वपुत्रवध्वै व्यवहारिकैताद्दशादेयसर्व्वस्वदानस्य छलादिकं विना असम्भवाच्च। अतएव तत्प्रमाणभूतं तद्दानपत्रमपि शास्त्रानुसारेण ग्राह्यं भवितुं न शक्नोतीति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम्।

यत्र वाप्युपधिं पश्येत्तत्सर्व्वं विनिवर्त्तयेत् ॥—इति मनुवचनम् (८, १६५) ॥ १ ॥

अदत्तन्तु भयक्रोधशोकवेगरुगन्वितैः[1] ॥

तथोत्कोचपरीहासव्यत्यासछलयोगतः ॥ —इत्यादि विवादार्णवसेतु-(पृ० १५२) विवादभङ्गार्णवादि (१ विवाभ० पृ० ४८५ ख) ग्रन्थधृतनारद (नाम सं० ६।८) वचनम् ॥ २ ॥

एवं यत्र *धनिकादिप्रतारणार्थं स्वकीयद्रव्यमन्यत्रार्पयति अन्यस्मै दत्तमिति तत्रापि दानासिद्धिः*—इत्यादि विवादभङ्गार्णव(१ विवा ४८७ ख) लिखनम् ॥ ३ ॥

---

१ °रुजान्वितैः—नामसं०, °रुगन्वितैः—व्यप०।

स्वं कुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुतादृते ।
नान्वये सति सर्व्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् ॥—इति विवादार्णव-सेतु (पृ० १४८) विवादभङ्गार्णवादि(१ विवा० ४४५ ख)ग्रन्थधृतयाज्ञ-वल्क्य(याज्ञ० पृ० २४४)वचनञ्चेति २।१७५ ॥ ४ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि च तदेव सर्व्वं वस्तु रामजीसाहासंज्ञकस्य पैतृकं भवति तदा स्व-पुत्रवधूमुद्दिश्यैतादृशदानं प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण छलकृतत्वात् क्रोध-कृतत्वात् पैतामहे स्थावरादौ पुत्रपौत्राद्यनुमतिं विना पितुरेतादृशदाने प्रभु-त्वाभावाच्च सिद्धं भवितुं न शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम्—

उपरिलिखितप्रमाणचतुष्टयम् ॥ ४ ॥
मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः ॥
स्थावरस्य तु सर्व्वस्य न पिता न पितामहः॥—इति दायभागादि(पृ० ३३)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्[1] ॥ ५ ॥

पितामहश्रुतेस्तद्धनविषयं वचनम् । *मणिमुक्ताद्युपादाय पुनः सर्व-स्येति वचनात्*[2] *सर्व्वेषां भूम्यादिव्यतिरिक्तानां दानादिषु पितुः प्रभुत्वं न स्थावरनिबन्धद्रव्याणाम्*—इति दायभाग (पृ० ३३) ग्रन्थलिखन-ञ्चेति ॥ ६ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानकृतवस्तुषु किञ्चिद्रामजीसाहासंज्ञकस्य पैतृकं किञ्चित् स्वो-पार्जितं भवति तदैतादृशदानपत्रद्वारा हस्तान्तरकरणं सर्व्वस्य वस्तुनस्तदन्त-र्गतस्य किञ्चिद्वस्तुनो वा प्रथमद्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण सिद्धं भवितुं न शक्नोति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

१ नेदं याज्ञवल्क्यवचनम्, १६६ तमे पृष्ठे मिताक्षरायां चेदं लभ्यते ।
२ सर्वस्येत्युणदानात्—दाभा० ।

अत्र प्रमाणान्युपरिलिखितान्येवेति ॥ ६ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—०—

सओयाल—

८७—फरियादियान नन्दकुमारगोस्वामी ओ रामचन्द्र-गोस्वामी दिगर असामी वैष्णवानन्दगोस्वामिदिगरेर नामे हिस्या वावति ५८७ टाकार दाविते १०२९ लम्बरे नालिष करियाछेन। फरियादियान् आपन आरजिते लिखेन ये फरियादियान श्रीश्री-नित्यानन्दजिउठाकुरेर परिवार तावत द्देशीय वैष्णवसकल श्रीश्री-नित्यानन्दजिउठाकुरेर परिवारेर सासित वैष्णव हओन कालीन माला चन्दन इत्यादि जाहा प्रथा आछे उहारा वैष्णव दिग्येदेर, आर ऐ महालेर नाम भावकमहाल। अत्र विषये हाकिमेर विना दलिले नित्यानन्द जिउर परिवारे साम्यक भावे साध्य आछे,ओ एइ महाल राजदत्त नय। ये ये स्थाने नित्यानन्दजिउर परिवार-सकल वास करिया आछेन,सेह २ स्थाने जे जे प्रकारेर हिन्दुलोक ओ वैष्णवलोक वास करेण। ताहादेर मध्ये ये केह नित्यानन्देर उपर देशीय हन तेँहा नित्यानन्देर परिवारेर निकट हाजिर हन इति। आसामि लेखेन जे एइ महाल राजगुरुर शासन। राजदत्त विशयसकलेर एइ महाल राजा हइते राजगुरुके अर्पण आछे, ओ भावक महाल कोन समय हइते आछे, ओ कि प्रकारे नित्या-नन्देर परिवारके अर्शिछे, एवं एइ महालेते किम्वा हाकिमेर द्वाराय कोन प्रकारे किछु सम्पर्क आछे कि ना। यदि भेकाश्रित वैष्णव हइते चाहे से व्यक्तिके नित्यानन्दजिउर परिवार व्यतिरेक अन्य केह सेवक करिते पारेन कि ना। एवं यदि स्यात् तावत् देशीय भावकमहाल नित्यानन्देर परिवारसकलेर अंश हइया थाके,आर नित्यानन्दजिउर परिवारेर मध्ये एक स्थानेर परिवार कोन व्यक्ति

अन्य स्थानेर परिवारेर सेवक हइते चाहिले सेवक हइते पारे कि ना, ओ ऐ परिवारेर भिन्य स्थानवासी ऐ व्यक्तिके सेवक करिते पारेन कि ना, एवं नित्यानन्दजिउर परिवार ये ये स्थाने वास करिया आछेन ऐ जायगाय उहादिग्येर अधिकार कि। ये ये स्थाने नित्यानन्देर पन्थीय वैष्णवसकल आछेन ऐसकल स्थान उहादिग्येर शासन कि, तावतईससकल उहादिग्येर प्रत्यक्ष अंश आछे, अर्थात् नित्यानन्देर परिवार केहो सिंहभूमवासी एवं केहो वराहभूमवासी, इहाते सिंहभूमनिवासी कोन व्यक्ति ऐ वराहभूमनिवासी नित्यानन्देर परिवारेर स्थाने सेवक हइते पारे कि ना। एवं नित्यानन्देर ये परिवार सिंहभूमे वास करिया आछेन, ताहार अधिकार केवल सींहभूम कि वराहभूमौ वटे। फलत तावत देशीय वैष्णवसकल नित्यानन्द जिउर तावत परिवारसकलेर साधारण मते अधिकार कि। ये ये स्थाने नित्यानन्देर ये परिवार वास करिया आछेन ताहार सेइ जायगाय अधिकार, तद्व्यतिरिक्त अन्य देशे नाइ। अत्र विशये शास्त्रते किमत विधि आछे ज्ञातो हओया अविश्वक। अतएव सदर देओयानि आदालतेर पण्डित एइ सओयालेर जवाव दक्षिण[1] पार्श्वे लेखेन इति। शन १८२९ साल तारिख २५ युन मतावक शन १२३६ साल १३ आषाढ।

श्रीऊर्जयतितराम्

यथावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयागस्तिमासीयपञ्चविंशतिदिने घटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यज्जातीयानां यच्छ्रेणीनां वा यस्मिन् विषये विशेषतः शास्त्राज्ञा नास्ति तस्मिन् विषये तज्जातीयानां तच्छ्रेणीनां वा यथा पूर्व्वापरव्यवहारस्तदनुसारेणैव निर्णयो भवितुमर्हति। प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितविषयसमुदायस्यार्थाद्

१. पक्षिण—व्यप०।

भावकमहालसंज्ञकवस्तुविशेषः कस्मात् समयाद्वर्त्तते इत्यस्य, एवं केन प्रकारेण श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवारैस्तद्वस्तु प्राप्तमित्यस्यैवं तेषु[१] वस्तुषु सराजकरभूस्वामिनो राज्ञश्च वा केनापि प्रकारेण कश्चिदपि सम्बन्धो वर्त्तते न वेत्यस्य, एवं यदि कश्चिद्भेकाश्रितवैष्णवो भवितुमिच्छति तदा स श्रीमन्नित्यानन्दपरिवारव्यतिरिक्तेनान्येन केनचित् सेवकः कर्तुं शक्यते न वेत्यस्य, एवं तावद्देशीयभावकमहालसंज्ञकस्य विशेषो यदि श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराणामंशोऽभूद्,अथ च श्रीमन्नित्यानन्दपरिवाराणाम्मध्ये एकस्थानस्य कश्चित्परिवारः स्थानान्तरवासिपरिवाराणां सेवको भवितुमिच्छति चेत्तदा सेवको भवितुं (शक्नोति) न वेत्यस्य, एवं तत्परिवारवासस्थानाद्भिन्नस्थाननिवासी कश्चिच्छ्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्तं व्यक्तिविशेषं सेवकं कर्त्तुं शक्नोति न वेत्यस्य, एवं श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवारो यस्मिन् यस्मिन् स्थाने श्रीमन्नित्यानन्दस्य सम्प्रदाया वैष्णवाः सन्ति (तस्मिन्) तस्मिन्नेव स्थाने तेषामधिकारः, किंवा सर्व्वस्मिन्देशे तेषामंशोऽर्थात् श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराः केचित् सिंहभूमिवासिनः केचिच्च वराहभूमिवासिनः, तत्र सिंहभूमिनिवासी कश्चिद्व्यक्तिविशेषो वराहभूमिनिवासिनः श्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्य स्थाने सेवको भवितुं शक्नोति न वेत्यस्य, एवं श्रीमन्नित्यानन्दस्य ये परिवाराः सिंहभूमिनिवासिनस्तेषां केवलं सिंहभूमावधिकारः किं वा वराहभूमावपि, अर्थात् तावद्देशीयवैष्णवेषु श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराः वासं कुर्व्वन्ति तस्मिन् स्थान एव तेषामधिकारो नान्यत्रेत्यस्य चेदानीं प्रचलितास्मज्ज्ञातधर्म्मशास्त्रालिखितत्वात् प्रश्नपत्रलिखितश्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराणाम्मध्ये प्रश्नपत्रलिखितविषयसमुदायेषु पूर्व्वापरं यथा व्यवहारस्तदनुसारेण निर्णयो भवितुमर्हति,इति मनुदायतत्त्व-कल्पतरु-विवादरत्नाकर-व्यवहारमातृकाव्यवहारतत्त्व-वीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्माञ्छ्रेणीधर्म्मांश्च धर्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् (८। ४१॥) ॥ १ ॥

---

१. तस्मिन—व्यप० ।

देशस्य जातेस्संघस्य धर्म्मो ग्रामस्य यो भृगुः ।
ऽदितः स्यात् स तेनैव दायभागं प्रकल्पयेत् ।।—इति दायतत्त्व(पृ० ७)कल्पतरुविवादरत्नाकरप्रभृतिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम्(कास्मृ० ८८४) ॥ २ ॥

व्यवहारो हि बलवान्धर्मस्तेनावहीयते[1]—इति व्यवहारमातृका(पृ० २८२)व्यवहारतत्त्वादि(पृ० ४)ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नास्मृ० पृ०१७) ॥ ३ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते ।।—इति व्यवहारमातृका(पृ० २८२)वीरमित्रोदय(पृ० १८)व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० पृ० १६) ॥ ४ ॥

कीनाशाः कारुकाः शिल्पिकुसीदिश्रेणिनर्त्तकाः ।
लिङ्गिनस्तस्कराः कुर्य्युः स्वेन धर्म्मेण निर्णयम्[2] ।।—इतिवीरमित्रोदय-(वीमि० ख पृ० ३०)व्यवहारमातृकादि(व्यमा० पृ० २८१)ग्रन्थधृत-बृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० पृ० १२) ॥ ५ ॥

युक्तिर्ल्लोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका (२८२) व्यवहारतत्त्व-(पृ० ४) ग्रन्थलिखनञ्चेति[3] ॥ ६ ॥

दिसम्बरमासस्य प्रथमदिने यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. तेनापचीयते–इति पाठान्तरम् ।
२. ०कारुका मल्लाः कुसीदश्रेणिवर्त्तकाः ।
लिङ्गिनस्तस्कराश्चैव स्वेन धर्मेण निर्णयः ॥ (बृस्मृ ०पाठः)
३. युक्तिर्न्यायः । स च लोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका—व्यप० ।

सम्ओयाल—

८८—यदि दुइ अथवा अधिक भ्राता थाके। एक जन ताहार वयप्राप्त। एवं अन्यसकल नावालग। एवं ताहारदिगेर कोन गारडियेन् अर्थात् रक्षक विशेष रूपे मोकरर ना हइया थाके। एवं ताहारदिगेर ज्येष्ठ भ्राता, ये प्राप्तव्यवहार हइयाछे, स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे, ये स्थावर वस्तुते ताहार भ्रातारदिगेर अंश आछे। ऐ स्थावर वस्तु विभाग करणे ताहार दिगेरके अंशी बोध करा जाय। एमत हस्तान्तर करण शास्त्रमते नावालगेर पक्षे सिद्ध हइते पारे कि ना?

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयनवम्बरमासीयैकविंशतिदिने यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यदि द्वौ ततोऽप्यधिका वा भ्रातरस्सन्ति, तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारोऽन्येऽप्राप्तव्यवहारास्तेषामप्राप्तव्यवहाराणां विशेषतो रक्षकः कश्चिन् नियुक्तो नाभूत्स्यादेवं तेषां ज्येष्ठो भ्राता यः प्राप्तव्यवहारोऽभूत् स यदि एवंभूतं स्थावरं हस्तान्तरं कृतवान् स्यात्, यत्र स्थावरे तद्भ्रातॄणामंशोऽस्ति, एवं तत्स्थावरविभागकरणे तेषामप्राप्तव्यवहाराणामंशित्वेन ज्ञानं भवति, एतादृशवृत्तान्ते सति एतादृशहस्तान्तरकरणं शास्त्रतोऽप्राप्तव्यवहाराणामंशे अस्वामिकृतत्वात् सिद्धं भवितुं न शक्नोति। शास्त्रानुसारेणास्वामिकृतविक्रयस्य निवर्त्तनीयत्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा।
अकृतस्स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः॥—इति मनुवचनम्। (८।१९९)॥ १॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गार्णवादि-(१ विवाभ० पृ० ३१७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६१२). ॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

विभक्तस्येवा[1]विभक्तस्थावरस्यापि स्वामिकृतदानादि सिद्ध्यत्येव, अक्ष-पातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादितिभावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-दायभागटीका (पृ० ३५) लिखनम् ॥ ३ ॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन[2] विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः—इत्यादि विवादभङ्गार्णव (१ विवाभ० पृ० ३०५ क) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

दिसम्बरमासस्य द्वादशदिने शनिवासरे यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रथम सओयाल—

८९—यदि कोन हिन्दु जाती एक स्त्री, ओ कएक जन पुत्र वर्त्त-मान थाकिते आपन पैतृक स्थावर वस्तु, याहा आपन पितार मृत्युर पर उत्तराधिकारित्व प्रकारे उहाके आर्शियाछिल, ताहा समुदाय, किम्वा ताहा हइते किञ्चित विक्रय करियाथाके, तवे एमत विक्रय सिद्ध हइवेक कि ना, ओ विक्रयकर्त्ता किम्वा ताहार मृत्युर पर उहार पुत्रगणेर द्वाराय क्रयकर्त्ताके दखल देओयानेर आज्ञा देओयार क्षमता आदालतेर हाकिमगणेर आछे कि ना ?

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि क्रयकर्त्ताके दखल दिया उहाके वेदखल करियाथाके तवे हाकिमगण क्रयकर्त्ताके दखल देओयानेर आज्ञा दिते पारेन कि ना ?

---

१ विभक्तस्यैव—व्यप० । २ समुदायस्यैकेन—व्यप० ।

तृतीय सञ्ओयाल—

यदि क्रयकर्त्ता दखल ना पाइयाथाके तवे हाकिमगण क्रय-कर्त्तार सद्मन्धे दखल देओयार आज्ञा दिते पारेन कि ना ?

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकं समुदाय-स्थावरं तदन्तर्गतकिञ्चित्स्थावरं वा कुटुम्बभरणपित्रादिश्राद्धाद्यावश्यक-कर्म्मकरणार्थं पुत्रेषु विद्यमानेष्वपि यदि पित्रा विक्रीतं तदा पुत्राणामनुमतिं विनापि स विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोति । यद्युपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्या-वश्यककर्म्मकरणार्थं पित्रा न विक्रीतं किन्तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा विक्रीतं तदा पुत्राणामनुमतिश्चेत् सिद्ध्यति, नोचेन्न सिद्ध्यति । एवञ्च सति तद्वि-क्रयस्य सिद्धत्वपक्षे विक्रयकर्त्तारं प्रति तन्मरणानन्तरं तत्पुत्रान् प्रति वा क्रयकर्त्तुरायत्तत्वसम्पादिकाया आज्ञाया दाने क्षमता धर्म्माधिकरणाधिपती-नामस्त्येव, सिद्धेन तद्विक्रयेण विक्रयकर्त्तुः स्वत्वविनाशेन तत्पुत्राणामपि तत्र स्वत्वानुत्पादात् क्रयकर्त्तुः स्वत्वोत्पत्तेश्चेति ।

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः ।

स्थावरस्य तु सर्व्वस्य न पिता न पितामहः ॥ —इति दायभागादिग्रन्थ (दाभा० पृ० ३३) धृतयाज्ञवल्क्यवचनम्[1] ॥ १ ॥

पितामहश्च तैस्तद्धनविषयकं[2] वचनम् । मणिमुक्ताद्युपादाय पुनः सर्व्वस्येति वचनात्[3] सर्व्वेषां भूम्यादिव्यतिरिक्तानां दानादिषु पितुः प्रभुत्वं न स्थावरनिबन्धद्रव्याणाम्—इति दायभाग(पृ० ३३)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

---

१. वचनमिदं याज्ञवल्क्यस्मृतौ न दृश्यते । २. °दानविषयं—व्यप० ।
३. उपादानात्—दाभा० ।

यदि पुनः सर्व्वस्थावरादिविक्रयमन्तरेण कुटुम्बवर्त्तनमेव न भवति तदा सर्व्वस्यापि विक्रयणादिकमर्थात् सिद्ध्यति—इति दायभाग(पृ० ३३)-ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

विक्रीय पण्यं मूल्येन क्रेतुर्यो[1] न प्रयच्छति ।
स्थावरस्य क्षयं[2] दाप्यो जङ्गमस्य क्रियाफलम् ॥

इति विवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादि(पृ० १७८) ग्रन्थधृतनारद-(नामसं० ९-१, ४) वचनम् ॥ ४ ॥

मूल्यग्रहणपूर्व्वकस्वत्वनाशकव्यापारस्यैव विक्रयपदार्थत्वाद्—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् ॥ ५ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।
प्रयोगः कर्म्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥—इति मनुवचनञ्चेति (१०।११५) ॥ ६ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदिक्रयकर्त्तुरायत्तत्वं सम्पाद्यायत्तत्वमुत्थापितवान् स्यात्तदा क्रयकर्त्तुरायत्तत्वसम्पादिकामाज्ञां धर्म्माधिकरणाधिपतयो दातुं शक्नुवन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणान्तर्गतचतुर्थप्रमाणम् ।

यदि क्रयकर्त्रा नायत्तत्वं प्राप्तं तदा धर्म्माधिकरणाधिपतयः क्रयकर्त्तुरायत्तत्वसम्पादिकामाज्ञां दातुं शक्नुवन्ति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणमेवेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. यन्न—नामसं० । २. क्षयं—व्यप० ।

श्रीहरिः शरणम्।

२६ लम्बर दरखास्त खास आपिल—

सन १८२९ साल—

प्रश्नः[1]—

९०–यद्यपि कोन व्यक्ति आपन सुपार्ज्जित[2] ओ पैतृक कोन वस्तु आपन स्वर्गार्थे काहाकेओ दान करे आर ऐ दाता व्यक्ति दानपत्रे एमत सरत राखे ये आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त खोरपोष पाइवेक, अतएव ए प्रकार सरतेर दान ये ताहाते केवल दाता व्यक्तिर जीवद्दशा पर्य्यन्त खोरोपोष सरत लेखा थाके-शास्त्र सम्मत सिद्ध वटे कि ना–इहार प्रतिउत्तर एइ प्रश्नेर पार्श्वे, ओ तस्य भाषा लिखिवेन। इति १८२९ साल ता २६ नवम्वर मो० शन १२३६ साल ता० १२ अग्रहायन।

श्रीर्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषः स्वोपार्जितं पैतृकं च कियद्वस्तु स्वस्वर्गार्थं कस्मैचिद्दत्तवान्[3], अथ च तेनैव[4] दात्रा दानपत्रे एतादृशनियमो रचितः "स्वजीवनपर्य्यन्तमहं ग्रासाच्छादनं प्राप्नोमि"। अतएव यद्दानपत्रे केवलं दातुर्जीवनपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादननियमो लिखितस्तद्दानं यदि दात्रा स्वजीवनपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादनं प्राप्तं तदा सिद्ध्यति, नोचेन्न सिद्ध्यति, यतः सोपाधिदानमुपाधिसिद्धौ सिद्धम्, उपाध्यसिद्धावसिद्धं भवति—इति वङ्गदेशचलितदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

---

१. प्रशः— व्यप०। २. सुपार्ज्ञित—व्यप० स्वोपार्ज्जित–इति साधीयान् पाठः।
३. दत्तमथ०—व्यप०। ४. स एव दाता—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान्[1] यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्य्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादि-(दाभा० पृ० ३०)ग्रन्थधृतनारद(नामस० १४।४२)वचनम् ॥ १ ॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णव(१ विवाभ० पृ० ३०८ ख) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अत्रेदमवधेयम्—यदि कतिचिदुपाधयः यावज्जीवपर्य्यन्तं पोषणादयः कृताः कतिचिच्चौर्द्ध्वदैहिकक्रिया (कलाप[2])रूपा न कृतास्तत्र का व्यवस्था इति चेद् यावद्व्यापाराकरणेन सम्प्रदानप्रतिज्ञाभङ्गादुद्देश्यफलानां किञ्चिदंशे विसंवादाच्च न दानसिद्धिः—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१विवाभ० बृ० ४६५ क) लिखनञ्चेति ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

८७ लम्बर
खास आपिल
शन १८२७
प्रश्नः-

९१—यद्यपि कोन व्यक्ति किछु भुमि आपन कन्यार विवाह

१. स्वानंशानिति नामसं० पाठः। २. कमाल—इति विभ०मूले पाठः।

कालिन आपन जामाताके दान करिया थाके, आर ऐ कन्यार गर्भे सेओया एक कन्या श्रीमतीकुमारी नामे, पुत्र सन्तान ना हइया थाके; ए प्रकारे ऐ वस्तु यथाशास्त्र श्रीमतीकुमारीके कि ऐ ग्रहीता व्यक्तिर द्वितीय पक्षेर सन्तानद्विगके अर्शे—इहार प्रति उत्तर वचन ओ तथ्य ताहा एइ प्रश्नेर पार्शे लिखिवेन इति। शन १८२६ तारिख २२ दिशम्बर मोतावाक शन १२३६ तारिख ६ पौष।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयफेवरवरीमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिशुक्र-वासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-नुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कश्चिद्व्यक्तिविशेषः किञ्चिद्भूमिं स्वकीयकन्याविवाहसमये स्वजामात्रे दत्तवान्, अथ च तस्या गर्भे श्रीमतीकुमारीनाम्नीमेकां कन्यां विना अन्यः कश्चित् पुत्रादिसन्तानो न जातश्चेत्तत्र तद्दानं यदि "कन्याया इदं भवतु" इत्यभिसन्धिना कृतं तदा तावदेव वस्तु श्रीमतीकुमारीनाम्नी प्राप्तुं शक्नोति, तन्मातुर्यौतुकस्त्रीधनत्वात्, यौतुकस्त्रीधने दुहितुरधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्। यदि च तद्दानं तादृशाभिसन्धिं विना कृतमर्थाद्, "जामातुरिदं भवतु" इत्यभिसन्धिना कृतं तदा तद्वस्तु जामातुरुत्तराधिकारिणामर्थात्तत्पुत्रपौत्र-प्रपौत्रपत्नीदुहित्रादीनामेव भवति। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखि-तार्थिलिखितवृत्तान्ततात्पर्य्यार्थेनार्थाद् राममण्या औरसपुत्राभावेन शास्त्रा-नुसारेणार्थिन एवोत्तराधिकारिण इत्यनेन विवादास्पदीभूतधनस्य राममणी-मुद्दिश्य तत्पितृकृतदानावगमेन तादृशधनं राममण्या यौतुकं स्त्रीधनं भवत्येव, यौतुकस्त्रीधने विद्यमानायां दुहितरि सपत्नीपुत्राणामर्थादर्थिनामधि-कारप्रतिपादकशास्त्राभावाद्—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्का-रकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

विवाहकाले यत्किञ्चिद्वरायोद्दिश्य दीयते ।
कन्यायास्तद्धनं सर्व्वमविभाज्यं च बन्धुभिः ॥—इति दायभाग(पृ०७५) दायक्रमसंग्रहादि(दाक्रसं० पृ० १३) ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥ १ ॥

उद्दिश्येति कन्याया इदं भवत्वित्युद्दिश्य वराय यद्दानं न पुनरेतदभिसन्धिं विनापीत्यर्थः । अतएव विवाहकाल इति प्रदर्शनार्थम् न पुनरेतदेव प्रयोजकं दात्रभिसन्धिनिमित्तत्वात् स्वत्वस्य-इति दायभाग(पृ० ७५)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग(पृ० २१८)लिखनम् ॥ ३ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभाग(पृ० १५१)श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० १५१)नियमसङ्ग्रहविवादमङ्गार्णवादि (२ विवाभ० पृ० ३१४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५) वचनम् ॥ ४ ॥

तत्र यौतुकधने प्रथमं कुमार्य्या अधिकारस्तदभावे वागुदत्तायास्तदभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च युगपदधिकार इति । तदभावे वन्ध्याविधवयोरपि तुल्यवदधिकार इति च । सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रस्याधिकारः—इति च दायक्रमसंग्रह(पृ० २३)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

एतदब्दीयमाघमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्ता इति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

नं० २९५

९२—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिक २१ माह जानओरि शन १८३० इ० मतावक ९ माह माघ सन

१२३६ वाङ्गला रोज वृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त मान्तेगियु हेनरि टरम्वल साहेवेर बैठके।

गोपालचन्द्र प्रभृति आपिलाण्टगण

वावु कोङर सिंह रेष्पाडण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ मौलवी न्यामत आलि, रेष्पाडण्टेर उकिल मुनशी दादार वकूस ओ मुनशी हयदर आलि ओ मौलवी करमत[1] होसेन हाजिर हइल। ए मकद्दमा गत सनेर दिसम्वर मासेर ३० तारिखेर हुकुमानुसारे एइ मासेर ११तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया जिला ओ कोर्टेर आदालतेर फयसलासकल ओ इं १८२७ सालेर मार्च्च मासेर ६ ओ २७ तारिखेसकलेर लिखित ए आदालतेर वाकि कागजसकल ओ खास आपीलेर दरखास्त, याहा मजुवात करियाछे, ओ ए आदालते दाखिल हओया ताहार जवाव ओ इ० १८२९ सालेर दिसम्वर मासेर ३० तारिखेर रोवकारिर विस्तिर्न्न ए आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त उलियम नसष्टर साहेवेर राय ओ एवं मकद्दमार आविश्यकीय अन्य कागजात पुनराय पडागेल। यथा उभयेर ओजरसकल ओ एजहारसकलेर दृष्टे ए मकद्दमार सम्वन्धे चूडन्त हूकुम सादर हओनेर पूर्व्वे निचेर सओयालेर जवावे ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित हइल, अतएव हुकुम हइल जे मकद्दमा अद्य स्थाकत थाके, ओ एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके समर्पण कराजाय ये जिला साहावादेर चलित शास्त्रानुसारे निचेर लिखित सओयालेर जवावे एक सप्ताह मध्ये व्यवस्था दाखिल करेण।

सओयाल—यद्यपि हिन्दु जाति हइते केहो आपन पैतृक-स्थावर वस्तुसकल हइते किछु ब्राह्म जाति हइते एक व्यक्तिके दान करे। ओ दान गृहीता ओ ताहार मृत्युर पर उहार उत्तरा-

१. क्रमम सोहेन—व्यप०।

धिकारिगण दान करा वस्तुर उपर दखिल हइया थाके, ओ ताहार पर दाता व्यक्तिर पुत्रगणेर मध्ये एक जन आपन पिता वर्त्तमाने ऐ दान सिद्धि न हओयार एजाहारे आदालते नालिस करे। तवे एमत दान शास्त्रानुसारे सिद्धि ओ चलित हइवेक कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरंवलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजान(ओ)रीमासीयैकविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत् फेवरवरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि हिन्दुजात्यन्तःपाती कश्चित्स्वपैतृकस्थावरसमुदायात् किञ्चिद् ब्राह्मणजातीयायैकस्मै कस्मैचिद्दत्तवान्, अथ च दानग्रहीत्रा तन्मरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिभिस्तद्दानकृतवस्तुनि आयत्तत्वं संपादितम्, तदनन्तरं दातुः पुत्राणां मध्ये एकः कश्चिद् विद्यमाने पितरि स्वपितृकृतदानं सिद्धं न भवतीति वदन् धर्माधिकरणेऽभियोगं कृतवान् स्यात्—तत्र विद्यमाने पितरि प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकपुत्रकृताभियोगदृष्ट्या तद्दानं यदि पित्रा स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण[1] वा प्रसन्नतया वा कृतम्, तत्र पुत्राणामनुमतिश्चेत् सिद्धं चलितं च भवितुं शक्नोति, नो चेन्न शक्नोति, पैतामहे स्थावरादौ पितापुत्रयोस्तुल्यस्वामित्वेन साधारणतया तद्दानविक्रयादौ पुत्राणामनुमतेरावश्यकत्वात्। यदि च तद्दानं पित्रा भयक्रोधादिषोडशप्रकारान्तर्गतेन केनचित् प्रकारेण कृतम्, ये षोडशप्रकाराः पञ्चमप्रमाणे स्पष्टीकृतास्तत्र पुत्राणामनुमतावननुमतौ वा सिद्धं चलितं च भवितुं नार्हति। यदि च तद्दानं पित्राऽवश्यकर्त्तव्यपित्रादिश्राद्धादिषु यज्ञादिषु वा ब्राह्मणत्वेन धर्मार्थं वा, अर्थात् तत्तद्देशचलितपित्रादिश्राद्धादिदक्षिणा यज्ञादिदक्षिणा वा ब्रह्मत्रं वा

---

१ स्वामिप्रायेण—व्यप०।

-कृ(ता)र्पणं वा पादार्घ्यो वा संकल्पो[1] वा वृत्तिर्वा विष्णवादिदेवताप्रीत्यर्थं[2] वेत्यादिरीत्या कृतं तदा धर्म्मार्थत्वेन सिद्धं चलितं च भवितुमर्हति। धर्म्मार्थं किञ्चिद्दाने पुत्राणामनुमतिं विनापि पैतृकस्थावरेऽपि पितुरधिकारः। धर्मार्थं किञ्चिद्दानं यदि पित्रा स्वस्थेनार्त्तेन कृतं श्रावितं वा अदत्त्वैव मृतश्चेत्तथापि राज्ञा तद्धनं तत्पुत्रा दापनीयाः(?)—इति मिताक्षरादिग्रन्थेषु विशेषतो लिखितत्वात्-इति साहावादप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः।
स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः॥—इति मिताक्षरा-(पृ० १६६)वीरमित्रोदय(पृ० ५२४)व्यवहारमाधव(पृ० ३३१)व्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य[3](पृ० १६६)वचनम्॥ १॥

भूर्या पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा।
तत्र स्यात् सदृशं स्वाम्यं पितुः पुत्रस्य (चैव हि)॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २०६, २।१२१)वचनम्॥ २॥

तस्मात् पैतृके पैतामहे च द्रव्ये जन्मनैव स्वत्वं तथापि पितुरावश्यकेषु धर्म्मकृत्येषु वाचनिकेषु प्रसाददानकुटुम्बभरण(पद्धि, मोक्षादिषु च स्थावरव्यतिरिक्तद्रव्यविनियोगे स्वातन्त्र्यमिति स्थितम्। स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव।—इत्युपरिलिखितग्रन्थ(मिता-पृ०२००)लिखनम्॥ ३॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्जितम्।
असम्भूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः॥
ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः।
वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति न दानं न च विक्रयः॥—इति चोपरिलिखितग्रन्थधृत(मिता० पृ० २००)व्यासवचनद्वयम्॥ ४॥

---

१. पादार्घ्यो वा संकल्पो वा—व्यप०। २. विष्ण्वादिदेवताप्रत्यर्थम्—व्यप०।
३. याज्ञवल्क्यस्मृतौ वचनमिदं नोपलभ्यते।

अदत्तं तु भयक्रोधशोकवेगरुगन्वितैः[1] ।
तथोत्कोचपरीहासव्यत्यासच्छलयोगतः ॥
बालमूढास्वतन्त्रार्त्तमत्तोन्मत्तापवर्जितैः[2] ।
कर्त्ता ममेदं[3] कर्मेति प्रतिलाभेच्छया च यद् ॥
अपात्रे पात्रमित्युक्ते कार्ये चाधर्मसंज्ञिते[4] ।
यद्दत्तं स्यादविज्ञानाददत्तमिति तत्स्मृतम् ॥—इति चोपरिलिखितग्रन्थ-(मिता० पृ० २४५)धृतनारद(नामसं० ६०)वचनम् ॥ ५ ॥

अस्यापवादः ॥
एकोऽपि स्थावरे कुर्याद्दानाधमनविक्रयम् ।
आपत्काले कुटुम्बार्थं धर्म्मार्थं च विशेषतः ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थ-(मिता० पृ० २००)धृतमुनिवचनम् ॥६ ॥

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं श्रावितं धर्म्मकारणात् ।
अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥—इति चोपरिलिखित-ग्रन्थ(मिता पृ० २४६)धृतकात्यायन(कास्मृ० ५६६)वचनं चेति ॥७॥

मार्च्चमासस्य त्रयोदशदिनसम्बन्धिशनिवारे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

९३—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख ११ माह फेवरओरि शन १८३० इ० मंतावक १ माह फाल्गुण

१. रुजान्वितैः—नामसं० । २. °पवर्जितम्:—नामसं०, मिता० ।
३. ममायं—नामसं० । ४. संहिते—मिता०, नामसं ।
५. प्रकीर्तितम्—व्यप० ।

शन १२३६ वाङ्गला ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त अलियम नशष्टर साहेवेर वैठके।

अप्राप्तव्यवहार हरनाथसिंहेर माता मुसम्मात छधोविवि[1] तुल्यप्त नेजामद्विनेर माता मुसम्मात करिमन ओ अप्राप्तव्यवहार कालीचरणेर माता मुसम्मात पद्म ओ मुसम्मात वदासु ओ मुसम्मात उदासी साएलगण। छधोविविर उकिलगण मौलवी गोलाम इजदानी ओ मुनसी महम्मद आलि खा ओ मुसम्मातान् करिमन ओ पत्व ओ उदाशीर उकिलगण सदासुक्पण्डित ओ लाला वस्तिलाल हाजिर आसिल। इ० १८२६ शालेर सितम्वर मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे सायेलगणार सओयालसकल ओ ताहार सम्पर्कीय अन्य कागजात ओ सालिसगणेर फयसला ऐ तारिखेर विस्तिर्न रोवकारि ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत हालडन वावरट राटरि साहेवेर राय सम्वलित पडागेल। जेहेतुक कागचसकलेर द्वाराय वोध हइते छे ये सायेलगण, ये आपनादिगके मृत वावु जगन्नाथसिंहेर स्त्री ओ उत्तराधिकारिणी प्रकाश करितेछे, केह मृत वावुर स्वजाति ओ केह भिन्न जाति, ओ एवं ताहार मध्ये केह सन्तानवति वटे। अतएव ए मकद्दमार सम्मन्धे चुडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्व हुकुम हइल ये मकद्दमार कागजात एइ रोवकारिर नकल सहित एइ आदालतेर पण्डितके समर्पण कराजाय—ये ताहार द्दष्टे एइ सओयालेर जवाबे ये सायेलगणार मध्ये मृत वावुर कोन २ स्त्री ओ एवं ताहारदिगेर गर्भ हइते ये सन्तान हइयाछे शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर पुत्र ओ उत्तराधिकारि हय, ओ यद्यपि ऐ सायेलगणार मध्ये केह किम्वा ताहादिगेर पुत्र ऐ मृत व्यक्तिर उत्तराधिकारि हय, तवे अन्य सायेलगण ओ ताहादिगेर सन्तान वा ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त वस्तु हइते भरण ओ पोषणेर किछु संस्वा राखे कि ना-ऐ

१. सद्धोविवि विक्षिप्त नेजामद्दिनेर माता मुसम्मात करीमन—इति साधीयान् पाठः।

मृत व्यक्तिर याजिर[1] चलित शास्त्रानुसारे व्यवस्था लिखिया दाखिल करेण इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलियमनसष्टरसाहेवधर्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयैकादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यन्मार्च्चमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अर्थिनीनां मध्ये वदामूविवीनाम्नी मृतस्य वावुजगन्नाथसिंहस्य पत्नी भवति, शास्त्रे पत्नीशब्दस्य विवाहसंस्कृतस्त्रीवाचकत्वात्, प्रभुसमर्पितपत्रजातान्तर्गतविह्लिसनेजामङ्गीनमातुः करिमननाम्न्या अप्राप्तव्यवहारकालीचरणमातुः पद्दुनाम्न्याश्चोदासीनाम्न्याश्च निवेदनपत्रेणांगरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयसितम्बरमासीयत्रयोविंशतिदिवसीयनृपाधिकृतकृतजयपत्रेण च वदामूविवीनाम्न्या मृतस्य वावुजगन्नाथसिंहविवाहितसजातीयस्त्रीत्वावगमात् । एवं वदामूविवीनाम्न्येवोत्तराधिकारिण्यपि भवति, उत्तराधिकारित्वेनेदानीं तज्जातिव्यव(हारानुसारेण) दत्तकृत्रिमपुत्राणां पुत्रपौत्राणां च मृतव्यक्तेरभावात् । एवं मृतस्य वावुजगन्नाथसिंहस्य सजातीया विवाहित(स्त्री)सद्दोविवीनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य हरनाथसिंहस्य शास्त्रोक्तद्वादशविधपुत्रान्तर्गतपौनर्भवपुत्रत्वेऽपि पौनर्भवपुत्रस्येदानीं[2] व्यवहाराभावात् शास्त्रनिषिद्धत्वाच्चोत्तराधिकारित्वं न सम्भवति । एवं भिन्नजातीयपद्दुनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य कालीचरणस्य शास्त्रोक्तद्वादशविधपुत्रानन्तर्गतस्य मृतस्य वावुजगन्नाथसिंहस्य शास्त्रानुसारेणावरुद्धपुत्रत्वेऽप्यर्थाद्दासीपुत्रतुल्यत्वेऽपि तस्य च क्षत्रियजातीयस्य मृतस्य वावुजगन्नाथसिंहस्य त्यक्तधने शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वं न सम्भवति । एवं चोपरिलिखितप्रकारेण वदामूविवीनाम्न्या मृतस्य वावु-

---

१. जातिर–इति साधीयान् पाठः । २. पत्रस्य—व्यप० ।

जगन्नाथसिंहस्य पत्नीत्वे उत्तराधिकारित्वे च सति अन्यासामर्थिनीनां तासां सन्तानानां[1] च तस्यैव मृतव्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधनाद् ग्रा(सा)च्छादनस्य किञ्चित्स्वत्वे अयं विशेषः—या सजातीया विवाहिता[2] सद्भोविवीनाम्नी, सा या च भिन्नजातीया पद्दुनाम्नी[3] च यदि मृतस्य वाबुजगन्नाथसिंहस्योत्तराधिकारिणां प्रतिकूला व्यभिचारिणी वा न भवति तदा यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागिनी भवति नान्यथा। अथ च सजातीयविवाहितस्त्रीगर्भोत्प[4]न्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य हरनाथसिंहस्योपरिलिखितप्रकारेण पौनर्भवपुत्रस्य मृतव्यक्त्युत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे प्रतिकूलत्वेऽपि वोभयथैव यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागित्वम्, भिन्नजातीयपद्दुनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य कालीचरणस्य मृतव्यक्त्युत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागित्वं नान्यथा, यवनजातीयस्य विज्ञितनेजामद्दीनस्य तन्मातुः करिमननाम्न्याश्च रजकजातीयोदासीनाम्न्याश्च मृतव्यक्तित्यक्तधनाद् ग्रासाच्छादनाधिकारानधिकारविधायकशास्त्राभावाद्—इति मृतस्य वाबुजगन्नाथसिंहस्य क्षत्रियजातीयस्य प्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी विवाहसंस्कृता—इति मिताक्षरा(पृ० २१७)वीरमित्रोदयादि(वीमि० ख० पृ० ६२३)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरा(पृ० २१६)वीरमित्रोदया(पृ० ६२३)दिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥ २ ॥

या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया।
उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते॥ —इति मनु(पृ० ३७५)वचनम् ॥ १ ॥

पौनर्भवस्तु पुत्रोऽक्षतायां क्षतायां वा पुन(र्भ्वां) सवर्णादुत्पन्नः—इति मिताक्षरादि (मि० पृ० २१३)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

---

१ सन्ताना०—व्यप०। २ विभाहिता—व्यप०।
३ ०नाम्नीणाच—व्यप०। ४ सजातीया०—व्यप०।

दत्तौरसेतरेषां तु पुत्रत्वेन परिग्रहः ।

इमान्[1] धर्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्मनीषिणः ॥—इति दत्तकमीमांसा-(पृ० ३०)दिग्रन्थधृतशौनकवचनम् ॥ ५ ॥

निर्व्वास्या व्यभिचारिण्यः प्रतिकूलास्तथैव च ॥—इति मिताक्षरा-दिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१४२) वचनम् ॥ ६ ॥

भर्त्तव्यास्त्वपरे सुताः—इति वीरमित्रोदयादि (वीमिख० पृ० ६१४)-ग्रन्थधृतवृहस्पति(२०७)वचनम् ॥ ७ ॥

द्विजातिना दास्यामुत्पन्नः पितुरिच्छयाप्यंशं न लभते, नाप्यर्द्धं दूरत एव कृत्स्नम् । किन्त्वनुकूलश्चेज्जीवनमात्रं लभते—इति मिताक्षरा-(पृ० २१६)वीरमित्रोदयादि (पृ० ६२३)ग्रन्थलिखनम् ॥ ८ ॥

बन्धूनामेकधर्माणामेकस्यापि यदुच्यते ।

सर्वेषामेव तज्ज्ञेयमेकरूपा हि ते स्मृताः ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-धृतौशनसवचनञ्चेति[2] ॥ ९ ॥

एतदब्दीयापरेलमासीयत्रड्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकात्रया-धिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

९४—रोवकारि मिषिल आदालत देओयानि सदर तारिख २२ माह माइ सन १८३०इ० मोतावक १० माह ज्यैष्ठ सन १२३७ वाङ्गला रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तगिओ हेनरि टरम्वल साहेवेर वैठके ।

वावु माधोस्वहाय ओ वेनिस्वहाय
अप्राप्तव्यवहारगणेर मोक्तार— आपिलाएट ।

वावु रामचरणलाल—
मोसम्मात वादामो प्रभृति— रस्पाडएटान् ।

---

१. इमान्–मनीषिणः—दत्तकमीमांसायां नोपलभ्यते ।

२. मिताक्षरायां औशनसस्मृतौ च नोपलब्धम् ।

आपिलाण्टेर उकिल मुन्सि दादारवक्स हाजिर आइल। रस्पाण्डेण्टगण ए आदालते एयालास शमार[1] पृष्ठे रसिद लिखिया, ओ स्वयं किम्वा उकिलेर द्वारा हाजिर हइल ना। अतएव एइ मकर्द्दमा ताहारदिगेर असाद्य।ते अद्य आसार वैठके रुवकार हइया नालिशि आरजि प्रभृति प्रविनशल कोटेर कागजसकल फयशला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर आपिलेर मौजुवात् पडागेल। तत् परे आपिलाण्टेर उकिल चारि टाकार मूल्येर एक केता फेरेस्तेर वराय[2] इंराजी अक्षर ओ एवारतेवइ[3] ·······किता दस्तावेज लम्वरे दाखिल करिल,दृष्ट आसिल। जानागेल जे रस्पाण्डण्टान्, सावेक मुदइगण, मृत वावु द्वारिकादासेर त्यक्तेर तृतीय अंश २५०००० टाका देयाइया पाओनेर जन्ये एइ एजहारे नालिस करिलेक—ये मृत वावुर दुइ स्त्री। प्रथमा स्त्रीर गर्भ हइते, ये ऐ वावुर साक्षाते मृत्यु हय, दुइ कन्या[4] ओ द्वितीया स्त्री, अर्थात् मुषम्मात् शितलवहुर गर्भ हइते एक कन्या जन्मे; ओ ऐ वा(वु)र मृत्युर (पर) मुषम्मात् शितलवहु आपन जीवदशा पर्य्यन्त त्यक्त धन ओ कुटीसकलेर उपरे कावेज थाकिया देना ओ लेना ओ कुटीर कर्म्म जारि करिया मृत्यु हय; ओ ताहार मृत्युर पर उहार कन्या मुसम्मात् नछमन् ओ नछमनेर पुत्रगणेर माधोस्वहाय ओ वेणिस्वहाय त्यक्त धन प्रभृतिते दखिल हइयाछे। ये हेतुक शास्त्र ओ देशेर व्यवहारमते मृत वावुद्वारिकादासेर कन्यागणेर पुत्रगण व्यतित अन्य केह उत्तराधिकारी नहे, ओ वावुद्वारिकादासेर प्रथमा स्त्रीर गर्भज कन्यागणेर मध्ये एक कन्या आमि[5] मुसम्मात वादामुर पुत्र जगन्नाथदास उत्तराधिकारी ओ हकदार वटे। अतएव नालिश करितेछि।

---

१. एजलासेर हुकुमनामार—इति साधीयान् पाठः।
२. द्वाराय—इति साधीयान् पाठः। ३. एवावतेरइ—इति साधीयान् पाठः।
४. कपा—व्यप०। ५. अर्थादित्यर्थः।

ओ जओयावेर खोलासा एइ ये यखन वावुद्वारिकादास आपन जीवद्दशार मुद्दैयार विवाह दिया, ये देना छिल ताहा दिया, विदाय करियाछेन हिन्दु जातिर व्यवहार ओ शास्त्र मते मुद्दैगणेर किछु स्वत्व ओ हिस्या दावि वाकि (रहि)ल ना, ओ यद्यपि मुद्दैगणेर किछु दावि थाकित तवे ऐ वावुर जीवद्दशाते अथवा ताहार मृत्युर पर शीतलवहुर उपर, ये १५ वत्सर पर्य्यन्त कावेज ओ दखिल थाकिया, आपन दौहित्रगणके उत्तराधिकारी ओ रासनसीन कराइया ओ तमलिकनामा लिखिया दियाछेन, आपत्ति करित। ओ जवाव मजवाव (ये)—मुसम्मात् शीतलवहु माधोस्वहायके, ये रामचरणलाल, अर्थात् मुसम्मात् नछमिर पतिर वड पुत्र वटे, रासनसीन् करण असिद्ध, ओ शीतलवहुर मृत्युर पर तमलिकनामा प्रस्तुत हओन ओ मृत वावुर सकल दौहित्रगण तुल्यांशे स्वत्वाधिकारि थाकन सम्वलित वटे, ओ कोटेर हाकिम वारानसेर पाठशालार पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे मुद्दैगणेर दावि डिगरि करिलेन। यथा आपिलाण्ट एइ आपत्तिसकले ये—ऐ व्यवस्था शास्त्र-वहिर्भूत वटे आपिल करिलेक, ओ प्रकाश करिलेक, ओ प्रकाश करे ये उपरेर लिखित हेतु मते शास्त्रानुसारे विरोधीय वस्तुर उपर माधोस्वहाय ए वेनिस्वहायेर स्वत्वा सान्यस्थ ओ प्रामाण्य वटे।

अतएव एइ आदालतेर पण्डित हइते नीचेर सओयालेर जओवे व्यवस्था लओन उचित वोध हइया हुकुम हइलो—ये एइ रोवकारिर नकल ६५ लम्बरे ग्रथित आशल हेवानामा दस्तावेज सम्वलित, एइ आदालतेर पण्डितके अर्पण करा याय—ये वारानस देशेर चलित शास्त्रानुसारे नीचेर सओयालेर जवावे एक सप्ताहेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेन।

सओाल—यद्यपि आगरओयाला महाजन जाति हइते केह एक स्त्री ओ ताहार गर्भज एक कन्या ओ प्रथमा स्त्री; ये पतिर साक्षाते मृत्यु हइयाछे, ताहार गर्भेर दुइ कन्या ओ धनादि त्यक्त

वस्तु राखिया मरे, ओ ताहार पर द्वितीया स्त्री आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त पतिर त्यक्त वस्तुते दखिलकार थाकिया आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके रासून्‌सिन् करिया ऐ समुदय वस्तुर तमलिकनामा व उहादिगके लिखिया दियाथाके तबे केवल द्वितीया स्त्रीर तमलिक मते ताहार कन्यार पुत्रगण मृत व्यक्तिर वस्तुर कर्त्ता हइवेक, किम्बा प्रथमा स्त्रीर, ये पतिर साक्षाते मरियाछे, कन्यागणेर पुत्रगणे कर्त्ता हइवेक, ओ मृत व्यक्तिर द्वितीया स्त्रीर आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके आपन पतिर अनुमति व्यतित रासून्‌सीन करण्, ओ स्त्रीलोक आपनार पतिर त्यक्त स्थावर-किम्वा अस्थावर, सकल आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके तमलिक्करण् शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् ।

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकिउहेनरिटरम्वलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमाइमासीयद्वाविंशतिदिनसम्बन्धिविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं पञ्चषष्ट्यङ्काङ्कितदानपत्रञ्च यज्जुनमासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे पञ्चघटिकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि कश्चिदगरवालामहाजनो व्यक्तिविशेषो द्वितीयविवाहितां पत्नीं तद्गर्भजामेकां कन्यां तथा स्वाग्रे मृतप्रथमपत्नीगर्भजकन्याद्वयं हेमरूप्यकुप्यादिधनञ्च (सं)रक्ष्य दिवं गतः; तदनन्तरं सैव द्वितीया पत्नी स्वजीवद्दशापर्य्यन्तं पतित्यक्तसर्व्ववस्तुन्यायत्तत्वं सम्पाद्य स्वगर्भजकन्याया पुत्रं रासनसीनमर्थाद्दत्तकपुत्रं कृत्वा, अथ च तस्या एव पुत्राय[1] सर्व्ववस्तुनस्तमलिकनामा अर्थात् दानपत्रं लिखित्वा दत्तवती स्यात्, तथापि मृततद्व्यक्तेर्द्वितीयपत्नीकृतदानपत्रानुसारेण तद्गर्भजकन्यापुत्रयोः केवलयोर्मृतव्यक्तेः प्रथमपत्नीगर्भजकन्यापुत्रम(न)पेक्ष्य तस्मिन् सर्व्ववस्तुनि स्वामित्वं न सम्भवति, किन्तु सर्व्वेषामेव मृतव्यक्तेः प्रथमपत्नीगर्भजकन्यापुत्रस्य तथा द्वितीयपत्नी-

१. अथ च तस्या एव पुत्रायास्तस्यैव सर्व्व०—व्यप० ।

गर्भजकन्यापुत्रयोस्तुल्याधिकारित्वात्, उत्तरोत्तराधिकारिक्रमबोधकशास्त्रे दौहित्रविशेषाश्रवणात् पत्यनुमतिव्यतिरेकेण स्त्रीकृतस्य कन्यापुत्रासनग्रीनकरणस्यार्थाद्दत्तककरणस्य, तथा स्वपतित्यक्तस्थावरास्थावरसर्व्ववस्तुनः स्वगर्भजकन्यायाः पुत्रद्वयसम्प्रदानकदानपत्रकरणस्य च शास्त्रासम्मतत्वाच—इति काशीप्रदेशचलितदत्तकमीमांसा-मिताक्षरा-वीरमित्रोदय-कृत्यकल्पदरु-विवाद-चिन्तामणि-प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाक्—इति मिताक्षरा(पृ० २२१)वीरमित्रोदय(पृ० ६६१)ग्रन्थलिखनम् ।। १ ।।

अपुत्रेण सुतः कार्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।
पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसङ्कीर्त्तनाय च ।।—इति दत्तकमीमांसा-(पृ०५) धृतमनुवचनम्[१] ।। २ ।।

अपुत्रे(णे)ति पुंस्त्वश्रवणात् न *स्त्रिया अधिकार इति गम्यते इति ।*

अतएव वशिष्ठः—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् *प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः*—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ७) विवादचिन्तामणि[२]कल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठ-वचनम् ।। ३ ।।

अनेन विधवाया भर्त्रनुज्ञानासम्भवादनधिकारो गम्यते—इति तद्ग्रन्थ-(दमी० पृ० ७)लिखनम् ।। ४ ।।

भारते (१३।४७।२४)स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलःस्मृतः ।
नापहारं स्त्रियःकुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ।।

अपहारमैच्छिकदानविक्रयादिकम् । —इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३८)ग्रन्थलिखनम् ।। ५ ।।

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ।।—इति विवादरत्नाकर (पृ० ५११) कृत्यकल्पतरुवीरमित्रोदयादि(वीमि० पृ० ६२७)ग्रन्थ-धृतकात्यायन(कास्मृ० पृ० ११२)वचनञ्चेति ।। ६ ।।

---

१. विचि० पुस्तके वचनमिदं न प्राप्तम् । २. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते ।

जुनमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिगुरुवासरे घटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

९५—रोवकारि मिसिल आदालत देओनि सदर तारिख २१ माँह आगस्त सन १८३० ई० मतावक ६ माह भाद्र सन १२३७ वाङ्गला रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर रास साहेवेर वैठके ।

कन्दर्पसिंह मोकशेल— आपिलाण्ट ।

मृत राजामोहनलालखार स्त्रीगण राणी सुगन्धलता ओ राणी वङ्गलताप्रभृति— रस्पाडण्टान् ।

आपिलाण्टेर उकिलगण मुनसि ददारवक्स ओ मौलवि करम होसेन ओ स्वयं आपिलाण्ट ओ रष्पाडण्टगणेर उकिलगण मुनसि होसेनआलि ओ मुनसि गोलामवतुल ओ सदासुकपण्डित हाजिर आसिल। ए मकद्दमा एलाका कलिकातार प्रविनशल कोर्टेर रिटरण पौँचन मते ए मासेर १४ तारिखे आमार निकट पुनराय उपस्थित हइया ऐ तारिखेर रोवकारिर लिखित कागज-सकल पडागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया प्रविनशल कोर्ट आदालतेर वाकी कागजात् ओ ए आदालते दाखिल हओया कागजसकल पडागेल। ए मकद्दमार कागज-सकल ओ मोहनलालखाँ आपिलाण्ट ओ राणी शिरोमणि रष्पा-डण्टेर ९५८ लं० मकद्दमा ओ रूपचरणमहापात्र मोफषेल आपि-लाण्ट आनन्दलालखाँएर भ्राता मोहनलालखाँ रष्पाडण्टेर ९५८ लं मकद्दमा वावत् ए आदालतेर फयशलासकलेर द्वारा आमार साव्यस्त हइल—ये राजा अजित्सिंह ओ राणी शिरोमणिर वंशे

दायभागशास्त्र चलित वटे, ओ ऐ शास्त्र ऐ फयशलासकलेर अनुसारे राजा अजित्‌सिंहेर स्त्री राणि शिरोमणिर मृत्युर पर, ये ऐ राजार त्यक्त जमिदारिर उपर उत्तराधिकारि प्रकारे दखिलकार छिल, राजा अजित्‌सिंहेर मातुलपुत्रगण उहार वलवान उत्तराधिकारि ओ उत्तराधि(कार)प्रकारे उहार मतरुकार स्वत्वाधिकार वटे। ओ इहा येओ स्पष्ट—ये मोहनलालखाँएर भ्राता आनन्दलालखाँर नासिक राणि शिरोमणिर लिखिया देओया हेवानामा, ताहाते राजा अजितसिंहेर उत्तराधिकारिगणेर अनुमति ना पाओने असिद्ध ओ मिथ्या हइयाछे, ओ रूपचरण आपिलाण्ट ओ मोहनलालखाँ रस्पाडण्टेर मकद्दमाय, ये आपिलाण्ट आपनाके लक्ष्मणसिंहेर भ्राता श्यामसिंहेर सन्तान करार दिया विरोधीय जमिदारिर कारण नालिष करियाछिल। दाखिल हओया व्यवस्था द्वाराय याहेर ये राणि शिरोमणिर मृत्युर पर यदि राजा अजित्‌सिंहेर कोन निकटस्थ उत्तराधिकारि ना थाकित, राजा अजित्‌सिंहेर मतरुकाते रूपचरणमहापात्रेर उत्तराधिकारि स्वत्व हइत। ओ एइ क्षण कन्दर्पसिंह लक्ष्मणसिंहके राजा अजित्‌सिंहेर आदिपुरुष ओ आपनाके ओ सप्तमपुरुषीय स्वगोत्र वलिया उत्तराधिकारिरूपे विरोधीय वस्तुर दाविदार वटे, ओ आपिलाण्टेर दाखिल करा कुरसिनामा ओ रूपचरणमहापात्र आपिलाण्टेर मकद्दमार आमलि ११८८ शालेर भाद्रमासेर १५ तारिखेर लिखित राणि शिरोमणिर दाखिल करा कुरसिनामा ओ मोहनलालखा आपिलाण्ट राणि शिरोमणि रष्पाडण्टर मकद्दमार दाखिल हओया ऐ राणिर दरखास्तेर नकल द्वाराय जाना याइतेछे ये कन्दर्पसिंह आपिलाण्ट ओ लक्ष्मणसिंह आदिपुरुषेर सहित नवम पुरुष ओ अजितसिंह लक्ष्मणसिंहेर सहित सप्तम पुरुष वटे। आ दुइ व्यक्तिर तपसिल एइ ये।

आदि पुरुष लक्ष्मणसिंह

तस्य पुत्र पुरुषोत्तम

ज्येष्ठ पुत्र संग्राम	प्रतापनारायणमहापात्र
तस्य पुत्र रघुनाथ	द्वितीय तस्य पुत्र सुबुद्धि
तस्य पुत्र रामसिंह	तस्य पुत्र दुर्य्योधन
तस्य पुत्र यशोमन्तसिंह	तस्य पुत्र रसिक
तस्य पुत्र अजितसिंह	तस्य पुत्र वैष्णवचरण
	तस्य पुत्र समिर
	तस्य पुत्र कन्दर्पसिंह

ओ विरोधीय वस्तुर दखिलकार राजा मोहनलालखा राजा अजितसिंहेर सकल मातुलपुत्रगणेर लिखिया देया नादावि द्वाराय आपनाके विरोधीय जमिदारिर स्वत्वाधिकारिर करार देय। अतएव शास्त्र द्वाराय एइ कथार तहकिकात्—ये मातुलपुत्रगणेर लिखिया देओया नादावि मुदै, अर्थात् आपिलाण्टर, दाविर निषेधीय हइते पारे कि ना, आवश्यक वोध हइया, हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल रूपचरणमहापात्र आपिलाण्ट मोहनलालखा रेष्पाडण्ट ओ मोहनलालखा आपिलाण्ट राणि शिरोमणि रेष्पाडण्टेर मकद्दमार दाखिल हओया व्यवस्थासकल सहित एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितेर हाओलात करा याय ये ताहार हष्ट राजा अजित्सिंहेर वंशेर चलित दायभागशास्त्रानुसारे नीचेर लिखित सओालेर जवाव सओयाल पाओनेर तारिख हइते चारि दिवसेर मध्ये दाखिल करे।

सओया(ल)—ऐ व्यवस्थासकल ओ ऐ मकद्दमासकलेर वावत् ए आदालतेर फयशलासकलेर द्वाराय साव्यस्थ आछे ये राजा अजितसिंहेर वंशेर चलित दायभागशास्त्रानुसारे राजा अजितसिंहेर स्त्री राणी शिरोमणिर मृत्युर पर ऐ राजा ओ राणिर त्यक्त विरोधीय वस्तु राजा अजितसिंहेर मातुलपुत्रगणके, ये उहार वलवान् उत्तराधिकारि वटे, अशिवेक, ओ ताहारा ताहार स्वत्त्वाधिकारि वटे; ओ उहादिगेर समीद्ये सगोत्र उत्तराधिकारि हइवेक ना; ओ कागजातेर द्वाराय साव्यस्थ ये ए आदालतेर

पूर्व्व पण्डितगणेर व्यवस्थासकल ओ फयशलासकलेर द्वाराय राणि शिरोमणिर मृत्युर पर मातुलपुत्रगण आपन विरोधीय वस्तुर स्वत्त्वाधिकार थाकनेओ विरोधीय वस्तुके मोहनलालखाँ-यर दखले छाड़िया दिया, ताहार नादावि लिखिया दियाछे। अतएव जिज्ञासा याय ये नादावि लिखिया देओनिया मातुल-पुत्रगण, ये राणी शिरोमणिर मृत्युर पर राजा अजितसिंहेर बल-वान् उत्तराधिकारी ओ विरोधीय जमिदारिर स्वत्त्वाधिकारि वटे, अजित्सिंहेर अतिवृद्धप्रपितामहेर भ्रातार सन्तान, ये स्व-गोत्र वटे, थाकनेओ ऐ सकल वस्तु हइते आपनादिगेर एक्तारे किछु ना राखिया, किम्वा श्राद्ध ओ आपनादिगेर निर्व्वाहार्थे ताहा हइते किछु राखिया, मोहनलालखाके, ये भिन्न व्यक्ति वटे, विरोधीय वस्तुर नादावि लिखिया देओयार क्षमता राखे कि ना, ओ ऐ नादावि आपिलाण्टेर स्वत्वेर ये स्वगोत्र वटे अपचय कारक हइवेक कि ना इति।

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दरराससाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितखरामाष्टेन्दुमिताब्दीयागस्तमासीयैकविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्ग-तप्रश्नपत्रमेवमेतद्विवादनिविष्टपत्रजातान्तर्गतात्रत्यपूर्व्वधर्म्माधिकरणलिखित-द्वीन्द्वष्टेन्दुमिताब्दीयजनवरीमासीयद्वाविंशतिदिवसीयविचारपत्रसंवलितव्यव-स्थापत्रद्वयञ्च यदेतदब्दीयागस्तमासीयसप्तविंशतिदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे न-वमिनटाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते।

राज्ञिशिरोमण्या मरणोत्तरं राज्ञोऽजितसिंहस्य बलवदुत्तराधिकारिवि-वादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्वत्वाधिकार्य्यनभियोगपत्रलेखकमातुलपुत्रकर्तृ-काजितसिंहस्य सगोत्रवृद्धप्रपितामहभ्रातुष्पुत्रसन्ताने वर्त्तमान एव सति तस्मात् सराजकरस्थावरात् स्वायत्तं किञ्चिदप्यरक्षित्वाऽथवा श्राद्धार्थं तथा स्वीयनिर्व्वाहार्थं तस्मादेवसराजकरस्थावरात् किञ्चिद्रक्षित्वोदासीनमोहनलाल-खाँसम्प्रदानकविवादास्पदीभूतवस्त्वनभियोगपत्रदाने यद्यपि तस्मात्सराजकर-

स्थावरात् किञ्चिदप्यरक्षित्वेति[1] कल्पे शास्त्रासिद्धवृत्तिलोपात्मकत्वेन मृतधनिव्यक्तेरजितसिंहस्य श्राद्धार्थमर्द्धस्यारक्षणत्वेन तथान्वयसत्त्वप्रयुक्त[2]-निषिद्धसर्वस्वदानत्वेन लोकविरुद्धत्वादिना च सत्यसत्यपि वाऽर्थिन्येतादृश-सराजकरस्थावरविषयकानभियोगपत्रदानस्य शास्त्रानुसारित्वं नास्ति, तथापि राजाऽजितसिंहवंशचलितदायभागानुसारेण तु तैर्ज्ञानानुसारेण स्वेच्छापूर्व्वक-सम्मत्या दानासिद्धिसाधनबलभीतिच्छलादिविरहेण[3] पुत्रादिसम्मत्या च स-त्यपि राज्ञोऽजितसिंहस्य सगोत्रे वृद्धप्रपितामहभ्रातुष्पुत्रसन्ताने उदासीन-मोहनलालखाँसम्प्रदानकैतादृशसराजकरस्थावरविषयकमप्यनभियोगपत्रं दातुं शक्यते, राज्ञोऽजितसिंहस्य बलवदुत्तराधिकारिमातुलपुत्राणां राज्ञोऽजि-तसिंहस्य वृद्धप्रपितामहभ्रातुष्पुत्रसन्तानस्यार्थिन उदासीनसदृशत्वेन तस्य तन्मातुलपुत्रकर्त्तृकानभियोगपत्रदाने प्रतिबन्धकत्वात्, तादृशस्य च वि-वादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य तेषां तन्मातुलपुत्राणां दायरूपत्वाद्दाय-रूपेण तस्मिन् स्वाच्छन्द्यस्य लोकप्रसिद्धत्वात्। परन्तु एतच्छास्त्रानुसारेण दातुर्द्दोषो भविष्यति। तस्मात् किञ्चिद्रक्षित्वेति कल्पे श्राद्धार्थं तत्सराजकर-स्थावरस्यार्द्धं तथा तस्मादेव स्थावरात् स्वपोष्यवर्गभरणार्हं धनं रक्षित्वा तु ज्ञानानुसारेण स्वेच्छापूर्व्वकसम्मत्या बलभीतिच्छलादिविरहत्वेन पुत्रादि[4]-सम्मत्या च स्वाच्छन्द्येनोदासीनमोहनलालखाँसम्प्रदानकमनभियोगपत्रं दातुं शक्यते। यदि च किञ्चिदित्यनेन मानवर्द्धनमात्रं रक्षितं तथापि पूर्व्वो-क्तज्ञानानुसारेणेत्यादितद्दानरीत्यान्यसम्प्रदानकमपि तद्दातुं शक्यते; परन्त्वे-तद्रक्षणस्याप्यरक्षणसमत्वेन दातुर्द्दोषो भविष्यति। राज्ञोऽजितसिंहस्य बल-वदुत्तराधिकारिमातुलपुत्रकर्त्तृकाजितसिंहस्य त्यक्तस्वदायरूपसराजकरस्थाव-रविषयकोदासीनमोहनलालखाँसम्प्रदानकानभियोगपत्रदानेनाजितसिंहस्य स-गोत्रवृद्धप्रपितामहभ्रातुष्पुत्रसन्तानस्यार्थिनोऽपचयो नास्ति, तत्पूर्व्वमुपचया-भावात्तन्मातुलपुत्रसत्त्वे सगोत्रस्य तस्य स्वत्वाभावात्—इति तद्वंशचलित-दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

---

१. ०त्वे सति—व्यप०। २. ०न्वय०—व्यप०।
३. ०सिसिसाधन०—व्यप०। ४. पुत्रगामादि०—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्तिं तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—इति (दाभा० २४)मनुवचनम्[1] ॥ १ ॥

समुत्पन्नाद्धनादर्द्धं[2] तदर्थं[2] स्थापयेत्पृथक् ।

मासषाण्मासिके श्राद्धे वार्षिके च प्रयत्नतः ॥—इति दायभाग(पृ० २०९।२१०)धृतबृहस्पति(पृ० २१९)वचनम् ॥ २ ॥

निःक्षेपः पुत्रदारांश्च सर्वस्वञ्चान्वये सति ।

आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्त्तमानेन देहिना ॥

अदेयान्याहुराचार्याः—इत्यादि विवादभङ्गार्णव(पृ० १-पृ० ४२१ ख)धृतनारद(नास्मृपृ० १३७)वचनम् ॥ ३ ॥

बलाद्दत्तं बलाद्भुक्तं बलाद् यच्चापि लेखितम् ।

सर्वान् बलकृतानर्थानकृतान्मनुरब्रवीत् ॥—इति मनु(पृ० १६८)-वचनम् ॥ ४ ॥

स्वग्रामज्ञातिसामन्तदायादानुमतेन च ।

हिरण्योदकदानेन षड्भिर्गच्छति मेदिनी ।—इति दायतत्त्व(पृ० १७६)धृतमुनिवचनम् ॥ ५ ॥

पूर्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्योपरमे यत्र (द्रव्ये) स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)ग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

नरकं पीडने तस्य[3] तस्माद् यत्नेन तं भरेत् ॥—इति दायभाग(पृ० ३३)ग्रन्थधृतमनुवचनम् (?) ॥ ७ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारतत्त्व-(पृ० ४)धृतबृहस्पति(पृ० १९)वचनम् ॥ ८ ॥

१, व्यासवचनमिति हारीतवचनमिति वा पठनीयम् ।-तत्र च चतुर्थे पादे-वृत्तिदान न सिद्ध्यति-इति हारीतपाठः, न दानं न च विक्रयः-इति व्यासपाठः । २, तदर्थे-दाभा०।

३, चास्य—दाभा० ।

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभाग(पृ० ३५)-धृतनारद(नामसं० पृ० १५७)वचनम् ॥ ९ ॥

व्यासवचनं तु (स्वामित्वेन दुर्वृत्तपुरुषगोचरविक्रयदानादिना) कुटुम्बविरोधादधर्म्मभागिताज्ञापनार्थं निषेधरूपं न तु विक्रयाद्यनिष्पत्त्यर्थम्—इति तत्करणाद्विध्यतिक्रमो भवति, न तु दानाद्यनिष्पत्तिः—इति च दायभाग(पृ० ३४-३५)ग्रन्थलिखनम् ॥ १० ॥

तदभावे मातुलपुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः तदभावे चाधस्तनसकुल्यानां धनिभोग्यलेपदातॄणां प्रतिप्रणप्तृप्रभृतिपुरुषत्रयाणां क्रमेणाधिकारः। तदभावे पुनरूर्द्ध्वतनसकुल्यानां धनिदेयलेपदातॄणां[1] वृद्धप्रपितामहादिसन्ततीनामासत्तिक्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाग्रन्थ(पृ० २१८)लिखनञ्चेति।

शेतम्बरमासीयसप्तदिनसम्बन्धिभौमवासरे सार्द्धघटिकत्रयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

९६—सओयाल आदालत देओयानी कमिसनरी आतराक मुसरक जिला रङ्गपूर वनामे पण्डितान् सदर देओयानी आदालत सन् १८३० इंरेजी तारिख १० जुन मोतावक १२३७ वाङ्गला तारिख २९ ज्यैष्ठ।

विष्णुराम	मुद्दइ
	पापड
धीरचन्द्रवड़ुया जमिदार	मुद्दायाले
परगणे घूणर्या ओ गयरह	दावि १५०० टाका

१. धनिदेयलेपदातॄणां वृद्धांप्रपितामह०—न्यप०।

वावत् लओयावाद
कउरि[1] परगणार उपस्वत्वे

मुद्दै मजकुर आपन मातुल मेघनारायण चौधुरिर वित्तेर पर दखिलकार थाका, आर मुद्दायाले परगणा मजकुरेर कएक मौजा जवरदस्तीते दखल करा एजहारे उपरेर लिखित मवलग मजकुरेर दायाते मुद्दायालेर नामे नालिष करे। तजविज्कालीन जाना-गियाछे—ये शिवनारायण नामे एक व्यक्ति परगणे लओयावाद कओरिर जमिदार छिल। ताहार मृत्यु हओयार पर तस्य पुत्र शम्भुनारायण आपन पितृवित्तेते दखिलकार हइया निःसन्तान रूपे मृत्यु हय। ए प्रयुक्त शिवनारायणेर दौहित्र मेघनारायण ऐ स्थावर वित्तेर अधिकारी हइयाछिल। कथक दिवस-पर से निःसन्तान मृत्यु हइयाछे। मुद्दै मेघनारायण मजकुरेर भागिनेय हय। से मते सओयाल करा जाइतेछे—ये मेघनारायण निः-सन्तान मृत्यु हओयाते शिवनारायणेर स्थावर वस्तुते, ये ताहार पुत्रे अधिकारी हइया परे मेघनारायणेर हस्तगत हय, शास्त्रा-नुसारे मुद्दै ताहा पाओयार स्वत्ववान् हय कि ना। यदि मुद्दै के ना अर्शे एवं मेघनारायणेर अथवा ताहार पूर्व्वाधिकारीर उत्तरा-धिकारी केह नाथाके, तवे ऐ स्थावर वस्तु काहाके अर्शिते पारे इति।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिसोम-वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि शिवनारायणस्य मृतस्य तत्त्यक्तस्वसम्बन्धिस्थावरवस्तुनि शिव-नारायणस्य पुत्रः शम्भुनारायण उत्तराधिकारित्वेनाधिकारं संपाद्य निःसन्तान एव स्वर्गतः, तदनन्तरं तद्भागिनेयो मेघनारायणस्तदेव वस्तु हस्तगतं (सं)रक्ष्य निःसन्तानो मृतस्तथापि तन्मरणोत्तरं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारे-णाप्यर्थान्मेघनारायणस्य भागिनेय एव तद्ग्रहणे स्वत्ववान् भवति—यत उप-रिलिखितशास्त्रे मृतव्यक्तेर्भ्रातुष्पौत्रपर्य्यन्तोत्तराधिकार्य्यभावे तस्यकथने

[1] कउवि—व्यप०

पितृदौहित्रस्यार्थान्मृतव्यक्तेर्भागिनेयस्याधिकारोऽभिव्यक्तोऽतः सुतरां मृतव्यक्तेस्तद्व्यतिरिक्तो उत्तराधिकारिसामान्याभावस्य तथा मृतव्यक्तेः पूर्व्वाधिकारिणोऽर्थाच्छम्भुनारायणस्योत्तराधिकारिसामान्याभावस्य च सद्भावात्—इति बङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्राधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

तदभावे पितृदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग(पृ०२१८) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

भ्रातृपौत्रस्याभावे पितृदौहित्रस्याधिकारः, धनिपित्रादित्रयपिण्डदातृत्वात्—इति दायक्रमसंग्रहादि(पृ० ७)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

अगस्तमासीयदशमदिनसम्बन्धिभौमवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था इति—

श्रीश्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

९७—सओयाल :—एक व्यक्ति युगि परामाणिकी मर्य्यादार कउडिर दावि करे। अतएव एमत् प्रकार मर्यादार कउडि देया ओ लओया शास्त्रसम्मत कि; उहादिगेर जातिर ओ समाजस्थ लोकेरा स्वेच्छाते विभाग हय—इहार प्रत्युत्तर यथाशास्त्र लिखिवा इति ।

यत्र कश्चिद्‌युगी व्यक्तिविशेषः परमाणिकीमर्य्यादासम्बन्धिकपर्द्दिकाद्यामेकद्रव्यविषयकस्वत्वाभियोगं कुर्य्यात्, तत्र यद्यपि विशेषेण युगीमुपक्रम्य मर्य्यादाद्रव्यस्य दानग्रहणे कुत्रापि शास्त्रे न लिखिते तथापि तत्र यदि तज्जातीयै राज्ञा वा केनचित् संविद्विशेषेणार्थात् समूहैः कैश्चिद्वा कृतसंकेतेन

समूहकार्यचिन्तनाद्यर्थः प्रधानत्वेन व्यवस्थाप्य वृत्तिरुपकल्पिता, अथवैवं तज्जातीयानां पारम्परिकाचारोपि वा भवेत्, अथवा तज्जातीयानां तच्छ्रेणीनां वा धर्म्मो भवेत्, तदैतादृशद्रव्यस्य दानादानयोस्तज्जातितच्छ्रेणितत्समूहस्य वा व्यवहारसिद्धत्वात् तद्दानादानयोर्निष्प्रत्यूहमेव शास्त्रसिद्धत्वम्, यतो यच्छ्रेणीनां यज्जातीयानां वा यथापूर्व्वापरव्यवहारस्तदनुसारेण यस्मिन् विषये विशेषतः शास्त्राज्ञा नास्ति तस्मिन् विषये तच्छ्रेणीनां तज्जातीयानां वा यथा पूर्व्वापरव्यवहारस्तदनुसारेणैव निर्णयस्य शास्त्रसम्मतत्वात्— इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादचिन्तामणिविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

परन्त्वेतद्विवादमूलन्तु नृसिंहपरामाणिके रामकृष्णनयनयोः सहोदरत्वम्, तथा च प्रभुसमर्पितैतद्विवादनिविष्टपत्रजातान्तर्गतार्थिप्रत्यर्थिसम्मतसाक्षिभाषापत्रान्नृसिंहोऽपि कश्चिदासीत्, अनयोरर्थाद्रामकृष्णनयनयोर्भ्रातेति नावगम्यत इति तु विभावनीयम्—

अत्र प्रमाणम्—

तथा च यस्य कस्यचिद् गणस्य या संवित् सैव प्रतिपाल्या। तेन नापितादीनां प्रामाणिकत्वेन ख्यातस्य वचनातिक्रमे दोषो व्यवहारसिद्धः सङ्गच्छते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम्॥ १॥

यो धर्म्मः कर्म्म चैवैषामुपस्थानविधिश्च[1] *यः।*
यच्चैषां वृत्त्युपादानमनुमन्येत तत्तथा॥ (नास्मृ० १३।३)

धर्म्मः पारम्परिकाचारः कर्म्म जीवनानुकूलोचितव्यापारः वृत्त्युपादानमुपादीयमाना वृत्तिः—इति (विवाद)रत्नाकरः (पृ० १७९)।

अनुमन्येत राज्ञा इति शेषः। तथा चैषां पारम्परिकाचारादीन् कोऽप्यन्यथाकर्त्तुं न शक्नुयात् इत्यभिहितम्—इति च तद्ग्रन्थलिखमम्॥२॥

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपादयेत्॥—इति मनु(पृ० २८१)वचनम्॥ ३॥

---

१ कर्म यच्चैषाम्०—नार०।

व्यवहारोऽपि बलवान् धर्म्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारमातृका-(पृ० २८२)व्यवहारतत्त्वादि(पृ० ४)ग्रन्थधृतनारद(नामसं० पृ० ८)-वचनम् ॥ ४ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारमातृका-(पृ० २८२)वीरमित्रोदयादि(वीमि० ख—१८)ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ०१६)-वचनम् ॥ ५ ॥

युक्तिर्लोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका (पृ० २८२)—व्यवहार तत्त्व(पृ० ४)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

४२—लं खास आपिल । सन १८२६ शाल इं० सदर देओ-यानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओाल ।

९८—यद्यपि कोन व्यक्ति दुइ पुत्र राखिया लोकान्तर हय, आर ऐ दुइ पुत्रेर मध्ये एक जन महाव्याधिग्रस्त ओ अपुत्रक, ओ द्वितीय जन सुस्थशरीर थाके, तवे पितार धने ऐ दुइ पुत्र अधिकारी हय कि ना । आर ऐ महाव्याधिग्रस्त व्यक्ति आपन अंशेर दान विक्रयेर क्षमता राखे किं ना । शास्त्रानुसारे इहार व्यवस्था लिखिवा । सन १८३० शाल, तारिख १० जुन ।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिगुरुवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः पुत्रद्वय (स)त्त्वे स्वर्गलोकमगमत् । एकश्च[१] तयोर्द्वयोः पुत्रयोर्म्मध्ये एको महाव्याधिग्रस्तः, अथ च निःसन्तानो द्वितीयश्च स्वस्थशरीरो भवेत् तथापि पितृत्यक्तधने निरुपाधिकपुत्र एक एवाधिकारी, नहि महाव्याधिग्रस्तशरीरोऽपि, यतः शास्त्रेऽन्धत्वपङ्गुत्वक्लीबत्वा-

१ अन्यच्च—व्यप० ।

दिनानोपाध्याव्यतनोः भक्ताच्छादनातिरेकेण धनांशाभावप्रतिपादनात् । सिद्धे चांशाभावे सुतरां तद्दानविक्रययोः क्षमताभावः-इति वङ्गदेशचलित-मनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादभङ्गा-र्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

क्लीबोऽथ पतितस्तज्जः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽचिकित्स्यरोगाद्या भर्त्तव्याः स्युर्निरंशकाः ॥-इति दायभागादि-(पृ० १०२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१४०)वचनम् ॥ १ ॥

अनंशौ क्लीबपतितौ जात्यन्धबधिरौ तथा ।

उन्मत्तजडमूकाश्च ये च केचिन्निरिन्द्रियाः ॥—इति मनु(९।२०१) वचनम् ॥ २ ॥

मृते पितरि न क्लीबकुष्ठ्युन्मत्तजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशभागिनः ॥

तेषां पतितवर्ज्जेभ्यो भक्तवस्त्रं प्रदीयते ॥-इति दायभाग (पृ० १०२) विवादभङ्गार्णव(२ विवा० पृ० २११ ख)दायतत्त्वादिग्रन्थ(दात० पृ० १७२)धृतदेवलवचनम् ॥ ३ ॥

अतीतव्यवहारान् ग्रासाच्छादनैर्बिभृयुः ।

अन्धजडक्लीबव्यसनिव्याधितादींश्चाकर्म्मिणः । पतिततज्जातवर्ज्जम्-इति दायभागादि(दाभा० पृ० १०२)ग्रन्थधृतबौधायवचनञ्चेति ॥४॥

आगस्तमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकत्रयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल—

९९—कालीप्रसादरायघोषाल-आपिलाण्ट-कोर्ट कालिकाता

दुर्गाप्रसाद-रस्पाडण्ट-मार्ष्टसाहेव—

७—नम्बर। आपिल सन् १८२७ साल—

यद्यपि एक व्यक्ति एक स्त्री ओ एक पुत्र ओ एक कन्या राखिया मृत्यु हय, आर ऐ पुत्र आपन माता ओ भगिनीर संमुखे अविवाहित लोकान्तर हय; ताहार पर ऐ कन्यार एक पुत्र जन्मिया आपन मातामही ओ मातार जीवद्दशाय ओ महाव्याधि ओ यक्ष्माकाश ग्रस्त हइया, एक स्त्री ओ दुइ कन्या राखिया, आपन मातार संमुखे मृत्यु हय। अतएव ऐ व्यक्ति ये ताहार लोकान्तर हइले, ताहार पुत्र आपन मातार संमुखे लोकान्त(र) हय, ताहार पितार उत्तराधिकारिरा थाकिते उहार स्थावरास्थावर धन काहाके अर्शे, एवं दौहित्रेर स्त्री ताहा पत्तनि पुरते विक्रय करिते पारे कि ना-शास्त्रानुसारे इहार प्रत्युत्तर भाषाय एइ सओयालेर पार्श्वे लिखिवेन इति। सन १८२० शाल तारिख १५ जुलाइ।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयागस्तमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिगुरुवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः एकां पत्नीमेकं पुत्रं कन्याञ्चैकां (सं)रक्ष्यैनं लोकमत्यजत्, अथ च स बालोऽपि मातृभगिन्योरग्रेऽविवाहित एव स्वर्लोकमगमत्, तदनन्तरञ्च तस्याः कन्यायाः पुत्रो भूत्वा स्वमातामहीमात्रोर्जीवद्दशावधिमहाव्याधियक्ष्माकासग्रस्तः[1] सन्नेव स्वमातृसमक्षमेकां पत्नीं द्वे च कन्ये (सं)रक्ष्य मृतः स्यात्, तथाप्यविवाहितस्य मृतस्य तस्य मातृसंक्रान्ते स्थावरास्थावरधने, तस्यां मातरि मृतायां स्वमातामहीवर्त्तमानावधि वा कुष्ठयक्ष्माकासग्रस्तस्य पितृदौहित्रस्याधिकारो नास्ति, शास्त्रेऽचिकित्स्यरोगिणोऽनधिकारबोधनात्, यक्ष्माकासादिरोगेऽचिकित्स्यत्वस्यायुर्व्वेदसिद्धत्वात्, चिकित्सयाप्यनुपशमेन मरणपर्यन्तस्थायित्वाच्च, शास्त्रे कुष्ठिनोऽप्यनधिकारबोधनात्, कुष्ठयक्ष्माकासरोगग्रस्तस्य तु सुतरामनधिकारः। यदन्यतरसत्त्वे अनधिकारस्तत्समुदायसत्त्वेऽनधिकारस्य लोकव्यवहारप्रसिद्ध-

१ मातामहि०—व्यप०। २. यक्ष्माकाशग्रस्थः—व्यप०।

त्वात् । एवञ्च सति तत्सत्त्वस्याप्यसत्त्वसमत्वाद्दौहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहसन्ताना(ना)मेवाधिकारो, न तु भगिन्यादीनाम् इति। मातुलधनेऽधिकारिणस्तु पत्न्याः कीदृशेऽपि पतिमातुलधनस्य विक्रये क्षमता नास्ति, पतिसत्त्वेऽसत्त्वेऽपि वा; स्वसंक्रान्तपतिस्थावरस्यापि स्त्रीकर्त्तृकविक्रयनिषेधोऽस्ति; यतोऽतः सुतरां पत्युर्यद्धनेऽनधिकारः, तस्यास्तद्धने पतिद्वारमन्तरेणाधिकारित्वप्रतिपादकशास्त्राभावेनानधिकारित्वनिश्चयात्, अनधिकारिणो विक्रयासामर्थ्यस्य लोकप्रसिद्धत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागविवादभङ्गार्णवदायतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

क्लीबोऽथ पतितस्तज्जः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽचिकित्स्यरोगार्त्तो भर्तव्याः स्युर्निरंशकाः ।।—इति दायभागादि(दाभ पृ० १०२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २२६)वचनम् ।।१।।

अचिकित्स्यरोगः अप्रतिसमाधेययक्ष्मादिरोगग्रस्तः ।—इति मिताक्षरा(पृ० २२७)ग्रन्थलिखनम् ।। २ ।।

महाशनं महाक्षीणमतीव(च) निपीडितम् ।

शूलशुष्कोदरंश्चैव यक्ष्मिणं परिवर्जयेत् ।।—इति आयुर्वेदीयवचनम् ।।३।।

मृते पितरि न क्लीबकुष्ठ्युन्मतजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशभागिनः ।।—इति दायभागादि(पृ० १०२)ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ।। ४ ।।

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यः धनिदौहित्रस्येव एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्तिक्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ।। ५ ।।

पत्नी च भर्तृधनं भुञ्जीतैव, परं न तु तस्य दानाधानविक्रयान् *कर्तुमर्हति*—इति दायभाग(पृ० १७१)ग्रन्थलिखनम् ।। ६ ।।

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ।।—इति च तद्ग्रन्थ(दाभा०पृ० १७१)धृतकात्यायन(कास्मृ पृ० ११२)वचनम् ।। ७ ।।

व्यवहारोऽपि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते ।
युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥--इति व्यवहारमातृकाधृत (पृ० २८२)वचनञ्चेति ॥८॥

द्विजस्वरमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

१००—रोवकारि कोर्ट आपिल एलाके कलिकाता तारिख ५ माह मार्च्च सन १८३० इं मतावक २३ माह फाल्गुण सन १२३६ वाङ्गला रोज शुक्रवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत गेलब्र वटकाओएटरि माष्टर साहेवेर वैठके ।

मतालके जिलेय शहर
मुषम्मात चित्रादासी शाएला

इंराजी १८२९ सालेर शेतम्वर मासे दाखिल हओया साएलार सओयाल । ऐ तारिखेर लिखित ए अदालतेर हुकुमानुसारे यजसाहेवेर पाठान कागजात ओ गङ्गागोविन्द तरपसानिर सओयाल ओ अनुमति ओ चन्द्रमुखिदास्यार मजाहेमदाराणेर सओयालात ओ इं १८१२ शालेर नवम्वर मासेर १० ओ २४ तारिखेर लिखित ७५८ लम्वरेर मकद्दमा वावत सदर देओयानि अदालतेर दुइ किता रोवकारि, ये ताहाते रामकुमारन्यायवाचस्पति आपिलाण्ट, कृष्णकिङ्करतर्कभूषण रेस्पाडण्ट छिल, ऐ आदालतेर पण्डितगणेर दुइ किता व्यवस्था ओ इं १८२५ शालेर माइ मासेर २ ओ ३० तारिखेर लिखित सदर अदालतेर २ किता रोवकारिर नकल ये ताहाते साएलार श्वशुर रामजयसाहा साएल छिल ओ साएलार उकिलगण रसिकलालदत्त ओ

शिवनारायणचट्टोपाध्यायेर अद्य दाखिल[1] पण्डितगणेर व्यवस्था सम्वलित अद्य ताहारदिगेर ओ गङ्गागोविन्दसेनेर उकिल रूपचन्द्रसेन ओ मजाहेमदाराणेर उकिल राजनारायणदत्तेर समीपे दृष्टे आसिल। जानागेल ये गङ्गागोविन्दसेन म० ९६०० टाकार दाविते ये शाएलार पति रामलोचनसाहार इजारा लभ्य वावत ताहार तालुक निलम हइया उसुल हइयाछिल। ऐ रामलोचनेर नामे नालिष करिया डिगरि हासिल करिया डिगरि जारिते डिगरिर देइनदारेर जायदाद करारे नीलेर कुटी ओ वास्तु वाटी प्रभृति वस्तुसकल निलाम कराइयाछे। ओ देइनदारेर पिता रामजयसाहार दरखास्त मते ऐ जायदादके आपन जायदाद जाहिर कराइया छिल। सदर देओयानि आदालत हइते ऐ निलाम वद्ध हइया ऐ सेन(?)प्रति नालिसेर अनुमति हय। तत परे ऐ सेनेर नालिष मते रामलोचनसाहा ओ ताहार पिता(र) नामे १ लम्बरे नीचेर कुटिर डिगरि ओ २ लम्बरे वास्तु वाटीर डिगरि जिलार आदालते हासिल हइल। ए आदालते ऐ जायदादसकल रामजयसाहार थाकन हेतुक जिलार दुइ डिगरि वद्ध हइल, ओ एइ क्षणे ऐ रामजयसाहार मृत्युर पर ऐ डिगरिदार रामजयसाहार त्यक्त समुदय वस्तु देइनदारेर स्वत्व करार दिया ताहा विक्रय द्वाराय डिगरि(र) टाका आदाय हओयार जन्ये जिलार आंदालते[2] दरखास्त दाखिल करिलेक, ओ ताहार रोवकारिर हुकुम सादर हओनेर परे साएला एइ एजहारे एक किता दरखास्त दाखिल करिलेक ये रामजय मजकुर अनेक दिव(स) हइते आपन पुत्र रामलोचनके आज्ञावाहक ना थाकन प्रयुक्त पुत्रत्व हइते दूर करियाछे। रामलोचन मजकुर पितार वस्तु हइते नैरास हओनेर पर मेहनत ओ मशमत ओ इजारा प्रभृति द्वाराय दिन जापन करित, ओ वाङ्गला १२३५ शालेर १६ वैशा-

१ अद्य दाखिल अद्य प०—व्यप०। २ आदालतेर—व्यप०।

खे रामजय मजकुर आपन वृद्धावस्थार हेष्टे साएलार नाबालक पुत्रेर, ये उहार पौत्र वटे, ओ प्रतिपालन ओ तरबियतेर करा आपन स्वकृत समुदय स्थावर ओ अस्थावर वस्तु साएलाके हेवा करियाछे। जिलार यजसाहेव ऐ हेवा सिद्धि कि असिद्धि-ताहा सदर देओयानि आदालतेर पण्डितगण हइते ज्ञात हओनार्थे ऐ आदालते आपन रोवकारि पाठाएन। सदर आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्था पौंछिल। परे ऐ हेवानामाके असिद्ध ज्ञान करिया ऐ जायदाद विक्रयेर हुकुम एइ हेतुते सादर करिलेन-ये रामलोचन-साहा व्यतित मृत रामजयसाहार अन्य सन्तान नाइ। अतएव ताहार स्वत्वार प्रमाण तलब करार आविश्वक हइल ना। ओ रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकद्दमा वावत सदर आदालतेर इनफशालि रोवकारिर नकलेर द्वाराय जानागेल ये ऐ मकद्दमाते ऐ आदालतेर हाकिमगणेर मध्ये हुजुर हइते पण्डितगणेर निकट ए विषयेर सओयाल हइल—ये यद्यपि कोन ब्राह्मण ज्येष्ठ पुत्र विद्यमान राखिया थाकने आपन पैतृक ओ स्वकृत स्थावर ओ अस्थावर समुदय विषय कनिष्ठ पुत्रके दान करे, से दान वङ्गदेशचलित शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना।

ऐ आदालतेर पण्डितगण ताहार जवावे लिखिलेन–ये यद्यपि कोन ब्राह्मणजाति ज्येष्ठपुत्र वर्त्तमान थाकनेओ पैतृक ओ स्वकृत समुदाय स्थावर वस्तु ज्येष्ठ पुत्रके हेवा करे से हेवा सिद्ध वटे। किन्तु ये हेतुक पैतृक स्थावर समुदाय वस्तु दान करण शास्त्रनिषिद्ध वटे, अतएव पैतृक समुदाय वस्तु दान करणे पाप हय—वङ्गदेशचलित शास्त्रानुसारे ए व्यवस्था वटे इति।

सदर आदालतेर पण्डित ए मकद्दमार यवावे लिखेन—ये यद्यपि हेवार लिखित वस्तुसकल रामजयसाहार स्वकृत हय, ओ साहा मजकुर आपन पुत्र ओ पौत्र मौजुद थाकनेओ ताहा समुदाय आपन पुत्रवधूके ताहा दान ओ विक्रय करणेर सम्वन्धे उहार क्षेमता कर्त्तृत्व नियमे हेवा करिया थाके, एमत व्यवस्थार

अनैक्य हेतुक ये रोवकारिर समुदय वृत्तान्ते ओ हुजुरेर समर्पित हेवानामा[1] सठता ओ क्रोधमते हइयाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध हइते पारे ना। केन ना शास्त्रानुसारे हाकिमके उचित ये ये हेवा, सठता ओ क्रोध क्रमे हइछे, अकर्म्मण्य करेन। ओ रोवकारिर बिस्तीर्ण मते पिता एक पुत्रके हेवाकरण, ओ आपन आप्राप्तव्य-वहार ओ अज्ञान पुत्र ओ अप्राप्तव्यवहार पौत्र थाकनेओ पुत्र ओ पौत्रेर भरण पोषणेर योग्य मिनाह ना दिया हेवार अयोग्य वस्तु हइते आपन पुत्रवधूके हेवाकरण शठता व्यतित हय ना। अतएव एइ दृष्टे ये आदालतेर फयशला ओ सदर देओयानि आदालतेर रोवकारिर नकलेर अनुसारे ए मकर्द्दमाते साव्यस्थ नाइषे। रामजयसाहा हेवा करणेर पूर्व्व आपन पुत्र रामलोचनके त्याग करियाछे, ओ ऐ हेवानामा लिखन कालिन रामजयसाहा ऐ रामलोचनेर सम्बन्धे शठता ओ क्रोध क्रमे साएलाके हेवा करियाछे, वरं ऐ हेवानामाते शाएलार अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर, ये रामजयेर पौत्र वटे, प्रतिपालनेर उल्लेख लिखा नाइ। ताहाते साएलार सम्बन्धे हेवानामार लिखित समुदय वस्तु विक्रय ओ दानकरार क्षमता नाइ। ओ काहारो पिता विना क्रोधे ओ अप-राधे पुत्र त्याग करे ना। ओ रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकर्द्दमार व्यवस्थार नकलेर द्वाराय जाहेर ये वड पुत्र थाकनेओ कनिष्ठ पुत्रके हेवा करा सिद्ध ओ ताहाते ज्येष्ठ पुत्रेर भरण-पोषणेर परिमाणेर किछु मिना लिखा नाइ। किन्तु से मकर्द्दमाते ब्राह्मण जाति शब्द लिखा गियाछे। ओ साएला अन्य पण्डितानेर व्यवस्था एइ कारण दरपेष करिलेक ये रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मक-र्द्दमार व्यवस्था शास्त्रानुसारे ब्राह्मण ओ हिन्दु अन्य जाति स्वत्वे एक वटे; ये हेतुक रामकुमारन्यायवाचस्पति आपिलाण्ट ओ कृष्ण-किङ्करतर्कभूषण रष्पाडण्टेर मकर्द्दमा वावत सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ ए मकर्द्दमा वावत व्यवस्था,

१. हेवानामार—व्यप०।

याहा आदालतेर सञोयाल मते ऐ पण्डितगण दियाछेन, अनैक्य। अतएव उभय व्यवस्थार अनैक्यता परिष्कारार्थे, ओ आरो एइ ये रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकर्द्दमार ब्राह्मणेर स्वत्वे ये हुकुम आछे, ताहा समस्त हिन्दु जातिर मकर्द्दमाते सम्पर्क राखे ना। हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ओ दुइ व्यवस्थार नकल सहित इङ्गरेजी चिटीर सम्वलित सदर आदालतेर रेजष्टर साहेवेर निकट एइ प्रार्थनाय पाठान जाय—सहेव मौफुफा ताहाके पण्डितगणेर निकट समर्पण करिया ताहार दृष्टे दुइ व्यवस्थार अनैक्यतार परिष्कारेर विषय एवं वाचस्पतिर मकर्द्दमार व्यवस्थार आज्ञा समस्त हिन्दु जातिर मकर्द्दमार सम्पर्क राखन, ना राखन विषये व्यवस्था दाखिल करेन—ताहा अनुग्रह पूर्व्वक ए आदालते पाठाएन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रप्रतिरूपपत्रं सदरदेञोयानीपदवाच्यधर्म्माधिकरणाधिकृतपूर्व्वापरपण्डितव्यवस्थाद्वयञ्च यदेतदब्दीयजुलाइमासीयचतुर्विंशतिदिवसीयशनौ घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः श्रीमतीचित्रादासीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थातो ब्राह्मणब्राह्मणेतरभेदकर्त्तृकभेदो नास्ति शास्त्रे एतद्विषये जातिविषये जातिविशेषाश्रवणात्, तथापि रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः शास्त्रबहिर्भूतत्वात् श्रीमतीचित्रादासीयविवादसन्बन्धिव्यवस्थायाश्च शास्त्रसम्मतत्वात्, शास्त्राशास्त्रकृतयोस्तु व्यवस्थयोर्भेदोऽस्त्येव। पैतामहे स्थावरास्थावरधने पितुः पुत्रस्य च तुल्यस्वामित्वेन बहुस्वामिकैकपदार्थस्य परस्परानुमतिव्यतिरेकेणैककर्त्तृकदानविक्रयादौ स्वांशदानादिसिद्धिव्यतिरेकेण परांशदानाद्यसिद्धेः, शास्त्रलोकव्यवहारोभयसिद्धत्वात्, पैतामहे स्थावरधने पितुर्व्विशेषतः स्वच्छन्दवृत्तिताया अपि निषेधाच्च, शास्त्रे पुत्राद्यनुमतिव्यतिरेकेण स्वोपार्जितसर्व्व-

स्थावरास्थावरधनदानस्यापि निषेधोऽस्ति, पोष्यवर्गस्यावश्यम्भरणीयत्वात्, तथान्वयस्वत्वप्रयुक्तसर्व्वस्वदानस्य[1] वृत्तिलोपस्य च निषेधात्। एवञ्च सति रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादनिविष्टव्यवस्थाधृतप्रायश्चित्तबोधकवचनस्य प्रशक्तिस्तु[2] तत्रैव, यत्र केनचिद् दुर्वृत्तपुरुषेण[3] तादृशविधिमुल्लङ्घ्य[4] स्वोपार्जितसर्व्वधनस्य दानं कृतं स्यात्, विहितपोष्यवर्गभरणस्याननुष्ठाना-न्निन्दितस्य चान्वयस्वत्वप्रयुक्तसर्व्वस्वदानस्य वृत्तिलोपस्य च करणात्। न तु पैतामहस्थावरधनदाने तत्र पितुरेकस्य प्रभुत्वाभावात् शास्त्रानुसारात् किञ्चिदपि पुत्रवधूकर्त्तृकोपकाराश्रवणादुत्तराधिकारिकोटावनन्तर्भूतत्वात्, विना निमित्तं स्वभिन्नस्य कस्यापि कृतर्णानपाकारित्वाच्च तस्याः। तथा च कृते सत्यपि स्वाज्ञोल्लङ्घनकारित्वेन पुत्रत्यागे अप्राप्तव्यवहारत्वेनाविदितगु-णदोषेष्वथ च मुख्योत्तराधिकारिषु, स्वस्यार्थाद्रामजीसाहस्य तथार्णग्रस्तस्य[5] स्वपुत्रस्यार्थाद्रामलोचनसाहस्य कृतर्णापाकर्त्तृषु सत्स्वेवाप्राप्तव्यवहारेषु पौत्रेषु, तेषामदत्त्वा स्वकुटुम्बादन्यमदत्त्वा च पुत्रवधूसम्प्रदानकदानपत्रस्य छलादिव्यतिरेकेणासम्भवात्। अथ च यद्यप्राप्तव्यवहाराणां तेषां भरणार्थ-मेव तद्दानपत्रं दत्तं स्यात्, अथ च तस्य छलादिकं नाभिमतं स्यात्, तदा पुत्रवधूमर्थात्तन्मातरं मध्यस्थां कृत्वैव पौत्रसम्प्रदानकं कुतो न दत्तम्-एता-दृशरीत्याप्यदानात् छलादेः स्पष्टतरतया प्रतीतेः छलादिकृतव्यवहारे पराव-र्त्तनीयत्वस्य शास्त्रसिद्धत्वात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायक्रमसंग्रह-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥—

अत्र प्रमाणम्—

भूर्य्या पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा।
तत्र स्यात् सदृशं स्वाम्यं पितुः पुत्रस्य चैव हि॥

इति दायभाग(पृ० २६)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (१।१२१)वचनम्॥१॥

स्वभागान्[6] यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥

—इति तद्(दाभा० पृ० ३५)ग्रन्थधृतनारद(नामसं १४।४२)वचनम्।२।

---

१ °थान्वयस्वत्वप्रयुक्तसर्व्वस्व०—व्यप०। २ प्रशक्तिस्तु—व्यप०। ३ पुरुषेता०—व्यप०।
४ °पुरुषेणादृश—व्यप०। ५. ग्रस्थस्य—व्यप०। ६. °स्वानंशान्—नामस०।

पिता चेत् पुत्रान् विभजेत्तस्य स्वेच्छा स्वयमुपात्तेऽर्थे[1]। पैतामहे तु पितापुत्रयोस्तुल्यं स्वामित्वम् ॥ —इति तद्ग्रन्थ(दाभा० पृ० ३१) धृतविष्णुवचनम् ॥ ३ ॥

यदि पिता पुत्रान् विभजति तदा स्वोपार्ज्जितेऽर्थे न्यूनाधिकविभागं स्वेच्छया पुत्रेभ्यो दद्यात् । पैतामहे तु नैतत्, यस्मात् तत्र तुल्यं स्वामित्वम्, न पुनः पितुः स्वच्छन्दवृत्तिता—इति तद्(दाभ० पृ० ३१)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

पूर्व्वोक्तगुणवत्त्वादिनिमित्तेनापि पितामहधनस्य भूमिनिबन्धद्विपद-(न्यतम)स्वरूपस्य न्यूनाधिकदाने पितुर्न प्रभुत्वम्—इति दायक्रमसंग्रह-(पृ० ४०)ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

स्थावरं द्विपदञ्चैव यद्यपि स्वयमर्जितम् ।
असम्भूय सुतान् सर्व्वान् न दानं न च विक्रयः ॥—इति दायभागादि(दाभा०पृ० ३५)ग्रन्थधृतवचनम् ॥ ६ ॥

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।
नरकं पीडने चास्य तस्माद् यत्नेन तं भरेत् ॥ —इति मनु(?)वचनम् ॥ ७ ॥

निःक्षेपः[2]पुत्रदाराधिः सर्व्वस्वञ्चान्वये सति ।
आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्त्तमानेन देहिना ॥
अदेयान्याहुराचार्य्याः—इत्यादि विवादभङ्गार्णवादि(विभ०पृ० ४२१ ख)-ग्रन्थधृतनारद(नामस० ५।५)वचनम् ॥ ८ ॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्तिं तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥
—इति व्यास[3](धको० पृ० १५८७)वचनम् ॥ ९ ॥

विहितस्याननुष्ठानान्निन्दितस्य च सेवनात् ।
अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणां नरः पतनमृच्छति[4] ॥ इति प्रायश्चित्तविवेक-(पृ० १०)धृतयाज्ञवल्क्य(३।२१९)वचनम् ॥१०॥

---

१. °मुपार्जिते—यास्मृ० । २. निक्षेपं पुत्रदारं च —नामस० ।
३. मनु०—व्यप० । ४. °मिच्छति—व्यप० ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥
एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।
स्वर्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः ॥ —इति दायभागादि(पृ० २५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥११॥

प्रतिपन्नं स्त्रिया देयं पत्या वा सह यत् कृतम् ।
स्वयं कृतं वा यदृणं नान्यत् स्त्री दातुमर्हति ॥

—इति विवादभङ्गार्णवादि(१ विवा०पृ०२०६ क)ग्रन्थधृततद्(याज्ञ० २।४६)वचनम् ॥ १२ ॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः ।—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८)ग्रन्थलिखनम् ॥१३॥

पितरि प्रोषिते प्रेते व्यसनाभिप्लुतेऽपि वा ।
पुत्रपौत्रैर्ऋणं देयं निह्नवे साक्षिभावितम् ॥
इति विवादभङ्गार्णव (पृ०१७८ ख) धृतयाज्ञवल्क्य(२।५०)वचनम् ॥१४॥
योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।
यत्र वाप्युपधिं पश्येत् तत्सर्व्वं विनिवर्तयेत् ॥—इति मनु (८।१६५)-वचनञ्चेति ॥ १५ ॥ ० ॥ ० ॥

दिजम्बरमासीयैकत्रिंशद्दिनसम्बन्धिभृगुवासरे घटिक(।)त्रयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था ॥ ० ॥

श्रीदुर्ज्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

१०१—प्रभुसमर्पितैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिकृतस्य रामकुमार-न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिप्रश्नस्यैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनपण्डितद्वयलिखितव्यवस्थापत्रं कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिकोर्टपीलाख्यधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतस्य चित्रादासीयविवादसम्बन्धिप्रश्नस्यैतद्धर्म्माधिकरणपण्डि-

तस्थानाभिषिक्तहीरानन्दमिश्राख्यपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रमन्यदप्यङ्गरेजीलिपिसमभिव्याहृतविचारपत्रद्वयं तत्प्रेषितमेवं यशहरजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतस्य चित्रादासीयविवादसम्बन्धिप्रश्नस्यास्मल्लिखितव्यवस्थापत्रं चावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण निवेदनं क्रियते ।

रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थैतद्धर्म्माधिकरणे अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वादशाधिकाष्टादशशताब्दे एतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनपण्डिताभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रव्यवहारोभयावलोकनेनैवोपस्थापिता । एतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिभिस्तदनुसारेणाज्ञायां दत्तायां सत्यां वङ्गदेशे तादृशव्यवहारः शास्त्रतोऽपि दृढीभूतः । अतएव मुद्रायन्त्रालये मुद्रितः । एवञ्च सति वङ्गदेशचलितशास्त्रेऽपि प्रायशो मुनिवचनानां ग्रन्थानां वा परस्परमनैक्यमस्त्येव । तथापि यन्मतं यस्मिन् देशे पूर्व्वापरप्रचलितं भवति तस्मिन् देशे तदेव रक्षणीयम्, अन्यथा प्रजाप्रक्षोभः स्यात् । अथ च वङ्गदेशीयैः सर्वैरेव प्राचीनार्व्वाचीनैः ग्रन्थकारैः स्वस्वग्रन्थेषु जीवति पितरि पुत्राणां पैतृकधने पैतामहधने च किञ्चिदपि स्वत्वं नास्तीति लिखितम् । केषुचिद् ग्रन्थेषु विवादभङ्गार्णवप्रभृतिष्वर्व्वाचीनेषु पुत्रे विद्यमाने तदनुमतिं[2] विना पितुः स्वार्जितस्थावरस्य[3] पैतृकस्थावरस्य वा समुदायस्य दानविक्रयनिषेधकान्येतद्धर्म्माधिकरणपण्डितस्थानाभिषिक्तहीरानन्दमिश्राख्यपण्डितलिखितव्यवस्थालिखितवचनानि लिखित्वा इदमपि लिखितं पुत्रानुमतिं विना पितुः स्वार्जितस्थावरस्य पैतृकस्थावरस्य वा समुदायस्य दानविक्रयकरणं नोचितं भवतीत्येव । तादृशवचनानां तात्पर्य्यार्थः—यदि च पिता तदेव शास्त्रोक्ताज्ञाजातमुल्लङ्घ्य[4] स्वोपार्जितस्थावरसमुदायस्य पैतृकसमुदायस्य वा पुत्रानुमतिं विना दानं विक्रयं वा करोति, तदा तद्दानं विक्रयो वा सिद्ध्यत्येव, किन्तु पितुः शास्त्रोल्लङ्घनजन्यः प्रत्यवायो भवति । तत्रापि यदि छलादिना क्रोधादिना वा तादृशदानं विक्रयं वा करोति तदा न सिद्ध्यतीत्यपि लिखितम् । एवञ्च सति रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः श्रीमतीचित्रादासीयविवादसम्बन्ध्यस्मल्लिखितव्यवस्थातो वास्तवमनैक्यं नास्त्येव । प्रकृते तु

१. सङ्ग—व्यप० । २. अनुमतिम्विना—व्यप० ।
३. °वार्ज्जित—व्यप० ४. शास्त्रोर्द्ध—व्यप० ।

यशहरजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतांगरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीयषष्ठदिवसलिखितविचारपत्रान्तर्गतवृत्तान्ते सति, तत्समर्पितदानपत्रलिखितवृत्तान्ते च सति, एकमात्रपुत्रस्य पितुर्व्यवहारयोग्ये तस्मिन्नेकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने अप्राप्तव्यवहारेषु कतिपयेषु पौत्रेषु च विद्यमानेषु तेषामन्नाच्छादनोपयुक्तमपि धनमसंरद्य पुत्रवधूं दानविक्रयस्वत्वाधिकारिणीं कृत्वा व्यावहारिकैतादृशसर्वस्वदानस्य छलादिकं विना असम्भव(त्वे)न तादृशदानस्य छलादिकृतत्वं क्रोधादिकृत(त्व)ञ्च (अतस्तस्माद्) दानासिद्धिप्रमाणीभूता व्यवस्था मया दत्ता। अत्र यद्यपि कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयविचारपत्रद्वये तद्दानपत्रे रामजीसाहसंज्ञकस्याप्राप्तव्यवहाराणां पौत्राणामर्थादर्थिन्याश्चित्रादास्याः पुत्राणां भरणपोषणं लिखितं नास्ति; अतएवार्थिन्याश्चित्रादास्या दानपत्रलिखितवस्तुनः समुदायस्य दानविक्रयादिकरणक्षमता नास्तीति लिखितमस्ति। परन्तु तद्दानपत्रे दात्रा रामजीसाहसंज्ञकेन लिखितम्—एतस्य दानविक्रययोः स्वत्वाधिकारोऽस्त्येव; एतद्विषये मया किंवा ममान्यैः कैश्चिदुत्तराधिकारिभिः प्रातीच्छा क्रियते चेत्तर्हि सा प्रातीच्छा न ग्राह्या नैव शुद्धा भवतीति। अतएव तद्दानपत्रे एतादृशलिखनेनाप्यर्थिन्याश्चित्रादास्यास्तद्दानग्रहीत्र्या यदि तद्धने दानविक्रयादिकरणक्षमता न भवति। तर्हि तद्दानपत्रं तस्याः स्वत्वोत्पत्तेः प्रमाणं कथं भवति। तद्दानपत्रमप्रमाणञ्चेत् कथं तत् प्रमाणेन तद्दानसिद्धिरिति। एवञ्च सति यदि जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृततद्विचारपत्रलिखितवृत्तान्तेन तद्दानपत्रेण वा छलादेः क्रोधादेर्वा निश्चयो वास्तवं न भवति तदा चित्रादासीयविवादसम्बन्धिन्यस्मल्लिखितव्यवस्था सुतरां प्रचारणीया नैव भवति, किन्तु रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिनी व्यवस्थैव प्रचारणीया भवति। यदि च तद्विचारपत्रेण दानपत्रेण वा छलादेः क्रोधादेर्वा वास्तवं निश्चयो भवति तदा चित्रादासीयविवादसम्बन्धिनी अस्मल्लिखितव्यवस्थैव प्रचारणीया भवति। एवञ्च सति एतद्धर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितद्वयसम्मता व्यवस्था चैतद्धर्म्माधिरणनियुक्तैकपण्डितसम्मतव्यवस्थया परावर्त्तनयोग्या न भवतीति। अतएव एतद्धर्म्माधिकरणपण्डितस्थानाभिषिक्तहीरानन्द-

मिश्राख्य पण्डितलिखितव्यवस्थालिखितेन रामकुमारन्यायवाचस्पतीय-विवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः शास्त्रबहिर्भूतत्वादिति। अनेनापि रामकुमार-न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिनी व्यवस्था परावर्त्तनयोग्या भवितुं न शक्नोति—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटी-कादायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुदायक्र-मसंग्रहादिग्रन्थानुसारेण निवेदनम्—इति

अत्र प्रमाणानि—प्रभुसमर्पितव्यवस्थात्रयलिखितानि चतुर्व्विंशति-संख्याकानि ॥ २४ ॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्ज्जितम्।
असम्भूय सुतान् सर्व्वान् न दानं नच विक्रयः॥
इत्येवमादिकम् तदप्येवमेव वर्णनीयम्।
तथापि कर्त्तव्यपदमवश्यमत्राध्याहार्य्यम्॥

तेन दानविक्रयकर्त्तव्यतानिषेधात् तत्करणाद्विध्यतिक्रमो भवति, न तु दानाद्यनिष्पत्तिः, वचनशतेनापि वस्तुनोऽन्यथाकरणाशक्तेः—इत्यादि दायभाग(पृ० ३५)ग्रन्थलिखनम् ॥ २५ ॥

देशजातिकुलानाञ्च[1] ये धर्म्माः प्राक्प्रवर्तिताः[2]।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा—इति विवादभङ्गार्णव-ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० २१)वचनम् ॥ २६ ॥

देशस्य जातेः सङ्घस्य धर्म्मो ग्रामस्य यो भृगुः।
उदितः स्यात् स तेनैव दायभागः प्रकल्पयेत्॥—इति दायतत्त्वादि-(दात० पृ० १६५)ग्रन्थधृतकात्यायन (पृ० १०७)वचनम् ॥ २७ ॥

(लोक) धर्म्मशास्त्र(यो) स्तु विरोधे लोकव्यवहार एवादरणीयः—इत्याह स एव—

धर्मशास्त्रविरोधे तु युक्तियुक्तो विधिः स्मृतः।
व्यवहारो हि बलवान् धर्म्मस्तेनावहीयते।
हीयते अवगम्यते, हीगतावित्यस्माद्धातोः। अतएव बृहस्पतिः—
केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः।
युक्तिहीनविचारे तु धर्म्महानिः प्रजायते॥

१. कुलादीनाम्—बृस्मृ०। २. तत्प्रवर्त्तिताः—बृस्मृ०।

युक्तिर्न्यायः, स च लोकव्यवहारः—इतिव्यवहारमातृका (पृ० २८२) इति व्यवहारतत्त्वादि(व्यत० पृ० ४)ग्रन्थलिखनम् ॥ २८ ॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति दायभागादि-(दाभा० पृ० १३)ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ २९ ॥

यदि च परस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागरूपं दानमेव करोति तदा उदासीनवत् सिद्ध्यत्येव स्वार्जिते पैतामहेऽपि स्थावरादौ धने । परन्तु पुत्रानुमतिं विना पैतामहस्थावरं ददतः पितुर्दुरदृष्टमेव भवतीत्येव तत्त्वम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(पृ० ४८ क)लिखनम् ॥ ३० ॥

नहि यः पुत्रादिशरीरदाने प्रभुः स स्थावरदाने पुत्राद्यनुमतिं विना न प्रभुरिति वक्तुं युज्यते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥ ३१ ॥

एवञ्च यः कश्चित् पिता शास्त्रमुल्लङ्घ्य कस्मैचित् पुत्राय अन्यस्मै वा स्वपैतृकं स्वार्जितं वा समस्तमर्द्ध वा स्थावरमन्यस्मै ददाति तत्तु दानं सिद्ध्यत्येव । इदं कामक्रोधच्छलादिविभक्तत्वे सत्येव । परन्तु शास्त्रोल्लङ्घनजन्यं दुरदृष्टं भवति । इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(२ विवा० पृ० ६४ ख)लिखनम् ॥ ३२ ॥

द्वैधे बहूनां वचनम्—इत्यादि व्यवहार[1]तत्त्वादि (व्यत० पृ० ३३) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।७८) वचनञ्चेति ॥ ३३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

सदर नेजामतेर आदालतेर पण्डि(ते)र प्रति प्रश्नः—

(प्रथम) प्रश्नः—

---

२. व्यवहारतत्त्वे गौतमवचनमिति पठितम् ।

१. अत्यंत—न्द्र्प०

१०२—व्रजनाथ नामे व्यक्तिर आपन सन्तान माडडशाहाके वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय। तत् पर माडडसाहा आपन खुल्ल पितामही श्रीमतिराममणि ओ आपन पितृसया श्रीमति अलकमणि ओ आपन मातुल[1] गौरहरिसाहाके वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय। ओ माडडसाहार उपरेर लिखित तृतीय व्यक्तिर वेतिरेक अन्य कोन अधिकारि(र) अभाव। एमत स्थले शास्त्रानुसारे ताहार पित्रेर ओ स्थावर अस्थावरादी त्यज्य वस्तुर उपरेर तृतीय व्यक्तिर मध्ये को अधिकारि हय इति ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीय प्रश्नः—

यद्यपि स्यात् उपरेर लिखित तृतीय व्यक्तिर केह माडडशाहार वस्तुते अधिकारि ना हय, एमत स्थले भूस्वामि अर्थात् कम्पानि वाहादुर ऐ वस्तुर अधिकारि हयेन कि ना। यथाशास्त्रानुसारे उपरेर लिखित प्रश्नद्वयेर व्यवस्था संस्कृत ओ भाषा वचने लिखिवेन! इति सन १२३६ साल तारिख।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयमार्च्चमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि व्रजनाथनामा कश्चिद् व्यक्तिविशेषो माडडसाहानामानमेकं पुत्रं संरक्ष्य मृतः(स्यात्)तदा व्रजनाथनाम्नस्त्यक्तसमस्तधने तत्पुत्रस्य माडड[2]साहासंज्ञकस्योत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति तद्धनं माडडसाहासंज्ञकस्यैव जातम्। अतस्तन्मरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तद्धनं भवति। तत्र यदि माडडसाहासंज्ञकः पितामहभ्रातृपत्नीं राममणीं पितृष्वसा(रम्) अलकमणीं मातुलं गौरहरिसाहानामानं च संरक्ष्य मृतःस्यात्, अथ च माडडसाहासंज्ञकस्योपरिलिखितव्यक्तित्रयव्यतिरिक्ताधिकार्य्यभावे तच्छ्राद्धपिण्डदाने तत्त्यक्तधने च तन्मातुलस्य गौरहरिसंज्ञकस्याधिकारः, पुत्रपौत्रप्र-

१. स्त्री—व्यप०। २. साडडसाहा—व्यप०।

पौत्ररूपापत्यपत्न्यादिमातामहपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकार्य्यभाव एवं मातुलस्याधिकारित्वेन, मातुलातिरिक्तराजातिरिक्ताधिकारिसामान्याभावे मातुलाधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्, सति मातुले राज्ञोऽधिकारप्रतिपादकशास्त्राभावाच्च।

द्वितीयप्रश्नोत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्य्यवसन्नमिति पृथ(ङ्न)लिखितम्—इति वङ्गदेशचलितशुद्धितत्त्वदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पुत्रो भ्राता पिता वापि मातुलो गुरुरेव च।

एत्ते पिण्डप्रदा ज्ञेया सगोत्राश्चैव बान्धवाः ॥ इति शुद्धितत्त्वादि(पृ० ३८६)ग्रन्थधृतप्रचेतोवचनम् ॥ १ ॥

मातुलो भागिनेयस्य स्वस्रीयो मातुलस्य च। इत्युपरिलिखितग्रन्थ-(शुतत्त्व० पृ० ३८७)धृतशातातपवचनम् ॥ २ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागदायतत्त्वादि(दातपृ० १८८)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥ ३ ॥

प्रपितामहसन्तानस्य दौहित्रान्तस्य मृतभोग्यपिण्डदातुरभावे मृतदेयमातामहादिपिण्डदानेन पिण्डानन्तर्य्यान्मातुलादिग्रहणार्थं बन्धुपदं प्रयुक्तवान् याज्ञवल्क्यः—इत्यादि दायभाग(पृ० २०६)ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

तदभावे मातामहस्तदभावे मातुलस्तदभावे मातुलपुत्रस्तदभावे मातुलपौत्रः—इति दायक्रमसंग्रह (पृ० ६) लिखनम् ॥ ५ ॥

दौहित्रान्तप्रपितामहसन्तानाभावे मृतदेयमातामहादिपिण्डभोक्तॄणां तद्दातॄणां चासत्तिक्रमेण मातामहमातुलतत्सुतपौत्रप्रमातामहतत्सुतपौत्रप्रपौत्राणां पूर्व्वपूर्व्वाभावे परंपरोऽधिकारी—इति विवादभङ्गार्णव(२ विवा० पृ० ३६५ क)ग्रन्थलिखनं चेति ॥ ६ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

एतदब्दीयापरेलमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

सओयाल—

१०३—शूद्रजातिर मध्ये एक व्यक्ति स्वोपार्ज्जित स्थावरादि धने अधिकार थाकिया परलोक हओयार पर ताहार पुत्र तद्विषये उत्तराधिकारिसत्वे अधिकारि हइया ऐ समस्त वस्तु आपन विमाताके हेवा करिया मृत्यु हइयाछे। ए स्थले ऐ हेवार वस्तु सकल विमातार स्त्रीधन हय कि ना। परे ऐ विमाता केवल आपना पतिर भागिनेय विद्यमाने हेवार स्थावरादि सम्पदाय वस्तु स्वजातीय एक जनके हेवा करियाछे। यद्यपि सपत्निर पुत्रेर हेवा अनुसारे ऐ वस्तु विमातार स्त्रीधन हइया थाके, तवे एमत् वस्तु ऐ विमातार दान करा सिद्ध हय कि ना—यथाशास्त्र इहार उत्तर लिखिवा इति।

जिलार जओयाव—

एइ सओयालेर उत्तर निवेदन करितेछि—यथा ऐ पुरुषे विमाताके पैतृक आपन धन हेवा अर्थात् दान करियाछे से दान, एवं ऐ स्त्रीलोक ये सपत्निपुत्र हइते लब्ध धन दान करियाछे, से दान कि प्रकार व्यक्त लिखा नाहि मते ऐ हेवा-द्वयेर किरूप शब्द प्रयोग आछे, ताहा ना जानाते ऐ दान सिद्धि हयोया नाहओया दुइ प्रकार निवेदन करि। यथा दान सिद्धि ना हओयार ये २ हेतु आछे, ताहा विने ऐ पुरुष आपन सत्वे त्याग करिया विमाताके ऐ स्थावरादि सकल धन दिया थाके तवे ऐ सपत्निपुत्र देया धन भर्त्तृदत्त स्थावरातिरिक्त स्त्रीधन हय। एमत् सौदायिक स्त्रीधन दान सिद्धेर ये २ कारण आछे ताहा विने ऐ स्त्रीलोक आपन सत्व त्याग करिया दिया थाके, तवे से दान अर्थात् हेवा सिद्ध हय। आर ऐ पुरुष कि स्त्रीलोक दान सिद्धि नाहयोयार ये २ कारण आछे से कारणे दियाथाके, तवे दान सिद्धि हयना। दान

असिद्धेर कथक हेतु लिखि। यथा—कामे भये क्रोधे[1] पीडाते भ्रमे शोके रोगे अथवा प्रतिलाभेच्छाते अर्थात् कोण शरते अपात्रके पात्र शङ्काते एवं उन्मादादिते दिया थाके तवे से देया सिद्ध हयना। तार प्रमाण कथक लिखि। यथा—

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः।
तथोत्कोचपरीहासव्यत्यासच्छलयोगतः॥
प्रतिलाभेच्छया दत्तमपात्रे पात्रशङ्कया॥

इत्यादि नारद्–कात्यायन–मुनि प्रभृति लिखित नाना वचनादि। ताहासकल लिखाते अधिक हय। मते किछु लिखिलाम्। ऐसकल हेवाते कि २ शब्द प्रयोग आछे, कि अभिप्राय, ये हओया ताहा ना जानाते सिद्ध हओया नाहओया दुइ मतेरि कारण यथाशास्त्र निवेदन करिलाम्। साहेव कर्त्ता येमत् अभिप्राय निवेदनमेत(त्) इति।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं व्यवस्थापत्रद्वयञ्च दानपत्रद्वयञ्च यदेतदब्दीयापरेलमासीयचतुर्विंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यदि शूद्रजात्यन्तःपाती कश्चिद् व्यक्तिविशेषः स्वोपार्ज्जितस्थावरादिधने आयत्तत्वं सम्पाद्य मृतस्तदनन्तरं तत्पुत्रोऽपि स्वपितृत्यक्तधने उत्तराधिकारित्वेनाधिकारी भूत्वा तदेव सर्वं वस्तु स्वविमात्रे दत्त्वा मृतः, तदा तत्वेवं दत्तं सर्वं वस्तु विमातुः स्त्रीधनं भवितुं न शक्नोति, देवीप्रसादसंज्ञकसपत्नीपुत्रलिखितचितवासीसंज्ञकविमातृसम्प्रदानकदानपत्रे तेनैव देवीप्रसादेन लिखितं त्वया यथाशक्ति अस्माकं पुरुषानुक्रमेण धर्म्मार्थं ये क्रियाकर्म्मादयः प्रवर्त्तितास्तान् संरक्ष्य भुज्यताम्—इति। अत्र वैतादृश-लिखनेन चितवास्यास्तद्धने दानविक्रयानधिकारः। यस्मिन् धने दानविक्रयानधिकारः स्त्रियास्तद्धनं स्त्रीधनं भवत्येतद्विधायकशास्त्राभावात्। एवं

१. क्रोधे क्रोधे—व्यप०।

तद्दानात् परं सैव विमाता केवलं स्वपतिभागिनेये विद्यमाने सति दानकृत-स्थावरादि सर्वं वस्तु स्वजातीयायैकस्मै कस्मैचिद्दत्तवती स्यात् तत्रोपरिलिखित-प्रकारेण तदेव सर्व्वं वस्तु विमातुः स्त्रीधनं न भवति। अतएव तस्यैव वस्तु-नस्तया विमात्रा कृतदानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति अस्वामिकृतत्वात्, अस्वामिकृतदानस्य विक्रयस्य च आधेश्च परावर्त्तनीयत्वात्—इति वङ्ग-देशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहवि-वादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥–इति मनु-(पृ० ८।१९९) वचनम् ॥ १ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गार्णवादि-(१ विवा ३१७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन(पृ० ७९)वचनञ्चेति ॥२॥

एतदब्दीयमैमासीयअष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिक-यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०४—रोवकारि मिसिल आदालत दे्ओयानि सदर सन १८३१ इङ्गरेजि तारिख १५ जानेओरि मतावक सन १२३७ वाङ्गला तारिख ३माघ रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तकीयू हेनरि टरम्वल साहेवेर वैठके।

काशीनाथदत्त मतफार श्रीकरुणा(मयी) ओ गयरह—
आपिलाण्टान्

चन्द्रमाला मतफार स्वामी जयचन्द्रघोष—रस्पाडण्ट

आपिलाण्टदिगेर मध्ये एक जन रामकिशोरदत्तेर उकिल मुनशी दादारकुस ओ वङ्गचन्द्रदत्त, नवालगेर माता कालाचाँद-

दत्त मतफार. स्त्री मसम्मात कृष्णप्रिया ओ काशीनाथदत्त ओ मसम्मात करुणामयी मतफारदिगेर नाबालग पुत्र भैरवचन्द्र-दत्तेर अछिमदान नारायणघोष उकिल मुनशी गोलाम बतुल हाजिर हइल। आपिलएटदिगेर मध्ये एक जन रामकिशोरदत्त ओ मसम्मात कृष्णप्रिया ओ गयरह् सओयाल ए मकर्द्दमार तजविज सानि प्रार्थनाय, ताहार सम्पर्केर कागजात सहित, आर सन १८३० इङ्गरेजी नवम्वर मासेर २४ तारिखेर हओया ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम नशष्टर साहेवेर हुकुम माफिक मकर्द्दमार कागज अद्य आमार वैठके उपस्थित हइया नालिसि, आरजि, ओ सन १८२७ इङ्गरेजि जुलाइ मासेर ३ तारिखेर ओ सन १८२८ इङ्गरेजि जानेओरि मासेर १७ तारिखेर लिखित ए मकर्द्दमार खास आपिल मञ्जुरिर रोवकारिसकल ओ सन १८३० इ० जुलाइ मासेर १५ तारिखेर हओया ए मकर्द्दमा आखेरि रोवकारि ओ अद्य जरुरि कागचसकल रस्पाडएटेर उकिल सदासुकपण्डितेर समक्ष्ये दृष्टे आशील। ए आदालतेर काएम-मकाम पण्डित हीरानन्दमिश्रेर एजाहार असिद्ध सम्व लित आपिलाएट ओजरातेर दृष्टे जे सेइ वुनियादे मकर्द्दमार तजविज हइयाछे, ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लिखित व्यवस्था लओन उचित वोध हइया हुकुम हइल-ये एइ रोवकारिर नकल आर जाहाङ्गिरनगरेर कोर्ट आपीलेर पण्डितेर आसल व्यवस्था ४४ लम्वर तथाकार नथीर सामिल, ओ ए आदालतेर नथिर सामिल रष्पाडएटेर दाखिल करा व्यवस्था सहित ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओयाले करा-जाय, एइ हुकुमे जे उपरेर व्यवस्थासकल वेत्ता हइया सप्ताह मध्ये जवाव लिखेन-ये ऐ व्यवस्था वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे सिद्धि कि असिद्धि मात्र। पण्डितेर व्यवस्था दाखिल हओयार पर आपिलाएटेर तजविज सानिर सओयालेर सम्पर्के मनाशीव हुकुम प्रकाश पाइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरग्वलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयपञ्चदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितजाहाङ्गिरनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रमेवमेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिसमुपस्थापितमेतद्धर्म्माधिकरणीयव्यवस्थापत्रञ्च यत्फेब्रवरीमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

उपरिलिखितव्यवस्थापत्रद्वयान्तर्गतजाहाङ्गिरनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रोपरिलिखितात् प्रश्नात् कीर्त्तिनारायणदत्तस्य मरणोत्तरं तद्योग्यांशे शास्त्रानुसारेण तत्पुत्रस्याधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरमनुमानादूनविंशतिवर्षोत्तरं विंशतिवर्षोत्तरं वा कीर्त्तिनारायणदत्तस्यैको दौहित्र उत्पन्न इति ज्ञातम्। तथा सति कीर्त्तिनारायणदत्तस्याप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य मरणोत्तरं तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य ये उत्तराधिकारिणस्त एव तद्धनाधिकारिणो भवन्ति । एवञ्च सति वङ्गदेशचलितशास्त्रे एतादृशं किमपि प्रमाणं लिखितं नास्ति यदनुसारेणोपरिलिखितप्रकारेण विवादास्पदीभूतधनस्वामिनः कीर्त्तिनारायणदत्तपुत्रस्याप्राप्तव्यवहारस्य मरणसमये तत्पुत्रमारभ्य पितृदौहित्रपर्य्यन्ताभावे तदानीं विद्यमानस्य तत्पितामहस्य तदभावे तदानीं विद्यमानायास्तत्पितामह्यास्तदभावे तदानीं विद्यमानानां तत्पि(तृ)व्यानां तदभावे पितृव्यपुत्राणां तदभावे पितृव्यपौत्राणां वा अधोलिखितप्रमाणैस्तत्क्षणादेवोत्पन्नं स्वत्वं नश्येत अथवा तन्मरणादूनविंशतिवर्षोत्तरं विंशतिवर्षोत्तरं वोत्पत्स्यमानपितृदौहित्रार्थं तद्धनमस्वामिकमेव तावत्कालपर्य्यन्तं तिष्ठेत् । अथवा तत्पितृदौहित्रोत्पत्तेः प्राक् तद्धनं कोऽपि रक्षेत् । एवं प्रभुसमर्पितव्यवस्थापत्रद्वयान्तर्गतैतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिसमुपस्थापितैतद्धर्म्माधिकरणीयव्यवस्थापत्रे दायभागलिखितं प्रमाणद्वयं लिखितमस्ति । तयोर्म्मध्ये प्रथमप्रमाणेन मातुलस्य मरणोत्तरं तदीयधने ऊनविंशतिवर्षोत्तरं विंशतिवर्षोत्तरं वोत्पन्नस्य भागिनेयस्य स्वत्व-

मुत्पद्यते इत्यर्थो न प्रतीयते। वरं मातुलस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुःप्रपौत्रपर्य्यन्तो न स्यात्, पितृदौहित्रस्तु विद्यते, तदा स एवाधिकारी भवतीत्यर्थः प्रतीयते, प्रकृते तु पितृदौहित्रस्य तदानीं विद्यमानत्वाभावात्। यत्तु तद्व्यवस्थायां द्वितीयं प्रमाणं लिखितं, तस्य चायमर्थः—ये जाता उत्पन्नाः। येऽप्यजाताः भविष्यद्गर्भसम्बन्धाः। ये च गर्भे व्यवस्थितास्तेऽपि वृत्तिमाकाङ्क्षन्ति वृत्तिलोपस्तेषां विगर्हितो भवति—इत्यनेनापि तादृशभागिनेयस्य मातुलधने स्वत्वमुत्पद्यत इत्यर्थो न प्रतीयते, तद्वचनस्य स्वत्वोत्पत्तिकारणत्वाभावात्। अथच दायभागग्रन्थे(पृ० २५)-तद्वचनं विभागप्रकरणे लिखितम्। यदि पित्रा स्वेच्छया क्रमागतधनस्य विभागो विभागप्रतियोगिनीं मातृरजोनिवृत्तिमन्तरा क्रियते तदा विभागोत्तरजातानां वृत्तिलोपापत्तिः,अतएवासौ विभागो न युक्त इति विभागप्रतियोगिनीं मातृरजोनिवृत्तिमन्तरा क्रमागतधनस्य विभागनिषेधार्थं तद्वचनं पञ्चमप्रमाणे स्पष्टीकृतं च। तत्रापि वृत्तिलोपो विगर्हित इत्यत्र वृत्तिशब्दस्यार्थो दायभागटीकाकृतश्रीकृष्णतर्कालङ्कारैर्दायभागटीकाया(पृ० २५)मेवं व्याख्यातः—वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वमिति (दा०भा०टी०पृ० २५)। विवादभङ्गार्णवग्रन्थेऽपि तस्यैव वृत्तिशब्दस्य क्रमगतधनमित्यर्थो व्याख्यातः। अतएव मातुलधनं भागिनेयस्य वृत्तिर्न भवति, तस्य क्रमागतत्वाभावात्। किन्तु आकस्मिकमेव तत्प्राप्तिर्भागिनेयस्य। अथ च वृत्तिलोपो विगर्हित इत्यनेन यदि केनचिद् विभागकरणेन दानविक्रयकरणेन वा कस्यचिद् वृत्तिलोपः क्रियते तदात्वसौ अपराधी भवति। प्रकृते तु विभागादिकरणेन वृत्तिलोपः केनापि न कृतः। अथ च वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थमते दायस्थले विशेषतः स्वत्वकारणं धनस्वामिसम्बन्धो धनस्वाम्योपरमश्च पूर्व्वपूर्व्वसम्बन्धिनामभावश्चेति त्रितयं भवति। अथ च केषाञ्चित् ग्रन्थानां मते जन्मैव पुत्रपौत्रप्रपौत्राणां स्वत्वकारणं भवति। तत्र जन्म द्विविधम्—यस्मिन् काले यस्य गर्भाधानं तदेकविधं यस्मिन् काले गर्भतो निर्गतस्तद् द्वितीयम्। प्रकृते तु कीर्त्तिनारायणपुत्रस्य कीर्त्तिनारायणमरणोत्तरं तद्योग्यांशस्वामिनोऽप्राप्तव्यवहारस्य मरणसमये तद्भागिनेयस्य गर्भसम्बन्धस्याप्यभावेन तत्सम्बन्धस्य दूरापास्तत्वात् तत्त्यक्त(ध)ने तत्स्वत्वोत्पत्तिर्भवितुमश-

क्यैव । अथ चोनषोडशवर्षवयस्कानां बालकानामर्थादप्राप्तव्यवहाराणां धनरक्षणे मुनिभिरुपायः कृतः । तस्मादपि क्लिष्टतमे प्रकृतस्थाने अनियमित-कालेनोत्पत्स्यमानानां धनरक्षणे कोप्युपायो मुनिभिर्ग्रन्थकारैर्व्वा न कृतः । तस्मादपि अनुत्पन्नानां स्वत्वं भवितुं न शक्नोति । तस्मात्प्रभुसमर्पितव्य-वस्थाद्वयं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुमर्हतीति न प्रतिभाति–इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादाय-तत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुःशिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥
एषामभावेपूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।
स्वर्य्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः—इति दायभागादि(दात० पृ० १५१) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१३५) वचनम् ॥ १ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पिता-मही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्व्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदर-पुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायटीका (पृ० २१८) लिखनम् ॥ २ ॥

दौहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहो धनाधिकारी आसन्नत्वात्, तदभावे पितामही—इत्यादि विवादभङ्गार्णव(२ विवा० पृ० ३६४ ख) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तदभावे पितामहाधिकारः दौहित्रान्तस्वसन्तानाभावे पितुरधिकार-वत्—इति दायक्रमसंग्रह (पृ० ७)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

तस्मात् पतितत्वनिस्पृहत्वोपरमैः स्वत्वापगम इत्येकः कालोऽपरश्च सति स्वत्वे तदिच्छातइतिकालद्वयमेव युक्तम् । मातुर्निवृत्तेरजसीतितत् पितामहधनाभिप्रायम् । निवृत्तरजसि पुत्रान्तरसम्भावनाभावात् तदानीमपि पितुरिच्छयैव पुत्राणां विभागः । अनिवृत्ते रजसि क्रमागतधन-विभागे पश्चाज्जातानां वृत्तिलोपापत्तेः । न चासौ युक्तः ।

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः।
वृत्तिं तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—

इति मनुवचनात्, इति दायभागग्रन्थ(पृ० २४)लिखनम् ॥ ५ ॥

वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वम्[1]—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-दायभागटीका(पृ० २५)लिखनम् ॥ ६ ॥

जीमूतवाहनास्तु अनिवृत्ते रजसि क्रमागतधनविभागे पश्चाज्जातानां वृत्तिलोपापत्तेन चासौ युक्तः।

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः।
वृत्तिं तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः।

इति मनुवचनादित्याहुः।

क्रमागतजीवनोपाय एव वृत्तिशब्देनोच्यते—इति तेषामभिप्रायः इति विवादभङ्गार्णव(२ विवा० पृ० ७२ क)ग्रन्थलिखनम् ॥ ७ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्म्या दायो लाभः क्रयो जयः—इत्यादि वचनम् (मनु० पृ० ४२२) ॥ ८ ॥

ततश्च पूर्व्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्योपरमे यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र-निरुढो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)ग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

तथा च तावदन्यतमसम्बन्धाधीनं सद् यत् पूर्व्वस्वामिस्वत्वनाश-जन्यं स्वत्वं तद्वति धने निरूढो दायशब्द इत्यर्थः। न तु स्वत्वनाशानन्तरं चेत्स्वत्वोत्पत्तिरिति, तदा तत्क्षणेऽस्वामिकतया निध्यादिवदुदासीनस्या-प्युपादानात् स्वत्वापत्तिरितिचेन्न, तत्र पुत्रादिसत्ताया एव विरोधित्वस्य पुत्राद्यधिकारबोधकशास्त्रसिद्धत्वात्—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग-टीका(पृ० ५)लिखनम् ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु पितृस्वत्वमेव पुत्रस्वत्वोत्पत्तौ हेतुः। न चैवं पितृस्वत्वे विद्यमानेऽपि तद्धने पुत्रस्वत्वापत्तिः। तत्र पितृस्वत्वनाशकस्यापि सहका-रित्वात्। स्वत्वनाशकश्च मरणपातित्यादि। तेषां स्वत्वनाशकत्वेन स्मृति-प्रतिपादितानां मरणत्वपातित्यत्वादिविशेषरूपेणैवाव्यवहितोत्तराद्यन्त-

१. निरंशित्वम्—दाभाटी०।

भावेण पुत्रस्वत्वोत्पत्तौ हेतुत्वम्—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० ५-६)लिखनम् ॥ ११ ॥

ततश्च उत्पत्त्यैवार्थं स्वामित्वाल्लभेत इत्याचार्य्या मन्यन्ते-इति मिताक्षरा(पृ० १६६)धृतगौतमवचनम् ॥ १२ ॥

अमूलं समूलत्वे वा यस्मिन् गर्भस्थे पित्रादिर्मृतः तत्परम्-इत्यादि-श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० १४)लिखनम् ॥ १३ ॥

पितृनिधनकालीनं वा जीवनमेव पुत्रस्यार्ज्जनं भविष्यति—इति दायभाग(पृ० १६)ग्रन्थलिखनम् ॥ १४ ॥

पुत्रजीवनमेव स्वत्वहेतुः। तत्र पितृनिधनकालः सहकारीत्यर्थः। इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० १६)लिखनम् ॥ १५ ॥

बालदायादिकं रिक्थं तावद्राजानुपालयेत्।

यावत् स स्यात् समावृत्तो यावच्चातीतशैशवः ॥—इति मनुवचनञ्चेति (पृ० ८,२७) ॥ १५ ॥

अथचैतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिसमुपस्थापितैतद्धर्म्माधिकरणीयव्यवस्थालिखितद्वितीयप्रमाणस्य तद्व्यवस्थालिखितपारसिकप्रतिरूपेण यादृशार्थोऽवगम्यते तादृशार्थस्तु कस्मिन्नपि ग्रन्थे न लिखितः। दायभागग्रन्थे तत्प्रमाणस्य यादृशार्थो व्याख्यातः स तु श्रीयुतहेनरीकुलवोरुकसाहेवाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिकृतधर्म्मशास्त्रान्तर्गतवङ्गदेशचलितदायभागप्रतिरूपे इङ्गरेजीलिपिनिर्म्मिते विभागकालद्वयनिरूपणप्रकरणे विंशतिपत्रे एकविंशतिपत्रे च एतद्व्यवस्थायाः पञ्चमप्रमाणेऽपि च स्पष्टीकृतः इति निवेदनमिति।

एतदब्दीयमार्च्चमासीयनवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१०५—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १० माहे माइ सन १८३१ इङ्गरेजि मतावक तारिख २९ माहे वैशाख सन १२३८ साल वाङ्गला वुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तगीओ हेनरि टरम्वल साहेवेर वैठके।

शीउमलुकसिंह— आपिलाण्ट

रामप्रकाशसिंह— रेष्पाडण्ट

आपिलाण्टेर उकिलगण मौलवि नियामत आलि ओ सदासुख पण्डित रेष्पाडण्टेर उकिल मुनसि होसन आलि हाजिर हइल। आपरेल मासेर २७ ओ २८ ओ हाल मासेर ६ तारिखे ए मकद्दमा आमार वैठके उपस्थित हइया ऐ रोवकारिसकलेर विस्तुंर्ण कागजसकल पडागिया स्थकिद स्थिल। अद्य पुनराय उपस्थित हइया एइ मासेर ६ तारिखे आपिलाण्टेर उकिलगण साक्षिदिगेर एजहारेर नकल समस्त जे दाखिल हइयाछिल ओ आवश्यकीय अनेक कागजात पुनराय पडागेल। वोध हइल जे तालुकजखनिर कर्त्ता उभयेर पूर्व्वपुरुष रामरुचसिंह तिन पुत्र राखित। एक जन आपिलाण्ट सिउमलुकसिंहेर पिता भुपनारायण सिंह, ओ द्वितीय पेमनारायणसिंह जे मुकुन्द नामे एक पुत्र ओ दुइ ३ १एक जन वक्तकोङर, द्वितीय मुकुन्दसिंह मजकुरेर माता नियत कोङरके राखिया मरियाछे। आर ऐ रामरुचसिंहेर तृतीय पुत्र हिङ्गलसिंहेर पिता ओ ए मकद्दमार मुद्दालेहे रामप्रकाशसिंहेर पितामह देनजितसिंह, आर इहाओ प्रकाशजे ऐ प्रेमनारायन आपन जीवद्दसाते जखनि तालुक हइते आपन तृतीय हिस्या वावत मुकुन्दसिंह पुत्र ओ मसम्मात वखतकोङर ओ नियत कोङर आपन स्त्रीगणेर नामे प्रत्येकेर अंशेर विना शङ्काय एक केता हेवानामा लिखियादेय, ओ प्रेमनारायणसिंहेर मृत्युर पर ताहार पुत्र मुकुन्दसिंह अप्राप्तव्यवहार कालिन ओ ताहार पर उहार स्त्री मसस्मात वखतकोङर ओ मसम्मात नियतकोङरेर मृत्यु पर मृत भुपनारायणसिंहेर पुत्र शीउमलुकसिंह ओ मृत

देनजीतसिंहेर पुत्र हिङ्गलसिंह वर्त्तमाने आछे। चुडन्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे एइ मकद्दमाते ए आदालतेर पण्डित हइते निचेर सओयालसकलेर जवाव व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल जे मसम्मात वखतकोङर ओ नियतकोङर मुद्दइया वावु सीउमलुकसिंह ओ देनजितसिंह मुद्दालेहेदिगेर नालिसी मकद्दमाय हिजरि स(न) १२६१ सालेर सहर जमादिआओनेर २५ तारिखेर लेखा, मृत प्रेमनारायणसिंहेर लिखित एक केता हेवानामा ओ १८५४ सम्मत मिति कोओयारा वदि सप्तमी तारिखेर लेखा, सीउमलुकसिंहेर लेखा, एक केता एकरारनामा लम्वर १३ ओ १५ सम्वलित एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने समार्पन कराजाय जे सप्ताह मध्ये ऐ सओयालेर जवावे व्यवस्था लिखेन।

प्रथम—एइ जे मुकुन्दसिंह पुत्र ओ मसम्मात वखतकोङर ओ नियतकोङर आपन स्त्रीगणके ताहारदिगेर प्रत्येकेर अंशेर विना शङ्काय ऐ प्रेमनारायण आपन पैतृक अंश हेवा करण शास्त्रानुसारे सिसि[१] वटि कि ना। ओ मसम्मात मजकुरा ऐ हेवा मते मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर हेवा करा तृतीय हिस्या हइते कि परिमाण अंशेर सत्वाधिकारि हइवेक।

द्वितीय—एइ जे मसम्मात मजकुरारा मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर स्थावर वस्तु हइते आपन स्वत्वेर समर्पके[२] ऐ हेवा अनुसारे दान ओ विक्रय ओ अन्य प्रकार हस्तान्तर करणेर क्षमता थाकिवेक कि ना।

तृतीय—एइ जे ऐ मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर ताहार माता नियतकोङर ओ विमाता वखतकोङर ओ ताहार खुडा देन[३]-जीतसिंह से कालिन वर्त्तमान छिल, ओ उहार खुडतात भ्राता शीउमलुकसिंह जिवद्दसाय थाकने प्रेमनारायणेर अंशेर स्वत्वाधिकारि के हइवेक।

---

१. सिद्ध वटे। २. सम्पर्के। ३. दलजीतसिंह।

चतुर्थ—एइ जे यद्यपि मृत मुकुन्दसिंहेर त्यक्त अंशेर दखल ओ कावेजेर सत्वाधिकारि ताहार माता मसम्माता वखतकोङर ओ नियतकोङर हइवेक, तवे उहादिगेर मृत्युर पर ऐ प्रेमनारायण सिंहेर दान करा अंशेर सत्वाधिकारि कोण व्यक्ति, भुपनारायण सिंहेर पुत्र शीउमलुकसिंह किम्वा देनजितसिंहेर पुत्र हिङ्गल सिंह अथवा दुइ जनाइ तुल्यांश हइवेक इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुत-मान्तकीयूहेनरीटरस्वलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमेमासीयैकादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रमेवं तत्समर्पितत्रयोदशाङ्काङ्कितमृतप्रेमनारायणसिंहलिखितदानपत्रं पञ्चदशाङ्काङ्कितश्रीमनोगसिंहलिखितसंवित्(?) पत्रञ्च यत्तन्मासीयैकविंशतिदिनसंबन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तेनैव प्रेमनारायणसिंहेन स्वपैतृकधनस्य स्वांशो मुकुन्दसिंहनाम्ने स्वपुत्राय वखतकुमरिनाम्न्यै नियतिकुमरिनाम्न्यै च स्वपत्न्यै तेषां त्रयाणां दानग्राहिणां मध्ये प्रत्येकमंशसंख्यामकृत्वैव दत्तः स्यात्तदा तद्दानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, शास्त्रीयावश्यकदानादौ सामान्यतः पुत्राणामनुमतेरनावश्यकत्वेनाग्राह्यरूपाया अप्रासव्यवहारपुत्रानुमतेरनावश्यकत्वस्यार्थसिद्धत्वात्, पत्या पत्नीभ्यः स्त्रीधनदानस्यादत्तस्त्रीधनाभ्यस्ताभ्यो वा पुत्रसमानांशदानस्य च शास्त्रीयत्वात्, प्रभुसमर्पितत्रयोदशाङ्काङ्कितदानपत्रेण प्रेमनारायणसिंहस्य पैतृकस्वांशस्य भ्रात्रादिभिः साधारण्याभावावगमेनाभ्रात्रादीनां तत्रानुमतेरप्यनपेक्षितत्वात्, भ्रात्रादीनां साधारण्येऽप्यप्रतिषेधरूपायास्तेषामनुमतेरक्षतत्वाच, पञ्चदशाङ्काङ्कितश्रीमनोगसिंह लिखितसंवित्(?)पत्रेण तथा पर्य्यवसानाच्च । एवं तद्दानानुसारेण पूर्व्वं प्रेमनारायणसिंहस्वत्वास्पदीभूतस्यांशस्य तृतीयांशाधिकारिणस्तत्पुत्रस्य मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्माता नियतिकुमराख्या अंशद्वयाधिकारिणी, तद्विमाता वखतकुमराख्या च

तत्तृतीयांशरूपैकांशाधिकारिणी भवति। यतो यत्र दानादौ दानग्राहिणामंशनियमो न कृतस्तत्र शास्त्रानुसारेण ते दानादिग्राहिणः समानांशिनो भवन्ति। तत्र मुकुन्दसिंहस्य पुत्रमारभ्य दौहित्रपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य तद्दानानुसारेण साधारणधनांशे तन्मातुर्न्नियतकुमराख्याया अधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वाद् इति ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनु(५।१५२)वचनम् ॥ १ ॥

अवश्यकर्त्तव्येषु[1] पित्रादिश्राद्धादिषु[2] स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमेकोऽपि समर्थः कुर्य्याद्—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (पृ०२००) ॥ २ ॥

तत्र तद्विधानबलादेवाधिकारो गम्यते—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (मिता० पृ० २००) ॥ ३ ॥

पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम्।
आधिवेदनिकाद्यञ्च स्त्रीधनं परिकीर्त्तितम् ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (याज्ञ० २।१४३) वचनम् ॥ ४ ॥

यदि कुर्य्यात् समानांशान् पत्न्यः कार्य्याः समांशिकाः।
न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्त्रा वा श्वशुरेण वा॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (याज्ञ० २।११५) ॥ ५ ॥

अप्रतिषिद्धं परममतमप्यनुमतं[3] भवति—इति दत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थलिखनम् (दत्तच० पृ० १२) ॥ ६ ॥

समं स्यादश्रुतत्वादशेषस्य[4]—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखनम् (वी० मि० पृ० ५६५) ॥ ७ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥ ८ ॥

---

१. ०षुच २. पितृश्राद्धादिषु इति मिता० ३. परमनुमतम्—दत्तच०।
४. अविशेषश्रवणे सति समं स्यादश्रुतत्वात्—इति वीमि० पाठः०

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्मातुर्विमातुर्वा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण स्वस्वत्वास्पदीभूतान्तर्गतस्थावरधने अदृष्टार्थं दृष्टादृष्टावश्यककार्यार्थं स्वस्वभरणपोषणार्थं वा दानप्रकारेण विक्रयप्रकारेण वा अन्यप्रकारेण वा हस्तान्तरकरणे क्षमता स्थास्यत्येव, अन्यथा न स्थास्यत्येव। यतश्शास्त्रानुसारेण भर्तृदत्तस्थावरे पत्न्या उपरिलिखितादृष्टार्थादिव्यतिरेकेण यथेष्टदानविक्रयादौ नाधिकारः, पुत्रादिदौहित्रान्तरहितस्य मृतस्य पुत्रस्य धने उत्तराधिकारित्वेन मातुरधिकारे जातेऽपि तस्या उपरिलिखितादृष्टार्थादिव्यतिरेकेण तद्धनेऽपि यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारश्चेति ॥ ०॥

अत्र प्रमाणम्—

भर्त्रा प्रीतेन यद्दत्तं स्त्रियै तस्मिन् मृतेऽपि तत्।
सा यथाकाममश्नीयाद् दद्याद्वा स्थावरादृते ॥

इति मिताक्षरा(पृ० १६६)वीरमित्रोदयादि(पृ० ६६१)ग्रन्थधृतनारद(नामसं० २।२४)वचनम् ॥ १ ॥

अदृष्टार्थे दाने दृष्टादृष्टावश्यककार्यार्थमाधौ विक्रये चास्त्येव पत्न्याः सकलभर्तृधनविषयोऽधिकारः—इति वीरमित्रोदय(पृ० ६३०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

एकत्र *निर्णीतः शास्त्रार्थो बाधकं विनाऽन्यत्रापि प्रवर्त्तते*—इति उपरिलिखितग्रन्थलिखितम् ॥ ३ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तस्यैव मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्मातानियतकोमराख्या तद्विमाता बखतकोमराख्या च तदानीं जीवन्त्यासीत्, तत्पितृव्ये दलजीतसिंहे पितृव्यपुत्रे श्रीमनोगसिंहे च जीवति सत्यपि प्रेमनारायणसिंहस्य पूर्व्वस्वत्वास्पदीभूतांशस्य प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेणाधिकारिण्यौ नियतिकुमरिबखतकुमर्य्याविव[1] भवतः, तयोर्जीवन्त्योः मुकुन्दसिंहपितृव्यस्य पितृव्यपुत्रस्य वा तत्र नाधिकारइति ॥

१ कुमार्यौ व्यप० ।

अत्र प्रमाणानि--प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि सर्व्वाण्येवेति—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि मृतस्य मुकुन्दसिंहस्य त्यक्तधनांशस्य स्वत्वाधिकारिणी तन्माता नियतकुमराख्या प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण जाता, तदा तन्मरणानन्तरं तत्प्रेमनारायणसिंहकृतदानकृतस्यांशस्यान्तर्गतस्य प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण मुकुन्दसिंहस्वत्वास्पदीभूतस्य तत्तृतीयांशस्याधिकारी मुकुन्दसिंहस्य पुत्रमारभ्य पितामहपर्य्यन्तो नास्ति, तत्पितृव्यो भूपनारायणसिंहो दलजीतसिंहो वा कश्चिद् विद्यमानश्चेत्तदा स एव भवति। तौ द्वौ चेद् द्वावेव तुल्यांशिनौ[1] भवतः। पितृव्याणां मध्ये कस्यचिदपि एकस्य तदानीं विद्यमानत्वाभावे तत्पितृव्यपुत्रौ श्रीमनोगसिंहहिङ्गलसिंहाख्यौ द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः। नियतकुमराख्याया बखतकुमराख्यायाश्च प्रत्येकं (?) मरणोत्तरं तयोः स्वस्वत्वास्पदीभूततृतीयांशस्याधिकारी। यदि तयोः प्रत्येकं दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रप्रपौत्रभर्त्तृसपत्नीपुत्रपौत्रप्रपौत्रदुहितृदौहित्रश्वश्रूश्वशुरपर्य्यन्तानां स्त्रीधनाधिकारिणां मध्ये कश्चिन्नास्ति तयोः पतिभ्राता भूपनारायणसिंहो दलजीतसिंहो वा कश्चित् तदानीं विद्यमानस्तदा स एवाधिकारी भवति, तौ द्वौ चेद् द्वावेव तुल्याधिकारिणौ भवतः। तयोर्म्मध्ये एकस्याप्यभावे तयोः पुत्रौ श्रीमनोगसिंहहीङ्गलसिंहाख्यौ द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभदत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५) वचनम्॥ १॥

तत्र च पितृसन्तानाभावे पितामही पितामहः पितृव्यास्तत्पुत्राश्च क्रमेण धनभाजः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २२३)॥ २॥

'पूर्व्वोक्तं स्त्रीधनमप्रजस्यनपत्यायां दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्र-

---

१ तुल्यांशिन्यौ—व्यप०।

अपौत्ररहितायां स्त्रियामतीतायां बान्धवा भर्त्रादयो वक्ष्यमाणा गृह्णन्ति—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २२६) ॥ ३ ॥

अप्रजसः स्त्रियाः पूर्व्वोक्तरूपाया ब्राह्मदैवार्षप्राजापत्येषु चतुर्षु विवाहेषु भार्य्यात्वं प्राप्ताया अतीतायाः पूर्व्वोक्तं धनं प्रथमं भर्त्तुर्भवति, तदभावे तत्प्रत्यासन्नानां सपिण्डानां भवति—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-लिखनञ्चेति (पृ० २२६)।

जूनमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे दत्तेयं मया व्यवस्था इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०६ रोवकारि मिशिल सदर देओयानि आदालत तारिख १८ माइ सन १८३१ साल इङ्गरेजि मोतावक ६ ज्यैष्ठी शन १२३८ साल वाङ्गला रोज वुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरलेन शिलि साहेवेर वैठके—

राजा गोविन्दनाथराय	आपिलाण्ट
गोलालचन्द्र ओरफे लालकावावुगं	रेष्पाडण्ट

आपिलाण्टेर उकिल मुनशि होसेन आलि ओ रेष्पाडण्ट-गणेर उकिल सक मुनशी गोलाम वतुल ओ सदाशुक पण्डित हाजिर आइलेन। एइ मकर्द्दमा एइ माहार १०।१५।१२।१६।१७। तारिखसकले आमार वैठके रुवकार हइया नालिसि आरजि प्रभृति प्रेविनशेल कोर्टेर कागजसकल फयशला पर्य्यन्त ओ एइ आदालते दाखिलि हओया सओयाल जवाव ओ गयरह काय-जात[1] पड़ागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रुवकार हइया गत दिवसेर दाखिल हओया कागजात दृष्टे आसिल। यथा चूडन्त-हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ

१. कागजात।

विशय ज्ञात हश्रोन उचित हइलये अछियतनामा अनुसारे ये तद्वाराय मुतिचन्द्रके पुष्य पुत्र विवेचना करणेर क्षमता राखे कि ना। अतएव हुकुम हइल ये एइ रुबकारिर नकल अछियतनामा सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ हुकुमे समर्पण कराजाय ये निचेर लिखित प्रश्नशकलेर उत्तर जेइन शास्त्रानुसारे यद्यपि थाके नतुवा एतद्देशीय चलित शास्त्रानुसारे दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन।

प्रथम प्रश्न—एइ ये विरोधिय लाटसकलेर कर्त्ता उत्तमचन्द्र ताहार पुष्य पुत्र विवेचना करण जैन्ये ओ उहार सत्व रक्षणार्थे मुतिचन्द्रके ओछि मकरर करिया अछियतनामा लिखियादिया मृत्यु हइल। ऐ मुतिचन्द्र मजकुरके आपन जीवत दशाय पुष्य पुत्रेर विवेचना करणेर सावकाश ना हइया प्राप्ति हय। अतएव मुतिचन्द्रेर मृत्युर पर उत्तमचन्द्रेर स्त्री मुसम्मात मायाकोङर पुष्य पुत्र विवेचना करणेर क्षमता राखे किना।

द्वितीय प्रश्न—यद्यपि जेइन शास्त्रे थाके तवे ऐ शास्त्रानुसारे ज्येष्ठ पुष्य पुत्र हइते पारे किना।

तृतीय प्रश्न—एइ ये जेइन शास्त्र मते कत वतसरेर पुत्र दत्तक हइते पारे, एवं ताहार संख्या कि।

चतुर्थ प्रश्न—एइ ये पुष्य पुत्र राखनेर एवं ताहार सिद्धि हश्रोनेर जैन्ये कि कि नियम वटे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरलेनसिलीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमेमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितमसीयतनामाख्यं पत्रं च यदेतदब्दीयजुनमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिबुधवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशवोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतसराजक(र)स्थावरसमुदायस्य स्वामी उत्तमचन्द्रनाहारः स्वकीयपोष्यपुत्र[1]विवेचनाकरणार्थं मतिचन्द्रनाम्नोऽसीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगं कृत्वा तस्मै चासीयन्नामाख्यं पत्रं लिखित्वा दत्त्वा मृतः स्यात्तस्यैव मतिचन्द्रस्य स्वजीवनदशायामुत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रविवेचनाकरणस्या[2]-वकाशेऽजाते सत्येव मरणेनोत्तमचन्द्रस्य पत्नी मायाकोमराख्या पोष्यपुत्रविवेचनाकरणक्षमतां रक्षत्येव[3] जैनशास्त्रानुसारेण[4] पतिमरणानन्तरं पुत्रवत्याः पत्न्याः पतिवत् कार्य्यमात्रकरणे स्वाच्छन्द्येन[5] पुत्रशून्यायाः[6] पत्यनुमतौ सत्यामसत्यां वा ज्ञातीनाम्[7] आज्ञायां सत्यामसत्यां वा सर्व्वथैव पोष्य-[8]पुत्रकरणक्षमताया अर्थसिद्धत्वात्। तत्र चोत्तमचन्द्रनाहारेण स्वपितुः पालकपुत्राय मतिचन्द्राय स्वकीयपोष्यपुत्रविवेचनाकरणाज्ञायां दत्तायामपि दैवात् तदकृत्वैव मतिचन्द्रस्य मरणे[9] सत्यपि जैनशास्त्रानुसारेण पत्यनुमतिमन्तरेणापि पोष्यपुत्रग्रहणाधिकारिण्याः पतिमरणानन्तरं पतिवत् स्वाच्छन्द्येन, कार्यमात्राधिकारिणश्चोत्तमचन्द्रनाहारस्य पत्न्या मायाकोमराख्या(या)स्तद्विवेचनाकरणक्षमतायामपि बाधकाभावाच्चेति ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्

यस्या स्त्रिया भर्त्ता[10] नास्ति सा यद् भव्यं तद्भावयतु-इति *गौतमप्रश्नी*-यग्रन्थधृतवर्धमानस्वामिवचनम् ॥ १ ॥

अस्मिञ् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे कुरुजङ्गलदेशः स्थितः। तस्मिन् हस्तिनापुरे वज्रजङ्घाख्यो राजाऽभूत्। तस्य मह यवतीयतिदेवता वज्रमतीपट्टराज्ञी[11] आसीत्। तस्मिन्नेव नगरे कमलकान्ताख्यः कश्चिदेको धनी स्थितस्तस्य कमलाश्रीनाम्नी पत्नी बभूव। तस्य श्रेष्ठिनो

---

१. पौष्यपुत्र—व्यप०। २. पुष्पपुत्र—व्यप०। ३. रक्षत्येव—व्यप। ४. जेन—व्यप०। ५. स्वाच्छन्देन—व्यप०। ६. पुत्रशुन्यायाः—व्यप०। ७. यतीनाम्—व्यप०। ८. पौष्य—व्यप०। ९. मार्गे—व्यप०। १०. भत्ता—व्यप० ११. यट्ट०—व्यप०।

द्वात्रिंशत्कोटिपरिमिता मुद्राः स्थिताः। तासु मध्येऽष्टकोटयो मुद्रा मृन्मध्ये निखाताः[1] पुनरष्टौ[2] कोटयो मुद्रास्तरणीषु, व्यवहारार्थं स्थापिताः, पुनरष्टौ कोटयो मुद्राः देशान्तरे व्यवहाराय प्रेषिताः, तदनन्तरमष्टौ कोटयो मुद्राः गृहेषु स्थापिताः। एवं त्रिंशत्सहस्रोत्तरद्विलक्षपरिमिता धेनवः स्थिताः। एवं तस्य पञ्चशतपरिमिता अधिकारिणः स्थिताः। तेषु मध्ये एको गाथापतिवंशोद्भवः सुमतिशिरोमणिनामधेयो[3] महामतिरासीत्। स तु धनिना कमलाकान्तेन पुत्रवन्मन्यते। स तु कमलाकान्तः किञ्चित्कालानन्तरं ज्वरातुरः सन् परलोकं गतवान्। ततः सप्तवर्षानन्तरं स गाथापतिवंशोद्भवः सुमतिशिरोमणिर्विद्युत्पातेन[4] प्रणष्टः। तदनन्तरं कमलाश्रियाः सहायाभावाद्धनरक्षाप्रमादो जातः। तदैकस्मिन् समये उदासीनतया मनस्ये[5] तद्विवेचितमिति। यदात्मीयं विना संसारादिरक्षा नो भवितुमर्हति, अत एकः पालकपुत्रो विधेयः। ततस्तस्मिन्नेव समये तदुद्यानपालेनागत्य श्रेष्ठिकां प्रति निवेदितम्। यदशोकवाटिकायां पञ्चदशशतर्षिभिर्युक्तश्चतुर्व्विधबोधशास्त्री (य) धर्मघोष[6] सरितानामाचार्य्यस्समागतः[7]। तस्य दर्शनार्थं हस्तिनापुरवासिभिस्तत्रैव गम्यत इति। तत उद्यानपालाभिहित निशम्य कमलाश्रिया श्रेष्ठिकया धनवत्या तद्दर्षेर्दर्शनार्थं तत्रैवोपस्थितम्। (तत्र च) धर्म्मपुराणीयकथान्निशम्य तमाचार्य्यमञ्जलिं बद्ध्वा "भो भगवन्, मम स्वामिनामरक्षा धनरक्षा आत्मनोऽपि रक्षा कथं भवेदिति" पृष्टम्[8]। तदा श्रेष्ठिकाभिहितं श्रुत्वा आचार्य्येण वक्तुमारब्धम्[9]। "वरं यदद्य[10] प्रभृति मासाभ्यन्तरेऽशोकवाटिकायां खलु पशोरालये[11] क्षत्रियजातयो द्वात्रिंशद्वर्षवयस्कवृद्धदेवराजसप्तविंशतिवर्ष-

---

१. निखाता:—व्यप०।
२. अष्टो० व्य० प०।
३. नामध्येयो—व्यप०।
४. विधुन्यातेन—व्यप०।
५. मनसे—व्यप०।
६. चतुर्व्विधबोधशास्त्रीधर्म्मघोष—व्यप०।
७. ०स्तमागत:—व्यप०।
८. पष्टम्—व्यप०।
९. वक्तं—व्यप०।
१०. यद्वद्य—व्यप०।
११. पशौं—व्यप०।

वयस्कद्वितीयहंसराजद्वाविंशतिवर्षवयस्कतृतीयधनराजषोडशवर्षवयस्कचतुर्थधर्म्मराजाख्या एकमातृका महाजना आगमिष्यन्ति। तन्मध्ये अभिलषितमेकं कञ्चित् पुत्रत्वेन स्वीकुर्विंति'' तदनन्तरमाचार्य्यमुखात् श्रेष्ठिका तेषां वार्तां श्रुत्वा सुप्रसन्नेव तन्नमस्कृत्य पुनः पृच्छति। ''यतः किं कृत्वा स्वे······ इति।'' तदभिहतं निशम्याचार्यो वदति स्म। ''यदग्रे ऋषभदेवस्य नवाङ्गानि पूज्यानि, तदनन्तरं गुरुपुस्तकयोः पञ्चोपचारेण, षोडशोपचारेण वा पूजा कार्य्या'' इत्युक्तम्। एवं गुरुभक्तिर्विधेया, पश्चाद् गुरुमुखान्मङ्गलवाक्यं श्रुत्वा पश्चान्निजकुलदेवीं प्रपूज्य तदनन्तरं चतुर्व्विधसिंहसाह्निके एवं देशाधिपतिसमीपे पुत्रं गृहीत्वा निजज्ञातीयभोजनाय भक्तिर्विधेया इत्य·········दम्पतीर्भोजयित्वा एवं शुभमुहूर्त्तं दृष्ट्वा 'नमो अरिहताणम्' इत्युक्त्वा तं स्वपदे निवेश्य यद्रोलीतिलकबिन्दुमुक्तादामतृणफुलफलचूर्णानि तस्मै दातव्यानि एवं शङ्खध्वनिर्भेरी(ध्वनिः) पुनर्नानावाद्यनृत्यादिकं कर्त्तव्यम्। एवं प्रकारेण पुनः सौभाग्यवतीभिः स्त्रीभिः सहगीतध्वनिः[1] स्वीयस्वीयमुखेन नानाविधमङ्गलाचारो विधेयः। एवं श्रद्धया निजज्ञातिभ्य एवाथवाऽन्येभ्यो[2]द्रव्यमथवा श्रीफलादि दातव्यम्। एवं निर्द्धनश्चेत्तेन[3] पुगी[4]फलमेव दातव्यम्। रात्रिजागरणमपि विधेयम्। तम्बूलादिकमपि प्रत्येकं प्रत्येकं दातव्यम्। अधिकं तु आचारादि आकरे द्रष्टव्यम् (?)। अत्र किंचिन्मात्रमुक्तम्[5]। श्रीवर्द्धमानस्याभिहितं वाक्यं श्रुत्वा पुनर्वदति[6] ''भगवन्, कदाचिदसौ धर्म्मे न स्थास्यति, यतः स्वे (?)···पुत्रो यदि मम सेवानिरतो न भवेदेवं कुव्यसनेन धनक्षयं कुर्य्यात्, तदा मया किं कर्त्तव्यम्'' इति। तदीयं वाक्यमाचार्य्येण श्रुत्वा पुनरुक्त ''यद्यप्यसौ धर्म्मे न स्थास्यति तदा त्याज्यो यथा अहिना दष्टमङ्गुष्ठं जनैस्त्यज्यते, तथा यः पोष्यपुत्रस्तं[7] कथं न त्यजेत्'' इति तदीयाभिहितं श्रुत्वा पुनस्तमाचार्य्यं नमस्कृत्य निजगृह-

---

१. धनिः—व्यप०। २. निजज्ञातिभ्यरेवमथवा अन्यद्रव्यमं—व्यप०।
३. निर्धनश्चेतेन—व्यप० ४. श्चेतेन पुंगाफलम्—व्यप०।
५. किञ्चिन्मात्रेण—व्यप०। ६. पुनःर्वदति—व्यप०।
७. यो पुष्पपुत्रम्—व्यप०।

मागत्य तत्राशोकवाटिकायां[1] चत्वारः सेवका नियोजिताः। यदा[2] मासः पूर्णो जातस्तदा आचार्य्यनिर्दिष्टाश्चत्वारो महाजनास्तस्यामशोकवाटिकायामागताः। तेषामागमनं दृष्ट्वा श्रेष्ठिकानियोजिता आगत्य कमलाश्रियं प्रति तेषामागमनवृत्तान्तं विज्ञापितवन्तः। कमलाश्रीरपि तद्वृत्तान्तं[3] श्रुत्वा तांश्चतुरो[4] गृहमानीय आचार्य्याज्ञया पुत्रत्वेन तेषां ज्येष्ठं देवराजाख्यं स्वीकृतवतीति गौतमप्रश्नीयग्रन्थलिखनम् ॥१॥

श्रीसिंहपुरनगराधिपतेः सिंहसेनस्य सिंहावतीनाम्नी महिष्यासीत्। तया सह सुखेन राज्यं कृतम्। तत्रानन्दपरमानन्ददेवानन्दाः क्षत्रियवंशोद्भवाः दुःखिनस्त्रयो भ्रातरः। तेषु मध्ये आनन्दाभिधान एको भ्राता धेनुं जुगोप। परमानन्दाभिधानो द्वितीयो भ्राता विविधकाष्ठमानीय विक्रयामास। देवानन्दाभिधानस्तृतीयो भ्राता शिशुः स्थितः। तदा सर्व्वैर्न्नगरस्थैर्ज्जनैरानन्दस्य गोपाल इति नाम कृतम्, द्वितीयस्य परमानन्दस्य काष्ठजीवीत्यभिधानं कृतम् परन्तु ते त्रयो भ्रातर एकस्मिन्नेव स्थाने स्वकीयं स्वकीयं कार्यं कृतवन्तः। तत्रैकं यतिं विलोक्य त्रिभिर्भ्रातृभिर्मिलित्वा तं यतिं नत्वा स्थितम्। तदा स यतिस्तान् प्रति धर्म्ममुपदिष्टवान्। तदा ते मुनिधर्म्मोपदेशं निशम्य प्रीतिरता बभूवुः। पुनः साध्वाननात् परिमितं वाक्यं श्रुत्वा तेनाभ्यस्तं रात्रौ जलं न पातव्यमिति। तत्र कानने पुनश्च धेनुं पालयता तत्रैव निम्नगाकूले श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयीं[5] प्रतिमां विधाय[6] तत्रैवैकं गृहं कारयित्वा तन्मध्ये श्रीभगवतः प्रतिमा स्थापिता। तत्र प्रतिदिनं तेन तदर्च्चनं कृतम्। तत एकस्मिन् समये ऋषिमुखात् भक्तामरस्य माहात्म्यं शुश्राव। ततः ऋषिरानन्दं भक्तामरं पाठयित्वा जगाम। तदनन्तरमानन्दाख्यः श्रीभगवतोऽग्रे प्रतिदिनं भक्तामरं स्मरतिस्म[7]। तदेकस्मिन् दिने चक्रेश्वरीनाम्नी देवी प्रत्यक्षमागत्या[8]-

---

१. तत्रानेकवाटिकायम् व्यप०।
२. तदा व्यप०।
३. तद्वृत्तान्तम्० व्य० प०।
४. ताश्चतुरो व्यप०।
५. मृत्तमयीं व्यप०।
६. प्रतिमामभिधाय व्यप०।
७. स्मृति स्म व्यप०।
८. प्रत्यक्ष प्रागत्य व्यप०।

स्मिन्नगरेऽधिपति (स्त्वं) भविष्यसीति वरं दत्त्वा अन्तर्हिता[1] जाता। ततः किञ्चित्कालानन्तरं तन्नगरस्याधिपतिर्मृतःतस्यात्मजो न स्थितः। तदनन्तरं तस्य महिषी सिंहावती नाम्नीपुत्रशोकातुरा षण्मास[2]...र्द्धदिन पर्य्यन्तं राज्यं कृतवती। तदैकस्मिन् समये वनयात्रार्थं महिषी सखीभिः[3] सह मिलित्वा वनं जगाम। तत्र कानने निम्नगाकूले एकं स्थानं दृष्टवती। सिंहावतीनाम्नी राज्ञी तत्रालये गत्वा श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयीं[4] प्रतिमां विलोक्य तस्याः प्रतिमायाः स्तुतिं चकार। पुनस्तस्याग्रे आनन्दो भक्ता-मरं[5] स्मरति[6]स्म। तत्रैव परमानन्ददेवानन्दौ स्थितौ। तान् त्रीन् भ्रातॄन् विलोक्य मनस्येतद्विवेचितम्—यतो मम पुत्रा[7] न स्थिताः किन्त्वद्य भगवता ऋषभदेवेन त्रयः पुत्रा मह्यं दत्ताः, अद्यैव मदीयं सर्व्वं दुःखं गत-मिति" महिषी विचार्य्य आनायितान् तान् पुनः पुनर्विलोक्य पृच्छति स्म "हे वत्साः, युष्माकं किमाख्यास्तद् युष्माभिः प्रकाशनीयाः।" तदा त्रयो भ्रातरोऽञ्जलिं बद्ध्वा, तन्मध्ये आनन्दाभिधेयो ज्येष्ठभ्राता वदति स्म "हे अम्ब, वयं त्रयः सहोदराः, मम आनन्द इत्यभिधानम्, द्वितीयस्य परमानन्द इत्यभिधानम्, तृतीयस्य देवानन्द इत्यभिधानम्। तन्मध्ये ज्येष्ठ आनन्दाभिधानः श्रीऋषभदेवस्याग्रे सिंहवत्या महिष्या पुत्रत्वेन स्वीकृतः। तस्मात् काननात् कश्चिदेको भृत्यः स्वग्रामे प्रेषितः "त्वया तत्र गत्वा[8] सुमत्यधिकारिणं प्रति वक्तव्यम् भवता-चन्द्रशेखर-कर्णलोचन-रूपसेना-ख्यैरमात्यैः सह पञ्च द्रव्याणि शङ्खादीनि गृहीत्वा तत्र गन्तव्यमिति'। तत्रैव तस्मिन् समये श्रीसिंहकेशरसूरि[9]नामाचार्य्यस्समागतः। तत्रै-वानन्दाख्येन पुत्रेण सह महिषी धर्म्मोपदेशमाकर्ण्य तमाचार्य्यं पृच्छतिस्म "भगवता पोष्यपुत्रोत्सवो वक्तव्यः" तदीयाभिहितं निशम्य वक्तुमारब्धम् "यतो[10] गोतमप्रश्नीयवत् श्रीमज्जिनेश्वरस्य नवाङ्गीं पूजां कृत्वा पश्चाद्

---

१. आहृता—व्यप०।
२. षड्मास—व्यप०।
३. सखिभिः—व्यप०।
४. मृरामयीं॰—व्यप०।
५. भक्तारमरम्—व्यप०।
६. स्मृतिस्म—व्यप०।
७. म प्रपुत्रान—व्यप०।
८. गत्रा—व्यप०।
९. ॰सरि—व्यप०।
१०. पतो—व्यप०।

गुरुपुस्तकज्ञानोपकरणवस्त्रद्रव्यादिपूजा पञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा कार्य्या''इत्युक्तम् "औरस पुत्र जन्मोत्तरसमयोत्सववत् पालकपुत्रोत्सवः कर्त्तव्यः। तदनन्तरं चतुर्व्विधसिंहसाक्षिके निजकुलदेवी पूजनीया, तदनन्तरं स्वकीयज्ञातिभ्यो भोजनं मिष्टान्नै रससंयुक्तैर्दद्यात्। तदनन्तरं ताम्बूलवस्त्रद्रव्यश्रीफलपूगीफलानि[1] च प्रत्येकं दातव्यानि एतदपेक्षयाधिक-पुत्रोत्सवविधिराचारदिनकरे द्रष्टव्यः"। एतत् सिंहकेसरसूरिणाचार्य्येणोक्तम् तदा पूजाद्रव्यं गृहीत्वा अमात्यैः सह सुमितिराजगाम। पुनः सिहावती राज्ञी आनन्देन सह श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयीं प्रतिमां विधाय[2]षोडशोपचारेण प्रतिमां प्रपूजितवती। तदनन्तरं तस्य स्तुतिसमये श्रीऋषभदेवस्य सकाशात् पुष्पमानन्दस्य[3] शिरसि पपात। तदा आकाशात् "जय जय" इति शब्दो जातः। इत्याश्चर्य्यम् तदा सुमतिना चन्द्रशेखरकर्णलोचनरूपसेनाख्यैर्मन्त्रिभिः सह प(ञ्च) तद्द्रव्याणि गृहादानीय तस्य आनन्दस्याग्रे स्थापितानि। तदनन्तरं तैः पञ्चद्रव्यैःतत्तत्कार्य्याणि तेन कृतानि। तदनन्तरं तस्मात् काननात् अमात्यैः सह शङ्खवादित्रभेरीनानाप्रकारादिध्वनिगीतादिज्ञातिसौभा(ग्य-वती····दिभिः) सह महामहोत्सवमानीय स्वगृहमागत्य आनन्देन राज्य-सिंहासने स्थिता। तस्य परमानन्दो द्वितीयो भ्राता युवराजः कृतः। तस्य देवानन्दस्तृतीयो भ्राता भटपतिः कृतः। किञ्चित् कालानन्तरं तद्देशाधिपतिभिः सह तस्य युद्धमभूत्। पुनस्तान् जित्वा सुखेन राज्यं कृतवान्। इति भक्तामरस्तुतिग्रन्थलिखनम्॥ ३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण ज्येष्ठपुत्रः पोष्यपुत्रो भवितुं शक्नोति, जैनशास्त्रे ज्येष्ठपुत्रस्य पोष्यपुत्रताया निषेधाभावात्, तच्छास्त्रे पूर्व्वेषां तच्छास्त्रानुसारेण व्यवहरतां राज्ञां वणिजां च स्त्रीणां ज्येष्ठपुत्रस्य पोष्यपुत्रकरणस्य लिखितत्वेनेदानीन्तनानामपि जैनशास्त्रानुसारेण व्यवहर्त्रीणां स्त्रीणां तथा व्यवहारस्य भवितु शक्यत्वाच्चेति--

१. पुङ्गीफलानि व्य० प०। २. प्रतिमामभिधा—व्यप०।
३. ०मानन्द—व्यप०।

अत्र प्रमाणानि उपरिलिखितानि त्रीणि ॥ २ ॥

भो गौतम, अस्माकं मते ज्येष्ठकनिष्ठत्वे दत्तकः शिशुर्ग्राह्यः सर्व्वलक्षणसंयुतः—इति गोतमप्रश्नीयग्रन्थधृतवर्द्धमानस्वामिवचनम् ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण गर्भाधानदिवसमारभ्य द्वात्रिंशद्वर्षपर्य्यन्तवयस्कः पोष्यपुत्रो भवितुं शक्नोति ॥०॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

कियद्वायनमितवयस्कः पुत्रो ग्राह्य इति गौतममुनेः प्रश्नः । यदा *तदा भगवता वर्द्धमानस्वामिनोक्तम् स गर्भमारभ्य* द्वात्रिंशद्वर्षपरिमितवयस्कः पुत्रोग्राह्यः—इति गोतमप्रश्नीयग्रन्थलिखनम् ॥०॥०॥०॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण पोष्यपुत्ररक्षणार्थमेवं तत्सिद्ध्यर्थमेते[1] नियमाः । तथाहि—*ऋषभदेवाख्यस्य तद्देवस्य प्रथमतो नवाङ्गपूजन तदनन्तर गुरुपुस्तकयोःपञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा पूजा कार्य्या एवं गुरुभक्तिर्विधेया, पश्चाद् गुरुमुखान् मङ्गलवाक्यं श्रुत्वा निजगुरुदेवीं प्रपूज्य गुरुगुरुपत्नीज्ञातिज्ञातिपत्नीनां चतुर्णामेवं ग्रामाधिपतेर्निवेदनं कृत्वा पुत्रं गृहीत्वा निजज्ञातीनां सपत्नीकानां भोजन दत्वा शुभमुहूर्त्तं दृष्ट्वा*[2] *मन्त्रपाठपूर्व्वकं स्वस्थाने बालकमुपवेश्य रोलीयतिलकबिन्दुमुक्तबिन्दुं तण्डुलचूर्णानि वा तस्मै ललाटे दातव्यानि, एवं शङ्खध्वनिभेरीत्यादिनानावाद्यनृत्यगीतादि नानाप्रकारेण सौभाग्यवतीभिः स्त्रीभिः स्वीयस्वीयमुखेन नानाविधमङ्गलाचारो विधेयः । एवं श्रद्धया*[3] *स्वज्ञातिभ्यो वस्त्रद्रव्यताम्बूलश्रीफलपूगीफलानि दातव्यानि*[4]*; निर्धनश्चेत् पूगीफलमेव दातव्यम्, रात्रिजागरणमपि विधेयम्*-इति गौतमप्रश्नीयभक्तामरस्तुति-

---

१. सिद्धर्थम् व्यप० । २. दृष्ट्वा व्यप० ।
३. श्रद्धया व्यप० । ४. दातव्यानि व्यप० ।

२१

सन्तनाथचरित्ररूपसेनचरित्रप्रश्नोत्तरसार्द्धशतकराजप्रश्नसूत्रिसिद्धान्तादिजैनशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणान्येवेति—

एतदब्दीयजुलाइमासीयाष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे[1] यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

श्रीदुर्गा

१०७—रुवकारि आदालत देओानी सदर इ०सन १८३१ शाल तारिख ४ माहे जुन मोतावेक सन १२३८ शाल तारिख २३ ज्यैष्ठ रोज शनिवार एइ आदालतेर हांकिम श्रीयुत कटवरट थरनेल शिली साहेवेर वैठके—

कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय वनाम गङ्गाचरणसेन । साएलानेर उकिल मुनशी होशन आलि ओ सदासुकपण्डित, विपक्षेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ मुनशी फजर होसेन हाजिर आसिलेन । एइ आदालतेर हाल सनेर २१ आपरेलेर हुकुमानुसारे शाएलानेर खास आपिलेर सओयाल ओ ताहार सम्पर्कीय कागजातसकल अद्य आमार वैठके दरपेष हइया एइ आदालतेर हाकिम रावरट[2] हालडन राटरि साहेवेर ऐ तारिख मजकुरेर रुवकारि ओ आदालत मजकुरेर हाकिम हेनरि शिकिषपिएर साहेवेर हाल सनेर १४ मार्चेर रुवकारि सम्वलित मोलाहेजा हइवाते एइ मकर्द्दमार चूडान्त

१. शम्वन्धि—व्यप० ।
२. रावट—व्यप० ।

हुकुम प्रकाश हइवार पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर द्वाराय ए विषय ज्ञात हओया आविश्वक हइलो—ये जगमोहनरायेर पुत्र महेश-चन्द्ररायेर मृत्युर पर महेशचन्द्ररायेर भगिनी श्रीमती ऐ मृत्यु व्यक्तिर त्याज्य वस्तुते ओयारिष मते हिस्या पाइवार सत्व राखे कि, ताहार खुल्यतातगण कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय। अतएव हुकुम देया याइतेछे—ये ऐ रुवकारिर सकल कागजात सम्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने समर्पण करा जाय—ये कागचसकल दृष्टे करिया निचेर प्रश्नेर उत्तर ओ पाच दिवसेर मध्ये लिखेन।

प्रश्न :—

यदि स्यात् परगणे हावेलि शिलामावादेर ~१० देड आनार मालिक कृष्णकिङ्कररायेर पुत्र लक्ष्मीकान्तराय ओ जगमोहन-राय ओ शम्भुचन्द्रराय, एइ चारि भ्राता पैतृक जमिदारिर उपर आपन २ हिस्या मते दखिलकार थाकेन। प्रथमत लक्ष्मीकान्त-राय निःसन्तान, ओ ताहार पर जगमोहन आपन पुत्र महेश-चन्द्रराय ओ श्रीमती कन्याके राखिया मृत्यु हय। महेशचन्द्र-राय आपन पैतृक हिस्यार उपर दखिलकार थाकिया ओ श्रीमती भगिनी ओ कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय खुल्यतातगण राखिया निःसन्तान मृत्यु हय, ओ ताहार स्त्री सहगामिनी हय। अतएव महेशचन्द्ररायेर त्यज्य वस्तु ताहार भगिनी श्रीमती, ये एइ क्षण ताहार एक नावालक पुत्र आछे, अर्शिवेक, कि ताहार खुडागण शम्भुचन्द्रराय ओ कमलाकान्तरायेके अर्षिवेक इति।०।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटथरनेलसिलीसाहेवधर्म्माधिकर-ण लिखितैतदब्दीयजुनमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपप-

त्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयजुलाइमासीय-नवमदिनसम्बन्धिशनिवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति महेशचन्द्ररायस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वास्पदीभूतधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुः) प्रपौत्रपर्य्यन्तो न स्यात्, पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये स्यात्, तदा तस्याधिकारः। जाते च तस्याधिकारे पुनरुत्पत्स्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थान्महेशचन्द्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति। सति च पितृदौहित्रे तत्पितृव्ययोः शम्भुचन्द्ररायकमलाकान्तराययोर्नाधिकारः। यदि च महेशचन्द्ररायस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये नासीत्, तदा तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्याः श्रीमत्यास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृधने दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः। सति च महेशचन्द्रस्य पितृदौहित्रे स्वतो महेशचन्द्रस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतो महेशचन्द्रस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्याः श्रीमत्या नाधिकारः। किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव पुत्राणां वोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥१०॥

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव इति—दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

दश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति दायभागादि (दाभ भा. पृ० १३२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१२२)वचनम् ॥ २ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति, तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयः—इति च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८)लिखनम् ॥३॥

पत्नीदुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादि(दाभा. पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य २।१३५ वचनम् ॥४॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तः तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वमङ्गादङ्गात् सम्भवति—इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकारः इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१०) लिखनम् ॥५॥

एतदब्दीय-अगस्त्यमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्ता इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१०८ रोवकारि सिछिल सदर देओयानि आदालत हेनरि शिकशीपियेर साहेव आदालत मजकुरेर हाकिमेर वैठके तारिख ७ शेतम्बर इ० सन १८३१ मोतावाक २३ भाद्र वाङ्गला सन १२३८ साल रोज बुधवार ।

आनन्दमयीदेवी छाएला

छाएलार उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ राधामोहनमिश्रिर उकिल मुनशी होशन आलि ओ श्रीमन्तमिश्रि ओ रामनायण आचार्य्येर उकिलान् मुनशी दादार वक्सी ओ मौलुवि करम होशन हाजिर आइल। एइ आदालतेर हाकिम माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेवेर शन हालेर १६ आगष्ट तारिखेर हुकुम मोतावक एइ मोकर्द्दमार शओयाल ओ गयरह कागजात एइ आदालतेर हाकिमान् रावट हालदन राटरि शाहेव ओ आलकसुन्दर रास साहेव ओ माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेवेर सन हालेर ३० जुन ओ १९ जुलाइ ओ १६ आगष्टेर लिखित[1] राय सम्वलित

---

१. लिलित—व्यप० ।

दृष्टे आइल। तत परे छांयेलार उकिल मुनशी गोलाम वतुल छाएलार तरफ हइते एक केता सओयाल दाखिल करिलेक, पडा-गेल। यथा ए विषय ये नावालकेर मृत्युर पर प्रथमतो शास्त्रानु-जाइ कोन व्यक्तिके ताहार उत्तराधिकारित्य, अशिंवे, आर कि प्रकारे मोछुमोत आनन्दमयी ओ राधामोहन नावालकेर उत्तरा-धिकारि ओ हकदार हइवेक, अनुमोदन करा उचित हइल। अतएव हुकुम हइल ये—आनन्दमयी ओ राधामोहनमिश्रिर आइल दुइ दरखास्त, जाहा एइ आदालतेर हाकिमानेर राय ले-खार पर दाखिल हइयाछे, एइ आदालतेर पण्डितके एइ हुकुमे समर्पण करा जाय-ये पण्डित मजकुर उपरेर लिखित विशयेर जओयाव ततचणात लिखिया दाखिल करे, एवं मोकद्दमा मुलतवि थाके इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

———

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिस्पीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयसितम्वरमासीयसप्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रमेवं तत्समर्पितमानन्दमयीदेव्या निवेदनपत्रं राधामोहनमिश्रस्य निवेदन-पत्रञ्च यत्तन्मासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे पादोनघटिकाचतुष्टया-धिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते।

पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्याप्राप्तव्यवहारस्य[1] मरणोत्तरं प्रथमतस्तत्पितृदौहित्रस्याधिकारः, यदि च तत्पितृदौहित्रस्तस्यैवाप्राप्तव्यव-हारस्य मरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा न भविष्यति, तदा तत्पितृ-दौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्योरर्थादहिल्यारुक्मिण्योः तत्पितृ-दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतयोस्तत्सम्बन्धमूलीभूतयोश्च[2] तत्पितृदौहित्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्धने दुहितृ-

१. °वहितस्य०—व्यप०। २. °सम्बन्ध०—व्यप०।

रधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः। सत्सु चाप्राप्तव्यवहारस्य पितृदौहित्रेषु स्वतोऽप्राप्तव्यवहारस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातृषु स्वतोऽप्राप्तव्यवहारस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्योरप्राप्तव्यवहारस्य भगिन्योरर्थादहिल्यारुक्मिण्योर्नाधिकारः; किन्त्वप्राप्तव्यवहारस्य भगिन्योः पुत्राणामेवाधिकारः तत्पितृदौहित्राभावे तत्पितामहस्य, तदभावे तत्पितामह्या अर्थादानन्दमय्यास्तदभावे तत्पितुः सोदरभ्रातुस्तदभावे तत्पितुर्वैमात्रेयभ्रातुस्तदभावे सोदरभातृपुत्रस्य तदभावे तत्पितुर्वैमात्रेयभ्रातृपुत्राणामर्थाद्राधामोहनप्रभृतीनामधिकारः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा। तत्सुतः—इत्याद्युपरिलिखित(दाभा. पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥१॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभाग (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वमङ्गादङ्गात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इतिश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०)लिखनम् ॥३॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति। तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरः पुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥४॥

एतदब्दीयसेतम्बरमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१०९ रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख २२ माह नवम्बर शन १८३१ इ० मतावक ८ माह अग्रहायण शन १२·८ वाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तेगिओ हेनरि टरम्वल साहेवेर वैठके।

मृत काशीनाथदत्तेर स्त्री करुणामयी प्रभृति—आपीलाण्टान्

चन्द्रमालार पति जयचन्द्र घोष— रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टगणेर उकिलगण मुनशि दादार वकस ओ मुनशी गोलाम वतुल, रेष्पाडण्टेर उकिल सदासुक पण्डित हाजिर आसिल। ए मकद्दमा एइ शनेर माइ मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य आमार वैठके उपस्थित हइया एइ मकद्दमा वावत आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ कोर्टेर फयशला ओ छानि तजविजेर दरखास्त ओ इ० १८३० शालेर जुलाइ मासेर १५ तारिखेर लिखित ए मकद्दमार इनफशालि रोवकारि ओ कमलाकान्तराय प्रभृति वनाम गङ्गाचरणसेनेर मकद्दमा वावत ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल याहा रेष्पाडण्टेर उकिले दुइ टाका मुल्लेर एक किता फेहरेस्त द्वाराय अद्य लम्वरे दाखिल करिलेक दृष्ट आसिल। ताहार पर आदालतेर पण्डितके हुजुरे तलव दिया (जिज्ञा)सा करागेल—ये तोमार दाखिल करा व्यवस्थाय चन्द्रमालार स्वत्वेर उल्लेख केन छुटीयाछे, एइ क्षण तोमार अन्य व्यवस्थार द्वाराय, याहा रेष्पाडण्टेर उकीले अद्य दाखिल करिलेक, जाना जाइतेछे ये चन्द्रमाला ओ श्रीमतिर न्याय ये दौहित्रगणेर उतपत्तिर करण वटे, गोराचान्देर त्यक्तेर स्वत्वाधिकारिणि वटे। ताहार उत्तर निवेदन करिलेन ये हुजुर हइते एइ परिमाण सओयाल हइयाछिल ये शास्त्रानुसारे कोर्टेर पण्डितेर व्यवस्था यथार्थ वटे कि ना, ओ ऐ व्यवस्थाय कोर्टेर पण्डिते चन्द्रमालार पुत्रके स्वत्वाधि(कारि) लिखियाछिल, ओ ततकालिन अर्थात पूर्व्वाधिकारिर मृत्युर पर लालमोहनेर, ये ताहार माता अप्राप्त व्यवहारा स्थिल, जर्म्म हइयाछिल ना, ओ ये व्यक्तिर उत्पत्ति

ना थाके ताहार स्वत्व कोथा हइते अर्शिवेक। एइ हेतुक ताहाके ऋयथार्थ लिखियाछिलाम; ओ फलितार्थ गोराचान्देर मृत्युर-पर ताहार अन्य उत्तराधिकारिगण वर्त्तमान ना थाकले गोराचान्देर भग्नि मुसम्मात चन्द्रमाला, ये से गोराचान्देर पितृदौहित्र गणेर उत्पत्तिर कारण बटे, आपन भ्रातार मिलकीयतेर स्वत्वाधिकारिणि हइवेक; एवं ए विशयेर विस्तारित एइ व्यवस्थाय. याहा अद्य रष्पाडण्टेर उकिले दाखिल करिलेक, लिखा आछे इति। ऐ पण्डितेर एजहार दृष्टे उचित हइल ये निचेर सओयाल एइ आदालतेर पण्डितेर पर करा जाय।

सओयाल —यद्यपि पूर्व्वाधिकारि निलकण्ठ तिन पुत्र. प्रथम कृष्णप्रसाद, द्वितीय प्रतापनारायण, तृतीय किर्त्तिनारायणके, राखिया मरे; ओ कृष्णप्रसादह तिन पुत्र रामराजा ओ रामकृष्ण ओ काशीनाथके राखिया मरिलेक; ओ प्रतापनारायण ओ एक पुत्र कालाचादके राखिया मरिल ओ कीर्त्तिनारायणह पुत्र गोराचान्द ओ चन्द्रमाला कन्याके राखिया मरिलेक; ओ ततपरे गोराचान्दह निस्वन्तान मरिलेक। अतएव शास्त्रानुसारे किर्त्तिनारायणेर स्वत्य. याता ताहार पुत्र गोराचन्द्रके अर्शियाछिल. चन्द्रमालाकं अर्शा, किम्वा कोन व्यक्तिके। उचित ये ताहार जवाव तिन दिवसेर मध्ये दाखिल करण इति ॥०॥

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरम्वलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतद्दीयलवम्वरमासीयद्वाविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदद्दीयतन्मासीयचतुर्व्विंशतिदिनसम्वन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकाचतुष्टयाभिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति कीर्त्तिनारायणस्य मरणानन्तरमुत्तराधिकारित्वेन प्राप्तपतृधनस्य तत्पुत्रस्य गोराचाँदसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वास्पदीभूतधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तो न स्यात्

तद्भगिन्याश्चन्द्रमालायाः कश्चिदेकोऽपि पुत्रोऽर्थाद्[1] गोराचाँदसंज्ञकस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये स्यात्तदा तस्याधिकारः। जाते तस्याधिकारे पुनरुत्पत्स्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थाद् गोराचाँदसंज्ञकस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति। सति च पितृदौहित्रे तत्पितृव्यपुत्राणां प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितानां मध्ये तदानीं विद्यमानानां नाधिकारः। यदि च गोराचाँदसंज्ञकस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये नासीत्तदा तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्याश्चन्द्रमालायास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्द्धने दुहितुरधिकारः तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः। सति च गोराचाँदसंज्ञकस्य पितृदौहित्रे स्वतो गोराचाँदसंज्ञकस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतो गोराचाँदसंज्ञकस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्याश्चन्द्रमालाया नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्राणां चोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः[2]— इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवाद-भङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव-इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

हश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इतिदायभागादि-(दा० भा० १३२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (पृ० २।१२२) वचनम् ॥२॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति, तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्व्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रः—इत्यादि च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८) लिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव। इत्यादि दायभागादि(दाभा०पृ० १५१)ग्रन्थधृत याज्ञवल्क्य (२।१३५) वचनम् ॥ ४ ॥

---

१. ०र्थादेगारां—व्यप०। २. ०वोपरि०—व्यप०।

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वम्–"अङ्गादङ्गात् सम्भवति" इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०) लिखनं चेति ॥ ५ ॥

एतदब्दीयलवम्बरमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११०—रोवकारि मिछिल शदर देओयानि आदालत मजकुरेर हाकिम हेनरि सिकिसपीयेर साहेबेर वैठके तारिख ५ दिजम्बर इ० शन १८३१ साल मोतावक २१ अग्रहायण वाङ्गला शन १२३८ साल रोज सोमवार—

दलमर्द्दनसाहि   आपीलाण्ट

राजा पृथ्वीपतिसाहि ताहार मृत्युर पर खडर्गवाहादुरेर अलि ओ माता राजेश्वर कोङर ओ मोछम्मात् मदनकोङर—

रेष्पाडण्टान्—

आपीलाण्टेर उकिल सदासुख पण्डित ओ रेष्पाडण्टानेर उकिल मुनशी होशन आलि हाजिर हइल । तारिख १५ ओ २१ ओ २२ ओ २९ माह नवम्बरे एइ मोकद्दमा रोवकारि ओ प्रीविण शीयान क्रोटेर समुदाय कागजात ओ एइ मकद्दमार वावत एइ आदालतेर दाखिल करा सावेक कागजात पाठ हइया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइल । आमार रायेते राजा अरिमर्द्दनसाहिर राजा पृथ्वीपतिसाहिके पुष्यपुत्र राखनेते इच्छा ये प्रकार उचित साक्षीगणेर साइदेर द्वाराय कवार ओ याककाइ शाछद पौछिल । एवं इहाओ तहकित हइल ये राजा मजकुर आपन

होस वहाले ओ स्थिर बुद्धिते हेवानामा सकल राजा प्रथ्वीपति साहिर नामे लिखिया दियाछिल। किन्तु एतदभिन्य ओ गोरक्षपुरेर जाहाते उभय विवादि वसति राखे, ताहार सर्व्वदार रेओ-याज[1] मते एवं शास्त्रेर दाडाते ओ समुदाइक शरत शफासते राजा प्रथ्वीपतिसाहिर पुष्यपुत्रता सर्व्वतोभावे साव्यस्थ आसिया-छिल। से हेवानामा सकल शास्त्रेर आज्ञानुसारे उचित वटे कि ना? द्वितीयत्व ये ताहार तजविज नितान्त शास्त्रेर दाडाँते एलाका हइतेछे इति। आर अजिमाबादेर प्रीविणशीयान क्रोटेर आदालतेर पण्डितेर एइ मोकद्दमार मिछिले दाखिल करा व्यवस्थार द्वाराय प्रकाश हइतेछे—ये राजा प्रथ्वीपतिसाहिर पुष्य-पुत्रता उचित वोध हइल, आर शन हालेर २२ शेतम्वर तारिखेर हओया एइ आदालतेर हाकिम माण्टेकु हेनरि टरम्वल साहेवेर रोवकारिर लिखित एइ आदालतेर पण्डितेर जवानि जओयावेते पष्ट वोध हय ना - ये पण्डित मजकुरेर ऐ व्यवस्थाते अक्यता हइ-याछे कि ना। आर यदि स्यात् ना हइयाथाके कि जन्य हय नाहि। आर हाकिम मौछफेर रोवकारिर लिखित पण्डित मजकुरेर जओयावेते वोध हय ये ज्येष्ठ पुत्र पुष्यपुत्र हइते पारे। एइ शर-तते ये उभय पुष्यपुत्रदाता ओ त्रिहिस्या ?) एइ विषये स्वीकृत हय-ये पुत्र मजकुर उभय दुइ व्यक्तिर श्राद्धे पिण्डदान करिवेक। किन्तु इहाते सस्पष्ट हयना—ये पुष्यपुत्रतार निर्द्धारितेर पूर्व्वे ये रूप एइ मोकद्दमाय प्रकाश आछे, आप्त पितार मृत्युते ऐ प्रकार शरत वहाल थाके कि ना। एइ सकलेर प्रति दृष्टे आमार निकट सन्देह भञ्जनार्थे[2] उचित ये मोकद्दमार कागजात एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे—ये पण्डित मजकुर क्रोट आ गयर-हर व्यवस्था ओ साक्षीगणेर एजहार ओ मिछिलेर कागजात अनुमोदने निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव तत्-क्षणात लिखिया दाखिल करेण पाठान जाय।

---

१. वेओयाज—व्यप। २. भञ्जनार्थे—व्यप०।

१. प्रथमतो एइ ये साक्षीगणेर साक्षीर द्वाराय राजा प्रथ्वीपतिसाहिके पुष्यपुत्र देओया ओ लओया उभय उहार माता ओ राजा अरिमर्द्दनसाहि ओ रानी मदनकोङर ये रूप उचित शास्त्रानुजाइक आयान आशीयाछे कि ना।

२. द्वितीय—पुष्यपुत्रतार दाडासकलेर पूर्व्वे प्रथ्वीपतिसाहिर आपन पीता रणवाहादुरसाहिर मरणेते ताहार सत्यतार किछु दयति हय कि ना। आर यदि ताहाते दयति वोध हय, एमत दयति रणवाहादुरसाहिर पद्दय हइते पूर्व्वे समये पुष्यपुत्रतार कछुल करणेर सवाव ये प्रकार मोछम्मात मदनकोङर एइ मोकद्दमार आपीलेर जआयावे लेखे दुर हइते पारे कि ना।

३तृतीय—ये स्त्रि सहगामिनी हय, सेइ स्त्री सहगामी हओयार पूर्व्वे आपन पुत्र अन्य कोन व्यक्तिके पुष्यपुत्र देओयाते यथाशास्त्र पष्ट रूप निषेध आछे कि ना।

४चतुर्थ—प्रथ्वीपतिसाहिर छय वतसर वयक्रमे ताहार पुष्यपुत्रतार निषेध कि ना।

५पञ्चम—ज्येष्ठ पुत्र हेतुक तस्य पुष्यपुत्रतार आपत्य जेलागोरकपुरेर प्रचलित दाडा ओ शाच्छादात ये प्रकार राजा उद्योतनारायणसिंह एवं द्वितीय राजासकलेर साक्षीते शाब्दद पौछिल दुर हइते पारे कि ना।

६षष्ठ—राजा अरिमर्द्दनसाहिर लिखिया देओया हेवानामा सकल दोरस्त हय कि ना। आर यदि स्यात् दोरस्त हय, तवे राजा प्रथ्वीपतिसाहि पुष्यपुत्रताभिन्य ताहार द्वाराय हेवार विषये हकदार हय कि ना।

७सप्तम—यदि स्यात् पुष्पपुत्रता ओ हेवानामासकल दुइ ना दोरस्त हय, राजा अरिमर्द्दनसाहिर स्त्री रानी[1] मदन कोङ-

१. वानी०—व्यप०

र ८५ लम्बरेर इ० शन १८२६ शालेर २८ मार्च्च तारिखेर लिखित एइ आदालतेर सावेक हाकिम कोर्टनि इश्मिट साहेवेर रोवकारिते ये प्रकार लेखा, आछे आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त उहार स्वामीर विषये कावेज ओ दखिलकारिर हकदार हइते पारे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपति-श्रीहेनरीसिक्सिपीयरसाहेव-धर्म्माधिकरणलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातंस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्--

साक्षिणां साक्ष्यद्वारा राज्ञः पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य पुत्रप्रतिनिधित्वेन दानं ग्रहणं चैतद्द्वयं[1] तस्य मातू राज्ञो अरिमर्द्दनसाहिसंज्ञकस्य चैवं राज्या मदनकोमराख्यायाश्च यथोचितं भवति तथा शास्त्रानुसारेण जातमिति ।

अत्र प्रमाणम्--

माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि ।
सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्रिमः सुतः ॥—इति मिताक्षरा (पृ० २१३) वीरमित्रोदयादि-(पृ० ६०८)ग्रन्थधृतमनु(६।१६८)वचनम् ॥ १ ॥

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाहूय राजनि चावेद्य निवेशनस्य[2] मध्ये व्याहृतिभिर्हुत्वा अदूरबान्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृह्णीयादित्युप-रिलिखित(मिता पृ० २१४)ग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥ २ ॥

---

१ चैतद्द्वयम् व्यप० । २ °निवेशनम°मिता० ।
३ व्याहृभि° व्यप० ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

पुत्रप्रतिनिधिताया रीतीनां पूर्व्वं पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य जनकपितू रणवहादुरसाहिसंज्ञकस्य मरणात् पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य पुत्रप्रतिनिधितासत्यतायाः क्षतिर्यद्यपि सन्देहविषयीभूता भवति तथाप्येतादृशी क्षती रणवहादुरसाहिसंज्ञकस्य सकाशात् पूर्व्वसमये पुत्रप्रतिनिधितायाः स्वीकारेणैतद्विवादे एतद्धर्म्माधिकरणोत्तरपत्रे राज्ञ्या मदनकोमराख्यया लिखितेन दूरीभवितुं शक्नोति, रणवहादुरसाहिसंज्ञकस्य तादृशस्वीकारेण तत्रानुमतेरवगमादिति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रथमप्रमाणम् ॥ १ ॥

मात्रा भर्त्रनुज्ञया प्रोषिते प्रेते वा भर्त्तरि पित्रा वोभाभ्यां वा सवर्णाय यो[1] यस्मै दीयते स तस्य दत्तकः पुत्रः—इति मिताक्षरा (पृ० २१३) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

या स्त्री सहगामिनी अनुगामिनी वा भवति सा स्त्री सहमरणात् पूर्व्वमनुमरणात्पूर्व्वं वा स्वकीयपुत्रस्य[2] पुत्रप्रतिनिधिकरणार्थमन्यस्मै समर्पणं कर्त्तुं न शक्नोतीति शास्त्रे निषेधो नास्तीति ।—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य षड्वर्षवयस्कत्वेन पुत्रप्रतिनिधिताया निषेधो नासीत् । तत्रायं विशेषः यदि तत्समये स नोपनीतः, अथ च तज्जनकेन पित्रा जनकपित्रभिप्रायेण तज्जनन्या मात्रा वा "आवयोरयं पुत्रः" इति सम्प्रतिपत्त्या ग्रहीत्रे दत्तः स्यात्तदा पुत्रप्रतिनिध्यन्तर्गतनित्यद्व्यामुष्यायणपुत्रताया अपि निषेधो नासीत्, जनकपुत्रतायास्तत्राक्षतत्वात् । यदि च तादृशसम्प्रतिपत्तिं विनैव दत्तः स्यादथ च चूडान्तैस्संस्कारैर्ज्जनकेन संस्कृतः प्रतिग्रहीत्रा चोपनयनादिभिस्संस्कृतस्तत्रापि तस्य पुत्रप्रतिनिध्यन्तर्गतानित्यद्व्यामुष्यायणपुत्रताया निषेधो नासीत्, तत्रापि जनकपुत्रतायास्तस्मिन् अक्षतत्वात् । किन्तु यदि षड्वर्षवयस्कः पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्तदानीमुपनीतः

१. यो इति मिताक्षरायां नास्ति । २. पूत्रस्य—व्यप ।

स्यात्तदा दत्तकपुत्रताया निषेध आसीन्नतु कृत्रिमपुत्रतायाः; यतः कृत्रिमपुत्र-करणे ज्येष्ठकनिष्ठयोर्न्नियमो नास्ति, उपनीतानुपनीतयोरपि नियमो नास्ति, दानस्याप्यावश्यकता नास्ति. केवलं सजातीयत्वपुत्रत्वकरणयोरेव प्रयोजकत्वम्। अथ च जनकपितुः पुत्रत्वं नैव गच्छति। अयञ्च सर्व्वथैव द्व्यामुष्यायणः जनकपुत्रत्वकरयोर्द्वयोरपि श्राद्धादिकरः। अयमेव कृत्रिमपुत्रः पाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकार्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन लिखित इति।

अत्र प्रमाणम्—

तथाहि द्विविधा दत्तकादयो नित्यवद्द्व्यामुष्यायणा, अनित्यवद्द्व्यामुष्यायणाश्चेति। तत्र नित्यद्व्यामुष्यायणा नम ये जनकप्रतिगृहीतृभ्यामावयोरयं पुत्र इति सम्प्रतिपन्नाः; अनित्यद्व्यामुष्यायणास्तु ये चूडान्तै-(स्संस्कारै)र्ज्जनकेन संस्कृताः उपनयनादिभिश्च प्रतिगृहीत्रा, तेषां गोत्रद्वयेनापि संस्कृतत्वाद्द्व्यामुष्यायणत्वं परन्त्वनित्यम्—इति दत्तकमीमांसादि (पृ० १३०) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

सदृशं य प्रकुर्व्वीत गुणदोषविचक्षणम्।

पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं सविज्ञेयस्तु कृत्रिमः॥—इति मनु (पृ० ३७४, ९।१७९) वचनम् ॥२॥

स च पुत्रत्वकरस्य पिण्डप्रदः, *निजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य तिष्ठत्येव*—इतिशुद्धिविवेकग्रन्थ(३१ ख ९ पं०)लिखनम् ॥३॥

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते॥—इतिदत्तकमीमांसा(पृ० ७४) दत्तकचन्द्रिकादि(दच० पृ० १९)ग्रन्थधृतकालिकापुराणवचनम् ॥४॥

चूडाद्या इत्यतद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिणा द्विजातीनामुपनयनलाभः, *शूद्रस्य तु विवाहादिलाभः*—इति दत्तकचन्द्रिका(पृ० २१)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

वस्तुतस्तु यस्य पञ्चदशवर्षपर्यन्तं दैववशाच्चूडादिसंस्कारो न जातस्तस्य यथाविधि गृहणोत्तरं संस्कारा अतिपत्येरन्नित्यादिवचनात् प्रायश्चि-

---

१. तु प्रकुर्य्यायम्—इति मनुपाठः

२. विज्ञेयश्चेति मनुपाठः।

त्वात् महाव्याहृतिहोमं विधाय चूडादिसंस्कारे कृते दत्तकत्वं सिद्धत्येव। न चोद्ध्वं त्वित्यादिवचनविरोध इति वाच्यम्, तस्येष्टिपदश्रवणात् साग्निकपरत्वात्। पञ्च च पञ्च च पञ्चचेत्येकशेषात् पञ्च तेषां पूरणः पञ्चमः पञ्चदश इति यावत्, तस्मादूर्ध्वं न दत्ताद्याः सुता इत्यर्थाच्च। एवञ्च पञ्चमवर्षपदं स्वस्वजात्युक्तोपनयनकालोपान्त्यवर्षपरम्। उर्द्ध्वन्तु पञ्चमाद्वर्षादित्यादिवचनारम्भस्तु ब्राह्मणादीनां षोडशादिवर्षव्यावर्त्तनाय–इति शुद्धिचन्द्रिकाग्रन्थलिखनम्॥ ६॥ (?)

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

ज्येष्ठपुत्रत्वेन तस्य पुत्रप्रतिनिधिताया आयत्तिर्गोरखपुरप्रदेशचलितरीत्या राज्ञ उद्योतनारायणसिंहस्यान्येषां राज्ञां साक्षिणां साक्ष्येण च यथा निश्चितं तेन दूरीभवितुं शक्नोति, तद्देशचलितरीतिसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्ताभ्यां गोरखपुरप्रदेशे ज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधीकरणस्य सिद्धत्वेन तद्देशीयव्यवहारविरुद्धाया ज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधिताया आपत्तेः शास्त्रानुसारेणापि दूरीकृतत्वस्यार्थसिद्धत्वात् तद्देशीयव्यवहारविरुद्धस्य कस्यचिदपि कर्मणः शास्त्रानुसारेण तस्मिन् देशे कदाचिदपि भवितुमशक्यत्वाच्चेति॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान्श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत्॥—इति मनुवचनम् (मनु-८।४१)॥१॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक्प्रवर्त्तिताः।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥–इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम्॥२॥

यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः।
तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः॥—इति याज्ञवल्क्यवचनम्॥३॥

२२

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः।
युक्तिहीनविचारे तु धर्म्महानिः प्रजायते ॥—इति वीरमित्रोदयादि-ग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

राज्ञा अरिमर्द्दनसाहिसंज्ञकेन लिखितं दानपत्रजातं तत्पत्न्या राज्ञ्या मदनकोमराख्याया यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तधने सिद्ध्यति, प्रभुसमर्पितपत्रजाते राज्ञोऽरिमर्द्दनसाहिसंज्ञकस्य चतुर्णां भ्रातॄणां मध्ये स्वकुलोचितव्यवहारानुसारेण ज्येष्ठत्वेनावशिष्टानां त्रयाणां भ्रातॄणां पृथक् पृथक् स्वकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तातिरिक्तराज्ये असाधारणस्वत्वेनासाधारणस्वत्वास्पदीभूतस्य राज्यस्य भ्रात्रन्तरसाधारण्याभावावगमेन तत्र भ्रात्रादीनामनुमतिं विनापि दानाद्यधिकारित्वेन सिद्धेर्न्निष्प्रत्यूहत्वात्। एवं तद्दानस्य सिद्धौ सत्यां राजा पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकः पुत्रप्रतिनिधितां विनापि दानानुसारेण दानकृतधनस्याधिकारी भवितुं शक्नोति। तद्दानेन ग्रहीतुः स्वत्वोत्पादात्सप्तमप्रश्नस्योत्तरमर्थादुपरिलिखितोत्तरजातैरेव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्—इति गोरखपुरप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभदत्तकचन्द्रिकाशुद्धिचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादि (पृ० ३६४) ग्रन्थधृतबृहस्पति[1] (पृ० १३७) वचनम् ॥ १ ॥

विभक्तेषु तूत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्य्याय सर्वाभ्यनुज्ञा न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन, अतो विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्ध्यत्येव—इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्व्वकपरस्वत्वापादनं दानम् -इति मिताक्षरादि (सुबोधिनी पृ० ७४१) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनञ्चेति ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

---

१. तारा—व्यप०।

अंगरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयस-प्तमदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१११—रोवकारि सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख २६ दिजम्बर शन १८३१ साल मोतामेक शन १२३८ सालेर १२ पौष सोमवार श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेव ऐ आदालतेर हाकिमेर वैठके वदनचन्द्रहालदार ओ गायरह वनाम रामचाँद-मुखोपाध्याय साएलानेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ तरप-छानिर उकिल सदासुकपण्डित हाजिर अइल। सन १८३१ शालेर १५ शेतम्वर तारिखेर ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरनएल शेली साहेवेर हुकुमानुसारे सायेलानेर खास आपीलेर सओयाल ओ गायरह ऐ मोतालकेर कागचसकल अद्य आमार वैठके दरपेष हइया हाकिम मौछुफेर तारिख मज-कुरेर रोवकारिर लिखित राय ओ सन १८३१ सालेर २८ शेतम्वर तारिखेर दृष्ट करा तरफछानिर सओयालेर सहित दृष्टे आइल। तरफछानि जेलार मुद्दाइ जाहेर करे जे राधाकान्तहालदार मोत-ओकफार स्त्री मोछुम्मात सुभद्रादेव्या खासपुर परगनार कालीघाट ग्रामेर मोट सात विघा देवसेवार जमीर मध्ये एक विघा ओ ज्ञालियाना पाच दिवस पालार मध्ये एक दिवस पाला कालि-ठाकुरानिर सेवा सहित आपन स्वामीर सर्गार्थे मुद्दाइके दान-करियाछे। यद्यपि स्यात् जेलार फयछलार लिखित जेला चर्व्विष परगानार पण्डितेर व्यवस्थार मजमुने प्रकाश आछे—ये देव-सेवार जमी ओ सेवार पाला सेवा सहित अविरा स्त्रीर दान

करिवार क्षमता आछे, किन्तु जेलार मुहाआलेहोम वदनचन्द्र-हालदार ओ गायरह छाएलान् जाहेर करे ये अवीरा स्त्रीर ठाकुराणीर पाला ओ देवसेवार जमी दान करिवार क्षमता नाइ। ए जन्य हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लओया उचित वोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ओ राजचन्द्ररायेर मोकद्दमार दाखिल हओया ए आदालतेर सावेक पण्डितेर व्यवस्थार नकल, ये एइ दरखास्तेर सामिल आछे, एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालेर जवाव व्यवस्था मजकुर दृष्ट करिया एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण, ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय।

यद्यपि स्यात् अवीरा स्त्री मोट शात विघा देवसेवार जमीर मध्ये मओाजी एक विघा जमी ओ सालियाना पाच दिवस पालार मध्ये एक दिवस पाला सेवा सहित स्वामीर स्वर्गार्थे कोन—वेक्तिके दान करे, ए प्रकार दान वाङ्गलादेसेर शास्त्रानुसारे यथार्थ वटे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलकसुन्दररासमाहेवधर्म्माधिकरणलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयषड्विंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितराजचन्द्ररायसम्बन्धिविवादविषयनिविष्टव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रञ्च यदेतदब्दीयजानवरीमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि काचिदवीरा स्त्री सप्तविघाशब्दप्रतिपाद्यदेवसेवासम्पादकभूमिसमुदायान्तर्गतैकविघाशब्दप्रतिपाद्यभूमिमेवं वार्षिकपञ्चदिवसीयपालाशब्दप्रतिपाद्यान्तर्गतैकदिवसीयपालाशब्दप्रतिपाद्यञ्च देवसेवासहितं स्वपत्युः स्वर्गार्थं कस्मैचिद्दत्तवती स्यात्तदा तद्दानं यथार्थमेव भवति, देवसेवायाः देवसेवापालाशब्दप्रतिपाद्यस्य च सेवाइतशब्दवाच्यस्यायत्तत्वेन सेवाइतशब्द-

वाच्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य पत्युर्द्धने जाताधिकारिण्या उपरि-लिखितप्रकारकृताद्दशदानकर्त्र्याः पत्न्यास्ताद्दशदानविषयीभूतदेवसेवायाः देवसेवापालाशब्दप्रतिपाद्यस्य च तत्सम्पादकदेवत्रभूमेः समर्पणं विना अनिष्पाद्यत्वेन तत्समर्पणरूपदानस्याप्यावश्यकत्वेन च यथोत्तराधिकारि-त्वेन सेवाइतशब्दवाच्यस्य पत्न्यास्ताद्दशदेवत्रभूमौ स्वत्वम्, अर्थात् तत्संरक्ष-णावेक्षणादिकर्त्तृत्वोपयुक्तं कारयितृत्वोपयुक्तं वा तदुत्पन्नोपस्वत्वेन च देव-सेवादिकर्त्तृत्वोपयुक्तं कारयितृत्वोपयुक्तं वा तथैव तथा पत्न्या कृतदानेन ताद्दशं स्वत्वं प्रतिग्रहीतुरपि भवितुं शक्नोतीत्यत्र बाधकाभावाद्—इति वङ्ग-देशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्र-हदायरहस्यव्यवस्थार्णवविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रधने पौत्रप्रपौत्राभावे साध्व्याः पत्न्या अधिकारः, तत्रापि भर्त्तृ-स्वर्गमुद्दिश्य दाने यथाकथञ्चिच्छरीररक्षार्थं भक्षणे चाधिकारः, एतदति-रिक्तयथेष्टाचरणे स्थावरविक्रयादौ च नाधिकारः—इति व्यवस्थार्णवग्रन्थ-लिखनम् ॥ २ ॥

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्व्वकपरस्वत्वापादनं दानम्—इति *विवादभङ्गार्णव*-(१ विवा० ३१८ ख)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

विक्रेतुर्याद्दशं स्वत्वं क्रेतुस्ताद्दशमेव स्वत्वं क्रयाज्जायते—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग(पृ० १०)टीकालिखनञ्चेति ।

एतदब्दीयजानवरीमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकाद्वयाधि-कयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११२—सदर देवोयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न—

भरणार्थं प्राप्त व्यक्तीर मरणानन्तर ताहार उत्तराधिकारिगण बहुकालावधि ऐ वस्तुते भोगवान थाकिले भरणार्थ वस्तुते भरणार्थ प्राप्त व्यक्तीर उत्तराधिकारिगणेर सत्व लोप हय कि ना ? इति—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेवमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयोनत्रिंशद्दिवसीयशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कयाचित् कन्यया स्वपितुः सकाशाद्भरणार्थं किञ्चित् स्थावरं धनं प्राप्तम्, तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिभिर्बहुकालावधिकं तदेव वस्तुस्वभोगास्पदीभूतं कृतं स्यात्तत्र यदि तया व्यक्त्या तद्वस्तु केवलं स्वजीवनपर्य्यन्तमेव भरणार्थं प्राप्तं स्यादेवं तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिभिः प्रभुसमर्पितपत्रावगतसम्बन्धेन प्रीत्या वा बहुकालपर्य्यन्तं तद्वस्तु भुक्तं चेदपि तेषां तत्र स्वत्वानुत्पादेन स्वत्वसामान्याभावस्य विद्यमानत्वात् स्वत्वध्वंसो दूरापास्त एव, एतादृशभोगस्य स्वत्वोत्पादकत्वाभावात् स्वत्वोत्पादकस्य[1] दानाद्यागमस्यात्राप्राप्तत्वाच्च, सम्बन्धप्रयुक्तभोगस्य प्रीतिप्रयुक्तभोगस्य वा स्वत्वे प्रमाणत्वाभावाच्च। यदि च तया व्यक्त्या तद्वस्तु[2] पुत्रपौत्रादिक्रमेण भरणार्थं प्राप्तं स्यात्तदा तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामपि तादृशभरणार्थप्राप्तिरूपागमेन तादृशभरणोपयुक्तं स्वत्वमुत्पन्नं नष्टं भवितुं न शक्नोति, वरं बहुकालावधिकतादृशभोगेन तादृशभरणोपयुक्तस्वत्वोत्पादकस्तादृशभरणार्थप्राप्तिरूपागमो दृढीभूतः—इति वङ्गदेशचलितमनुव्यवहारमातृकाव्यवहारतत्त्वदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

सप्त वित्तागमा धर्म्म्या दायो लाभः क्रयो जयः।
प्रयोगः कर्म्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च॥ इति मनुवचनम् (पृ० ४२२, १०।११५)॥१॥

---

१. स्वत्वेत्पादकस्य—व्यप.। २. त्यक्तयाद्वस्तु—व्यप.।

अस्वामिना तु यद्भुक्तं गृहक्षेत्रापणादिकम् ।
सुहृद्बन्धुसकुल्यस्य न तद्भोगेन हीयते ॥—इति दायतत्त्वव्यवहार-तत्त्वादि(पृ० ५४)ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० ७५)वचनम् ॥२॥

आगमेन विशुद्धेन भोगो याति प्रमाणताम् ।
अविशुद्धागमो भोगः प्रामाण्यं नैव गच्छति ॥—इति व्यवहारमातृकादि(पृ० ३४५)ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ पृ० ७०)वचनञ्चेति ॥३॥

अत्र भरणार्थं तद्वस्तु तया व्यक्त्या केन प्रकारेण केन नियमेन वा प्राप्तमिति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातुमशक्य एव तत्पत्रजातेषु प्रमाणभूतं दानपत्रादिकं न प्राप्तमत एव व्यवस्थायां प्रकारद्वयं लिखितमिति निवेदनम् ॥

अङ्गरेजोशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११३—सदर देओयानिर पण्डितेर पर सओयाल—

जद्यपि एक वेक्ती हिन्दुर दुइ कन्या थाके । ताहाते एक कन्या एक पुत्र आपन गर्भेर राखिया आपन पितार साक्षाते मृत्तु हए । ताहार पर ऐ वेक्ती आपनार द्वितीय कन्यार साक्षाते मृत्तु हए । से मते मृत वेक्तीर तेक्त वस्तु वर्तमान कन्याय अरसे, कि ताहार दौहित्रके, जे ताहार माता पुत्र राखिया आपन पीतार वर्तमाने मृत्तु हइयाछे, ताहाके मृत वेक्तीर तेक्त वस्तुर कीछु अरसे कि ना । जद्यपि अरसे तवे की प्रमाण ? ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्येकस्य कस्यचित् हिन्दूजातीयस्य दुहितृद्वयमासीत्, तयोर्मध्ये एका दुहिता स्वगर्भोत्पन्नमेकं पुत्रं संरक्ष्य विद्यमाने स्वपितरि मृता, तदनन्तरं स एव व्यक्तिविशेषो परस्यां दुहितरि विद्यमानायां मृतस्तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधनं विद्यमाना दुहिता, या प्रभुसमर्पितविचारपत्रेण पुत्रवत्यवगम्यते, सा प्राप्तुं शक्नोति, तस्यां पुत्रवत्यां दुहितरि विद्यमानायां सत्यां स च दौहित्रो यस्य माता विद्यमाने स्वपितरि मृता प्राप्तुं न शक्नोति, यतः शास्त्रानुसारेण पुत्रवत्यां दुहितरि जीवन्त्यां सत्यां कस्यचिदपि दौहित्रस्य विद्यमानमातृकस्य मृतमातृकस्य वा मातामहधने नाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २१६।२।१३५)वचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी ऋक्थं गृह्णीयात्तदभावे चोढा—इत्युपरिलिखितग्रन्थधृत(दाक्र सं० पृ० ३)पराशरवचनम् ॥ २ ॥

कुमार्यभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(या)श्च, (भगिन्याः) तुल्योऽधिकारः, तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः—इति, *स्वपुत्रद्वारेण पार्वणपिण्डदातृतया तयोरुपकाराविशेषाच्च*—इति च, *सर्वदुहित्रभावे दौहित्रस्याधिकारः*—इति च दायक्रमसंग्रह(पृ० ४)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

इहार सम्रोयाल पार्षिते छिल, एइ निमित्ते एइ पत्रे लेखा गेल ना।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

११४ सओआल—आमार ज्ञात हइवार कारण ए विसएर जिज्ञासा करा आविश्वक हइल जे जद्यपि एक वेक्ती हिन्दुर दुइ-पुत्र थाके। ताहाते एक पुत्र आपन पितार साक्षाते एक पुत्र जिवमान राखिया मृत्तु हय। ताहार पर ऐ वेक्ति आपन द्वितीय पुत्र ओ मृत पुत्रेर वालकेर साक्षाते मृत्तु हए। तवे ऐ मृत वेक्तीर तेक्त धन काहाके अर्शे इति।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रे यत्प्रश्नान्तरं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कस्यचित् हिन्दूजातीयस्य व्यक्तिविशेषस्य पुत्रद्वयमासीत् तयोर्मध्ये एकः एकं पुत्रं संरक्ष्य विद्यमाने पितरि मृतस्तदनन्तरं सोऽपि व्यक्तिविशेषो द्वितीये पुत्रे विद्यमाने मृतपितृकपौत्रे च विद्यमाने सति मृतस्तदा तस्यैव धनिनो मृतस्य तद्धनस्य समं द्विधा विभक्तस्यैकोंऽशो विद्यमानपुत्रस्यापरोंऽशो मृतपितृकपौत्रस्य भवति। अत्र विशेषतः शास्त्रानुज्ञाया अधोलिखितप्रमाणेष्वेव स्पष्टीकृतत्वाद्—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते मृते पुत्रे[१] तत्सुतं ऋक्थभागिनम्।
कुर्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

लभेतांशं स्वपित्र्यन्तु पितृव्यात्तस्य वा सुतात्।
स एवांशस्तु सर्व्वेषां भ्रातॄणां न्यायतो भवेत् ॥

लभेत तत्सुतो वापि निवृत्तिः परतो भवेद्—इति दायतत्त्वविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० पृ० १०३)

यथा पैतामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन् मृते तत्पुत्राणामपि, न तत्र सन्निकर्षविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः, पार्व्वणविधिना पिण्डदानेन

१. निजे प्रेते—इति धर्मकोशस्थःपाठः; अविभक्तेऽनुजे प्रेते, इति कात्यायनस्मृतिपाठः।

द्वयोरपि तदुपकारकत्वाविशेषाद्—इति दायभाग(पृ० २९)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

मृतपितृकपौत्रमृतपितृपितामहकप्रपौत्रयोः पुत्रेण सह तुल्याधिकारः, तेषां पार्व्वणपिण्डदातृत्वेनोपकाराविशेषाद्—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० २)-ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

एहार सञोयाल पार्षिते छिल, एइ निमित्ते एइ पत्रे लेखा-गेल ना ।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

११५ सदर देओयानि आदालतेर पण्डित उपर सञोयाल—
नं २ खास आपील शन १८३० साल—

मथुरराय ओ लक्षणराय आपिलाण्टान
राजुपाइक रेष्पाडेण्ट

१ दफा

गुरुप्रसाद नामक एक व्यक्ति अपुत्रक कारण स्त्रि वर्त्तमाना थाकिते ओ आपनार सकल विषय दानपत्रेर लेखार सरत मते अन्य व्यक्तिके दान करिते पारे कि ना, आर दान करिले शास्त्रानुसारे से दान जथार्थ हइते पारे किं ना ?

२ दफा—

दानेर परे गुरुप्रसाद मजकुरेर मृत्यु हइले परे यद्यपि ये व्यक्ति दान पाय से दानपत्रेर लेखार सरत मते गुरुप्रसाद मजकुरेर अग्निकार्य्य ओ श्राद्धादि करिया आर उहार स्त्रिर अन्न-वस्त्र दिया थाके, तवे दान मजकुरा यथार्थ हइते पारे कि ना ?

३ दफा—

गुरुप्रसाद मजकुरार ऐ प्रकार दान करिले परे सेइ दानेर द्रव्यादि अन्य कोन व्यक्तिके कवालार द्वाराय विक्रय करिते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयमार्च्चमासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

कश्चिद् गुरुप्रसादनामा व्यक्तिविशेषो निःसन्तानत्वेन हेतुना विद्यमानायामपि पत्न्यां स्वस्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनं प्रभुसमर्पितदानपत्रलिखितनियमेनान्यस्मै दातुं शक्नोति। अथ च कृते च दाने शास्त्रानुसारेण तद्दानं यथार्थं भवति, शास्त्रानुसारेणैतादृशदानसिद्धौ बाधकाभावादिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते।—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृत (१ विभ० ४४८ क) बृहस्पति (पृ० १३७) वचनम् ॥ १ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै।—इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ २ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानानन्तरं तस्यैव गुरुप्रसादस्य मरणे सति दानग्रहीत्रा दानपत्रलिखितनियमानुसारेण तस्यैव गुरुप्रसादस्य अग्न्यादि सम्पाद्य दाहादिकार्य्यं श्राद्धादिकार्य्यञ्च कृत्वा अथ च तत्पत्न्या ग्रासाच्छादनादिकं दत्तमभूत्, तदा तद्दानं यथार्थं भवितुं शक्नोति शास्त्रानुसारेण सोपाधिदानस्योपाधिसिद्धौ सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणत्रयम् ॥३॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धान्तसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्

स एव गुरुप्रसादस्तादृशदानकरणानन्तरं तद्दानकृतद्रव्यादेः अन्यस्मै कस्मैचिद् विक्रयपत्रद्वारा विक्रयं कर्त्तुं न शक्नोति प्राथमिकतादृशदानकरणेन गुरुप्रसादस्य तद्द्रव्ये यावज्जीवं दम्पत्योर्भरणपोषणाद्युपयुक्तस्वत्वातिरिक्तस्वत्वस्यार्थाद्दानविक्रयाद्युपयुक्तस्वत्वस्याभावेन प्राथमिकदानानन्तरं तत्कृतविक्रयस्यास्वामिकृतत्वेन, अस्वामिकृतविक्रयस्यासिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकामनुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—"

अत्र प्रमाणम्

तथा च पूर्व्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण त्यागशक्तस्य दाधातोः—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत(पृ० ४) दायभागटीकालिखनम् ॥ १ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इतिमनु(पृ० ३०६। ८।१९९)वचनम् ॥ १२ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेद्—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ(१ विवा० २१७ ख)धृतकात्यायन(कास्मृ० ६१२, पृ० ७६) वचनञ्चेति ॥ ३ ॥

आपरेलमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशनिवासरे दत्तेयं मया व्यवस्था ॥०॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

सदर देओयाणी आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

११६—एक व्यक्ति अवीरा स्त्री आपन स्वामीर परकालेर क्रिया कर्म्मेर खरचेर देना परिशोध प्रयुक्त स्वामीर उत्तराधिकारीगण वर्त्तमाने देवत्र भूमि देव सेवा समेत टाकार परिवर्त्त[1] दान करिते पारेकि ना। आर ताहा सिद्ध हय कि ना? इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयमार्च्चमासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥ ० ॥

एका काचिदवीरा स्त्री स्वपत्युः पारलौकिककार्यार्थव्ययपरिशोधनार्थं पत्युरुत्तराधिकारिषु विद्यमानेषु देवत्रभूमिं राजतमुद्राविनिमये दातुं न शक्नोति, एवं तद्दानं न सिद्ध्यति, देवत्रभूमौ देवभिन्नानां केषाञ्चिदपि स्वत्वाभावेन दानायोग्यत्वात्। देवसेवायाश्च सेवायितशब्दवाच्यस्यायत्तत्वेन सेवायितशब्दवाच्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य पत्युरंशे उत्तराधिकारित्वेन जाताधिकारा पत्नी। यदि राजतमुद्राविनिमये स्वपतियोग्यांशदेवसेवादानमन्तरेण स्वपत्युः पारलौकिककार्य्यार्थव्ययपरिशोधनं कर्त्तुमशक्ता स्यात्तदा तदर्थं स्वपतियोग्यांशरूपाया देवसेवाया राजतमुद्राविनिमये दानं कर्त्तुं शक्नोति, तद्दानञ्च सिद्ध्यति। तत्र च द्रव्यसाध्यदेवसेवाया द्रव्यं विनाऽनिष्पाद्यत्वेन[2] स्वपतियोग्यांशदेवसेवानिर्वाहकदेवत्रभूमेः संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वा तदुत्पन्नोपस्वत्वेन च देवसेवाकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वोपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तस्य देवसेवान्यथानुपपत्त्या समर्पणं भवितुमर्हति, यतः सेवायितशब्दवाच्यस्य तन्मरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणो वा देवसेवानिर्व्वाहकदेवत्रभूमेः संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वा देवसेवान्यथानुपपत्त्या क्षमतास्त्येव। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितपत्रजातान्तर्गतैकविंशत्यङ्काङ्कितदेवसेवार्पण—हेवावेल एग्रोज—संज्ञकपत्रे अस्मत्स्वत्वे त्वं वर्त्तमानो भूत्वा-

---

१. परिवर्त्ते। २. विनाऽपिष्पा० व्यप०।

श्रीमत्याः परमेश्वर्य्याः सेवां भूमिसहितां स्वायत्तीकृत्य पुत्रपौत्राद्युत्तराधिकारिक्रमेण तद्भूमेरुपस्वत्वादिकमादाय श्रीमत्याः परमेश्वर्य्याः सेवां कुरु इति लिखनेन स्वपतियोग्यांशरूपाया देवसेवायास्तत्सेवासम्पादकदेवत्रभूमिसहिताया राजतमुद्राविनिमये श्रीमत्याः परमेश्वर्य्याः सेवार्थं समर्पणमेव स्पष्टीकृतम्—इति वङ्गदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति—इति मनु(११।२६) वचनम् ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्—इति कुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावली(पृ० ४३०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः—इति मनुवचनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

भर्त्तुरौर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतम्—इति दायभागदायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

विक्रेतुर्यादृशं स्वत्वं क्रेतुस्तादृशमेव स्वत्वं क्रयाज्जायते—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

एतदब्दीयापरेलमासीयत्रयोविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

११७ प्रभुकृतप्रश्नमवगत्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यप्येकस्यां पत्न्यामेकस्यां दुहितरि च विद्यमानायां विद्यमानयोर्द्वयोः सोदरभ्रात्रोः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितो राधाकृष्णाख्य एतद्धम्माधिकरणनियुक्त-उकिलशब्दवाच्यो मृतः स्यात्तदा तत्त्यक्तधनं यदि सोदरभ्रातृभ्यां साधारणं न भवति तदा तत्पत्नी प्राप्तुं शक्नोति। यदि च तद्धनं सोदरभ्रातृभ्यां साधारणं भवति तदा तद्धने सोदरभ्रात्रोरेवाधिकारः, तत्पत्नी च यावज्जीवं तद्धनाद् ग्रासाच्छादनभागिनी भवति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्वर्य्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११८—प्रश्नः—

यद्यपि कोनह मृत व्यक्तिर अवीरा पत्नी आपन उत्तराधिकारि वर्त्तमाने आपन स्वामिर त्यक्त पैतृक अथवा निजेर अर्थात् स्त्री

धनरूप कोनह बागान आपन मृत स्वामिर विषयान्तर प्राप्त हइया ताहार रक्षार्थे आदालतेर खरचार कारण विक्रय करे तवे सेइ विक्रय शास्त्र सिद्ध हय कि ना ?

प्रश्नः—

यद्यपि उत्तराधिकारिर लिखित दलिलेर द्वारा ऐ अवीरार उपरेर लिखित विषयेर दान विक्रयेर क्षमता बोध हय तवे सेइ विक्रय शास्त्र सिद्धहय कि ना? ॥०॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति तादृशविक्रयः शास्त्रसिद्धो भवति, यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरतस्य पत्युर्द्धनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नी-संक्रान्तत्वेऽपि तस्याश्च वर्त्तनाद्यशक्तौ तदुपयुक्तस्य तद्धनस्याधानं विक्रयणं (च) शास्त्रानुमतं भवति । अतएत वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तद्धनरक्षणस्याप्या-वश्यकत्वेन तद्धनरक्षणार्थं तदुपयुक्तस्य तद्धनस्य शक्तावशक्तौ वामय-यैव स्वकीयस्त्रीधनस्य चाधानं विक्रयणं (च) शास्त्रसम्मतं भवतीति निष्प्र-त्यूहमेव ।

द्वितीयप्रश्नोत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्—इति वङ्गदेशचलितदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

अतएव वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-मपि—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

तथा च भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्व्वीत—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्त्तितम् ।
विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादि-
(पृ० ७६)ग्रन्थधृतकात्यायन(पृ० ११०, ६०६)वचनञ्चेति ॥३॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—————

११९—आदालते देओयानि जङ्गल महाल सन १८३१ साल ता० १९ मेइ—

सओयाल जओयाव

कोनो कनज ब्राह्मण तिन चारि पुरुष वाङ्गला देसे वास करिया विवाह आदि क्रिया कलाप मिताक्षराशास्त्रानुसारे करिया आसिते-छिल, एवं वाङ्गला देसे किछु जमिदारि कालेकटरिं खरिदा ओ दोषरा ताल्लुक ओ गयरह सोपार्जित करिया कथोक दिन भोगवान थकिया दस एगार वत्सरेर अधिक हइवेक अवर्त्तमान हइयाछे। ऐ चारि पुत्र आपन पितार मरणान्ते कथोक दिन एक अन्ने थकिया पृथक अन्नें हन। किन्तु यदि जमिदारि गयरह एजमालिते थाकिया मालगुजारि ओ सरञ्जामि ओ सेवा ओ सदावर्त्त खरच पत्र वादे वाकि मुनफा चारि भ्राताते समान हिस्या लइया थाके, ओ चारि भ्रातार मद्धे एक भ्राता आपन नाओलद अर्थाद अविरा एक कविला राखिया अवर्त्तमान हय। तवे शास्त्र-मते फौती भ्रातार, अर्थात ये भ्राता मरियाछे, ताहार मतरुका वस्तु, जाहा चिन्हित ना हइया एजमालिते आछे, ऐ सकल वस्तुते धनाधिकारि फौति व्यक्तिर भ्रातारा, कि ताहार कविला हइते पारे ॥

२—सओयाल—

यदि चारि भ्राता वर्त्तमाने जमिदारि गयरह एजमालिते राखिया चारि चारि आना जमिदारिर खजनार टाका आपन

२ हिस्या प्रजागखोर पास उसुल तहशील करिथाथाके, तबे शास्त्रानुसारे उपरेर लिखित ओयारिसान मध्ये धनाधिकारि कविला कि भ्रातारा हइते पारे—इहार जओयाव शास्त्रानुसारे लिखिया ए आदालते पाठाइवेन॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयमेइमासीयाष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे पादोनघटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वये मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति यदि चतुर्भिर्भ्रातृभिः कान्यकुब्जब्राह्मणजातीयैः पुरुषचतुष्टयावधि पञ्चपुरुषावधि वा वङ्गदेशनिवासिभिः पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण स्वकीयविवाहादिक्रियाकलापादिकर्म्म कुर्व्वद्भिः पृथगन्नैः साधारणपैतृकपैतामहसराजकरस्थावरधनैः साधारण्येन राजकरदानराजाज्ञयाऽऽवश्यकराजदण्डादिदानदेवसेवादि[1]सदाव्रतादिकर्म्म कुर्व्वद्भिस्तत्तत्कर्म्म व्ययितावशिष्टजङ्गमधनं विभज्य प्रत्येकं तस्य समानांशो गृहीतः स्यात्तेषां चतुर्णां भ्रातॄणां च मध्ये एकः कश्चित् पत्नीमेकां संरक्ष्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितो मृतश्चेत्तदा तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनांशे तदीयस्वोपार्जितासाधारणधने तत्पत्न्येवाधिकारिणी[2], न तु भ्रातरः। तदीयाविभक्तसाधारणसराजकरास्थावरधनांशे च तद्भ्रातर एवाधिकारिणो न तु तत्पत्नी। यदि च तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनेन स्वोपार्जितासाधारणधनेन वा तत्पत्न्या यावजीवं तत्कुलोपयुक्तस्य ग्रासाच्छादनादेरावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणस्य वा निर्व्वाहो भवितुं न शक्यते तदा मृतस्य तस्य पत्नी तदीयाविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशादपि यावजीवं तत्कुलोपयुक्तस्य ग्रासाच्छादनोपयुक्तधनस्यावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणनिर्व्वाहोपयुक्तधनस्य च भागिनी भवतीति॥—

१ राजकलाव०—व्यप०। २ तत्पत्नेवा०—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ॥

तत्सुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

स्वर्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम्॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि विद्यमानैश्चतुर्भिर्भ्रातृभिः सराजकरस्थावरादिधनं साधारणं रक्षित्वा प्रत्येकं तत्सराजकरस्थावरोपस्वत्वस्य राजतमुद्रात्मकस्य स्वस्वांशरूपश्चतुर्थांशः प्रजानां सन्निधौ गृहीतः स्याचेषां चतुर्णां भ्रातॄणां च मध्ये मृतस्यैकस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य विभक्तपैतृकपैतामहधनांशे स्वोपार्जितासाधारणधने च तत्पत्न्येवाधिकारिणी, न तु भ्रातरः; अविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशे च तद्भ्रातर एवाधिकारिणो, न तु तत्पत्नी । यदि च तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनेन स्वोपार्जितासाधारणधनेन वा तत्पत्न्या यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य ग्रासाच्छादनादेरावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणस्य वा निर्व्वाहो भवितुं न शक्यते तदा मृतस्य तस्य पत्नी तदीयाविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशादपि यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य ग्रासाच्छादनोपयुक्तधनस्यावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य च भागिनी भवति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ ० ॥ ॥ ० ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयम् ॥ ३ ॥

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तदेकदेशेषु विषयतया व्यवस्थापनम्—इति मिताक्षरादि ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

एतदब्दीयजुनमासीयदशमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे दत्तेयं मया व्यवस्थेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२०—सओोल आदालत देओयानी कमिसनरि आतराफ मसरक जिला रङ्गपुर वनामे पण्डीताने सदर देओयानि आदालत शन १८३१ इङ्गरेजि तारिख ३१ मार्च्च मोतावेक सन १२३७ शाल वाङ्गला तारिख १९ चैत्र—

रामप्रसादचक्रवर्त्ति — आपीलाण्ट

पेनका ओ पचिवेत्ता — रेष्पाडण्ट हय

दावि ३० टाका वावत दाश दाशीर मूल्य—

एइ मोकद्दमाते एइ विशयेर व्यवस्था लओ। आविश्वक हइया सओोल करा जाइतेछे जे जादि कोन दास कि दाशी ताहार स्वामीर ताच्छल्य क्रमे अथवा अन्य कोन हेतुते पृथक थाकिया वहु काल पर्य्यन्त आपन उपार्ज्जित धन करणक दिन पात करे, तवे वहु काल परे ऐ स्वामिर कि स्वामिर उत्तराधिकारिर दाओ। शास्त्रानुसारे ऐ दास कि दासिर प्रति अर्शिते पारे कि ना इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयापरेलमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चिद्दासः काचिद्दासी वा स्वस्वामिनस्ताच्छील्यक्रमेणाथवान्येन हेतुना केनचित् पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्य्यन्तं स्वोपार्जितधनेन स्वनिर्व्वाहं कृतवान् कृतवती स्याद्वा, तत्र यदि स एव दासः सा दासी वा शास्त्रोक्त-

पञ्चदशदासान्तर्गतभक्तदासो भक्तदासी वा भवति तदा बहुकालानन्तरं तस्यैव स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा शास्त्रानुसारेण तद्दासम्प्रति दासीम्प्रति वा तत्प्रातीच्छा भवितुं न शक्नोति, स्वामिनो भक्तत्यागादेव तयोर्भक्तदासदास्योर्दास्यमुक्तेः, तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा स्वत्वाभावात्। यदि च स एव दासः सा दासी वा शास्त्रोक्तपञ्चदशदासान्तर्गतभक्तदासो भक्तदासी वा न भवति एवं तयोर्दासदास्योः स्वस्वामिनस्ताच्छ(ी)ल्यक्रमेणान्येन केनचिद्धेतुना वा पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्य्यन्तं स्वोपार्ज्जितधनकरणकनिर्व्वाहे सत्यपि बहुकालानन्तरमपि दास्यान्मुक्तिर्भवितुं न शक्नोति। अतएव तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा तयोः प्रातीच्छा भवितुं शक्नोत्येव, स्वस्वामिनस्ताच्छील्यक्रमेणान्येन केनचिद्धेतुना वा पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्य्यन्तं स्वोपार्ज्जितधनकरणकनिर्व्वाहस्य भक्तदासभक्तदास्यतिरिक्तानां चतुर्द्दशप्रभेदानां दासदासीनां दासमुक्तिहेतुत्वाभावेन पूर्व्ववत् तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा स्वत्वस्यानपायात्— इति वङ्गदेशचलितनारदस्मृतिविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अथ प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः।
अनाकालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः॥

मोक्षितो महतश्चर्णाद् युद्धेप्राप्तः पणेजितः।
तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः कृतः॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः।
विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः॥इत्युपरि लिखितग्रन्थधृतनारदवचनम्(नास्मृ॰ पृ॰ ६६)॥ १॥

एतेषां मध्ये तु *गृहजातादिचतुर्णांसात्मविक्रे तुश्च* स्वामिप्रसादं विना न दास्यमोक्षः। *अनाकालभृतस्तु दुर्भिक्षे यद्भक्षितं तद्गोयुगसहितं दत्त्वा मुच्येत*। *भक्तदासो भक्तत्यागात्*— इति दायक्रमसंग्रहादि(पृ॰ ५२।५३)ग्रन्थलिखनञ्चेति॥ २॥

आगष्टमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२१—सदर देश्रोयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न—
सओयाल—

यदि कोन स्त्रीर स्वामि प्रायश्चित्त करे, एवं ताहार बाटीते ब्राह्मणसकले आहारादि करे, ओ आपन सरिकानेर सहित विषयादिर विभाग हइयाथाके, तवे ताहार मरणोत्तर ऐ विषये ताहार स्त्रि अधिकारिणी हय कि ना, एवं ऐ स्त्रिर साक्षिरा उहार स्वामिर प्रायश्चित्त करा एवं जाति पाओया ये प्रकार कहियाछे शास्त्रसम्मत यथार्थ वटे कि ना—मिछिलेर कागजात दृष्टे यथाशास्त्र व्यवस्था लिखिवा इति । १५ आपरेल इं १८३१ साल ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदेतदब्दीयमैमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कस्याश्चित् स्त्रियाः स्वामिना प्रायश्चित्तं कृतम्, एवं तद्गृहे ब्राह्मणैराहारादिकमपि कृतम्, अथच तत्स्वामिनः स्वांशिभिः सह धनस्य विभागोऽभूत् तदा तत्स्वामिमरणोत्तरं तत्त्यक्तधने तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्येवाधिकारिणी भवति । पत्न्यां विद्यमानायामन्येषां नाधिकारः । अथच तस्याः स्त्रियाः साक्षिभिस्तस्याः स्वामिनः प्रायश्चित्तकरणं यथोक्तं जातिप्राप्तिर्वा यथोक्ता तच्छास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वविवादभङ्गार्णवदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पतितानामपि स्वधनसाध्यप्रायश्चित्तश्रुतेः पातित्येन स्वत्वनाशः प्रायश्चित्तवैमुख्ये बोध्यः—इति दायतत्त्व(पृ० १६२)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥ २ ॥

एतदब्दीयसितम्वरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैका-धिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२२—सं० २६ सन १८३० इङ्गरेजी

वहमव[1] फएज गञ्जर खोदाओन्द न्यामत श्रीयुत कमिशनर साहेव आदालत देओयानि कमिशनरि आतवाफ मशवक जेला रँपूर दाम एक वानहु ॥

आरजदास्त श्रीमोहनलाल सदर आमिन मतालके आदालत मजकुर गरिव परओर सेलामत। परगने पर्व्वत जोयारेर श्रीयुत राजेन्द्र नारायणचौधुरि जमिदार कृतनारायणचौधुरि[2] मोतफार =) आना जमिदारि पाओयार प्रार्थनाते परगना मजकुरेर जमि-दारान् श्रीअमृतसिंहचौधुरि ओ शरणसिंहचौधुरि ओ जगदीश्वरी-चौधुराणी जओजे अमृतनारायण चौधुरि मोतफार मादरे गौरीनारायणसिंहचौधुरि मोतफार नामे १६२॥-) १२॥ गण्डार दाविते[3] नालिस करे। नथिर कागजात विवेचनाते

---

१. वहथव अथवा वहअव अपि पठितुं शक्यते। २. कुढनारायण इत्यपि पठितुं शक्यते।
३. दारिते—व्यप०।

जानागेल जे परगणे पर्व्वत जोयारेर सावेक जमिदार कलपचन्द्रचौधुरिर ३ पुत्र। ताहार एक पुत्र किशोरिसिंह निःसन्तान मृत्यु हय, द्वितीय पुत्र फुलसिंहचौधुरिर २ पुत्र। ताहार १ एक पुत्र आजवसिंह निःसन्तान मृत्यु हय, आर १ पुत्र सुलतानसिंहचौधुरि। ऐ कलपचन्द्रेर पुत्र दलसिंहचौधुरि ताहार २ पुत्र अवनसिंह ओ किर्त्तीनारायणसिंहचौधुरि। किर्त्तिनारायणेर २ पक्षे ४ पुत्र। एक पक्षे राजेन्द्रनारायणसिंह ओ सरलसिंह। ऐ सरलसिंह सुलतानसिंहेर पुष्यपुत्र हइया ॥० आना जमिदारिर अधिकारि हइयाछे। आर एक पक्षे अर्थात् प्रथम पक्षेर पुत्र अमृतसिंह ओ कृष्णनारायणसिंहचौधुरि। ऐ अमृतसिंह अवनसिंहचौधुरिर पुष्यपुत्र हइया ।० आना जमिदारिर अधिकारि हइयाछे, वाकि ।० आना, याहा कीर्त्तिनारायणसिंह मोतफार हक, ताहार मध्ये =) आना राजेन्द्रनारायण ओ =) आना कृष्णनारायणसिंह अधिकारि हइयाछे। कृष्णनारायण मजकुर निःसन्तान मृत्यु हय। ताहार माता रुद्रेश्वरी ओ वैमात्रेय भ्राता राजेन्द्रनारायण ओ सहोदर भ्राता अमृतनारायणसिंह, जे आपन पितृव्येर पुष्यपुत्र हइयाछे, आर सरलसिंह वैमात्रेय भ्राता, जे सुलतानसिंहेर पुष्यपुत्र हइयाछे, इहारा सकलि वर्त्तमान आछे। राजेन्द्रनारायण वैमात्रेय भ्राता विधाय ऐ कृष्णनारायण मोतफार =) आनार दाओया राखे। अमृतनारायणसिंह पूर्व्वसहोदर भ्राता विधाय ऐ कृष्णनारायणेर =) आना अंशे आपन सत्व वर्त्ताय, एवं हेवानामा राखा ओ श्राद्धादि करा जाहेर करे। हेवा नामा दरपेष करिते पारिलना। अतएव ऐ कृष्णनारायणेर =) आना अंशे कोन व्यक्ति अधिकारि हय-यथाशास्त्र इहार व्यवस्था निमित्ते ओ पष्ट वुझार जन्ये एक कुरशीनामा एइ आरजि सहकारे पठाइया उमेदोयार जे हजुरेर रोवकारिर द्वाराय कुरशीनामा सदर देओयानि आदालतेर पण्डितदिगेर निकट पाठाइया व्यवस्था आनाइया ए आदालते देलाइते मरजि हय।—इह'

आरज। इति सन १८३१ साल इंरेजी ता० ९ जुन मोतावेक सन १२३८ साल वाङ्गला तारिख २७ ज्यैष्ठ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं वंशावलीपत्रं च यदेतदब्दीयजुलाइमासीयोनत्रिंशद्दिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयान्तरं मया प्राप्तम् तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।—

प्रश्नपत्रवंशावलीपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति कृष्णनारायणसिंहस्य मरणोत्तरं तत्त्यक्तार्णकद्वयपरिमितांशे यदि तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्रपितृपर्य्यन्तो न स्यात्तदा तन्मातृ रुद्रेश्वर्य्या एवाधिकारः, तन्मातरि रुद्रेश्वर्य्यां विद्यमानायां तद्वैमात्रेयभ्रातृ राजेन्द्रनारायणसिंहस्य, तत्सहोदरभ्रातुरमृतनारायणसिंहस्य, अर्थात् स्वपितृव्यस्यावनसिंहस्य दत्तकपुत्रत्वेनेदानीं स्वपितृव्यपुत्रस्य च तद्वैमात्रेयभ्रातुः सवलसिंहस्य[1] अर्थात् स्वप्रपितामहकलपचन्द्रचातुर्द्धरिकपुत्रफुलसिंहचातुर्द्धरिकपुत्रसुलतानसिंहचातुर्द्धरिकस्य दत्तकपुत्रत्वेनेदानीं स्वपितामहप्रपौत्रस्य च नाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥ १॥

एतदब्दीयसेप्टम्बरमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१ सबलःसिंहस्य—व्यप०।

१२३—सओयाल—यदि एक विधवार कन्या थाके, तबे सेइ विधवा आपन स्वामिर पैतृक धनेर अधिकारिणी हइते पारे कि ना. अथवा सेइ कन्या माता वर्त्तमाने आपन मृत पितार पैतृक धनेर अधिकारिणी हइते पारे कि ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयागस्तिमासीयविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्याश्चिद् विधवायाः स्त्रियाः कन्या तिष्ठति । सा विधवा यदि पत्युः पुत्रपौत्रप्रपौत्राणां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तादृशस्य पत्युः पैतृकधनस्याधिकारिणी भवितुं शक्नोति । तस्यां विधवायां मातरि विद्यमानायां सा दुहिता मृतस्य स्वपितुः पैतृकधनस्याधिकारिणी भवितुं न शक्नोति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने शास्त्रानुसारेण पत्न्याः प्रधानाधिकारित्वात्, पत्न्या अभाव एव दुहितुरधिकाराच्च-इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव-इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अनपत्यधनं पत्न्यभिगामि, तदभावे दुहितृगामि-इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥—

एतदब्दीयदिशम्वरमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१२४—प्रश्न—

कोन अपुत्रक स्त्रिलोक, ये ताहर चारि कन्या वर्त्तमाना, ओ ताहार मध्ये एक कन्या निःसन्ताना थाके, यद्यपि आपन स्वामिर परलोक प्राप्त हओनेर परे स्वामिर स्थावर वस्तु पुत्रवति तिन कन्यार मध्ये एक कन्यार स्वामिके, ये सेइ वेक्ति ऐ वस्तु नष्टोद्धार ओ स्त्रीलोकेर सेवा सुश्रुषा एवं पति पालनेर निमित्त आपन अर्थ व्यय ओ परिश्रम करे, ताहारि परिवर्ते एक कन्यार सन्मति पूर्व्वक दान करे, एवं तत्परे द्वितीय कन्या ओ दौहित्र सकल ऐ दाने सन्मति लिखन देय—एरूप दान शास्त्रोक्त सिद्ध हय कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयागस्तिमासीयविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तम्, तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति पतिमरणानन्तरं पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहिता पत्नी यद्युत्तराधिकारित्वेन स्वसंक्रान्तपतिस्थावरधनं पुत्रवतीनां तिसृणां दुहितॄणां मध्ये कस्याश्चिदप्येकस्याः पत्ये तत्स्थावरनष्टोद्धर्त्रे च स्वस्वत्वास्पदीभूतद्रव्यव्ययेन तस्याः स्त्रियाः सेवाशुश्रूषाप्रतिपालनादिपरिश्रमकर्त्रे च तादृशद्रव्यव्ययविनिमये स्वानन्तरोत्तराधिकारिणीनां दुहितॄणां दुहित्रनन्तरोत्तराधिकारिणां सर्व्वेषां दौहित्राणां च सम्मत्या दत्तवती स्यात्; तदैतादृशदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरतस्य पत्युर्धनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तस्याश्च वर्त्तनाद्यशक्तौ तद्धनसम्बन्ध्याधानविक्रयणादेः शास्त्रानुमतत्वेन वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तद्धनसम्बन्धिनष्टोद्धारस्याप्यावश्यकत्वेन तादृशनष्टोद्धृतद्रव्यदानस्य तस्याः स्त्रियाः सेवाशुश्रूषाप्रतिपालनाद्युपयोगिद्रव्यविनिमयत्वेन च तत्सिद्धेः शास्त्रानुमतत्वस्यार्थसिद्धत्वात्, स्वाम्यनुत्याऽस्वामिकृतदानस्य विक्रयस्य वा शास्त्रानुसारेण सिद्धेर्न्निष्प्रत्यूहत्वेन स्वानन्तरोत्तराधिकार्य्यनुमत्या स्वानन्तरोत्तराधिकार्य्यनन्तराधिकार्य्यनुमत्या च धनस्वामिपूर्व्वाधिकारिकृतदानस्य शास्त्रानुसारेण

सिद्धेर्न्निष्प्रत्यूहत्वस्यार्थसिद्धत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थ-धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अतएव वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम्, तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-मपि—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तथा च *भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्त्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्वीत*—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥३॥

तथा च *स्वामिनोऽनुमतिसत्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहारोपि तथा*—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनञ्चेत ॥४॥

एतदब्द यदिशम्वरमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२५—सओयाल—आदालते आपिल कलिकाता वनामे पण्डित आदालते देओयानि सदर—

१ प्रथम सओयाल—

राममोहन तेओयारि आपन भ्राता ओ भ्रातुष्पुत्र, उपपत्नी ओ ताहार गर्भजात दुइ कन्या ओ एक पुत्र वर्त्तमाने आपन समुदय-विषय उपपत्नीर गर्भजात आपन औरस पुत्रके दान करिया लोकान्तर हइया थाके, तवे शास्त्रानुसारे ऐ दानपत्र सिद्ध हय कि ना, ओ ए विधाने ऐ मृत व्यक्तिर भ्राता ओ भ्रातुष्पुत्र मृत व्यक्तिर धनाधिकारि हय कि ना।

द्वितीय सञोयाल—

यदि शास्त्रानुसारे ऐ दानपत्र सिद्ध ना हय, तवे ऐ मृत व्यक्तिर भ्राता ओ भ्रातुष्पुत्र ओ उपपत्नीर गर्भजात औरस पुत्र ओ दुइ कन्यार मध्ये कोन व्यक्ति मृत व्यक्तिर धनाधिकारि हइते पारे—यथाशास्त्र इहार जओयाव लिखह इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतद्दीयागस्तिमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि राममोहनत्रिवेदी स्वकीये सहोदरभ्रातरि भ्रातृपुत्रे च विद्यमाने सति स्वोपपत्न्यां च विद्यमानायां तद्गर्भजातयोर्द्वयोः कन्ययोर्विद्यमानयोरेवं तद्गर्भजनिते चैकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने सति स्वस्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनं स्वकीयोपपत्नीगर्भजाताय स्वकीयौरसपुत्राय दत्त्वा मृतः स्यात्तत्र यदि तद्धनं भ्राता[1] भ्रा पुत्रेण वा सह साधारणं भवति, एवं तद्दाने साधारण्यप्रतियोगिनोऽर्थात्तद्भ्रातुर्भ्रातृपुत्रस्य वा अनुमतिस्तदा तद्दानं प्रभुसमर्पित—प्रश्नपत्रावगतस्य विवाहसंस्कृतपत्नीगर्भजातपुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः प्रभुसमर्पितविचारपत्रावगतायाः विवाहसंस्कृतायाः पत्न्याः सुगन्धानाम्न्या यावज्जीवं ग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकतत्कुलोपयुक्त विधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तसमुदायधन एव वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण च सिद्धं भवितुं शक्नोति । तेषामनुमत्यभावेऽप्यपि वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोपरिलिखितविवाहसंस्कृतायाः पत्न्याः सुगन्धानाम्न्या उपरिलिखितप्रकारकग्रासाच्छादनाद्युपयुक्तातिरिक्तस्वांशयोग्ये सिद्धं भवितुं शक्नोति स्वेतरांशयोग्ये च सिद्धं भवितुं न शक्नोति । पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तु साधारण्यप्रतियोगिनो भ्रातु-

१. भ्राता—व्यप० ।

भ्रातृपुत्रस्य वा अनुमतिं विना समुदाये स्वांशयोग्येऽपि वा सिद्धं भवितुं न शक्नोति, स्वेतरांशयोग्ये तत्सिद्धिर्दूरापास्तैव, पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारणधने विभागं विना अंशानिर्णयाभावेन स्वांशयोग्येऽप्येकस्य स्वेतरांश्यनुमतिमन्तरा दानाद्यनधिकारित्वात्। यदि च तद्धनं मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनोऽसाधारणं विभक्तं वा भवति, तदा वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण च मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्याः सुगन्धानाम्न्या यावज्जीवमुपरिलिखितप्रकारकग्रासाच्छादनाद्युपयुक्तातिरिक्तधनांशे सिद्धं भवितुं शक्नोति। एवञ्च सति तद्दानस्य सिद्धत्वपक्षे मृतव्यक्तेर्भ्राता भ्रातृपुत्रो वा मृतव्यक्तेर्धनाधिकारी न भवति, तद्दानेन मृतस्य तस्य दातुः स्वत्वविच्छेदात्, प्रतिग्रहीतुः स्वत्वोत्पादाच्च। तद्दानस्यासिद्धत्वपक्षे अर्थात्तद्धनस्य भ्रात्रा भ्रातृपुत्रेण वा सह साधारण्ये पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तेषामनुमतिं विना तद्दानस्यासिद्धत्वे मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्यादीनाम्, अर्थात् सुगन्धानाम्नीप्रभृतीनां द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारकग्रासाच्छादनाद्युपयुक्तातिरिक्ताविभक्तसाधारणतदीयांशे मृतव्यक्तेः पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्तानाम्मध्ये यदि कश्चिन्नास्ति तदा तत्सहोदरभ्राता भवत्यधिकारी, सहोदरभ्रातरि विद्यमाने भ्रातृपुत्रो नाधिकारी भवतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति वङ्गदेशचलितविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतम्, पश्चिमदेशचलितवीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतञ्च नारदवचनम् पृ० ६६)॥ १ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।

कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ २ ॥

साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः। स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः अन्यानुमत्या विक्रये तु तत्सिद्धिः—इति वङ्गदेशचलितविवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१ विवा० ३०५ क)लिखनम् ॥ ३ ॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वाद् एकस्यानीश्वरत्वात् सर्व्वाभ्यनुज्ञाऽवश्यं कार्य्या, विभक्तेषु तु विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्धस्यैव—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

स्थावरस्य समस्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।

नैकः कुर्य्यात् कयं दानं परस्परमतं विना ॥—इति पश्चिमदेशचलितवीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥ ५ ॥

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्व्वकपरस्वत्वापादनं दानम्—इति वङ्गदेशचलित विवादभङ्गार्णवादिपश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ७ ॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षराग्रन्थलिखम् ॥ ७ ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण तद्दानस्यासिद्धत्वपक्षे अर्थात् तद्धनस्य भ्रात्रा भ्रातृपुत्रेण वा सह साधारण्ये सति तेषामनुमतिं विना पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तादृशदानस्यासिद्धत्वपक्षे प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितानां मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्यादीनां सुगन्धानाम्नीप्रभृतीनां मध्ये धनाधिकारे अयं विशेषः । सुगन्धानाम्नी तत्पत्नी यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनस्याधिकारिणी भवति । मृतस्य तस्योपपत्नी यदि मृतस्य राममोहनत्रिवेदिन उत्तराधिकारिणां प्रतिकूला व्यभिचारिणी वा न भवति तदा सापि स्वकुलोपयुक्तग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य च यावज्जीवं भागिनी भवति । एवं तदुपपत्नी गर्भजातौरसपुत्रोऽपि यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागी भवति । एवं तदुपपत्नीगर्भजाते द्वे कन्येऽपि विवाहसंस्कारपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादनस्य विवाहोपयुक्तधनस्य च भागिन्यौ भवतः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवदायक्रम-

संग्रहादिग्रन्थानुसारिणी पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्वर्य्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति उपरिलिखितग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ १ ॥

निर्व्वास्या व्यभिचारिण्यः प्रतिकूलास्तथैव च ।—इति तत्तद्ग्रन्थधृतःयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ २ ।

भरणं चास्य कुर्व्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात् ।

रक्षन्ति शय्यां भर्त्तुश्चेदाच्छिन्द्युरितरासु च—इति तत्तद्ग्रन्थधृतःनारदवचनम् ॥ ३ ॥

भर्त्तव्यास्त्वपरे सुताः ।—इति तत्तद्ग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् । ४॥

अपरिणीताजातस्य तु प्रतिषिद्धपुत्रत्वेनापकर्षान्न भागिता, किन्तु ग्रासाच्छादनमात्रार्हता इति वङ्गदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० १४२,लिखनम् ।।५।।

सुताश्चैषाञ्च भर्त्तव्या यावद्वो भर्तृसात्कृताः । इति तत्तद्ग्रन्थधृतःयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥६॥

कन्याभ्यश्चपितृद्रव्याद्देयं वैवाहिकं वसु—इति तत्तद्ग्रन्थ धृतदेवलवचनञ्चेति ॥ ७ ॥

अत्ररामसोहनत्रिवेदिनो वंशे वङ्गदेशचलितशास्त्रस्य पश्चिमदेशचलितशास्त्रस्य वा प्रचार इति अनवगमात् प्रभुसमर्पितविचारपत्रेऽपि वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा व्यवस्थादातव्येति आज्ञाया अलिखितत्वाच्च वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण च व्यवस्था लिखितेति निवेदनम् ॥

एतदब्दीयदिसम्बरमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२६—अथ कश्चिद् ब्राह्मणो द्वौ पुत्रौ द्वे कन्ये पत्नीञ्च त्यक्त्वा मृतः। तदनन्तरमवशिष्टानाम्मध्ये ज्येष्ठोऽजातसन्तानको ममार। द्वयोर्दुहित्रोर्म्मध्ये एका पुत्रादिरहिता स्वभागिनेयं कृत्रिमपुत्रं विधा(य ममार)। एतदनन्तरं मूलपुरुषस्य…………….। अविभक्तानां मध्ये एका दुहिता एको भ्राता चावशिष्टोऽस्ति। तयोर्म्मध्ये दुहिता स्वभ्रातुः सकाशादविभक्तायाः स्वजनन्या भागं याचते। अविभक्ताया मम मातुः भागस्त्वया भुज्यते, स मातुर्भागो दुहितुर्भवति, अतस्तद्भागं द्वेधा विभज्य तत्पुत्र्यै मह्यं मद्भगिनीकृतकृत्रिमपुत्राय च त्वया देय इति विवदते च।

एतादृशे विवादे समुत्थिते शास्त्रतो मातुर्भागो भवति नवेत्येकः प्रश्नः ॥१॥

मातुर्भागे दुहितुरधिकारोऽथवा पुत्रस्येति द्वितीयः प्रश्नः ॥२॥

पुत्रादविभक्तमृताया मातुर्भागाधिकारिण्या दुहित्रा तत्पुत्राद्विभज्य ग्रहीतुं शक्यते नवेति तृतीयः प्रश्नः ॥३॥

तत्र प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

मातापि पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी[1]।—इति कात्यायनवचनेन,

समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ—इति नारदवचनेन च मातुरपि तुल्यांशभागित्वज्ञापनात् धनस्वाम्युपरमानन्तरं तदीयधने मातुः पुत्रस्य च तुल्याधिकारप्राप्तेः तद्धने पुत्रतुल्याधिकारो वर्त्तते। एवं

तदभावे तु जननी तनयांशसमांशिनी।

समांशा[2] *मातरस्त्वेषां तुरीयांशा तु कन्यका* ॥—इति बृहस्पतिवचनम्।

अस्यार्थः *पितुरभावे अर्थात् पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती मातरोऽपुत्रा विमातरः एताः सर्व्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्यः, एषां भागिनां भगिन्यश्चाविवाहिताविवाहार्थं स्वस्वभ्रात्रंशतुरीयांशभाजो विवाहोचितधनभागिन्यो भवन्ति*—इति मदनरत्नविवादरत्नाकर(पृ० ४६६ ,विवादचिन्तामणि(पृ० १३१)दायक्रम(पृ० ४४)निबन्धकारैः कृतः। तथा याज्ञवल्क्योऽपि (२।१३२)—

---

१. °भागिनी इति पाठान्तरम्। २. समांसमा०—व्यप.

पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्—इत्याह ।

एवंविधनानामुनिवचनसत्त्वान्मातुर्भागो धर्म्मशास्त्रसिद्ध एवेति ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मातुर्मरणानन्तरं पूर्व्वोक्तमातृभागे दुहितुरधिकारः ।

[1]पितर्य्यूर्ध्वं गते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

मातुर्दुहितरोऽभावे दुहितॄणां तदन्वयः ॥ इति नारद(नामसं १४।२) वचनात् । अस्यार्थः—मातुर्धनं दुहितरो भजेरन् । दुहितॄणामभावे तदन्वयो दुहित्रन्वयो विभजेत्—इति सामान्यतो दायभाग(पृ० ८३)प्रकरणे विवादरत्नाकरकृतः । न तु स्त्रीधनप्रकरणे सञ्चारितः, प्रत्युत मिताक्षराकृन्मते पूर्व्वोक्तमातृधनस्य स्त्रीधनत्वमेव । स्त्रीधनशब्दश्च यौगिको, न पारिभाषिकः, योगसम्भवे परिभाषाया अयुक्तत्वात्—इति तल्लिखनात् ।

स्त्रीधने च प्रथमं दुहितुरेवाधिकारः ।

अतीतायामप्रजसि बान्धवास्तदवाप्नुयुः—इति याज्ञवल्क्यवचन(२।१४५)व्याख्याने—

तत्पूर्व्वोक्तं स्त्रीधनमप्रजस्यनपत्यायां दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितायां स्त्रियामतीतायां(मृतायां) बान्धवा भर्त्रादयो वक्ष्यमाणा गृह्णन्ति—इति मिताक्षरा(पृ० २२६)लिखनादिति ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

पूर्व्वोक्तधने मातृयोग्यांशे भगिन्या भ्रातुः सकाशाद् ग्रहीतुं शक्यते । प्रथमोत्तरोक्तबहुविधवचनसत्त्वात्तादृशपितृधने मातुः स्वत्वसत्त्वात् । मातृयोग्यांशे तादृशधने मातुर्मरणानन्तरम् ।

मातुर्दुहितरः शेषमृणात्ताभ्य ऋतेऽन्वये—

इति याज्ञवल्क्य (२।११७) वचनात्तस्याजाताधिकारत्वात् । एवं विभक्तेषु सुतो जातः सवर्णायां विभागभाक् ।

विभक्तेषु पुत्रेषु पश्चात् सवर्णायां भार्य्यायामुत्पन्नः पुत्रो विभागभाग् भवति । विभज्यत इति विभागः । पित्रोर्यो विभागस्तं भजत इति

१. पितर्य्युपरते पुत्राः—नामसं० पाठः ।

विभागभाक्। पित्रोरूर्ध्वं स एव तयोरंशं लभते इत्यर्थः। मातृभागश्चा-सत्यां दुहितरि '*मातुर्दुहितरः शेषम्*' इत्युक्तत्वाद्—इति वदतो मिताक्षरा-(पृ० २०७)कारस्य सम्भावितमातृभागेऽपि दुहितुरधिकारस्य सम्मतत्वात् पितुर्धने पितृपरमानन्तरं मातुः स्वत्वाभावे मातुःपुत्रेण समं विभज्य ग्रहणासम्भवाद् अनंशप्रकरणेऽपाठाच्च। विभागात् पूर्वमपि मातुस्तद्धने स्वत्वे सिद्धे मातृधनाधिकारिण्या दुहित्रा भ्रात्रा सहाविभक्ताया मातु-रंशो विभज्य ग्रहीतुं शक्यत एवेति ज्ञातव्यम्। नहि मूलपुरुषस्य भागाग्रहणेन तदग्रिमाधिकारिभागो लुप्यत इति सताम्परामर्शः॥

समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ,

माताप्यंशं समं हरेत्, मातरश्च पुत्रभागानुसारेण भागहारिण्यः—

इत्यादिनानामुनिवचनैः पुत्रैः सह मातुः समांशग्रहणं प्राप्तम्। तच्च स्वत्वनिबन्धनमेवोचितम्, न तु विभागाधीनम् तदंशे मातुः स्वत्वं जायते, विभागस्य स्वत्वकारणत्वे प्रमाणाभावात्। तथा च पितरि मृते तद्धने यथा पुत्राणां स्वत्वं तथा मातुरपि स्वत्वमङ्गीकार्य्यम्, स्वत्वं विना अंशग्रहणानु-पपत्तेः। अतएव केनापि मुनिना निबन्धकारेण च मातुस्तद्धने स्वत्वं ना-प्नोति नोक्तम्, प्रत्युत *समांशहारिणी, अंशं समं हरेत्, भागहारिण्यः* इत्यादिपदैः स्वत्वं प्रत्याय्यते[1]। किञ्च यदि तद्धने मातुः स्वत्वं न स्यात् तदा पुत्रा अनिच्छया मात्रे भागं न दद्युः। यत्र एकं पुत्रं पत्नीञ्चैकां रक्षित्वा धनी लोकान्तरमगमत् तत्र संजातधनाधिकारस्य विद्यमानपत्नीमात्रस्य तत्पु-त्रस्य मरणानन्तरं तद्धने तत्पत्न्या एवाधिकारो जायते। एतादृग्विषये मातुः स्नुषया सह समांशित्वं न स्यात्। भक्ताच्छादनविधायकं वचनं सन्निबन्ध-वाक्यं च नास्ति। अतोऽत्र मातुः कीदृशी गतिः स्यात्। तस्मात् स्वत्व-निबन्धनमेव मातुरंशित्वम्। यद्यपि 'आधिवेदनिकाद्यञ्च आधिवेदनिकञ्चैव' इत्यत्र पाठनिश्चयो नास्ति, तथापि[2] मिताक्षरामते(पृ० २२८)स्त्रीधन-शब्दश्च यौगिको न पारिभाषिकः। योगार्थसम्भवे पारिभाषिकार्थस्यान्याय्य-त्वादिति तल्लिखनात्, आधिवेदनिकाद्यञ्चेति पाठस्य धृतत्वाद्, आद्यशब्देन

१. प्रत्याप्यते—व्यप०। २. तथि—व्यप०।

च श्रृकूथक्रयसंविभागपरिग्रहाधिगमप्राप्तमितिव्याख्यानाच्च। मातृस्वत्वास्पदीभूतद्रव्यमात्रस्य निश्चितस्त्रीधनत्वेन मातुरूर्ध्वं तदुत्तराधिकारिदुहित्रादीनामेवाधिकारः। तत्र यदि अविभक्तैव माता मृता, तथापि तद्योग्यमंशं तदुत्तराधिकारिण्या दुहित्रा विभज्य ग्रहीतुं शक्यत एव। यथा काचिन्नारी दुहितृद्वयं रक्षित्वा स्वर्लोकमगमत्, तत्स्त्रीधने जाताधिकारयोर्दुहित्रोरविभक्तैवैका मृता, अनन्तरं तद्दुहित्रा स्वमातृयोग्यभागं मातृष्वसृतो विभज्य गृह्यत एव। दायभागमते तु तद्धनस्य संक्रान्तधनत्वेन स्त्रीधनत्वाभावात् विभक्ताविभक्तभेदानादरेणैव *मातुरुपरमे दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः*—इति वचनेन पूर्वस्वामिधनाधिकारिणां पुत्रादीनामेवाधिकार इति विशेषः—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति शास्त्रानुसारेण मातुर्भागो नैव भवति; प्रमाणाभावात्, एकपुत्रस्थले पितृधनविभागस्यासंभवाच्च। माता "*पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी*"—इति कात्यायनवचनस्य *समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ*—इति नारदवचनस्य च *पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेद्*—इति याज्ञवल्क्यवचनस्य च मृते पितरि जीवन्त्यां च मातरि, यदि दुर्वृत्ताः पुत्राः पैतृकधनस्य विभागं कुर्व्वन्ति तदा मात्रे स्वस्वभागसमभागं दद्युरित्यर्थकतया मिताक्षरादिग्रन्थेषु व्याख्यातत्वाच्च।

तदभावे तु जननी तनयांशसमांशिनी।
समांशा मातरस्तेषां तुरीयांशा तु कन्यका॥

इति बृहस्पतिवचनस्य च विशेषत इति व्याख्यानेन। अर्थाद् अस्यार्थः—

पितुरभावे[1]......पुत्रै[2]र्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती, मातरोऽपुत्रा विमातरः एताः सर्व्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्य इति। अनेन पुत्रैर्विभागे[3] क्रियमाणे एव मातुर्भागाधिकारित्वप्रतिपादकत्वावगमान्नान्यथा। यदि च बहुपुत्रस्थले पुत्राणां विभागोपक्रमं विनापि विभागसंभावनारहिते एकपुत्रस्थले वा पुत्रेण सह मातुस्तुल्याधिकारित्वं स्यात्तदा मातुः प्रथमाधिकार-

---

१. पितुरभावे—व्यप०। २. पुत्रैर्०—व्यप०।
३. पुत्रैर्विभागे क्रियमाने—व्यप०।

(त्वात्)······त्वेन पुत्र-पौत्र-प्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्नी-दुहितृ-दौहित्रादीनामधिकारप्रतिपादकस्य *पत्नी दुहितरश्चैव*–इत्यादि याज्ञवल्क्यवचनस्य,

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि––इत्यादि विष्णुवचनस्य दत्तजलाञ्जलि(त्वा)द्––इति द्वितीयतृतीयप्रश्नयोरुत्तरञ्चा······तत्रैवपर्य्यवसन्नमिति पृथ(ङ् न) लिखितमिति––

पूर्वप्रेषितव्यवस्थापत्रस्योत्तरमस्माभि(र्दृष्टम्), पाठशालास्थाशेषसर्व्वदर्शनाभिज्ञपण्डितानुमोदितादन्यद्दत्त··या। तत्र चत्वारो हेतव उपन्यस्ताः। तान् दृष्ट्वास्माभिर्निश्चितम्। अस्मद्दत्तशास्त्रार्थपत्रं[1] त्वया नादर्शि, यतो भवदुक्तहेतूनामाशङ्काकोटौ प्रविष्टानां समाधानस्य बहुशस्तस्मिन् शास्त्रार्थपत्रे कृतत्वात्। दृष्टं तत्पत्रं चेत्ततः···तादृशोत्तरदाने भवदुक्तहेतुखण्डनस्यापि खण्डनं भवता कृतं स्यात्। अतो बहुप्रकारकशङ्कासमाधानयुक्तं पूर्व्वलिखितशास्त्रार्थपत्रं पुनरपि प्रेष्यते। तत्पत्रस्य समाधानानां प्रत्येकं खण्डनं कृत्वा भवता उत्तरेण सह प्रेषिष्यते। तदा भवद्दत्तमुत्तरं पण्डितानां मनोरमं[2] स्यात्। तस्मात् सर्व्वेषां समाधानानां दूषणं विना भवदुत्तरमनुत्तरमिति। यद्यपि शास्त्रार्थपत्रे भवदुक्तचतुर्णां हेतूनां समाधानानि पूर्व्वमेव कृतानि पण्डितैस्तथापीदानीं पुनरपि समाधानान्तराणि चोच्यन्तेऽस्माभिः॥ मातुर्भागो नैव भवति प्रमाणाभावादिति प्रथमो हेतुस्त्वया दत्तः स न शोभनः॥०॥

माता तु पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी–इति कात्यायनीय–*समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ*–इतिनारदीय–*पितुरूर्ध्वं विभजतां मातप्यंशं समं हरेद्*–इति याज्ञवल्कीय–*समांशा मातरस्त्वेषान्तुरीयांशास्तु कन्यका*–इति बार्हस्पत्यवचनसाम्यसिद्धप्रमाणानां सत्त्वात्॥ नन्वेवमेभिर्वचनैः पुत्रा यदि विभागं कुर्य्युस्तदा जनन्यै स्वभागसममेकं भागं दद्युरित्युच्यते, न तु विभागोपक्रममन्तरा तया भागं ग्रहीतुं शक्यते इति चेत्। एतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावात् केनापि ग्रन्थकारेणालिखितत्वाच्च॥ याज्ञवल्क्यवचःस्थवर्त्तमानार्थक··ः सशत्र(?)विभागं कुर्व्वतामित्यर्थकविभजतामितिपद-

---

१. अस्मा तत्तत्र। २. मनोगमं—व्यप०।

मेव प्रमाणमिति न वचनीयम्। अनुवादविशेषणत्वेन लडर्थस्य विवक्षितत्वात्, कातीयादिवचस्सु तदभावाच्च।। किञ्च हरेदित्यत्र विधौ लिङ्विधिनिमन्त्रणे- इति पाणिनिस्मरणात्। विधित्वं चात्यन्ताप्राप्ते प्रापकत्व···(म्) ।। *ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च*--इत्यादिमन्वादिवचनैर्जनकमरणोत्तरं पुत्रकर्तृकविभागकालः पुत्रकर्तृकविभागश्चोभौ विधीयेते। एवञ्च तैरुत्पत्तिविधिभिर्भ्रातॄणां परस्परं विभागे सिद्धे मातुर्भागो न प्राप्तः तावान् पूर्व्वांशः *माताप्यंशं समं हरेत्*(या स्मृ० २।१२३)इत्यादिना च विधीयते। एवञ्च पतिमरणोत्तरं स्वेच्छया मात्रापि पुत्रसमांशस्वांशो हर्त्तव्य इति विधेः शरीरं निष्पन्नम्। तत्रायं फलितार्थः। यथा पित्रादूयुपरते तनयादिभिः पृथग्धर्म्मानुष्ठानाय व्यवहारे यथेष्टविनियोगार्हस्वत्वसम्पादनाय जन्मनैव स्वत्वमितिमूलको भागो गृह्यते, तथैव मात्रापि पुत्रैः सह पूर्व्वोक्ता ·····तत्सिद्धये·····विवाहजन्यस्वत्वमितिमूलको भागो ग्राह्य इति।। भवदुक्तरीत्या तु पुत्रकर्तृकमंशदानं सम्प्रदानीभूतया मात्रा ग्राह्यमितिविधिशरीरं *माताप्यंशं समं हरेत्*(यास्मृ० २।१२३)इत्यादिना निष्पन्नं भवेत्तच्च न शोभनम्। ईदृशस्य विधेः ऋषेरक्षरादनुत्पत्तेर्महर्षेरीदृशविधौ विवक्षिते *विभजन्तः पितुश्चोर्ध्वं दद्युर्मात्रे समांशकम्* इति—महर्षिणा पठितव्ये तथा पाठस्य कृतत्वाद्, भवदुक्तवचनार्थे विधित्वाभावापत्तेश्च। पितरि मृते संस्थितायां मातरि यदि दुर्वृत्तौ पुत्रौ भागं कुर्य्यातां तदा मात्रे भागं दद्यातामित्यत्र विभजतामित्यत्रस्थभवत्सम्मतबहुत्वाविवक्षैव लडर्थस्याविवक्षायां···श(?)पणेन भवदुक्तार्थे प्रमाणाभावस्य स्पष्टत्वात्। *विभक्तेषु सुतो जातः सवर्णायां विभागभाक्*--इति वचसो विभक्तेषु पुत्रेषु पश्चात्सवर्णायां जातो विभागभाग् भवति,···मातृभागं चासत्यां दुहितरि···*मातुर्दुहितरः शेष* इत्युक्तत्वादिति मिताक्षराकारैरर्थः करणात्। एवं

भ्रातॄणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि।
प्रातिभाव्यमृणं साक्ष्यमविभक्तेन तत्स्मृतम्।।

परस्परमितिशेष इति स्मार्त्तभट्टाचार्य्येण लिखित्वा यद्यपि जायापत्योर्विभागो न विद्यत इत्याद्यापस्तम्बीयेन जायापत्योर्विभागाभावप्रतिपादनात् पूर्व्ववचने दम्पत्योरुपादानं न सङ्गच्छत इत्याशङ्क्य

यदि कुर्य्यात्समानांशान् पत्न्यः कार्य्याः समांशिकाः—इति याज्ञवल्क्य-वचसि पुत्रविभागकरणे प्रवृत्तस्य पत्न्या अपि विभागावगतेस्तदभिप्रायेण दम्पत्योरित्यभिधानमिति समादधे। एवं

विभिन्नमातृकास्तेषां मातृभागः प्रशस्यते।

इति वचनं पुत्राणां भागग्राहकत्वं मातृद्वारेणैव बोधयति। तस्या भागाभावेतद्द्वारेण तद्ग्राहकाणां तद्ग्रहणानां पतिः स्यादितिमहा···कोपः स्मृतीनाम्। तस्माद् बहुमुनिसिद्धान्तिते ग्रन्थकृद्भिर्विरोधी[1] कृते प्रमाणसिद्धे मातुर्भागे प्रमाणाभावादितिहेतुर्द्धर्म्मशास्त्रानभिज्ञतानाम ग्र(?)हेतुदायकस्य प्रकटयति। इति मातुर्भागे प्रमाणाभावखण्डनम्। यदपि प्रलपितंमातु-र्भागो नास्ति एकपुत्रस्थलेऽपि विभागस्यासम्भवाद् इति द्वितीयं कारणम् तदपि न। एकपुत्रस्थलेऽपि विभागसम्भवस्य शास्त्रोक्तत्वात्। तद्यथा यदा एकात्मजः पिता स्वेच्छया स्वोपार्जितधनस्य त्रीन् भागान् कृत्वा द्वावंशौ[2] प्रतिपद्येत *विभजन्नात्मनः पितेत्यादिवचः*(वचनात्पिता)द्वौ भागौ स्वयं गृह्णाति पुत्रायैकम्भागं ददाति तदैकपुत्रस्थले विभागो न्याय्य एव। एता-दृशस्थले मिताक्षरादिमते स्वोपार्जितधने एव पितुरंशद्वयग्रहणम्भवति जीमूतवाहनादिमते तु पितामहाद्युपार्जितधने पुत्रोपार्जितधने च[3] पितुरंशद्वय-ग्रहणम्, यतस्तेषां मते *भूर्या पितामहोपात्ता* इत्यादीनि वचनानि(या० स्मृ० २।१२१) पितृकर्तृकन्यूनाधिकविभागनिषेधकानि, न तु पितुरंशद्वय-ग्रहणाभावबोधकानीति विचारान्तरम्। परन्तु सर्वेषां निबन्धकाराणां मते एतादृशस्थले एकपुत्रस्वत्वे भागो जायते; यथात्र जनको भागद्वयमेकस्मात् पुत्रादुपाददाति तथा पत्यौ मृतेऽगृहीतस्त्रीधना माता तथाभूतात् पुत्राद् भागं ग्रहीतुं शक्नोत्येव *समांशहारिणी माता*—इत्यादिवचनात्॥

नचैवं *द्वावंशौ प्रतिपद्येत विभजन्नात्मनः पिता* इत्यादि(ना०स्मृ० पृ०१९२)कमपि वचनमेकपुत्रस्थलातिरिक्तविषयमिति वाच्यम्, शङ्खलिखित-वाक्यविरोधात्। तथा च शङ्खलिखितावाहतुः *स ह्येकपुत्रः स्याद्द्वौ भागावात्मनः कुर्य्यात्*। न चैवं एकस्य पुत्र एकपुत्रः न पुनरेक एव पुत्रो यस्येति बहुव्रीहि-

१. विरोदी व्यप. २. न्शो व्यप. ३. पितरंश०—व्यप.

स्तस्यान्यपदार्थप्रधानत्वेन षष्ठीतत्पुरुषाद् दुर्बलत्वाद्—इति जीमूतवाहनाचार्य्यकृतेनानेनार्थेनैकपुत्रस्थलातिरिक्तविषय[1] एवं शङ्खलिखितौ बोधयतः *पितुर्द्विभागमिति* वाच्यम्। जीमूतवाहनतः प्राचीनानां नवीनानां च ग्रन्थकर्तॄणां मध्ये[2] तु बहुव्रीहेरेव तत्र सिद्धान्तितत्वात्, वीरमित्रोदये दायभागप्रकरणे शङ्खवचनस्थैकपुत्रपदव्याख्यावसरे तत्पुरुषस्वीकारे दोषदानेन जीमूतवाहनोक्तेर्दर्शितत्वात् च ॥

अतएव शुद्धिचिन्तामणौ तीर्थचिन्तामणौ मुण्डनप्रकरणे—*मुण्डनं चोपवासश्च सर्व्वतीर्थेष्वयं विधिः*—इत्यत्र दूषणभयाद् बहुव्रीहितः प्रबलभूतौ तत्पुरुषकर्म्मधारयौ त्यक्त्वा बहुव्रीहिरेवाश्रितो[3] महामहोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रैः, इति एकपुत्रस्थले भागाभावादिति हेतुखण्डनम्॥ यच्च *माता तु पितरि प्रेते पुत्रः* इति कातीयस्य *समांशहारिणी माता* इति नारदीयस्य *पितुरुर्द्ध्वं विभजतां माता* इति योगीशवचनस्य च *मृते पितरि मातरि जीवन्त्याञ्च यदा दुर्वृत्ताः पुत्राः पैतृकस्य धनस्य विभागं कुर्व्वन्ति तदा मात्रे स्वस्वभागसमं दद्यः* इत्यर्थकतया मिताक्षरादिग्रन्थेषु व्याख्यातत्वादितिमातुर्भागे[4] तृतीयो हेतुः सोऽपि न, मिताक्षरादिनिबन्धेषु एतादृशस्यार्थस्याप्यलाभात्[5], भवदुक्तमिताक्षरादिनिबन्धस्याप्रमाणत्वादस्माभिरदृष्टत्वाच्च। अत्रेदं विचारणीयम्। यथा पुत्रादीनां जन्मनैव सामुदायिकं प्रादेशिकं वोत्पन्नमपि स्वत्वम् *ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च* इत्यादि (मनु० ९।१०४) वचनानुरोधेन पितुरनिच्छया दाक्षिणात्यपाश्चात्यमैथिलसद्ग्रन्थकृन्मते पित्रार्जितधने, जीमूतवाहनाचार्य्यमते पितामहाद्यर्जितधनेऽपि विभागानर्हतां बोधयति। यथा वा पत्यौ[6]*जीवति जायापत्योर्विभागो न विद्यते पाणिग्रहणाद्धि सहत्वम्* इत्यापस्तम्बोयेन *पत्न्यः कार्य्याःसमांशिकाः* इति याज्ञवल्कीयेन (या० स्मृ० २।११५) च पत्या सह भार्य्यया भागो न लभ्यते; तथा अत्र विवाहजन्यं मातुः स्वत्वं पुत्राणामनिच्छया मात्रा पुत्रेभ्यः स्वीयभागो

१. विशय–व्यप.। २. ते–व्यप.। ३. °श्रितो व्यप.।
४. मातुरभागे–व्यप. ५. °रप्यला°–व्यप. ६. °पत्यो–व्यप.

न लभ्य इति न बोधयति, पूर्वस्थलवदत्र संकोचकव'चनाभावात् ॥ प्रत्युत मातुरग्रे पुत्राणामेवास्वातन्त्र्यम्, *ऊर्ध्वं पितुश्च*–इत्यादीनि (मनु० ६.१०४) वचांसि विदधति । अतएव तत्तन्निबन्धकारा *मातुरग्रे पुत्रकर्त्तृकविभागो न धर्म्योऽतदनुज्ञया*—इत्याहुः । अतोऽसाधारणं मातुः स्वत्वं पुत्राणां विभागोपक्रमं विना सङ्कोचकर्षि[?]वाक्याभावेन मातुर्भागं बोधयतीति मात्रा पुत्रानिच्छया विभागो ग्राह्य इति । न चैवं *पिता रक्षति बाल्ये हि भर्त्ता रक्षति यौवने, पुत्रास्तु स्थाविरे भावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति*—इत्यादि-नारदादि(ना० स्मृ० पृ० १६८)वचनेभ्यो मातुरप्यस्वातन्त्र्यमितिविभा-गोपक्रमं विना तस्या न भाग इति वाच्यम् ॥ *अकार्य्यकरणाद्रक्षेत्*— इत्यर्थस्य महानिबन्धेषु दर्शनात् *स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु*—इत्यादिवच-नानुसारेण वृथादानादावस्वातन्त्र्य'बोधनात् *माताप्यंशं समं हरेत्*—इत्या-दिवचनानुरोधेन भागग्रहणातिरिक्तस्थले तद्वचनेनास्वातन्त्र्यविधानाच्च ॥३॥ इति तृतीयहेतुखण्डनम् ॥

यच्च तदभावे तु जननी इति बार्हस्पत्यं वचः—अस्यार्थः······ । पितुरभावे पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती मातरोऽपुत्रा विमातर एताः सर्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्य इत्यनेन पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे मातुर्भा-गाधिकारित्वावगमादित्यनू'द्य विभागभावनारहिते एकपुत्रस्थले, विभाग-सम्भावनायुक्ते बहुपुत्रस्थले, पुत्राणां विभागोपक्रममन्तरा तनयैः सह मातुस्तुल्याधिकारित्वं चेन्मातुः प्रथमाधिकारि(णी माता धनिनः) पातित्वेन *पत्नी दुहितरश्चैव* इत्यादीनां दत्तजलाञ्जलिता स्यादिति तुरीयहेतुवर्णनम्, तदप्यतितुच्छम् । एतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावाद् बार्हस्पत्यवाक्यात्तराद-लाभात् स्वकपोलक(ल्पि तत्वात्, *तदभावे तु जननी* इत्यस्य-*माता-प्यंशं समम्*– इत्येतत्समानार्थकत्वाद्, उत्तरार्द्धन्तु *पत्न्यः कार्य्याः समां-शिकाः* इत्येतत्समानार्थकत्वाच्च । तदुक्तसिद्धान्तवदस्यापि सिद्धान्ति-(तत्वात्) अत्तरादलाभादेव श्रीकृष्णतर्कालङ्कारैरर्थादि(र)प्युक्तमबाधे ·· ···न्यसाम्यादितिन्यायात्तस्यापि ऋषिभिन्नत्वात् ॥ १ ॥ यथा

---

१. चवना०—व्य.प. २. ०तन्त्र०—व्यप० । ३. ०नुद्य—व्यप० ।

स्वेभ्योऽशेभ्यस्तु कन्याभ्यः प्रदद्युर्भ्रातरः पृथक् ।

स्वात्स्वादंशाच्चतुर्भागं पतिताः स्युरदित्सवः,—इति मनु (९।११८)-वचने, *भगिन्यश्च निजादंशांद्दत्वांशं तु तुरीयकम्*--इति याज्ञवल्क्य-(२।१२३)वचने च, प्रदद्युर्दत्त्वेत्यस्य कर्त्तृतया भ्रातॄणामन्वयात्तेषामधीन-स्ताभ्यो दानं तथा जननीग्राह्ये भागे परतन्त्रविधायकवाक्याभावाद्विभागो-पक्रमं विनापि बहुपुत्रस्थले विभागाभावस्थले एकपुत्रसत्वे स्वेच्छया मात्रा भागग्रहणं कार्य्यम् ॥ ० ॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इति याज्ञवल्क्य (२।१३५), वचनम्, *अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि*—इति विष्णुवचस्तु पुत्रादिदौहित्रान्तरहितस्य मृतस्य यज्ञदत्तस्य धने मिताक्षरादिमते पूर्वं माता समग्रधनाधिकारिणी, जीमूत-वाहनमते पुत्रादिपित्रन्तरहितयज्ञदत्तस्य समग्रधने माताधिकारिणी भवति इत्यर्थं ब्रूते ॥

पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेद्—इत्यादि (या०स्मृ० २।१२३) मातृभागप्रापकवचनानि तु विष्णुमित्रस्य पुत्रादिसत्त्वेऽपि मात्रा स्वभाग-ग्रहणं कर्त्तव्यमितिधनैकदेशग्रहण······दधने इति भिन्नविषयत्वव्यवस्था-पनेन चरितार्थानां वैयर्थ्याभावाद्दत्तजलाञ्जलितोपपादनमशक्यं कर्त्तुं त्वया । किञ्च भवतामेव विरोधः स यथा देवदत्तः पञ्चभ्यः पुत्रेभ्यो यथाशास्त्रं पञ्चभा-गान् दत्त्वा स्वयं द्वावंशौ प्रतिपद्येत *विभजेच्चात्मनः*-इति (ना०स्मृ०पृ०१९२) प्रभृतिशास्त्रानुरोधेन द्वावंशौ प्रतिपद्य विभक्तोऽभवत् । तत्र विभक्तेषु एकः पुत्रादिदौहित्रान्तरहितो मृतः । तद्धने *पत्नी दुहितरश्चैव*—इति याज्ञवल्कीय-*अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि*—इति वैष्णववचोभ्यां जीमूतवाहनमते पिता समग्रधनाधिकारी, तदन्यमते माता समग्रधनस्वामिनी भवति । यथा वा पितृमरणोत्तरं सर्व्वे भ्रातरो विभक्तास्तेष्वैकः कश्चन भ्राता पुत्रादिपित्रन्त-रहितो ममार । तद्धने भ्रातॄणामधिकारोऽधिकारिक्रमबोधकेन शास्त्रेण बोधितो भवति । भवन्मते उक्तस्थलयोः पित्रोर्भ्रातुश्च प्रथमाधिकारि(ता)-न्तःपातित्वेन तेषामनधिकारः स्यात् । अस्मन्मते उक्तस्थलयोर्यथायथं पूर्व्वं पिता अंशद्वयाधिकारी, माता तु एकांशाधिकारिणी, भ्रातरस्तु स्वांशाधिकारिणः; पश्चादेतादृशस्थले पूर्व्वोक्ता मृतस्य समग्रधनाधिकारिणो

भवन्तीति विषयव्यवस्थापनेन भवदुक्तेरेव दत्ततिलाञ्जलिता याति । तस्माद् धनस्य कृतस्यैकदेशरूपा व्यवस्था त्वया कर्त्तव्या ॥ यच्च केनाप्युक्तम् ॥ *यत्र पतिपुत्रकर्तृको विभागः पत्या पुत्रेण वांशो दीयते, तत्रैव मातुर्भागो-भवति ।* अत्र तु धनिना धनिपुत्रेण वा विभाग एव न कृतोऽतोमातुरंश एव नास्ति; कुतो दुहित्रादिभिर्लब्धव्यमिति । तदसमीचीनम् । पत्या सह भार्य्याया भागग्रहणेऽस्वातन्त्र्येऽपि पत्युरिच्छयैव तया भागो लब्धव्य इति तावत् सर्व्वेषां निर्व्विवादेऽपि पुत्राणां पितुरग्र इव मातुरग्रेऽपि स्वातन्त्र्य(ा)-भावस्य सर्व्वदेशीयग्रन्थेषूपलभ्यमानत्वेन मातुर्भागादाने स्वेच्छया दाने च पुत्राणामनधिकार एव । किन्तु मातुरनुमत्या पितृधने दुहित्रभावे सति जननीधने च पुत्रैर्भागो ग्राह्यः, मात्रा तु स्वेच्छयैव पुत्राणामनिच्छा-सत्त्वेऽपि भागो ग्राह्यः । *अनीशास्ते हि जीवतोः*—इत्यादि मन्वाद्युक्तेः *मताप्यंशं समं हरेत्*—इत्यादिविधिबोधकप्रत्ययाद्युदितस्मृतेः (?), एवं सम्भावितमातृभागेऽपि दुहितुरधिकारो तेः । एतद्विचारस्तु तृतीयतुरीय-हेतुखण्डने बहुतरं विचारितस्तत एवावधार्य्यः ॥

एवंप्रकारकग्रन्थे भवद्दूषणगणे जाते पण्डितानां मातृग्राह्यभाग-विषयिणी अनुकम्पा बहुपुत्रस्थले विभागोपक्रमं विना सकृत्पुत्रस्थले (य)द्यपि मात्रा ग्राह्यम् भागं बोधयन्ती मातुर्भागो नैव भवतीति प्रवक्तुर्माता भगिन्योऽध्वं(भागि)त्वं बोधयति; यतः शास्त्रासिद्धस्यार्थस्यापलपन(मू मृ)षा-ग्रहमूलकमेव भवति इत्याग्रहन्त्य(क्त्वा, कृतबुद्धिभिरन्यैः (रप)त्तपातैः सह त्वयाऽवधार्य्यम् । भवद्दत्तोत्तरे शब्द(ा)शुद्धयोऽनन्वितपंक्तयश्चास्माभिर्न दूषि-तास्तद्दूषणे प्रयोजनाभावात् । अ(त्रत्यैः)···पाठशालास्थैरपाठशालास्थैश्च सर्व्वैरपि गतागतशास्त्रार्थो दृष्टः, गुणदोषश्चावधारितः । अत्र शास्त्रार्थे सर्व्वेषामनुमतौ भवतामप्यनु(म)तिरेव स्यात्, भूयसा व्यपदेश इति न्यायाद् इत्यस्माकं प्रतिभाति । किञ्च मूर्खाणामिव पण्डितानामपि व नापण्डितेन भवता न कार्य्या, यतः शास्त्रार्थपत्रं समालोच्य प्रतिवादिकृतशास्त्रार्थ-निराकरणपूर्व्वकं स्वमतं महद्भिर्लिख्यते इति मह(तां सर)णी तथा त्वया

---

१ रा । २ भवद्दूषणगणे—व्यय० ।

न कृत इति पण्डितानामग्रे पाण्डित्यप्रयुक्तं गौरवं तत्तन्मतनिराकरणं विना कदापि न भवति। समाधानपूर्व्वपक्षादिकमस्मिन् शास्त्रार्थे बहूनि जातानि, तानि सर्व्वाणि विस्तरभयान्न लिखितानि। भवत्पूर्व्वपक्षाणां समाधानान्येव पण्डितैर्लिखितानि। शास्त्रार्थेनात्र पण्डितानां वर्षशतेनापि पराजयो न भवति इति श्रीमद्भिर्निश्चेयम्। सुहृद्भावेनोच्यते मया अयं शास्त्रार्थो भवते रोचते तर्हि व्यवस्थायां सम्मतिं कृत्वा पण्डिताना... (?)भवे साहवाय देया इति सताम्परामर्शः शिवम् ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीचन्द्रनारायणशर्म्मणः—
सम्मतिरत्रार्थे—

अत्रार्थे सम्मतिस्सुकुशर्म्मणाम्।

अत्रार्थे सम्मतिर्विठ्ठलशास्त्रिणाम्।

सदर्थे तदर्थजाते. जातेऽस्मिंश्च तु-व्वेंदहीरानन्दशर्म्मपण्डितस्य।

अत्रार्थे सम्मतिः श्रीकान्तशर्म्मणाम्।

श्रीकृष्णदेवशर्म्मणां सम्मतिः।

सम्मतिरेतदर्थे काशीनाथशास्त्रिणः।

अत्रार्थे सम्मतिः श्रीलज्जाशङ्करशर्म्मणाम्।

अत्रार्थे सम्मतिः श्रीयदुनाथशुक्लशर्म्मणाम्।

सम्मति ... ... शर्म्मणाम्।

पूर्व्वप्रेषितोपरिलिखितव्यवस्थया पुत्राणां पैतृकधनविभागोपक्रमे मातृभागो निश्चित एव। एवञ्च सति विभागमन्तरा मातृभागाभावप्रतिपादकहेतुखण्डने यो हेतुः—*माता तु पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी* इति कातीय—*समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ*—इति नारदीय-*पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्*—इति याज्ञवल्कीय-*समांशा मातरस्त्वेषां तुरीयांशास्तु कन्यकाः*—इति बार्हस्पत्यवचसां प्रसिद्धप्रमाणानां सत्त्वादिति दत्त(ःस)तद्दातॄणां शुकवत्तद्वचनपाठपरायणनराणां धर्म्मशास्त्रार्थानभिज्ञानां विदुषां पुरः प्रकाशयति। तेषां चतुर्णामपि वचनानां सति विभागोपक्रम एव मातुः पुत्रभागसमभागप्रतिपादकत्वात्। नचैतादृशार्थेन सम्भवत्येतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावात्, केनापि ग्रन्थकारेणालिखितत्वाच्चेति वक्तुं युक्तम्। तेषु प्रथमस्य—*माता तु पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांश*-

हारिणी—इति कातीय (वचन)स्य *विभज्यते तदा मातुर्भागमाह* इत्यनेन दायतत्त्वे रघुनन्दनस्मार्त्तभट्टाचार्य्यैरवतारितत्वात्, विवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुश्रीकृष्णतर्कालङ्कारादिकृतदायभागटीकासु बहुशः समुदितत्वाच्च, तेषु *समांशहारिणी माता*—इति द्वितीयस्य नारदवचनस्य, *पितरि चोपरते सोदरभ्रातृभिर्विभागे क्रियमाणे मात्रे पुत्रसमांशो दातव्यः*—इत्यर्थकतया जीमूतवाहनभट्टाचार्य्यैर्दायभागे व्याख्यातत्वात्।

अथ तृतीयस्य—*पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्* इति याज्ञवल्कीयस्य-*पितुरूर्ध्वं विभागेऽपि पत्नीनां स्वपुत्रसमांशित्वं दर्शयितुमाह* इत्यनेन मिताक्षरायामेव श्रीविज्ञानेश्वरैरवतारितत्वात्। किञ्च *पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्*—इति याज्ञवल्कीयवचनस्य, *पितृद्रव्यविभागः स्यात् जीवन्त्यामपि मातरि। न स्वतन्त्रतया स्वाम्यं यस्मान्मातुः पतिं विना*—इति वीरमित्रोदयस्मृतिचन्द्रिकादिनिबन्धधृत-संग्रहकारी येन स्वतन्त्रतया *पितर्य्युपरते* तद्धनस्य विभागं कुर्व्वतां पुत्राणामस्वतन्त्रापि माता पुत्रांशसमांशं हरेन्नतु भ्रात्रादिव(त्) (पूर्णस्या) पीत्यर्थस्य सर्व्वसम्मतत्वा(त्)। अजीवद्विभागे मातुरंशक˙˙˙नामाहेत्यवस˙˙˙कया याज्ञवल्क्यवचोऽवतार्य्य एतच्च स्त्रीधनस्याप्रदाने वेदितव्यमित्याद्यु (परि व्या)ख्यात एव। स्मृत्यन्तरे *जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽशं समं हरेत्*—इति *अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या जननी पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे पुत्रांशसममंशं हरेत्*—इत्यर्थः—इति व्यवहारमाधवे माधवापरपर्य्यायश्रीविद्यारण्यपादैर्विशिष्य प्रतिपादनेनैवमेव स्मृतिचन्द्रिकायां श्रीदेवा(नन्द)भट्टैः *तथाहि* पतिद्वारागतं स्त्रीधनं *नित्यं विभागानर्हमेव*, लोके दम्पत्योर्धने *विभागादर्शनात् जायापत्योर्न विभागो विद्यते*—इति हारीतस्मरणाच्च। एतेनात्र मातुः स्वत्वव्यवस्थापको दायविभागः। किन्तु यावदर्थमेवार्थहरणमिति मन्तव्यम्। अतएव स्मृत्यन्तरे निर्धनमातृविषयमेवांशहरणं न मातृमात्रविषयमिदमिति ज्ञायते, *जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽशं समं हरेत्*—इतिस्मरणात्, *अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या जननी पुत्रैरजीवद्विभागे क्रियमाणे पुत्रांशसममेवांशं हरेत्*—इत्यर्थः। जननीग्रहणं तत्स्वपत्न्यादेरुपलक्षणार्थम्। *मातरः पुत्रभागानुसारिभागहारिण्यः*—इति

विष्णुस्मरणात्। अस्वधनेति विशेषणोपादानात् स्वधनादेव स्वकीयजीवनस्य स्वानुष्ठेय ·····साध्यस्वकर्म्मणः सिद्धिसम्भवे जनन्यादीनां न भागग्रहणमिति गम्यते। तथा च स्वधने मात्रा तयोः सिद्ध्यसम्भवे जनन्यादीनां सधनानामपि न समभागहरणम्, किन्तु यथोपयोगं न्यूनभागस्यैव हरणमिति च गम्यते। तथा च विभा······वसोरतिबहुत्वे निर्धनानामपि जनन्यादीनां न समांशहरणं किन्तु यथास्वोपयोगं समांशन्यूनस्यैवांशहरणमित्यपि गम्यते। अस्वधनेतिविशेषणोपयोगवशादंशहरणं जनन्या न पुनर्भ्रातृव (त्) (स्व)त्ववशादितिज्ञापनार्थत्वात्। सममिति विशेषणस्योपयोगवशादसमांशस्य हरणेप्यवैयर्थ्यम्। अल्पविभाज्यवसोरधिकपूरणस्य प्राप्तस्य निवृत्त्यर्थत्वादिति प्रतिपादनेन भवदभिमतार्थस्य विभागोपक्रममन्तरापि मातृभागप्रापकत्वस्य दूरापास्तत्वात। न च पुत्राणां पितृधनविभागस्वातन्त्र्ये *ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम्*—इति मानवीयेन, पुत्र···बोधकेन विरोध इति वाच्यम्। *ऊर्ध्वं पितुः*—इति पितृधनविभागकालः *मातुरूर्ध्वम्*—इति मातृधनविभागकालः। ततश्चैतदुक्तं भवति पितुरूर्ध्वं मातरि जीवन्त्यामपि पितृधनविभागस्तथा मातुरूर्ध्वं पितरि जीवत्यपि मातृधनविभागः कार्य्य एव, अन्यतरधनविभागे उभयोरूर्ध्वकालप्रतीक्षणानुपयोगादिति माधवीयव्याख्यानुपर्य्यालोचनया तथा अतएव *पितुरूर्ध्वम्*—इति पितृधनविभागकालः *मातुरूर्ध्वम्*-इति मातृधनविभागकालोऽभिहितः इत्यारभ्य, *अतश्चानीशास्ते हि जीवतोः*-इत्यपि तत्तद्धने व्यवस्थाया अस्वातन्त्र्यप्रतिपादकं न स्वत्वप्रतिपादकं *जन्मना स्वत्वस्य पुत्राणां पितृधने व्यवस्थापनादित्यन्तेन* वीरमित्रोदयस्मृति चन्द्रिकादिनिबन्धलिखनेन अणोरपि तद्दोषाप्रतीतेः। *युक्तं चैतज्जीवद्विभागोक्तं पितुः स्वातन्त्र्यात्। अजीवद्विभागे पुत्राणां स्वातन्त्र्यादित्यादिना* विशेषतो वीरमित्रोदयादावजीवद्विभागे पुत्राणामेव स्वातन्त्र्यप्रतिपादनाच्च, अस्वातन्त्र्यप्रतिपादकानां च जीवतोरस्वतन्त्रः *स्यात्*—इत्यादिवचनानां सकलनिबन्धकारैः *मृतेऽपि पितरि जीवन्त्यां च मातरि पुत्रकर्त्तृको यो विभागः* (स?) धर्म्य इत्येतत्परत्वव्यवस्थापनात्। अतएवास्मद्दत्तपूर्वव्यवस्थायां पुत्रे दुर्वृत्तत्वविशेषणं . सार्थकमि(ति सूक्ष्मदृ)शावधातव्यम्। न चानुवादविशेष-

णीभूतस्य''अर्थस्याविवक्षितत्वेन विभागोपक्रमे मृतेऽपि मातृभागप्रापकत्वसिद्धिरिति वाच्यम्। अविवक्षायां प्रमाणाभावात्। नह्यनुवादविशेषणत्वकथनेनैव सोऽर्थोऽपैति। यदपि पूर्व्वोक्तवचनद्वयैकरूप्यार्थं (? तथा (कथ) दमिति तदपि न, तयोरपि सकलनिबन्धकारैरेतद्वचनसमानार्थकत्वेनैवोपपादितत्वात्। किञ्च लङर्थस्याविवक्षितत्वेन विभागोपक्रममंन्तरापि मातृभागप्रापकत्वस्यार्पितातात्पर्य्यविषयत्वे विभजतामिति विशेषणपदस्यैवानर्थक्यापत्तिः। *पितुरूर्ध्वं तु पुत्राणां माताप्यंशं समं हरेत्*--इत्येतावतैव भवदभिमतार्थस्यावगमात् अध्याहाराभावप्रयुक्तलाघवानुरोधेन तादृशवचनप्रणयनस्यैवोचितत्वाच्च। पितरि मृते सति पुत्रैः क्रियमाणे विभागेऽपि मातुः समांश एव। तथा च योगीश्वरः *पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्। पितुरूर्ध्वं पितृमरणानन्तरम्॥ अत्रापि न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्त्रा वा श्वशुरेण वा*–इति, *दातुरूर्ध्वं प्रकल्पयेत्* —इति च वचनद्वयं योज्यं समानन्यायत्वात्, प्रतिषेधाभावाच्च। *एवमेव विज्ञानेश्वरधारेश्वरादीनां मतम्*— इति मदनपारिजातलिखनात्। वीरमित्रोदयादौ *तदुपरमविभागेऽपि पुत्रैस्ताः स्वसमांशभागिन्यः कार्य्याः*—इत्याहेतियाज्ञवल्क्यवचनस्यावतारितत्वाच्चेति सुबुद्धिचञ्चवश्चिरञ्चिन्तयन्तु॥ *न च वरेत्*—इति विधौ लिङ्विधित्वञ्चात्यन्ताप्राप्तप्रापकत्वम् तच्च न घटत इति वाच्यम्। ऊर्ध्वं *पितुश्च मातुश्च*—इत्यादिमन्वादिवचनैः पितृधने जाताधिकारैः पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे मातुरपि तत्समांशभागित्वमित्यपूर्वबोधनेनैव कृतार्थत्वात्, एतेनेदृशस्य विधेर्ऋषेरक्षरादनुत्पत्तेरित्यादिविधित्वाभावापत्तेश्चेत्यन्तं तद्वचनाशयमजानद्भिरुक्तमपास्तम्। मातृभागप्रापकस्य *समांशा मातरस्त्वेषां तुरीयांशास्तु कन्यकाः*—इत्यवशिष्टस्य तुरीयस्यापि पुत्रकर्त्तृकविभागप्रकरण एव सर्वैरुक्तत्वात्तस्यापि तदर्थबोधकत्वेन न तानि भवदर्थसाधकानीति सुधीभिराकलनीयम्॥ यदपि प्रलपितं *विभक्तेषु सुतो जातः सवर्णायां विभागभाग्* इति, *भ्रातृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि। प्रातिभाव्यमृणं साक्ष्यमविभक्ते न तत्स्मृतम्*—इति च तदतितुच्छम्। तयोर्विभक्तेष्वित्यस्य विभागोत्तरं जायमानस्यासत्यां दुहितरि भागप्रापकत्वात्, तदर्थस्य चाविभाज्यत्वात्। न च तत्र सम्भावितभागम(ा)दायैव वचनप्रवृत्तिरिति-

वाच्यम्, वचनात्तदर्थाप्रतीतेः। स्वकपोलकल्पितस्यार्थस्याप्रमाणत्वाच्च। द्वितीयस्य तु *भ्रातृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि*—इति वचनस्य पितृकृतविभागविषयत्वात् पितृकृतविभागे मातृभागो भवति नवेत्यस्याविवाद्यत्वात्? यदपि *विभिन्नमातृकास्तेषां मातृभागः प्रशस्यते*—इति वचनं तदपि वीरमित्रोदये यदपि व्यासबृहस्पतिवचसोरित्यादि कृतमधिकेनेत्यन्तेन ग्रन्थेन। तज्जीवनावधि तदाज्ञावशंवदतयास्थेयमिति समर्थितम्। अतस्तत एवावधातव्यमिति प्रथमहेतोस्समर्थनम्। यदपि एकपुत्रस्थले विभागासम्भवादित्यत्रदोषो ··वनं तदपि देवानां···दानं ददायकमेव। पितृकर्तृ(?)कविभागस्याविवाद्यत्वात् पितर्य्युपरते तदभावस्यास्मदभिप्रेतत्वाच्च विवादास्पदभूतस्थलाभिप्रायकमेव लिखनाच्चेत्यलमति[1] जल्पनेनेतिविज्ञे(यमिति)द्वितीयहेतुसमर्थनम्॥

यदपि तृतीयहेतुखण्डनेऽधिमिताक्षरमेतद्व्याख्यान···लाभादिति तदपि ग्रन्थार्थो··सूत्रकमेव मिताक्षरायां जीवद्विभागे स्वपुत्रसमांशित्वं पत्नीनामुक्तम् *यदि कुर्य्यात् समानंशान्*—इत्यादिना पितुरूर्ध्वं विभागेऽपि पत्नीनां स्वपुत्रसमांशित्वं दर्शयितुमाहेत्यवतरणिकया पितुरूर्ध्वं विभजतामित्यवतारित्वात्। अजीवद्विभागे मातुरंशकल्पनामाहेति याज्ञवल्क्यवचोऽवतार्य्य एतच्चेत्यादिना विशेषमुल्लिख्य जनन्यस्वधना. *पुत्रैर्विभागेंऽशं समं हरेद्*—इति स्मृत्यन्तरवचनमुपन्यस्य अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या (?) जननीपुत्रैर्विभागेंऽशे क्रियमाणे पुत्रांशसमं हरेदित्यर्थः। इति माधवीयात्, *जीवत्पितृकविभागे पित्रा यथा पुत्रांशसमांशभागिन्यः स्वपत्न्यः कार्य्यास्तथा तदुपरमविभागेऽपि पुत्रैस्ताः स्वसमांशभागिन्यः कार्य्याः*—इति वीरमित्रोदयलिखनेन याज्ञवल्क्यः *पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्*, विष्णुः—*मातरः पुत्रभागानुसारिभागहारिण्यः*, स्मृत्यन्तरे—*जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेंऽशं समं हरेत्*, *स्वधना तु यावता स्वधनस्य पुत्रांशसमभागता भवति तावदेव हरेत्*—इत्यर्थः। *अंशाधिकधनायास्तु नांश*—इति व्यवहारमयूखे नीलकण्ठभट्टलिखनेन च स्पष्टतया तदवगमाच्च। यत्रेदं विचा-

१. लिखनाच्चेत्यलमनातजल्पनेनातावज्ञे।

रणीयमित्यादिभागग्रहणातिरिक्तस्थले तद्वचनेनास्वातन्त्र्यबोधनाच्चे(त्) तदप्यत्यन्ताग्रहग्रस्तत्वाद्धेयमेव[1]। पुत्राणां जन्मनैव सामुदायिकस्य प्रादेशिकस्य वा स्वत्वस्य सत्त्वेऽपि जीवति पितरि तदनुमतिमन्तरा पितृधनविभागाभावस्य मैथिलगौडपाश्चात्यदाक्षिणात्यमकलनिबन्धकृत्सम्मतत्वेऽपि तदुपरमे *ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च*—इत्यादिवचनेन परस्परं तेषां तद्धनविभागस्य सर्व्वसम्मतत्वेऽपि पाणिग्रहणनिबन्धस्य क्षीरनीरवदेकलोलीभावा... सहकारिकर्म्मोपयोगिनो मातृस्वत्वस्य सत्त्वेऽपि पत्न्याः भागप्रापकर्षिवचनाभावाद् यथा पत्युः सकाशा त्)... पत्न्या भागो ग्रहीतुं शक्यते, तथा तत्प्रापकर्षिवाक्यमन्तरा सद्ग्रन्थकारकृतव्याख्यानमन्तरापि वा विना विभागोपक्रमं पुत्रेभ्योऽपि ...तद्ग्रहीतुमशक्यत्वात्, अस्वातन्त्र्यबाधकसन्निबन्धकारकृतव्याख्यानस्य तत्संकोचकस्य प्रत्युत सत्त्वात्। अतएव वीरमित्रोदये *पत्न्याःपतिद्रव्ये स्वत्वं* क्षीरनीरवदेकलोलीभावापन्नसहकारिकर्म्मोपयोगिन...तु भ्रातृणामिव परस्परमतएव तेषां विभागो न जायापत्योरत्य ग्रुक्तं सङ्गच्छते। न च क्षीरनीरवदेकलोलीभावापन्नस्यैकस्यैव पाणिग्रहणनिबन्धस्य पत्न्याः स्वत्वस्य स्वीकारे पत्युरुपरमे स्वत्वप्रयोजकाभूनदा(म्,पत्यभावाभावात् कथमपुत्रायाः कृत्स्नधनाधिकारबोधकाः अजीवद्वभागे पुत्रांशसमांशाधिकारबोधकाश्च ग्रन्थाः सङ्गच्छन्त इति वाच्यम्। *पत्नी दुहितरश्चैव*—इति *पितुरूर्ध्वंविभजताम्*—इत्यादि याज्ञवल्क्यादिवचनैः पृथगधिकारबोधनेनादोषात् मातुः स्वातन्त्र्यभावस्य पूर्वमेव बहुशःसमुदितत्वात् पुत्रेभ्यो भागग्रहणातिरिक्तस्थलेऽस्वातन्त्र्यमित्यर्थकल्पने प्रमाणाभावाच्च *समांशहारिणी माता*—इत्यादिवचनस्यान्यार्थत्वस्योक्तत्वाच्चेति मात्सर्य्यमुत्सार्य्य विचार्य्यमार्य्यैरिति तृतीयस्य हेतोः समर्थनम्।

यदपि चतुर्थहेतुखण्डने एतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावाद् बार्हस्पत्यवाक्याद्धरादलाभाच्च: कपोलकल्पितत्वाच्चेति हेतुत्रयं तदतिफ...महामहोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रकृतविवादचिन्तामणावेवैतादृशार्थस्य स्पष्टतरतया प्रतीतेर्भवदुक्तेर्बालोक्तिप्रायत्वान्मदुक्तेः सप्रमाणत्वाद् बार्हस्पत्यवाक्याद्धरादलाभादिति अस्योत्तरं तु भवद्दत्तपूर्वव्यवस्थायाम्। अस्यार्थः पितुरभावे अर्थात्

---

१. ०च्चे तन्नदप्यततग्रह० व्यय०।

पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती मातरोऽपुत्रा विमातर एताः सर्व्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्यः, एषां भागिनां भगिन्यश्चाविवाहिताविवाहार्थं स्वभ्रात्रंशतुरीयांशभाजो विवाहोचितधनभागिन्यो भवन्तीति मदनरत्न-विवादरत्नाकरविवादचिन्तामणिदायक्रमनिबन्धकारैः कृत इति लिखन मेवेत्यलमधिकेन। एतेन स्वकपोलकल्पितत्वादित्यपि प्रत्याख्यातमित्यवधा-र्यम्। यदपि भगिन्या भागे भ्रातृणां स्वातन्त्र्यबोधकमनुयाज्ञवल्क्य-वचनवन्मातृभागे तदभावात्तया स्वेच्छया भागग्रहणं कार्य्यमिति तदप्यत्य-न्ताग्रहग्रस्तत्वाद्धेयमेव। प्रसिद्धप्रमाणानि याज्ञवल्क्यादिवचांसि प्रथम-हेतुव्यवस्थापने लिखिततत्तन्निबन्धकारकृतव्याख्यानानि च युक्त्याभासै-रपलाप्य प्रमाणगन्धशून्यस्वोक्त्या तदर्थस्य व्यवस्थापनेनाप्रमाणत्वादिति चतुर्थहेतुसमर्थनम्॥

अथ भवन्मते विरोधो(द्भा)वनम्। कस्यचित् पुत्रिकाकरणान्तर-मौरसपुत्रोऽजनि। तदनन्तरं पत्नीं पुत्रिकां च त्यक्त्वा स लोकान्तरमग-मत्। तत्पत्न्यपि प(श्चा)दिमं लोकमजहात्। तयोर्निधनानन्तरं पुत्रिकापुत्र-योर्विभागसमुत्थानेऽस्मन्मते *समस्तत्र विभागःस्यात्*—इत्यादिवचनेन कृत्स्नधनस्य सम एव विभागः सकलनिबन्धसिद्धः। भवतां तु सा मातृभागं पूर्व्वं गृहीत्वा पश्चात् पुनरवशिष्टार्द्धं ग्रहीतुमर्हतीति तत्तदृषिवचनव्याकोपो वर्षसहस्रैरपि दुर्न्निवार्य्य इति सूक्ष्मदृशाऽवधातव्यम्॥ यत्तु दत्तजलाञ्जलि-तोपपादनमशक्यं कर्त्तुं त्वयेति तदाशयानवबोधतां बोधयति। विद्यमान-मातृकस्याजातपुत्रादेर्देवदत्तस्य मरणानन्तरं *पत्नी दुहितरश्च* – इति याज्ञव-ल्कीय-*अपुत्रस्य धनं पत्न्यभिगामि*–इति वैष्णववचनाभ्यां पत्न्या अधिकारित्व-बोधनेऽपि अविभक्तसंसृष्टभ्रातृतो भागाभावाय पूर्व्वोक्तवचनयोरविभक्तसंसृष्ट-धनान्यविषयत्वमित्यर्थस्य. गौडातिरिक्तसकलमुनिवचनव्याख्यातृसम्मतत्वेन सत्यामपि मातरि तद्धनस्य अविभक्तसंसृष्टत्वेन मातृतः पूर्व्वं पत्न्यधिकार-बोधनस्य दत्तजलाञ्जलिता सहस्रास्यैरपि(दु)र्न्निवारा इति तन्त्रतत्त्वज्ञा विभावयन्तु॥

१२७—रोवकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत ओयाके सन १८३२ सालेर ५ जानेर मोतावक सन १२३८ सालेर

२२ पौष वृहस्पतिवार श्रीयुत हेनरी सिकिसपीयर साहेव के आदालतेर हाकिमेर वैठके—

भैरवीदासी वनामे नवकृष्णवसु

साएलार उकिल मुनसी गोलाम आहम्मद हाजिर आइल। पूर्व्व सन १८३१ सालेर १ दिजम्बर तारिखे साएलार खास आपीलेर दरखास्त दरपेष हइया जेलार फैसला दिष्टि करण जन्ये मूलतवि छिल, तदनुसारे गत क्लय साएलार द्वितीय दरखास्त फैसला आगैरह सम्वलित उपस्थित हइया साविक दरखास्तेर सम्वलित करिया उपस्थित करणेर हुकुम हइयाछिल। से प्रयुक्त अद्य साएलार खास आपीलेर दरखास्त तत्समभिव्याहारि कागजात सम्वलित उपस्थित ओ पाठ होइल। हुकुम हइल ये जिलार फैसला ओ साएलार ओकीलेर अग्रकार दाखिल करा व्यवस्था ए विषयेर यवाव तलवे ये यद्यपि स्यात् उक्त फैसलार लिखित प्रकरण सकल सत्य अथवा फैसलार लिखित व्यवस्था अथवा साएलार उकिलेर दाखिल करा व्यवस्था–एहार कोन व्यवस्था यथार्थ ए आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठानो जाय ये पण्डित मजकुर उपरेर लिखित प्रकरणेर उत्तर अति त्वराय लिखेन इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रमेवं तत्समर्पितजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणीयजयपत्रमेतद्धर्म्माधिकर-णार्थिनीनियुक्तोकीलशब्दवाच्येन तद्दिने निविष्टं व्यवस्थापत्रञ्च यत्तदब्दी-यतन्मासीयैकविंशतिदिनसम्वन्धिशनिवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रभुसमर्पितजयपत्रलिखितप्रकरणानां मध्ये एतद्धर्म्माधिकरणार्थिन्या उत्तरपत्रलिखितप्रकरणानाँ सत्यत्वे सत्येतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो नियुक्तोक

लंशब्दवाच्यनिविष्टव्यवस्थैव शास्त्रसम्मता भवति । तदुत्तरपत्रलिखितप्रकरणानामसत्त्वे तज्जयपत्रलिखितव्यवस्थैव शास्त्रसम्मता भवतीति ॥

एतदब्दीयफेवरवरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तैति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२८—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख ७ जानेर सन १८३२ साल मोतावेक सन १२३८ सालेर २४ पौष शनिवार श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेव ऐ आदालतेर हाकिमेर वैठके ॥

वदनचन्द्रसिंह वनाम मथुरामोहनपालीत ओ महेशचन्द्रसिंह

सापलेर उकिल मौलवि करम होछेन ओ तरफछानिर उकिल मुनशी गोलाम वतुल हाजिर आइल । सायेलेर सओयाल एक शत पञ्चाश टाका दामेर कागजेर पर दोस्तपुर आगयेरह तालुक विरोधि विषयेर दखल पाइवार मोकद्दमाय मवलगे पाँच हाजार टाका ऐ विषयेर दामेर तायदादे ओ उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ रामकृष्णवन्द्योपाध्यायेर नामेर एक केता मोक्तारनामा ओ शन १८२८ सालेर २१ जुन तारिखेर हुगलि जेलार देओयानि आदालतेर एक केता फयछलार नकल ओ सन १८३० सालेर १७ आगष्ट तारिखेर लिखित एलाका कलिकातार कोट आपीलेर एक केता फयशलार नकल ओ सन १८२६ सालेर २३ शेतम्वर तारिखेर लिखित कलिकातार कोट आपीलेर एक केता रोवकारिर नकल संहित ये, सन १८३० सालेर १६ दिजम्वर तारिखे दाखिल हइया छिल, अद्य तरफछानिर शन १८३१ सालेर १३ आपरेल तारिखेर दाष्ट कथा सओयालेर संहित दृष्टे आइल,

वोध हइल ये पार्व्वतीचरण मोतओफफार तेज्य विषय लाट नारायण पाडा उहार चारि पुत्रेर मध्ये अर्थात् वदनचन्द्रसिंह प्राप्तव्यवहार ओ महेशचन्द्रसिंह ओ ईशानचन्द्र ओ हरिशचन्द्र अप्राप्तव्यवहार एकत्तर ओ साधारणे छिल, ओ वदनचन्द्रसिंह मजकुर ये मालिक ओ कारवारेर कर्त्ता एवं भ्रातासकलेर सहित एकान्ने छिल लाट मजकुरेर मोतालकेर मौजे दोस्तपुर ओगयरह विरोधि विषय द्वितीय भ्रातासकलेर अंश सहित तरफछानिर जेभार मुद्दाइ मथुरमोहनपालीतेर निकट वयवलओफार ? प्रकरणे दरपत्तनि तालुक विक्रय करिया जखन वयवलओफार मेयादेर मध्ये पोनेर टाका आदाय करिलेक ना। मुद्दाइ सेइ समय शंन १८०६ शालेर १७ कानुनेर नियम आमले आनिया वयवात सम्पन्य हइवार जन्य एइ नालिष दरपेष करिया जेला ओ कोट हइते ईशानचन्द्र ओ हरिशचन्द्रेर अंशेर कर्त्तन वादे वदनचन्द्र ओ महेशचन्द्रेर अंश वयवातेर वावत डिगरि हाशील करियाछे, ओ महेशचन्द्र जाहेर करे ये वयवलओफा हओनेर समय आमि अप्राप्तव्यवहार छिलाम, आमार पक्ष हइते वदनचन्द्र कओलाते दस्तखत करिया दियाछे ओ वदनचन्द्रेर क्षमता छिल ना ये आमि अप्राप्तव्यवहारेर अंश वयवलओफा अथवा सम्पूर्न विक्रय करे। ए जन्य आमार निकट हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर निकट व्यवस्था लओया उचित वोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालेर जओयाव एइ रोवकारि पाओयार तारिख हइते एक सप्ताह मेयाद मध्ये दाखिल करेण—ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय इति ॥

सओयाल—

यद्यपि स्यात् सहोदर दुइ भ्राता अथवा तिन चारि भ्राता आपनारा एकान्नभुक्त, ओ ताहार मध्ये एक जन प्राप्तव्यवहार, ओ द्वितीय सकल अप्राप्तव्यवहार थाके, ओ प्राप्तव्यवहार भ्राता

मौरुशी साधारण विशयेर मध्ये किछु अप्राप्तव्यवहारसकलेर अंश सहित हस्तान्तर करे, तवे ए प्रकार हस्तान्तर सिद्ध कि ना एवं प्राप्तव्यवहार भ्रातार मौरुशी साधारण विशय अप्राप्तव्यवहार भ्राता सकलेर अंशसहित, ये एकान्ने थाके, कोन प्रकारे हस्तान्तर करणेर क्षमता वाङ्गलादेशेर चलित शास्त्रानुसारे आछे कि ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलकसुन्दरासाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयसप्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि सहोदरौ द्वौ भ्रातरौ त्रयश्चत्वारो वा भ्रातर एकपाकेन भोक्तारः, तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारोऽन्ये चाप्राप्तव्यवहारा भवन्ति। एवञ्च सति प्राप्तव्यवहारो भ्राता क्रमागतसाधारणधनानाम्मध्ये किञ्चिद्धनमप्राप्तव्यवहाराणां सर्व्वेषामंशसहितं हस्तान्तरं कृतवान् स्यात्, तत्र यदि तादृशहस्तान्तरमधो लिखितहेतुसमुदायान्तर्गतैकस्मिन्नपि हेतौ सति कृतवान् स्यात्तदा स्वांशयोग्ये स्वेतरांशयोग्ये च सिद्ध्यति, तादृशहेतुसमुदायान्तर्गतैकस्मादपि हेतोर्विना तादृशहस्तान्तरकर्त्तुर्भ्रातुरंशे सिद्ध्यति, तदितरांशे न सिद्ध्यति। एवमेकपाकेन भोक्तुः प्राप्तव्यवहारस्य भ्रातुः क्रमागतसाधारणधनस्याप्राप्तव्यवहाराणां सर्व्वेषां भ्रातृणामंशसहितस्य कुटुम्बभरणाद्यर्थं भगिन्यादिविवाहाद्यर्थं वा भ्रात्रादिविवाहाद्यर्थं वा रोगोपशमनाद्यर्थं वा पित्रादिकृतर्णापाकरणाद्यर्थं वा पित्रादिश्राद्धाद्यावश्यककार्य्यादिसम्पत्यर्थं वा हस्तान्तरकरणक्षमतास्त्येव। उपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककार्य्यार्थं दासादीनामपि स्वामिधनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वेन चतुर्णां सोदरभ्रातृणामेकपाकेन वसताम्मध्ये प्राप्तव्यवहारस्य ज्येष्ठभ्रातुरप्राप्तव्यवहाराणामवशिष्टानां त्रयाणां भ्रातृणां शास्त्रानुसारेण पितृवत्प्रतिपालनाद्यावश्यककार्य्यकरणक्षमस्योपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककार्य्यकरणार्थं

साधारणक्रमागतधनानाम्मध्ये तत्तत्कार्योपयुक्तस्य धनस्य हस्तान्तरकरणक्ष-
मताया अर्थसिद्धत्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्का-
रकृतदायभागटीकादायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादार्णवसेतुविवा-
दभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतनारदवचनम् ॥१॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्ये असिद्धिः, स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः अन्यानुमत्या विक्रये तु तत्सिद्धिः—इति विवाद-
भङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥२॥

कुटुम्बार्थेऽध्यधीनोऽपि व्यवहारं यमाचरेत् ।
स्वदेशे वा विदेशे वा तं ज्यायान्न विचालयेत् ॥—इत्युपरिलिखित-
ग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥३॥

पितृव्यभ्रातृपुत्रस्त्रीदासशिष्यानुजीविभिः ।
यद्गृहीतं कुटुम्बार्थे तद्ग्रही दातुमर्हति ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
बृहस्पतिवचनम् ॥४॥

कुटुम्बार्थमशक्ते[1] तु गृहीतं व्याधितेऽथवा ।
उपप्लवनिमित्तञ्च विद्यादापत्कृतं तु यत् ॥
कन्यावैवाहिकञ्चैव प्रेतकार्य्येषु[2] यत्कृतम् ।
एतत्सर्व्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थ-
धृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

पितर्य्युपरते पुत्रा ऋणं दद्युर्यथांशतः ।
विभक्ता अविभक्ता वा यो वा तामुद्वहेद्धुरम् ॥—इति विवादभङ्गार्ण-
वादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥६॥

---

१. कुटुम्बार्थमशक्तेन गृहीते व्याधितेऽथवा ।
उपप्लवनिमित्ते च विद्यादापत्कृते तु तत् ॥—कास्मृ०

२. प्रेतकार्ये च—कास्मृ० ।

अत्रेदमवधेयम् । कुटुम्बभरणादिरूपयादृशयादृशकार्य्ये उपस्थिते दासकृतमृण प्रभुणा शोधनीयमिति प्रतीयते तादृशतादृशकार्य्यनिष्पत्त्यर्थं प्रभुधनविक्रयोऽपि सिद्ध्यति । तदतिरिक्तविषय एव स्वाम्यनुमतपदेन बाध्यते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ।।७।।

पितेव पालयेत् पुत्रान् ज्येष्ठो भ्रातॄन् यवीयसः ।

पुत्रवच्चापि वर्त्तेरन् ज्येष्ठे भ्रातरि धर्म्मतः ।।—इति मनुवचनम् ।।८।।

एकोऽपि स्थावरे कुर्य्याद्दानाधमनविक्रयम् ।

आपत्काले कुटुम्बार्थे धर्म्मार्थे च विशेषतः ।।—दायतत्त्वादिग्रन्थधृतमुनिवचनञ्चेति ।।९।।

एतदब्दीयफेवरवरीमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१२९—रोवकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख २८ माह जानओयारि इं सन १८३२ साल मोताबक[1] १३ माघ बाङ्गला सन १२३८ साल रोज बुधवार श्रीयुत हेनरि सिकिसपीयर साहेबे आदालत् मजकुरेर हाकिमेर वैठके ।।

विश्वेश्वरीदेवी बनामे ताराचन्द्रचाटुर्य्या

छाएलार मोक्तार रामकानाइघोष हाजीर हइल । छाएलार सओयाल इं सन १८३१ सालेर ६ माह शेतम्बर तारिखेर । एलाका मुरशीदावादेर प्रीविणसीयार क्रोटेर हाकिम फिलिप इरनिष पाटल साहेवेर फयसला, जाहाते मुद्दाइ ताराचन्द्रचाटुर्य्यार हकूके डिगरि हइयाछे, ताहार नाराजीते एइ मोकद्दमाय माफनिशी आपील मञ्जुरि प्रार्थनाय मोजाहाय मुलुटी ओगयरह रकम दुइ आना

१. मोताबक—व्यप० ।

दुइ कडार दखल पाओयार बाबते ७७०१८९१२ टाकार ताइने। मोक्तार मजकुरेर नामे मोक्तारनामा सम्वलित ओ इं सन १८३१ सालेर ९ सेतम्बरेर लिखित एलाका मुरशीदाबादेर कोटेर फयसलार नकल अनैक्यता जे एइ माह जानओयारिर १६ तारिखे दाखिल हइया छल, पडागेल। यद्यपि स्यात्, एइ मोकद्दमार मोफनिशा सुरत् आपील नामञ्जुरि कि मञ्जुरिर हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर द्वाराय निचेर लिखित विशय दरिआप्त करा उचित हइल। ए जन्य हुकुम हइल ये तत्स मिहवारि कागजात सओयाल ओगयरह एइ गोवकारिर नकल सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय-ये पण्डित मोछप क्राटेर फयछलार लिखित सववसकलेर एवं ताहार लिखित कैफियत् अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव तत्क्षणात् लिखेन ये लिखित फयसलार लिखित पण्डितेर व्यवस्था दोरस्त वटे किम्वा मोकद्दमार हालत् अनुमोदने ताहार सत्यताय किछु सन्देह प्रकाश हइते पारे कि ना इति॥

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयपञ्चविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैर्तद्विवादविषयनिविष्टनिवेदनपत्रादिकञ्च यत्तदब्दीयफेवरवरीमासीयदशमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥

प्रभुसमर्पितजयपत्रलिखितप्रश्नत्रयस्योत्तरे तज्जयपत्रलिखितपण्डितदत्ता व्यवस्था शास्त्रसम्मता भवति। किन्तु देवचन्द्ररायेण स्वजीवनदशायां स्वस्वत्वास्पदीभूतधनमविवाहितायै स्वकन्यायै दासमन्यै दत्तमत्यर्थिन्या निवेदनपत्रे लिखितमस्ति-तत्सत्यं चेत्तदा दासमन्या मरणोत्तरं तद्दानानुसारेण तत्स्वत्वास्पदीभूतयौदायिकस्त्रीधने तद्दुहितृभावे तत्पुत्रस्य सर्व्वचन्द्रस्य स्वत्वे जाते सति तन्मरणोत्तरं तन्मातामह्यां वेदवत्यां पूर्व्वधनस्वामिनो देवचन्द्ररायस्य पत्न्यां विद्यमानायामपि तस्य सर्व्वचन्द्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या विश्वेश्वरीदेव्या एवाधिकारो यतस्तज्जयपत्रे लिखितमस्ति। प्रत्यर्थिनीविश्वे-

श्वरीदेवीनिर्द्दिष्टसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तेन देवचन्द्ररायस्य मरणोत्तरं तत्कन्याया दासमन्या आयत्तं तत्स्वत्वास्पदीभूतं धनं यद्यपि जातम्, किन्तु दासमन्या मरणोत्तरं देवचन्द्ररायस्य पत्न्या वेदवत्या आयत्तमपि जातमिति। एतादृशलिखनेन देवचन्द्रस्य मरणोत्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्स्वत्वास्पदीभूतधने शास्त्रानुसारेण प्रथमतस्तत्पत्न्या वेदवत्या एवाधिकारित्वेन विद्यमानां तां विहाय तत्कन्याया दासमन्या आयत्तं तद्धनं कमप्येकं हेतुं विना भवितुं न शक्नोतीति। अतएवास्त्येव कश्चिद् हेतुरित्यवगमात्। एवञ्च सति तज्जयपत्रलिखितपण्डितदत्तव्यवस्थैतद्विवादसम्पर्कशून्यैव[1] — इतिवङ्गदेशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्रप्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम्॥ १॥

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा।

भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्व्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम्॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम्॥ २॥

विवाहकाले तत्पूर्व्वापरकाले वा स्त्रियै यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु धने प्रथमं कुमार्य्यास्तदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भावतपुत्रयोस्तदनन्तरं वन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः। सर्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्य्यौतुकधनवत् क्रमेणाधिकारः—इतिदायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम्॥ ३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति॥ ४॥

एतदब्दीयमार्च्चमासीयनवमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

1. °शून्यैरेति—व्यप०।

२७६४लं—

१३०—रोवकारि मिच्छिल सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख ७ माह फिवरेल इं सन १८३२ साल मोतावक २६ माह माघ वाङ्गला शन १८३८ साल रोज मङ्गलवार श्रीयुत हेनरि सिकिशपीयेर साहेव आदालत मजकुरेर हाकिमेर वैठके—

दुर्गादत्त आपिलाण्ट

वुनियादसिंह रेष्पाडण्ट

आपिलाण्टेर उकिल मुनशी होशन आलि ओ सदासुद पण्डित, ओ रेष्पाडण्टेर उकिल मुनशी दादारवकूस हाजिर आइल। इत पूर्व्व सन हालेर ३०।३१ माह जानओयारिते एइ मोकर्द्दमा आमार वैठके रोवकार ओ प्रथम आदालतेर वावत् प्रविनशीयान क्रोटेर साद्यक कागजात तथाकार फयछला पर्य्यन्त ओ एइ आदालतेर दाखिल हओया कागजात गतो शनेर ४ आपरेलेर लिखित रोवकारि पर्य्यन्त पडा हइया, दिवा अवसान प्रयुक्त मुलतवि छिल। अद्य पुनराय दरपेष एइ मोकद्दमार वावत् एइ आदालतेर सकल कागजात ओ एइ आदालतेर तलव करा त्रिपुरसुन्दरिदत्तेर स्त्री गङ्गाजलिर मोकर्द्दमाय वाजे कागजात पडागेल। तत्परे रेष्पाडण्टेर तरफ हइते मिरआकवर आलि एक केता मोक्तारनामा दाखिल करिलेक. अनुमोदने आइल। जेलार जजसाहेवेर प्रेरित कागजातेर किरण इहाइ मालुम हय-जे जे समय जयदत्त ओ त्रिपुरसुन्दरिदत्तेर खिगणेर दखिलकारिर तहकीकातेर कर्म्मजेर तजनिजे छिल, रेष्पाडण्ट आदालतेर तलव मते चारि केता नकल छोनेनामा, जाहा कालेक्टरिते दाखिल हइयाछिल, दरपेष करे। एवं ताहार परे जजसाहेव ताहा ओ तहकीकातेर कागजात सम्वलित प्रीविणशीयान क्रोटे पाठान इति। यद्यपि स्यात् सत्यतार तहकीकातेर पूर्व्व एइ विषयेर दरियाप्त करा उचित हइल ये यद्यपि स्यात् पूर्व्व उक्त छोनेनामासकल सकलेर सम्मति मते लेखा हइयाथाके

तवे ताहार लिखित शरतसकल शास्त्रेर आ…रामते सत्य, ओ आमले आना उचित वटे कि ना। ए जन्य हुकुम हइल ये चारि केता नकल छोनेनामा एइ हुकुमे ये अदालतेर पण्डित ताहार मजमुन अनुमोदने उपरेर विशयेर जओयाव दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन-एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय-एवं ताहार जओयाव आशा पर्य्यन्त मोकर्द्दमा मुलतवि थाके इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिमनीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयसप्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रमेवं तत्समर्पितसंवित्पत्रप्रतिरूपपत्रचतुष्टयं च यत्तदब्दीयतन्मासीयद्वा-विंशतिदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तम् तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥

उपरिलिखितसंवित्पत्राणि यदि सर्व्वेषां संमत्या लिखितानि स्युस्तदा तत्तल्लिखितनियमाः शास्त्रानुसारेण यथार्था भवन्ति, एवं तत्तन्नियमानां स्वीकरणमुचितं भवति। यतस्तत्तत्संवित्पत्रेषु तत्संवित्कर्तृभिः सर्व्वैरेव लिखितं पूर्व्वकृतविभागोऽतीवासिद्ध इति। अतएव तत्तत्संवित्पत्रलिखित-नियमैर्वास्तवं शास्त्रानुसारेण केषाञ्चिदपि काचिदपि स्वत्वहानिर्भवतीत्यन-वगमात्—इति मिथिलादेशचलितमनुविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकर-विवादचन्द्रवीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

भ्रातरस्त्वविभक्ता ये स्वरुच्या तु परस्परम्।
विभागपत्रं कुर्व्वन्ति भागलेख्यं तदुच्यते॥—इति वीरमित्रोदयादि-ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम्॥१॥

पतितस्तत्सुतः क्लीबः पङ्गुरुन्मत्तको जडः।
अन्धोऽचिकित्स्यरोगार्त्तो भर्त्तव्यास्ते निरंशकाः॥—इत्युपरिलिखित-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥२॥

पश्चादप्यौषधादिना दोषनिर्हरणे अस्त्येवांशभागिता—इति वीर-मित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥३॥

मृते पितरि न क्लीबकुष्ठ्युन्मत्तजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशभागिनः ॥

तत्पुत्राः पितृदायांशं लभेरन् दोषवर्जिताः—इति विवादचिन्ता-मणिविवादरत्नाकरादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥४॥

औरसाः क्षेत्रजाश्चैषां निर्दोषा भागहारिणः ।

सुताश्चैषां च भर्त्तव्या यावन्नो भर्तृसात्कृताः ॥

अपुत्रा योषितश्चैषां भर्त्तव्याः साधुवृत्तयः ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

भरणं चास्य कुर्व्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात्—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-शङ्खवचनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयमार्चमासीयद्वाविंशतिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकाद्व-याधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३१—रोबकारी मिछिल सदर देओयानी आदालत ओयाके तारिख १६ माह फिब्रेल इं सन १८३२ साल मोताबक ५ फाल्गुण व ङ्गला शन १२३८ साल रोज बृहस्पतिवार श्रीयुत हेनरि सिकिसपीयर साहेब आदालत मजकुरेर बैठके ॥

भैरवीदासी वनामे नवकृष्णवसु

सायेलार उकिल मुनशी गुलाम आहाम्मद ओ तरपछानिर तरफ हइते सदासुखपण्डित एक केता ओकालातनामा दाखिल करिया हाजीर आइल । इत पूर्व्वे गत सनेर १ दिजम्बर तारिखे छाएलार सओयाल दरपेष हइया फयछला अनुमोदनेर जन्य मुलतवि छिल । तदनुजाइ छाएलार दोषरा छओयाल फयछला-

सम्वलित अनुमोदने सन हालेर ५ जानेओयारि तारिखे एइ विशयेर जओयाव तलव-ये यद्यपि स्यात् फयछला मजकुरेर लिखित विशयसकल सत्य तवे फयछलार लिखित व्यवस्था अथवा छायेलार उकिलेर दाखिल करा व्यवस्था दोरस्त वटे। एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने (जिज्ञासा) हय। तदनुजाइ पण्डितेर जओयाव दाखिल हओयाते अद्य छायेलार खाष आपीलेर छओयाल तत्सम्भिव्याहारि[1] कागजात सम्वलित आमार वैठके रोवकार हइया छायेलार उकिलेर स्थाने जिज्ञाशा करा गेल-ये आसल दस्तावेज नेमपत्र जाहा ओछियत नामा छओयाले लिखियाछ, कोन मोकर्द्दमाय कोन आदालते दाखिल हइयाछिल। जओयाव जेलाः—२४ परगणार देओयाणि आदालते मवलग १४९८॥० टाका तालुकातेर हिस्या वावत् ८५६ लम्वरेर मोकर्द्दमाय, जाहाते नवकृष्णवसु मुद्दाइ ओ भैरवीदासी मुद्दालेहेम् छिल, दाखिल छिल इति। यद्यपि स्यात् एइ आदालतेर जओयावे एइ विषय लिखित ये यद्यपि स्यात् फयछलार लिखित छायेलार जओयावेर विषयसकल सत्य-हय, तदनुसारे छाएलार दाखिल करा व्यवस्था शास्त्रानुजाइ दोरस्त वटे। याहाहउक, परे एइ विषय दरियाप्त हयना ये फयछलार लिखित छाएलार जओयावेर लिखित कोन विषय दोरस्त ओ सत्य हओन सववे[2] छाएलार दाखिल करा व्यवस्था दोरस्त। ताहार प्रति दृष्टे हुकुम हइल ये नेमपत्र दस्तावेज मजकुर एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डित ताहार अनुमोदने उपरेर लिखित विषयेर पष्ट ओ सारओयार एक सप्ताह मध्ये लिखेन, एवं ताहा आशा पर्य्यन्त मोकर्द्दमा मुलतवि थाके इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयषोडशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

---

१. समिव्याहारि—व्यप०। २. सरवे—व्यप०।

पत्रमेवं तत्मम पैंतनियमपत्रञ्च यत्तदब्दीयमार्चमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

जयपत्रलिखिता र्थिन्या उत्तरपत्रलिखितप्रकरणानाम्मध्येऽर्थिन्याः पतिर्यदि द्वे पत्न्यौ[१] भैरवीदासीरत्नमणीदास्यावेवं रत्नमणीदासीगर्भजाताजन्माचिकित्स्यरोगार्त्तमेकं पुत्रं क्षेत्रचन्द्रनामानं संरक्ष्य मृतः स्यात्, क्षेमचन्द्रोपि तादृशरोगग्रस्त एव मृत इत्यस्य आजन्माचिकित्स्यरोगार्त्ते पुत्रे विद्यमाने सत्यर्थिन्या उत्तरपत्रलिखितस्य तत्पतिकृतस्योसीयच्छब्दवाच्यस्य कार्य्यस्य वा एतयोर्द्वयोर्वा सत्यत्वे सत्येतद्धर्म्माधिकरणार्थिनीनियुक्तोकीलशब्दवाच्यनिविष्टव्यवस्था शास्त्रसम्मता भवति, शास्त्रानुसारेणाजन्माचिकित्स्यरोगार्त्तपुत्रस्य पितृधनाधिकारित्वाभावेन तादृशपुत्रे विद्यमाने सत्यप्यनंशित्वप्रयोजकदोषशून्यपौत्रप्रपौत्राभावे अर्थिनीपतिपत्न्योरर्थाद्भैरवीदासीरत्नमणीदास्योरेवाधिकारस्तयोर्द्वयोर्म्मध्ये रत्नमणीदास्यामरणे तत्संक्रान्ततदीयपतिधनांशेऽपि भैरवीदास्या अर्थिन्या एवाधिकारः। अर्थिन्यां विद्यमानायामन्येषां नाधिकारः। पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य द्विपत्नीकस्य मृतस्य धने तत्पत्न्योः प्रधानाधिकारित्वेन तयोर्म्मध्ये एकस्याः पत्न्या मरणोत्तरं तत्संक्रान्ततत्पतिधनांशे तत्पत्यु(?)र्ये उत्तराधिकारिणस्ते एवाधिकारिणो भवन्ति, तत्पत्यु(?)रुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे जीवन्त्यास्तत्पत्न्याः प्रधानाधिकारित्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पतितस्तत्सुतः क्लीबः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ॥
अन्धोऽचिकित्स्यरोगार्त्तो भर्त्तव्यास्ते निरंशकाः ॥ इत्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥
स्वभागान् यदि दद्यु स्ते विक्रीणीयुरथापि वा।

---

१. पति र्यदि द्वे पत्न्यौ—व्यप०।

कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ।। इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारदवचनम् ।। २ ।।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ।। ३ ।।

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात्क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ।। इति तत्तद्ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ।। ४ ।।

अतः पत्नी दुहितरश्चैव इत्यादिना ये पूर्व्वपूर्व्वस्याभावे परभूताधिकारिणो निर्दिष्टास्ते यथा पत्न्यधिकारप्रागभावे गृह्णीयुस्तथा जाताधिकारायाः पत्न्या अधिकारप्रध्वंसेऽपि भोगावशिष्टं धनं गृह्णीयुः—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ।। ५ ।।

एतदब्दीयापरेलमासीयाष्टादशदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१३२ सहर ढाकार देओयानि आदालतेर पण्डित श्रीयुत दिगम्वरतर्कवागीशभट्टाचार्य्य स्थाने प्रश्न एइ लं० ५९२—

भोलानाथराय— फैरादी—

मृत रामस्मरण रायेर स्त्री श्रीमतिसावित्रा ओ गोपालकृष्ण ओ मदनमोहनसिंह ओ मृत काशीचन्द्रसिंहेर स्त्री—

आसामीयान् ।।

सावित्रार विक्रि १४।।=) क्रान्ति हिस्या जमिदारिर कओयाला असिद्ध करिया ताहा दखल पाओयार मकद्दमा—

हिन्दु एक व्यक्ति वैद्य जाति आपन स्त्री ओ ततगर्भजात नावालग पुत्र ओ द्वितीय स्त्रीर पुष्यपुत्र राखिया मृत्यु हय, ओ ऐ

स्त्री ओ पुष्यपुत्र दुइ पुत्र छोलानामा अर्थात विरोध भञ्जनीय पत्र द्वाराय ।।=३।१ क्रान्ति हिस्या ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर सत्त ओ ।-६।।= क्रान्ति हिस्या ऐ पुष्यपुत्रेर सत्त हइया ऐ अप्राप्त-व्यवहार पुत्रेर सत्त ताहार मातृ एक्तारे छिलो, ऐ नाबालग पुत्रेर मृत्युर पर ऐ अविरा स्त्री सावित्रा अर्थात् नाबालगेर माता सेइ-दरवस्त ।।=१३।- दस आना सोया तेरगण्डा एक क्रान्ति हिस्या ऐ पुष्यपुत्रेर अनुमति व्यतित विशेषकरण विना अन्येर निकट विक्रि करिते पारे कि ना। ओ यदि सेइ दरवस्त मिलकियत विक्रि करिये काशीते थाकिये दिनपात करे, 'ओ पुष्यपुत्र' विक्रि असिद्धेर जन्ये ऐ मिलकियत दखल पाओयार प्रार्थनाय आदालते वादि हय—एमत विशयेते विक्रि असिद्धेर हुकुम आदालत हइते हइले पर ऐ पुष्यपुत्र विमातार जिवमाने विरोधि मिलकिअतेर उपर दखल पाइते पारे कि ना॥

द्वितीय—

यदि ऐ हिस्या विक्रिर पर पुष्यपुत्र ऐ विमातार असङ्गत प्रकरण अर्थात छेनाला कर्म्म हाकिमेर निकट प्रकाश करिया वादि हए ओ ताहा साबुद ना हइया डिषमिष हइले सेइ दत्तकपुत्र पितृमातृवस्तु पाइते पारे कि ना, अर्थात् विमातार प्रति एमत अत्युक्ति दर्त्तक सत्ते हक पाओयार निषेध हय कि ना। ए सकल विषयेर उत्तर एतद्देशीय चलित दायभाग प्रभृति शास्त्र सम्मत सप्ताहेर मद्धे लिखेन। इति सन १२३८ साल, तारिख २८ श्रावण मौं० शन १८३१—१२ आगस्त।

समागतपारष्यरुवकारिसंवलितप्रश्नपत्रावलोकनात् यादृशबोधोजात-स्तदनुसारेण भाषया[2] सुखबोधार्थमुत्तरं लिख्यते ॥

प्रथम प्रश्नेर उत्तर—

अप्राप्तव्यवहार ईशानचन्द्रेर जननी सावित्रा आपन पति रामशरणरायेर मृत्युर पर पतिर स्थावर वस्तु दत्तकरूप सपत्नीपुत्र

१. पुत्र पुत्र—व्यप०। २. भाषाया—व्यप०।

भोलानाथरायेर सहित उभयतो यथाशास्त्र लिपि द्वारा तृतीयांशेर एकांश ।–६॥– दत्तकपुत्रके दिया आपन अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर स्वत्वास्पदीभूत दुइ अंश ॥–१३।– निजाधिकारे अर्थात आपन एक्तारे राखिया ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर मरणानन्तर अवीरा सावित्रा यथाशास्त्र स्वपुत्रधने अधिकारिणी हइया ऐ विभक्त समस्त स्थावर वस्तु विसिष्ट कारण विना ऐ दत्तकपुत्रेर अनुमति व्यतिरेक विक्रय करिते पारे ना। यदि ऐ तावत वस्तु विक्रय करिया सावित्रा काशीते थाकिया काल यापन करिते थाके, ऐ दत्तकपुत्र ऐ विरोधि विक्रीत वस्तु विक्रय असिद्ध हइया आपन अधिकार अर्थात दखल पाओयार प्राथनाय प्रतिवादि हय, ओ राजाज्ञा द्वारा अर्थात् आदालतेर हुकुम मते विक्रय असिद्ध हय, तवे विमाता सावित्रा वर्त्तमान पर्य्यन्त ऐ विरोधि विभक्त वस्तुते सावित्रा विना दत्तकपुत्र अधिकारि अर्थात दखल पाइते पारे कि ना इति ॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति कात्यायन-वचनात् ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिदायात् कथञ्चन ॥—इत्यादि वचनम् ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

ऐ अंश विक्रय करणेर परे दत्तकपुत्र विमातार उपपति व्यभिचारादि दोष राजधानीते प्रकाश करिया प्रतिवादि हय, ताहार प्रमाण ना हओयाते राजविचारे ऐ दोष मिथ्या हइया मकद्दमा डिषमिष हय.। एमत मातृद्वेष्टा दत्तकपुत्र कोनो मते विमातार धने अधिकारी हइते पारे ना। यद्यपि औरस पुत्र द्वेष्टा हइया मातृर यथार्थ व्यभिचारादि दोष कोनो स्थाने प्रकाश करे तवे सेइ पुत्र मातृधनेर अधिकारी हय ना दत्तकादिर पाओनेर

विषय कि। केन ना तावत शास्त्रे लिखित आछे–ये पितृ-मातृर यथार्थ दोष पुत्रे सर्व्वतो भावे गोपन करिवेक। इहाते विद्वेष करिया यदि पितृ-मातृर मिथ्या दोष, याहाते अत्यन्त अपमान अव्यवहार्य्यत्वादि दोष हय, इहा राजद्वारे प्रकाश करिले, सेइ पुत्र पितृमातृधनेर अधिकारि कोनो मते नहे, विशेषत दायभागेर लिखित धनग्रहण धनस्वामिर ऐहिक पारत्रिक उपकार कर्म्मेर वेतन स्वरूप ताहा, ना करिया, तद्विपरीत विद्वेषादि करिले सुतरां अनधिकारी हय-इति दायभागादिशास्त्रसम्मता व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

पितृद्विट् पतितः षण्ढो यश्च स्यादौपपातिकः।
औरसा अपि नैतेऽशं लभेरन् क्षेत्रजाः कुतः॥ इति व्यासवचनम्॥
गोपयेज्जन्म नक्षत्रं धनसारं गृहे मलम्।
प्रभोरप्यवमानञ्च तस्य दुश्चरितञ्च यत्॥
कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान्न धार्मिकः।—इत्यादिवचनम्॥

पुन्नाम्नो नरकाद् यस्मात् त्रायते इत्यादि (*वचनेन*) *पुत्रकर्तृकतया महाफलश्रुतेः। तत्कर्म्मवेतनं धनसम्बन्धित्वम्। अतस्तदकुर्व्वतः कुतो वेतनम्*—इति दायभागः।

शन १८३१ साल २५ आगष्ट॥

श्रीईश्वरो जयति
श्रीदिगम्बरशर्म्मणः

१३३—सहर ढाकार देयानि आदालतेर पण्डित श्रीयुत दिगम्बर तर्कवागीश भट्टाचार्य्य स्थाने प्रश्न एइ ये— नं० ४९२

भोलानाथराय फैरादी

शावित्रा ओ गोपालकृष्णसिंह ओ गयरह आसामीयान—

प्रथम प्रश्न—

पूर्व्व प्रश्न व्यवस्थापत्रे एमत वोध हय ना ये मातार व्यभिचा-

रादि दोष प्रकाशे पितृधन पाइते पारे ना। अतएव लिखा जाइते-छे ये मातृ असङ्गत प्रकरण प्रकाशे पितृवस्तु पाओयार निषेध कि ना-एहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे परस्थु दिवस मिछिलेर शमय लिखिया पाठाएन ॥

द्वितीय--

पितृमातृदोष प्रकाशे ये पितृमातृधनेर अधिकारि नहे, एमत व्यवस्था लिखिया ताहार निचे व्यासवचन ओ दायभागवचन ये लिखा गीयाछे ताहार अर्थ जथार्थ वाङ्गलाभाषाते लिखिया परस्थु दिवस मिछिलेर समय दाखिल करेण, गौन ना हय। इति शन १२३८ तारिख १२ भाद्र वाङ्गलार आङ्गरेजी शन १८३१-२७ आगस्त।

समागतपारुष्यरूवकारिसंवलितप्रश्नपत्रावलोकनात् यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण भाषया सुखबोधार्थमुत्तरं लिख्यते ॥

प्रथम प्रश्नेर उत्तर—

मातृव्यभिचारादि दोष प्रकाश करिले पितृधन पुत्रे पाओनेर वाधा नाइ। पूर्व्व पश्ने लिखित मातृधन पाइते पारे ना-इति।

द्वितीयप्रश्नेर उत्तर—

पितृमातृदोषप्रकाशे पितृमातृधने अधिकारी नहे। ताहार प्रमाण ये व्यासवचन पितृद्विट् इत्यादि। ताहार अर्थ—एइ पितृद्वेष्टा जीवद्दशाते वाक्य द्वारा किम्वा आघात द्वारा अपमान करे. एवं मृत्यु हइले श्राद्धादिते वैमुख हय, पतित, अव्यवहार्य्य, ओ षण्ड, नपुंसक, औपपातिकः उपपातकयुक्तः—एरूप औरस पुत्र पितृधने अधिकारी हइते पारे ना, सुतरां क्षेत्रज दत्तकादि अधिकारी नहे ॥ द्वितीय विष्णुधर्म्मोत्तरवचन--गोपयेज्जन्म नक्षत्र-इत्यादिर अर्थ—जन्मनक्षत्र, धनसार श्रेष्ठधन, गृहमल गृहछिद्र, प्रभु-पितृ-मातृर अपमान, आर ताहारदिगेर दुष्कर्म्म गोपन करिवेक। पितृशब्दे ओ प्रभुशब्दे पिता माता दुइ। इहार प्रमाण दायभागादि अनेक शास्त्रे आछे। कोऽर्थः पुत्रेण—इत्यादि वचनेर

अर्थः—ये पुत्र धार्म्मिक ओ विद्वान् ना हय, से पुत्रे कि प्रयोजन आछे, अर्थात् धनि व्यक्तिर उत्तराधिकारी धनिर द्वेष्टा हइले ताहार धन पाइते पारे ना। इहार प्रमाणः—एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थः बाधकं विना अन्यत्रापि कल्प्यते—इति दायभागादिशास्त्रसम्मता व्यवस्था। इति सन १८३१ साल तारिख २९ आगष्ट॥

श्रीईश्वरो जयति

श्रीदिगम्बरशर्म्मणः

नं० ४६२—

१३४—मृत रामस्मरणरायेर पुष्यपुत्र भोलानाथराय—फैरादी ऐ मृतव्यक्तिर स्त्री सावित्रा ओ गोपालकृष्ण सिंह ओगयरह—आसामीयान्।

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने प्रश्न एइ।

एइ आदालतेर प्रश्न जाहा सहर आदालतेर पण्डित श्रीयुत दिगम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्ये निकट पाठान गियाछिल, ओ भट्टाचार्य्य ये उत्तर ओ वचनेर अर्थ लिखियाछेन, ताहा पाठान जाये। यथाशास्त्र कि ना, एवं वचनेर अर्थ ये पण्डित लिखियाछेन ताहा यथार्थ कि ना, एवं यदि व्यवस्था यथार्थ, ओ वचनेर अर्थ पण्डितेर व्यवस्थार अक्य ना हय, तवे ऐ प्रश्नेर यथाशास्त्र व्यवस्था ओ वचनेर यथार्थ अर्थ लिखिया पाठाएन।

यदि एक व्यक्ति वैद्यजाति, आपन वित्त राखिया मृत्यु हय, आ सेइ वित्त प्रथम स्त्रीर पुष्पपुत्र ओ वर्त्तमाना द्वितीय स्त्रिर गर्भजात पुत्र मध्ये दुइ अंश, एक अंशमते अंशजात हइया, औरस पुत्रेर दुइ अंश ताहार अप्राप्तव्यवहार निमित्तक ओ पश्चात् ताहार मृत्यु हओते आपन मातृ एक्तारे छिलो, एमत वित्त शास्त्रानुसारे ऐ पुष्यपुत्रेर मातृवित्त, कि पितृवित्त हय, इहार उत्तर लिखिया पाठाएन इति। सन १८३१ तारिख २६ आगस्त मौ० वां० शन १२३८ तारिख १४ भाद्र॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं व्यवस्थापत्रद्वयञ्च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयसितम्बरमासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

जाहाङ्गीरनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयप्रश्नयोरुत्तरे सहरबिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन दिगम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्येण लिखिते यथाशास्त्रे एव। एवं तत्प्रमाणीभूतवचनानामर्था अपि तत्पण्डितलिखिता यथार्था एव। किन्तु अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तमासीयोनत्रिंशद्दिनलिखितप्रथमप्रश्नोत्तरे व्यभिचारादिदोषप्रकाशकरणे सति पितृस्वत्वास्पदीभूतधनप्राप्तेर्ब्बाधो न भवति पुत्रस्येति यल्लिखितं तत्रायं विशेषो मिथ्याभूतमातृव्यभिचारादिदोषप्रकाशकर्त्तुः पुत्रस्यातीव निन्दितत्वेन मातश्च पित्रपेक्षया सहस्रगुणाधिकमान्यत्वेन च पितृदोषप्रकाशं विनैव मातृव्यभिचारादिदोषप्रकाशेनैव पितृदोषप्रकाशकर्त्तुः पुत्रस्याकृतयथाशास्त्रप्रायश्चित्तस्योत्तराधिकारित्वेन कस्यापि धनग्रहणाधिकारित्वस्य योग्यता न भवतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

उपाध्यायाद्दशाचार्य्य आचार्य्याणां शतं पिता।
सहस्रन्तु पितुर्म्माता गौरवेणातिरिच्यते ॥
गर्भधारणपोषाभ्यां तेन माता गरीयसी।—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादिग्रन्थलिखितमनुवचनम्[1] ॥१॥

पितृपत्न्यः सर्व्वा मातरस्तद्भ्रातरो मातुलास्तद्भगिन्यो मातृस्वसारस्तद्दुहितरश्च भगिन्यस्तदपत्यानि भागिनेयान्यन्यथासङ्करकारिणः स्युरिति प्रयोगतत्त्वादि(उद्वाहतत्त्व पृ० ११८)ग्रन्थधृतसुमन्तु(?)वचनम् ॥२॥

---

१. मुनि०—व्यप०।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येकः कश्चिद् वैद्यजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वस्वत्वास्पदीभूतधनं संरक्ष्य मृतः स्यादथ च तदेव धनं तस्य प्रथमपत्नीपोष्यपुत्रवर्त्तमानद्वितीयपत्नीगर्भजपुत्रयोर्मध्ये विभागेन अंशद्वयमौरसपुत्रस्यैकोंऽशः पोष्यपुत्रस्येति। तत्रौरसपुत्रस्यांशद्वयं तस्याप्राप्तव्यवहारत्वेन पश्चात्तन्मरणेन च स्वमातुरायत्तं भवति। एतादृशं धनं यद्यपि पोष्यपुत्रस्य पितृधनमभूत्, किन्तु पश्चाद् भ्रातृस्वत्वास्पदीभूतत्वेन भ्रातृधनं तन्मरणात्तन्मातृसंक्रान्तत्वेन च तन्मातृमरणानन्तरं मातृसंक्रान्तं भ्रातृधनं भविष्यतीति॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदमुत्तरं दत्तमिति॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१३५—यद्यपि पितृव्य ओ भ्रातुष्पुत्र पैतृक साधारण स्थावर एवं अस्थावर वस्तु बण्टकेर विवाद उपस्थित हइया सालिषेर निकट तावत वस्तु उत्तरकाल अंश करिया लओनेर लिखित पठित हइया थाके, किन्तु तदनुसारे कोन वस्तु चिह्नित एवं नाम पृथक, अर्थात् जमिदारि आदिर नाम खारिज, ना हइया सकर भूम्यादीर कर प्रदानेर निमित्त महाल खण्ड विलिमते उभये ओसुल तहसील करिया उभये साधारणे राजकर प्रदान करिया थाके, ठाकुरसेवा ओ वागान ओ वाटीदिगर तावत वस्तु साधारणे राखिया ऐ भ्रातुष्पुत्र आपन पितृव्य एवं स्त्री वर्त्तमाने लोकान्तर हइया थाके, तवे मिताक्षराग्रन्थ मते ऐ मृत व्यक्तिर ऐ सकल वस्तुर उत्तराधिकारि ऐ स्त्री किम्वा ऐ पितृव्य हइवेक इति॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्सम्पर्कीयावशिष्टपत्रचतुष्टयं च यदेतदब्दीयजानवरीमासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिक-

यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कश्चित् स्वपितृव्ये विद्यमाने स्वपत्न्याञ्च विद्यमानायां मृतः स्यात्तदा प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति मिताक्षरादिग्रन्थमते तस्यैव मृतस्य त्यक्तधने तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्येवाधिकारिणी भवति। पत्न्याञ्च विद्यमानायां तत्पितृव्योऽधिकारी भवितुं न शक्नोति। प्रश्नपत्रलिखितेन सराजकरस्थावरादेः करप्रदानार्थं पृथक् पृथक् सराजकरस्थावरखण्डस्य निर्देशेन द्वाभ्यां करग्रहणं कृत्वा ताभ्यां द्वाभ्यां साधारण्येन राजकरो दत्तः स्यादित्यनेन विवादास्पदीभूतधनविभागस्य शास्त्रानुसारेण निष्प्रत्यूहत्वात्। मिताक्षरादिग्रन्थलिखितस्य विभागशब्दार्थस्यैतद् व्यवस्थाया अधोलिखित-तृतीयप्रमाणे स्पष्टीकृतत्वाच्चेति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिमिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयात्-इत्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिता-क्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानान्तदेकदेशेषु व्य-वस्थापनम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥३॥

दानग्रहणपश्वन्नगृहक्षेत्रपरिग्रहाः।

विभक्तानां पृथग्ज्ञेयाः पाकधर्म्मागमव्ययाः ॥—इति वीरमित्रोद-यादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥४॥

साक्षित्वं प्रातिभाव्यं च दानं ग्रहणमेव च।

विभक्ता भ्रातरः कुर्य्युर्नाविभक्ताः कथञ्चन ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृत-नारदवचनम् ॥ ५ ॥

येषामेताः क्रिया लोके प्रवर्त्तन्ते स्वरिक्थतः।

विभक्तानवगच्छेयुर्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-नारदवचनञ्चइति ॥ ६ ॥

एतदब्दीयापरेलमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१३६. इं सन १८३२ साल तां २५ फेपरेल—

कोर्टेर पण्डितेर द्वाराय अवगतो हइवेन ये वागचे ब्राह्मण गङ्गाजले सगुण करिते मुक्त हइते पारे किना, आर यदि स्यात् सगुण करे तवे ताहार धर्म्मे हाइन हइते पारे किना ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

वागचीयोपनामकब्राह्मणजातीयो गङ्गाजलेन शपथकरणस्य योग्यो न भवति । यदि च तेन गङ्गाजलेन शपथः क्रियते तदा तस्य धर्म्महानिर्भवत्येवेति शास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

यथा गङ्गोदकं तोयं गोमयं गां तथा द्विजम् ।
असत्यं वापि सत्यं वा स्पृष्ट्वा दिव्यं करोति यः ॥
त्रिकोटिकुलसंयुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत् ।
कर्त्ता कारयिता भद्रे तथैव नरकं व्रजेत् ॥ इति गायत्रीतन्त्रधृत-(पृ० ४४)महादेववचनम् ॥ १ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१३७ सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर उपर सओयाल–

सओाल—

यद्यपि मृत राजा चित्रसेनेर स्त्री राणी इन्द्रकुमारी अवीरा

आपन ओयारिष अर्थात् आपन स्वामीर भ्रातार पौत्र महाराजा तेजचन्द्र वाहादुरेर वर्त्तमाने सुपरेम कोर्टेर आदालतेर खरचार देना दान अर्थात् दाइक हइया सुपरेम कोर्टेर देना खरचा आदाय-कारण आपन दखली चित्रसेनेर त्यज्य कोन वागान विक्रय करिया थाके तवे शास्त्रानुसारे ताहा सिद्ध हय किना। एवं यद्यपि मुद्दइ महाराजा तेजचन्द्र वाहादुरेर महर करा लिपिद्वाराय राजा चित्र-सेनेर स्त्री इन्द्रकुमारीर प्रति उपरेर लिखित वागान विक्रयेर ओ हस्तान्तरकरणेर क्षमता वोध हय, सेमते ओ वागान मजकुरान् विक्री सिद्ध हय किना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशता-ब्दीयमार्च्चमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वया-नन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यद्यपि मृतस्य राज्ञश्चित्रसेनस्यावीरया पत्न्या राज्या इन्द्रकुमार्य्या स्वपतिभ्रातृपौत्रे महाराजतेजश्चन्द्ररायबहादुराख्ये स्वानन्तरोत्तराधिकारिणि विद्यमाने सति सुप्रीमकोर्टाख्यधर्म्माधिकरणव्ययग्रस्तया तथा तद्धर्म्माधि-करणव्ययपरिशोधनार्थं राज्ञश्चित्रसेनस्य त्यक्तः स्वायत्तीभूतः कश्चिदा-रामो विक्रीतः स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण तादृशविक्रयः सिद्ध्यति, पुत्र-पौत्र-प्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने उत्तराधिकारित्वेनाधिकारिण्याः पत्न्या आपन्नि-वारणार्थम् आवश्यककार्य्यान्तरार्थं च तत्तत्कार्य्योपयुक्तस्य तद्धनेविक्र-यस्य शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वात्। एवं यद्यप्यर्थिनो महाराजतेजश्चन्द्र-बहादुराख्यस्य मुद्राङ्कितलिपिद्वारेण राज्ञश्चित्रसेनस्य पत्न्या इन्द्रकुमार्य्या उपरिलिखितारामाणां विक्रयप्रकारेण प्रकारान्तरेण वा हस्तान्तरकरण-क्षमताया बोधो भवति, तथापि तेषामारामाणां विक्रयः सिद्ध्यति, उत्तराधि-कारित्वेन प्राप्तानपत्यपतिधनया पत्न्या कृतस्योत्तराधिकारिसम्मतया प्रश्न-पत्रलिखितप्रकारकापन्निवारकावश्यकव्ययपरिशोधनार्थं तदुपयुक्तपतिधनवि-क्रयस्य सिद्धेर्न्निष्प्रत्यूहत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्क्काल-

ङ्कारकृतदायभागटीका-दायक्रमसंग्रह—व्यवहारतत्त्व—नारदस्मृति-विवादार्णव-सेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः— इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥ १ ॥

कुटुम्बार्थमशक्ते तु गृहीतं व्याधितेऽथवा ।

उपप्लवनिमित्तं च विद्यादापत्कृतञ्च तत्—इति व्यवहारतत्त्वादि-ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ २ ॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥ इति

एतान्यपि प्रमाणानि *भर्त्ता यद्यनुमन्येत* इति च नारदस्मृत्यादि-ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ३ ॥

तथा च *भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्त्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्व्वीत ।* इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमेइमासीयसप्तदशदि-नसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३८—अशेष शास्त्राध्यापक श्रील श्रीयुक्त सदर देओयानि आदालतेर पण्डितजन सकल

सओाल—

एक व्यक्ति रामकान्त भट्टाचार्य्य नामे छिल । ऐ रामकान्तेर तिन पुत्र रामजय ओ कालीप्रसाद ओ रामसुन्दरभट्टाचार्य्य हइयाछिल । ताहार मध्ये कालीप्रसाद निःसन्तान, आर रामजय

एक कन्या ओ एक स्त्री ऐ स्त्रीर गर्भे एक पुत्र राखिया आपन पिता ऐ रामकान्तभट्टाचार्य्येर वर्त्तमाने फौत् करे। तदपरे रामजय भट्टाचार्य्येर पुत्र भूमिष्ठ हइले किछु काल गते रामकान्तभट्टाचार्य्य एक पुत्र, अर्थात् ऐ रामसुन्दरभट्टाचार्य ओ एक पौत्र अर्थात् ऐ रामजयेर पुत्रके ओयारिष एवं किछु भूम्यादि राखिया फौत् करे, आर ऐ सकल भूम्यादि रामसुन्दरभट्टाचार्य्य आर ऐ रामजयेर पुत्रेर एजमालि दखले थाके। तस्य परे रामजयेर पुत्र आपन माता ओ भग्नीर सन्मुखेते अष्ट वत्सर वयः क्रमे फौत् करे। उहार फौतेर परं ताहार माता, अर्थात् रामजयेर स्त्री, आपन ऐ एक कन्याके राखिया फ़ौत् करे। ताहार पर रामजयेर कन्यार तिन पुत्र सन्तान हय। ऐ तिन पुत्रेर मध्ये एक पुत्रेर " प्राप्त हइयाछे, ए क्षने दुइ पुत्र वर्त्तमान आछे। तदसेत्ताय रामसुन्दरभट्टाचार्य्य आपन-पिता, रामकान्तभट्टाचार्य्य, ओ आपन मातार श्राद्धादि करिया एवं स्थावर वस्तुते दखिलकार थाकिया आपन नावालग दुइ पुत्र आर एक स्त्री अर्थात् ऐ नावालगेरदिगेर माताके राखिया फौत करे। एक्षने रामसुन्दरभट्टाचार्य्येर ऐ स्त्री ओ नावालग दुइ पुत्र वर्त्तमान आछे एमते रामजयभट्टाचार्य्येर ऐ कन्यार दावि रामजयेर हिस्यार भूम्यादिर प्रति अर्शे किना। यदि स्यात् अर्शाय, तवे ताहार दावि ऐ रामकान्तभट्टाचार्य्येर भूम्यादि वस्तुर प्रति कि आन्दाज अर्शाइते पारे इति। शन १८३२ साल तारिख १९ जानेओरि मतावक शन १२३८ साल तारिख ७ माघ—॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमार्चमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे[१] घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति रामजयभट्टाचार्यस्य दुहितुरयोगो रामजयभट्टाचार्ययोग्यांशभूम्यादिकं प्रति भवत्येव। अतएव रामजय-

१. समवन्धि—व्यप०।

भट्टाचार्यस्य पितू रामकान्तभट्टाचार्यस्य स्वत्वास्पदीभूतभूम्यादिधनार्द्धांश-परिमितभूम्यादिधनं प्रति तादृशाभियोगोऽयुक्तः, यतो रामकान्तभट्टाचार्यो रामसुन्दरभट्टाचार्यनामानमेकं पुत्रमेकञ्च पौत्रमर्थाज्जीवति पितरि मृतस्य रामजयभट्टाचार्यस्य स्वकीयज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रञ्च संरक्ष्य मृतः। अतएव रामकान्तभट्टाचार्यस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधने शास्त्रानुसारेण तदानीं विद्यमानयोः पुत्रपौत्रयोरेव तुल्याधिकारः, रामकान्तभट्टाचार्याख्ये पितरि जीवति सति अनपत्यस्य मृतस्य कालीप्रसादभट्टाचार्यस्य तद्[1]द्वितीयपुत्रस्य पैतृकादिधने स्वत्वानुत्पादात्। एवञ्च सति रामकान्तभट्टाचार्यस्य पौत्रो यदि स्वजननीं स्वभगिनीं चैकां संरक्ष्यानपत्य एव मृतः स्यात्तदा तत्त्यक्तधने अर्थान्मूलपुरुषस्य रामकान्तभट्टाचार्यस्य त्यक्तधनार्द्धांशे तन्मातुरर्थात् रामजयभट्टाचार्यस्य पत्न्या एवाधिकारः तस्याञ्च मृतायां तत्संक्रान्तस्वपुत्रधने तत्पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्त एवाधिकारिणो भवन्ति। तत्र रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य स्वपुत्रमारभ्य स्वपितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य भगिन्याः कश्चिदेकोऽपि पुत्रस्तन्मातृमरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा यद्यासीत्तदा तस्याधिकारः जाते[2] च तस्याधिकारे पुनरुत्पत्स्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थाद्रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति। सति च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदौहित्रे तत्पितृव्यपुत्राणामर्थात् रामसुन्दरभट्टाचार्यस्य पुत्राणां प्रश्नपत्रलिखितानां नाधिकारः। यदि च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य स्वपुत्रमारभ्य स्वपितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य भगिन्याः कश्चिदेकोऽपि पुत्रस्तन्मातृमरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा नासीत्तदा तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्यास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूली[3]भूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्द्धने दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः। सति च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदौहित्रे स्वतः तत्पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतस्तत्पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्या नाधिकारः। किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्रा-

---

१. तत्—व्यप०। २. याते—व्यप०। ३. ० मूलि०—व्यप०।

णां वोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीका—दायतत्त्व-दायक्रमसंग्रह-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते मृते पुत्रे[1] तत्सुतमृक्थभागिनम् ।
कुर्व्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

लभेतांशं स्वपित्र्यन्तु पितृव्यात्तस्य वा सुतात्—इति दायतत्त्व-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

यथा पैतामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन्मृते तत्पुत्राणामपि, न तत्र सन्निकर्षविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः। पार्व्वणविधिनापि पिण्डदानेन-द्वयोरपि तदुपकारकत्वाविशेषात्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः ॥—इत्यादितत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥४॥

दृश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः इति। तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुस्सोदरस्तदभावे पितुर्व्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रः—इत्यादि च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥६॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः। दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वमङ्गादङ्गात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकारः इति भावः इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥७॥

---

१. अविभक्तेऽनुजे प्रेते—कास्मृ० ।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीयचतुर्विंशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१ सदर देओयानि आदालतेर रुवकारि इङ्गरेजी सन १८३२ साल तारिक २३ माह फेवेओयारि मोतावक वाङ्गला १२३८ साल १२ माह फाल्गुन रोज वृहस्पतिवार ए आदालतेर हाकिम विचार्ड[१] ओयालपोल साहेवेर वैठके—

महाराजा गोविन्दनाथराय— आपीलाण्ट—

गुलालचन्द्र ओरफे नानका वावु प्रभृति— रेष्पाडण्टान—

आपिलेण्टेर उकिल मुनशी हसन आलि ओ रेष्पानडेण्टानेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ सदासुख पण्डित हाजिर आइलेन। ए मकद्दमा पूर्व्वे कयेक तारिके कथवर्ट थरनेल सिली साहेव हाकिमेर समक्षे रुवकार ओ नालिसेर आरजि इत्यादि प्रावेनसिएल कोटेर कागजात फयसाला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर सओयाल ओ जओवाव पडागिया १८३१ साल १८ माह मे तारिखे कयेक प्रश्नेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डित हइते तलव हइया ओहा दाखिल हओन वादे स्थकित छिल। गतो दिवस आमार वैठके रुवकार ओ नालिषेर आरर्जि इत्यादि कोटेर कागजात फयसाला पर्य्यन्त ओ ए आदालते दाखिल हओ मुजिवात ओ ओहार जवाव पडा गिया दिवावसान प्रयुक्त मुलतवि छिल। अद्य पुनराय ऐ रुवकार हइया ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ मुशम्मात माया कोङरेर सओयाल ओहार उकिल मुनशी दादार

१. रिचार्ड वालपोल—इति साधीयान् पाठः।

बकेसर साक्षाते दृष्टी हइया बोध हइल ये विवादीय स्थानेर प्रकृत-कर्त्ता माया कोङरेर स्वामीर उत्तमचन्द्रलाहार[1] मुतिचन्द्रके आपन पोष्य एक पुत्र विवेचना करिया देओन, ओ कोटेर व्यापार, ओ जमिदारीर कर्म्म सकल निर्व्वहन, ओ ऐ जमिदारि बहालि, ओ ताहार दान विक्रय हइते स्त्री के विमुख राखन कारण, ओसि नियुक्त करिया, ताहार नामे ओसियतनामा लिखिया दिया मृत्यु हय। कियत् कालानन्तर मुतिचन्द्र ओ पुष्यपुत्र विवेचना विना मरे ओ मायाकोङर उत्तमचन्द्रलाहार स्त्री गोलाल चन्द्र रेष्पाडण्टके आपन पोष्यपुत्रताते ग्रहण करे। आपिलाण्ट ताहार पिता मृत उत्तमचन्द्रेर पिता खडर्गसिंहेर बिनामे लाट इयाङ्कवपुरदिगर छय लाट खरिद करा उल्लेखे ऐ लाटसकल दखल पाओन दाविते मायाकोङरेर नामे नालिस करिया, डावरादिगर दुइ लाट मुर्दायालेहार स्थाने लइया, मकर्द्दमा सोलहनामानुजाय निष्पत्य कराइलेक, ओ फयशला जारिते दुइ लाटेर उपर दखल ओ कावेज हइल। तत्पर गोलालचन्द्र रेष्पानडण्ट उत्तमचन्द्रेर पोष्य पुत्रता ओ आपनि उत्तमचन्द्रेर पोष्यपुत्र ओ ताहार स्थानापन्न थाकने सोलह ओ विक्रय विषये मायाकोङरेर अदेमता ऐ जाहाजे इयाकुवपुरदिगर चतुर्द्दश लाट दखल पाओन दाविते आपिलण्ट ओ लाट नारायणपुरग्रामेर खरिददार गोपीचरणवडाल मुद्दइर कवुल दावि ओ उभयेर सोलह सम्वलित दरखास्त गुजराइलेन-ये प्रविनसियान कोटेर हाकिमेर हजुर हइते ताहादिगेर कवुल दावि ओ सोलहनामा, जाहा आपिलाण्ट ओ मुशम्मात मायाकोङरेर मध्ये हइल, ताहा नामञ्जूर; ओ अन्यथा हइया मुद्दयेर हक्के डिगरि ओ आपिलाण्टके ताहार सावेक नालिश जारिकरण कारण अनुमति हइल इति। यथा कागजात् अनुमोदन ओ मकर्द्दमार समस्त वृत्तान्त दृष्टे रेष्पानडेण्टेर पोष्यपुत्रता साक्षीगणेर द्वाराय सार्व्वस्थ, ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यव-

१. सालाहार—व्यप०।

स्था हइते ओ अनुभव हइतेछे-ये उत्तमचन्द्रेर स्त्री मायाकोङर स्वामिर अनुमति थाकुक वा ना थाकुक उत्तमचन्द्रेर वंसेर व्यवहार्य्य जयनि शास्त्रानुजाय पोष्यपुत्र राखन ओ तत्परिवर्त्तन क्षमता राखे। ए कारण आमार समीपे गोलालचन्द रेष्पानडेण्टेर पोष्यपुत्रता ओ जयनि शास्त्रप्रमाण। ताहार सिद्धताते कोन सन्देह नाइ। किवल एइ सन्देह हइतेछे ये पोष्यपुत्र थाकिते मुसम्मात मायाकोङर स्वामीर त्यक्त धन स्वामीर असियतनामा लिखित नियमेर अन्यथाय जयनि शास्त्रानुसारे हस्तान्तरेर क्षमता राखे कि ना; ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित एवारते-ये जयनि शास्त्रानुसारे स्वामीर मृत्युरपर, यदि मृतव्यक्तिर स्त्री पुत्रवति थाके, तथा च ये प्रकार ताहार स्वामीर क्षमता छिल, तदनुरूप स्त्रीर प्रत्येक विषये क्षमता याछे-अपष्टता ओ बोधे सिद्ध आइसे ना, ये ताहार अभिप्राय कि कि स्वामी आपन जीवतावस्थाय ये प्रकार स्थावर विषय मोले किम्वा विक्री अथवा दाने हस्तान्तर कारण[1] क्षमता राखित सेइमत उहार स्त्री स्वामी मरणान्ते पुत्र सन्तान थाकिते क्षमता राखे। अतएव एइ विषय ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने जयनि शास्त्रेर प्रकृतानुमति बोधकरण मनासिव बोध हैया हुकुम हइल ये एइ रुवकारिर नकल व्यवस्था सहित एइ हुकुमे ये व्यवस्थार लिखित एवारतेर[2] अर्थ ओ तात-पर्य्येर विस्तारित, ओ एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर ये मायाकोङर उत्तम चन्द्रेर कायेम मोकाम ओ पोष्यपुत्र गोपालचन्द्र थाकने. ओ उक्त मजमुने उत्तमचन्द्र असियतनामा लिखिया देओने ओ जयनि शास्त्रानुसारे सोलह रुपे दाविर वस्तुर मध्ये घोडा मान्दा ओ डावरा दुइ लाट आपीलाण्ट सावेक मुर्दइके छाडिया देओन क्षमता राखित किना-एक मासेर मध्ये लेखेन—एइ आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय, ओ ए रुवकारिर द्वितीय नकल व्यवस्थार नकल सहित सहर मुरसिदावादेर जज साहेवेर निकट एक मास

१. करण इति साधीयान् पाठः। २. वारतेर—इति साधीयान् पाठः।

मेयादे पृसेष्ट सम्वलित एइ हुकुमे पाठान जाय ये ऐ एवारतेर अर्थ ओ ऐ प्रस्तेर[1] प्रत्युत्तर जति अर्थात् जयनि शास्त्रेर पण्डितेर स्थाने, ये उभयेर सहित सम्पर्क ओ प्रयोजन ना राखे, लेखाइया आदालते प्रेरण करेण इति ।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओयालपोलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयत्रयोविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितैतद्धर्माधिकरणीयव्यवस्थापत्रं च यदेतदब्दीयापरेलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे एवं तत्समर्पितमसीयन्नामाख्यपत्रप्रतिरूपपत्रं यत्तन्मासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितव्यवस्थालिखितस्य जैनशास्त्रानुसारेण पतिमरणानन्तरं पुत्रवत्या अपि पत्न्याः पतिवत्कार्य्यमात्रकरणे स्वाच्छन्द्येनेति अस्यायमर्थः— पुत्रे विद्यमाने पितुर्यादृशयादृशकार्य्यकरणे, अर्थात् स्थावरस्य दानविक्रयसन्धिप्रभृतिकार्य्यकरणे, जैनशास्त्रानुसारेणाधिकारः तथा पतिमरणानन्तरं स्वेच्छाकृतपोष्यपुत्रे[2] विद्यमाने मातुरपि तादृशतादृशकार्य्यकरणे अधिकारः । एवं च सति मायाकोमराख्या प्रत्यर्थिनो गुलालचन्द्रस्य प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रे उत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रत्वेन प्रतिनिधित्वेन च मन्यमानस्य विद्यमानतायामपि उत्तमचन्द्रलिखिते प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितार्थप्रतिपादके चासीयन्नामाख्ये पत्रे सत्यपि जैनशास्त्रानुसारेण . सन्धिरूपेणाभियोगविषयीभूतानां स्थावरद्रव्याणां मध्ये घोडामान्दा डावरेति च भाषायां द्विलाटशब्दप्रतिपाद्यस्थावरस्यैतद्धर्म्माधिकरणस्यावान्तरधर्म्माधिकरणस्य चार्थिने त्यागपूर्वकसमर्पणस्य क्षमतामरक्षदेव । यतः प्रभुसमर्पितासीयन्नामाख्ये पत्रे मतिचन्द्रं प्रत्युत्तमचन्द्रेण लिखितमस्ति—मम नाम रक्षणार्थमेकं बालकं स्वमतसिद्धं पोष्यपुत्रं रक्षित्वा तं शिक्षितं कृत्वा

१. प्रश्न इति साधीयान् पाठः । २. स्वेच्छ०—व्यप० ।

ज्ञानापन्नं तं वाणिज्ये सराजकरस्थावरे चाभिषिक्तं त्वं करिष्यसीति। अनेनोत्तमचन्द्रस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः पोष्यपुत्रग्रहणानुमते स्तत्पत्युरनवगमात् पुनरप्युत्तमचन्द्रेण मतिचन्द्रं प्रति तस्मिन्नेवासीयन्नामाख्ये पत्रे लिखितमस्ति मम स्त्री यदि वाणिज्ये व्यापारमुत्थापयितुमिच्छति, अथ च सराजकरस्थावरमस्मत्स्वत्वास्पदीभूतं भवदभिप्रायं विना कस्मैचिद्ददाति विक्रीणीते वा तन्नास्मत्सम्मतम्, त्वं तत्र प्रतिबन्धकतामास्थाय दानं विक्रयं वा मा कारयेति। अनेन मतिचन्द्रस्यासीशब्दप्रतिपाद्यस्य जीवनावस्थायां तदनुमतिमन्तरेणोत्तमचन्द्रस्य पत्न्या मायाकोमराख्या(या) स्तद्धने दानविक्रयादिक्षमता नास्ति। किन्तूत्तमचन्द्रस्याज्ञानुसारेण मतिचन्द्रकृतस्योत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रस्य विद्यमानतायामपि असी(यत्)-प्रतिपाद्यस्य मतिचन्द्रस्यानुमतौ सत्यां मायाकोमराख्यायास्तद्धने दानविक्रयादिक्षमता असीयन्नमाख्यपत्रानुसारेणाप्यस्त्येव। असीशब्दप्रतिपाद्यस्य मतिचन्द्रस्यासीयन्नामाख्यपत्रलिखितनियमसहितस्य मरणानन्तरं तदनुमतेरसम्भावितत्वेन मायाकोमराख्यायास्तद्धने दानविक्रयादिक्षमतायामपि बाधकाभावः, असीयन्नामाख्ये पत्रे उत्तमचन्द्रस्याज्ञाजातस्यासीशब्दप्रतिपाद्यमतिचन्द्रं प्रत्येव लिखितत्वेनान्यं प्रति अलिखितत्वात्। एवं च सत्येतद्विवादे जैनशास्त्रानुसारेण पतिमरणानन्तरं पत्यनुमतिमन्तरेणापि पोष्यपुत्रग्रहणाधिकारिण्यास्तत्त्यागकरणक्षमतापन्नायाः पतिमरणानन्तरं पतिवत् स्वाच्छन्द्येन कार्य्यमात्राधिकारिण्याः पतिमरणानन्तरं पतिकृतासीयन्नामाख्यपत्रलिखिताज्ञानुसारेणाकृतपोष्यपुत्रस्य पतिकृतस्यासीशब्दप्रतिपाद्यस्य मरणेन निस्सन्देहेन पतित्यक्तसमुदायधनस्वामिन्याश्चोत्तमचन्द्रनाहारस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः अर्थिनोऽभियोगविषयीभूतधनविषयकाभियोगेनाभियुक्ताया भाषायां षडलाटशब्दप्रतिपाद्यान्तर्गतद्विलाटशब्दप्रतिपाद्यस्य पतित्यक्तधनानां मध्ये अत्यल्पस्य त्यागपूर्वकसमर्पणस्यार्थिना सह विवादनिवारणफलकस्यावशिष्टलाटचतुष्टयशब्दप्रतिपाद्यसंरक्षणफलकस्य च क्षमताया निष्प्रत्यूहत्वात्—इति गौतमप्रश्नीयादिजैनशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था। अत्र प्रमाणानि अस्मद्दत्तप्राचीनव्यवस्थालिखितानि सर्व्वाण्येवेति।

एतदब्दीयजूनमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२—रोवकारि मिछिल शदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस पीयेर शाहेबेर वैठके ओयाक्कें तारिख १९ माह आपरेल इं शन १८३२ साल मोताबक ८ वैशाख बाङ्गला सन १२३९ साल रोज बृहस्पतिवार।—

राधाचरणवर्णिक छाएल

छाएल हाजीर आइल। छाएलेर सओयाल इं सन १८३१ सालेर ५ शेतम्बर तारिखेर लिखित। एलाका जाहागिर नगरेर कोर्ट आपोलेर हाकिम केरिकेरापट् साहेबेर हुकुम। जाहाते छाएलेर दावि डिसमिश हइयाछे। ओ ऐ सनेर ७ दिजेम्बर तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम जाहा मोफशीशतरत् सदर आपीलेर दरखास्त नामञ्जूर हय, ताहार एवं अन्य अन्य मरातबेर नाराजीते छाएलेर सओयालेर सामील व्यवस्थाजातेर अनुमोदने ओ आविश्वक मते एइ आदालतेर पण्डीतेर व्यवस्था तलवे सावेक नामञ्जूर हओया सओयालेर छानि तजविजेर प्रार्थनाय एलाका जाहागिर नगरेर कोर्ट आपिलेर दस्तखत ओ मोहरे वाङ्गला एवारतेर चारि केता नकल व्यवस्था ओ सन १८३१ साल ५ शेतम्बर तारिकेर लिखित कोर्ट मजकुरेर एक केता फयछला सम्वलित, जाहा एइ मासेर १२ तारिखे दखिल हइयाछिल, अनुमोदने आइल। हुकुम हइल ये सन १८३१ सालेर ५ शेतम्बर तारिखेर लिखित कोर्ट मजकुरेर फयछला माय नकल व्यवस्था, ये कोर्टेर फयछला ताहार वुनि-

यादे हइयाछे, एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय-जे पण्डित मौसुफ एइ विशयेर जवाव एक सप्ताह मध्ये लिखेन—ये व्यवस्था मजकुर दोरस्त वटे कि ना इति।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसूपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयापरेलमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्र-तिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितजाहाङ्गीरनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्माधिकरणीय-जयपत्रं व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रसहितञ्च यदेतदब्दीयमैमासीयपञ्चमदिनसम्ब-न्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

अर्थिनो मातामही यदि स्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिधनस्य स्वभरणपोष-णार्थं पतिकृतर्णापाकरणार्थं वा पत्युरौर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यावश्यककार्यार्थं वा हस्तान्तरं कृतवती स्यात्तदा प्रभुसमर्पितव्यवस्था शास्त्रसम्मता भवति नोचे दर्थिनोऽप्राप्तव्यवहारतायां हस्तान्तरपत्रे साक्षित्वेन पितृकर्त्तृकतन्नामलिखनेन प्रतिनिधित्वेन पितृकर्त्तृकस्वनामलिखनमात्रेण च शास्त्रसम्मता न भवति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति तस्याश्च वर्त्तनाद्यशक्तावुपरिलिखितावश्यककार्य्यार्थं तत्तत्कार्यो-पयुक्तस्य पतिधनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वात् तद्व्यतिरेकेण हस्तान्तरकरणक्षमताया अशास्त्रीयत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभाग-दायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्था-नुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥१॥

वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतं तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इति दाय-भागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मर्त्तुकामेन वा भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रपन्नापि सा दाप्या धनं यद्याश्रितं स्त्रियाः ॥—इति विवादार्णव-सेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥३॥

रिक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इति तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

एवञ्च भर्त्तुरौर्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतम्—इति दायभाग(पृ० १७३)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभाग-दिग्रन्थधृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयजूनमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सिपीयर साहेवेर वैठके ओयाके तारिक ९ माह माइ इं सन १८३२ साल मोतावक २८ वैशाख बाङ्गला सन १२३९ साल रोज वुधवार ॥

आनन्दमोहनघोष— आपीलाण्ट

मोशम्माद हरिप्रिया— रेस्पाण्डेण्ट

आपिलाण्टेर उकिल सदासुख पण्डित हाजिर आइल । इं सन १८२९ सालेर ६ शेतम्बर तारिखेर लिखित एलाका मुरसिदावादेर प्राविणसियान कोर्टेर फयशलार नाराजी ओजुहात सम्वलित आपीलाण्टेर सओयाल सन हालेर १९ आपरेल

तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम मताबक जाहा कोर्ट मजकुरेर सारटफिकिट साय आपीलाण्टेर सदर आपिलेर सओयाल अनुमोदनानुसारे आपीलाण्टेर खोद किम्बा उकिलेर द्वाराय हाजिर आइशन, ओ ओजुहात दाखिलकरण जन्य आपीलाण्टेर नामे एतलानामा जारिर हुकुम छादेर हइयाछिल। उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति उकिल मजकुरेर मेहन्यतआनार वावत मवलगे ३२५९ टाकार एक केता रशीद सम्वलित, जाहा ऐ माइ माहार २ तारिखे दाखिल हइयाछिल, सन हालेर १९ आपरेलेर अनुमोदन हओया माय शारटफिकिट ओ गयरह दरपेश हइल। तत्परे आपीलाण्टेर उकिल एक केता हेवानामा वाङ्गला एवारतेर दुइ टाका किम्मतेर फिरिस्ती सम्वलित दाखिल करिल। दरियाप्त हइल ये आपीलाण्ट एइ मोकर्दमार जामिनि खरचा कालीकान्तराय जमिनदारेर नामे कोर्टे दाखिल करियाछे। एवं ताहा तथाकार नाजीरेर तहकीकाते मातवर आसियाछे। ए प्रयुक्त प्रकाष ये आपीलाण्ट आपीलेर सामुदाइक सराएत वजाय आनियाछे, एवं एइ मोकर्दमा प्रीविकणसीयान कोर्टेर प्रथम तजविज हओया सदर आपीलेर जोग्य। एजन्य हुकुम हइल ये एइ मोकर्दमार शदर आपील मञ्जूर एवं लम्वले दाखिल हय। तत् परे कोर्टेर फयछला ओ मौजेवात ओ आशल हेवानामा पडा गेल। हुकुम हइल ये नकल फयछला ओजुहात सम्वलित ओ हेवानामा एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये पण्डित मौछफ फयछलार लिखित हेवानामा मजकुरेर विषय सकलेर अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव लिखेन जे हेवानामा मजकुरेर मोताबक मुदंइ या रेष्पाडण्ट आपन स्वामीर हिस्यार हकदार हय कि, किम्वा नावालगी हालते उहार स्वामीर मातार साक्षातकार उहार स्वामीर मृतु हओन सरवे आपीलाण्टेर ओजुहातेर लिखित ओजरातेर अनुमोदने लोप हइयाछे

किना इति । पण्डितेर जओयाव पौछार पर इङ्गरेजी सन १८३१ सालेर ९ आइनेर २ दोशरा दफार मोताबक मोनछेब हुकुम छादेर हइबेक इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिस्पीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयमैमासीयनवमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितं मुरशीदावादाख्यनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयज-यपत्रप्रतिरूपपत्रमुजुहातसंज्ञकनिवेदनपत्रसहितं दानपत्रञ्च यत्तन्मासीयैकविंश-तितमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-नुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितदानपत्रानुसारेणार्थिनी अर्थादेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनी स्वपतियोग्यांशस्याधिकारिणी भवति । मातरि जीवन्त्यामप्राप्तव्यवहारता-वस्थायां चैतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनी पतिमरणेनैतद्धर्म्माधिकरणाध्युजुहात-संज्ञकनिवेदनपत्रलिखितवृत्तान्तदृष्ट्या चार्थिन्याः स्वत्वलोपो भवितुं न शक्नोति, यतो दानपत्रे दात्रा स्वपुत्रौ प्रति लिखितमस्ति स्वस्वत्वास्पदीभूत-समुदायधनं पत्रजातसहितं स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण प्रसन्नतया स्वाभाविक-बुद्ध्या रोगरहितेन स्वस्वत्वत्यागपूर्व्वकं दानं कृत्वा दानपत्रं लिखित्वा युवाभ्यां मया दत्तम्, युवां सराजकरस्थावरास्थावरात्मकमत्स्वोपार्जित-समुदायधनमायत्तीकृत्य तुल्यांशित्वेन भोगं कुरुताम्, तत्र मया सह ममान्यै-श्चोत्तराधिकारिभिः सह वा किञ्चित् सम्बन्धो नास्तीति । अनेनैव दानस्य सर्व्वतोभावेन शास्त्रानुसारेण निष्पन्नत्वेनैतादृशदानोत्तरक्षणमेव दानग्रही-त्रोरानन्दमोहनघोषश्याममोहनघोषाख्ययोर्दातृपुत्रयोर्दानकृतधने समस्वा-मित्वस्योत्पादेन तयोर्दानग्रहीत्रोर्म्मध्ये श्याममोहनघोषस्य मरणेन तद्यो-ग्यांशे तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारः । तदुत्तराधिकारिणां मध्ये तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या अर्थादेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिन्याः प्रधाना-धिकारित्वात् । मृते पितरि जीवन्त्यां च मातर्य्यप्राप्तव्यवहारतावस्थायाञ्च कस्यचिन्मरणेन तदुत्तराधिकारिणा तत्त्यक्तधने स्वत्वलोपो भवति इत्येत-

द्विधायकशास्त्राभावाच्च। यद्यपि दानपत्रे स्वपुत्रौ प्रति लिखितमस्ति दात्रा युवामप्राप्तव्यवहारौ इदानीं सराजकरस्थावरास्थावरधने आयत्तत्वं सम्पाद्य रक्षणावेक्षणकरणस्य योग्यौ न जातौ, अतः कारणान्मम पत्नी युवयोर्माता श्रीमतीसरस्वतीदासी सराजकरस्थावरास्थावरादिधनस्य रक्षणावेक्षणादिकरणपूर्व्वकं युवयोः प्रतिपालनार्थं मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यकार्य्ये नियुक्ता मया। युवयोः प्राप्तव्यवहारतापर्य्यन्तं सराजकरस्थावरे मोक्तारीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन सा मम पत्नी स्वनाम निवेश्य राजकरं दत्त्वा तदुपस्वत्वे जङ्गमधने च मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यं कार्य्यं कृत्वा युवयोः प्रतिपालनं संरक्षणावेक्षणादितरवीयतशब्दप्रतिपाद्यं कार्य्यं करिष्यति। युवां प्राप्तव्यवहारत्वेन निष्पन्नौ सराजकरस्थावरसमुदाये स्वस्वनाम निवेश्यैवं जङ्गमधने चायत्तत्वं संपाद्य पुत्रपौत्रादिक्रमेण परमसुखेन भोगं कुरुताम्, दानविक्रययोः स्वत्वाधिकारो युवयोः। मया सह तत्र कश्चित् सम्बन्धो नास्तीति लिखनेन मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यकार्य्यनियुक्तत्वेन ज्ञातायामेतद्धर्म्माधिकरणार्थ्युंजुडातसंज्ञकनिवेदनपत्रेण प्रभुसमर्पितजयपत्रलिखितैतद्धर्म्माधिकरणार्थ्युत्तरपत्रेण चासीशब्दप्रतिपाद्यकार्य्यनियुक्तत्वेन च ज्ञातायां मातरि जीवन्त्यां मृतस्याप्राप्तव्यवहारपुत्रस्य तादृशोपरिलिखितप्रकारकदानानुसारेण मृते पितरि जीवतः पुत्रत्वेन चोत्पन्नस्वत्वस्योत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्पत्तेरप्रतिबन्धकत्वात्तल्लिखनस्य इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागशुद्धितत्त्वदायतत्त्वदायभागटीकाविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्— इति मनुवचनम् ॥२॥

वस्तुतस्तु प्रदानं स्वाम्यकारणमिति मनूक्तेर्दानमात्रात् सम्प्रदानस्य तद्विषयकज्ञानाभावदशायामपि स्वत्वमुत्पद्यते पितुः स्वत्वोपरमात्तद्धने गर्भस्थस्येव—इति शुद्धितत्त्वग्रन्थलिखनम् ॥३॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥४॥

पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण त्यागशक्तस्य दाधातोः—इत्यादि दायभागटीकालिखनम् ॥५॥

प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति दायभागटीका-लिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयजुलाइमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३११८ नं—

४—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकाता तारिख २१ जुन सन १८३२ साल मोतावके वाङ्गला ९ आषाढ सन १२३९ साल दिवस वृहस्पतिवार श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर वैठके ॥

पञ्चमलालसिंह ओगयरह आपीलाण्टान्
शिवरामसिंह रेष्पाडेण्ट

आपीलाण्टानेर उकिल मुनसि होसेन आलि ओ रेष्पाडेण्टर उकिल मुनसि गोलाम बतुल ओ सदासुख पण्डित ओ इन्द्र-कुमारिर उकिल मुनशि वु आलि हाजिर हइल। तवतिव मते एइ मकर्द्दमा गतो माइ मासेर ३१ तारिखे ओ गतो दिवसे आमार वैठके उपस्थित हइया नालिसेर आरजि प्रभृति प्रविन्-सीयान कोर्टेर कागच पत्रादि एवं तथाकार फयेसला पर्य्यन्त पडा हइया दिवसावसान प्रयुक्त स्थकित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइया ए आदालतेर दाखिल हओया अजुहात ओ जओयाव आर इन्द्रकुमारिर दरखास्त प्रभृति कागज पत्र पडागेल। तत्परे रेष्पाडेण्टर उकिलगण सन १८१४ सालेर दिजम्वर मासेर १६ तारिखेर लिखित ए आदालतेर डिगरि

एक केता ओ सन १८१३ सालेर आगष्ट मासेर १४ तारिखेर कालेकृरिर परओयानार नकल २ टाका दामेर फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करिलेक, पडागेल। ताहार पर उभयेर उकिलदिगके जिज्ञासा गेल ये सन १२१८ साले जयरामसिंहेर मृत्यु हय, तखन ताहार कि वयेस छिल। रेष्पाडेण्टर उकिलगण जओयाव दिल ये उक्त जयरामेर वयेस २५ वत्सर, आर आपिलाण्टगणेर उकिल आर आपिलाण्ट पञ्चमलालसिंह, (ये) हजुरे हाजिर छिल, जओयाव दिलेक ये ४०।४५ वत्सर वयक्रमे मृत्यु हय। पुनुराय उभयेर उकिलदिगके जिज्ञासा गेल जे एक्षणे रेष्पाडेण्टर वयेस कतो वतसर। रेष्पाडेण्टर उकिलगण जओयाव दिलेक ये रेष्पाडेण्टर वयेस एदयने आन्दाजि ४२ वत्सर ओ आपीलाण्ट जओयाव दिल ये प्राय ५० वत्सर हइवेक। पुनराय आपिलाण्टके जिज्ञासा गेल ये जयरामसिंह हइते रेष्पाडेण्ट कतो वत्सरेर छोट हइवेक। जओयाव दिल ये ५।६ वत्सरेर इति। कागज पत्रेर द्वाराय बोध हइल ये रेष्पाडेण्ट विरधीय वस्तु दखल पाओनेर दुइ प्रकार दावि राखे :—प्रथम एइये खोसालसिंहेर सूपार्जित विरधीय वस्तु जयरामसिंहेर नामे लेखाजाय। खोसालसिंह ताहार कर्त्ता ओ दखलिकार छिल। खोसालसिंहेर मृत्युर पर जयरामसिंहेर सहदर भाइ शिवरामसिंह रेष्पाडेण्टर दखले आछे, द्वितीय एइये यद्यपि विरधीय वस्तु जयरामसिंहेर त्यक्त हय, तवे जयरामसिंहेर मृत्युर पर आर ताहार वनिता मानकुञ्जारि, ये ताहार एक कन्या, ऐ मानकुञ्जारिर ओ खोसालसिंहेर सद्याते, ओ जयरामसिंहेर द्वितीय कन्या खोसालसिंहेर साद्याते पुत्र सन्तान ना राखिया मृत्यु हय, शिवरामसिंहके अर्शे। एमते ए सकर्दसाय खोसालसिंहेर जयरामसिंह ओ रेष्पाडेण्डके हेवानामा लिखिया देओयार प्रति दृष्टि ना करिया एइ कथा जिज्ञासा करा ए आदालतेर पण्डितेर निकट उचित हइल-ये जयरामसिंहेर त्यक्त

वस्तु मानकुङारिर मृत्युर पर रेष्पाडेण्डर पिता खोसालसिंह ओ रेष्पाडेण्टके अथवा दयामयीर कन्या इन्द्रकुङारिके, ये आपन माता मानकुङारिर साद्याते मृत्यु हय, ताहाके अर्शिवेक। आर यदि स्यात् मसम्मात मानकुङारिर लिखिया देओया हेवानामा आदालतेर प्रासस्तानुसारे ताहा प्रमाण ना हओन प्रयुक्त ग्राह्य हय ना, किन्तु मृत दयामयीर स्वामी आपीलाण्ट पञ्चमलालसिंहेर ओजर मिटाइवार कारण, एमत हेवानामा यथार्थेर निशये शास्त्रेर आज्ञा मते जिज्ञासा करा आविश्वक हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाब रोवकारि सोपर्द हओनेर तारिख हइते दुइ दिवसेर मध्ये लेखेन-ए आदालतेर पण्डितेर हाओला कराजाय।

प्रथम सओयाल—एइये विवादि ओ जमिदारिर कर्त्ता जयरामसिंह एक वनिता मानकुमारी ओ दुइ कन्या दयामयी ओ पार्व्वती ओ पिता खोसालसिंह ओ एक भाइ रेष्पाडेण्ट शिवरामसिंह (के) राखिया मृत्यु हय। तत्परे दयामयी एक कन्या इन्द्रकुङारि नामे राखिया मृत्यु हय। ओ दयामयीर मृत्युर पर मानकुङारि आर मानकुङारिर मृत्युर पर पार्व्वती निःसन्ताना मृत्यु हय, ओ पार्व्वतीर पर खोसालसिंहेर मृत्यु हय। अतएव उक्त जमिदारि वाङ्गला मुलकेर चलित शास्त्रानुसारे शिवरामसिंहके अथवा दयामयीर कन्या इन्द्रकुमारि, ये मानकुङारिर साद्याते मरियाछे, ताहार कन्या इन्द्रकुमारिके पौछे। आर यदि स्यात् मसुम्मात पार्व्वती एक कन्या राखिया मरिया थाके, से कन्यार ओ खोसालसिंहेर मृत्युर पर मृत्यु हय, इहाते विशेषत किछु प्रभेद आछे कि ना।

२—सओयाल—एइये खोसालसिंहेर ओ शिवरामसिंहेर वर्त्तमाने जयरामसिंहेर त्यक्त वस्तुर दान ओ हेवार अधिकार मुसम्मात मानकुङारिके आछे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डश्रोआलपोलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजूनमासीयैकविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयनवमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य स्वामी जयरामसिंहो यदि मानकुमारीनाम्नीं पत्नीमेकां दयामयीपार्व्वतीनाम्न्यौ द्वे कन्ये खोसालसिंहनामानं पितरं भ्रातरं चैकं शिवरामसिंहनामानमेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनं संरक्ष्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं दयामयीनाम्नी जयरामसिंहस्य कन्यापीन्द्रकुमारीनाम्नीं कन्यामेकां संरक्ष्य मृता स्यात्, एवं दयामयीमरणानन्तरं मानकुमारी मानकुम(ा)रीमरणानन्तरं निःसन्ताना पार्व्वती मृता स्यात्, एवं पार्व्वतीमरणानन्तरं खोसालसिंहोऽपि मृतः स्यात् तदा जयरामसिंहत्यक्तसराजकरस्थावरे तद्भ्रातुः शिवरामसिंहस्याधिकारः, एवं यदि पार्व्वती एकां कन्यां संरक्ष्य मृता स्यात् सापि कन्या खोसालसिंहस्य मरणानन्तरं मृता स्यात्तदात्र शास्त्रानुज्ञायाः कश्चिद् विशेषो नास्ती(ति)।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

खोसालसिंहस्य शिवरामसिंहस्य च विद्यमानतायां जयरामसिंहस्य पत्न्या मानकुमार्य्याः स्वसंक्रान्तपतित्यक्तधनानाम्मध्ये पत्युः स्वर्गार्थं किञ्चिद्धनस्यापन्निवारणार्थं तदुपयुक्तस्य च दानाधिकारितास्ति, तद्व्यतिरेकेण स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च दानाधिकारितां नास्ति-इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायनिर्णयदायरहस्यनारदस्मृतिव्यवहारतत्त्वव्यवस्थार्णवविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रधने पौत्रप्रपौत्राभावे साध्व्याः पत्न्या अधिकारस्तत्रापि भर्त्तृ-स्वर्गमुद्दिश्य दाने यथाकथञ्चिच्छरीररक्षार्थं भक्षणे चाधिकारः। एतदतिरिक्तयथेष्टाचरणे स्थावरविक्रयादौ च नाधिकारः—इति व्यवस्थार्णव-ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।
विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति दायरहस्यनारदस्मृत्यादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति दायभागादि-ग्रन्थधृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥३॥

एतदब्दीयजुलाइमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

५—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकाता तारिख १९ जुन सन १८३२ साल मोताबके बाङ्ला तारिख ७ आषाढ १२३९ साल दिवस मङ्गलवार श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर वैठके—

मृत दुर्गादासेर स्त्री मसम्मात ब्रह्ममयिदेव्या साएला—

गतो माइ मासेर १७ तारिखेर लिखित सहर कलिकातार हाओयालि जेलार एक केता रिटरनेर सम्वलित तथाकार रोवकारि एक केता ओ असियतनामा पौछिवाय। अद्य साएलेर दरखास्त ओ ईशानचन्द्र ओ गयरहर दरखास्त ओ हरिप्रियार उकिल सदासुखपण्डित ओ राजचन्द्रेर उकिल मुनसि होसन आलिर हाजिरिते पडागेल। तत्परे राजचन्द्रेर उकिल सादा

कागजे वाजे पण्डितेर एक केता व्यवस्था गोजराइज, पडागेल। वोध हइलो ये त्यक्त वस्तुर कर्त्ता गकुलचन्द्रघोसालेर दुइ वनिता छिल। ताहार वड तारिणी, छोट राजेश्वरी। तारिणीर गर्भे दुइ पुत्र, हरिनारायण ओ लक्ष्मीनारायण, ओ एक कन्या आनन्दमयी, आर राजेश्वरीर गर्भे दुइ पुत्र रामनारायण ओ गङ्गानारायण, ओ तीनि कन्या कुङारिदेव्या ओ गङ्गादेव्या ओ दयामयि। मसम्मात तारिणी सन ११८० साले, आर हरि-नारायण सन ११९७ साले आपन स्त्री मसम्मात पार्व्वतीके राखिया, ओ लक्ष्मीनारायण सन १२०४ साले आपन स्त्री मसम्मात हेमलताके राखिया, ओ रामनारायण सन १२०१ साले आपन स्त्री मसम्मात हरिप्रियाके राखिया, ओ गङ्गा-नारायण अप्राप्त वयेसे, ओ अविभाहे, ओ दयामयि निः-सन्ताना मृत्यु हइल। हेमलतार दौहित्र नवचन्द्रचाटुर्य्ये लक्ष्मीनारायणेर हिस्यार पर ओ हरिनारायणेर स्त्री पार्व्वतीर मृत्युर पर गोकुलचन्द्रेर दौहित्रगण आनन्दमयीर पुत्र ईशान-चन्द्र प्रभृति, ओ गङ्गादेव्यार पुत्र दुर्गादास हरिनारायणेर हिस्यार पर, ओ हरिप्रिया रामनारायणेर हिस्यार पर दखलि-कार आछेन। आर गङ्गानारायणेर हिस्या ऊर्द्ध्वगामि हइया राजेश्वरीर दखले हइल। एक्षणे राजेश्वरी ओ कन्या कुङारि-देव्यार साक्ष्याते रामनारायणेर स्त्री हरिप्रियार साक्ष्याते, ओ गङ्गादेव्यार पुत्र मृत दुर्गादासेर स्त्री ब्रह्ममयी, ये सन्तानादी किछु राखे ना, ताहार साक्ष्याते, ओ आनन्दमयीर पुत्रगण ईशानचन्द्रदिगरेर साक्ष्याते मृत्यु हइयाछे। ये हेतु चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे उत्तराधिकारि प्रकारे उक्त व्यक्तिगणेर सत्वे शास्त्रेर आज्ञा ज्ञातो हओन उचित हइल, ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये एइ विषयेर जओयाव, ये उक्त व्यक्तिगणेर मध्ये गङ्गानारायणेर त्यक्त वस्तु, याहा ऊर्द्ध्वगामि हइया ताहार माता मसम्मात राजेश्व-

रीते अर्शियाछे, उत्तराधिकारि ओ सत्वाधिकारि के वटे, आर ॅ गोकुलचन्द्रेर ओ मसम्मात राजेश्वरिर पार्व्वणेर श्राद्ध ओ पिण्डदान करणे काहार क्षमता आछे, सप्ताहेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजूनमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयनवमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य[1] गङ्गानारायणत्यक्तधनस्योत्तराधिकारित्वेन तन्मातृराजेश्वरीसंक्रान्तस्याधिकारिणस्तद्विचारपत्रलिखितानां मध्ये ईशानचन्द्रप्रभृतयस्तत्पितृदौहित्रा एव भवन्ति । एवं विवादास्पदीभूतधनाधिकारप्रयोजकगोकुलचन्द्रसम्प्रदानकपार्व्वणश्राद्धपिण्डदानाधिकारितापीशानचन्द्रप्रभृतीनां तद्दौहित्राणामेवास्ति । राजेश्वर्य्याः पृथक्पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानाधिकारिता तद्विचारपत्रलिखितानां मध्ये कस्यापि नास्ति, उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तधनायाः स्त्रिया मरणानन्तरं तद्धनोत्तराधिकार्य्यधिकारप्रयोजकस्त्रीसम्प्रदानकपृथक्पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानस्याभावात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहदायनिर्णयदायरहस्यशुद्धितत्त्वश्राद्धतत्त्वव्यवस्थार्णवविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते—इति मनुवचनम् ॥ २ ॥

न योषिद्भ्यः पृथगद्द्यादवसानदिनादृते—इति श्राद्धतत्त्वादिग्रन्थधृतमुनिवचनं चेति ॥ ३ ॥

१—भृतस्य—व्यप० ।

एतदब्दीयजुलाईमासीयैकविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्नपत्र—

६—यद्यपि कोनो व्यक्तिर सन्तान सन्तति ना थाकाय आपन परकालेर निमित्तक अन्तिमकाले दुइ 'भग्नि ओ भागिना थाकिते ओ आपन पैतृक समुदय वस्तु आपन गुरुके वाचनिक दान करे, आर ऐ व्यक्तिर मृत्युर परे ताहार अविरा स्त्री स्वामीर अनुमतिक्रमे ऐ स्वामीर मृत्युर ११ एगार वत्सर गते दानपत्र लिखिया देय—ए प्रकार दान शास्त्र सम्मत सिद्ध वटे कि ना, आर ऐ मृत व्यक्तिर वस्तुते भग्निरा उत्तराधिकारिणी ओ हकदार हइते पारे कि ना, एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर यथाशास्त्र दानपत्र दृष्ट करिया लिखिवेन—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं दानपत्रञ्च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि केनचिद् व्यक्तिविशेषेण सन्तानाभावेन स्वकीयपरकालार्थं स्वावसानसमये विद्यमानयोर्द्वयोर्भगिन्योर्विद्यमाने च भागिनेये स्वपैतृकसमुदायधनं स्वगुरवे वाचा दत्तं स्यादेवं तस्यैव निःसन्तानव्यक्तिविशेषस्य मरणानन्तरं तस्यावीरया पत्न्या स्वपत्यनुमत्यनुसारेण स्वपतिमरणदिवसादारभ्यैकादशसंवत्सरे गते सति दानपत्रं लिखित्वा दत्तं स्यात्तदैतादृशदानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, स्वाम्यनुमत्या अस्वामिकृतस्यापि दानादेः सम्प्रदानादिस्वत्वोत्पत्तिहेतुभूतस्य सिद्धेः शास्त्रीयत्वेन धनस्वामिपत्न्यनुमत्यानपत्यपतिमरणानन्तरं

प्रधानोत्तराधिकार्य्यवीरापत्नीलिखितदानपत्रप्रमाणस्य पतिकृतधर्मार्थदानस्य सिद्धौ बाधकसामान्याभावात्, धर्मार्थदानं यदि केनचित् स्वस्थेनार्त्तेन वा कृतं श्रावितं वा, अदत्त्वैव मृतश्चेत्तथापि तद्धनं तदुत्तराधिकारिणो राज्ञा-दापनीया इति विशेषतो लिखितत्वाच्च। एवं दानसिद्धौ सत्यां तस्यैव मृतव्यक्तिविशेषस्य भगिन्यस्तद्धने उत्तराधिकारिण्यो भवितुं न शक्नुवन्ति, तद्दानोत्तरक्षणमेव धनिनो दातुस्तद्धने स्वत्वविच्छेदेन सम्प्रदानस्य स्वत्वो-त्पादेन च धनिन उत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्पत्तेरसम्भवात्—इति वङ्गदेशच-लितमनुस्मृतियाज्ञवल्क्यस्मृतिदायभागदायभागटीकादायतत्त्वशुद्धितत्त्वदाय-क्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।

कुर्य्युर्य्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥—इति दायभागादिग्रन्थ-धृतनारदवचनम्॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम्॥२॥

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं श्रावितं धर्मकारणात्।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः॥—इति विवादभङ्गार्ण-वादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम्॥३॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोपि सिद्ध्यति व्यवहारस्तथा—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम्॥४॥

प्रमाणं लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्त्तितम्—इति याज्ञवल्क्य-स्मृत्यादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥५॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम्॥६॥

वस्तुतस्तु प्रदानं स्वाम्यकारणमितिमनूक्तेर्द्दानमात्रात् सम्प्रदा-नस्य तद्विषयकज्ञानाभावदशायामपि स्वत्वमुत्पद्यते पितुः स्वत्वोपरमा-त्तद्धने गर्भस्थस्येव—इति शुद्धितत्त्वग्रन्थलिखनम्॥७॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम्॥८॥

पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण त्यागशब्दस्य दाधातोः—इत्यादि दायभागटीकालिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयजुलाइमासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७—सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर निकट सओयाल । ३ आगस्त १८३२ साल ।

१—यद्यपि स्यात् कोन ब्राह्मण जाति उदासीन अर्थात् वैरागी संसारत्यागी हय, विग्रहठाकुर स्थापन करिया थाके, ओ आपन उदासीन अर्थात् संसारत्यागी वैरागी शिष्यगण वर्त्तमान थाकिते, ओ आपन समुदय वस्तु रजपुत जाति एक व्यक्ति, ये स्त्री पुत्र राखे, ओ संसारि हय, ओ ऐ उदासीनेर शिष्य हय, ताहाके हेवा अर्थात् दानकरे । एमत दान शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना ।—

२—स्थावरास्थावर वस्तुर विषये खयरात् अर्थात् उदासीन व्यक्तिर दान संसारि कोन नीच जातीर हस्ते शास्त्रानुसारे सिद्ध-वटे कि ना ?—

३—कोन उदासीन वैरागी, अर्थात् संसारत्यागी हइया विग्रह स्थापन करिया आखाडाधारी हइया थाके, ओ उदासीन संसारत्यागी चेला, अर्थात् शिष्यगण थाकनेओ यदि आपन स्थावरास्थावर समस्त विषय रजपूत जाति व्यक्तिके, ये से संसारि ओ स्त्री पुत्र राखे, एवं ऐ उदाशीनेर शिष्य हय, एमते ताहाके हेवा अर्थात् दानकरे, तवे ताहा शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना ।—

४—यदि कोन व्यक्ति सक्त पीडित हइया सुन्दर ज्ञान चैतन्य

ना थाके एमत समये आपन सम्यक स्थावरास्थावर वस्तु अन्य-कोन व्यक्तिके हेवा अर्थात् दान करे ताहा शास्त्र सिद्ध वटे कि ना ?-

५—वैरागी उदासीन अर्थात् संसारत्यागी ओ व्रजभूमि निवाशी ओ अवश्य ब्राह्मण जाति हइवेक। ओ आखाडाते विग्रह स्थापन थाके कोन रजपूत, जाति ये से स्त्री पुत्र राखे, एवं संसारि हय, से व्यक्ति हइते शास्त्रानुसारे विग्रहठाकुरेर पूजा सेवा हइते पारे कि ना ?—

६—रजपूतजाति विग्रहठाकुर स्पर्श ओ पूजा करिते पारे कि ना ?—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीयतृतीयदिनलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचिद् ब्राह्मणजातीयेनोदासीनेनार्थाद्वैराग्यधर्म्माचरणेन संसारत्यागिना देवप्रतिमां संस्थाप्योदासीनेष्वर्थात् संसारत्यागिषु वैरागिषु स्वकीयशिष्येषु विद्यमानेष्वपि स्वस्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनं रजपूतजातीयायै कस्मै कस्मैचित् स्त्रीपुत्रवते संसारिणे स्वकीयशिष्याय च दत्तं स्यात्तदैतादृशदानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्य्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै—इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

स्थावरास्थावरधनस्वाम्युदासीनव्यक्तिविशेषकर्तृकसंसारिनीचजातिसम्प्रदानकदानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति शास्त्रे नीचजातिसम्प्रदानकदानस्य निषेधाभावात्—इति तृतीयप्रश्नस्योत्तरमपि प्रथमप्रश्नोत्तरेणैव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति—

अत्र प्रमाणानि प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि त्रीण्येवेति—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचिदतिपीडितेन सम्यग्ज्ञानचैतन्याभावदशायां स्वस्वत्वास्पदीभूतसमस्तस्थावरास्थावरधनमन्यस्मै कस्मैचिद्दत्तं स्यात्तत्र तद्दानं यदि धर्मार्थं कृतं स्यात्तदा सिद्ध्यति, तद्व्यतिरेकेण शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं श्रावितं धर्मकारणात् ॥

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

अदत्तं तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः—इत्यादि विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः इत्यत्र *भयाद्याः पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः*—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

कश्चिद्व्रजभूमिनिवासी ब्राह्मणजातीयो वैराग्यधर्माचरणेनोदासीनो भवति अर्थात् संसारत्यागी भवति । तस्याखाडासंज्ञकस्थाने देवप्रतिमायाः स्थापनं भवति । केनचित्संसारिणा स्त्रीपुत्रवता रजपूतजातीयेन शास्त्रानुसारेण देवप्रतिमायाः (सेवा पूजा च भवितुं न शक्नोति), ब्राह्मणद्वारा देवप्रतिमायाः पूजा सेवा च भवितुं शक्नोतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च पृथिवीपते ।

स्वधर्मतत्परो विष्णुमाराधयति नान्यथा ॥—इति विष्णुपुराणवचनम् ॥१॥

सर्व्ववर्णैस्तु संपूज्याः प्रतिमाः सर्व्वदेवताः—इति वराहपुराण-वचनम् ॥२॥

स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च जनेश्वर ।
स्पर्शने नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शङ्करस्य च—इति स्कन्दपुराण-वचनम् ॥३॥

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

रजपूतजातीयेन देवप्रतिमास्पर्शः कर्त्तुं न शक्यते । देवप्रतिमापूजा तु स्वयं कर्त्तुं न शक्यते । किन्तु ब्राह्मणद्वारा पूजां कारयितुं[1] शक्यते—इति मन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि पञ्चमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि त्रीण्येवेति ।

एतदब्दीयागस्तिमासीयषोडशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३२१८ नं०

८—रोवकारि मिछिल सदर देओयाणि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस-पीयेर साहेबेर बैठके। ओयाक्कै तारिख ३० जुलाइ इङ्गरेजी सन १८३२ साल मोतावक वाङ्गला सन १२३९ साल १६ श्रावण रोज सोमवार ।—

पञ्चमलालसिंह ओ गन्धर्व्वलाल	आपीलाण्टान
शिवरामसिंह	रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टानेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ रेष्पाडण्टेर उकिलान् सदासुख पण्डित ओ मुनशी गोलाम वतुल, इन्दर-

---

[1] पूजा कर्तुम्—व्यप.

कोङारिर उकिल मुनशी वु आलि हाजिर आइल। एइ मोकद्दमा एइ मासेर २३।२४ तारिखे आमार बैठके दरपेष, आर तारिख मजकुराथेर रोवकारिर लिखित मत प्रथम आदालतेर कागजात पडा हइया, मुलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार आपीलेर मौजेवात ओ ताहार जओयाव एवं तत् समभिव्यारि अन्य २ कागजात एइ आदालतेर दाखिल हओया दुइ मोकद्दमार वावत अर्थात् एइ लम्वर ओ ३२२४ लम्वर, जाहाते एइ मोकद्दमा रेष्पाडण्ट आपीलाण्ट ओ एइ मोकद्दमार आपीलाण्टान् रेष्पाडण्टान् आछे, एइ मासेर १८ तारिखेर रोवकारिर लिखित एइ आदालतेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपुल साहेवेर राय सम्वलित अनुमोदने आइल। ये हेतुक एइ मोकद्दमार आपीलाण्टानेर ओजरात् निष्पत्येर जन्य आमार निकट एइ आदालतेर पण्डितेर पर छओयाल करा उचित हइल, एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल निचेर तफशोलेर लिखित छओयाल सम्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये ऐ पण्डित ताहार विस्तारित जओयाव लिखेन। यद्यपि स्यात् खोसालसिंह परिवर्त्तीय दान, ये मत आपीलाण्टान् जाहेर करितेछे, ताहा वाङ्गला सन १२१० साले आपन पुत्रगण जयराम ओ शिवराम दिगेर नामे लिखिया दिया थाके, आर तदनुजाइ जयराम आपन मृत्यु समय वाङ्गला सन १२१८ साल पर्य्यन्त हेवार वस्तुर पर दखिलकार थाके, एवं तस्य स्त्री मानकोङारि ताहार मृत्युर पर ऐ वस्तुते उत्तराधिकारि सुरते दखिलकार हय। एमते मानकोङारिर क्षमता स्वामीर वस्तु हस्तान्तर करणेर विशये पूर्व्व व्यवस्थाते ये प्रकार लेखा गियाछे ताहार किछु परिवर्त्त ओ सुधरण हइते पारे कि ना इति॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजुलाइमासीयत्रिंशत्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

पत्रं यदेतदब्दीयागस्तिमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यद्यपि खोसालसिंहेन वङ्गालाख्यदशाधिकद्वादशशताब्दे जयराम-शिवरामाख्यस्वपुत्रद्वयसम्प्रदानकमेतद्धर्म्माधिकरणार्थिभिर्निर्द्दिष्टं विनिमय-दानं कृतं स्यात्तदनुसारेण जयरामः स्वजीवनपर्य्यन्तमर्थाद्वङ्गालाख्याष्टादशा-धिकद्वादशशताब्दपर्य्यन्तं दानकृतधने आयत्तत्वं सम्पादितवान् स्यादेवं तस्य पत्नी मानकुमारी स्वपतिमरणानन्तरं पतित्यक्तधने उत्तराधिकारित्वेना-यत्तत्वं सम्पादितवती स्यात्तदा मानकुमार्य्याः पतित्यक्तधनस्य हस्तान्तर-करणक्षमताविषये पूर्वव्यवस्थायां यथा लिखितमस्ति, तस्य किञ्चिदपि परावर्त्तनमन्यथा च न भविष्यति, यतो मानकुमार्य्याः पतित्यक्तधनस्य हस्ता-न्तरकरणक्षमताविषये पूर्वव्यवस्थायां यथा लिखितं तत्रैतत्प्रश्नलिखितवृत्ता-न्ते सत्यपि शास्त्रानुसारेण कश्चिद्विशेषो नास्ति-इति वङ्गदेशचलितदाय-भागदायतत्त्वदायभागटीकादायनिर्णयदायरहस्यनारदस्मृतिव्यवहारतत्त्वव्यव-स्थार्णवविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था। अत्र प्र-माणान्येतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तपूर्व्वव्यवस्थालिखितानि सर्वाण्येवेति॥-

एतदब्दीयागस्तिमासीयसप्तविंशतितमदिनसम्बन्धि सोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति।—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

९—गेत्रकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस पीयेर साहेवेर वैठके, ओयाक्कै तारिख २७ माह जून इ० सन १८३२ साल, मोतावक वाङ्गला १५ आषाढ सन १२३९ साल रोज वुधवार ॥—

दुर्ज्जनसिंह ओ अर्ज्जुनसिंह— आपीलाण्टान्
राउत गिरिधरसिंह ओ घनस्यामसिंह—
ओ वन्दरसिंह— रेष्पाडण्टान्

आपीलाण्टानेर उकिलान मुनशी होसन आलि ओ सदासुख पण्डित हाजिर आइल। जेला कानपुरेर मोतालक उभयेर मौरुशी वाइष देहार मध्ये मौजे वाउतपुर ओ गयरह एगारो मौजे हिस्या करिया पाओनेर मोकर्द्दमार वावते अन्य २ विषय सम्वलित ३५० टाका किम्मतेर दुइ वन्ध कागजे आपीलाण्टानेर सदर आपीलेर छओयाल तत् समिभ्यारि कागजात ओ शारटफिकिट सम्वलित अनुमोधन मते इ० सन १८३२ सालेर ५ जानेर तारिखे आपीलाण्टानेर नामे एतला-नामा जारिर हुकुम ये एइ मोकर्द्दमार तजविज एलाहवादेर सदर आदालते, चाहे आर यद्यपि स्यात् आदालत मजकुरे तजविज ना चाहे, तिन मास मध्ये मौजेवात दाखिल करण जन्य वेरेलिर कोटेर हाकिमानेर नामे छादेर हय। ताहार जओ-यावे कोट मजकुरेर ऐ सनेर ५ आपरेलेर लिखित रिटरण ओ रोवकारि एतलानामा जारि हओन ओ ताहा आपीलाण्टानेर ज्ञातोर रशीद लिखिया देओन ओ हाजिर इइया नाराजीर मौजेवात दाखिल करणेर ओयादा सम्वलित माह आपरेल मजकुरेर २६ तारिखे अनुमोधन हइया, तारिख मजकुरेर रोव-कारिर लिखित मत अन्य २ विषय सम्वलित शारटफिकिट ओ गयरह सेरेस्थाय राखनेर हुकुम छादेर हइया, तत्परे एइ मोकर्द्दमार तजविज एइ आदालते चाहनेर दुर्ज्जनसिंहेर छओयाल दरपेस मते दुर्ज्जन सिंह मजकुरेर गयेरहाजिरि सरवे उक्त सनेर ३० माइ तारिखे हुकुम हय ये मुलतवि थाके। इ० सन १८३१ सालेर २७ जुनेर लिखित एलाका वेरेलिर प्रीविनसीयान कोटेर फयछला आपीलाण्टानेर नाराजिर मौजेवात ओ उकीलान् मजकुरेर नामेर ओकालतनामा ओ

उकीलान् मजकुरानेर मेहन्यत्आनार बावत मवलगे ४०७॥=) टाकार एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति उकिल खरचार रशीद ओ कुडि टाका किम्मतेर फिरिस्ति, फिरिस्तीर लिखित दश केता दस्तावेज सम्वलित याता' एइ माह जुनेर २१ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य अनुमोधने आइल। तत परे आपीलाण्टानेर उकिलानेर मध्ये सदासुखपण्डित एइ मोकर्द्दमार बावतेर कोटेर फयछला दुइ टाका किम्मतेर फिरिस्ति सम्वलित अद्य दाखिल करिलेक। ज्ञातो हइया वोध हइल ये एइ मोकर्द्दमा प्रीविनसीयान् कोटेर प्रथम तजविज हओया सदर आपीलेर योग्य, एवं खरचार जामिनदारेर दस्तखतेर एकरार ओ ताहार मातवरिर तहकीकात जेला कानपुरेर जज साहेवेर द्वाराय जेला मजकुरेर नाजीरेर मारफत आमले आसियाछे, एवं उकिलेर मेहन्यतआना एइ आदालतेर तहविले दाखिल हइयाछे। एजन्य प्रकाश ये आपीलाण्टान् सदर आपीलेर शाम्यक् शराएत वजाय आनियाछे। ए प्रयुक्त हुकुम हइल ये आपीलाण्टानेर सदर आपील मञ्जूर एवं लम्बरे दाखिल हय। प्रविनशीयान कोटेर फयछलाते प्रकाश, ये जेला ओ कोटेर पण्डितगण ये उहारदिगेर स्थाने व्यवस्था तलव हइया पितार जीवद्दशाय पितामहेर स्थावर वस्तुर दाविर पुत्रेर द्वैमतार विशय विभिन्नता वाक्यसकल आछे। एजन्य हुकुम हइल ये कोटेर फयछला मौजेवात सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये ऐ पण्डित जेला कानपुरेर प्रचलित शास्त्रेर आज्ञासकलेर अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव व्यवस्था ये पितार जीवद्दशाय पितामहेर स्थावर वस्तुर अंश करिया लओनेर हकदार पुत्र हइते पारे कि ना-एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति॥

---

१. याहा—इति साधीयान् पाठः।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिस्पीयरसाहेवधर्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजुनमासीयसप्तविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्ट-ओजुहूतसंज्ञकनिवेदनपत्रं कोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयजयपत्रञ्च यदेतदब्दीयजुलाइमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिसोमवासरे[1] मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

जीवति पितरि पैतामहस्थावरधनस्यांशं कृत्वा ग्रहणस्याधिकारी पुत्रो भवितुं न शक्नोति, जीवति पितरि पुत्राणां विभागकर्त्तृत्वाभावात् । यदि पिता स्वपैतृकधनस्य विभागं कृत्वा पुत्रेभ्यो ददाति तदा तद्ग्रहणस्याधिकारी पुत्रो भवितुं शक्नोति, जीवति पितरि पितुरेव विभागकर्त्तृत्वात्—इति कानपुरप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभव्यवहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

ऊर्द्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पैतृकमृक्थमनीशास्ते हि जीवतोः ॥—इति मनुवचनम् ॥१॥

विभजेरन् सुताः पित्रोरूर्द्ध्वमृक्थमृणं समम्—इति मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

स्वातन्त्र्यार्हे पितरि जीवति तदिच्छै(यै)व विभागमिति तु[2] *पातित्यपारिव्रज्यादिभिस्तदनर्हे पुत्रेच्छा(या)पि । तदुपरमे तु स्वेच्छाया निमित्तत्वमर्थसिद्धमिति कालत्रयमेवानेन प्रकारेण*—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

भ्रातॄणां जीवतोः पित्रोः सहवासो विधीयते—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥४॥

जीवति पितरि पुत्राणामर्थादानविसर्गाक्षेपेषु न स्वातन्त्र्यम्—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतहारीतवचनम् ॥५॥

---

१. सम्वलि—व्यप० । २. तुं—व्यप० ।

जीवद्विभागे पितुः स्वातन्त्र्याद् अजीवद्विभागे पुत्राणां स्वातन्त्र्यात्—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयागस्तिमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०—रोवकारि मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकसुन्दरराछसाहेवेर वैठके हओर तारिख सन १८३२ सालेर ३ सेतम्बर मोतावेक सन १२३९ सालेर २० भाद्र सोमवार।

महाराजा गोविन्दचन्द्रराय	आपीलाण्ट
महाराणी कृष्णमणिदेव्या	रेष्पाडेण्ट

आपीलाण्टेर उकिल सदासुकपण्डित हाजिर आइल। आपीलाण्टेर छओल एक हाजार टाका मूल्ल्येर कागजेर पर सदर आपील मञ्जुरिर प्रार्थनाय डिहिगञ्ज नाटोर ओ गायरह दखल पाइवार मोकद्माय मुवलगे आटानव्वै हाजार पाच शत एक टाका आट आना पाँच कडा टाकार तायदादे उकिल मजकुर ओ मुनशी होछेन आलीर नामेर एक केता ओकालतनामा सहित ओ ए आदालतेर तहविलदारेर दस्तखते उकिलेर मेहनतआनार वावत एक हाजार टाकार रशीद एक केता ओ ए आदालतेर खरचार जेहा हाओाली सहर कलिकातार मोतालक एद्यने काशीपुर निवाशी जगमोहनमल्लिक ओ रामकुमार पालेर नामेर जामिनि एक केता ओ सन हालेर २७ जुलाइ तारिखेर प्रविनशील कोट मुरशीदावादेर फयसलार नकल

एक केता सन हालेर २६ आगष्ट तारिखे दुइ टाका मूल्ल्येर कागजेर फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल हइयाछिल, अद्य दरपेष हइया पाठ करागेल। ताहार पर गोविन्दचन्द्ररायेर उकिल सन १२२० सालेर १६ अग्रहायनेर राणी कृष्णमणि रेष्पाडण्टेर नामेर महाराजा विश्वनाथराय मोतओफ्फार लिखिया देओा अनुमतिपत्रेर नकल एक केता ये ताहार निचे राणि कृष्णमणिर जओाव जोडा देओा आछे लम्बरे दाखिल करिलेक। दृष्टे आइल। यद्यपि आपीलाण्टेर सदर आपीलेर दरखास्ते हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लओा उचित वोध हइल, ए कारण हुकुम हइल ये एइ मोकर्द्दमा लम्बेर दाखिल हइया एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर फयछला हओा १७४८ लम्बरेर मोकर्द्दमाय दाखिल हओा अनुमतिपत्र सहित ए आदालतेर पण्डितेर हाओाला करा जाय एइ हुकुमे ये एइ रोवकारि पाओार दिवस हइते तिन दिवसेर मध्ये अनुमतिपत्रेर लिखित सरतसकल ओ मजमुन दृष्टे निचेर लिखित छओालसकलेर जओाव दाखिल करे इति।

प्रथम—एइ ये राणि कृष्णमणि आपन स्वामी महाराजा विश्वनाथराय मोतओफ्फार लिखिया देया अनुमतिपत्रानुसारे गोविन्दचन्द्ररायके आपन पुष्यपुत्रत्ते आनिया गोविन्दचन्द्रराय प्राप्तव्यवहारे पहुछाते ओ ताहार राजि व्यतित आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त स्वामीर तेज्य विषयेर पर दखिलकार थाकिते पारे कि ना।

द्वितीय—एइ ये ऐ अनुमतिपत्रानुसारे महाराजा गोविन्द चन्द्ररायके पुष्पपुत्र लओार पर राणि कृष्णमणिके एद्यणे एइ विषयेर ये कोन हेतु द्वाराय गोविन्दचन्द्ररायके त्याग करिया दोशरा व्यक्तिके पुष्यपुत्र करणेर त्तमता आछे किना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलकसुन्दरराससाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तार्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्धर्म्माधिकरणनिष्पन्नाष्टचत्वारिंशदधिकसप्तदशशताङ्काङ्कितविवादविषयनिविष्टानुमतिपत्रञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

राज्ञी कृष्णमणी मृतमहाराजविश्वनाथरायाभिधेयस्वपतिलिखितानुमतिपत्रानुसारेण गोविन्दचन्द्ररायाभिधेयं स्वकीयदत्तकपुत्रतामानीय गोविन्दचन्द्ररायस्य प्राप्तव्यवहारतायामपि तदनुमतिमन्तरेण स्वजीवनपर्य्यन्तं स्वपतित्यक्तधने आयत्तत्वं शास्त्रानुसारेण स्वामित्वेन सम्पादयितुं[1] न शक्नोति पतिकृतदत्तकपुत्रग्रहणानुमत्या पतिमरणानन्तरं गृहीतदत्तकपुत्रस्यैव तत्पतित्यक्तसमुदायधने शास्त्रानुसारेण पुत्रत्वेन स्वत्वोत्पादेन राज्याः कृष्णमण्यभिधानायाः पतित्यक्तधने पत्नीत्वेन स्वत्वोत्पत्तेः प्रतिरुद्धत्वात् । यद्यप्यनुमतिपत्रे महाराजविश्वनाथरायेण स्वपत्नीं राज्ञीं कृष्णमणीं प्रति लिखितमस्ति "अस्मन्मरणानन्तरं त्वं दत्तकपुत्रं रक्षित्वा सकलविषयस्य कर्त्री भूत्वास्मत्कृते ईश्वरविग्रहाणां सेवां कृत्वावशिष्टे ये द्वे मम पत्न्यौ[2] तयोर्ज्जीवनावधि ग्रासाच्छादनं त्वया देयमिति" तथाप्यनेन पत्यनुमत्या पतिमरणानन्तरं गृहीतदत्तकपुत्रस्य शास्त्रानुसारेण पितृत्यक्तसमुदायधनस्वामिनः प्राप्तव्यवहारतायामपि तद्विमत्यापि स्वामित्वेन राज्ञी कृष्णमणी स्वजीवनपर्य्यन्तं पतित्यक्तधने भोगवती स्थास्यतीत्यनवगमादिति ।—

अत्र प्रमाणम्—

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि, तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥ १ ॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः इति प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पत्नीति च तदभावे दुहिता—इति च दायभागटीकादायक्रमसंग्रहादिग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

१. सम्पादितुं—व्यप० २. पत्नौ—व्यप० ।

सर्व्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थ-धृतदेवलवचनञ्चेति ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितानुमतिपत्रानुसारेण महाराजगोविन्दचन्द्ररायस्य दत्तक-पुत्रत्वेन ग्रहणानन्तरं राज्याः कृष्णामण्यभिधानाया इदानीं केनचिद्धेतुना गोविन्दचन्द्ररायस्य त्यागं कृत्वा द्वितीयस्य दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणस्य क्षमता नास्ति, शास्त्रानुसारेण गृहीतैकदत्तकपुत्रस्य पितृत्यक्तसमुदायधने पुत्रत्वेन स्वत्वोत्पादात् । यद्यप्यनुमतिपत्रे महाराजविश्वनाथरायेण स्वपत्नीं राज्ञीं कृष्णमणीं प्रति लिखितमस्ति "अस्मन्मरणानन्तरं त्वमेकस्याधिकस्य वा सत्सन्तानस्य दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणं करिष्यसीति"—अनेन राज्याः कृष्णमण्य-भिधानायाः दत्तकपुत्रैककरणानन्तरं तस्मिन् विद्यमाने सति तत्त्यागं कृत्वा द्वितीयदत्तकपुत्रग्रहणाक्षमताया अनवगमात्—इति वङ्गदेशचलितदाय-भागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्र-न्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितानि त्रीण्येवेति ॥ ३ ॥

एतदब्दीयसितम्वरमासीयदशमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

११—सर्वगुण उपमायोग्य श्रीयुत राजनारायण विद्याभूषण पण्डित आदालते देओानि जेला हुगलि अवगतेषु ॥—

सन १८३२ साल तारिख ७ आपरेल ।—

१३ लम्वरेर कैः कालिदासगङ्गोपाध्याय दीः—

छानि तजविज आः प्रेमचन्द्रचौधारी दीः—

सञोयाल धर्म्मदासचौधुरि ओ गुरुदासचौधुरि-दुइ सहोदर एकान्न वर्त्तिते थाकिया, पैतृक स्थावर वस्तु प्रभृति भोग करिया, ताहार मध्ये ज्येष्ठ, ऐ धर्म्मदास आपनार दुइ पुत्र, वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्रचौधुरि, आर भ्राता ऐ गुरुदासचौधरि ओ आपन माता सुन्दरिदेव्यार समिद्धे लोकान्त हय। तदन्तरे ऐ गुरुदास मजकुर आपनार ऐ भ्रातष्पुत्रदिगेर सहित ऐ व दस्तुरे एकान्नवर्त्ति थाकिया किछु काल परे आपनार माता आर ऐ दुइ भ्रातष्पुत्र ओ आपन प्रथम संसारेर वनितार गर्भजात वैकुण्ठनाथ नामे एक पुत्र ओ अदत्ता तिन कन्या ओ द्वितीय संसारेर सन्तान सन्तति विहिन वनिता गोविन्दमणिदेवीके राखिया लोकान्त हइले। ऐ गुरुदासेर पुत्र वैकुण्ठनाथ आपनार ज्येष्ठतात-पुत्र ऐ वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्रचौधरिर सहित एकान्नवर्त्ति एजमाले थाकिया आन्दाज ७ वत्सर वयक्रमे आपनार पितामहि ऐ सुन्दरि देव्या आर अदत्ता तिन भग्नि ओ अवीरा विमातार समिद्धे मृत्यु-हय। परे ऐ वैकुण्ठनाथेर अविरा विमाता ओ तिन अदत्ता भग्नि ओ पितमही सन्दरीदेव्या ओ ज्येष्ठतातेर पुत्र वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्र सहित एकान्नभुक्त थाकिया वैकुण्ठनाथेर तिन भग्निर विवाह हइया, दुइ भग्निर पुत्र हइले ओ एक भग्नि पुत्रसम्भाविता राखिया, वैकुण्ठनाथेर पितामहीर मृत्यु हय। तदन्तरे किछु काल वादे वैकुण्ठनाथेर विमाता गोविन्दमणीर मृत्यु हय। ऐ वैकुण्ठनाथेर दुइ भग्नि, ओ ताहार पुत्रगण ओ एक भग्नि पुत्र-सम्भाविता ओ वैकुण्ठनाथेर ज्येष्ठतातेर पुत्र वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्र चौधुरि वर्त्तमान आछे। अतएव वङ्गदेश चलित शास्त्रा-नुसारे ऐ गुरुदासेर वस्तुर योग्य अंश गुरुदास मृत्यु परे ताहार पुत्र वैकुण्ठनाथके पौंछिया छिल कि ना। यदि पौंछिया थाके तवे वैकुण्ठनाथेर मृत्यु हइले ऐ वस्तु वैकुण्ठनाथेर पितामहीके पौंछिया छिल कि ना। यदि पौंछिया थाके तवे पितामही सुन्दरी देवी मृत्यु हइले उपरेर लिखित व्यक्तिदिगेर मध्ये के पाइते पारे-

इहार व्यवस्था एइ सओ्रोलेर पासे लिखिया ५ रोज मध्ये पाठाइवेन ॥—

एतत्प्रश्नानुसारेण मृतस्य गुरुदासस्य योग्यांशप्राप्तधने वैकुण्ठनाथोऽधिकार्य्यभूत्। पितामहपर्य्यन्तरहिते तस्मिन् मृते पितामही सुन्दरीदेव्यधिकारिण्यभूत्। तस्यां मृतायां वैकुण्ठनाथस्य पितृभ्रातृपुत्रौ वदनचन्द्रप्रेमचन्द्रौ लब्धुं न शक्नुयाताम्, किन्तु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्राः प्राप्तुं शक्नुयुरिति विदुषां परामर्शः ॥—

एइ सओयाल अनुसारेते गुरुदास मरिले ताहार योग्यांश वस्तुते वैकुण्ठनाथ अधिकारी हइया छिलो। पितामह पर्य्यन्त रहित सेइ वैकुण्ठनाथ मरिले पितामही सुन्दरीदेवी अधिकारिणी हइयाछिलो। सुन्दरीदेवी मरिले पर वैकुण्ठनाथेर पुत्र वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्र पाइते पारे ना, किन्तु वैकुण्ठनाथेर पितृदौहित्रेरा पाइते पारे—एइ पण्डितदेर युक्ति ॥—

धर्म्मरत्नदायभागादिषु ग्रन्थेष्वत्र प्रमाणम्

यथा गौतमः—*स्वामी ऋक्थक्रयविक्रयसंविभागपरिग्रहाधिगमेषु*—इत्यादि ॥

यथा मनुः—*ऊर्द्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम्।*
भजेरन् पैतृकमृक्थमनीशास्ते हि जीवतोः—इत्यादि ॥

यथा मनुः—*अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात्।*
मातर्य्यपि च वृत्तायां पितुर्माता हरेद्धनम् ॥

यथा याज्ञवल्क्यः—*पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।*
तत्सुता गोत्रजः—इत्यादि ॥

धर्मरत्ने यथा—*दौहित्रोऽपि ह्यमुत्रैनं सन्तारयति पौत्रवत्*—इत्यादि।

सन १८३२ साल ता० २० आपरेल।

श्रीराजनारायणविद्याभूषणपण्डित ॥

२६

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं व्यवस्थापत्रं विचारपत्रञ्च यदेतदब्दीयसित-म्बरमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण निवेदनं क्रियते ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति तत्प्रश्नोत्तरव्यवस्थायां मृतस्य गुरुदासस्य योग्यांशे तत्पुत्रो वैकुण्ठनाथोऽधिकार्यभूदिति हुगलीजिलाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तविद्यमानपण्डितेन यल्लिखितं तत्सत्यमेव, किन्तु पितामहपर्य्यन्तरहिते तस्मिन् मृते तत्पितामही सुन्दरीदेव्यधिकारिण्यभूदिति यल्लिखितं तद्व्यवस्थायां तन्न सत्यम्, वैकुण्ठनाथस्य भगिनीषु[1] विद्यमानासु तासां पुत्रसम्भावनायां सत्यां वैकुण्ठनाथस्य पितामह्याः सुन्दरीदेव्यास्तत्पितृदौहित्रानन्तरमधिकारिणस्तत्पितामहादप्यनन्तरमधिकारिण्या वास्तवाधिकारस्य[2] अशास्त्रीयत्वात्, एवं वैकुण्ठनाथस्य पितृभ्रातृपुत्रौ वदनचन्द्रप्रेमचन्द्रौ लब्धुं न शक्नुयाताम्, किन्तु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्राः प्राप्तुं शक्नुयुरिति यल्लिखितं तद्व्यवस्थायां तत् सत्यमेव। गुरुदासस्य मरणानन्तरं तद्योग्यांशे तत्पुत्रस्य वैकुण्ठनाथस्याधिकारे जाते सति तद्धनं वैकुण्ठनाथस्यैव जातम्। अतस्तस्मिन् पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्रपितृमातृभ्रातृभ्रातृपुत्रभ्रातृपौत्रपर्य्यन्तरहिते मृते सति तत्त्यक्तधने विद्यमानेषु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्रेषु तत्पितृव्यपुत्राणामधिकारस्याशास्त्रीयत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारेण निवेदनमिति ॥—

एतदब्दीयनवम्बरमासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदं निवेदनं कृतमिति ॥

श्रीर्ज्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२—रोवकारि मिशिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता ई० सन० १८३२ साल तारिख १३ शेतम्बर मोतावेक

---

१. भगिनीसु—व्यप०। २. वास्तवमधिकारस्य—व्यप०।

३० भाद्र सन १२३९ साल रोज वृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत नाशानाएल जान हालहेड साहेबेर बैठके ॥—

अनङ्गमञ्जरि— आपीलाण्ट

फकिरचन्द्रसरकार— रेष्पाडण्ट

एइ मोकद्दमा वर्त्तमान मासेर १० तारिखे उभयेर उकिलेर मोकाबिलाय रोवकार हइया वाजे २ कागजात सुनानि हइया दिवावसान प्रयुक्त स्थकित छिल, अद्य पुनराय आपीलण्टेर उकिल मुनशीदादार वक्स ओ रेष्पाडण्टेर उकिल सदासुखपण्डितेर मोकाविलाय दरपेष हइया जिला आदालतेर ओ एइ आदालतेर कागजात मोनाहेजाय आशील। हुकुम हइल-ये एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विषयेर व्यवस्था तलव करा जाय-ये यदि कोनो व्यक्ति पोष्यपुत्र लय तवे ऐ पोष्यपुत्र राखन विषये शास्त्रानुसारे आपन स्त्रीर स्वीकार आवश्यक वटे कि ना, ओ पोष्यपुत्र लओनेर विषय तिन नियम आचरण आवश्यक। प्रथम—एइ ये सपिण्डक अर्थात् ज्ञातिवर्गके समाचार दिया एकत्र करा आवश्यक॥ द्वितीय— राजाके ज्ञात करा॥ तृतीय—यज्ञ करा॥ ए मकद्दमार भावे वोध हइल ये पोष्यपुत्र लओन कालिन किवल यज्ञ हइयाछे। प्रथम ओ द्वितीय नियम आमले आइशे नाइ। अतएव एइ विशये एइ मत पोष्यपुत्रता सिद्ध हय कि ना इति ॥—

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतनासानाएलजानहालहेडसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयसितम्बरमासीयत्रयोदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पोष्यपुत्रं गृह्णाति तदा तत्पोष्यपुत्रग्रहणविषये स्वपत्न्याः स्वीकारः शास्त्रानुसारेण वास्तवमावश्यको न भवति, जायापत्योर्म्मध्ये प्रधानीभूतेन पत्या पोष्यपुत्रग्रहणेनैव पतिपरतन्त्राया जायाया अपि तस्मिन् पोष्यपुत्रत्वोत्पत्तेः शास्त्रीयत्वात्, पत्नीस्वीकारं विना पत्युः पोष्यपुत्रग्रहणस्य शास्त्रनिषिद्धत्वाभावाच्च। एवं पोष्यपुत्रग्रहण-

विषये ये त्रयो नियमाः प्रश्नपत्रे आवश्यकत्वेन लिखिताः अर्थात् सपिण्डा-ह्वान-राजनिवेदन-यज्ञास्तेषाम्मध्ये एतद्विवादे यदि पोष्यपुत्रग्रहणसमये केवलं यज्ञभवनमेवावगम्यमानं स्यात्तदा प्रथमद्वितीयनियमयोरर्थात् सपिण्डाह्वान-राजनिवेदनयोरनिष्पन्नत्वेऽप्येतादृशं पोष्यपुत्रत्वं सिद्ध्यति, पोष्यपुत्रग्रहणविषये सपिण्डाह्वान-राजनिवेदनयोः केवलं दृढतरसाक्षित्वेनोपयोगित्वेन प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितेनैतद्विवादे पोष्यपुत्रग्रहणसमये केवलं यज्ञ एव जात इत्यनेन यज्ञकरणपूर्व्वकपोष्यपुत्रग्रहणस्य निश्चितत्वेन सपिण्डाह्वानराजनिवेदनयोः प्रयोजनस्यार्थसिद्धत्वात्—इति दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयदत्तकदर्पणविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक्[2] प्रयत्नतः ।
पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्त्तनस्य च ॥—इति दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

भर्त्तुः प्राधान्यात्तत्परिग्रहेणैव स्त्रिया अपि तस्मिन् पुत्रत्वसिद्धिः भर्त्तृपरिगृहीतवस्त्वन्तरस्वत्ववत्—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मधुपर्केण संपूज्य राजानञ्च द्विजान् शुचीन् ।
राजात्र ग्रामस्वामी । बन्धूनाहूय सर्वांस्तु ग्रामस्वामिनमेव चेति वृद्ध[3]-गौतमस्मरणात्—इति दत्तकमीमांसादि (दमी० पृ० ६६) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बान्धवाद्याह्वानं दृष्टार्थं राजाह्वानवत्—इति दत्तकमीमांसादि (दमी० पृ० ६७) ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् इत्यादेः स्वबन्धूनाहूय इत्यर्थः । एतेन स्वबन्धुभिर्ज्ञातः पुत्रो दायं ग्रहीष्यति, श्राद्धादिकञ्च करिष्यति, बान्धवाश्च तं न विचारयिष्यन्तीति सूचनार्थम् । राजनिवेदनं चाप्येतदर्थमेव—इति विवादभङ्गार्णव(२ विवा० १७३ ख)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥

---

१. पौत्र०—व्यप० । २. तादृक—व्यप० ।
३. वृद्धगौतम इति दमी० पुस्तके पाठः ।

एतदब्दीयनवम्बरमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१३—रोवकारि मिछिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस् पीयेर साहेवेर वैठकं ओयाक्कै तारिख ५ सेतम्वर इ० सन १८३२ साल मोतावक वाङ्गला सन १२३९ साल तारिख २२ भाद्र रोज वुधवार ॥ —

मोछम्मात वेचुधामन— छाएला—

छाएलार उकिल मुनशी अलिउल्ला हाजिर आइल। छायेलार छओयाल सन हालेर २१ जुलाइ तारिखेर जेला वेहारेर जज साहेवेर हुकुमेर नाराजीते ये आपन मातार वर्त्तमाने उहार स्वामीर अपुत्रक मृत्यु हओन सरवे मोछम्मात मुदा मोतओफार दौहित्रगण राधा ओ गोवर्द्धनेर मोतओफा मजकुरार सहित ओयारिष सावुद हओया ओ छायेलार ओयारिष साछद ना हओयार विशये छादेर हइयाछे। शास्त्रानुजाइ मोतओफा मजकुरार सहित आपन ओयारिष शाछादर हुकुम छादेर हओनेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेर नामेर ओकालतनामा ओ लाला सुवंशलाल मोक्तारकारेर नामेर मोक्तारनामा ओ तारिख मजकुरेर जेला मजकुरेर आदालतेर रोवकारिर नकल एक केता ओ इ० सन १८०३ साले १९ अक्तुवरेर लिखित एलाका आजिमावादेर आपीलेर रोवकारिर नकल एक केता, ओ इ० सन १८१६ सालेर १५ अक्तुवर तारिखेर जेला मजकुरेर डिगरिर नकल सम्वलित जाहा सन हालेर २७ अगष्ट तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य

अनुमोधने आइल। हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एवं छओयाल ओ तत्समभिव्यारि कागजात सम्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये कागजात अनुमोदन परे एइ विषयेर जओयाव ये जेला वेहारेर जज साहेवेर हुकुम तद्देशीय प्रचलित शास्त्रानुजाइ वटे कि ना लिखेन इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिस्पीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयसितम्बरमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यत्तदब्दीयतन्मासीयोन-विंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

वेहारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृताज्ञा तद्देशप्रच-लितशास्त्रानुसारिणी न जातास्ति। प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विशेषतोऽङ्गरेजी-शब्दप्रतिपाद्यषोडशाधिकाष्टा दशशताब्दीयाक्तूवरमासीयपञ्चदशदिवसीयवे-हारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणीयजयपत्रप्रतिरूपपत्रेण तल्लिखितध-र्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नोत्तराभ्यां विवादास्पदीभूतधनमेतद्ध-र्म्माधिकरणार्थिन्या वेचूधामिन्याः श्वशुरस्य फतेहधामिन आसीत्, तन्म-रणानन्तरं तत्पुत्रेण फेकूधामिना अर्थादर्थिन्या वेचूधामिन्याः पत्या पुत्रत्वेन प्राप्तमिति ज्ञातम्। अतस्तद्धनं फतेहधामिनः पुत्रस्य फेकूधामिन एव जातम्। अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तत्राधिकारः। तदुत्तराधिका-रिणाम्मध्ये तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या अर्थिन्या वेचूधामिन्या एव प्रधानाधिकारित्वात्, वेचूधामिन्यामर्थिन्यां विद्यमानायामन्येषान्नाधिकारः, मातरि विद्यमानायामनपत्यस्य कस्यचिन्मरणेन तत्पत्न्याः पुत्रपौत्रप्रपौत्रा-भावे सति प्रधानाधिकारिण्या अधिकारो न भवतीत्येतद्विधायकशास्त्राभा-वात्—इति वेहारदेशप्रचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहार-माधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थ—धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

पुत्राः पौत्राश्च दायं गृह्णन्ति तदभावे पत्न्यादयः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ २ ॥

एतदब्दीयनवम्बरमासीयैकविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

३३२५ नं—

१४—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कोलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिशपियेर साहेबेर वैठके ओयाके तारिख १० शेतम्बर इ० सन १८३२ साल मोतावक २७ भाद्र सन १२३९ साल वाङ्गला रोज सोमवार ॥

गोसाञीचन्द्रकविराज आपीलाण्ट
मोछम्मात जयमनि ओ कृष्णमणि मोतओफा—रेष्पाडण्टान

आपीलाण्टेर उकिल मुनसि हयदर आलि ओ रेष्पाडण्टानेर मध्ये जयमनीर उकिल मुनसि गोलाम वतुल हाजिर आइल, एवं इस्तहारनामा जारि हओयाते ओ कृष्णमनीर मोतओफार तरफेर कोन ओयारिष ए आदालते हाजिर आइल ना। एइ मोकद्दमा सेरेस्तादारेर कैफियत मते आमार वैठके दरपेष हइया प्रथम आदालत जेला विरभूमेर कागजात ओ द्वितीय आदालत मुरशिदावादेर कोटेर कागजात एवं ए आदालते दाखिल हओया खाष आपीलेर छओयाल जाहा, आपिलाण्ट मौजेवात करार देय,

ओ ताहार जओयाव सेओ याय साक्षिदिगेर जोवानवन्दि अनु-मोधने आइल। जयमनीर उकील मुनसि गोलाम वतुलेर प्रति छओयाल–ये तुमि एइ आदालतेर दाखिल करा आपन जओ-यावे लिखियाछ-ये कृष्णमनी आपन मृत्तुकालिन मातवर मनिष्यदिगेर साक्षाते आपन हिस्यार वस्तुते उहाके हकदार करि-आछे, ए प्रयुक्त जिज्ञासा करा जाइतेछे-ये लिखित पठितेर द्वाराय कि अन्य कोन प्रकारे। आरज करिलेक-ये आमार मौक्केलेर जओयावेते ए विषय पष्ट प्रकाश नाइ। ये हेतुक एइ मोकर्द्दमार आपील शास्त्रेर विशयसकल अधिक तहकिकातेर दृष्टे मञ्जुर हइयाछे ताहार दृष्टे हुकुम हइल जे एइ मोकर्द्दमार कागजसकल एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हेतुते पाठान जाय ये उभयेर दाखिल करा कुरशीनामासकल ओ जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ एइ आदालतेर पण्डितगणेर खाष आपील मञ्जुर कालिन दाखिलकरा व्यवस्था अनुमोधने निचेर लिखित छओ-यालसकलेर जओयाव लिखेन॥

१—प्रथम—एइ ये १८।८६ मास वयक्रमेर समय मृत्तुर एक-दिवस पूर्व्व भैरवेर जोवानि क्रत हेवा प्रामाण्य हय कि ना॥

२—द्वितीय—यद्यपि स्यात् ताहार प्रामाण ना हय, तवे उभय विवादिर मध्ये कोन व्यक्ति भैरवेर उत्तराधिकारि मते हक राखे।

३—तृतीय—यद्यपि स्यात् खास आपील मञ्जुरिर समये एइ आदालतेर दाखिल हओया व्यवस्थार द्वाराय प्रकाश ये सावेक मुद्दइआनेर मध्ये एक जन कृष्णमनी पुत्रवती हओनेर उद्खेर पीतार हिस्याय हकदार छिल। एइ क्षने प्रकाश ये कृष्णमनि ओ ताहार स्वामि दुयेरि मृत्यु हइयाछे। ए प्रयुक्त कृष्णमनी मजकुरार क्षेमता छिल कि ना-ये आपन हिस्या जयमनीके ये प्रकार एइ आदा-लतेर जओयावे लेखे समर्पन करे, आर ताहार अन्यथाय मोछ-म्मात मजकुरार ओयारिष कोन व्यक्ति हइवेक, एवं सेरेस्तादार

एइ विशयेर कैफियत ये एइ मोकद्दमा इ० सन १८२२ साले मञ्जुर हय, परे कि जन्य मुद्दत दश वत्सर पर्यन्त मुलतवि थाकिल—दाखिल कारण इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुक्तहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयसितम्बरमासीयदशमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातमर्थिनिविष्टानि प्रत्यर्थिनिविष्टानि च वंशावलीपत्राण्येवं जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रमेतद्धर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डिताभ्यां लिखितमेतद्विवादस्यैतद्धर्म्माधिकरणविवेचनायोग्यत्वनिश्चयकालिकमर्थाद्भाषायां खासअपीलमञ्जूरशब्दप्रतिपाद्यकालिकव्यवस्थापत्रं च यदेतदब्दीयाकतूवरमासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

षण्मासाधिकाष्टादशवर्षवयस्केन[१] भैरवेण स्वमृत्योरेकदिवसपूर्व्वं यद्दानं वाचा कृतं तत् सिद्ध्यति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विशेषतो वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नोत्तराभ्यां प्राप्तव्यवहारेण प्रकृतिस्थेन च भैरवेण स्वस्वत्वास्पदीभूतधनस्य दानं कृतमित्यवगमेनैतादृशदानसिद्धौ बाधकसामान्याभावादिति ।

द्वितीयप्रश्नोत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ १ ॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अदत्तं तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः—इत्यादि विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ३ ॥

---

१. षडमासाधिकाष्टादशवर्षव्ययस्केण—व्यप० ।

भयादिरुगन्ताः[1] *पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः*—इति विवाद-भङ्गार्णवादिग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्यर्थिनीनामर्थादेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनीनां मध्ये कृष्णमण्याः पुत्रसम्भावनायां सत्यां पितृत्यक्तधनस्योत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति कृष्णमण्याः स्वसंक्रान्तपितृत्यक्तधनस्य जयमणीमुद्दिश्य यथैतद्धर्माधिकरणो-त्तरपत्रे जयमण्या लिखितं तादृशसमर्पणस्य क्षमता पितृकृतर्णापाकरणाद्या-वश्यककार्य्यार्थं तत्तत्कार्य्ये प्रयुक्तस्यासीत्, तद्व्यतिरेकेण स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च नासीत्। यदि च कृष्णमण्या तद्धनं दानानुसारेण प्राप्तं यद् वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसंवन्धितृती-यप्रश्नोत्तराभ्यां कृष्णमणीजयमण्युभयोपस्थापितयवाव-उल-यवावसंज्ञकपत्रेण चावगम्यते तदा तद्धनस्य कृष्णमण्याः सौदायिकस्त्रीधनत्वेन तत्रोपरिलिखितपितृकृतर्णापाकरणार्थं तद्विनापि च स्वाच्छन्द्येन समर्पणस्य क्षमता आसीत्। एवञ्च सति कृष्णमण्याः जयमणीमुद्दिश्य तद्धनसमर्पण-क्षमताया असत्त्वपक्षे कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्यक्तधनस्य यदि कृष्णमणीमरणोत्तरमेतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो गोसाइचन्द्रकविराजस्य पिता वैद्यनाथकविराजो विद्यमान आसीत्, तदा तस्य कृष्णमण्याः पितुर्ग-ङ्गानारायणस्य पितामहदौहित्रत्वेनाधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तत्पुत्रो गोसाइचन्द्रकविराजोऽधिकारी भवितुमर्हति, यदि च कृष्णमणीमरणात् पूर्वमेव गोसाइचन्द्रकविराजस्य पिता वैद्यनाथकविराजो मृतः स्यात्तदा गोसाइचन्द्रकविराजस्य कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्यक्त-धने अधिकारो भवितुं न शक्नोति, पितामहदौहित्रपुत्रस्य शास्त्रानुसारे-णानधिकारात्, वैद्यनाथकविराजकृष्णमण्योर्मध्ये पूर्व्वं वैद्यनाथकविराजस्य मरणं कृष्णमण्या वा मरणं जातमित्यस्य प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातुमश-क्यत्वात्। एवं प्रभुसमर्पितार्थिप्रत्यर्थिसमुपस्थापितवंशावलीपत्रलिखितानां मध्ये केवलं जयमण्या एव विद्यमानत्वेन, तस्याश्च कृष्णमणीमरणा-नन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्यक्तधने अधिकारो भवितुं न शक्नोति, भ्रातृदुहितुः

१. क्रोधादीतिपाठः विस०। २. समुपस्थापित—व्यप०।

पितृव्यधने शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वात् । किन्तु कृष्णमणीमरणोत्तरं तत्-संक्रान्ततत्पितृत्यक्तधने शास्त्रानुसारेण ये अधिकारिणोऽधिकारिशृङ्खलायां निविष्टाः तेषां मध्ये कश्चिच्चेद्विद्यमानस्तदा स एवाधिकारी भवितुं शक्नोति । परन्तु स च क इति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातुमशक्य एव इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहशुद्धितत्त्वदायरहस्यविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ॥
विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥३॥

ऋक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इत्यादि विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

ऊढया कन्यया वाऽपि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।
भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्त्तितम् ।
विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्तिक्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥७॥

दौहित्रश्च पिण्डदाता न च तत्पुत्रः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥८॥

न दायं निरिन्द्रिया अदायाश्च स्त्रियो मताः-इति श्रुतेः न दायमर्हति स्त्रीत्यन्वयः, पत्न्यादीनाम् त्वधिकारो विशेषवचनादविरुद्धः—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयदिशम्बरमासीयदशमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१५—मोकाम कलिकातार सदर देओयानि पण्डित प्रति सओयाल ।

यद्यपि मोछलमान जातीय कोनो व्येक्ति हिन्दु जातीय कोनो व्येक्तिर स्त्रीके वुझाइया ताहार पतिर असन्मतिते मोछलमान धर्म्मे आनिवार मानस करे, अथवा हिन्दुजातीय कोन व्येक्तिर स्त्री आपनार जातीय धर्म्मत्याग करिया मोछलमानेर धर्म्म स्वीकार करिते इत्सा करे, तवे पतिर नालिस मते हाकिम व्येक्तिके मोछर्म्मोत मजकुरा ओ मोछलमान व्येक्तिदिगेर प्रार्थना हइते वारण राखा पौछे कि ना। यद्यपि पौछे, तवे कि प्रकार, ओ यदि स्यात् ऐ स्त्री मोछलमान हइया थाके, तवे ताहार पतीर जातीर किछु हानि हय कि ना। इति सन १८३२ साल तारिख १० दिसम्वर॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयदिशम्वरमासीयत्रयोदशदिनसम्वन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि यवनजातीयः कश्चिद्व्यक्तिविशेषो हिन्दूजातीयस्य कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य स्त्रियं बोधयित्वा तस्याः स्त्रियाः पत्युरननुमत्या च यवनजातीयधर्म्मेष्वानेतुमिच्छति, अथवा हिन्दूजातीयस्य कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य स्त्री स्वजातीयधर्म्मस्य त्यागं कृत्वा यवनजातीयधर्म्मस्य स्वीकारं कर्त्तुमिच्छति

तदा तस्याः स्त्रियाः पत्युस्तद्विषयकाभियोगे सति राज्ञस्तस्याः स्त्रियाः यवनजातीयस्य तद्व्यक्तिविशेषस्य च तत्तदिच्छाविषयीभूताद्वारणकरणमुचितं भवति। एवं च सति राज्ञस्तयोरुपयुक्तदण्डादिकरणक्षमताप्यस्त्येव। यदि च सा स्त्री यवनजातौ प्रविष्टाऽभूत्तदा तस्याः पतिर्यदि तस्या यवनजातिभवनानन्तरमपि तया सह स्त्रीपुंधर्माचरणादिकार्य्यं कृतवान् स्यात्तदा तत्संसर्गजन्यपातकापनोदकयथाशास्त्रप्रायश्चित्ताचरणं विना स्वजातावाचरणीयो व्यवहार्य्यश्च भवितुं शास्त्रानुसारेण न शक्नोतीति, एवं तस्याः स्त्रियाः पत्युः स्वजातेर्हानिर्जाता। यदि च तस्याः स्त्रियाः यवनजातिभवनानन्तरं तत्पतिस्तया सह स्त्रीपुंधर्म्माचरणादिकार्य्यं न कृतवान् स्यात्तदा तत्पत्युस्तत्संसर्गाभावेन संसर्गजन्यप्रत्यवायापनोदकप्रायश्चित्तं विनापि स्वजातेः कापि हानिर्भवितुं न शक्नोतीति मनुमिताक्षराप्रभृतिधर्म्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था॥—

अत्र प्रमाणम्—

अस्वतन्त्राः स्त्रियः कार्य्याः पुरुषैः स्वैर्दिवानिशम्।

विषयेषु च संजन्त्यः संस्थाप्या ह्यात्मनो वशे॥ इति मनु(९।२) वचनम्॥१॥

दम्पत्योः परस्परधर्म्मव्यतिक्रमे सति अन्यतरज्ञाने दण्डेनापि स्वधर्म्मव्यवस्थापनं राज्ञा कर्तव्यम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां(पृ० ३४५-३४६) कुल्लूकभट्टव्याख्यानम्॥२॥

यद्यपि स्त्रीपुरुषयोः परस्परमर्थिप्रत्यर्थितया नृपसमक्षं व्यवहारो निषिद्धस्तथापि प्रत्यक्षेण कर्णपरम्परया विदिते तयोः परस्पराभिचारे दण्डादिना दम्पती निजधर्म्ममार्गे राज्ञा स्थापनीयौ—इति मिताक्षरा-(पृ० २८८)ग्रन्थलिखनञ्चेति॥३॥

एतदब्दीयदिशम्बरमासीयाष्टादशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

श्रीदुर्गा

१६—रोवकारी मिछिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सिपीएर साहेवेर वैठके ओयाक्के तारिख १९ माह शेतम्वर इ० सन १८३२ साल मोतावक ५ आश्विन वाङ्गला सन १२३९ रोज वुधवार-

दुर्ज्जनसिंह ओ अर्ज्जनसिंह आपीलाएटान्
वाउत गिरिधरसिंह ओ गयरह-- रेष्पाडएटान्

आपीलाएटानेर उकिलान् मुनशी होशेन आलि ओ सदासुखपण्डित हाजिर आइल। आपीलाएटानेर छओयाल एइ मासेर ६ तारिखेर अनुमोदन हओया एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार प्रति ओजरात एवं अन्य अन्य विशय सम्वलित सादा कागजेर पर एक केता व्यवस्थार नकल दुइ टाका किम्मतेर एक केता फेरस्त समेत, जाहा एइ मासेर ८ तारिखे दाखिल हइया छिल, अनुमोदने आइल। हुकुम हइल ये आपीलाएटानेर छओयाल एइ रोवकारिर नकल ओ एइ मासेर ६ तारिखेर रोवकारिर नकल सम्वलित ओ एइ मोकर्द्दमार मोतालक साम्यक कागजात एइ हुकुमे ये पण्डित सावेक व्यवस्था ओ आपीलाएटानेर ओजरात ओ एइ मासेर ६ तारिखेर हओया एइ आदालतेर रोवकारिर प्रति अनुमोदन करिया जओयाव लिखेन-ये तत् दृष्टे सावेक व्यवस्थार किछु तवदिल जरुर आछे कि ना, आर यद्यपि स्यात् ताहा थाके, ताहार सरेओयार कैफियत लिखेन-एइ आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयसितम्वरमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्न-

प्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातमेतद्धर्म्माधिकरणार्थिनां निवेदनपत्रमेतदब्दीयसितम्बरमासीयषष्ठदिवसीयैतद्धर्म्माधिकरणीयविचारपत्रं च यदेतदब्दीयनवम्बरमासीयषष्ठदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।––

प्रभुसमर्पितोपरिलिखितपत्रजातदृष्ट्या अस्मद्दत्तैतद्विवादविषयनिविष्टपूर्वव्यवस्थायाः किञ्चिदपि परावर्त्तनस्यावश्यकता नास्ति, धर्मशास्त्रे केनापि मुनिना ग्रन्थकारेण वा जीवति धनस्वामिनि पितरि तत्स्वत्वास्पदीभूतं धनं यत् स्वपित्रादिमरणानन्तरं उत्तराधिकारित्वेन पित्रा प्राप्तं तद्धनं तत्पुत्रैर्विभज्य ग्रहीतव्यमित्यस्यालिखितत्वात्, कस्मिंश्चिदपि देशे तादृशव्यवहाराभावाच्च । यच्च एतद्धर्म्माधिकरणार्थिभिः स्वकीयनिवेदनपत्रे अस्मद्दत्तपूर्वव्यवस्थायां पैतामहधनं लिखितं तत्प्रमाणेषु पैतृकं धनं लिखितमिति विरोधो लिखितस्सन् (?) सम्यक्तद्व्यवस्थालिखितानां षण्णां प्रमाणानां मध्ये केवलं प्रथमप्रमाणे मनुवचने एव पैतृकं धनमिति लिखितमस्ति । तत्र पैतृकं धनमित्यस्य पितृस्वत्वास्पदीभूतं धनमित्याशयः । तत्र पितृस्वत्वास्पदीभूतं धनं यद्धनं पित्रा स्वेनैवोपार्जितं तदापि भवति । यद्धनं पित्रा स्वपित्रादिमरणानन्तरं स्वमात्रादिमरणानन्तरं वोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तदपि भवत्येव, पितृस्वत्वस्य तत्राप्यक्षतत्वात् । यथैतद्धर्म्माधिकरणार्थिभिर्विवादास्पदीभूतं धनं स्वपैतामहमिति लिखितं तत्रापि तद्धनमर्थिनां पितामहस्य स्वोपार्जितं न भवति, किन्त्वर्थिनामेतद्धर्म्माधिकरणीयनिवेदनपत्रेणैव विवादास्पदीभूतं धनं तत्पितामहेनाप्युत्तराधिकारित्वेनैव प्राप्तमित्यस्य स्पष्टीकृतत्वेन, अतएव यद्धनमर्थिनां पितामहेनार्थात् कीर्त्तिसिंहेन मूलभूतधनस्वामिनो विक्रमादित्यरायात् सप्तमपुरुषेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तद्धनं यद्यर्थिनां पैतामहं भवति तदा तद्धनमर्थिनां पित्रा अर्थाद्गरिधनसिंहेन मूलभूतधनस्वामिनो विक्रमादित्यरायादष्टमपुरुषेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तद्धनमप्यर्थिनां पैतृकमपि भवितुं शक्नोत्येव । इतरेषु तद्व्यवस्थालिखितेषु पञ्चसु प्रमाणेषु सामान्यतो धनमित्यस्य लिखितत्वेन पितुः स्वोपार्जिते क्रमागते च धनशब्दस्याविशेषात्–इति कानपुरप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभव्यवहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारेणोत्तरमिति ॥

एतदब्दीयदिशम्बरमासीयोनविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदमुत्त-
रं दत्तमिति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१७—रोवकारी मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकसुन्दर रास साहेवेर बैठके हओयार तारिख इङ्गरेजी सन १८३२ सालेर ४ डिजम्बर मोताबेक सन १२३९ वाङ्गलार २० अग्रहायन मङ्गलवार--

आनन्दकिशोर गुप्त वनाम श्रीमती क्षेमङ्करीदासी

छायलेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल हाजीर आइल। छायलेर छओयाल ३२ टाका मूल्ल्येर इष्टाम्प कागजेर पर ग्रासाच्छादन प्रभृति विशये मुः ५२० पाच शत कुडी टाकार मोकद्दमार खास आपील मञ्जुरेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ इं० सन १८३० सालेर २१ अक्तुवर तारिखेर हओया नदिया जेलार आदालतेर एक केता फयसलार नकल ओ इं० सन १८३२ सालेर १५ फिवरेल ओ सन १८२७ सालेर १८ आपरेल तारिखेर हओया कलिकातार क्रोट आपीलेर दुइ केता फयशलार नकल ओ एक केता वेवस्था सहित, ये सन हालेर ८ शेतम्वर तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आइल। येहेतु हुकुम हओनेर पूर्व्व शास्त्रेर विवरण ज्ञात हओया उचित वोध हइल, एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके अर्पन कराजाय ये निचेर लिखित प्रश्नोत्तर ताहार पाइवार दिवसावधि एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति।

प्रश्न —खोशालचन्द्रराय तालुकात प्रभृति ओ करुणामयी वनिता ओ करुणामयीर गर्भजात दुहिता श्रीमति चित्रादासीके उत्तराधिकारिगणके राखिया लोकान्तर्गामी हय, ततूपरे लिखित श्रीमती करुणामयी स्वामीर तेज्य वस्तुर पर ओ ताहार मृत्युर पर तस्य कन्या श्रीमती चित्रादासी उक्त खोशालचन्द्रेर तेज्य वस्तुर उपर दखिलकार हइलेन। तदपरे उक्त श्रीमती चित्रादासीर दुइ पुत्र अर्थात् भैरवचन्द्रगुप्त ओ आनन्दकिशोरगुप्तेर मध्ये

ज्येष्ठ भैरवचन्द्र गुप्त श्रीमती क्षेमङ्करीदासी वनिता ओ हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृति चारि कन्याके राखिया आपन माता श्रीमती चित्रादासीर समक्षे लोकान्तर हय, एवं उक्त श्रीमती चित्रादासीर द्वितीय पुत्र आनन्दकिशोर गुप्त उक्त खोशालचन्द्रेर तावत तेज्य वस्तुर उपर दखिलकार हय। अतः पर जिज्ञाशा करा जाइतेछे ये यदि उक्त आनन्दकिशोर आपन ज्येष्ठ भ्राता भैरवचन्द्रेर स्त्री श्रीमती क्षेमङ्करी दासीके, ओ ऐ श्रीमती क्षेमङ्करीदासीर मृत्युर पर ताहार कन्यागण हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृतिके ताहार दिगेर आविश्वक अनुसारे ग्रासाच्छादन ना देय, तबे बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे लिखित श्रीमती क्षेमङ्करीदासी ओ तत् परलोकान्तर तस्य कन्यागण श्रीमती हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृति छाएल आनन्दकीशोर गुप्तेर स्थाने ग्रासाच्छादन पाइवार क्षेमता राखे कि ना—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलकसुन्दरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सत्यानन्दकिशोरगुप्तो यद्युत्तराधिकारित्वेन प्राप्तपितृधनायां स्वमातरि जीवन्त्यां मातामहधने अनुत्पन्नस्वत्वस्य मृतस्य भैरवचन्द्रस्य स्वकीयज्येष्ठभ्रातुः पत्न्याः श्रीमत्याः क्षेमङ्करीदास्याः; तन्मरणोत्तरं तत्कन्यानां हरसुन्दरीदयामयीप्रभृतीनामावश्यकग्रासाच्छादनं न ददाति तदा सा एव श्रीमतीक्षेमङ्करीदासी ग्रासाच्छादनोपयुक्तस्वपतित्यक्तधनाभावे स्वजीवनपर्य्यन्तमानन्दकिशोरगुप्तस्य स्वकीयदेवरस्य स्थाने ग्रासाच्छादनग्रहणस्य क्षमतां रक्षत्येव, एवं तन्मरणोत्तरं तत्कन्यकानां यदि विवाहो नाभूत्तदा तासां मध्ये अविवाहितास्सर्वा एव

विवाहपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादनोपयुक्तस्वपितृत्यक्तधनाभावे सति विवाहपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्थाने रक्षन्त्येव । यदि च भैरवचन्द्रस्य कन्यानां सर्व्वासामेव विवाहो जातः स्यात् तदा तासां विवाहितानां कन्यकानां मध्ये यासां ग्रासाच्छादनं स्वभर्त्तृकुलात् स्वभर्त्तृकुलसम्बन्धिधनाद् वा स्वपितृत्यक्तधनाद्वा भवितुं न शक्नोति तदा ता अपि यावज्जीवं स्वकुलोचितग्रासाच्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्वपितृव्यस्य स्थाने रक्षन्त्येव । यासाञ्च विवाहितानां ग्रासाच्छादनं स्वभर्त्तृकुलात् स्वभर्त्तृकुलसम्बन्धिधनाद् वा स्वपितृत्यक्तधनाद् वा भवितुं शक्नोति ताश्च ग्रासाच्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्थाने न रक्षन्ति, तासामावश्यकग्रासाच्छादनस्य स्वभर्तृकुलादेरुपपत्तेः—इति वङ्गदेशचलित-दायभाग-दायतत्त्वदायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

सुताश्चैषाञ्च भर्त्तव्या यावद्वै भर्त्तृसात्कृताः ।
अपुत्रा योषितश्चैषां भर्त्तव्याः साधुवृत्तयः ॥ इति दायभागादि(दाभा० पृ० १०४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २२७ २।१४१)वचनम् ॥१॥

मृते भर्त्तर्य्यपुत्रायाः पतिपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ।
विनियोगार्थरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥
परिक्षीणे पतिकुले निर्म्मनुष्ये निराश्रये ।
तत् सपिण्डेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-(दाभा० पृ० १७३)ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० १३।२८-२६)वचनञ्चेति ॥२॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—————

४७०२ ल० ।

१८ फैरादि—गोलकमणीदासी सा० वेहाला परगणे वलिया आसामी —पीताम्वरहालदार १स्वयं देओया १सा० वेहाला परगणे वलिया, निमचाँद राय, १सा० मोदि परगणे मागुरा ।

मालिके जमीन सावेक ँरामचन्द्रहालदारेर ओयारिस श्रीनाथहालदारभट्टाचार्य । इहार हाल खरिदार हरचन्द्र हालदार सा० वेहाला परगणे वालिया १, दोसरा मालिके जमिन महाराजा ँनवकृष्णवाहादुरेर ओयारिस लायेक शिव-कृष्णवाहादुर ओ कालीकृष्णवाहादुर सा० सहर कलिकातार सवावाजार २ ।

दावि मौरसि जमिर लाखेराजी जमीर ओयारिसिते दखल कायेम हइवार प्रार्थनाय किम्मत तायदाद १५० टाका । एक वेक्ति गङ्गारामराय जाति छत्रि आपन सजातीते विवाह करे। विवाहिता स्त्रीर पक्षे एक पुत्र मदनराय । ऐ गङ्गारामराय एक-कपालिर कन्याके आसना करे । ताहार उदरे एक कन्या हय। ताहार नाम गोलकमणि । ताहाके छत्रिर संगे विवाह देय। गङ्गारामराय लोकान्त हइवाते ऐ मदनराय आपन पितार स्थावर ओ अस्थावर विषय दखलिकार थाकिया सजातिते विवाह करे, एक कन्या हय । तस्य नाम वरदामणि । ऐ मदन-राय आपन पैतृक जे किछु तावत आपन कन्या वरदामणिके दान करे, सरत् एइ जे पर्य्यन्त वरदामणिर विमाता जीवितमान थाकिवेक ऐ विषयेर ॥=) आना रकम उपस्वत्व हइते खोरपोष करिवेक, वरदार ।=) आना थाकिवेक, वरदार विमातार लोकान्त हइले सोलो आना उपस्वत्त्व वरदार थाकिवेक । ऐ वरदार विमाता ऐ प्रकार दखलिकारि थाकिया आपन सपतिनि-पुत्री वरदामनिके सजातीते विवाह दिया फौत करे । वरदामनि आपन विमातार श्राद्ध आदि करिया ऐ दानेर विशयेते दखलिकारि थाकिया किछु काल परे वरदामनि आपन स्वामिके राखिया लोकान्त

हइयाछे। एक्षन ऐ गोलकमनि आपन पितार गङ्गारामरायेर ओयारिस जानाइया नालिस करे। अतएव धर्मशास्त्र अनुसारे ए विषय काहारे घटीवेक इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीयत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अत्र यद्यपि प्रश्नपत्रे लिखितमस्ति मदनरायस्य कन्या वरदामणी स्वविमातुः श्राद्धादिकं कृत्वा तद्दानकृतधने आयत्तत्वं सम्पाद्य किञ्चित्-कालानन्तरं स्वपतिं रक्षित्वा मृतेति, परन्तु वरदामण्या विमाता प्रश्नपत्र-लिखितानां स्त्रीणां मध्ये का भवतीति प्रश्नपत्रेण ज्ञातुं न शक्यते; तथापि प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्तस्य सत्यत्वञ्चेत् तदा वरदामण्याः यदि कन्यापुत्र-दौहित्रपौत्रप्रपौत्रसपत्नीपुत्रपौत्रप्रपौत्रभ्रातृमातृपितृपर्य्यन्तानां मध्ये कश्चिन्ना-स्ति चेत्तदा तत्पत्युरेवाधिकारः। प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्प-दीभूतधनस्य वरदामण्याः कन्यावस्थायां पितृदत्तत्वेन सौदायिकस्त्रीधनत्वात् कन्यावस्थायां पितृदत्तसौदायिकस्त्रीधने च कन्यामारभ्य पितृपर्य्यन्तानामुपरि-लिखितानामभावे पत्युरधिकारस्यार्थसिद्धत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदाय-भागदायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा।
भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम्॥—इति दायभागादि(दाभा० पृ० ७६)ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ९०१। पृ० १०६) वचनम्॥१॥

विवाहकाले तत्पूर्वापरकाले वा स्त्रियै यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु धने प्रथमं कुमार्य्यास्तदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोस्तदनन्तरं च वन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः। सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्यौतुकधनवत् क्रमेण-

धिकारः—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० २३)विवादार्णवसेत्वादि(पृ० ५७) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तत्र यौतुकधने इति प्रस्तुत्य सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रस्याधिकार इति। पुत्राभावे दौहित्रोऽधिकारीति। दौहित्राभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्र इति। तदभावे सपत्नीपुत्र इति। तदभावे सपत्नीपौत्रस्तदभावे सपत्नीप्रपौत्र इति। एतत्पर्य्यन्ताभावे ब्राह्मदैवार्षगान्धर्वप्राजापत्याख्यविवाहपञ्चकलब्धयौतुकधने भर्त्तुरधिकारः—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० १९।२०)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बन्धुदत्तं तथा शुल्कमन्वाधेयकमेव च।
अप्रजायामतीतायां बान्धवास्तदवाप्नुयुः॥—इति दायभाग(पृ० ९२)दायक्रमसंग्रह(पृ० २०)विवादार्णवसेतु(पृ० ६०)विवादभङ्गार्णवादि(२ विवा० ४१५ क)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१४५)वचनम् ॥४॥

बन्धुदत्तमिति मातापितृभ्यां यद्दत्तम्, अतएव तत्पुत्राश्च भ्रातर[1] एव बान्धवाः तदाह वृद्धकात्यायनः—

पितृभ्याञ्चैव यद्दत्तं दुहितुः स्थावरं धनम्।
अप्रजायामतीतायां भ्रातृगामि तु सर्वदा॥ इति

सर्व्वदापदेन ब्राह्मादिपैशाचान्तविवाहिताया अप्रजाया[2] धनं भ्रातृगाम्येव भवतीति। स्थावरपदाद् दण्डापूपन्यायादेवापरस्य धनस्य सिद्धिः। बन्धुदत्तपदेन कन्यादशायां यत् पितृभ्यां दत्तं तदुच्यते—इति दायभाग(पृ० ९२)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

प्रथमं सोदराणां तदभावे मातुः मातुरभावे पितुः एषां पुनरभावे तद्धनं भर्त्तुः—इति दायभाग(पृ० ९५)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीयमासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१. भ्रातरो बान्धवाः—दाभा०।　　२. अप्रजसो धनं—दाभा०।

३३४१ नं

१९—रोवकारी मिछिल शदर देओयानि आदालत मो॰ कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेवेर वैठके। तारिक ९ माह जानेर इं सन १८३३ साल मोता-वके वाङ्गला २७ माह पौष १२३९ साल दिवस बुधवार—

मोछम्मात लक्ष्मीप्रिया आपीलाण्ट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ जयचन्द्रचौधुरि, रेष्पाडेण्टान

आपिलण्टेर उकिल मनसिं होसन आलि ओ हाजिर रेष्पा-डेण्टर उकिल सदासुकपण्डित हाजिर आइल, आर द्वितीय रेष्पाडेण्ट जयचन्द्रराय इयानामनामा ओ इस्ताहारनामा जारिते ओ खोद किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ। एइ मकर्द्दमा गतो नवम्वर मासेर २९ तारिखे आमार वैठके रोवकार हइया नालिसि आरजि प्रभृति कागजात् नां प्रिविन्सियाल कोर्टेर फयछला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर कागज-पत्र पडा हइया आपीलण्टेर उकिलेर उक्त उदाहरण सेरेस्ता हइते वाहिर करनेर हुकुम छादेर हइया मुलतवि छिल, अद्य करुणामयी ओ गएरह आपीलण्टान ओ जयचन्द्रघोष ओ गएरह रेष्पाडेण्टान ३०२६ लम्वरेर मोकर्द्द-मार कागजपत्र आर कमलाकान्त राय ओ गएरह वनाम गङ्गा-चरणसेन खास आपीलेर दरखास्त ओ ताहार सम्पर्कीय कागज-पत्रेर सहित आमार वैठके दरपेष इइया एइ दुइ मकर्द्दमार कोन-कोन कागज विशेषत एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था सकल प्रगाढ दृष्टे दृष्टी करा ओ पडा गेल। एवं एइ आदालतेर सन १८२७ सालेर २० ओ २८ नवम्वर तारिखेर लिखित दुइ केत्ता रोवकारि ओ व्यवस्था एइ आदालतेर पण्डितेर कालीप्रसाद-राय छापलेर मोकर्द्दमार ओ जे रेष्पाडेण्टर उकिल दुइ २ टाका किम्मतेर फेरस्त तिन केतार द्वाराय दाखिल करिलेक, ताहा पडा-गेल। ततपरे आपिलण्टेर उकिलके जिज्ञाशा गेल ये पूर्णिमार पुत्र ब्रजनाथ कोन वतसरे, कि जयदुर्गार वर्त्तमाने, कि ताहार

मृत्युर पर जन्म हय । जश्रोयाव दिलेक ये सन १२२९ साले जय-दुर्गार मृत्यु हय। ताहार मृत्युर पर सन १२३० साले पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर जन्म हय । वोध हइल ये आपीलाण्ट जेला रङ्गपुर ओ दिनाजपुरर संक्रान्तेर परगणे ववनपुर ओ गएरहर ग्रामसकल दाविर वस्तुर हिस्या चारि आना पाच गण्डार दखल पाओनेर दाविते एइ एजेहारे नालिस करे ये मुर्द्दाइयार स्वामि कृष्णचन्द्र-चौधुरिर पितामह सदाशिवचौधुरिर दुइ पुत्र; प्रथम मुर्द्दाइयार स्वामिर पिता रामचन्द्र, द्वितीय रामानन्द, सदाशिवेर मृत्युर पर ताहार जमिदारि ओ गएरह ताहार दुइ पुत्र उभये विभाग पाइया रामचन्द्र ज्येष्ठप्रयुक्त रकम नय आना, आर रकम सात आना रामानन्देर हिस्या निर्द्धारित हय । रामचन्द्र तिन पुत्र कृष्णचन्द्र ओ हरिश्चन्द्र ओ कृष्णानन्दके ओयारिष आर ऐ नय आनार कम त्यक्त वस्तु राखिया मृत्यु हय । आर उभयेर विभागानुसारे मुर्द्दाइयार स्वामी कृष्णचन्द्रके रकम चारि आना पाच गण्डा आर कृष्णानन्द ओ हरिश्चन्द्रके रकम चारि आना पनरो गण्डा पौछिल । एवं प्रत्येक आपन २ हिस्यार पर दखिलकार हइल। मुर्द्दाइयार स्वामि कृष्णचन्द्र दुइ स्त्रि, मुर्द्दाइया ओ जयदुर्गा एवं मुर्द्दाइयार गर्भजात कन्या पूर्णिमा आर जयदुर्गार गर्भजात नावालक पुत्र कीर्त्तिचन्द्रके राखिया सन १२१२ साले मृत्यु हइले कीर्त्तिचन्द्रेर नाम जारि हइले सन १२२० साले कीर्त्तिचन्द्रेर मृत्यु हय । ताहार पर जयदुर्गार नाम जमिदारिर ताहुते लेखा जाय। किन्तु मुर्द्दाइया ओ जयदुर्गा दुइ जनेइ एक अक्के जमिदारिर पर दखिलकार एवं उसुल तहसिलेर कर्म्मकर्त्ता छिल । परे सन १२२९ सालेर पौष माहाते जयदुर्गारो मृत्यु हय। आर शास्त्रानुसारे विरधीय जमिदारी मुर्द्दइयार एवं ताहार दौहित्रेर सत्त्व आछे। भैरवचन्द्र मुर्द्दाआलेहे जश्रोयाव देय ये शास्त्रानुसारे जयदुर्गार ओ किर्त्तिचन्द्रेर पिण्डाधिकारि एवं वलवत्त ओयारिस आमि इति ।

यदी स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थानुसारे, जाहा एइ आदालतेर इनफसालि ३०२६ लम्बरेर मकर्द्दमार ओ कमलाकान्तराय ओ(ग)एरह खास आपीलेर मकर्द्दमाते दाखिल, एवं ताहा हष्टे ऐ दुइ मकर्द्दमा इनफशान हय। प्रकाश आछे ये यदि पुत्र पितार तेर्य्य वस्तु ओयारिस सरवे पाइया इं पुत्रनां पौत्र ना राखिया मृत्यु हइया थाके एवं ताहार भग्निर पुत्रेर जन्म हइया किम्वा ताहार गर्भे थाके, तवे ताहार पितार दौहित्र उक्त त्याज्य वस्तुर ओयारिस ये पार्व्वणेर श्राद्ध ओ गएरह से करिते पारे हइवेक। आर यदि स्यात् दौहित्र ना जन्मिया थाके किम्वा ताहार मातार गर्भे ना थाके, ए प्रकारे उक्त मृत व्यक्तिर भग्नि, ये दौहित्र जन्मिवार आकर, ऐ ये पर्य्यन्त पुत्र ना हइवेक से पर्य्यन्त हकदार हइवेक। किन्तु मकर्द्दमार हालत हष्टे एवं उभयेर ओजर निष्पत्त्य कारण विशेषत ए मकर्द्दमाते व्यवस्था लओन उचित हइया हुकुम हइले ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये छओयाल—एइ ये रामचन्द्रचौधुरि मृत्त हय, तिन पुत्र ओयारिस राखे, ज्येष्ठा स्त्रिर गर्भजात कृष्णचन्द्र आर द्वितीया स्त्रीर गर्भजात हरिश्चन्द्र ओ कृष्णानन्द, आर तिन भाइ, पितार त्याज्य वस्तु एइ रकमे, ये चारि आना पाच गण्डा कृष्णचन्द्र, आर चारि आना पोनरो गण्डा हरिश्चन्द्र, ओ कृष्णानन्द आपन २ विभाग करिआ लय। ततपरे कृष्णचन्द्रेर मृत्यु हय। ओयारिस राखिल दुइ स्त्रि लक्ष्मीप्रिया ओ जयदुर्गा, ओलक्ष्मीप्रीयार गर्भजात पूर्णिमा नामे एक कन्या, आर जयदुर्गार गर्भजात कीर्त्तिचन्द्र नामे एक पुत्र, आर कृष्णचन्द्रेर त्याज्य वस्तु कीर्त्तिचन्द्रे। एवं कीर्त्तिचन्द्र नावालग ओ अविवाहिता मृत्युर पर ताहार माता जयदुर्गाते पौछिल। जयदुर्गारो मृत्यु हइल आर ताहार मृत्युर पर पूर्णिमार गर्भजात एक पुत्र व्रजनाथ नामे जन्म हय। इहातेइ वाङ्गला देसेर प्रचलित शास्त्रानुसारे मृत कृष्णचन्द्रेर क्रिया ओ कर्म्म पार्व्वणेर श्राद्ध प्रभृति करिवार क्षेमता पूर्णिमार पुत्र

व्रजनाथ राखे, कि किष्णचन्द्रेर वैमात्रेय भ्राता हरिश्चन्द्रेर पुत्र भैरवचन्द्र राखे। आर कृष्णचन्द्रेर त्याज्य वस्तु इहारदिगेर मद्धे कोन व्यक्तिके पौछे—जओयाव दुइ सप्ताह मद्धे लेखेन—एइ आदालतेर पण्डितके हाओला करा जाय—इति।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयनवमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य कृष्णचन्द्रस्य पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानादिक्रियाकरणक्षमतां मृतस्य कृष्णचन्द्रस्य दौहित्रोऽर्थात् पूर्णिमापुत्रो व्रजनाथ एव रक्षति, न तु कृष्णचन्द्रस्य वैमात्रेयभ्रातुर्हरिश्चन्द्रस्य पुत्रो भैरवचन्द्रः, एवं कृष्णचन्द्रस्य त्यक्तधनम्, यत्तन्मरणानन्तरं तत्पुत्रेण कीर्तिचन्द्रेण कीर्त्तिचन्द्रस्य मरणानन्तरं तन्मात्रा जयदुर्गया च प्राप्तम्, तद्धने यदि कीर्त्तिचन्द्रस्य मातुर्जयदुर्गाया मरणसमये कीर्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णिमायाः कश्चिदेकोऽपि पुत्रोऽर्थाद् व्रजनाथोऽन्यः कश्चिद् वा गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा आसीत् तदा तस्याधिकारः। जाते च तस्याधिकारे पुनरुत्पत्स्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थात् कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति। कृष्णचन्द्रस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधनमुत्तराधिकारित्वेन तत्पुत्रेण कीर्त्तिचन्द्रेण प्राप्तम्, अतस्तद्धनं कीर्तिचन्द्रस्यैव जातम्। अतस्तस्मिन्नप्राप्तव्यवहारे अकृतविवाहे च मृते सति तस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्ताभावेन तत्त्यक्तधनं तन्मात्रा जयदुर्गया उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तमपि जयदुर्गामरणोत्तरं कीर्तिचन्द्रत्यक्तधनं कीर्तिचन्द्रस्य मरणानन्तरं[1] ये कीर्तिचन्द्रस्योत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि पत्न्या मरणोत्तरं पत्न्यनन्तरं पत्युर्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति, तथा पुत्रमारभ्य

१. मात्रनन्तर—व्यप.।

पितृपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य धने मातुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि मातुर्म्मरणोत्तरं मात्रनन्तरं पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति ।

प्रकृते तु कीर्त्तिचन्द्रस्योत्तराधिकारिणां मध्ये कीर्त्तिचन्द्रस्य पुत्रमारभ्य तत्पितुः कृष्णचन्द्रस्य प्रपौत्रपर्य्यन्तानां कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रादर्थाद् व्रजनाथात् पूर्व्वं कीर्त्तिचन्द्रस्य त्यक्तधनाधिकारिणां मध्ये इदानीं कश्चिन्नास्तीति प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतयाऽवगमेन कीर्त्तिचन्द्रपितृदौहित्राधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्, सति च कीर्त्तिचन्द्रपितृदौहित्रे कीर्त्तिचन्द्रपितृव्यपुत्रस्य भैरवचन्द्रस्य नाधिकारः । यदि च कीर्त्तिचन्द्रस्य मातुर्जयदुर्गाया मरणसमये कीर्त्तिचन्द्रस्यैकोऽपि पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा नासीत्तदा कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या कीर्त्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णिमायास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्द्धने दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रे स्वतः कीर्त्तिचन्द्रस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतः कीर्त्तिचन्द्रस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्याः कीर्त्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णिमाया नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्राणां वोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनु-दायभाग-दायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-श्राद्धतत्त्व-शुद्धितत्त्वविवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्य्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते—इति मनुवचनम् ॥१॥

पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्यः मातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्यः वृद्धप्रमातामहेभ्यः स्वधोच्यताम्—इति श्राद्धतत्त्वादिग्रन्थ(श्रात० पृ० २४३)धृतगोभिलवचनम् ॥२॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

दृश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिदायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति। तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्र (स्तदभावे) पितृवैमात्रेयपुत्रः—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम्। ८॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्त-थापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणापिण्डदातृत्वाभावान्नाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वमङ्गादङ्गात् सम्भवतीत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति-भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥९।

एतदब्दीयफेवरवरीमासीयषोडशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

२०—रोवकारि मिछील शदर देओयानी आदालत मो० कलि-काता आदालत मजकुरेर हाकीम श्रीयुत हेनरी सिकिसपीयेर साहेवेर वैठके। तारिख ३० जानेर इं सन १८३३ साल मोतावेक वाङ्गला सन १२३९साल १९ माघ दिवस वुधवार—

शामरासदासवनाम वेहालचन्द्र मोतओफीर ब्रि, राधा-चरण नावालगेर माता सुन्दरीदासी—

सोफलेष—

छाएल हाजीर आइल। छाएलेर छओयाल इं० सन १८३१ सालेर २० दिजम्बरेर लिखित, जेला छिलहट्टेर एकटी जज-साहेवेर फयछलार नाराजीर मोजेवातेर न्याय एइ मासेर १७ तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम मोतावक जेला मजकुरेर तारिख मजकुरेर फयछला आर सादा कागजेर उपर एक केता व्यवस्था सम्वलित, जाहा एइ मासेर २३ तारिखे दाखिल हइया छिल, अनु-मोधने आइल। यद्यपि स्यात् तारिख मजकुरेर जजसाहेव मौछा-फर फयछलार लेखा आछे जे काजीयार वस्तु दोकान मजकुर मुर्दाआलेहेर स्वामीर स्वकृत थाकाते मुर्दाइ अर्थात् छाएल ताहार हकदार शाव्यागुजाइ हइते पारे ना। ए प्रयुक्त मोफनेशी आपील मञ्जुरि अथवा नामञ्जुरिर विषये चुडान्त हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्वे हुकुम हईल जे छाएलेर छओयाल एइ मोकर्द्दमार फयछला सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय एइ हुकुमे जे जदि स्यात् दुइ भ्राता, एक जन प्राप्तव्यवहार, द्वितीय, अप्राप्तव्यवहार, एकत्र थाके, आर भ्राता प्राप्तव्यवहार आपन सोपार्ज्जित हइते दोकान कारवार जारि करे। ए प्रकारे छोट भ्राता एमत दोकानेर किछु हिस्यार हकदार, एवं कि आन्दाज हइते पारे कि ना-ताहार व्यवस्था एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण-इति व्यवस्था दाखिल हओनेर परे कागजेर सामिल दरपेष हय—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीथिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयत्रिंशत्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति-रूपपत्रमेवं .तत्समर्पितैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रमेतद्विवादविषय-

निविष्टजयपत्रञ्च यत्तदब्दीयफेवरवरीमासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि द्वयोर्भ्रात्रोरेकत्रवासिनोर्म्मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो द्वितीयश्चाप्राप्तव्यवहारो भवति, एवञ्च प्राप्तव्यवहारो भ्राता स्वोपार्ज्जितधनात् हट्टे वाणिज्यव्यापारं करोति, तत्र यदि प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपार्ज्जितधनं पैतृकादिसाधारणधनाद्युपघातेनोपार्ज्जितं स्यात्, तद्धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे कनिष्ठभ्रातुरपि शरीरायासश्चेद्यदेतत्तद्धर्म्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रेणैवं प्रभुसमर्पितजयपत्रलिखितेन यद्यप्यर्थी कदाचिद् विवादास्पदीभूतवाणिज्यविषये कर्म्म कृतवान् इत्यर्थिप्रत्यर्थिनोर्द्वयोरेव साक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तेन ज्ञातमित्यनेन वावगम्यते तदा तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्यं पञ्चधा विभज्य तत्र भागद्वयं कनिष्ठभ्रातुर्भवितुमर्हति, साधारणपैतृकादिधनाद्युपघातेन स्वशरीरायासेन च प्राप्तव्यवहारस्य ज्येष्ठभ्रातुस्तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपार्ज्जितधने अंशद्वयाधिकारित्वेन कनिष्ठभ्रातुरेकांशाधिकारित्वात्। अतएवैतादृशसाधारणधनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तद्व्यापारे द्वयोर्भ्रात्रोः शरीरायाससत्त्वेन पञ्चधाविभक्ततद्व्यापारोत्पन्नधने कनिष्ठभ्रातुरंशद्वयाधिकारित्वस्य शास्त्रीयत्वात्। यदि च प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपार्ज्जितधनं साधारणपैतृकादिधनाद्युपघातेन नार्ज्जितं स्यात् तदा साधारणपैतृकादिधनाद्यनुपघातार्ज्जितं धनं ज्येष्ठभ्रातुरेवासाधारणं जातम्। अतस्तद्धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे यदि भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारणप्रतियोगित्वेन कनिष्ठभ्रातुः शरीरायासस्तदा तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्ये कनिष्ठभ्रातुस्तृतीयांशाधिकारः, ज्येष्ठभ्रातुरसाधारणधनशरीरायासाभ्यां तद्धनोपार्जकत्वेनांशद्वयाधिकारित्वेनशरीरायासमात्रकर्त्तुः कनिष्ठभ्रातुस्तृतीयांशाधिकारित्वस्य शास्त्रीयत्वात्। यदि च प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपार्ज्जितधनं साधारणपैतृकादिधनाद्युपघातेन नार्ज्जितं स्यादेवं तद्धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारेऽपि भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारणप्रतियोगित्वेन कनिष्ठभ्रातुः शरीरायासोऽपि नासीत्, यदि चेत् शरीरायासस्तदा

सोऽपि भृत्यत्वेनार्थाद् वेतनग्राहित्वेन, यत्प्रभुसमर्पिततज्जयपत्रलिखित-सिद्धीदासीप्रत्यर्थिनीनिर्द्दिष्टोत्तरपत्रलिखिततात्पर्य्यार्थेनार्थाद् अर्थी तद्वाणिज्यव्यापारे भृत्यत्वेनार्थाद्वेतनं गृहीत्वा गुमास्ताशब्दप्रतिपाद्यत्वेन स्थित इत्यनेनावगम्यते तदा तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्ये कनिष्ठभ्रातुरंशित्वेन किञ्चिदपि ग्रहणाधिकारिता नास्ति, साधारणपैतृकादिधनाद्यनुपघातेन स्वोपार्जितधनस्य ज्येष्ठभ्रातुरसाधारणधनत्वेनासाधारणस्वत्वास्पदीभूतेन तेन धनेन कनिष्ठभ्रातुर्भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारणप्रतियोगित्वेन शरीरायासमन्तरेण ज्येष्ठभ्रातृकृततद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्ये ज्येष्ठभ्रातुरेवासाधारणसत्त्वेन, तत्र कनिष्ठभ्रातुस्साधारण्याप्रतियोगिनः किञ्चिदपि स्वत्वाभावात्—इति वङ्गदेशान्तर्गतश्रीहट्टप्रदेशप्रचलितदायभागदायतत्त्व-दायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

साधारणं समाश्रित्य यत्किञ्चिद्वाहनायुधम् ।
शौर्य्यादिनाप्नोति धनं भ्रातरस्तत्र भागिनः ॥
तस्य भागद्वयं देयं शेषास्तु समभागिनः—इति दायभागादिग्रन्थ-धृत(दाभा० पृ० १०७)व्यासवचनम् ॥ १ ॥

यत्र पुनः साधारणधनमात्रेणैकस्य व्यापारोऽपरस्य धनशरीरायासाभ्यां तत्रैकस्यैको भागोऽपरस्य भागद्वयं न्यायावगतमेव निबद्धम् । एतेन चैतदपि सिद्ध्यति यत् साधारणधनोपघाते सति यस्य यावतोंऽशस्य स्वल्पस्य महतो वोपघातस्तस्य तदनुसारेण भागकल्पना कार्या—इति दायभाग(पृ० १०९।११०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तस्मात्साधारणधनोपघातार्जितं धनं विभजेदिति विधिः—इति दायभाग(पृ० ११५)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तस्मादनुपघातार्जितमर्ज्जकस्यैव, नेतरेषामिति सिद्धम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० ११२) ॥ ४ ॥

एवं यत्रैकेन शरीरव्यापारमात्रेणापरेण च स्वधनशरीरायासाभ्याम-

र्ज्जितं तत्र शरीरायासमात्रेणार्ज्जकस्यैकांशित्वं धनशरीरायासाभ्यामर्ज्जकस्य द्व्यंशित्वं न्यायसाम्यात्--इति दायक्रमसंग्रह(पृ० २८)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

विभक्तेनाविभक्तेन वा साधारणधनानुपघातेनापरव्यापारनैरपेक्ष्येण च यदर्ज्जितं तदर्ज्जकस्यैव तदविभाज्यमितरैः--इति दायक्रमसंग्रहग्रन्थ-(पृ० २२)लिखनम् ॥ ६ ॥

एतदब्दीयमार्चमासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्—

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

३३२५ नं—

२१—रोवकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिसपीएर साहेबेर वैठके, तारिख ५ फित्ररेल इं सन १८३३ साल मोतावेक वाङ्गला सन १२३९ साल तारिख २५ माघ दिवस मङ्गलवार—

गोशाञीचन्द्रकविराज आपीलाण्ट

मोछम्मात जयमनी जीवतमान

ओ कृष्णमणि मोतओफात रेष्पाडण्टान

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी हयदर आलि ओ रेष्पाडण्टानेर मध्ये जीवतमान एक जन मोछम्मात जयमणिर उकिल मुनशी गोलाम वतुल हाजिर आइल। एवं इस्तहारनामा जारि हओयाते ओ कृष्णमणी मोतओफात रेष्पाडण्डेर कोनो ओयारिश ए आदालते हाजीर आइल ना। एइ मोकद्दमा इत पूर्व्व इं० सन १८३२ सालेर शेतम्वर माहार ·० तारिखे आमार वैठके रोवकार एवं साम्यक[1] कागजात पडा हइया तारिख मजकुरेर रोवकारिर लिखित मते एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था

१ सम्वलित—इति साधीयान् पाठः।

तलब हइया आर व्यवस्था पौंछिले पर गतो कल्य दरपेष हइया ताहार अनुमोधनान्ते दिवावसान प्रयुक्त मुलतवि छिल, अद्य पुनराय दरपेष हइल। एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित यञ्ओयावेर द्वाराय एइ मोकद्दमार आशल मुर्दाइयान मोछम्मात कृष्णमणी ओ जयमनीके भैरवकविराजेर तरफेर जोवानि हेवार सत्वतार विषये जेलार आदालतेर व्यवस्था वहाल हइते छे। किन्तु जेलार फयछलार द्वाराते, याहा प्रविनशीयान क्रोटेर तजविज कालिन वहाल हइयाछे, प्रकाश हय ना ये कृष्णमणीर हक भैरवेर हेवार वुनियादे किम्वा आपन पिता गङ्गानारायणेर उत्राधिकारिर हकेर वुनियादे डिगरि हइयाछे। ये कारण फयछला मजकुरेते उहार हक दुइ प्रकारेइ जप्त[1] (?) हइयाछे, आर एइ क्षणे एइ विशय मोकद्दमार तजविजे मातवर हइयाछे ये हेतुक मोछम्मात कृष्णमणीर प्रविनशीयान क्रोटेर फयछलार पर मृत्यु हइयाछे, परे एइ विशयेर तलास आर तजविज उचित ये कृष्णमनीर हिस्यार पर उभय विवादिर मध्ये कोन व्यक्ति हकदार हइते पारे। आर पण्डितेर व्यवस्थार द्वाराते प्रकाश ये यद्यपि स्यात् मोछम्मात कृष्णमणी विवादीय वस्तु हेवार द्वाराय पाइया थाके, वस्तु मजकुरा ताहार स्त्रीधन हइवेक, आर उहाके क्षमता आछे ये आपन इतसा मते हस्तान्तर करिते पारे, ये प्रकार जयमनी रेष्पाडण्ट एइ आदालतेर आपीलेर मौजेवातेर जञ्ओयावे ताहा उहाके हेवाकरण प्रकाश करियाछे। आर यदि स्यात् विवादीय वस्तु मोछम्मात मजकुराके पितृ उत्राधिकारिर सुरते पौंछियाछे, आर आपीलाण्टेर पिता वैद्यनाथेर परे, ये प्रकार मोकद्दमार कागजातेते प्रकाश, मोछम्मात मजकुरार मृत्यु हइयाछे, तवे ए प्रकारे पण्डितेर व्यवस्था मते मोछम्मात कृष्णमणीर हकीयतेर हकदार ना आपीलाण्ट ना रेष्पाडण्ट हइते पारे। यदि गङ्गानारायणेर ओयारिष, ये केहो थाके, उहार हक राखिवेक। एइ सकल विशयेर प्रति

१. जद—व्यप०।

दृष्टि हुकुम हइल, ये जयमणीर प्रकाश करा सोछम्मीत कृष्णमणीर हेवार विषये ये प्रकार एइ आदालतेर आपीलेर मौजेवातेर यत्रोयावे लिखियाछे, रेष्पाडण्टेर स्थाने सावुद तजवेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञाशा कराजाय ये यदि स्यात् कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि उत्तराधिकारिर एवं दानेर दुइ बुनियादे दरपेष करे, आर दुइ मतेइ डिगरि हासिल करे, आर तत्परे आपन हकीयत दोशराके हेवा करिया मृत्यु करे—ए प्रकारे एमत हेवा सिद्ध हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयषड्विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि काचित् स्त्री धनस्य प्राप्तीच्छापूर्व्वकाभियोगमुत्तराधिकारित्वदानाभ्यां करोति, एवमुत्तराधिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव हेतुभ्यां धर्म्माधिकरणतो जयपत्रं प्राप्नोति, तदनन्तरं धर्म्माधिकरणीयजयपत्रानुसारेण स्वस्वत्वास्पदीभूतधनमन्यस्मै दत्त्वा मृता स्यात्तदैतादृशदानं सिद्ध्यत्येव, उत्तराधिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव तस्याः स्वत्वस्य तद्धने निश्चितत्वेन द्वयोर्मध्ये दानस्यापि तत्स्वत्वोत्पादकस्य सत्त्वात्। एतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तप्राचीनव्यवस्थालिखितप्रकारकतद्दानानुसारेण तस्यास्तस्मिन् सौदायिकस्त्रीधने स्वेच्छया दानाधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्—इति वङ्गदेशचलितोपरिलिखितव्यवस्थालिखितग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

तद्व्यवस्थालिखितपञ्चमप्रमाणं षष्ठप्रमाणञ्चेति। एतदब्दीयमार्च्चमासीयाद्वादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२२—रोवकारि मिसिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर बैठके। तारिख २० फिवरेल इं सन १८३३ साल मों बाङ्गला सन १२३९ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

सोछम्मांत लक्ष्मीप्रिया आपीलाण्ट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह रेष्पाडेण्टान्

आपीलण्टेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेष्पाडेण्टर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल। आर द्वितीय रेष्पाडेण्ट जयचन्द्रचौधुरि इयानामा ओ इस्ताहारनामा जारि हओयातेओ सयं किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ। एइ मकद्दमा गतो जानेर माहार ९ तारिखे आमार बैठके रोवकार एवं एइ मकद्दमार साम्यक कागजात आर ३०२६ लम्वरेर मकद्दमार कागजात आर कमलाकान्तराय ओ गयरह वनाम गङ्गाचरणसेनेर खास आपिलेर छओयाल ओ तत्समिभ्यारि कागजात पडा हइया तारिख मजकुरेर रोवकारिर लिखित छओयालेर जओयाव एइ पण्डितेर स्थाने तलव हइया मुलतवि छिल, अद्य एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव दाखिल हओने पुनुराय रोवकार आर गतो जानेन माहार २९ तारिखे अनुमोधन हओया भैरवचन्द्र रेष्पाडेण्टर छओयाल अनुमोधने आइल। तत्परे हाजिर रेष्पाडेण्टर उकिल सदासुखपण्डित क्रोट आपीलेर दाखिल करा रेष्पाडेण्टर छओयालेर नकल एक केता दुइ टाकार किम्मतेर एक केता फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करे, पडागेल। यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव हइते प्रकाश आछे ये कृष्णचन्द्रेर पुत्र किर्त्तिचन्द्रेर त्यार्ज्य वस्तु, ये ताहार माता जयदुर्गाते आसिया, जयदुर्गार मृत्युते किर्त्तिचन्द्रेर भग्नी पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथके अर्शे। किन्तु रेष्पाडेण्टर उकिल जाहेर करे जे विवादीय जायेगा जयदुर्गार मृत्यु हओने भैरवचन्द्रेर दखले आइसे। एवं एखन

পর্য্যন্ত তাহার দখলে আছে, আর পূর্ণিমার পুত্র ব্রজনাথের মৃত্যু হইয়াছে। আর মোছম্মাত পূর্ণিমার সেত্রী রোগি আছে, শাস্ত্রানুসারে বৈমাত্রেয় ভ্রাতার কিম্বা তাহার পুত্রের ত্যাজ্য বস্তুর অধিকারিত্ব রাখে না। এতদ্ভিন্ন মোছম্মাত পূর্ণিমার বিবাহ, জাহার সহিত নিঃধার্য্য হইয়াছিল পরে তাহার সহিত না হইয়া অন্য ব্যক্তির সহিত বিবাহ হইয়া পুত্র উৎপত্তি হয়, আর এ প্রকার স্ত্রী এবং পুত্র পার্ব্বণের শ্রাদ্ধের ও পূর্বপুরুষের ত্যাজ্য বস্তুর অধিকারি হয় না, আর জখন মুদাইআনের দাবি কোর্টের পণ্ডিতের ব্যবস্থার লিখিত, যে লক্ষ্মীপ্রিয়ার বিবাদীয় জায়গার অধিকারিত্ব নাই, দৃষ্টে ডিসমিস হয় তখন রেস্পাণ্ডেণ্টের ওজরের তত্ত ও তদান্ত করণের আবিশ্বক থাকিল না। জে প্রকার প্রিবিনসিয়ান কোর্টের ফয়ছলা তাহার দৃষ্টান্ত আছে। আর আপীলাণ্টের উকিল জিজ্ঞাসা মতে জাহের করে যে পূর্ণিমার পুত্র ব্রজনাথের এই দরুণ মৃত্যু হইয়াছে, আর এখন পর্য্যন্ত তাহার পুত্র হওনের সম্ভাবনা আছে, আর মোছমাত মজকুরার বিবাহ দুই বার হয় নাই, এবং তাহার সেত্রি রোগ নাই ইতি। যদ্যপি স্যাৎ মোকদ্দমা নিষ্পত্ত্য হওনের পূর্ব্বে বিচার অনুসারে উভয় বিবাদীর ওজর নিষ্পত্ত্য করা উচিত। এ কারণ হুকুম হইল যে এই রোবকারির নকল এই হুকুমে জে নিচের লিখিত ছওয়ালের জওয়াব আগতো মিছিলে লেখেন এই আদালতের পণ্ডিতকে সমার্পন করা জায়।

১ প্রথম—এই যে যদি স্যাৎ পূর্ণিমার পুত্র ব্রজনাথের জন্ম হইয়া মৃত্যু হইয়া থাকে, তবে কির্ত্তিচন্দ্রের ত্যাজ্য বস্তু, যাহা ব্রজনাথকে আসিয়াছিল, তাহা তাহার মাতাকে অর্শে কি না।

২ দ্বিতীয়—এই যে পূর্ব্বপুরুষের বস্তুতে উত্তরাধিকারি ব্যক্তি সেত্রি রোগ জন্য তাহার অধিকারিত্বতে প্রতিবন্ধক হয় কি না। যদ্যপি স্যাৎ উক্ত সেত্রিরোগ অধিকারিত্বের প্রতিবন্ধক হয়, তবে

व्रजनाथेन[1] त्याज्य वस्तु ताहार मातामहि मोछम्मात लक्ष्मीप्रियाके अर्शिवेक कि ना।

३ तृतीय--एइ ये मोछम्मात पूर्णिमार विवाह कोन व्यक्तिर सहित निःधार्य्य हइया पूर्व्व कथवकथनेर वहिर्भूत हइया अन्य-कोन व्यक्तिर सहित विवाह हय आर ताहा हैते ताहार पुत्र सन्तान जन्मिया थाके। ए मते मोछम्मात पूर्णिमा किम्वा ताहार पुत्र कीर्त्तिचन्द्रेर त्याज्य वस्तुर अधिकारि हइवेक कि, पूर्णिमार माता लक्ष्मीप्रिया इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयमार्च्चमासीयषोडशदिनसम्वन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि पूर्णिमापुत्रो व्रजनाथ उत्पन्नो भूत्वा मृतः स्यात् तदा कीर्त्तिचन्द्रस्य त्यक्तधनं यदुत्तराधिकारित्वेन व्रजनाथेन प्राप्तम्, तद्धने यदि व्रजनाथस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्तानां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तन्मातुरेवाधिकारइति।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्युत्तराधि(कारि)व्यक्तेः श्वेतरोगस्तदा यथाशास्त्रप्रायश्चित्ताचरणं विना पूर्व्वाधिकारित्यक्तधने अधिकारस्य प्रतिरोधो भवत्येव, यथाशास्त्रप्रायश्चित्ताचरणे सत्यधिकारस्य प्रतिरोधो न भवतीति।

---

१. व्रजनाथेर—इति साधीयान् पाठः।

अत्र प्रमाणम्—

मृते पितरि न क्लीबः कुष्ठ्युन्मत्तजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशभागिनः ॥—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

कुष्ठी अकृतप्रायश्चित्तः । कृतप्रायश्चित्तस्य पापाभावादंशित्वम्, पापस्यैवानंशितामूलत्वादिति साम्प्रतम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ-(पृ० २१२ क)लिखनम् ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि पूर्णिमाया विवाहः केनचिद् व्यक्तिविशेषेण सह निर्द्धारितोऽपि पूर्व्वकथावहिर्भावेणान्येन केनचित् सह विवाहो जातः स्यादेवं तेन पुरुषेण पूर्णिमायाः पुत्रो जनितश्चेत्तदा तस्याः पूर्णिमायाः किंवा[1] तत्पुत्रस्य कीर्त्ति-चन्द्रत्यक्तधने एतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तपूर्व्वव्यवस्थालिखितप्रकारेणा-धिकारो भवत्येव—इति वङ्गदेशचलितोपरिलिखितव्यवस्थालिखितग्रन्था-नुसारिणी व्यवस्था—

एतदब्दीयमार्च्चमासीयषड्विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं-व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२३—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम । कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपूल साहेवेर वैठके, तारिक २० फिवरेल इं सन १८३३ साल मोतावेक वाङ्गला सन १२३९ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस वुधवार—

दुलारसिंह ओ गयरह	आपीलाण्टान्
राणी पद्मावती ओ गयरह	रेष्पाण्डाण्टान्

---

१. किम्वा—व्यप० ।

आपीलाण्टानेर उकिलान् मुनशी होशन आलि ओ मुनशी आब्बाछ आलि आर राणी पद्मावती रेष्पाडण्टेर उकिलान् सदासुखपण्डित लाला बस्तिलाल हाजिर आइल ओ आपीलाण्टानेर उकिल मुनशी दादार बक्स ओ रेष्पाडण्टेर उकिल मुनसी गोलाम वतुल वेयारामी ओजरे हाजिर नाइ। एइ मोकद्दमा एइ मासेर १४ तारिखे आमार वैठके रोवकार हइया प्रीविनशीयान क्रोटेर नालिसि आरजि ओ गयरह कागजात लम्बर पर्य्यन्त पडा हइया मुलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया प्रीविनशीयान क्रोटेर वाकि कागजात फयछला पर्य्यन्त एवं एइ आदालतेर कागजात अनुमोधने आइल। वोध हइल ये आपीलाण्टान् सावेक मुर्दाइयान परगणे पौयाखालि ओ गयरह महालते खेराजी ओ नाखेराजी दखल पाओनेर दाविते एइ एजहारे नालिस करे ये परगणे पौयाखालि ओ गयरह मुर्दाइआनेर पितामह गरिवदासेर हासिल करा, उक्त गरिवदाष ताहाते जिवद्दशा पर्य्यन्त दखलिकार थाकिया पाच पुत्र हरिसिंह ओ जयसिंह ओ रनसिंह ओ भातुसिंह ओ अचलसिंह मुद्दाइआनेर पिताके राखिया मृत्यु हय। हरिसिंह ओ ताहार मृत्युर पर शुभकरणसिंह तस्य पुत्र आर शुभकरणसिंहेर मृत्यु, ये सन १२१६ सालेर फाल्गुन माहाते हइयाछे, ताहार पर पहुपतसिंह आर पहुपतसिंहेर मृत्युर पर रङ्गलालसिंह भ्रातृगण ओ पितृव्यदिगेर अनुमति ओ एतर्फाके पितृ-पितामह त्याय्यं वस्तुर पर एवं चकदेनाओरि ओ गयरहर उपर, याहा ताहार मुनाफा हइते खरिद हय, कावेज ओ दखलिकार एवं उसुल तहशीलेर कर्म्मकर्त्ता थाकिया, भ्रातृगण ओ पितृव्यदिगेर एवं मुर्दाइआनेर प्रतिपालन करिते-छिल। रङ्गलालसिंहेरओ सन १२३२ साले निःसन्तान ओ अविवाहित विणा ओछी मोकरार मृत्यु हइल, आर मुर्दाइआन व्यतिरेक उहारदिगेर उत्तराधिकारि ओ पिण्डाधिकारि द्वितीय केह नाइ, एवं शास्त्रानुसारे मृत रङ्गलालसिंहेर श्राद्ध ओ क्रिया-

कर्म्मं दुलारसिंह मुर्दाइर हस्तेते हइयाछे, इति। राणी पद्मावती मुर्दाआलेहे जओयाव देय ये परगणे पौयाखालि हरिसिंहेर हासील करा, आर चकदेनाओरि ओ गयरह मुर्दाआलेहेर स्वामी पहुपतसिंहेर पिता शुभकरणसिंहेर खरिदा। मुर्दाआलेहेर स्वामी पुष्यपुत्र राखनेर विषये उहाके अनुमति देय आर रङ्गलालसिंह कर्त्तापुत्र राखनेर भार उहार प्रति अर्पन करिया एक केता ओछीयतनामा ऐ विषयेर लिखिया मृत्यु हय। आर पूर्व्व पुरुषेर श्राद्ध ओ क्रियाकर्म्मते आपनि अशक्त थाकन प्रयुक्त त्याज्यं वस्तुर कर्त्तार उत्तराधिकारि ताहार त्याज्य वस्तु हइते नैरास हइते पारे ना। आर अमृतलाल ओ चरङ्गीलाल ओ कालीप्रसाद ओ विशनलाल मुर्दाआलेहेर जओयावेर मजमुन कछल करिया जओयाव गुजराय। आर प्रीविनसियान कोर्टेर तजविज कालिन मुर्दाइआनेर दावि डिसमिस हय। यदि स्यात् कागजात हइते प्रकाश ये मुर्दाइआनेर आशल दावि रङ्गलालेर त्याज्यं वस्तुर वावत, आर गरिवदास ओ गयरहेर त्याज्य वस्तुर उल्लिक करार कारण किरल (?) पूर्व्व पुरुषेर परस्पर मृत्युर विवरण प्रकाश जन्य लेखा गिया छे। आर आपीलाण्टानेर एजहार एइ ये उहारदिगेर वंशे मैथिलि शास्त्र चलन आछे—उचित वोध हय। एवं रेष्पाडण्टओ ताहाते अस्वीकार नहे। ए प्रयुक्त एइ मोकद्दमार एइ तजविज ओ रोधकरण ये रङ्गलालसिंह, ये अविवाहित ओ निःसन्तान मृत्यु हइयाछे, ताहार त्याज्यं वस्तुर उत्तराधिकारित्व उभय विवादि ओ तृतीय व्यक्तिर मध्ये कोन व्यक्ति मैथिलि देशेर प्रचलित शास्त्रानुजाइक राखे। परे हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये छओयालेर यओयाव ये विवादीय जमीदारी हरिसिंह हइते हरिसिंहेर पुत्र शुभकरणसिंहे आर शुभकरणसिंहेर मृत्युर पर शुभकरणसिंहेर ज्येष्ठ पुत्र पहुपतसिंहे, आर पहुपतसिंहे मृत्युर पर शुभकरणसिंहेर कनिष्ठ पुत्र रङ्गलालसिंहे विणा विभागे अर्शिल। तत्परे

रङ्गलाल निःसन्तान ओ अविवाहित मृत्यु हय, राखिल मुद्दाइयान अचलसिंहेर पुत्रगण आर अर्ज्जनसिंह रणसिंहेर पुत्र आर तुलसीसिंह भातुसिंहेर पुत्र गरिवदासेर पुत्रगण हरिसिंहेर भ्रातृ-वर्ग आर सोछम्मीत पद्मावती मुर्दाआलेहे पहुपतसिंहेर स्त्री आर शुभकरणसिंहेर दौहित्र उपेन्द्रलाल ओ दयालाल ओ गिरिधारि-लाल ओ प्रेमलाल ओ जनकलालके परे। मैथिलि देशेर प्रचलित-शास्त्र अनुजाइक रङ्गलाल मजकुरेर त्याज्यं वस्तु इहारदिगेर कोन व्यक्तिके अर्शिवेक–एक सप्ताह मध्ये वचन दृष्टान्त सम्वलित लिखेन एइ आदालतेर पण्डितके समर्पन कराजाय–इति।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयमार्च्चमासीयषोडशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि विवादास्पदीभूतसराजकरस्थावरं (धनं) हरिसिंहस्य मरणानन्तरं तत्पुत्रेण शुभकरणसिंहेन प्राप्तम्, शुभकरणसिंहस्य मरणानन्तरं तज्ज्येष्ठपुत्रेण[1] पुहपतिसिंहेन प्राप्तम्, तन्मरणानन्तरं तद्भ्रात्रा रङ्गलालसिंहेनार्थात् शुभकरणसिंहस्य कनिष्ठपुत्रेणाविभक्तत्वेन प्राप्तम्, तदनन्तरं रङ्गलालसिंहोऽविवाहितो निस्सन्तान एवाचलसिंहस्य पुत्रानर्थिनः एवं रणसिंहस्य पुत्रमर्ज्जनसिंहं भातुसिंहस्य पुत्रं तुलसीसिंहं चैवं पुहपतिसिंहस्य पत्नीं पद्मावतीनाम्नीं प्रत्यर्थिनीं चैवं शुभकरणसिंहस्य दौहित्रानुपेन्द्रलालदयालालगिरिधारीलालप्रेमलालजनकलालान्[2] संत्यज्य मृतः स्यात्तदा रङ्गलालत्यक्तधने रङ्गलालस्य पुत्रमारभ्य तत्प्रपितामहपुत्रपर्य्यन्तानामर्थाद् गरीवदासस्य पुत्रपर्य्यन्तानाम्मध्ये यदि कश्चिन्नास्ति तदा रङ्गलालप्रपितामहगरीवदासपौत्राणामर्थादर्थिप्रभृतीनां प्रभुकृतप्रश्नलिखितानामधिकारो रङ्गलालभ्रातृपत्नी पद्मावती यावज्जीवं स्वभर्तृकुलोपयुक्तग्रासाच्छादनस्यावश्यक-

१. तत्केज्येष्ठ०—व्यप०।
२. ०जनकलालान—व्यप०।

विधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तस्य चाधिकारिणी भवति—इति मिथिलादेश-चलितमनुविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य वचनम् ॥१॥

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।

यस्त्वासन्नतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत् ॥–इति विवादचन्द्रविवादरत्नाकरादि (वि० पृ० ५६६) ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० २१६)वचनम् ॥२॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् ।—इति मनुवचनम् ॥३॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि–इत्यादि विवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥४॥

बन्धुरत्र सपिण्डः सकुल्यः सगोत्रः—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३६)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्त्तते—इत्यादि विवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम्[१] ॥६॥

भरणं चास्य कुर्व्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात्—इति विवादचिन्तामण्यादि(पृ० २५०)ग्रन्थधृतशङ्खवचनञ्चेति ॥७॥

एतदब्दीयापरेलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१. वृद्धमनु–इति, धको० ।

२४—रोवकारि सिसिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयाल-पोल साहेवेर वैठके। तारिख २५ आपरेल इं सन १८३३ साल मोतावके वाङ्गला सन १२४० साल तारिख १४ वैशाख दिवस वृहस्पतिवार—

मसम्मात लक्ष्मीप्रिया आपीलाण्ट
भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह रेष्पाडेण्डान

आपीलाण्टेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेष्पा-डेण्ड भैरवचन्द्रचौधुरिर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइ-लेन, आर द्वितीय रेष्पाडेण्ड जयचन्द्रचौधुरि इयानामनामा ओ इस्ताहारनामा जारि हेतु आपनि किम्वा उकिलेर द्वाराय ए आदालते हाजिर नाइ। एइ मोकद्दमा भिन्न २ दिवसे आमार वैठके रोवकार हइया एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ कागजात आर उभयेर दाखिल करा दरखास्तादी पडा हइया व्रजनाथेर पिताके दरखास्त दाखिल करण हुकुम हइया मुलतवि छिल, अद्य पुनुराय रोवकार आर व्रजनाथेर पिता गौरमोहनचट्टोपाध्यार दरखास्त ओ व्रजनाथेर माता मोसम्मात पूर्णिमार दरखास्त पडा गेल। यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर पूर्व्वेर ओ एइ क्षनेर व्यवस्थासकलेर द्वाराय प्रकाश आछे ये कीर्त्तिचन्द्रेर त्यार्य्यं वस्तु व्रजनाथके, आर यदि स्यात् पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर जन्म हइया मृत्यु हइयाथाके, तवे कीर्त्तिचन्द्रेर त्यार्य्यं वस्तु, याहा उत्तराधि-कारि हेतुते व्रजनाथके अर्शियाछिल, यदि व्रजनाथेर इस्तक पुत्र नां(?)पिता केह ना थाके, तवे ताहार माताके अर्शे, आर शेत्रि-रोगेर प्रायश्चित्त करणेते सेत्री रोगी व्यक्ति उत्तराधिकारिर वाधि-त्य(?)पूर्व्वपुरुसेर विशयेते हय ना। किन्तु व्रजनाथेर पिता गौर-मोहनचट्टोपाध्याय वर्त्तमान आछे। आर मोछम्मात पूर्णिमा जाहेर करे ये विवादीय वस्तु आमार पितार त्यार्य्य वस्तु, ओ ताहार विज पुरुसेर, एवं उक्त मोसम्मात सन्तान हओनेर आ-

स्वास राखे। आर एइ आदालतेर पण्डितेर पूर्व्वेर व्यवस्थाते विस्तारित करिया लेखा गियाछे ये यदि मोसम्मात जयदुर्गार मृत्युर समये कीर्त्तिचन्द्रेर पितार कोनो दौहित्र मातार गर्भे ना थाके, किम्वा जन्म ना हइया थाके, ए प्रकारे कीर्त्तिचन्द्रेर भग्नि अर्थात् मोसम्मात पूर्णिमा, ये कीर्त्तिचन्द्रेर पितार दौहित्रगणेर जन्माइवार आकरआछे, पूत्र जन्मान पर्य्यन्त कीर्त्तिचन्द्रेर विषयेते दखलिकार थाकिवेक। एमते कीर्त्तिचन्द्रेर त्याज्य वस्तुर उत्तराधिकारित्य. याहा व्रजनाथके अर्शियाछिल, ताहा उक्त मोसम्मातके अर्शे, ओ ताहार स्वामिके अर्शे ना। यद्यपि चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे शास्त्रेर आज्ञा आपीलाण्ट मोसम्मात पूर्णिमार एजहार यथार्थेर निमित्ते बोध करण उचित हइल, ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल पूर्व्वेर व्यवस्थार सम्वलित एइ हुकुमे ये छओयालेर जओयाव ये कीर्त्तिचन्द्रेर त्याज्य वस्तु, याहा व्रजनाथके अर्शियाछिल, ताहा ताहार माता मोसम्मात पूर्णिमा, ये ताहार स्वामि वर्त्तमान एवं आर पुत्र हओनेर आस्वास राखे अर्शिवेक, कि व्रजनाथेर पिता गौरमोहनचट्टोपाध्यायके, दुइ दिवसेर मध्ये लेखेन, एइ आदालतेर पण्डितके समापन करा जाय। आर व्यवस्था दाखिल हओनेर पर व्रजनाथेर पिता ओ माता गौरमोहनचट्टोपाध्याय ओ पूर्णिमार दरखास्तसकलेर लिखित विषयेते एवं रेष्पाडेण्ट भैरवचन्द्रचौधुरिर ओ ताहार दाखिल करा व्यवस्थार पर विवेचना करा जाइवेक इति।

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओयालपोलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयापरेलमासीयपञ्चविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितप्राचीनव्यवस्थाद्वयञ्च यदेतदब्दीयमैमासीयैकादशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

कीर्तिचन्द्रत्यक्तधनं यदुत्तराधिकारित्वेन व्रजनाथेन प्राप्तं तत्र तन्मातुः पूर्णिमायाः सधवायाः पुत्रान्तरसम्भावनायामर्थान्मूलभूतधनस्वामिनः कीर्तिचन्द्रस्य पितुः कृष्णचन्द्रस्य दौहित्रान्तरसम्भावनायां सत्यां तेषां स्वत्वरक्षणान्यथानुपपत्त्या स्वपुत्रस्य व्रजनाथस्योत्पत्तेः प्रागिव तन्मरणानन्तरं स्वपुत्रान्तरोत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तमधिकारः। कीर्तिचन्द्रपितृदौहित्रान्तरसम्भावनायां सत्यां व्रजनाथस्य पितुर्गौरमोहनचट्टोपाध्यायस्य नाधिकारः।

मूलभूतधनस्वामिनः कीर्तिचन्द्रस्य त्यक्तधने उत्तराधिकारित्वेन तत्पितृदौहित्रस्य व्रजनाथस्यैकस्याधिकारे जाते सत्येतद्विवादविषयनिविष्टप्रथमव्यवस्थानुसारेण पुनरुत्पत्स्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थात् कीर्तिचन्द्रपितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारस्समान एव भविष्यति। अत एव यावत्कालपर्य्यन्तं कीर्तिचन्द्रस्योत्तराधिकारिणां तत्पितृदौहित्राणामुत्पत्तिसम्भावनाराहित्यं न भवति तावत्कालपर्य्यन्तं कीर्तिचन्द्रत्यक्तधने तत्पितृदौहित्रस्य व्रजनाथस्यैकस्य कियत्परिमितोऽशो भवतीति निश्चयस्य भवितुमशक्यत्वेनेदानीं व्रजनाथस्य पितुर्गौरमोहनचट्टोपाध्यायस्य व्रजनाथत्यक्तकियत्परिमितांशे अधिकारा भवतीति निश्चयस्य भवितुमशक्यत्वात्—इति वङ्गदेशचलितप्रथमव्यवस्थालिखितग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणानि—

प्रथमव्यवस्थालिखितानि सर्व्वाण्येवेति—

एतदब्दीयमैमासीयषोडशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२५—रोवकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत[1] मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओआलपुल साहेबेर बैठके। तारिख

१. आदालत आदालत—व्यप.।

२५ आपरेल इं सन १८३३ साल मोताबक वाङ्गला सन १२४० साल तारिख १४ वैशाख दिवस वृहस्पतिवार—

गोपालस्यहायेर अलि नक्योयावराय आपीलाण्ट

मोछम्मात भ गवती कोङर ओ गयरह रेष्पाडण्टान्

आपिलाण्टेर उकिल सदासुखपण्डित ओ निलवेञ्जमेन एडमेनष्टीन वेलि साहेव, मोछम्मात भगवतीकोङर रेष्पाडण्टेर तरफ हइते आपन नामेर एक केता ओकालतनामा ओ मेहनत-आनार वावत एक केता रसिद २५० टाकार एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति सम्वलित दाखिल करिया, ओ जितु-लाल रेष्पाडण्टेर उकिल मुनशी फकिर महम्मद हाजिर आइलेन। एइ मासेर १० तारिखे एइ मोकद्दमा आमार वैठके रोवकार हइया नालिसि आरजि ओ गयरह प्रविनशीयान क्रोटेर कागजात १७४ लम्वर पर्य्यन्त पडा हइया दिवावसान प्रयुक्त मुलतवि छिल। अद्य पुनुराय रोवकार एवं प्रविनशीयान क्रोटेर वाकी कागजात फयछला पर्य्यन्त ओ एइ आदालतेर कागजात दृष्टे आइल वोध हइल ये आपीलाण्ट सावेक मुदाइ विवादीय ग्रामसकलेर दखल पाओनेर दाविते एइ एजहारे नालिश करे ये वायवायान छलतुण्डसिंह, ये सन्तानादि राखितो ना, आपन सहोदर भ्राता वाय छलतुण्डसिंहेर कन्या मोछम्मात राधामोहनकोङरके छलतुण्डसिंहेर अनुमतिमते आपन सन्ताने आनिया प्रतिपालन करिया, छलतुण्डसिंह मजकुरके कहिलेक ये आमि राधामोहनकोङरेर विवाह ओ कन्यादान करिवो, कन्या मजकुरेर गर्भे प्रथम ये पुत्र सन्तान हइवेक आमार विषयेर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक। ताहार जओयावे छलतुण्डसिंह एकरार करिल आर उहाके अनुमति दिल ये कन्या मजकुरेर विवाह ओ कन्यादान करे; कन्या मजकुरेर प्रथम सन्तान आमार ओ तोमार विषयेर ओ मालामालेर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक। तदनुसारे

कन्यादान करिल। नओयावरायेर पिता पेयारिलालेर अनुमति ओ अभिप्राय मते उपरेर लिखित विषये कन्यार विवाह नओयावरायेर सहित देओ याइया पुरोहित ओ गयरहर सन्मुखे कुशो आर गङ्गाजलेर सहित कन्यादान एवं पुत्रिकापुत्रेर वचने संकल्प करिल। ये प्रकार राधामोहनकोङरेर पुत्र गोपालस्यहायेर जन्म हओनेर पर चूडाकरण ओ कर्णभेद ओ गयरह दाँडासकल आमले आनिया मृत्यु हइल। मोछम्मात भगवतीकोङर आसामी फैरादिर दावि ओ एजहार अस्वीकार एवं कलतुण्डसिंहेर रायब्रजराजसिंहके पुष्यपुत्र ओ कर्त्तापुत्र करण एवं ताहार दस्तावेज उहाके लिखिया देओन आर ब्रजराजसिंह मजकुरेर शास्त्रानुसारे कलतुण्ड सिंह मोतओफ्फार क्रिया ओ कर्म्म करण सम्बलित जओयाव देय। विचारकालिन मुद्दाइर दावि डिशमिष हय इति॥ यदि स्यात् चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे शास्त्रेर आज्ञा कलतुण्डसिंहेर गोपालस्यहार पुत्रिकापुत्र ओ व्रजराजसिंह पुष्यपुत्र ओ कर्त्तापुत्र हओनेर विषये वोध करण उचित हइल। एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ओ आपीलाण्टेर साक्षीगणेर एजहार ओ व्रजराजसिंहेर कर्त्तापुत्रेर ओ सन्तानेर दस्तावेज सम्बलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितके समापन करा जाय ये निचेर लिखित छओयाल सकलेर जओयाव पश्चिम देश प्रचलित शास्त्रानुसारे एक सप्ताह मध्ये, यतो शीघ्र हइते पारे, लिखेन।

१—प्रथम—एइ ये एइ चणकार समय अर्थात् कलियुगे निःसन्तान व्यक्तिर आपन सहोदर भ्रातार कन्याके सन्तानत्वेते लओन यथार्थ हय कि ना।

२—द्वितीय—एइ ये यदि स्यात् आपीलाण्ट ओ उहार साक्षीगणेर एजहार छलतुण्डसिंहेर कन्या राधामोहनकोङरके कलतुण्डसिंह आपन सन्तानत्वेते लओनेर विषये ओ कन्यादान ओ पुत्रिकापुत्रेर कथा, उभयत कलतुण्डसिंह ओ छलतुण्डसिंह

ओ नओयावरायेर पिता पेयारिलालेर सहित स्थिर हओने ताहार दाँडासकल आमले आना, याहा मुर्द्दाआलेहेर अन्य २ साक्षीगण हइते ओ मुर्द्दाइर साक्षीगणेर एजहारे ऐ विषये सत्वंता करे, कलतुण्डसिंहेर पुत्रिकापुत्र गोपालस्यहाय हइल कि ना।

३—तृतीय—एइ ये यदि स्यात् गोपालस्यहाय पुत्रिकापुत्र हओने उक्त व्यक्ति कलतुण्डसिंहेर त्याज्य वस्तुर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक कि उहार स्त्री भगवतीकोङर।

४—चतुर्थ—एइ ये व्रजराजसिंहके कर्त्ता पुत्र करण ओ सन्तानेते लओन, ये से आपन पितार ज्येष्ठ पुत्र ओ ताहार वयक्रम ३० वत्सरेर अधिक एवं कयेक सन्तान आछे, उचित। किम्वा ताहार सत्वंताते उक्त व्यक्तिर पिता मातार अनुमति ओ वयक्रमेर निर्द्धार्य्य एवं आत्मवर्गेर ओ हाकिमेर गोचरेर नियम आछे।

५—पञ्चम—एइ ये यद्यपि व्रजराजसिंह कर्त्तापुत्रेर पर आपन आसल पिता ओ मातार श्राद्ध ओ क्रियाकर्म्म करिया ताहारदिगेर त्याज्य वस्तुर दखलिकार हइया थाके, तवे ताहार कर्त्तापुत्रता यथार्थ ओ वहाल थाकिवेक कि ना।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयापरेलमासीयपञ्चविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितार्थिसद्दियुपस्थापितवृत्तान्तपत्राणि व्रजराजसिंहस्य कृत्रिमपुत्रविषयकपत्रञ्च यदेतदब्दीयमैमासीयैकादशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

कलियुगे निस्सन्तानेन व्यक्तिविशेषेण स्वकीयसहोदरभ्रातृकन्यायाः सन्तानत्वेनार्थात् कन्यात्वेन ग्रहणं धर्म्मशास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, धर्म्मः

शास्त्रे तादृशविध्यभावात्, अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः—
इति विधेरेव धर्म्मशास्त्रीयत्वादिति—

तत्र प्रमाणम् ।

अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्त्तनाय च ॥ इति दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थधृतमनुवचनम्[1] ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्यर्थिनस्तन्निर्द्दिष्टसाद्युपस्थापितवृत्तान्तेन च सिलमन्तसिंहस्य कन्याया राधामोहनकोमराख्यायाः कुलमन्तसिंहेन स्वसन्तानत्वानयनविषये कन्यादानपुत्रिकापुत्रविषये चोभयोः कुलमन्तसिंहसिलमन्तसिंहयोः नवावरायपित्रा प्यारीलालेन सह स्थिरीकरणं तस्य रीतिसमुदायस्य भवनं यत्प्रत्यर्थिनोऽन्यसाक्षिगणैरर्थिसाक्षिसाद्येण च सत्यत्वमाप्नोति तथापि गोपालसहायः कुलमन्तसिंहस्य पुत्रिकापुत्रो न जातः एतादृशपुत्रिकापुत्रस्य शास्त्रालिखितत्वात्, औरसदत्तकृत्रिमपुत्रातिरिक्तपुत्राणां कलियुगे विशेषतः शास्त्रनिषिद्धत्वाच्च । एवञ्च सति कुलमन्तसिंहस्य पत्नी भगवती कोमराख्या एव तत्त्यक्तधने अधिकारिणी भवतीति तृतीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति ।—

अत्र प्रमाणम्—

अनेकधाकृताः पुत्रा ऋषिभिर्य्यैः पुरातनैः ।

न शक्यास्तेऽधुना कर्त्तुं शक्तिहीनतया नरैः[2] ॥ इति दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० २०७)वचनम् ॥१॥

दत्तौरसेतरेषान्तु पुत्रत्वेन परिग्रहः ।

इमान् धर्म्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्म्मनीषिणः ॥ इति दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाव्यवहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थधृतशौनकवचनम् ॥२॥

दत्तौरसेतरेषान्तु पुत्रत्वेन परिग्रह इति च शौनकेन पुत्रान्तरनिषे-

---

१. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते । २ शक्तिहीनैर्थिरन्तनैरिति बृस्मृ० पाठः ।

धाद् दत्तौरसावेवाभ्यनुज्ञायेते। दत्तपदं कृत्रिमस्याप्युपलक्षणम्–इति दत्तकमीमांसा(पृ० ३०)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव–इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि व्रजराजसिंहस्य कृत्रिमपुत्रीकरणमेवं सन्तानत्वे आनयनं यो व्रजराजसिंहः स्वपितुर्ज्येष्ठपुत्र एवं त्रिंशद्वर्षाधिकवयस्कः, कतिपयसन्ताना अपि तस्य सन्ति, तदा मिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभाद्यनेकग्रन्थमते तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं न सिद्ध्यति। दत्तकपुत्रग्रहणविषये ये ये नियमाः मिताक्षरादिग्रन्थेषु लिखितास्ते सर्व्वे नियमाः कृत्रिमपुत्रविषयेऽपि मिताक्षरादिग्रन्थेषु लिखिताश्च। एवमात्मीयवर्गस्य राज्ञश्च विज्ञापनमन्तरा प्रकारान्तरेण तस्य कृत्रिमपुत्रतायाः सत्यत्वनिश्चये सति मनुमते तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं सिद्धयति। मनुवचने केवलं सजातीयत्वकृत्रिमपुत्रीकरणयोर्द्वयोरेव कृत्रिमपुत्रकरणे प्रयोजकत्वमिति––

अत्र प्रमाणम्—

एवं क्रीतस्वयंदत्तकृत्रिमेष्वपि योज्यं समानन्यायत्वात्––इति मिताक्षरा(पृ० २२४)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

क्रीतस्वयंदत्तकृत्रिमेष्वपि समानन्यायत्वादेकपुत्रज्येष्ठपुत्रयोर्निषेधः–इति वीरमित्रोदय(पृ० ६१०)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

सदृशं यं प्रकुर्व्वीत गुणदोषविचक्षणम्।
पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः॥ इति मनु(९।१६९) वचनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि व्रजराजसिंहः कृत्रिमपुत्रभवनानन्तरं स्वकीयजनकपितुः स्वजनन्या मातुश्च श्राद्धादिक्रियाः कृत्वा तयोस्त्यक्तधने आयत्तत्वं संपादितवान् स्यात्तदा तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं मिताक्षराद्युपरिलिखितग्रन्थानुसारेण न सिद्धयति, मनुशुद्धिविवेकग्रन्थानुसारेण सिद्धमपरावर्त्यं च भवितुं शक्नोति–इति पश्चिमदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमा-

धवव्यवहारकौस्तुभदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाशुद्धिविवेकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

गोत्ररिक्थे जनयितुर्न्न भजेद्दत्रिमः सुतः ।

गोत्ररिक्थानुगः पिण्डो व्यपैति ददतः स्वधा ॥ इत्यत्र दत्रिमग्रहणस्य पुत्रप्रतिनिधिप्रदर्शनार्थत्वात्—इति मिताक्षरा(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स च पुत्रत्वकरस्य पिण्डप्रदः । निजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य तिष्ठत्येव—इति शुद्धिविवेकग्रन्थ (पृ० ३१ ख पं० ६)लिखनञ्चेति ॥२॥

एतदब्दीयजुनमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सओाल—

२६—एक स्त्रीलोक पतिर मरणान्तर आपन पिता मातार स्थावर अस्थावर किञ्चित् विषय पाइया पित्रालय वास करिया भोगवाना थाकिया लोकान्तर हइले ऐ स्त्रीलोकेर पतिर सहोदर भ्रातार पौत्र ओ भर्त्तार भग्नीर पुत्र वर्त्तमान थाकाते ऐ अविरा स्त्रीलोकेर मातृ पितृ संक्रान्त प्राप्त स्थावर अस्थावर विषय ऐ दुइ जनार मध्ये काहाके अर्शिते पारे, यथाशास्त्र सओालेर पाशे शास्त्रेर निदर्शने उत्तर लिखिया पाठाइवा इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयजुनमासीयषष्ठदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—यदि काचित् स्त्री पतिमरणानन्तरं स्वपैतृकं मातृकञ्च स्थावरास्थावरकिञ्चिद्धनं

प्राप्य स्वपित्रालये वासं कृत्वा तद्धने भोगवती भूत्वा मृता स्यादत्र विवादास्पदीभूतं धनं तया उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तमिति प्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतया अवगमात्तन्मरणोत्तरं तस्याः स्त्रियाः पत्युः सहोदरभ्रातुः पौत्रस्य वङ्गदेशीयाक्षरलिखितप्रश्नलिखितस्य तस्याः पत्युः सहोदरभ्रातुर्दौहित्रस्य वा पारसीकलिपिलिखितप्रश्नलिखितस्य तस्याः पत्युर्भागिनेयस्य च तत्संक्रान्ततत्पितृत्यक्तधने तत्संक्रान्ततन्मातृत्यक्तधने च नाधिकारः। यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि पत्न्या मरणोत्तरं तद्धनं तत्पत्युत्तराधिकारिणामेव भवति तथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य धने दुहितुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि दुहितुर्म्मरणोत्तरं तत्पितुर्यें उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति, प्रकृते तु तस्याः स्त्रियाः पत्युः सहोदरभ्रातुः पौत्रस्य तस्याः पत्युः सहोदरभ्रातुर्दौहित्रस्य वा तस्याः पत्युर्भागिनेयस्य वा तस्याः पितुर्म्मातुश्चोत्तराधिकारित्वाभावात्–इति वङ्गदेशचलित-दायभागदायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव–इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥१॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥–इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम्॥२॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति।३॥

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

छओाल—

२७—रामचन्द्रसरकार नामे एक व्यक्ति आपन एक जोत-जमा ओ वैद्यनाथ नामक एक पुत्र राखिया लोकान्तर हय। परे वैद्यनाथ ऐ जमाय दखिलकार थाके। वैद्यनाथ मजकुरेर दुइ स्त्री, तारामणि ओ राधामणि। तारामणि मजकुरार गर्भजात दुइ पुत्र गङ्गाधर ओ राजकुमार। राधामणि मजकुरार गर्भजात एक पुत्र, आनन्दकुमार[1] एवं एक कन्या आदरमणि। ताहार मध्ये आनन्दकुमारेर मृत्यु आपन पिता वैद्यनाथेर समक्षे हय। परे दुइ पुत्र, अर्थात् गङ्गाधर ओ राजकुमार ओ अदत्ता कन्या अर्थात् आदरमणी ओ आपन दुइ स्त्रीके वर्त्तमान राखिया वैद्यनाथ मजकुर परलोक प्राप्त हय। कियत्कालान्तर गङ्गाधर ओ राजकुमार आपन वैमात्रीय अदत्ता भग्नी आदर-मणी ओ माता ओ विमाताके वर्त्तमान राखिया लोकान्तर हय। परे तारामणी मजकुरार मृत्यु हइले राधामणी मजकुरा ताहार श्राद्ध आदि करिया आपन गर्भजात ऐ अदत्ता कन्या आदरमणीर विवाह दिया लोकान्तर हय। एइ क्षण ऐ वैद्यनाथ सरकारेर पुत्रसम्भाविता कन्या आदरमणी ओ वैद्यनाथ मजकुरेर पितृदौहित्र, अर्थात् रामचन्द्रसरकारेर कन्यार पुत्र, श्री ईश्वरचन्द्रवसु वर्त्तमान। अतएव शास्त्र सम्मत वैद्यनाथ मजकुरेर पैतृक स्थावरादि धनेर, अर्थात् जोतजमा मजकुरार, सत्ताधिकारिणी वैद्यनाथेर पुत्रसम्भाविता कन्या श्रीमती आदरमणी किम्वा ताहार पितृदौहित्र ईश्वरचन्द्रवसु अधिकारि हइवेक-इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था हय लिखिवेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयजुनमासीयषष्ठदिनसम्बन्धिबृहस्पति-वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

१. आदन्द—व्यप०।

प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मूलभूतधनस्वामिनो रामचन्द्रसरकारस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधने तत्पुत्रस्य वैद्यनाथस्याधिकारे जाते सति तद्धनं वैद्यनाथस्यैव जातम्। अतस्तस्मिन् मृते तत्त्यक्तधने तन्मरणोत्तरं विद्यमान-योर्गङ्गाधरराजकुमारयोर्वैद्यनाथपुत्रयोरधिकारे जाते सति तद्धनं तयोरेव जातम्। अतस्तयोर्म्मरणोत्तरं तयोः पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्तरहितयोस्त्यक्तधने तयोर्म्मातुस्तारामण्या अधिकारे जाते सति तारामण्या मरणोत्तरं तत्संक्रान्त-स्वपुत्रधनं तत्पुत्रयोर्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति। तत्र च तत्पुत्रयो-रुत्तराधिकारिणां मध्ये तयोः पुत्रमारभ्य पितृप्रपौत्रपर्य्यन्तानाम्मध्ये कश्चि-न्नास्तीति प्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतयावगमेनेदानीं गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृ-दौहित्राधिकारस्य शास्त्रीयत्वेन गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्रोत्पत्ति-सम्भावनायां सत्यां तत्स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तयोर्भगिन्या आदरमण्यास्तयोः पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतयोस्तयोस्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्-कालपर्य्यन्तम् (अधिकारः)। यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्द्धने दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽपि (भगिन्या) अधिकारः। गङ्गाधर-राजकुमारयोः पितृदौहित्रोत्पत्तिसम्भावनायां सत्यां तयोः पितामहदौहित्रस्ये-श्वरचन्द्रस्य नाधिकारः। सति च गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्रे स्वतस्तयोः पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतस्तयोः पितुः पार्व्वणश्राद्ध-पिण्डदानानधिकारिण्यास्तयोर्भगिन्या आदरमण्या नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव पुत्राणां वा अधिकारः–इति वङ्गदेशचलितदायभाग-दायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारि-णी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो, धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात्

पूर्व्वमङ्गादङ्गात् सम्भवतीत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति-श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥३॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति। तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयः तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृ-वैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्राणां पितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः तदभावे पितामहदौहित्र०—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग-टीकालिखनञ्चेति ॥४॥

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयप्र-थमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

२८ प्रथम प्रश्न :—

यद्यपि कोन व्यक्तिरा दुइ सहोदर, अर्थात् मध्यम ओ कनिष्ठ भ्राता, आपनादेर ज्येष्ठ ओ तृतीय भ्रातार सहित प्रार्थक्य हइया, आपनारा दुइ सहोदरे एकान्नवर्त्तिते स्थावर अस्थावर वस्तु उपार्ज्जन करिआ, मध्यम भ्राता एक पुत्र राखिया लोकान्त हय। ताहार पर क्रमे एकान्नवर्त्तिते थाकिया ऐ मध्यमेर पुत्र एक स्त्री, ओ कनिष्ठ भ्राता एक पुत्र ओ एक कन्या राखिया मृत्यु हय। एमत् स्थले ऐ कनिष्ठेर पुत्र पीडित जीवनासंशय हइया ऐ समुदय साधारणेर स्थावर अस्थावर वस्तु आपन सम्भाविता पुत्रिनी भग्नीके दान करिते पारे कि ना—यथाशास्त्र एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर लिखिवेन इति—

द्वितीय प्रश्न—

यद्यपि कोन व्यक्ति जीवनासंशय हइया साधारणेर कोन स्थावर अस्थावर वस्तु आपन भग्निके दान करिया ऐ दानपत्रे एमत नियम राखे ये यदि स्यात् आसि ए यात्रा रक्षा पाइ, एइ दानपत्र अकर्म्मण्य हइवेक; अतएव शास्त्रानुसारे एमत् नियमित दान सिद्ध वटे कि ना—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं दानपत्रञ्च यदेतदब्दीयमैमासीयषोडशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि चतुर्णां सोदरभ्रातॄणां मध्ये द्वौ भ्रातरावर्थान्मध्यमकनिष्ठौ स्वकीयज्येष्ठतृतीयभ्रातृभ्यां सह पृथगन्नौ[1], तावेव द्वावेकान्नौ स्थावरास्थावरधनमुपार्ज्जयतः तयोर्म्मध्ये मध्यमो भ्राता एकं पुत्रं संरक्ष्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं क्रमेणैकान्ने स्थित्वा तस्यैव मध्यमस्य पुत्र एकां पत्नीं संरक्ष्य मृतः, एवं कनिष्ठो भ्राता एकं पुत्रं कन्याञ्चैकां रक्षित्वा मृतः स्यात् एवञ्च सति तस्यैव कनिष्ठस्य पुत्रः पीडितो जीवनसंशयमापन्नः सन् तदेव साधारणस्थावरास्थावरसमुदायधनं सम्भावितपुत्रायै स्वभगिन्यै दत्तवान् स्यात्तदा तद्दानं दातुः स्वांशयोग्ये सिद्धं भवितुं शक्नोति, तद्व्यतिरिक्ते सिद्धं भवितुं न शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

विभक्तस्येवाविभक्तस्थावरस्यापि स्वामिकृतदानादि सिद्ध्यत्येव अक्षपातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादिति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारदायभागटीकालिखनम् ॥३॥

---

१. पृथक् अन्नौ—व्यप० ।

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः-इत्यादि विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१. विभा० ३०५ क) लिखनम् ॥४॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषो जीवनसंशयमापन्नस्सन्नसाधारणस्थावरास्थावरवस्तु स्वभगिन्यै दत्त्वा तद्दानपत्रे एवं (तेन नियमो लिखितः यद्यहमेतद्रोगान्मुक्तो भूत्वा जीवामि तदैतद्दानपत्रमकर्म्मण्यं भविष्यति। अत एवैतादृशं सोपाधिदानं तद्दानकर्त्तृयोग्यांशेऽपि तद्दानकर्त्तुस्तद्रोगविमुक्तत्वेन वर्त्तमानतायां सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतस्तद्दानपत्रे दात्रा लिखितमस्ति यद्यहमेतद्रोगान्मुक्तो भूत्वा जीवामि तदा अस्मद्वर्त्तमानतायामेतद्दानपत्रमकर्म्मण्यं भविष्यति, न तु वा सर्व्वं तवैव जातमिति। एवञ्च सति दातुस्तद्रोगान्मरणे सति तद्दानं दातुः स्वांशयोग्ये सिद्धं भवितुमर्हति। सोपाधिदानमुपाधिसिद्धौ सिद्धं भवति उपाध्यसिद्धावसिद्धं भवति-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि चत्वारि ॥४॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२६—ल० ३१ खास आपील—

इं १८२४ साल—

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न—

यद्यपि स्यात् कोन व्यक्तिर दुइ पुत्रेर मध्ये ज्येष्ठ पुत्र एक

कन्या राखिया पिता वर्त्तमाने मरे, आर कनिष्ठ पुत्र पितार मरणोत्तर एक पुत्र राखिया लोकान्तर करे—एमत स्थले ऐ कन्या ओ पुत्रेर मध्ये के धनाधिकारी हवेक—यथाशास्त्र प्रश्नेर उत्तर लिखिवा इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदङ्गरेजीशब्द-प्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिसो-मवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्यचिद्द्वयोः पुत्रयोर्म्मध्ये ज्येष्ठपुत्रः कन्यामेकां रक्षित्वा जीवति स्वपितरि मृतः स्यादेवं कनिष्ठपुत्रः स्वपितुर्म्मरणोत्तरमेकं पुत्रं रक्षित्वा मृतः स्यात्तत्र यदि पित्रा स्वस्वत्वास्पदीभूतं धनं विभज्य स्वपुत्राभ्यां दत्तं स्याद् यत् प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतद्वादशाङ्काङ्कितवङ्गालाख्याष्टादशाधि-कद्वादशशताब्दीयफाल्गुनमासीयपञ्चदशदिनलिखितएकरारनामासंज्ञकपत्रे-णावगम्यते तदा तद्दानानुसारेण तद्धने द्वयोः पुत्रयोः स्वत्वे जाते सति द्वयोः पुत्रयोर्म्मरणानन्तरं तयोर्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति। तत्र द्वयोर्म्मध्ये ज्येष्ठपुत्रः पत्नीमेकां कन्यां चैकामेकं पुत्रं च विश्वनाथ-नामानं संरक्ष्य जीवति पितरि मृत इति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातम्। एवं च सति तद्दानानुसारेण ज्येष्ठपुत्रयोग्यांशे तत्पुत्रस्य विश्वनाथस्याधिकारे जाते सति तद्धनं विश्वनाथस्यैव जातमतस्तन्मरणानन्तरं तत्त्यक्तधने तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारस्तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये तस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्ताभावेन तन्मातुः करुणाया अधिकारे जाते सति करुणामरणो-त्तरं विश्वनाथस्य पितू रामलोचननस्करस्य प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावेन तत्पितु-र्दौहित्रस्य भागवतमण्डलस्याधिकारः। पितरि मृते पुत्रं रक्षित्वा मृतस्य कनिष्ठपुत्रस्यांशे तत्पुत्रस्याधिकारः। यदि च पित्रा स्वस्वत्वास्पदीभूतधनं विभज्य स्वपुत्राभ्यां न दत्तं स्यात्तदा तद्धने पितुरेव स्वत्वमस्ति। अत एव जीवति पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्य पैतृकधने स्वत्वानुत्पादाद् जीवति पिता-

महे मृतस्य पौत्रस्य च विश्वनाथस्यानपत्यस्य पैतामहधने स्वत्वानुत्पादाच्च तत्तदुत्तराधिकारिणां तद्धने नाधिकारः। किन्तु पितृमरणोत्तरं मृतस्य कनिष्ठपुत्रस्य पैतृकसमुदायधने स्वत्वोत्पादेन पैतृकसमुदायधनं तस्यैव जातम्। अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तत्राधिकारः। तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये तत्पुत्रस्यैव प्राधान्येनाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्द्धनं पितुः।
अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥४॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥५॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

३०—मोकाम कलिकात्तार सदर देओयानी आदालतेर पण्डित हइते सदर ब्रडेर प्रश्न :—

यदि स्यात् जेला सारङ्गवाशी छेत्रीय ज्ञातो राजा हरकुमारदत्त मौरुशी जमिदारिर पर दखिल काविज थाकिया दुइ विवाहिता स्त्रीर गर्भजातक दुइ पुत्रके उत्तराधिकारि राखिया लोकान्तर हइल।

परे ताहार ज्येष्ठ पुत्र राजा तेजप्रताव नामिक कुलाचार मते समुदय अवरटक जमिदारिर पर सम्भोगी थाकिया आपन मृत्युर पूर्व्वे वैमात्रेय भ्राता थाकितेओ अवरटक जमिदारि मजकुर हइते २१ मौजा तिन स्त्रीर मध्ये एक स्त्री महाराणी तिलत्तमादेव्यार नामे दान करिया दानपत्रेर निचे एइ विवरण लेखे ये आमार परे महाराणी मौछुफ समुदय देहात जमिदारि मजकुर दान करा ग्रामसकल सम्वलित आपण एकत्तारे राखिया आपन कवज तछरूपे आणीवेक, आर समयेर हाक्किमेर सरकारे मालगुजारि आदाय करिते थाकिवेन इति। ताहार दुइ वत्सर परे उक्त राजा निःसन्तान ऐ वैमात्रेय भ्राता राजा अमरप्रतावसेन ओ तिन स्त्रीके उत्तराधिकारि राखिया मरिल। ऐ तिन स्त्रीर मध्ये दानग्रहिता महाराणी उत्तराधिकारित्व एवं दानपत्र मजकुरेर द्वाराय समुदय जमिदारिर पर दावि करितेछे। ओ मृत राजार वैमात्रेय भ्राता राजा अमरप्रतापसेन ताहार आपनार एकान्नवर्त्ती एवं अंशी थाकार दाविते एइ विवरणे ये पैतृक जमीदारी हओन कारण एवं अवरटक ओ मृत राजार कुष्ठव्यामहकालिन दानपत्र लेखा हओने दान असिद्ध, ओ महाराणीर खोरपोष भिन्न अन्य कोन स्वत्व ना थाकीवाते उत्तराधिकारिर दावि करिया आपनाके समुदय जमिदारीर सत्वाधिकारि ओ कर्त्ता करार दितेछे। अतएव शास्त्रानुसारे ऐ दुइ दाविदार मजकुरानेर मध्ये कोन व्यक्ति सकल जमीदारी मजकुरेर पर दखल पाइवार स्वत्व राखे ताहार व्यवस्था चलित शास्त्रसम्वलित रितमते लेखेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशश-ताब्दीयसितम्वरमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि सारनदेशीयः क्षत्रियजातीयः कश्चिद्राजा हरकुमारदत्तनामा व्यक्तिविशेषः क्रमागतसराजकरस्थावरादिधने आयत्तत्वं संपाद्य द्वयोः पत्न्योर्गर्भजातौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं तस्य ज्येष्ठपुत्रो राजा तेजःप्रतापसेनः स्वकुलोचिताचारानुसारेण समुदायसाधारणसराजकरस्थावरादिधने आयत्तत्वं संपादितवान् स्यात्तदा तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावेन तत्त्यक्ताविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरादिसमुदायधने तद्वैमात्रेयभ्रातू राज्ञोऽमरप्रतापस्यैवाधिकारः, साधारणसराजकरस्थावरादिधने अंश्यन्तरानुमतिमन्तरेणैकस्य स्वांशयोग्येऽपि दानाद्यनधिकारित्वेन साधारणसराजकरस्थावरादिसमुदायधने दानाद्यनधिकारित्वस्यार्थसिद्धत्वात् पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारण्यप्रतियोगिनि वैमात्रेयभ्रातरि विद्यमाने सत्यप्यविभक्तधने पत्न्या अनधिकाराच्च। एवं राज्ञस्तेजःप्रतापसेनस्य पत्नीनां यावज्जीवं स्वभर्तृकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तधने आवश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने चाधिकारः—इति सारनदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था——

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

सोदराणामभावे भिन्नोदरा धनभाजः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥३॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्य्यातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितम्—इति मिताक्षराग्रन्थ, पृ० २२१) लिखनम् ॥४।

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वादेकस्यानीश्वरत्वात् सर्व्वाभ्यनुज्ञाऽवश्यं कार्य्या। विभक्तेषु तु विभक्तानुमतिमन्तरेणापि व्यवहारः सिद्ध्यत्येव—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥५॥

स्थावरस्य समस्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।
नैकः कुर्य्यात् क्रयं दानं परस्परमतं विना ॥—इति वीरमित्रोदयग्रन्थ-धृतव्यासवचनम् ॥६॥

स्वर्य्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।
अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदय-ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥७॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयाक्तूवरमासीय-नवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३१—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरी सिकिस-पीयेर साहेबेर बैठके । तारिख २४ जुलाइ इं सन १८३३ मोतावके वाङ्गला १० श्रावण सन १२४० साल दिवस बुधवार—

कृष्णकान्त पोद्दार—छाएल

सन हालेर १७ जुन तारिखेर हओया एइ आदालतेर हाकिम रिचार्ड ओयालपुल साहेबेर हुकुम मोतावक जेला जङ्गल महालेर जज साहेबेर रिटरण[१] सम्वलित ओ ऐ सनेर २१ मार्चेर लिखित तथाकार रोवकारिर सहित एवं छाएलेर दरखास्तेर नकल, जाहा जज साहेबेर मौछाफर रिटरणेर सामील एइ आदालते पौछियाछिल, हाकिम रोवकारि ओ राजचन्द्रराय छायेलेर मोकद्दमार कागजात सम्वलित अद्य आमार बैठके दरपेष हइल, अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये सावेक व्यवस्था ओ सन हालेर २१ मार्च तारिखेर हओया जेला जङ्गल महालेर जज साहेबेर हालेर रोवकारि एइ आदालते पण्डितेर निकट

---

१ रिटरण—व्यप० ।

एइ हुकुमे पाठान जाय ये पण्डित मजकुर ऐ सकल अनुमोदन परे एइ विषयेर व्यवस्था ये उपरेर लिखित जेलार जजसाहेवेर रोवकारिर लिखित सुरत देवसेवार खरच ओ सेवाइतेर ओयाजिवि खरच मिनाह वादे बाकी उपसत्व डिक्रिर टाका आदायेर जन्य जाहा सेवाइतेर नामे हइयाछे खरच हइते पारे कि ना—एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीथिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीय-चतुर्व्विंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितपूर्व्व-व्यवस्थापत्रमेतदब्दीयमार्च्चमासीयैकविंशतितमदिवसीयजङ्गलमहालजिला-ख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रञ्च यदेतदब्दीयागस्तिमासीय-द्वादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

जङ्गलमहालजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रलिखि-तवृत्तान्ते सत्यपि देवसेवार्थं व्ययातिरिक्तस्य सेवाइतशब्दवाच्यस्यावश्यकव्य-यातिरिक्तस्य देवत्रभूम्युपस्वत्वस्य व्ययो जयपत्रलिखितराजतमुद्रापरिशोधना-र्थम्, यज्जयपत्रं सेवाइतशब्दवाच्यस्य नाम्ना जातम्, भवितुं न शक्नोति, देवत्रभूमौ तदुपसत्त्वे च देवमात्रस्वत्वेन तदितरस्वत्वाभावात् । यश्च देवत्र-भूम्युपस्वत्वादावश्यकदेवसेवार्थं किञ्चिन्नियोज्यावशिष्टस्य स्वभक्षणाद्यर्थं व्यवहारो देवनिवेदनं विनापि पापिष्ठानाम् स च शास्त्रनिषिद्धत्वेन शास्त्रा-नुसारेण यथार्थो भवितुं न शक्नोति, शास्त्रनिषिद्धव्यवहारस्य शास्त्रानुसारे-णाप्रामाणिकत्वात्, विशेषतश्चलितशास्त्रानुज्ञायामसत्यामेव लोकव्यवहा-रस्य शास्त्रे प्रमाणत्वेनोपन्यासाच्च, देवत्रविषये विशेषतश्चलितशास्त्रानुज्ञायाः प्राचीनव्यवस्थाया एतद्व्यवस्थायाश्च प्रथमप्रमाणे मनुवचनेन एव स्पष्टी-कृतत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादाय-क्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥२॥

तस्माच्छास्त्रानुसारेण राजा कार्य्याणि साधयेत् ।
वाक्याभावे तु सर्वेषां देशदृष्टमतं नयेत्—इति संवर्त्तवचनञ्चेति ॥३॥०॥

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयपञ्चविंशतितमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

३२—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपीएर साहेबेर वैठके। तारिख २ अक्तुवर इं सन १८३३साल मातावेक वाङ्गला १७आश्विन सन १२४०साल दिवस वुधवार—

कालीकिशोररायचौधुरि छाएल

छाएलेर उकिलान मुनशी हुसुन आलि ओ मुनशी धु आलि आर सदासुखपण्डित द्वितीय पक्ष रामवकसेर पक्ष हइते आपन नामेर एक केता ओकालतनामा भैरवचन्द्रचक्रवर्त्तिर नामेर एक केता मोक्तारनामा सम्वलित दाखिल करिया हाजिर आइले। छाएलेर छओयाल कोट मुरशीदावादेर[१] हाकिम चारणर्ष उलिएम इष्टोएर साहेव ओ कोट जाँहगीरनगरेर हाकिम केरिकेरापट साहेवेर सन हालेर ०६ जुन ओ २२ मार्च्च तारिखेर लिखित हुकुमेर नाराजिते जाहा देनदार जगदीश्वरीर हिस्यार निलामेर विशये

१. मुरशीदावादेव०—व्यप० ।

छादेर इय। छाएलेर माता मोछम्मीत मजकुरार जीवद्दशा पर्य्यन्त दखलि कावेजी जमिदारि निलाम नाहओयार प्रार्थनाय छाएलेर उकिलानेर नामेर ओकालतनामा ओ रामजयसाण्ड्यालेर नामेर मोक्तारनामा ओ कोट मुरशीदावाद ओ कोट जाहागेरनगरेर सन हालेर २६ जुन ओ २२ मार्च्च ओ इङ्गराजी सन १८३१ सालेर १९ मार्च्च तारिखेर लिखित तिन केता रोवकारी ओ इं सन १८२९ सालेर ९ एपरेलेर लिखित जेला मयमनसिंहेर देओयानि आदालतेर फयछलार नकल तिन केता ओ वाङ्गला ए वारतेर च्छोलेनामार नकल एक केता आर जेलार गुजाराए जगदीश्वरीर दरखास्तेर नकल एक केता ओ इं सन १८३२ सालेर २५ एपरेल ओ इं सन १८२६ सालेर ५ जुलाइ ओ २६ एपरेलेर लिखित एइ आदालतेर नकल तिन केता ओ इं सन १८२९ सालेर ३ दिजेम्वरेर लिखित जेला मजकुरेर देओयानि आदालतेर एक केता रोवकारिर नकल सम्वलित, जाहा अद्य मुनशी होशन आलि उकिल आर द्वितीय पक्ष रामवकसेर पक्षेर एक केता छओयाल, जाहा सदासुखपण्डित दाखिल करिलेक, तिन केता सेओयाय तिन केता नकल फयछला पडागेल। यदि स्यात् मजुद कागजातेर द्वाराय प्रकाश हइतेछे—ये छाएल ओ मोछम्मीत नारायणीदेव्या ओ जगदीश्वरीदेव्यार हकुक छोलेनामार द्वाराय रफा हइयाछे, आर ऐ छोलेनामा जेलार आदालते मञ्जुर ओ मातवर हइयाछे आर ताहार द्वाराय प्रकाश ये मोछम्मीत जगदीश्वरीर मृत्युर पर ताहार हिस्या छाएलके आर्शीविक। ए प्रकारे मोछम्मीत मजकुरार देना आदायेर जन्ये ताहार हिस्या विक्रएर उपयुक्त हइते पारे कि ना—आमार निकट ए विषय शास्त्रेर एलाका राखे। ए जन्ये चूडान्त हुकुम छादेर हओयार पूर्व्वे हुकुम हइल ये छाएलेर छओयाल एवं उहार दाखिल करा कागजात ओ द्वितीय पक्षेर छओयाल सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय—ये पण्डित मजकुर

छोलेनामार लिखित सरतसकलेर अनुबोधने उपरेर लिखित छओयालेर जओयाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखिताङ्गरेजीशव्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयाक्तूवरमासीय-द्वितीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवाद-विषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदेतदव्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोम-वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्यैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनः पितु-स्त्यक्तधने सन्धिपत्रानुसारेणैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो नारायणीदेव्याश्च जग-दीश्वरीदेव्याश्च स्वयं निश्चितं स्याद्, एवं तदेव सन्धिपत्रं जिलाख्यावान्तर-धर्म्माधिकरणे सत्यं जातं स्याद्, एवं तेनैव सन्धिपत्रेण जगदीश्वरीदेवी-मरणोत्तरं तदायत्तीभूतोंऽश एतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो भविष्यतीत्यवगम्यमानं स्यात्, तदा जगदीश्वरीदेवीदेयऋणपरिशोधनार्थं तज्जीवनपर्य्यन्तमुपस्वत्व-भोगार्थं तत्पुत्रस्वत्वास्पदीभूततदायत्तीभूतोंऽशो[1] विक्रययोग्यो भवितुं न शक्नोति सन्धिपत्रतात्पर्यार्थधर्म्मशास्त्राभ्यां तथैव पर्य्यवसानात्—इति वङ्ग-देशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

सर्व्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ १ ॥

न स्त्री पतिपुत्रकृतं न स्त्रीकृतं पतिपुत्रौ—इति विवादार्णवसेतु(पृ० २६) विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ(१ विवा० २०८ ख)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥०॥०॥०॥

---

१. तदायत्ती०—व्यप० ।

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयोनविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

३३—रोवकारि मिछिले सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुतहेनरीसिकिसपीयेर साहेवेर वैठके। ८ तारिख अक्तुवर इं० १८३३ साल मोतावेक वाङ्गला २३ आश्विन सन १२४० साल दिवस मङ्गलवार—

मोछम्मात भवानीदेव्या— छाएला—

छाएलार उकिल मुनशी माहाम्मद हानीफ ओ सदासुकपण्डित ओ द्वितीय पक्षेर उकिल मौलुवि करम होशेन हाजीर आइल। गतो कल्य छाएलेर छओयाल दरपेष हइया गौरेर प्रति मुलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइल। यदि स्यात् एइ मोकद्दमार हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्व एइ विषयेर तहकिक आविश्यक ये मोछम्मात ब्रह्ममयी ताहार स्वामी गोपीनाथ वन्द्योपाध्याय ओछीनामा मोतावक आपनी ओछी सरवराहकार मकरर करणेर क्षेमता राखे कि ना। ए जन्य हुकुम हइल ये एइ मोकद्दमार कागजात एइ विशयेर जओयाव तलवेर जन्ये एइ आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयाक्तूवरमासीयाष्टमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदेतदब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ब्रह्ममयी स्वपतिगोपीनाथवन्द्योपाध्यायकृतासीयन्नामाख्यपत्रानुसारेण स्वयं धनरक्षकस्यार्थादसीशब्दप्रतिपाद्यस्य सरवराहकारशब्दवाच्यस्य च नियोगकरणक्षमतां रक्षत्येव, मृते पितरि जीवत्यां च मातर्य्यप्राप्तव्यवहाराणां पुत्राणां धनरक्षणोपायकरणे मात्रपेक्षया अन्येषां सुहृत्तरत्वाभावात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु–इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थ(दात० पृ० १८) (दाभा० पृ० ६२)धृतकात्यायन(कास्मृ० ८४५, पृ० १०२)वचनम् ॥१॥

रक्ष्यं बालधनमाव्यवहारप्राप्तेः—इत्युपरिलिखितग्रन्थ(दाभा० पृ० ६३)धृतमुनिवचनम् ॥२॥

तयोरपि पिता श्रेयान् वीजप्राधान्यदर्शनात् ।

अभावे बीजिनो माता तदभावे च पूर्व्वजः ॥––इति व्यवहारतत्त्वादि(व्यत० पृ० ६४।६५)ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० पृ० ५८)वचनञ्चेति ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयषोडशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३४—रोवकारि मिछिल सदर देओानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम हेनरि सिक्सिपीयेर साहेवेर वैठके। इं १८३३ साल ओाके तारिख २१ नवम्वर मोतावक वाङ्गला १२४० साल ७ अग्रहायन रोज वृहस्पतिवार

लोकनाथदत्त—

ओ जगन्नाथदत्त— वनाम कुविर भाण्डारि

साएलानेर उकिल मुनशी हयदर आली हाजिर आइल। सन हालेर ३० जुलाएर हओ जेला मेमनसिंहेर जज साहेबेर फयशला, जाहा सन १८३२ सालेर २७ आगष्ट तारिखे सदर आमिन आलार फयशलार तरदिदे सादेर हय, ताहार असम्मतिर सायलानेर सओाल एक टाका मूल्येर कागजे उपरेर तारिखेर लिखित[1] जेला मजकुरेर जज साहेबेर ओ सदर आमिन आलार दुइ केता फयसला ओ उकिल मजकुरेर नामेर ओकालतनामा सम्वलित, जाहा सन हालेर ९ आक्तोवर तारिखे दाखिल हइयाछिल, पडागेल। साएलानेर सओालेर खास आपिल ग्राह्य अथवा अग्राह्य विशय हुकुम छादेर हओार पूर्व्वे हुकुम हइल ये सओयाल ओ गयरह कागजात एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठाइया हुकुमे देओा जाय—ये कागजात दृष्टे ए विशयेर व्यवस्था यद्यपि ये रूप सदर आमिन आलार फयशलाय मुदइ साएलानेर तरफ हइते प्रमाण हेतु लेखा आछे गुजरिया थाके, दासत्त साव्यस्थ निमित्थें एमत प्रमाण हेतु जथार्थ गणा जाइवेक कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्वरमासीयैकविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यत्तदब्दीयदिशम्वरमासीयैकविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

सदर-आमीन–आलासंज्ञकस्य जयपत्रे अर्थिनां पक्षतो यथा हेतुर्दासत्वस्थिरीकरणार्थं लिखितः स च दासत्वस्थिरीकरणार्थं याथातथ्येन प्रमाणं

१ कागजेर उपर···तारिखेर लिखित···इति साधीयान् पाठः।

भवत्येव, तज्जयपत्रैरेतेषां दासादीनां शास्त्रोक्तपञ्चदशदासान्तर्गतदाया-द्युपागतत्वेनावगमात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायक्रम-संग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः—इत्यादि दायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासी-यषोडशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

तरजमा

प्रथम छओाल

३५—यदि स्यात् हिन्दुवर्गेर मध्ये कोनो ब्राह्मण व्यक्ति आपन निकातन हइते निर्गत हइया अनुद्विष हय ओ ताहार निदर्शन ना पाओा जाय, तवे ताहार मृत्युर अवधारित कोन पर्य्यन्त गणना हइवेक, एवं ताहार मृत्युर अवधारित गणनार समय कि प्रकार व्यवहार तस्य मृते उचित हइवेक, एवं ताहार निज विशय कोन अवधि मृत व्यक्तिर धन वला जाइवेक, आर ए विशये कत दिवस नियम अवधारित आछे-ताहार व्यवस्था एतद्देशीय चलित शास्त्रानुजाइ श्लोक एवं ताहार तरजमार सहित वाङ्गला भाशाय ।

द्वितीय छओाल

यदि स्यात् हिन्दु वर्णेर मध्ये कोनो ब्राह्मण व्यक्ति आपन निकातन हइते निर्गत हइया अनुद्दीस हय ओ ताहार निदर्शन ना पाओा जाय, एवं ताहार निज विशय अन्य कोन व्यक्ति अतिक्रम आक्रम करिया ग्रहण करे, तवे १२ वत्सर मध्ये

केह उत्राधिकारित्वभावे ऐ व्यक्तिर निज विशये दाविदार हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था एतद्देशीय चलित शास्त्रानुसारे श्लोक एवं ताहार तरजमार सहित वाङ्गला भाशाय इति।

तृतीय छश्रोाल

उपरेर लिखितव्य विशये ऐ अनुद्देशी व्यक्तिर स्त्री वर्त्तमान थाकिते ताहार अन्य कोन सरिक व्यक्ति ऐ अनुद्देश व्यक्तिर स्त्रीके अविरा स्त्रीलोक एवं एक-अन्न-भुक्त ओ गृहवाशी ओ निज प्रतिपाल्य कहिया उत्राधिकारित्त भावे ताहार विशयेर पर दाविदार हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था श्लोक वचन द्वाराय तरजमा सम्वलित वाङ्गला भाशाय—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्वरमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि हिन्दुजातीयानाम्मध्ये कश्चिद् ब्राह्मणः स्वकीयनिकेतनान्निर्गत्यानुद्दिष्टः स्यात्, तस्यैव निर्गतस्य वार्ता न प्राप्यते चेत् तदा तस्य मरणावधारणं प्रस्थानदिनमारभ्य द्वादशसंवत्सरानन्तरं भविष्यति, एवं तस्य मृत्योरवधारणसमये चायं व्यवहारः कर्त्तुमुचितो भविष्यति—शास्त्रानुसारेणाधिकारिणा पर्णनरं दग्ध्वा त्र्यहाशौचं विधाय आद्यश्राद्धादिकं कर्तव्यम्। एवं तत्स्वत्वास्पदीभूतधनं तन्मरणावधारणानन्तरक्षणमारभ्यैव तत्त्यक्तं धनमिदमिति व्यवहर्त्तव्यमिति। एवमेतद्विषये गमनदिनमारभ्य दशवर्षसमाप्तिसमय एवावधारित इति।

अत्र प्रमाणम्—

गतस्य न भवेद्वार्त्ता यावद् द्वादशवार्षिकी।
प्रेतावधारणं तस्य कर्तव्यं सुतबान्धवैः॥—इति शुद्धितत्त्वादि(शुत० पृ० २५६)ग्रन्थधृतनारदवचनम्॥१॥

एवं *पर्णनरं दग्ध्वा त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्*—इति तत्तद्ग्रन्थधृतादिपुराण(शुत० पृ० ३१०)वचनञ्चेति॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्ब्राह्मणजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वनिकेतनान्निर्गत्यानुद्दिष्टः स्यात्तस्य वार्ता न प्राप्यते चेत्, एवं तत्स्वत्वास्पदीभूतधने उदासीनैर्बलाद् गृह्यमाणे[1] सति शास्त्रानुसारेणोत्तराधिकारिणः पत्न्यादयः सुहृत्तमत्वेन प्रोषितधनरक्षाकरणाय[2] एवं तत्र विषये तन्मरणावधारणानन्तरं स्वत्वमूलको(ऽधिकारोऽ)व्याहतो न भविष्यति[3] इति स्वाधिकाराय च द्वादशवर्षमध्येऽपि तत्राधिकर्तुमभियोक्तुमर्हन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु प्रोषितानां तथैव च ।।—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ।।१।।

पत्नी दुहितरश्चैव–इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ।।२।।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्यानुद्दिष्टस्य पत्न्यां वर्तमानायामंशयन्तरेण केनचित् कथञ्चिदप्यनुद्दिष्टधनेऽधिकर्त्तुं न शक्यते—इति च वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थसम्मता व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ।।१।।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयसप्तविंशतितमदिनसम्बन्धीयसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१. गृह्यमाने—व्यप० । २. प्रोषितधनरक्षाकारा०—व्यप० ।
३. स्वत्वमूलक व्याहत भविष्यति—व्यप० ।

प्रथम लेखार भाषा—

हुजुरेर सुपुर्द करा सओयाल, जाहा इंरेजी सन १८३३ साले २९ नवम्बर मासे शुक्रवारे आमि पाइयाछिलाम, ताहार दृष्टे येमत वोध हइल तदनुसारे उत्तर लिखितेछि।

प्रथम प्रश्नोत्तरेर भाषा—

यदि हिन्दु जातिर मध्ये कोनो ब्राह्मण वाटी हइते प्रस्थान करिया अनुद्देश हइया थाकेन, ताहार कोनो समाचार ना पाओया जाय, त तवे ताहार मरण निश्चय १२ वत्सरेर पर हइवेक, आर ताहार मरण निश्चय हइले एइ प्रकार व्यवहार उचित हइवेक ये शास्त्रानुसारे ये अधिकारी हइवेक से पर्णनर अर्थात पत्रेर निर्म्मित नराकार दाह करिया ३ दिवस अशौच ग्रहण करिया आद्य श्राद्ध प्रभृति कर्म्म करिवेक, आर ऐ अनुद्देश व्यक्तिर धन ताहार मरण निश्चय यखन हइवेक, ताहार पर क्षण अवधि ऐ धनके मृत व्यक्तिर त्यक्त धन वलिया व्यवहार हइवेक, आर ए विषये गमन दिन अवधि १२ वत्सर पर्य्यन्त नियम आछे।

इहार प्रथम प्रमाण—

शुद्धितत्वप्रभृति ग्रन्थ धृतनारदमुनिवचनेर भाषा—

वाटी हइते प्रस्थान करिले ऐ व्यक्तिर १२ वतसर पर्यन्त यदि कोन समाचार ना पाओया जाय तवे ताहार पुत्र ओ ज्ञातिरा मरण निश्चय वोध करिवेक इति—

ओ द्वितीय प्रमाण-

शुद्धितत्वादि ग्रन्थ धृतआदिपुराणवचनेर भाषा—

ऐ प्रकार पर्णनर अर्थात् पत्रेर निर्म्मित नराकार दाह करिया त्रिरात्र अशौच व्यवहार करिवेक इति—

द्वितीय प्रश्नोत्तरेर भाषा—

यदि कोन ब्राह्मण व्यक्ति आपन वाटी हइते गमन करिया अनुद्देश हइया थाकेन, ताहार कोन समाचार ना पाओया जाय,

আর তাহার ধন অন্য কোন ব্যক্তি আক্রমন করিয়া গ্রহণ করে, তবে শাস্ত্রানুসারে তাহার ওয়ারিশ, যে পত্নী প্রভৃতি তাহারা ঐ প্রবাসি ব্যক্তির অতি অন্তরঙ্গ—এ প্রযুক্ত ঐ প্রবাসি ব্যক্তির ধনরক্ষার এক্তিয়ার করণ জন্য আর ঐ বিষয়ে প্রবাসি ব্যক্তির মরণ নিশ্চয় হইলে, ঐ পত্নী প্রভৃতির ভাবি হকীয়তের কো-লোকসান না হইবার কারন ১২ বৎসরের মধ্যে ঐ পত্নী প্রভৃতি ওয়ারিশ লোক ঐ বস্তু তে আপন অধিকার করিবার নিমিত্ত দাবী করিতে পারে ইতি—

ইহার প্রথম প্রমাণ—

দায়ভাগাদি গ্রন্থ ধৃত কাত্যায়নমুনি বচনের ভাষা—

নাবালগের ধন অযথার্থে ব্যয় না করিয়া নাবালগের অন্তরঙ্গ লোকের স্থানে গচ্ছিত রখিবেক, আর প্রবাসি ব্যক্তির ধনও ঐ প্রকারে রক্ষা করিবেক—ইতি ॥

দ্বিতীয় প্রমাণ—

দায়ভাগাদি গ্রন্থ ধৃত যাজ্ঞবল্ক্যমুনি বচনের ভাষা—

পুত্র ও পৌত্র ও প্রপৌত্র না থাকিলে মৃত ব্যক্তির ধন প্রথমে পত্নী পায়, পরে দুহিতা পায়, তৎপরে দৌহিত্র পায় ইত্যাদি।

তৃতীয় প্রশ্নোত্তরের ভাষা—

অনুদ্দেশ ব্যক্তির পুত্র পৌত্র প্রপৌত্র না থাকিলে পত্নী থাকিতে অন্য শরীকে কোন ক্রমে অনুদ্দেশ ব্যক্তির ধনে অধিকার করিতে পারে না। এই সকল ব্যবস্থা বাঙ্গলার চলিত দায়ভাগাদি-গ্রন্থানুসারিণী।

ইহার প্রমাণ—

দায়ভাগাদি গ্রন্থ ধৃত যাজ্ঞবল্ক্যমুনি বচনের ভাষা—

পুত্র ও পৌত্র ও প্রপৌত্র না থাকিলে মৃত ব্যক্তির ধন প্রথমে পত্নী পায়, পরে দুহিতা পায়, তৎপরে দৌহিত্র পায়, তৎপরে পিতা, তৎপরে মাতা, তৎপরে ভ্রাতা পায়—ইত্যাদি ॥

अङ्गरेजी सन् १९३४ साल तारिख सातइसा माह जानवरी रोज सोमवार एइ व्यवस्था आमी दाखिल करिलाम इति।

———

३६—रामदास शर्मा मुफ्लेछ मुदाइ
राधाचरण शर्म्मा ओ गयरह मुदाआलेहे
सओोलेर फर्द शदर देओानी आदालतेर पण्डितेर निकट—

सओोलेर तपसि—

प्रथम सओोल—

यदि नान्दिमुखेर श्राद्ध स्वामी ओ स्त्रीर पक्षे हइते ना हइया थाके तबे एइ प्रकार विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इति।

द्वितीय सओोल—

भ्राता ना थाकाते ओ ज्ञाति सपिण्ड थाकिते यदि नान्दिमुख ना हइयाथाके तबे विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इति।

तृतीय सओोल—

एइ सरते—ये एक व्यक्ति, आंत्रिजाति ब्राह्मण, आपन कन्यार विवाह कोन व्यक्तिर सहित स्थिर करिया, वाकदान करिया ताहार मृत्यु हय। परे ऐ कन्यार विवाह अन्य व्यक्तिर सहित हइते पारे कि ना। आर यदि एक व्यक्ति, ये ताहार सहित विवाहेर कथोपकथन छिलो ना, विवाह करे—ताहा सत्य हइते पारे कि ना—इति।

चतुर्थं सओोल—

ऐ कन्यार विवाहेर समय ऐ कन्यार सपिण्डन ज्ञाति थाकिते सम्प्रदानेर क्रिया पुरोहित करिते पारे कि ना—यदि करिया थाके प्रामाण्य हइते पारे कि ना इति।

सप्तम* सओोल—

यदि एक व्यक्ति एक जन स्त्रीलोकके, ये ऐ स्त्रीलोक ताहार खुडार भग्नीर कन्या हय, एवं ऐ दुइ जने ज्ञातत्त खुडततो भ्राता

---

* पञ्चम—इति साधीयान् पाठः।

७।८ पुरुस तफात हइया थाके, विवाहेर कथा कहे, एवं कन्यार मातार सपिण्ड करणेर दिवस विवाह हइया थाके, तबे ए प्रकार विवाह सत्य वटे कि ना इति।

षष्ठ सओाल—

यदि एक व्यक्ति एक स्त्री जयकाली नामक ओ एक पुत्र, द्वितीय स्त्रीर गर्भजात राखिया फौत करे; परे ऐ पुत्र आपन पितार त्येज्य वस्तुर पर दखिलकार हइया एक अविवाहिता कन्या राखिया फौत करे, परे ऐ कन्या आपन पितार तेज्य वस्तुर पर दखिलकार हय; परे एक व्यक्ति कहे—ये आमी सन १२२७ साले ऐ कन्याके विवाह करिया छि, ओ द्वितीय व्यक्ति कहे—जे आमी ऐ कन्याके सन १२२९ साले ओहार पितार वाकदानानुसारे विवाह करियाछि, एवं आमार एक पुत्र ऐ कन्यार गर्भे जन्मियाछिल, ताहाते ए कन्यार मृत्यु हय, एवं ताहार श्राद्धेर दिवस ऐ पुत्र आपन पिता अर्थात् ऐ द्वितीय व्यक्तीर समीच्ते मृत्यु हय, ए विषये यदि मोतओफफात मजकुरार विवाह करा सत्य हय तवे जयकाली मजकुरा उत्राधिकारिणी हय, कि ना। यदि विवाह सत्य ना हय। तवे कि आन्दाज उहाके अर्शे इति।

सप्तम सओाल—

यदि एकजन स्त्री आपन स्वामी ओ नावालग पुत्र राखिया मृत्यु हय, ओ मोतओफफा मजकुरेर पितामहेर एक स्त्री मर्तमान थाके, परे ऐ नावालग पुत्रेर आपन पिता मोछम्मात मजकुरार स्वामीर समीच्ते मृत्यु हय, तवे एइ दुइ जना, अर्थात मेतओफफात मजकुरार स्वामी ओ पितामहेर थाकेन, इहार कोन व्यक्ति ओयारिश हइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशश-

ताब्दीयजुलाइमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिधोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य याद्दशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

वरस्य कन्यायाश्च पक्षतो विवाहकर्माङ्गीभूतनान्दीमुखश्राद्धं यदि न जातं स्यात्तथापि विवाहः सिद्धो भवितुं शक्नोति, अङ्गभूतकर्मणोऽकरणेऽपि प्रधानसिद्धेः शास्त्रीयत्वादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रधानस्याक्रिया यत्र साङ्गं तत्क्रियते पुनः ।

तदङ्गस्याक्रियायान्तु नावृत्तिर्न च तत्क्रिया ॥—इति तिथितत्त्वादि-(तित० पृ० ११)ग्रन्थधृतछन्दोगपरिशिष्टवचनम् ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि भ्रातृसत्त्वे सपिण्डसत्त्वेऽपि नान्दीमुखश्राद्धं न जातं स्यात् तथापि विवाहः सिद्धो भवितुं शक्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणमेवेति ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चित् श्रोत्रियब्राह्मणजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वकीयकन्याविवाह-कथोपकथनं केनचित्सह स्थिरीकृत्य वाग्दानं कृत्वा मृतः स्यात्, पश्चात्तस्याः कन्याया विवाहोऽन्येन केनचित्सह कलौ भवितुं न शक्नोति, एवं येन सह विवाहकथोपकथनं न स्थितं स यस्मै वाग्दत्ता कन्या तस्मिन् विद्यमाने सति यदि विवाहं करोति तदा स विवाहः शास्त्रानुसारेण कलौ न सिद्ध्यतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

दत्तायाश्चैव कन्यायाः पुनर्दानं परस्य च—इति कलिवर्ज्यप्रकरणे उद्वाहतत्त्वादि(पृ० ११२)ग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तस्याः कन्याया विवाहसमये तस्याः सपिण्डसत्त्वे सम्प्रदान-क्रियाकरणे कन्यादानाधिकारिणोऽनुमतिस्तदा पुरोहितेनापि सम्प्रदानक्रिया

कर्तुं शक्यते, नान्यथा। यदि च पुरोहितेन कन्यासम्प्रदानं कृतं स्यात्तत्र कन्यादानाधिकारिणोऽनुमतिश्चेत्तदा प्रमाणं भवति नोचेन्न भवतीति!

अत्र प्रमाणम्—

पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा।

कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थ परः परः॥—इत्युद्वाहतत्त्व(पृ० १२६) धृतमुनिवचनम्॥१॥

स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहारोऽपि तथा—इति विवादभङ्गार्णवादि(ग्र)न्थ(१ विवा ३०३)लिखनम्।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि सप्तमपुरुषबहिर्भूतपितृव्यसम्बन्धसपिण्डभगिनीकन्यया सह विवाहकथोपकथनं कृतम्, एवं कन्यामातृसपिण्डीकरणदिने विवाहो जातः स्यात्तदा तादृशविवाहः सिद्ध्यति। तत्र तस्याः कन्यायाः मातुः पतिविहीनायाः सपिण्डीकरणं वस्तुतः शास्त्रतो यद्यपि नायाति, तथापि प्रश्नपत्रे लिखितमस्तीति कृत्वा मयोत्तरं लिखितमिति।

अत्र प्रमाणम्—

मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमीं त्यजेत्—इत्युद्वाहतत्त्वादि(पृ० १०९)धृतमुनिवचनम्॥१॥

पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रिया नास्ति सपिण्डनम्—इति तत्तग्रन्थधृतमुनिवचनम्॥२॥

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो जयकालीनाम्नीपत्नीमेकां पत्न्यन्तरगर्भजातमेकं पुत्रञ्च संरक्ष्य मृतः स्यात्तदनन्तरं स एव पुत्रः स्वपितृव्य (?) त्यक्तधने आयत्तत्वं सम्पाद्याविवाहितां कन्यामेकां विहाय मृतः स्यात्तदनन्तरं सा कन्यापि स्वपितृत्यक्तधने आयत्तत्वं सम्पादितवती स्यात्, तदनन्तरं कश्चिद् वदति "वङ्गालाख्यसप्तविंशत्यधिकद्वादशशताब्दे मयेयं विवाहिता" इति, द्वितीयः कश्चिद् वदति वङ्गालाख्योनत्रिंशदधिकद्वादशशताब्दे तत्कन्यापितृकृतवाग्दानानुसारेण मयेयं विवाहितेति, एवं तस्याः गर्भे मया एकः

पुत्रः जनित इति च, ततः सा मृता, एवं तस्याः श्राद्धदिने सोपि पुत्रः स्वपितुः समक्षं मृतः स्यादेवंविधविषये मृतायास्तस्याः विवाहस्य सत्यतायामसत्यतायां वोभयथैव जयकाली उत्तराधिकारिणी भवितुं न शक्नोति, सपत्नी पुत्रदौहित्रत्यक्तधने मातामहविमातुः, सपत्नीपुत्रत्यक्तधने विमातुश्चेदानीं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणाधिकाराभावात् । किन्तु मूलभूतधनस्वामिपत्नीत्वेन यावज्जीवं स्वभर्तृकुलोचितग्रासाच्छादनस्यावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य चाधिकारिणी भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

सर्वेषामपि तु न्याय्यं दातुं शक्त्या मनीषिणा ।

ग्रासाच्छादनमत्यन्तं पतितो ह्यददद्भवेत् ॥—इति मनु(९।२०२)-वचनम् ॥१॥

सप्तमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येका काचित् स्त्री स्वपतिमप्राप्तव्यवहारं पुत्रञ्च संरक्ष्य मृता स्यादेवं तस्याः स्त्रियाः पितामहस्यैका पत्नी च वर्तमाना स्यात्, पश्चात्सोपि अप्राप्तव्यवहारः पुत्रः स्वपितुः समक्षं मृतः स्यात्, तदा पतिपितामहपत्न्योर्वर्तमानयोर्मध्ये पतिरेवाधिकारी भवति । तस्याः स्त्रिया[1] मरणानन्तरं विवादास्पदीभूततद्धनेऽप्राप्तव्यवहारपुत्रस्वत्वस्योत्तराधिकारित्वेन जातत्वेन तद्धनं तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य जातम् । अतस्तन्मरणोत्तरं तस्यैवा(प्राप्तव्यवहारस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, तस्याप्राप्तव्यवहारस्योत्तराधिकारिणां मध्ये तत्पुत्रमारभ्य दौहित्रपर्यन्ताभावेन तत्पितुरेवाधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वात् । जयकाल्याश्च धनिनोऽप्राप्तव्यवहारस्य मातामहविमातुः सपत्नीपुत्रदौहित्रस्य तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य त्यक्तधनेऽधिकाराभावात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीका-उद्वाहतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी-व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

१. स्त्रीया म०—व्यप० ।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमासीयदशमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३७—रुवकारि मेछेल सदर देओानी आदालते मोकाम कलिकाता आदालते मजकुरेर हाकिम हेनरि सिक्किसपीयेर छाहेवेर वैठके। सन १८३३ इं २८ माहे नवम्बर मोतावेक सन १२४० वाङ्गला १४ माहे अग्रहायन दिवस बृहस्पतिवार—

रतनचन्द्र ओ किरतचन्द्र छाएलान्

छायेलानेर उकिल लालावस्तिलाल हाजिर आसिलेक। छाएलानेर छओाल सन हालेर २४ जुलाइर हओा क्रोट आजिमावादेर हाकिम जेमछ हारिङ्गटीन छाहेवेर हुकुमेर नाराजिते जाहा तामछ कटवरट छाहेवेर अभिप्रायेर ऐक्यताय कोन व्यक्तिर अंशेर विना नामकरणे जायदाद निलामेर वावत छादर हय। हुकुम मजकुरेर तरदिद ओ० छाएलानेर दाखिल करा आमानत टाका। फेरत हओनेर प्रार्थनाय सन १८२९ इं० ११ शेतम्बरेर लिखित हुकुम गोपालचन्द्र ओ प्यारिलालेर एक किता छओाल आर २६ जुलाइर मस्तवार लिखित क्रोट मजकुरेर हाकिमेर रुवकारिर नकल एक किता सम्वलित, जाहा एइ मासेर १५ तारिखे दाखिल हइया छिल, पडागेल। प्रकाश हइतेछे ये आदालतेर कायदा ओ जावेता ओ प्रकार नहे ये एजमालिर डिगरिर हालते रशदि अंश सुरतेर कएक व्यक्ति मुद्दाआलेहेमेर पर डिगरि जारी आमले आइशे। अतएव ए विषय उपरेर लिखित प्रेवनशीयान क्रोटेर हुकुम जावेता ओ दस्तुरेर अन्यथा नहिवेक। किन्तु जखन एजमालि डिगरि जारि जन्ये हुकुम हइल, उचित

छिल जे डिगरिर टाका जे अन्दाज अंश किरतनचन्द्र अथवा गोपालचन्द्र, अथवा किरतचन्द्र हइते दाखिल हइया थाके ताहा फेरत दिया अंशेर विना निर्दिष्टे ते सुमुदय पैतृक विषयेर निलामेर हुकुम छादर करेण। किन्तु चुडन्त हुकुमे छादरेर पूर्व्वे हुकुम हइल जे एइ विशयेर व्यवस्था एइ आदालतेर पण्डित हइते तलब हय ये पैतृक कर्ज्जेर बावत डिगरिर जारि हालते यद्यपि सन्तानेरा पितार लोकान्तरे पैतृक त्यज्य वस्तुर पर अंश स्तरते दखिलकार हइया थाकेन तवे डिगरिर टाका सन्तानदिगेर अंश हइते लओ्आ जाइवेक, कि अंशेर विना निर्णय पितार त्यज्य वस्तु हइते उसुल हइवेक। आर छेरेस्तादार, यदि स्यात्, एइ मकर्द्दमार प्रमान एइ आदालतेर सेरेस्ताय थाके गुजरायेन। इति

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयाष्टाविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयदिशम्बरमासीयाष्टाविशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यदि पैतृकर्णपरिशोधनार्थं धर्म्माधिकरणतो जयपत्रे प्रकाशिते सति पुत्राः स्वपितुर्मरणोत्तरं तत्त्यक्तधने अंशित्वेन आयत्तत्वं सम्पादितवन्तः स्युस्तदा जयपत्रविषयीभूतपैतृकमृणं पुत्राः स्वस्वांशानुसारेण स्वस्वांशत एव दद्युः, यतः पित्रुपरमानन्तरं तत्त्यक्तधने पुत्राणां यथा अधिकारस्तथैव पैतृकर्णपरिशोधनेप्यधिकारः। अतएव पितृमरणोत्तरमंशानुसारेण गृहीतपैतृकधनानां पुत्राणामंशानुसारेणैव पैतृकर्णपरिशोधनाधिकारस्य शास्त्रानुसारेण न्याय्यत्वात्—इति पाटलिपुत्रप्रभृतिदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

रिक्थग्राह[1] ऋणं दाप्यः-इति उपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥१॥

पितर्य्युपरते पुत्रा ऋणं दद्यु र्यथांशतः ।

विभक्ता अविभक्ता वा यो वा तामुद्वहेद्धुरम् ॥—इत्युपरिलिखित-ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

विभजेरन्सुताः पित्रोरूर्द्ध्वं रिक्थमृणं समम्-इति तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनमिति ॥३॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफिवरवरीमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

ल० ३४५५

३८—रूवकारि मिछिल आदालते सदर देओानि मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम हेन्‌रि सिक्सिपीयर छाहेवेर वैठके। सन १८३३ इं हओा तारिख २६ नवम्वर मोतावेक सन १२४० वाङ्गला १२ अग्रहायन दिवस मङ्गलवार—

राजा पटनीमन ओ राय वनशीधन आपिलाण्टान् ।

राय मनोहरलाल स्वयं ओ अलि स्वरूप

जानिवे आनन्दिलाल ओ हरजयलाल ओ

मुकुन्दलाल ओ हरवनशीलाल नावालगान् रेछपाडण्टान् ।

आपिलाण्टानेर उकिलान मुनशी होछन आलि ओ मुनशी दादार वखश ओ रेछपाडण्टानेर उकिलान् मुनशी अलिउल्ला ओ मुनशी गोलाम आहमद हाजिर आसिलेक ओ रेछपाडण्टानेर तृतीय उकिल सदासुखपण्डित पिडित विधाय हाजिर

---

१. ऋक्थग्राह—व्यप० ।

नाइ। एइ मकद्दमा गत कल्य आमार वैठके उपस्थित आर गत कल्येर रुवकारिर लिखित उजुहाते अनेक कागजात पडा हइया दिवा अवसान जन्ये मलतवि रहिल। अद्य पुनराय उपस्थित। ओ उभय विवादिर विवाद वावत एइ आदालतेर मतफरकार रूवकारिसकल ओ एइ आदालत ओ क्रोटेर मिछिलेर गाँथा उभयेर दस्तावेज पडा गेल। यद्यपि चुडन्त हुकुम हओार पूर्व्वें कयेक विषयेर जिज्ञाशा एइ आदालतेर पण्डित हइते आवश्यक वोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये ऐ रूवकारिर नकल सम्वलित एइ आदालतेर ओ क्रोटेर सकल कागजात एक सप्ताह मियादे ऐ पण्डितेर निकट पाठान जाय ये वारानशेर पाठशालार व्यवस्था ओ सुप्रीम क्रोट ओ अन्य अन्य पण्डितेर दस्तखति व्यवस्था दृष्टान्तरे एइ विशयेर जओाव लेखेन। जे ओलएम वेवाडिन छाहेव हाकिमेर हुजुरेर वावत ऐ पण्डितेर जोवानि जओाव-सकलेर सुधरान अथवा वदलानु हेतु, जहार जेकेर ऐ हाकिमेर रूवकारिते लिखित आछे, किछु आवश्यक हय कि ना। आर यद्यपि ऐ पण्डितेर पूर्व्वेंर राय वर्त्तमान थाके, तवे लेखेन ये उपरेर व्यवस्थाहाय मजकुरेर लिखित वचनसकल कोन विचारे अशुद्ध गणा जाइतेछे, आर आपन व्यवस्थार वुनयाद ओ कोन वचनसकलेर पर मवतनी आछे, सरेओार लेखेन। ओ यद्यपि आपिलाण्टानेर उकिल रेछपाडण्टानेर दाखिल करा व्यवस्था वावते मकद्दमा नेहालसिंह आपिलाण्ट ओ चेत्तू रेछपाडण्टेर पद्धे विशेषत एइ विशयेर पर ओजरदार आछे ये ऐ मकद्दमार उभय विवादीय व्राह्मण जाति छिलेन, आर ऐ मकद्दमार उभय आगरओाला वैश्य जाति हयेन। अतएव उचित ये ऐ पण्डित ताहार पर दृष्ट करिया ऐ विशयेर जओाव, जे आगरओाला जातिर मर्य्यादा निमित्ते व्यवस्था मककुरेर किछु तफात आविश्यक आइसे, कि ना लेखेन। आर क्रोटेर मिछिलेर ६४ लम्वरेर दाखिल करा एइ आदालतेर सावेक पण्डित-

सकलेर व्यवस्था, जाहा मतफरकार मुकद्दमार विचारे एइ आदालते लश्रो गीयाछे, ऐ पण्डित ताहार पर ओ गौर ओ ताम्बुल करिया जओाव लेखेन—ये तदनुसारे ओ तदान्तर ये सकल तहकीकात आमले आशीयाछे, तद्दृष्टे व्यवहार किछु तबदिल हेतु आवश्यक हइवेक, कि ना। ओ यदि स्यात् आवश्यक हय ताहार जेकेर लेखेन इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीखिक्सिग्रीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयषड्विंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यत्तदब्दीयदिशम्बरमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रस्य सुप्रीमकोर्टाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डिततदितरपण्डितसम्मतव्यवस्थापत्रस्य चावलोकनेन श्रीयुक्तोलियमवेराडीनसाहेवाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतास्मत्संबन्धिप्रश्नस्यास्मद्दत्तवाचनिकोत्तरस्य परावर्त्तनस्य शुद्धकरणस्य चावश्यकता काचिदपि नास्ति। तथाहि श्रीयुक्तोलियमवेराडीनसाहेवाभिधानैस्तद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतास्मत्संबन्धिप्रश्नश्चायमेव। यद्यपि हिन्दूजातीयः कश्चित् पत्नीमेकां पञ्च दौहित्रान्, येषां दौहित्राणां माता विद्यमाने स्वपितरि मृता स्यात्, द्वौ भ्रातुष्पुत्रौ च संत्यज्य मृतः स्याद्, एवं क्रमागतधनं भ्रातुर्द्वयोर्म्मध्ये विभक्तं स्यात्तदा तस्य मृतस्य त्यक्तांशः कस्य भवतीत्येकः। तदुत्तरं मया दत्तं 'तत्पत्नी प्राप्नुयात्।' पुनः प्रश्नान्तरम्—तत्पत्नीमरणोत्तरं कस्य भवतीति। तदुत्तरं मया दत्तम्—'दुहिता यदि नास्ति तदा दौहित्राः प्राप्नुयुः' इति। अत एवैतयोर्द्वयोः प्रश्नयोर्म्मध्ये प्रथमप्रश्नस्य यदुत्तरं मया दत्तं तदेवोत्तरं तत्प्रश्नविषये वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थपण्डितैः सुप्रीमकोर्टाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितैरन्यैरपि पण्डितैर्लि-

खितम्। तत्र कश्चिद्विशेषो नास्ति, तद्व्यवस्थाद्वयोर्म्मध्ये विभक्तकृत्स्न पतिधने[1] तु पूर्व्वं पत्न्या एवाधिकारः, इत्यस्य लिखितत्वात्।

द्वितीयः प्रश्नो यस्तदधिपतिना मां प्रति कृतस्स च प्रश्नो वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थपण्डितान् प्रति सुप्रीमकोर्टाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितान् प्रति तदितरपण्डितान् प्रति वा तत्प्रश्नकर्त्तृभिर्यद्यपि न कृतस्तथापि तैः पण्डितैरेकानुपूर्व्वीकसंस्कृतव्यवस्थाद्वयोरधोभागे कात्यायनमुनिवचनं वीरमित्रोदयग्रन्थलिखिततद्वचनव्याख्यानञ्च प्रमाणं लिखित्वा यल्लिखितं यत्तत्पारसीकतत्प्रतिरूपेणैक्यं नालम्बते। तस्यायं पर्य्यवसितार्थः। यद्विभक्तं पतिधनं पतिमरणोत्तरं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तं स्यात्, पत्नीमरणोत्तरं तद्धनं पतिभ्रातृपुत्रदौहित्रयोः समवाये पतिभ्रातृपुत्रा एव प्राप्नुयुर्न्न दौहित्रा इति। तत्र वीरमित्रोदयग्रन्थलिखितस्य कात्यायनवचनस्य तद्वचनव्याख्यानस्य चायमेवाभिप्रायः। यदि विभक्तं पतिधनं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तं स्यात्तदा पत्नीमरणोत्तरं तत्संक्रान्तपतिधनं पत्युर्य्ये उत्तराधिकारिणस्त एव गृह्णीयुः, न तु पत्न्युत्तराधिकारिण इति। तत्र च पत्युत्तराधिकारिणां मध्ये "पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा तत्सुतः"—इत्यादि याज्ञवल्क्यादिवचनोक्तपत्युत्तराधिकारिणां दुहित्रादीनामेवाधिकारः। तत्रापि प्रथमं दुहितुस्तदभावे दौहित्राणां तदभावे मातुस्तदभावे पितुस्तदभावे भ्रातॄणां तदभावे भ्रातृपुत्राणां तदभावे गोत्रजादीनां पाठक्रमेणाधिकारः। तत्र च पत्नीमरणोत्तरं विद्यमानायां दुहितरि विद्यमानेषु दौहित्रेषु विद्यमानायां मातरि विद्यमाने च पितरि विद्यमानेषु च भ्रातृषु पतिभ्रातृपुत्रात् पूर्व्वं पत्युत्तराधिकारिषु एतान् विहाय पतिभ्रातृपुत्राणामधिकारो भवति – एतद्विधायकः पश्चिमदेशचलितधर्म्मशास्त्रान्तर्गतस्य कस्यापि ग्रन्थस्याभिप्रायो नास्ति। अतएव तत्तद्व्यवस्थालिखितपण्डितानां मतं पश्चिमदेशचलितशास्त्रबहिर्भूतमेव, तत्तत्पण्डितैः स्वस्वव्यवस्थालिखितवचनानां वीरमित्रोदयादिग्रन्थानां चाशयानबुध्द्वैव लिखितत्वात्। अतएव वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखित-

[1] कृत्स्न—व्यप०।

कात्यायनवचनं तद्व्याख्यानञ्च यत्तत्तत्पण्डितलिखितव्यवस्थामूलभूतप्रमाणमस्ति तदेतद्व्यवस्थाया अधोभागे प्रमाणत्वेन, एवं सर्व्वत्रैव वीरमित्रोदयादिग्रन्थे यत्पतिधनं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तं तद्धने पत्नीमरणोत्तरं प्रथमं दुहितुस्तदभावे दौहित्राणामधिकारस्य बहुशो लिखितत्वात्, तद्विषयकवीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखितप्रमाणान्यप्येतद्व्यवस्थाया अधोभागे प्रमाणत्वेन मया लिखितानि सन्ति । तैरेवैतत्सर्व्वं स्पष्टमिति ।

एवञ्च सति अस्मद्दत्तश्रीयुक्तोलियमवेराडीन साहेवाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिसमीपे वाचनिकोत्तरस्य प्रमाणान्यप्येतद्व्यवस्थाया अधोभागे लिखितानि सन्त्येवेति । एवं थानसिंहनाम्नोऽर्थिनः जितुनाम्न्याः प्रत्यर्थिन्या विवादसम्बन्धिन्या व्यवस्थाया अगरवालाख्यवैश्यजातीयस्य मर्य्यादार्थमेतद्विषये कस्यचिद्विशेषस्यावश्यकता नास्ति । याज्ञवल्कीयापुत्रधनाधिकारप्रकरणीयवचने सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः' इति । अस्य विशेषतो लिखितत्वात् । एवं कोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणनिविष्टपत्रजातान्तर्गतचतुःषष्ट्यङ्काङ्कितव्यवस्था चैतद्धर्म्माधिकरणे विवादास्पदीभूतधनजाते आयत्तत्वसम्पादकाज्ञाभवनकाले गृहीता, तदनुसारेण तदनन्तरं यद्यदनुसन्धानं धर्म्माधिकरणतो जातं तद्दृष्ट्यापि श्रीयुक्तोलियमवेराडीनसाहेवाभिधानैस्तद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतासमत्सम्बन्धिप्रश्नस्यास्मद्दत्तवाचनिकोत्तरव्यवस्थायाः काचिदपि परावर्तनस्यावश्यकता नास्ति, तद्व्यवस्थायामपि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने प्रथमं पत्न्यास्तदभावे दुहितुस्तदभावे दौहित्राणामधिकारस्य स्पष्टीकृतत्वात्—इति पश्चिमदेशान्तर्गतागराप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

अयञ्च वचनार्थः–दायादा इत्यत्र कस्येत्यपेक्षायां शयनान्वितभर्तु-रित्येवोपस्थितत्वादनुषज्यते–इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥
एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।
स्वर्य्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः ॥–इति मिताक्षरावीर-मित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥३॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिता-क्षराग्रन्थलिखनम् ॥४॥

तस्माद्विभक्ता संसृष्ट्यन्यपुत्रे स्वर्याते पत्नी धनं प्रथमं गृह्णात्ययमर्थः सिद्धो भवति—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥५॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्यातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितं, तदभावे दुहितरः––इति मिताक्षरा-ग्रन्थलिखनम् ॥६॥

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाक्––इति मिताक्षरावीरमित्रोदयादि-ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

पत्न्यभावे दुहितरोऽपुत्रविभक्तासंसृष्टधनभाजः––इति वीरमित्रोदय-ग्रन्थलिखनम् ॥८॥

यथा पितृधने स्वाम्यं तस्याः सत्स्वपि बन्धुषु ।
तथैव तत्सुतोऽपीष्टे मातृमातामहे धने ॥–इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृत-बृहस्पतिवचनञ्चेति ॥९॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफिवरवरीमासी-याष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१३४ लम्बर आपील—

इ० १८३१ साल

३९—सदर देश्रोयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न:—
यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति अपुत्रक एक विधवा कन्या आर ऐ कन्यार एक पुत्र एवं एक कन्या ऐ व्यक्तिर वर्त्तमाने मरे। ताहार एक पुत्र आर सहोदर भ्रातार एक पुत्र राखिया लोकान्तर करे। आर ऐ व्यक्तिर मरणान्ते ऐ वर्त्तमाना कन्यार पुत्रेर मृत्यु हय—एमत स्थले ऐ व्यक्तिर स्थावरादिधने काहार अधिकार हय। आर पूर्व्वोक्त कन्या ओ दौहित्रगण वर्त्तमान थाकिते ऐ व्यक्ति उदरामय ओ ज्वररोगावस्थाय आपन स्थावरादि धन सहोदर भ्रातार पुत्रके दान करिया ऐ दानपत्रे दौहित्रगणेर मोशाहेरा निर्णय करिया ऐ दानेर वस्तुर उपस्वत्व हइते दिवार विषये दानगृहीता व्यक्तिर प्रति अनुमति लिखिया देय, तवे एमत दान शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे, कि ना—इहार यथाशास्त्र प्रत्युत्तर लिखिवा—इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितः कश्चिद्व्यक्तिविशेष एकां विधवां दुहितरं तत्पुत्रञ्चैकं स्वजीवनावस्थायां मृताया एकस्या दुहितुरेकं पुत्रं सहोदरभ्रातृपुत्रञ्चैकं संरक्ष्य मृतः स्यात् तन्मरणानन्तरञ्च विद्यमानायास्तत्कन्यायाः पुत्रस्य मरणं जातं चेदपि धनिनो मृतस्य त्यक्तधने तन्मरणकालीनविद्यमानपुत्रयोः सम्प्रति च वर्त्तमानाया दुहितुरेवाधिकारः। यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य त्यक्तधने प्रथमं पत्न्यास्तदभावे दुहितुरधिकारः, दुहितृष्वपि प्रथमं कुमार्य्यास्तदभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावित-

पुत्रायाश्चाधिकारः अत एव पितृमरणोत्तरं या कन्या पुत्रवती स्थिता तस्या अधिकारस्य धनिनो मृतस्य पुत्रमारभ्य कुमारीपर्य्यन्तरहितस्य त्यक्तधने निष्प्रत्यूहतया जातत्वेन जाताधिकारायां तस्यां विद्यमानायां तत्पुत्रस्य मरणेऽपि धनिनो मृतस्य त्यक्तधने तस्य अधिकारो नैव विनश्यति। अतस्तस्यां विद्यमानायां तत्संक्रान्तपितृधने तत्पितृदौहित्रस्यार्थात्तद्भगिनी-पुत्रस्य विद्यमानस्य तत्पितृभ्रातृपुत्रस्य च नाधिकारः। एवं पूर्व्वोक्तकन्या-दौहित्राणां विद्यमानतायामुदरामयज्वररोगावस्थायां स्वस्वत्वास्पदीभूतस्थाव-रादिधनस्य भ्रातृपुत्रसम्प्रदानकं यद्दानं तेन कृतं तद्दानपत्रे दानविषयीभूत-स्थावरादिधनोपस्वत्वात् स्वदौहित्राणां ग्रासाच्छादनदानार्थमनुमतिर्दानग्रही-तारं स्वभ्रातृपुत्रं प्रति लिखिता स्यात्तदान(ा)मेतद्विवादविषयनिविष्टप्रभुसमर्पित-पत्रजाततात्पर्य्यार्थविवेचनया धर्म्मशास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति। कथञ्चिद्दानं जातं चेदपि दातृत्वेन मन्यमानस्य रोगार्त्ततावस्थायामेतद्दानस्य जातत्वेनै-तादृशदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वाभावात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदाय-तत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसा-रिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम्॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी रिक्थं[1] गृह्णीयात्तदभावे चोढा—इति दायभागादिग्रन्थधृतपराशरवचनम्॥

पुत्रवती सम्भावितपुत्रा चाधिकारिणी—इति दायभागग्रन्थ-लिखनम्॥ ३॥

कुमार्य्यभावे चोढाया पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च तुल्योऽधिका-रस्तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः—इति दायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम्॥ ४॥

---

१. ऋक्थं—व्यप०।

अदत्तन्तु *भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः*—इत्यादि विवादार्णवसेतु विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ५ ॥

तत्र भयादिरुगन्वितान्ताः[1] *पञ्चप्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः*—इति विवादार्णवसेतु(पृ० १५३)विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१ विवा०४८६ख) लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीयनवमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

४० रोवकारि भिछिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकात्ता इङ्गरेजी सन १८३४साल तारिख ६ माह माइ मोतावक वाङ्गला सन १२४१साल तारिख २५ माह वैशाख रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रावट हालडन राटरि साहेवेर वैठके—

रामगोपालदेओ वनाम गकुलचन्द्रतह विलदार
ओ कृष्णगोविन्दतन्तर
ओ जुगलकिशोरतन्तर
ओ हरेकृष्णतन्तर
ओ राजकिशोरतन्तर

छाएल हाजीर हइल। छाएलेर सओल एक टाका मुल्येर इष्टाम्प कागजेर पर दासत्वेर मकर्द्दमाय दासत्व ओ कार्य्येर खेसारत वावत मवलगे १५ टाकार परिमाणे खास आपिल ग्राह्य हओनेर प्रार्थनाय एक केता जेला मयमनसिंहेर काजी

१. क्रोधादिरुगन्ताः इति विवादार्णवसेतुपाठः।

सदर आमिनेर फयसलार नकल इं सन १८२८ सालेर ३०माह दिजम्बरेर लिखित ओ एक केता जेला मजकुरेर जजसाहेवेर फयसलार नकल इं सन १८३३ सालेर १७ दिजम्बरेर लिखित सम्वलित, जाहा सन हालेर १३माह मार्च्च तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य उपस्थित ओ दृष्ट हइल। जे हेतुक ए मकद्दमार उभये हिन्दुजाति हयेन, अतएव ए मकद्दमार फयसलासकलेर यथार्थ ओ अयथार्थेर प्रति व्यवस्था लओन उचित वोध हइया हुकुम हइल जे समुदय कागजाते ए आदालतेर पण्डितके समर्पण करा जाय। उचित ये पण्डित कागजात अनुमोदन ओ दृष्ट पूर्व्वक ए विशयेर व्यवस्था ये ए मकद्दमार फयसला-सकल वाङ्गला देश चलित शास्त्रमते यथार्थ वटे, कि ना—लिखिया महरमेर वन्देर पूर्व्व दाखिल करेण इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावटहालडनराटरीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमेइमासीयषष्ठदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयमेइमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतद्विवादविषयनिविष्टमयमनसिंहजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तसदरआमीनपदाभिषिक्तकाजीशब्दप्रतिपाद्यकृताङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्याष्टाविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयत्रिंशत्तमदिवसीयजयपत्रं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति—इति वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

यत्रापि चैक दासीगवादिकं बहुसाधारणं तत्रापि तत्तत्कालविशेषे वहनदोहनफलेन स्वत्वं व्यज्यते। तदाह बृहस्पतिः—

"*एकां स्त्रीं कारयेत् कर्म्म यथांशेन गृहे गृहे*" इति युक्त्या *विभजनीयम्, तदन्यथानर्थकं भवेत्*—इति च दायभाग(पृ० ६)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमेइमासीयसप्तविंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(४१)—मोकाम कलिकातार सदर देओानि आदालतेर इंरेजि सन १८३४ सालेर १८ जानेर मोतावक वाङ्गला सन १२८० सालेर ६ माघ शनिवार तारिखेर श्रीयुत ओलीयम ब्राडिन साहेव ऐ आदालतेर हाकिमेर वैठकेर रोवकारि—

७५ नं:—

सन १८३२ साल

राधानाथचौधुरि — आपीलाण्ट

श्रीमति कृष्णरमनिदास्या, कृष्णनाथ मोतओफार कन्या ओ परानचन्द्रनेउगी ओ राधाचन्द्रनेउगी नावालगदिगेर माता— रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल। एइ मोकर्द्दमा कल्य ओ अद्य आमार वैठके रोवकार हइया जेलार तावत कागज ओ क्रोट आपिलेर कागजसकल ओ ए आदालतेर कागजसकल पाठ करा गेल। चुडन्त हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे निचेर लिखित प्रश्नसकलेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओा उचित वोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल मोकर्द्दमार कागज समेत ए आदालतेर पण्डितके एइ हुकुमे समर्पन करा जाय ये निचेर लिखित प्रश्नसकलेर प्रत्युत्तर एइ हुकुम प्राप्तेर दिवसावधि तिन सप्ताह मध्ये दाखिल करेन।

प्रथम प्रश्न-कोन व्यक्ति हिन्दुर एक पुत्र तिन कन्या ओ एक सहोदर भ्राता ओ पैतृक वस्तु राखिया मृत्यु हय। ताहार पर ऐ मृत व्यक्तिर पुत्र अविवाहित समय उहार तिन सहोदरा भग्नी, ताहार मध्ये एक जनार दुइ पुत्र, ओ स्वामि आछे, आर दुइ जना पुत्रसन्तान राखे ना, वर्त्तमान थाकितेओ पैतृक विषय आपन पितृसहोदरके हेवा करे। तवे ए प्रकार पैतृक विषयेर हेवादातार पितार दौहित्रगण थाकितेओ वाङ्गलादेशीय चलितशास्त्रानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ वटे कि ना इति—

द्वितीय प्रश्न—यद्यपि स्यात् वाङ्गलादेशीय चलितशास्त्रानुसारे एइ हेवानामा सिद्ध वोध हय, तवे साक्षीदिगेर जवानवन्दि प्रभृति मोकद्दमार कागजसकलेर द्वाराय कोन एक द्वितीय हेतु ऐ हेवानामा अयथार्थेर विषये पाओ‍ा जाय-ताहा विस्तारित लेखेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रोलियमवेराडिनसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयजानवरीमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि हिन्दुजातीयः कश्चिद्व्यक्तिविशेषः पुत्रमेकं कन्यात्रयं सहोदरभ्रातरं चैकं पैतृकं धनं च संरक्ष्य मृतः स्यात्तदनन्तरं तस्य पुत्रोऽप्यविवाहित एव पुत्रद्वयवत्या एकस्याः सधवाया भगिन्या अपरयोः पुत्ररहितयोर्द्वयोर्भगिन्योश्च विद्यमानतायामपि स्वपैतृकधनस्य दानं स्वपितृव्यमुद्दिश्य कृतवान् स्यात्तदोपरिलिखितानां भगिन्यादीनां मध्ये ये केचित्तद्धनमात्रोपजीविनस्तेषां यावज्जीवं स्वपितृकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तादावश्यकधर्म्माद्याचरणोपयुक्ताच्च धनाद्यदवशिष्टं धनं तद्विषये तद्दानं सिद्धं भवतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्--इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् ॥२॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्य्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधन(स्य) वै ॥--इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति—

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

(ए)तद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातैरेतद्दानस्यायथार्थताबोधकः कश्चिद्धेतुरद्यापि न प्राप्तः । यद्यप्यर्थिप्रत्यर्थिनोः प्रश्नोत्तराभ्यां दानसमये दातृ राजयक्ष्मरोगग्रस्तताऽवगम्यते, परन्तु तत्पत्रजातैर्दातृपितृपरमसमये दातुस्तद्रोगग्रस्ततताया अनवगमेन दातुः स्वपितृपरमानन्तरं तत्त्यक्तधने स्वत्वोत्पत्तेर्न्निश्चितत्वेन कैश्चित् तत्पत्रजातैर्दानसमयात् पूर्व्वं प्रायश्चित्तकरणस्याप्यवगमेन तद्दानसमयात्पूर्व्वं कृतप्रायश्चित्तस्य स्वपितृपरमसमये अजाततद्रोगस्य पितृत्यक्तधने जातस्वत्वस्य तद्रोगग्रस्ततायास्तत्कृतदानस्याशास्त्रीयत्वसम्पादकत्वाभावात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था-

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयम् ॥३॥

पतितानामपि स्वधनसाध्यप्रायश्चित्तश्रुतेः पातित्वेन सत्त्वनाशः प्रायश्चित्तवैमुख्ये बोध्यः-इति दायतत्त्व(पृ० १६२)दायभागटीका(पृ० १६)विवादभङ्गार्णवादि(२ विवा १४ ख १५ क)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजूनमान(?)मासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(४२)—नं० ६४ सदर आपील—

रोवकारि सदर देओानि आदालत मोकाम एलाहाबाद ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकसुन्दर जान कालओन साहेबेर वैठके। ओाकका तारिख ३० देछम्बर सन १८३३ इं मोतावेक ४ पौष सन १२४१ फछलि वोज[1] सोमवार—

लछमीकान्तकालिया आपीलाएट

रघुनाथरायेर मृत्यु ओ रानाराओ[2] ओ लछमीराओ[3] निमाराओर ओारिश आपन तरफ हइते एवं रघुनाथराओ मजकुरेर ओारिसिर दाविदार-- रेष्पाडएटान्

गोविन्दलओजापुरि रघुनाथराओ मतोफार लिखित ओछियतनामा सुरते अछियतेर दाविदार—

छाएल—

आपिलाएटेर उकिलगण छयद फजल होसेन ओ मौलवि गोलाम जिनानि ओ पण्डित व्रजलाल ओ मौलवि नेयामत आली ओ लाला पहलओानसिंह ओकिलान, गोविन्दलओजारपुरि दाविदार ओछियत रघुनाथराओ मतोफार एक रेष्पाडएटेर तरफ हइते छानि ओकालतनामा दाखिल करिया ओ रानाराओ ओ लक्ष्मीराओ रेष्पाडएटानेर एवं रघुनाथराओ मजकुरेर वाछतेर दाविदारेर उकिलान् लाला रामचन्द्र ओ छइएलाएत आली हाजिर आइल। इं सन १८३३ सालेर २४ आपरेल ओ १५ मेइ ओ ६ जुन ओ २८ दिशम्बरेर लिखित ए आदालतेर रोवकरि सकल ओ सहर वानारसेर पाठसालार पण्डितानेर व्यवस्था, जे वारानसेर प्रविनशीयान कोटेर छओयालेर जओावे कोट मजकुराते गुजरियाछिल, ओ तथाकार व्यवस्था आपिलाएटेर तरफ हइते ए आदालते दाखिल हइयाछे, ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था जे सन हालेर १५ मेइ तारिखेर लिखित रोवकारिर

---

१. रोज—इति साधीयान् पाठः। २. वानावाओ—व्यप०।

३ लक्ष्मीवाओ—व्यप०।

जओवे गुजरियाछिल, पडा गेल। मोकद्दमार रोयदादे एइ प्रकार वोध हए जे माधवजी ब्राह्मणजाति पितार तेज्य वस्तुर अर्द्धेक हिस्या तकलिम करिया लइवार दाविते मवलगे ५० लक्ष टाकार तायदादे रानाराओ ओ लक्ष्मीराओ ओरिसान निमाराओ ओ खोद रघुनाथ ओ लक्ष्मीकान्तकालियार नामे वानारसेर प्रविनशीयान कोर्टे नालिस करिलेक, ओ मोकद्दमा दरपेस थाकन कालिन दस्तावेज तमलिकनामा कि हेवानामा आपन हक मुछ हिस्या मुदाआलेहेमेर मध्ये एक व्यक्ति लक्ष्मीकान्तकालियार नामे लिखिया काएम मोकाम ओ ओरिस आपना करिया लिखिया देय, ओ मोकद्दमा निष्पत्य ना हओाते माधोजि मजकुर फौत हइलेओ आपीलाएट ओहार जायगाते काएम मोकाम मुदइ हइया मोकद्दमा समाप्ते पौछाइल। वानारसेर प्रविनशीयान कोटेर हाकीमान पाटसालार पण्डितदिगेर व्यवस्थार दृष्टे एइ खोलासाते, जे मौरूशी विओजाहा कखन तकसीम ना हइयाछे, ओ एक एक व्यक्तिर हिस्या नियुक्त ना हइयाछे, यद्यपि उत्तराधिकारिदिगेर मध्ये कोन व्यक्ति अन्य आपन अंशीर परामर्श व्यतिरेके एमत अंशीय धन दान करे, एमत दान शास्त्रेर विधान ओ मिताक्षरा इत्यादिर प्रमानानुसारे ग्राह्य नय, ओ वेवाक वस्तु अस्थावर ओ सरिकी धन आपन अंशीय व्यक्तिर परामर्श व्यतिरेक हेवा ओ विक्रय ना करे, सन १८३२ सालेर १६ जुलाइ तारिखे एइ प्रकार फयसुल करिलेन ये समुदाय मौरुशी धन हइते कि रामाजिकालियार ओ कि देओाजि पिता किम्वा माछजि खुडार सक्त हय, तिन भ्राता अर्थात् निमाराओ ओ रघुनाथराओ ओ लक्ष्मीकान्तकालिया, ये स्थाने जाहार निकट थाके, तिन भ्रातार सोमान अंश जाना जाय। आपीलाएट ऐ फयसलार पर धैर्य्य ना हइया सदर आपील करिलेक। ओ ए आदालते आपीलाएट पाटसालार पण्डितदिगेर लिखित व्यवस्था, जे दरपेष करिल, ताहार तृतीय दफाते जे मोकद्दमा रोयदाद सहित एक

प्रकार अक्यता राखे। एइ जे शास्त्रानुसारे जे हेतुते हिस्यादार आपन हिस्या ना पाय। यद्यपि हिस्यादार से हेतु हइते सुध्य थाके, ओ द्वितीय अंशीयरा ताहार अंश जवरदस्ती मते ना देय। हाकिम विचार कालिन ताहार हिस्या देओान, ओ यदि ऐ व्यक्ति आपन हिस्या अन्य काहार नामे लिखिया दिया मृत्यु हइया थाके, हाकिम सेस विरोध निवारण कारण दस्तावेज मत आमले आनेन, ओ आपन हिस्या ऐ व्यक्ति जाहाके दियाछे, ताहाके देन। कारण एइ—यद्यपि केह कोन दस्तावेज लिखे आर दस्तावेज मत्त आमले ना आनिया थाके, किम्वा अन्य केह दस्तावेजेर मजमुने विरोधीय हय, हाकिम ओहार दास्तावेज मत आमले आनान, ओ विरोधीय व्यक्ति हइते जरिमाना लएन। यदि स्यात् स्वयं हाकिम ओहार दस्तावेज मत अवलम्वन ना करेण, तवे हाकिम आपन खाजना हइते दस्तावेजेर लिखित मत आमले आनेन। ओ ए आदालते जे एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ए आदालतेर छओालेर जओावे दाखिल हइल ताहार खोलासा। एइ जे ए प्रकार अवण्टक विशयेर तमलिक ओ हेवा ए मलुकेर दस्तुर मत मिताक्षरा ओ गयरह पुस्तक अनुसारे सिद्ध हइते पारे ना। ए प्रयुक्त जे पाटसालार पण्डितदिगेर दुइ व्यवस्था ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था अनक्य हओाने सर्व्वं प्रकारे प्रत्यय हय ना। ए विशयेर सन्देह दुर करणार्थे कलिकातार सदर देओानि आदालतेर पण्डितेर निकट हइते ज्ञात हओा आविश्यक आछे जे एइ मोकद्दमार आसल दाविदार माधोजी, जेसकल तद्विर हिस्या तकसिमेर कारण ओ हक ओसुलेर कारण, जाहा चाइ ताहा आमले आनियाछे, अर्थात् आपन वर्त्तमाने ए नालिस आदालते उत्थापन करियाछिल, ए कारण ए मोकद्दमा उत्थापन हओानेते माधोजि आसल दाविदार तरफ हइते जे आपन हिस्या पाओानेर कारण ओ ताहार हिष्यार, जाहा हस्तान्तर हइया थाके, ताहा यथार्थ आछे-कि ना। ए कारण हुकुम हइल जे मोक-

द्दमा मलतवि रहे, आर आसल तिन किता व्यवस्था आर तम-
लिकनामार नकल राखिया आसल तमलिकनामा एइ रुवकारिर
नकलेर सम्वलित एइ आदालतेर रेजेष्टर साहेवेर इंराजि चिठी
द्वाराय कलिकातार सदर देओानि आदालतेर रेजेष्टर साहेवेर
नामे सेखानकार पण्डितेर निकट व्यवस्था लओनेर कारण उक्त
आदालते पाठानो जाय। एइ प्रार्थना जे रेजेष्टर साहेव से आदा-
लतेर हाकिमदिगेर ज्ञातसारे तिन केता व्यवस्था आर तमलिक-
नामा आर एइ रुवकार सेखानकार पण्डितके समार्पन करिया
वानारस देसेर प्रचलित पुस्तकसकल अनुसारे इहार जवाव
सप्ताहेर मध्ये उक्त पण्डितेर निकट हइते लइया, आर एइ मक-
द्दमार तत तुल्य दृष्टान्त वानारस देशेर इहार पूर्व्वे यदि कोन
मकद्दमा सेखाने निष्पत्य हइयाथाके, तवे ऐ मकद्दमार फयसलार
नकल ए आदालते पाठान आर उपरेर लिखित विषयेर तर्त्त-तदन्त
हओनेर परे ओछितेर विषये किम्वा रघुनाथराओ मोतौफा
रेण्याण्टेर फेराछतेर विषये उचित हुकुम प्रकाश हइवेक इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं तमलिकनामाख्यं पत्रं व्यवस्थापत्रत्रयं च यद-ङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयचतुर्विं-शतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जात-स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

मूलभूतैतद्विवादाभियोक्ता माधवजीनामकः कश्चित्पुरुषविशेषो यद्य-दनुसन्धानं स्वकीयभागस्य विभज्य ग्रहणार्थं स्वकीयासाधारणस्वत्वसम्पाद-नार्थमुचितं भवति तथा कृतवानर्थात् स्वस्य वर्त्तमानतायां धर्म्माधिकरणे अयमभियोगस्तेनैवोत्थापितः स्यात्, अतएवैतद्विवादस्योत्थापने सति अकृ-तैतद्विवादनिर्णयस्यार्थाद्धर्म्माधिकरणतोऽदृष्टैतद्विवादपरिच्छेदस्य मूलभू-तैतद्विवादाभियोक्तुर्माधवजीनाम्नः सकाशात् स्वकीयांशस्य धर्म्माधिकरणतो विभक्तस्य प्रापणार्थं तदीयांशो यो हस्तान्तरं गतः स्यात्तद्धस्तान्तरकरणं

यदि माधवजीनाम्नः पत्नी विद्यमाना स्यात्, तदा तस्याः स्वपतिकुलोचित-ग्रासाच्छादनोपयुक्तादावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्ताच्च धनाद्यदवशिष्ट-मेवं माधवजीनाम्नः कन्यकाश्चेत् कुमार्यस्तासां विवाहपर्यन्तं स्वपितृकुलो-चितग्रासाच्छादनोपयुक्तात्तासां च विवाहोपयुक्ताच्च धनाद्यदवशिष्टमेवमन्ये ये केचित्तद्धनमात्रोपजीविनस्तेषां यावज्जीवं माधवजीनाम्नो जीवनावस्थास-दृशग्रासाच्छादनोपयुक्तादावश्यकधर्म्माद्याचरणोपयुक्ताच्च धनाद्यदवशिष्टं धनं तद्विषये एतद्विवादतात्पार्यार्थतमलिकनामाख्यपत्रतात्पर्यार्थविवेचनया फलतो मिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण यथार्थमेव भवति, यतस्तमलिकनामाख्ये पत्रे माधवजीनाम्ना लिखितमस्ति स्वेच्छया बलात्कारं विना लक्ष्मीकान्तं स्वकीयप्रतिनिधिं कृत्वा स्वपितुस्त्यक्तरूपकस्थावरास्थावरादिस्वकीयार्द्धांशस्य स्वोपार्ज्जितस्य चैवं यत्र मदीयं स्वत्वमस्ति तस्य सर्व्वस्य लक्ष्मीकान्तः स्वामी कृतः। यत्र च शास्त्रानुसारेण धर्माधिकरणविचारेण च मदीयं स्वत्वमस्ति, भवितुं च शक्नोति, तस्य सर्व्वस्यैव स्वामी लक्ष्मीकान्त एवास्ति, एवं सर्व्वप्रकारेण स्वामी अधिकारी च कृतः। अथ च यत्र कश्चि-द्विरोधः कर्त्तव्यो यत्र वा आयत्तत्वं सम्पाद्यं तत्सर्व्वं लक्ष्मीकान्त एव करिष्यति। अत्र विषये लक्ष्मीकान्तस्येतरयोर्द्वयोर्भ्रात्रोरन्यस्य कस्यचिद्वा अभियोगो मदीयांशोपरि नास्ति। यदि कश्चिदभियोगं करिष्यति तदा सोऽ-भियोगोऽग्राह्य एव भविष्यति। तत्रायमेव हेतुः स्वकीयांशस्य स्वामिना मया लक्ष्मीकान्तं स्वकीयप्रतिनिधिमुत्तराधिकारिणं च कृत्वा तस्मै स्वांशो दत्तः। स च स्वामीकृतः" इति लिखनेन यद्यपि विवादास्पदीभूतधनस्याविभक्तताद-शायां दानमवगम्यते। एवं पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थे अविभक्त-धनस्य दानमंशयन्तरानुमतिमन्तरेण सिद्धं भवितुं नार्हतीति लिखितमस्ति, परन्तु याथातथ्येनैतद्दानस्य धर्म्माधिकरणतो माधवजीनाम्नोंऽशो विभक्तो भूत्वा यदि लक्ष्मीकान्तस्य तत्कृत्रिमपुत्रस्यैव विभज्य तदीयांशग्रहणे निसृष्टार्थस्यार्थाद्धर्माधिकरणतो माधवजीनाम्नोऽशं विभज्य ग्रहणे असी-शब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियुक्तस्य दानानुसारेणायत्तो भविष्यति, तदैव पर्य्य-वसानं भविष्यति। एवं च सति विभागानन्तरमेव दाननिष्पत्तिः पर्य्यव-स्यति। तत्र च अंशयन्तरानुमतिर्नापेक्ष्यते, विभक्तधनदानस्यैव पर्य्यवसि-

तत्वात् विभक्तधनदानसिद्धेर्मिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण निष्प्रत्यूहत्वाच्च । एवं स्वस्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनं[1] च दानं च परो यदि स्वीकरोति तदा सम्पद्यते, नान्यथा इत्यादि मिताक्षराग्रन्थे(पृ० १४१)वीरमित्रोदय-ग्रन्थे च भोगप्रकरणे स्पष्टतरतया लिखितमस्ति। तत्र दानस्योभयदलयोः स्वस्वत्वनिवृत्तिरूपप्रथमदलस्यैतावता दातृव्यापारेण निष्पन्नत्वेऽपि संप्रदान-स्वत्वोत्पत्तिरूपस्य द्वितीयदलस्य धर्म्माधिकरणतो विभक्ते दातुरंशे संप्रदान-भूतव्यक्तिविशेषस्यायत्तत्वं विना अनिष्पाद्यत्वेन धर्म्माधिकरणतो विभक्ते स्वांशे संप्रदानायत्तीभवनात्मकस्य संप्रदानस्वत्वोत्पत्तिरूपद्वितीयदलहेतुभूतस्य बहुकालसाध्यस्य राजाधीनतया दुष्करत्वेन मन्यमानस्य च कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्यासीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगकरणं विना अनिष्पाद्यत्वेन मन्यमानस्य च दात्रा स्वकर्त्तव्यस्य स्वदत्तस्वांशे संप्रदानायत्तीभवनरूपस्य संप्रदानस्वत्वोत्पत्तिहेतुभूतस्य सम्पादनार्थं सम्प्रदानभूतव्यक्तिविशेषस्यासी-शब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगकरणस्यापि शास्त्रीयत्वात्; यतोऽविभक्तेऽपि स्वांशे असीशब्दप्रतिपाद्यस्य नियोगकरणे शास्त्रविरोधो नास्ति । अथ च वीर-मित्रोदयग्रन्थे यदि केनचित् स्वस्वत्वास्पदीभूतधनस्य दानं कृत्वा सम्प्रदान-स्यायत्तत्वमसंपाद्यैव मृतः स्यात्तथापि राज्ञा प्रतिग्रहीतुरायत्तत्वं दानसम्पादकं सम्पाद्यमित्यस्यापि विशेषतो लिखितत्वाच्च। एवं लक्ष्मीकान्तस्य कृत्रिम-पुत्रत्वपक्षे दानादिकं विनापि विवादास्पदीभूतधने तस्य स्वामित्वमव्याहतमेव पुत्रत्वात्—इति वाराणसीप्रभृतिदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यव-हारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभव्यवहारचिन्तामणिविवादचिन्ताम-णिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रकल्पतरुपारिजातादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृत-बृहस्पतिवचनम् ॥१॥

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याद्देयं वैवाहिकं वसु—इति तत्तद्ग्रन्थधृतदेवल-वचनम् ॥२॥

---

१. परस्वत्वापादानं च परस्वत्वापादानं च—व्य०प्र० ।

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वादेकस्यानीश्वरत्वात् सर्वाभ्यनुज्ञा अवश्यं कार्या । विभक्तेषु तु विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्ध्यत्येव—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥३॥

आगमोऽभ्यधिको भोगाद्विना पूर्वक्रमागतात्—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

स्वत्वहेतुः प्रतिग्रहक्रयादिरागमः । स भोगादभ्यधिको बलीयान्, स्वत्वबोधने भोगस्यागमसापेक्षत्वात्—इति मिताक्षरा(पृ० १३६)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकापि[1] यत्र नो—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।२७)वचनम् ॥६॥

यस्मिन्नागमे स्वल्पापि भुक्तिर्भोगो[2] नास्ति तस्मिन्नागमे बलं सम्पूर्णता नास्ति । अयमभिसन्धिः । स्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनं[3] च दानम् । परस्वत्वापादनं च परो यदि स्वीकरोति तदा सम्पद्यते नान्यथा । स्वीकार-स्त्रिविधः । मानसो वाचिकः कायिकश्चेति । तत्र मानसो ममेदमिति संकल्परूपः । वाचिकस्तु ममेदमित्याद्यभिव्याहारोल्लेखी सविकल्पकः प्रत्ययः । कायिकः पुनरुपादानाभिमर्शनादिरूपोऽनेकविधः । तत्र च नियमः स्मर्यते । दद्यात् कृष्णाजिनं पुच्छे गां पुच्छे करिणं करे । केशरेषु तथैवाश्वं दासीं शिरसि दापयेत् - इति । तत्र हिरण्यवस्त्रादावुदकदानानन्तर-मेवोपादानादिसम्भवात् त्रिविधोऽपि व्यापारः[4] सम्पद्यते । क्षेत्रादौ पुनः फलोपभोगव्यतिरेकेण कायिकस्वीकारासम्भवात् स्वल्पेनाप्युपभोगेन भवितव्यम्, अन्यथा दानक्रियादेः सम्पूर्णता न भवतीति फलोपभोगलक्षण-कायिकस्वीकारविकल आगमो दुर्बलो भवति । तत्सहितादागमात्—इति मिताक्षरा(पृ० १४१)ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

याज्ञवल्क्यादिभिः सर्वप्रकारकानुपभंगे पूर्णस्वत्वोत्पादकता दाना-द्यागमस्य नास्तीत्युक्तम् । 'आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकाऽपि

---

१. स्तोकोपि यत्र नो—व्यप० । २. भुक्तिर्भो नास्ति—व्यप० ।
३. °पादानं—व्यप० । ४. स्वीकारः—इति मिताक्षरायाम् ।

यत्र नो। बलम्पूर्णता। नारदः। 'विद्यमानेऽपि लिखिते जीवत्स्वपि हि साक्षिषु। विशेषतः स्थावराणां यन्न भुक्तं न तत्स्थिरम्'॥ दानविक्रयादेरुपभोगनिरपेक्षस्यैव स्वत्वोत्पादकत्वात्। किमिति। भोगलवोप्यवश्य तत्रापेक्ष्यत इत्याशङ्कायामुपपत्तिरुक्ता विज्ञानेश्वराचार्यैः। दानादेः परस्वत्वापादनत्वात्[1] परकर्तृकस्वीकारापेक्षाऽवश्यं भावनीया[2]। स्वीकारश्च त्रिविधो मानसो वाचिकः कायिकः। ममेदमित्यध्यवसायो मानसः। ममेदमित्याद्यभिलापो वाचिकः। उपादानाभिमर्शनादिरूपेणानेकप्रकारकः[3] कायिकः। तत्र मानसं विना स्वत्वासम्भवात्स तावदावश्यक एव[4]। दानविशेषपुरस्कारेण शब्दप्रयोगविशेषनियमपाददर्शनादिचेष्टाविशेषनियमाच्च वाचिककायिकावप्यावश्यकावित्यवसीयते। तत्र हिरण्यवस्त्रादौ दातृकर्तृकजलत्यागादनन्तरमेव प्रतिग्रहीतुरुपादानादिसम्भवात् त्रिविधोऽपि व्यापारः सम्पद्यते। क्षेत्रादौ तु फलोपभोगं विना कायिकस्वीकारासम्भवादल्पेनाप्युपभोगेनावश्यं भवितव्यमन्यथा दानक्रयादेः सम्पूर्णता न भवत्युत्तरकालिकव्यापाराभावात्। तेन तत्सहितादागमान्तराद्विकल आगमो दुर्ब्बलो भवति। एतच्च द्वयोरागमयोः पूर्व्वापरभावानवगमे। तदवगमे तु स्वल्पभोगविकलोऽपि प्राक्तन एवागमो बलवान्, पूर्व्वेण दानादिना स्वत्वापगमे दानाद्यनन्तरासम्भवात्। न चैवं तस्य क्षेत्रादेर्मध्यगतत्वापत्तिः। पूर्व्वस्वाम्यापगमादुत्तरस्वाम्यानुत्पत्तेश्चेति[5] वाच्यम्, प्रतिश्रुतन्यायेनावेक्षणीयस्वत्वस्यसत्त्वात् पूर्वस्वाम्यसत्त्वेऽपि राज्ञैव प्रतिग्रहीत्रादेः कायिकस्वीकारस्यानिःप्रतिपक्षस्य सम्पादनीयत्वात्—इति वीरमित्रोदय(पृ० २०७।२०८)ग्रन्थलिखनम्॥८॥

याज्ञवल्क्यः। 'आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकापि यत्र नो'। आगमे विद्यमानेऽपि भोगविरहात् तावत्कालं स्वत्वार्थवृत्तिधीच भवतीत्यर्थः - इति व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम्॥६॥

---

१. °पादान°—व्यप०। २. भावनीयः—व्यप०। ३. उपादानादिभिमर्शन०-व्यप०। ४. स त्वावश्यक एव०-विमि०। ५. पूर्वस्याम्यागमाद्०—वीमि०।

याज्ञवल्क्यः। 'आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकापि यत्र नो'। आगमे विद्यमानेऽपि भुक्तिविरहात् तावत्कालं स्वत्वं न सिद्ध्यतीत्यर्थः। अत्र यत्रान्यमुद्दिश्य केनचित् किञ्चिद्दत्तं तत्रोद्देश्यस्य स्वीकारव्यञ्जकभोगाभावात् स्वत्वं न निश्चीयत इति न्याय एव मूलम्—इति च व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥१०॥

अतस्तत्र जलप्रक्षेपरूपः पात्रोद्देश्यक उत्सर्ग एव ददाति नाविवक्षितः। दानत्वनिष्पत्तिस्तु तस्य सम्प्रदानकर्तृकस्वीकारे सत्येवेति परमार्थः–इति वीरमित्रोदय(पृ० २४३)ग्रन्थलिखनम् ॥११॥

न्यायाधिगमे तर्कोऽभ्युपायस्तेनाभ्यूह्य यथास्थानं गमयेत्। तस्माद्राजाचार्यावनिन्द्यौ—इति मिताक्षरा(पृ० १३०।१३१)ग्रन्थधृतगौतमवचनम् ॥१२॥

यथा नयत्यसृक्पातैर्मृगस्य मृगयुः पदम्।
नयेत्तथानुमानेन धर्म्मस्य नृपतिः पदम्॥ इति मनु(८।४४) वचनम् ॥१३॥

यः स्वामिना नियुक्तस्तु दानायव्ययपालने।
कुसीदकृषिवाणिज्ये निसृष्टार्थस्तु सः स्मृतः॥
प्रमाणं तत्कृतं सर्वं लाभालाभव्ययोदयम्।
स्वदेशे वा विदेशे वा स्वामी तन्न विसंवदेत्॥ इति वीरमित्रोदय–व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्र(पृ० १५०)विवादरत्नाकरकल्पतरुप्रभृति-ग्रन्थधृतबृहस्पति(बृस्मृ० ६।२६।पृ० ६८)वचनम् ॥१४॥

निसृष्टार्थस्तु यो यस्मिंस्तस्मिन्नर्थे प्रभुस्तु सः।
तद्भर्त्ता तत्कृतं कार्य्यं नान्यथा कर्त्तुमर्हति॥ इति वीरमित्रोदय-व्यवहारचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ४७०।पृ० ५६) वचनम् ॥१५॥

पितृधनहारित्वं तु पूर्व्वस्य पूर्वस्याभावे सर्वेषामविशिष्टम्।
न भ्रातरो न पितरः पुत्रा रिक्थहराः पितुः। इत्यौरसव्यतिरिक्तानां[1]

1. ! न्यस्यौतरव्यक्तिरिक्तानां—व्यप०।

पुत्रप्रतिनिधीनां सर्वेषां रिक्थहारित्वाप्रतिपादनपरत्वात्–औरसस्य तु, एक एवौरसः पुत्रः पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः–इत्यनेनैव रिक्थभाक्त्वस्योक्तत्वात्—इति मिताक्षरा, पृ० २१५)दिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥१६॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(४३)—रोवकारि मिछिल आदालत देओयाणि सदर मोकाम कलिकाता तारिख ३ माह जुन सन १८३४ इङ्गरेजी मतावक २२ माह ज्यैष्ठ सन १२४१ वाङ्गला रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत रावरट हालडन राटरि साहेवेर वैठके—

रामगोपालदेओ वनाम गोकुलचन्द्र तहविलदार ओ गैरह। छापल हाजिर हइल। गत मासेर ६ तारिखेर हुकुम मते ऐ आदालतेर पण्डित ये व्यवस्था दाखिल करिलेन ताहा तारिख मजकुरेर दृष्टी हओा छापलेर खास आपीलेर सओयाल एवं तत्सम्पर्कीय अन्य कागजातेर सहित पडागिया वोध हइल ये पण्डितेर लिखित व्यवस्था तारीख मजकुरेर रोवकारिर लिखत सओयाल मतावक नहे। कारण एइ ये सओालेर मर्म्म एइ–महइयान अर्थात् तरफछानी ये गोपालभाण्डारि ओ गयरह उहारदिगेर पूर्व्वपुरुषेर दास-दासी छिल, आद्य पर्य्यन्त हइते सेवा ओ कार्य्ये नियुक्त ओ प्रवत्त छिल। ए दयने उहारा सेवा ओ कार्य्य हइते गरहाजीर हइयाछे—नालिस करे। सदर आमीन ओ जज साहेव आपनारदिगेर फयसलार विस्तारित विवरणसकलेर

द्वाराय छाएल ओ गयरहेर पूर्व्व पुरुस मसर्म्मा हाडो फारिक्-छानिर खरिदा गोलाम, साव्यस्थानुसारे उहारदिगेर दावि, एइ हुकुमे ये छाएल ओ गयरह दास्यत्वेर सेवा ओ कार्य्य करे डिगरि करिलेन। ये हेतुक प्रकाश्य वोध हइतेछे ये किवल हाडो मजकुर दासत्वताय खरिद हइयाछिल ना, ताहार पुत्र-पौत्रादी इहाते छाएल ओ गयरहेर दासत्व सिद्ध हओन विषये ये ऐ फयसलासकल हइयाछे, एमत फयसलासकल शास्त्र-सम्मत यथार्थ वटे कि ना। अतएव हुकुम हइल ये पुनराय कागज-सकल पण्डितेर हाओला करा जाय। उचित ये पण्डित उपरेर लिखित विवरणे ज्ञात हओनान्तर ताहार जओव दुइ रोजेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥०॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावर्टहालडनराटरीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजुनमासीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयजुनमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

एतत्प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति हाडोनाम्नः क्रयपत्रे केवलहाडोसंज्ञको दासत्वेन क्रीतो न तु तस्य पुत्रपौत्रादिरिति नियमो यदि लिखितः स्यात्तदा दासत्वेन हाडोमात्रस्य क्रयेण तत्पुत्रपौत्रादीनां शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानन्तर्गतत्वेनाशास्त्रीयबलात्कारकृतदासभावान्तर्गतत्वेन च तेषां दास्यविषये जातं यज्जयपत्रजातं तच्छास्त्रसिद्धं न भविष्यति, अशास्त्रीयबलात्कारकृतदासमोचनस्य शास्त्रानुसारेण कर्त्तुमुचितत्वात्। यदि च तस्मिन् क्रयपत्रे केवलहाडोसंज्ञको दासत्वेन क्रीतो न तु तस्य पुत्रपौत्रादिरिति नियमो न लिखितः स्यात्तदा दासत्वेन हाडोसंज्ञकस्य क्रयेण तत्पुत्रपौत्रादीनामपि शास्त्रोक्तपञ्चदशदासान्तर्गतत्वेन तेषां दास्यविषये जातं यज्जयपत्रजातं तच्छास्त्रसम्मतं भविष्यत्येव, क्रीतद्रव्यमात्रोत्पन्नद्रव्यजातमात्र एव क्रयकर्त्तुः स्वत्वस्य शास्त्र-

व्यवहारोभयसिद्धत्वात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः ।
अनाकालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः ॥
मोक्षितो महतश्चर्णाद् युद्धे प्राप्तः पणे जितः ।
तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः कृतः ॥
भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः ।
विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥—इति दायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

चौरापहृतविक्रीता ये च दासीकृता बलात् ।
राज्ञा मोचयितव्यास्ते दासत्वं तेषु नेष्यते ॥-इति विवादार्णवसेतु(पृ० १६३)विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारद(नासं० पृ०६८)वचनञ्चेति ॥२॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयपञ्चविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(४४)—रोवकारि मिछिल आदालत देओनि सदर मोकाम कलिकाता अदालत मजकुरार काएम मोकाम हाकिम श्रीयुत तामस किमल रावटसन साहेवेर बैठके। ओाके तारिख ४ माहे जुन सन १८३४ साल इं मोतवेक २३ ज्यैष्ठ सन १२४१ वाङ्गला दिवस वुधवार—

मुछम्मात विश्वेश्वरिदेब्या मफलछा आपिलाण्ट
ताराचान्दचट्टोपाध्याय ओ गयरह रेष्पाडण्टान

आपीलाण्टेर उकिल मुनसी हयदर आली ओ रेष्पाडण्टानेर मध्ये ताराचान्दचट्टोपाध्याय हाजिर आइल। ए मोकद्दमा

सिरस्तादारेर कैफियत सम्वलित गत मेइ मासेर ३० तारिखे आमार वैठके रोवकार हइया आपीलाण्टेर उकिलेर स्थाने आपीलेर सञोलेर नकल तलव हइया स्थकित छिल, अद्य आपीलेर सञोलेर नकल दाखिल कराते पुनराय रोवकार हइल, ओ फयसला ओ आपीलेर छआाल ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ सदर आपीलेर मञ्जुरिर सरव सम्वलित रोवकारि दृष्टे आइल। जे हेतुक चुडन्त हुकुम सादर हओार पूर्व्वे आदालतेर पण्डितेर निकट व्यवस्था तलव करा मोकर्द्दमार विस्तारित[1] सहित उचित वोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित समुदाय छओालेर जओाव वाङ्गला मुलुकेर चलित शास्त्रानुसारे ओहार वचन प्रमाण सहित आगत वुधवार दिवसे दाखिल करेण—ए आदालतेर पण्डितेर हाओाला कराजाय।

प्रथम सञोल —

सरूपचन्द्र वित्तत्वेगागी वेक्ति एक पुत्र दिपचन्द्र ओ पद्ममणी ओ दुर्गामणी दुइ कन्या राखिया मृत्यु हय। आहार समुदाय तेर्य्ये वस्तु ओहार पुत्र दिपचन्द्रके पौछिल। ओ दिपचन्द्र आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त अन्येर अंश वेतेरेक दखिलकार थाकिया सन १२०४ साले तस्य स्त्री वेदवति ओ तस्य कन्या दासमनीके राखिया मृत्यु हय। वेदवति ताहार तेर्य्ये विषये दखिलकार हइया मुछम्मात दासमनिर विवाह देय, जे दासमनीर पुत्र सर्वचन्द्र जन्मे। १२०९ साले दासमनी आपन मातामही वेदवति ओ सर्व्वचन्द्र पुत्र, ओ सन १२२४ साले सर्व्वचन्द्र आपन मातामही वेदवति ओ आपन स्त्री विश्वेश्वरिर सनमुखे मृत्यु हय। तत्परे सन १२२८ साले मुछम्मात वेदवति मृत्यु हय। अतएव दिपचन्द्रेर तेर्य्ये वस्तु दिपचन्द्रेर दौहित्र

१ विस्तावित—व्यप०।

सःर्वचन्द्रेर स्त्रीके अर्सिवेक्, कि दीपचन्द्रेर भग्निर सन्तान-दिगेके इति—

द्वितीय सओाल—

यद्यपि दासमनि दिपचन्द्रेर वर्त्तमाने किम्वा ताहार मृत्युर पर दिपचन्द्रेर स्त्री वेदवति वर्त्तमाने जमिदारिर मजकुरार उपर दखल पाइया थाके, ऐ प्रयुक्त ओ दखल ना पाओा प्रयुक्त ये प्रकार प्रथम सओाल लेखा गेल ओहार तेर्य्य वस्तुते दिपचन्द्रेर दौहित्रेर स्त्री विश्वेश्वरि सत्वाधिकारि हओने ओ ना हओने किम्वा दिपचन्द्रेर भग्निर सन्तानेरा सत्वाधिकारि हओने ओ ना हओने शास्त्र अनुसारे व्यक्तिक्रम आछे कि ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुततामसकिमिलरावटसन्-साहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजुनमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयजुनमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दीपचन्द्रत्यक्तधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य तत्पितुः स्वरूपचन्द्रस्य प्रपौत्रपर्य्यन्तानां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा दीपचन्द्रस्य पितुः स्वरूपचन्द्रस्य दौहित्राणामर्थात् दीपचन्द्रभगिनीपुत्राणामेवाधिकार इति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥१॥०॥०॥०॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दासमनी दीपचन्द्रे स्वपितरि विद्यमाने मृते वा दीपचन्द्रपत्न्यां वेदवत्यां विद्यमानायां सराजकरस्थावरात्मकतद्धने आयत्तत्वं सम्पादितवती

स्यात्तत्र तस्या आयत्तत्त्वं यदि तत्पितृकृतदानानुसारेणाभूत्तदा तद्धनस्य दासमन्याः पितृदत्तसौदायिकस्त्रीधनत्वेन दासमन्याः मरणोत्तरं तत्त्यक्तपितृदत्तसौदायिकस्त्रीधने तद्दुहित्रभावे तत्पुत्रस्य सर्व्वचन्द्रस्य अधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तत्त्यक्तधने सर्वचन्द्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य पत्न्या विश्वेश्वरीदेव्या एवाधिकारः। सर्व्वचन्द्रपत्न्यां विश्वेश्वरीदेव्यां विद्यमानायां सर्वचन्द्रप्रमातामहस्वरूपचन्द्रदौहित्राणां नाधिकारः। एवञ्च सति विश्वेश्वरीदेव्या दीपचन्द्रदौहित्रपत्न्यास्तद्धनाधिकारित्वे दीपचन्द्रभागिनीपुत्राणां चानधिकारित्वे दीपचन्द्रत्यक्तधने अयमेव व्यतिक्रमो जातः। दीपचन्द्रस्य धनं तत्कृतस्वकुल्योद्देश्यकदानानुसारेण तत्कन्यास्वत्वास्पदञ्चेत्तन्मरणोत्तरं तस्यास्त्यक्तं धनमिति। तत्र च धने तत्पुत्रस्य सर्व्वचन्द्रस्याधिकारित्वेन तन्मरणोन्तरं तदेव धनं सर्व्वचन्द्रत्यक्तमिति च। यदि च सराजकरस्थावरात्मकतद्धने दासमन्या आयत्तत्वमुपरिलिखिततत्पितृकृतदानानुसारेण नाभूदथवा प्रथमप्रश्नलिखितरीत्या आयत्तत्वमेव नाभूत्तदा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण दीपचन्द्रभागिनोपुत्राणामधिकारित्वे दीपचन्द्रदौहित्रपत्न्या विश्वेश्वरीदेव्या अनधिकारित्वे च दीपचन्द्रत्यक्तधने कश्चिद् व्यतिक्रमो नास्ति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा।
भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

विवाहकाले तत्पूर्व्वापरकाले वा स्त्रियै यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु धने प्रथमं कुमार्य्यास्तदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोस्तदनन्तरं वन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः। सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्यौतुकधनवत् क्रमेणाधिकारः—इति दायक्रमग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयअगस्त्यमासीयैकादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(४५)—इं सन १८३४ सालेर ७ एपरेल दिवस स(ो)मवार एइ आदालत अर्थात जेला तिरहुतेर देओानि आदालतेर रोवकारि द्वाराय मोकाम कलिकातार सदर देओानि आदालते पण्डितेर पर सओाल—

हनुमानदत्तराय ओ भोलादत्तराय ओ गणेशदत्तराय
मुद्दइयान

मृत चण्डीदत्तेर वनीता मुछम्मात छोलछनचौधुरायन
ओ परमेश्वरिदत्त मुद्दाहालेहेम

मोकद्दमा कालेट्टरि सेरेस्ताय नाम लिखा ओ जेला तिहोतेर आदालतेर मोतालके देहा निजामत हादि परगनार मौजे बछुलपुर ओ गयरहते दखल पाओार प्रार्थनाय मवलगे ८७३५ तृगुन मालगुजारि देहा निजामतेर तायदादे ॥

प्रथम प्रश्न :—

चौधुरि देवदत्तराय जाति ब्राह्मण। एहार चारि पुत्र। प्रथम विरसिंहराय, ताहार पुत्र चण्डीदत्तराय नामे छिल। ताहार वनिता मछम्मात छोलछन, ओ विरसिंहेर कन्या मुछम्मात चान्द्रावति चण्डीदत्तेर सहोदरा भग्नि छिल, ओ चन्द्रावति मजकुरार पुत्र

परमेश्वरिदत्त आछे, ओ देवदत्त मजकुरेर द्वितीय पुत्र सिवसिंह, तस्य पुत्र आनकट्टीराय तस्य पुत्र सदाशिवराय तस्य पुत्र कृष्णदत्तराय मुदइ वर्त्तमान, ओ देवदत्तराय मजकुरेर तृतीय पुत्र हरदिसिंहराय, तस्य दुइ पुत्र भैरवदत्त ओ हनुमानदत्तराय मुदइ वर्त्तमान आछे; ओ भैरवदत्तेर एक पुत्र सम्भुदत्तराय, तस्य पुत्र भोलानाथराय मुदइ वर्त्तमान आछे; ओ देवदत्त मजकुरेर चतुर्थ पुत्र जयकृष्णराय निसन्तान मृत्यु हय। अतएव जिज्ञाशा कराजाय ये चण्डीदत्त मजकुर ब्राह्मन जाति आपन भग्निर सन्तान परमेश्वरिदत्तके कर्त्तापुत्र करियाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना॥

द्वितीय प्रश्न :—

यद्यपि कर्त्तापुत्र असिद्ध हय, तवे हेवानामार लिखित धन ओ परमेश्वरिदत्तेर नामे एकरारनामा शास्त्र मत सिद्ध हइवेक कि, ना, ओ एइ सओलेर सम्वलीत हेवानामा ओ एकरारनामा ओ कुरशीनामा दृष्टि करिया मैथिलि शास्त्रानुसारे प्रति उत्तर लिखेन इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं तत्संवलितं दानपत्रं संवित्पत्रं वंशावलीपत्रं च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अर्थात् पितामहपौत्रादौ विद्यमाने सति पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितब्राह्मणजातोयचण्डोदत्तमैथिलेन सोदरभगिनीपुत्रः परमेश्वरोदत्तः कृत्रिमपुत्रः कृतश्चेत् स कृत्रिमपुत्रो मिथिलादेशीयशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति। यद्यपि दत्तकमीमांसाग्रन्थे ब्राह्मणानां भागिनेयस्य पुत्रता-

निषेधकं वचनं लिखितमस्ति, परन्तु तद्वचनं वास्तवं दत्तकपुत्रविषयकमेव, न तु कृत्रिमपुत्रविषयम्, अथ च सर्व्वस्मृतिप्रधानमनुस्मृतौ कृत्रिमपुत्रताविषये मनुवचनोक्तसजातीयत्वादेरेवाप्रयोजकतां दृष्ट्वा सर्व्वैरेव प्राचीनार्व्वाचीनैर्मैथिलनिबन्धकारैः स्वस्वग्रन्थेषु स्वसजातीयः कश्चित् कृत्रिमपुत्रः कर्त्तव्य इत्येव लिखितः, भागिनेयः कृत्रिमपुत्रो न कर्त्तव्य इति निषेधकः केनापि न लिखितः, वरं मैथिलैर्महामहोपाध्यायधर्म्मशास्त्रव्यवस्थापककेशवमिश्रैर्यत्र *पितैव भ्रात्रादिर्व्वा कृत्रिमपुत्रः कृतस्तत्रापि पितृत्वेनैव निर्देशो न पुत्रत्वेन भ्रातृत्वेन*—इति द्वैतपरिशिष्टग्रन्थे लिखितमस्ति। एवञ्च सति पित्रपेक्षया भ्रात्रपेक्षया च भागिनेयस्य दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखितपुत्रतानिषेधप्रयोजकविरुद्धसम्बन्धस्याधिक्यं नास्ति। एवं दत्तकपुत्रस्य स्वजनकपित्रादीनां पिण्डदातृत्वं निषिद्धमिति सर्वेषां निबन्धकाराणां सम्मतम्। मैथिलग्रन्थकाराणां मते *कृत्रिमपुत्रस्य स्वजनकपित्रादीनां पिण्डदातृत्वमप्यस्त्येव*—इति शुद्धिविवेके रुद्रधरोपाध्यायैर्म्मैथिलैर्ल्लिखितमस्ति। अतो मैथिलग्रन्थकाराणां मते दत्तकपुत्रकृत्रिमपुत्रयोर्विषयमात्र एव महान् भेदोऽस्ति। अतएव मिथिलादेशे सजातीयः कश्चित्[1] कृत्रिमपुत्रः क्रियते, तत्रापि पितामहपौत्राद्यपेक्षया स्नेहातिशयात् पुत्रगुणाधिक्यदर्शनाच्च प्रायशो मैथिलैः प्राज्ञैर्ब्राह्मणैर्विशेषतो भागिनेयः कृत्रिमपुत्रः क्रियते इति सर्व्वदैव तद्देशव्यवहारः। एवञ्च सति मनुस्मृतिसम्मताया मिथिलादेशीयग्रन्थानुसारेण तद्देशव्यवहृताया ब्राह्मणानां भागिनेयस्य कृत्रिमपुत्रताया मैथिलनिबन्धकारप्रणीतदत्तकमीमांसाग्रन्थलिखितवचनबाध्यता[2] नास्ति, यतस्तद्देशाचारजात्याचारकुलाचारादिसिद्धस्य कस्यचिदपि कर्म्मणो बाधस्तदन्यदेशीयग्रन्थानुसारेण तदितरजातिप्रचलितग्रन्थानुसारेण तदन्यकुलप्रचलितग्रन्थानुसारेण वा भवितुं न शक्नोति, देशाचारजात्याचारकुलाचारादिरपि मन्वादिधर्म्मशास्त्रे प्रबलप्रमाणत्वेनोपन्यासात्। यत्र विषयविशेषे स्वदेशीयपरदेशीयग्रन्थयोर्विरोधस्तत्र विषये स्वदेशीयग्रन्थस्यैव प्राबल्येण प्रचारस्य भवितुं युक्तत्वाच्चेति ॥—

---

१. कश्चित—व्यप०। २. निबन्धकाराप्र०—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

सदृशं यं प्रकुर्व्वीत गुणदोषविचक्षणम् ।
पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।
पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्त्तनस्य च ॥ इति कल्पतरुविवादरत्नाकरप्रभृतिग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् ॥२॥

सद्भिराचरितं यत् स्याद्धार्म्मिकैश्च द्विजातिभिः ।
तद्देशकुलजातीनामविरुद्धं प्रकल्पयेत् ॥ इति मनु(८।४६)-वचनम् ॥३॥

जातिजानपदान्[1] धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् ॥४॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्त्तिताः ।
तथैव ते पालनीयाः प्रजाः प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥—इति बृहस्पतिवचनम् ॥५॥

यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः ।
तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति याज्ञवल्क्यवचनम् ॥६॥

मन्वर्थविपरीता या सा स्मृतिर्न प्रशस्यते ।
वेदार्थोपनिबन्धृत्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम् ॥—इति बृहस्पति-(पृ० २३३)वचनम् ॥७॥

यत्र पितैव भ्रात्रादिर्वा कृत्रिमपुत्रः कृतस्तत्रापि पितृत्वेनैव निर्द्देशो न तु पुत्रत्वेन भ्रातृत्वेन । इति द्वैतपरिशिष्टग्रन्थलिखनम् ॥८॥

स च पुत्रत्वकरणस्य पिण्डप्रदः निजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य तिष्ठत्येव— इति शुद्धिविवेकग्रन्थलिखनम् ॥९॥

---

१. जातिजानपदान्—व्यप० ।

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः।
युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते॥—इति विवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१०॥

स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।—इति याज्ञवल्क्यवचनम् ॥११॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितरीत्या मिथिलादेशीयशास्त्रानुसारेण कृत्रिमपुत्रतायाः सिद्धौ सत्यां द्वितीयप्रश्नलिखितरीत्या कृत्रिमपुत्रतायामसिद्धत्वेनावगम्यमानायामप्युभयथैव परमेश्वरीदत्तोद्देश्यकदानपत्रं संवित्पत्रं च चण्डीदत्तस्य गृहावशिष्टे तत्पत्न्याश्च यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तादावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे चण्डीदत्तनाम्नः कन्यकाश्चेत् कुमार्य्यस्तासां विवाहोपयुक्तात्तासां च स्वपितृकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे अन्येषां तद्धनमात्रोपजीविनामपि यावज्जीवं चण्डीदत्तनाम्नो जीवनावस्थासदृशग्रासाच्छादनोपयुक्तादावश्यकधर्म्माद्याचरणोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे च संवित्पत्रलिखितत्रिमुखाख्यघट्टसम्बन्धिशिवालयबन्धयोर्दृढीकरणपरिष्कारोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे महिसिनग्रामान्तर्गततडागोत्सर्गोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे च धने सिद्ध्यति। दानपत्रसंवित्पत्राभ्यां विवादास्पदीभूतधने चण्डीदत्तनाम्नः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य केनचित् सह साधारण्यस्यानवगमेन तयोः पत्रयोर्विवेचनया शास्त्रानुसारेण देयद्रव्यस्य तस्मै कृत्रिमपुत्राय स्वशिष्यत्वेन भागिनेयत्वेन च प्रीतिपूर्व्वकदानस्यावगमेन चैतादृशदानसिद्धौ बाधकसामान्याभावात्—इति मिथिलादेशचलितमनुस्मृतियाज्ञवल्क्यस्मृतिबृहस्पतिस्मृतिविवादचिन्तामणिमित्रादरत्नाकरविवादचन्द्रकल्पतरुपारिजातद्वैतनिर्णयद्वैतपरिशिष्टशुद्धिविवेकशुद्धिचिन्तामणिस्मृतिसारप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥२॥

सर्व्वस्वं गृहवर्ज्जन्तु कुटुम्बभरणाधिकम् ।

यद्द्रव्यं तत् स्वकं देयमदेयं स्यादतोऽन्यथा—इति तत्तद्ग्रन्थधृतकात्यायन(६४० । पृ० ७६)वचनम् ॥३॥

भृतिस्तुष्ट्या पण्यमूल्यं स्त्रीशुल्कमुपकारिणे ।

श्रद्धानुग्रहसंप्रीत्या दत्तमष्टविधं स्मृतम् ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतवृहस्पति(पृ० १३८)वचनम् ॥४॥

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याद्देयं वैवाहिकं वसु । इति तत्तद्ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥५॥

अनूढानान्तु कन्यानां वित्तानुरूपेण संस्कारं कुर्य्युः—इति तत्तद्ग्रन्थ(विचि० पृ० २१०)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥६॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया विचारपत्रप्रश्नपत्रदानपत्रसंवित्पत्रवंशावलीपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्न :—

(४६)—यद्यपि कोन व्यक्तिर दुइ सन्तान थाके, आर ज्येष्ठ सन्तान आपन पिता वर्त्तमाने ऐ पिता ओ भ्रातार एकान्नवर्तिते-कोन स्थावर वस्तु आपन परिश्रम ओ क्षमतार द्वाराय उपार्ज्जन करे, आर पितार जीवद्दशा पर्य्यन्त ऐ वस्तुर उपस्वत्त्व साधारणेर खरचे आसियाथाके, एमत स्थले पितार लोकन्तपरे ऐ वस्तु उभये दुइ भ्राताय अंश हइते पारे कि सोपार्जित सरवे ऐ ज्येष्ठ भ्राता समुदय ऐ वस्तु पाइवेक, आर यद्यपि कनिष्ठ भ्राता ऐ वस्तुर अंशेर हकदार हय, तवे कि आन्दाज पाइवेक—एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर यथाशास्त्रे लिखिवेन इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीय-जानवरीमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य द्वयोः पुत्रयोर्म्मध्ये ज्येष्ठपुत्रेण जीवति पितरि तेन सह भ्रात्रा च सहाविभक्ततादशायामेव किञ्चित् स्थावरं धनं स्वशक्त्या स्वायासेन चोपार्ज्जितं स्यात्, अथ च पितुर्ज्जीवनदशापर्य्यन्तं तदुपस्वत्वं साधारण्येन व्ययितं स्यात्तत्र साधारणद्रव्योपघातेन तद्धनमर्ज्जितं चेत्तदा पितुर्न्निधनानन्तरं तद्द्रव्यं त्रिधा विभज्य भागद्वयमुपार्ज्जकस्य ज्येष्ठस्यैको भागः कनिष्ठस्य, ज्येष्ठस्य तद्धनं विद्याधनं चेत्, अथ च कनिष्ठोऽपि तत्समविद्यस्तदधिकविद्या वा भवेत्, तदापि ज्येष्ठोपार्ज्जितविद्याधने तादृशस्य कनिष्ठस्योपरिलिखितप्रकारेण तृतीयांशाधिकारः; यदि च तद्धनं साधारण-द्रव्यानुपघातेन ज्येष्ठेन अर्ज्जितमभूत्तदा तत्र धने स्वोपार्ज्जितत्वमात्रेणो-पार्ज्जकस्य ज्येष्ठमात्रस्यैवाधिकारो न त्वेकान्नवर्त्तितया कनिष्ठभ्रातुः स्वामित्वे-नाधिकारः। किन्तु भ्रातृस्नेहेन पौरुषबुद्ध्या वा यदि ज्येष्ठो भ्राता कनिष्ठ-भ्रात्रे किञ्चिद्ददाति तदा तदनुसारेणोपार्ज्जकज्येष्ठदत्तपरिमितधने कनिष्ठस्या-धिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रम-संग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयगजेन्दु-मितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(४७)--प्रश्न :—

शूद्रादिर दत्तकपुत्रग्रहणकालीन तन्निमित्त शास्त्रसम्मत कि कि कर्म्म कर्त्तव्य उचित; आर यदि स्यात् ग्रहणकालीन ताहार

कर्त्तव्य कर्म्म सकल हइयाथाके, एवं तस्य पर दत्तक पुत्र ग्रहीतार मृत्यु हइले कोनो ज्ञाति द्वारा ऐ दत्तक पुत्रेर चूडाकरण इत्यादि हइले ऐ दत्तक पुत्र सिद्ध हइया ऐ ग्रहीतार स्वत्वे स्वत्वाधिकारि हइते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

शूद्रादीनां दत्तकपुत्रग्रहणसमये एतानि कर्म्माणि शास्त्रतः कर्त्तुमुचितानि भवन्ति। प्रथमतः पुत्रदानं तत्पितृकृतम्, तत्पित्रनुज्ञया तन्मातृकृतं वा, तदनन्तरं व्याहृतिहोमादिकं विधाय ग्रहणं ग्रहीतृकर्तृकम्, तदनुज्ञया तत्पत्नीकर्त्तृकं वेति। यद्यपि दत्तकपुत्रग्रहणसमये पुत्रग्रहणाङ्गभूतानि सर्व्वाण्येव कर्म्माणि जातानि स्युः, तस्मात् परं दत्तकपुत्रग्रहीतुर्म्मरणं जातं चेद्, अपि केनचित् तज्ज्ञातिना तस्यैव दत्तकपुत्रस्य चूडाकरणादिसंस्कारा ग्रहीतृगोत्रेणार्थात्ग्रहीतृपुरुषस्य नामगोत्रे समुच्चार्य्य जाताश्चेत्, तदा स एव दत्तकः पुत्रो ग्रहीतुः पुत्रो भूत्वा ग्रहीतृत्यक्तधने स्वत्वाधिकारी भवत्येव—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि।
सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्रिमः सुतः – इति मनुवचनम् ॥१॥

नत्वेवैकं पुत्रं दद्यात् *प्रतिगृह्णीयाद्वान्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः*। पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् *बन्धूनाहूय राजनि चावेद्य निवेशनस्य मध्ये व्याहृतिभिर्हुत्वा* । *अदूरबान्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृह्णीयाद्*—इति दत्तकमीमांसादि-(पृ० १०१।१०२)ग्रन्थधृतवशिष्ठवचनानि ॥२॥

राजात्र ग्रामस्वामी। बन्धूनाहूय सर्व्वां स्तु ग्रामस्वामिनमेवेति वृद्ध-गौतमस्मरणात्—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ६६)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बन्धूनात्मपितृमातृबन्धून् ज्ञातीन् सपिण्डान्। बान्धवाद्याह्वानं दृष्टार्थं राजाह्वानवत्—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ६७)ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते॥—इति दत्तकमीमांसादि-(पृ० ७४)ग्रन्थधृतकालिकापुराणवचनम् ॥५॥

दत्ताद्या अपि तनया निजगोत्रेण संस्कृताः।

आयान्ति पुत्रतां सम्यगन्यबीजसमुद्भवाः॥—इति दत्तकग्रन्थधृत-(पृ० ७४)कालिकापुराणवचनम् ॥६॥

तस्मादेषां पञ्चानां पुत्राणां शौनकवशिष्ठान्यतमविधिपरिग्रहेणैव पुत्रत्वं नान्यथा—इति दत्तकमीमांसा, पृ० १०६) ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तस्माद्दत्तकादिषु संस्कारनिमित्तमेव पुत्रत्वमिति सिद्धम्। दानग्रहणहोमाद्यन्यतमाभावे पुत्रत्वाभाव एव—इति दत्तकमीमांसा(पृ० १११ ग्रन्थ-लिखनम् ॥ ८ ॥

सर्व्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थधृतदेवलवचनञ्चेति ॥ ९ ॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितभ्ररमासाग्रगजेन्दु-मितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार तरजमा बाङ्गला भाषाय—

हजुरेर समर्पित करा सवाल, जाहा अङ्गरेजी सन १८३४ साले अपरैल मासेर १५ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि पाइयाछिलाम, ताहार दृष्टे ये मत वोध हइल तदनुसारे उत्तर लिखितेछि—

प्रश्नोत्तरेर भाषा—

शूद्रादिर दत्तक पुत्र ग्रहणकालीन शास्त्रानुसारे एइ सकल कर्म्म कर्त्तव्य उचित। प्रथमतः जनक पिता किम्वा तदनुमतिक्रमे जननी माता पुत्र दान करिवेक। ताहार पर ग्रहीता व्यक्ति किम्वा तदनुमतिक्रमे ताहार पत्नी व्याहृति होम प्रभृति शास्त्रानुसारे करिया पुत्र ग्रहण करिवेक। आर यद्यपि दत्तक पुत्र ग्रहणकालीन पुत्र-ग्रहणेर अङ्ग ये सकल कर्म्म ताहा हइया थाके, ताहार पर दत्तक पुत्र ग्रहीता व्यक्तिर मृत्यु हयोयाते ताहार कोन ज्ञातिर द्वाराय ऐ दत्तक पुत्रेर चूडाकरण प्रभृति संस्कार ग्रहीता पितार नाम गोत्र उल्लेख करिया हइयाथाके, तवे ऐ दत्तक पुत्र सिद्ध हइया ग्रहीतार त्यक्त धने स्वत्वाधिकारी हइवेक। एइ व्यवस्था वङ्गदेश चलित मनु ओ दायभाग ओ दायतत्व ओ दायभागटीका ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादार्णवसेतु ओ विवादभङ्गार्णव ओ दत्तक-मीमांसा ओ दत्तकचन्द्रिका ओ दत्तकदीधिति ओ दत्तकनिर्णय ओ गयरह ग्रन्थ सम्मत वटे इति।

प्रथम प्रमाण मनुवचन। ताहार भाषा—माता किम्वा पिता किम्वा उभये ग्रहीता व्यक्तिर पुत्र ना थाका प्रयुक्त प्रीति पूर्व्वक आपन पुत्रके सजातीय ग्रहीता व्यक्तिके दान करे, ऐ पुत्र ग्रहीता व्यक्तिर दत्तक पुत्र जाना जाइवेक। इति॥ १॥

द्वितीय प्रमाण वशिष्ठ मुनिर वचन सकल, दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थेर लिखित। ताहार भाषा—ये व्यक्तिर केवल एक पुत्र थाकिवेक से व्यक्ति ऐ पुत्रके काहाकेओ दिवेक ना। एवं ग्रहीता व्यक्ति ओ ग्रहण करिवेक ना। कारण एइ ये ऐ पुत्र ऐ जनकेर पूर्व्व पुरुषेर सन्तानेर निमित्त थाकिवेक। एवं स्त्रीलोक पतिर अनुमति व्यतिरेक पुत्र दिवेक ना, ओ लइवेक ना। एवं पुत्रग्रहण ये करिवेक से वन्धुलोकेर आह्वान एवं राजार निकट निवेदन ओ व्याहृति होम प्रभृति करिया वन्धुलोकेर साक्षात् ग्रहण करिवेक इति॥ २॥

तृतीय प्रमाण--दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित। ताहार भाषा—द्वितीय प्रमाण वशिष्ठ मुनिर वचन। ताहाते लेखा आछे ये राजार निकट निवेदन करिया पुत्र ग्रहण करिवेक। ए स्थले राजा शब्दे ग्रामस्वामी, अर्थात् जमिदार, जाना जाइवेक। कारण एइ ये वृद्ध गौतम मुनि कहियाछेन ये वन्धुसकलेर एवं ग्रामस्वामी अर्थात् जमिदारेर आह्वान करिवेक। अर्थात् उहार-दिगके ज्ञातो कराइवेक इति ॥ ३ ॥

चतुर्थ प्रमाण दत्तकमीमांसा ग्रन्थलिखित। ताहार भाषा—वन्धुलोक ओ ज्ञातिलोकेर आह्वान यत्नपूर्वक करिवेक। ए स्थले वन्धु शब्दे आत्मवन्धु ओ पितृवन्धु ओ मातृवन्धु ओ-ज्ञातिशब्दे सपिण्ड जाना जाइवेक; ओ वन्धु ओ सपिण्डेर आह्वानेर प्रयोजन एइ ये इहारदिगेर ज्ञातसारे ये दत्तक पुत्र ग्रहण करिवेक से दत्तक पुत्र लोकेते प्रकाश हइवेक। येमन राज निवेदनेर प्रयोजन अर्थात् इहारदिगेर ज्ञातसारे ग्रहीत दत्तक पुत्रके केह मिथ्या करिते पारिवेक ना ॥ ४ ॥

पञ्चम प्रमाण—दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थ धृत कालिकापुराण-वचन। ताहार भाषा—वालकेर चूडाकरण प्रभृति संस्कार यदि ग्रहीतार नाम गोत्र उल्लेख करिया हइया थाके तवे दत्तक प्रभृति पुत्रेरा ग्रहीतार पुत्र हयेन। न तु वा दास वला जाइवेक इति ॥ ५ ॥

षष्ठ प्रमाण—ऐ सकल ग्रन्थ धृत कालिकापुराणवचन। ताहार भाषा—दत्तक प्रभृति पुत्र यदि ग्रहीतार नाम गोत्र उल्लेख करिया संस्कृत हइया थाकेन तवे ऐ पुत्रेरा अन्येर औरस जात हइलेओ ग्रहीता व्यक्तिर पुत्रता सम्यक् प्रकारे प्राप्त हयेन इति ॥ ६ ॥

सप्तम प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित। ताहार भाषा-दत्तक प्रभृति पाच प्रकार पुत्रेर प्रति शौनकमुनिर कथित किम्वा

वशिष्ठमुनिर कथित ये प्रकार पुत्र ग्रहणेर विधान आछे ताहार मध्ये कोनो एक प्रकार विधान करिले ग्रहीतार पुत्रता सिद्ध हय। न तु वा हय ना इति ॥ ७॥

अष्टम प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित। ताहार भाषा—ये हेतुक दत्तक प्रभृति पुत्रेर संस्कार करातेइ पुत्रता हय—एइ कथा स्थिर। अतएव दान किम्वा ग्रहण किम्वा व्याहृति होम प्रभृति, ये विधान नियमित आछे, ताहार मध्ये यदि कोनो एक कर्म्म ना हय तवे उहार पुत्रता सिद्ध हय ना इति ॥ ८॥

नवम प्रमाण—दायभाग प्रभृति ग्रन्थ धृत देवलमुनिवचन। ताहार भाषा—ये व्यक्तिर औरस पुत्र ना थाके, ताहार दत्तक प्रभृति पुत्रेरा धनाधिकारि हयेन इति ॥ ९॥

अङ्गरेजी सन १८३४ साले। सेतम्वरमासेर १८ तारिके दिवस वृहस्पतिवारे एइ व्यवस्था दाखिल करा गेल ॥—

———

(४८)—लं० ६ आपिल सन १८३४ साल--

रुवकारि आदालते देओानि मौं० ताजपुर परगने खोरद नागपुरेर एजेण्ट गवरनर[1] जानेरेल शाहेव वाहादुरेर मोहकमा कापतान तामश डिनगेष एजेण्ट साहेवेर बैठके सन १८३४ शालेर २९ मार्च्च मोतावक सन १२४० साल १७ चैत्र मओाफक्के सन १२४१ सालेर ५ चैत्र दिवस शनिवार—

चेतरामतेओारि— आपिलाण्ट

सावेक मुदइ--

आशानाथतेओारि— रेष्पाडण्ट

सावेक मुदाआलेहे

मोकद्दमा मौजे खटका ओ मौजे देशउत परगने खोफरा माघने परगने खोरदनागपुरेर मोछम्मात सुमित्रातेओारिनेर

१. गववनरजानेरेन—व्य-० ।

अर्द्धेक हिस्याय दखल पाइवार वाबद एशिष्टएट कमिशनर साहेवेर फयशलार नाराजी ॥—

इहार पूर्व्वे शन हालेर २८ फिव्ररेल ओ एइ मासेर १४ ओ २१ ओ २२ तारिखे एइ मोकद्दमा हजुरे रुवकार हइया मुलतवि छिल। अद्य एइ मोकद्दमा पुनराय उभयेर मोकाविलाय रुवकार हइल। गोविन्दनारायणतेओारि उभये लरिकानेर १ जना हजुरे हाजीर हइल। मिछिलेर समुदय कागजात ओ उभयेर कुरशिनामा मोलाहेजा हइया एइ वोध हय जे वासुदेवतेओारि उभयेर मुरस छिलेन। ताहार दुइ पुत्र। ज्येष्ठ जगतमन तेओारि, कनिष्ठ कृष्णमन तेओारि। वासुदेवतेओारिर सन्तान हइते आपिलाएट चेतरामतेओारि अष्टम पुरुष ओ रेष्पाडएट आशानाथतेओारि ओ गोविन्दनारायणतेओारि सप्त पुरुष छिल, आर कृष्णमनतेओारि सन्तान हइते गोदलरामतेओारि पञ्चम पुरुस[1] थाकिआ, एक कन्या ओ सुमित्रातेओारिनि आपन स्त्रीके राखिया अपुत्रक मृत्यु हय। ओ ताहार कन्या सुमित्रा वर्त्तमाने आपन एक पुत्र सन्तान राखिया मृत्यु हय। ओ ताहार कन्यार सन्तान आपन वनिताके राखिया मृत्यु हय। आर जगतमनतेओारि ओ कृष्णमनतेओारि उभये पितार स्थावर अस्थावर सकल विसय अर्द्धार्द्ध अंश करिया लइया दखिलकार थाकिया मृत्यु हइले। ताहारदिगेर उत्तराधिकारिरा पैतृक त्यक्त धने आपन २ हिश्या मतो दखिलकार थाकिया, इहार मध्ये आपिलाएट चेतराम तेओारि रेष्पाडएट आशानाथतेओारि ओ गयरह गोदलरामतेओारि मजकुरेर वनिता सुमित्राके ताहार स्वामिर ओ स्वामिर भ्रातार हिश्यार विषय मौजे खटगा ओ मौजे देसउतेर अर्द्धेक हइते वेदखल करिले। मोछम्मात मजकुरार नालिस मते सन १८१८ सालेर ६ जुन तारिखे जेला रामगडा हइते मौजे खटगा ओ मौजे देशउत ग्रामेर चारि आना रकम अर्थात अर्द्धेक २ मोछम्मात

१. पुरुष—व्यप०।

सुमित्रार स्वामिर, अर्द्धेक, ओ स्वामिर भ्रातार अर्द्धेक विषये दखल पाइया दखिलकार छिल। परे सुमित्रा मजकुरा आपन दखलि ऐ दुइ मौजार समुदय हिस्या मोवलगे ७५१ टाका पने रेष्पाडण्ट आशानाथतेओोरिर निकट विक्रय करिया कोवाला ओ पनेर टाकार रशीद सन १८२१ सालेर २३ आपरेल मोतावक फशलि सन १२२८ सालेर ९ वैशाख तारिखे लिखिया दिया सन १८२१ सालेर २८ आपरेल तारिखे आपन स्वेच्छापूर्व्वक मों शहरघाटीर काजिर मोहर ओ सन १८३१ सालेर ३० आपरेल तारिखे रेजष्टरि कराइया देय। तद्वधि आशानाथ-तेओोरि विक्रीत विषयेर पर दखलिकार आछे। सुमित्रातेओोरिनि फसलि सन १२४० सालेर भाद्र माहाते फौत करे। ताहाते चेतरामतेओारि सुमित्रार स्वामिर सगोत्र प्रयुक्त ओ अपुत्रक फौत करणे आपनाके ताहार हिस्यार हिस्यादार करार दिया एइ नालिष करिवार खोरद नागपुरेर परगना हरेर एशिष्टण्ट कमिसनर साहेवेर सुमित्रार दखलि विषय आशा-नाथतेओोरिर निकट विक्रय एव ताहाते ताहार दखिलकार थाकार शाब्दते सन १८३३ सालेर २८ मे तारिखे मोकद्दमा डिर्षामिष करियाछेन। आपिलाण्ट ऐ फयसलाय नाराज हइया सन १८३३ सालेर ११ सेतम्बर तारिखे परगना हावेर खोरद नागपुर ओ गयरहेर कमिसनरि मोहकमाय आपिलेर दरखास्त करे। परे कमिसनरि वरखास्त हइया आमार मोता-लुक हओार उभयेर मोकद्दमा एइ आदालते मोन्तजम हय इति। रेष्पाडण्ट आशानाथतेओोरि जाहेर करे ये सुमित्रार स्वामिर हिस्या छिल ओ से विना आवेज ओ आपत्य आपन स्वामिर विशयेर पर दखिलकार थाकिया आपन सेच्छा पूर्व्वक मौजे खटगा ओ मौजे देशओत ग्रामेर अर्द्धेक मोवलगे ७५१ टाका पने आमार निकट विक्रय करिया, कोवालाय काजिर मोहर ओ रेजष्ट साहेवेर रेजष्टरि कराइया लिखियादेय। तद्वाध आमि

रेष्पाडण्ट आमार दखले आछे। आर सुमित्रा आपन दखलि जमिर मध्ये एक नहरि जमि खारिटाम्भ ओ पाबि दुइ गाछ, काठाल १ ओ कदम्ब १ कयाल धरके दान करे। आपिलाण्ट ताहाते मोजाहेम हय ना इति। यदि स्यात् रेष्पाडण्ट आशानाथतेओारि जाहेर करितेछे जे सुमित्रातेओारिनेर विक्रयानुसारे विक्रित विशयेर पर दखिलकार आछे। आपिलाण्ट चेतरामेर सहित ताहार एलाका नाइ, ओ ताहार खरिद साब्छदेव करिया कोवाला ओ पनेर टाकार रशीद पेष करे। किन्तु प्रकाश हइते छे जे सुमित्रा वेओा ओ अविरा थाकिया स्वामिर पैतृक विषय आशानाथ तेओारिर निकटे विक्रय करे। मिताक्षरा ओ दायभागेर तरजमार केताव मोलाहेजाय प्रकाश हइतेछे जे वेओा ओ अविरा स्त्रिके स्वामिर पैतृक विषय दान विक्रयेर क्षमता कदापि नाइ। ए कारण हिन्दुदिगेर शास्त्रानुसारे ओ देशाचार मते सुमित्रा वेओा अविरा रेष्पाडण्ट आशानाथ तेओारिर निकटे स्वामिर पैतृक विषय विक्रय करा ओ आशानाथ मजकुरेर ताहा खरिद करा ओ कोवाला माफिक एसिष्टण्ट कमिसनर साहेवेर हुकुमानुसारे ताहाते दखिलकार थाका सम्य(क) प्रकारे अयोग्य ओ आदालतेर ग्राह्येर योग्य नहे। एवं शास्त्र द्वारा ओ देशाचार मते वोध हय ये मृत गोदलरामेर त्यज्य वस्तुर पर ताहार सगोत्र दखल पाइवार सत्व राखे किन्तु तरजमाय वहि दृष्टे अवगति हय जे पितार सप्तम पुरुष पर्य्यन्त सपिण्ड ओ हिस्याय हकदार। आर उभयेर कुरछिनामा हइते प्रकाश आछे जे वासुदेवतेओारि उभयेर मुवा। ताहार दुइ सन्तान। ज्येष्ठ जगतमनतेयारि उभयेर घरना ओ कनिष्ठ कृष्णमनतेओारि। सुमित्रातेओारिनेर स्वामि गोदलरामतेओारिर घरना छिल। दुइ भ्रातार आपन पितार विषय अर्द्धेक अर्द्धेक रकम अंश करिया लइया दखिलकार थाकिया मृत्यु हय, ताहारदिगेर ओयारिशान[1] आपनारदिगेर पैतृक हिस्या माफिक

१. ओयाविशान—व्यप०।

दखिलकार आछे, आर आपिलाण्ट चेतराम वासुदेवतेओारि हइते अष्टम पुरुष ओ जगतमनतेओारि हइते सप्तम पुरुषेर तफात, एवं वासुदेव हइते आशानाथ षष्टम पुरुष, ओ जगतमन हइते पञ्चम पुरुषेर तफात, आर सुमित्रार स्वामि गोंदलराम वासुदेव हइते पञ्चम पुरुष ओ कृष्णमनतेओारि हइते चतुर्थ पुरुष तफात आछे, ओ गोविन्द नारायणतेओारि आशानाथते-ओारिर न्याय वासुदेव मजकुर हइते षष्टम पुरुष एवं जगतमन हइते पञ्चम पुरुषेर तफात। अतएव तरजमार केताव दृष्टे सपिण्डक अर्थात सप्तम पुरुष अष्टम पुरुषेर नाओोयारिशी विष-येर हिस्याय कोनो स्वत्व राखे कि ना-सन्देह जन्मिल। एवं एतद्देशे एइ मोकर्द्दमार न्याय जे अष्टम पुरुषेर केह सगोत्र नाओोरिशि विशये दखल पाइयाछे कि ना तर्त्त करा गेल। ताहाते केह कहिते ओ कोनो लिखित पठित पेष करिते पारिवेक ना। अतएव ए विशयेर व्यवस्था ज्ञातो हओा आविस्यक मते हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ उभयेर कुरछिनामा इङ्गरेजी ओ फारशी ए वातरे इङ्गरेजी चिठी द्वारा सदर दओोनि आदाल-तेर हाकिमानेर निकट एइ प्रार्थनाय प्रेरित हय जे साहेवान मौसुफिल मिताक्षरा हइते एइ विशयेर व्यवस्था जे गोदलराम-तेओारि अपुत्रकेर विषये के २ हिस्यार हक राखे—आदालतेर पण्डितेर स्थाने तलव करिया अनुग्रह पूर्व्वक आसल व्यवस्था मोलाहेजार कारण पाठान जे मोकद्दमा फयसल हय, आर व्यवस्था पौंछ पर्य्यन्त ए मोकद्दमा मुलतवि थाके इति—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं वंशावलीपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगम-गुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

गोदलरामत्रिवेदित्यक्तधनं यत् पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सति तत्पत्न्या सुमित्रा-देव्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तत्र धने यदि गोदलरामत्रिवेदिदौहित्रस्तत्पत्नी-सुमित्रादेवीमरणोत्तरं विद्यमान आसीत्तदा तस्याधिकारस्तस्मिन् पुत्रपौत्र-

प्रपौत्ररहिते मृते सति तत्पत्न्या एव तद्धनाधिकारः । यदि च गोदलरामत्रिवेदिदौहित्रः स्वमातामह्यां विद्यमानायामेव मृतः स्यात्तदा तद्दौहित्रस्य तद्धने स्वत्वानुत्पादेन तत्पत्न्या अपि तद्धने नाधिकारः, किन्तु प्रभुसमर्पितविचारपत्रवंशावलीपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति गोदलरामत्रिवेदिवृद्धप्रपितामहवासुदेवत्रिवेदिनोऽतिवृद्धप्रपौत्रयोराशानाथत्रिवेदिगोविन्दनारायणत्रिवेदिनोरेव सन्निकृष्टसपिण्डत्वेन समानाधिकारः, आशानाथत्रिवेदिगोविन्दनारायणत्रिवेदिनोः पूर्व्वं गोदलरामत्रिवेदित्यक्तधने ये उत्तराधिकारिणस्तेषां मध्ये कश्चिदिदानीं विद्यमानोऽस्ति न वेत्यस्य प्रभुसमर्पितविचारपत्रवंशावलीपत्राभ्यां स्पष्टतरतयाऽनवगमाद्, आशानाथत्रिवेदिगोविन्दनारायणत्रिवेदिनोर्विद्यमानयोर्वासुदेवत्रिवेदिवृद्धातिवृद्धप्रपौत्रस्य कमलनाथत्रिवेदिनो वासुदेवत्रिवेदिवृद्धातिवृद्धप्रपौत्राणां कलहारामत्रिवेदिहीरारामत्रिवेदिभवनरामत्रिवेदिचेतरामत्रिवेदिनां वासुदेवत्रिवेदिवृद्धातिवृद्धप्रपौत्रप्रपौत्रस्य वेचूरामत्रिवेदिनश्च नाधिकारः, सन्निकृष्टासन्निकृष्टसपिण्डयोस्समानोदकानां च विद्यमानतायां सन्निकृष्टसपिण्डस्यैवाधिकारस्य मनुमितात्त्वरादिग्रन्थसम्मतत्वात्—इति मनुमितात्त्वरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितस्वरमासीयमुनिनेत्रमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया विचारपत्रवंशावलीपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(४९)—मो० कलिकातार सदरदेओानि आदालतेर श्रीयुत ओलियमब्राडिन साहेव ऐ आदालतेर हाकिमेर वैठकेर सन १८३४ सालेर तारिख १२ माह जुन मोतावेक सन १२४१ सालेर ३१ ज्यैष्ठ वृहस्पतिवारेर दिवसेर रोवकारि—

काशीचन्द्रमुस्तोफि छाएल

छाएलेर उकिल मुनशी शिवनारायण चट्टोपाध्याय हाजिर

आइल। छाएलेर छयाल एइ जे श्रीमति कमलकुमारी छाएलेर अप्राप्तावय कन्यार स्वामिर वाटीते ताहार सासुडि पदुकमल-दासीर निकटे जाइबार विषयेर सन १२३४ सालेर ३ मे तारिखेर जेला हुगलिर जज साहेवेर हुकुमेर नाराजिते एवं श्रीमतीकमल कुमारी मजकुरार ऐ पदुकमलदासीर वाटीते जओार हित हओनेर प्रार्थनाय ओ अन्य २ विशयसकलेर सहित उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ सन १८३४ सालेर ३मे तारिखेर जेला हुगलिर आदालतेर रोवकारिर नकल १ केता ओ सन १२३२ सालेर १७ मे तारिखेर लिखित जेला मजकुरेर केलक्टरि काचारिर रोवकारिर नकल १ केता एइ मासेर ५ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आइल। वोध हइल जे लाट कृष्णराम वाटी ओ गयरहेर तालुकदार रमेशचन्द्रदत्त छाएलेर अप्राप्तावय कन्या श्रीमतीकमलकुमारिके विवाह करिया आठ मास जीवद्दशाय थाकिया श्रीमतिमज-कुराके पुष्य पुत्र लओनेर अनुमति दिया उहाके उत्तराधिकारिणी ओ केशमत लाट कृष्णराम वाटी ओ गयरह अनेक तालुक ओ जमीसकल ओ स्थावर ओ अस्थावर स्वनामी विनामी विशय-सकल राखिया मृत्यु हय, ओ उहार मृत्युर पर श्रीमतीपदुकमलदासी मृत रमेशचन्द्रेर माता मृत मजकुरेर त्यक्त अनेक जायदाद हस्तान्तर एवं कोनो जायदादे आपन नाम जारि करिया छाएलेर कन्याके आपन आयत्तते आनिवार मानसे हुगली जेलार आदा-लतेर एक केता दरखास्त गुजराय, ओ जेलार जज साहेब व्य-वस्था लइया छाएलेर अप्राप्तावय कन्या श्रीमतीकमलकुमारी-दासीके उहार सासुडिर वाटीते पाठाइवार हुकुम प्रकाश करेण छाएल ताहार असन्मतिते ए आदालते रुजु हय इति। जखन छाएलेर उकिल प्रकाश करे जे श्रीमती पदुकमलदासी अप्राप्ता-वय श्रीमतीकमलकुमारीर ओछिर हेतुते मृत रमेशचन्द्रेर तावत त्यक्तविशये दखलिकार आछे। एवं छायलेर छओाले प्रकाश आछे

ये मृत रमेशचन्द्रदत्तेर अप्राप्तावय स्त्री श्रीमतीकमलकुमारी उहार सासुडिर सहित शत्रुता थाकार दृष्टे आपन स्वामीर वाटीते जाइते असन्मत आछे। ए जन्य ए आदालतेर पण्डितेर प्रति नीचेर लिखित प्रश्न करा उचित वोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे रोवकारिर नकल पाओार तारिख हइते एक सप्ताह मध्ये निचेर लिखित प्रश्नेर उत्तर लेखेन, ए आदालदेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति।

प्रश्न :—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्तिर अप्राप्तावय विधवा कन्या से ताहार स्वामी वर्त्तमान थाकिते कखन आपन स्वामीर वाटीते ना गिया थाके ओ उहार स्वामी उहाके पुष्यपुत्र लइवार अनुमति प्राप्तावय हइले पर थाके ओ आपन स्वामीर वाटीते जाओने ओ आपन सासुडि उहार जानत उहार शत्रु हय ताहार निकट वास करणे सम्मत ना हय, तवे वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे श्रीमती मजकुरार आपन स्वामीर वाटीते जाओा उचित वटे कि ना इति—

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडीनसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्वादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयैकविंशतितमदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्यप्राप्तव्यवहाराया अवीरायाः पतिकुलानुस[1]-र्य्यवीरास्त्रीमर्य्यादाधर्म्मादीनां संरक्षणं पतिपक्षीयेण देवरादिना भवितुं शक्यते चेत्तदा तस्याः पतिगृहगमनमेवोचितं भवति, पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रियाः संरक्षणादौ शास्त्रानुसारेण पतिपक्षीयपुरुषस्यैव प्रभुत्वात्। यदि च तस्याः पतिकुले तद्देवरादिः कश्चित् पुरुषस्तत्संरक्षणादिकर्त्ता न विद्यते विद्यते वा तेन तत्संरक्षणादि भवितुं न शक्यते चेत्तदा तस्याश्चावीरायाः

१. पतिकुलानुसर्य्यवीरा—व्यप०।

मर्य्यादाधर्म्मादीनां स्वपतिकुलोचितं संरक्षणं पितृपक्षीयेणार्थात् पित्रा भ्रात्रादिना वा भवितुं शक्यते । तदैतादृशं पित्रादिकमपहाय स्वपतिगृहगमनं नावश्यकं भवति, पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रियाः संरक्षणादौ पतिपक्षीय-पुरुषाभावे पितृपक्षीयपुरुषस्यैव प्रभुत्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदाय-भागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्वरमासीयैकादश-दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(५०)—कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न :—

स्वरूपरामसेन जाति कायस्थ मृत्यु हइयाछे । आपन भगिनीर कन्या सओयाय अन्य केह ओयारिष नाइ, एवं ऐ भगिनीर कन्यार एक पुत्र आछे । ए प्रकारे मृत स्वरूपरामसेनेर त्यक्त धन ताहार भगिनीर कन्या पाइते पारे कि ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुण-गजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि मृतस्य कायस्थजातीयस्य स्वरूपरामसेनस्य भगिनी पुत्र्यर्थिनी पुत्रवती स्यात्तदन्यः कश्चिदुत्तराधिकारी नास्ति तदा मृतस्य स्वरूपराम-सेनस्य त्यक्तधने तस्या अर्थिन्या यद्यप्यधिकारो न भवति, किन्तु प्रश्नलि-खितवृत्तान्ते सति धर्म्मशास्त्रार्थविवेचनया फलतस्तत्पुत्रस्याधिकारो भवितुं शक्नोति—इति मनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्वरमासीयद्वितीय-

दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया विचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सवाल—

(५१)—यद्यपि कोनो व्यक्ति कोनो स्त्रीके विवाह करिया ऐ स्त्रीलोकेर सन्तान हइवार आसा व्यतीत हइले अन्य स्त्रीके सन्तान हइवार प्रार्थनाय विवाह करे, आर ऐ स्त्रीलोकेर वयस पन्द्रह वतसर हय, सेइ समय आसल स्थावरास्थावर समस्त धन, कि स्वोपार्ज्जित हय किम्बा ताहार पैतृक हय, आपनार भगिनीर पुत्रदिगेके दान करे, आर ऐ दानेर तीनि चारि वतसर पर सेइ द्वितीय स्त्रीर पुत्र सन्तान उत्पन्न हइया थाके, ए प्रकारे दानेर पर पुत्र हओयाते ऐ दान असिद्ध हइते पारे कि ना। आगत सोमवार दिवस पर्य्यन्त एहार जवाव लिखेन, ओ आसल हेवानामा ए आदालतेर पण्डितेर निकट देवा जाय। इति सन १८३४ साल तारिख ११ दिजम्वर इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुकृतप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दानपत्रविवेचनया धर्म्मशास्त्रानुसारेणैतादृशदानं न सिद्ध्यति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया दानपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५२) सवाल पहिला—

कलकतेके सदर दीमानी अदालतके पण्डितसे सवालोका वन्द लिखा, ६ दिसम्बर सन १८३४ ईशवी।

अगर कोइ करजके रू(प)से इआ दुसरे तओरसे देन्दार किसिका होवे, अओर सुदके वावद कुछ कओल करार नहि हुआ होवये - इस सुरतमे शास्त्रके मताविक किस तओरसे अओर किस अन्दाजसे उसका सुद मोकरर होये॥—

सवाल दुसरा—

सुदके सुदके मकद्दमेमे शास्त्रके मताविक किस अन्दाजसे मकरर हये, इआने जो रुपयाके सुदके वावत असल देनके सेओआय देन्दारके तै लाजिम होता हय, तो शास्त्रमे कुछ हद उसका मकरर हये इया नहि। अगर हय तो अन्दाज उसका केतना हये।

प्रथम सओयालेर वाङ्गला भाषा—

कलिकातार सदर देओआनि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल सकल लेखा गेल। ६ दिशम्वर सन १८३४ ईशवी।

यदि कोनो व्यक्ति काहारो टाका कर्ज्जरूपे किम्वा अन्य प्रकारे धारे, आर सुदेर विषय कोनो करार किम्वा निर्द्धार्य्य ना हइया थाके। ए प्रकारे शास्त्रानुसारे कि प्रकारे ओ कि परिमान सुद ऐ टाकार मकरर करा जाइवेक इति॥—

द्वितीय सओयालेर वाङ्गला भाषा—

सुदेर सुदेर विषये—शास्त्रानुसारे कि परिमाण नियम आछे, अर्थात् ये टाका सुदेर वावत आशल टाका आदायेर सेओयाय देन्दारके दिते हय, शास्त्रे ओहार अवधि किछु नियमित आछे कि ना। यदि थाके, तवे कि परिमाण इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीमत्प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिदृणरूपेण प्रकारान्तरेण वा कस्यचिद्रजतसुवर्णादिधनं धारयति, एवं द्वयोरुत्तमर्णाधमर्णयोर्वृद्धिसंख्यायां काचित् संविन्नैव जाता स्यात्, तत्र यत्राधमर्णादुत्तमर्णैर्बन्धकद्रव्यं लग्नकं वा अगृहीत्वैव तस्मै स्वधनं दत्तं स्यात्तदा ब्राह्मणादधमर्णात् द्विकशतपर्य्यन्तं क्षत्रियादधमर्णात् त्रिकशतपर्य्यन्तं वैश्यादधमर्णाच्चतुष्कशतपर्य्यन्तं शूद्रादधमर्णात् पञ्चकशतपर्य्यन्तं मासि मासि वृद्धिर्ग्राह्या। किन्त्वेतावान् विशेषः यद्धनं वृद्धिसंविद्व्यतिरेकेण गृहीत्वा अधमर्णो देशान्तरं गतः तद्धनस्य संवत्सरादूर्ध्वमुपरिलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति। यत्राधमर्ण उद्धारं गृहीत्वा उत्तमर्णेन याचितोऽपि याचितकमदत्त्वा देशान्तरं गतस्तत्र मासत्रयानन्तरं सैवोपरिलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति। यत्राधमर्णो याचितकमादाय स्वदेशस्थित एव, याचितोऽपि याचितकं न ददाति, तत्र याचनकालमारभ्य सैवोपरिलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति। यत्राधमर्णो प्रीत्या धनं गृह्णाति तत्र षण्मासानन्तरं सैवोपरिलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति। तत्रायं तात्पर्यार्थः—बन्धकलग्नकरहितेऽपि यत्र वर्णानां ब्राह्मणादीनां द्विकं त्रिकं चतुष्कं पञ्चकं वा शतं प्रति मासि मासि वृद्धिस्तत्रापि देशाचारसमयाचारयोर्द्धनिकाधमर्णिकयोः शिष्टतादुष्टतासधनतानिर्धनतानां वृद्धेश्च विवेचनया यथासम्भवं न्यूनतरा वृद्धिश्चेत् सापि शास्त्रीया भवति। किन्तु ब्राह्मणादधमर्णात् मासि मासि द्विकशतात् क्षत्रियादधमर्णात् मासि मासि त्रिकशतात् वैश्यादधमर्णात् मासि मासि चतुष्कशतात् शूद्रादधमर्णात् मासि मासि पञ्चकशतादधिका वृद्धिः कदाचिदपि शास्त्रानुसारेण भवितुं नैव शक्नोतीति॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मूलधनस्य या वृद्धिस्तस्या वृद्धिरुत्तमर्णाधमर्णयोः संविदं विना नैव भवतीति शास्त्रे निषेधः। परन्तु यत्राधमर्णो वृद्धिरूपं धनं दातुमशक्तो भूत्वा वृद्धिरूपधनस्य वृद्धिं दातुमङ्गीकरोति तदा वृद्धेरपि वृद्धिः शास्त्रानुसारेण भवितुं शक्नोति। तत्र यथा धनिकाधमर्णिकयोः प्रतिज्ञा वृद्धिसंख्यायां सैव प्रतिज्ञा वृद्धिसंख्यानियामिका संख्यायामप्रतिज्ञातायां प्रथम-

प्रश्नोत्तरलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति--इति मन्वादिधर्म्मशास्त्रानु-सारिणी व्यवस्थेति--

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्वरमासीयत्रयो-विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रश्नपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५३)—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर कायेम मेकाम हाकिम कृष्णाफर ओएव इसमित साहेवेर वैठके। इं सन १८१५ सालेर ५जानेर मोतावेक वाङ्गला सन १२४१ सालेर २२पौष दिवस सोमवार ॥—

राधाचरणवर्णिक आपीलाण्ट

लक्ष्मीसद्दार ओ गयेरह रेष्पाडण्टान्

आपीलाण्टेर उकिल सदासुखपण्डित ओ रेष्पाडण्टानेर उकिल मुनशी हयदर आलि एनिएन वेञ्चमेन एडमेनेष्टीन वेली हाजीर आइलेन। इहार पूर्व्वे गतो २९ ओ ३०दिशम्वर तारिख सकले एइ मकर्द्दमा उत्थापन हइया तारिखसकलेर रोवकारिर लिखित हेतु मते मुलतवि अर्थात् स्थापित रहियाछिल। अद्य पुनराय उत्थापन हइया मुदइ अर्थात् वादीर इसादीर जवानवन्दि ओ प्रतिवादिदिगेर इसादीसकलेर एजाहार पडा हइल। मोकद्द-मार सामुदाइक हेतुसकले वोध हइया ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने कयेक विषय जिज्ञास्य आविश्यक मते हुकुम हइल ये रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित प्रश्नसकलेर प्रति-उत्तर शीघ्र लिखेन—एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय इति ॥—

प्रश्न :—

पूर्व्व पुरुष लक्ष्मणवणिक राजुवनिक ओ जगमोहनवनिक

ओ रामकृष्णवनिक तिन पुत्रके राखिया मृत्यु हय। परन्तु राजु-वनिक आपन वनिता श्रीमतीजगमोहिणीके राखिया अपुत्रक मृत्यु हय। वाङ्गला सन १९२६ साले जगमोहिणी मजकुर परलोक गतो हय, एवं जगमोहन अपुत्रक आपन स्त्री गङ्गामणीके राखिया सन १२२६ सालेर पूर्व्वें मृत्यु हय। वाङ्गला सन १२२६ साले ओ रामकृष्ण एक पुत्र गोपीकृष्ण ओ तारामणी स्त्रीके राखिया मृत्यु हय। ओ तारामणिओ सन १२२६ सालेर पूर्व्वे परलोक गत हय, ओ श्रीमतीमाङ्गलीर सहित गोपीकृष्णेर विवाह हय। ताहाते राममनी नाम्नी एक कन्या उत्पत्ति हय। ए ताहार एक पुत्र अर्थात् मुद्दइ ओ रामकृष्णेर पुत्र गोपीकृष्ण वाङ्गला १२२८ साले परलोक गत हय। ए ताहार वनिता श्रीमतीमाङ्गलीर सन १२३७ साले मृत्यु हय, ओ ताहार कन्या राममनीर सन १२२६ सालेर पूर्व्वें मृत्यु हय। एवम्भूत व्यापारे वाङ्गला-देशेर चलित शास्त्रानुसारे राधाचरण वनिकेर मातामह गोपीकृष्णवनिक ओ गोपीकृष्णेर पितृव्य रामकृष्ण भ्राता राजुवनिकेर स्त्री जगमोहिनीर त्यक्त विषये के हकदार हइते पारे, ओ सन्तति मजकुरार कोन नैकट्य कि भिन्न ओयारिस ना थाके विधाये ताहार त्यक्त वस्तु राधाचरण वनिकके अर्शे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतक्रष्टफिरओएवइसमिट्सा-हेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरी-मासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीय-नवमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति राजूवणिक्त्यक्तधनं यत् पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सति तत्पत्न्या जगमोहिन्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तन्मरणोत्तरं तत्र धने राजूवणिग्भ्रातृपुत्रदौहित्रस्य राधाचरणवणिजो धर्म्मशास्त्रानुसारे-

णाधिकारो भवितुमर्हति । अत्र यद्यपि दायभागटीकादिग्रन्थलिखितापुत्रधना-धिकारिश्रृङ्खलायां भ्रातृपुत्रदौहित्रस्य नामोल्लेखो विशेषतो नास्ति, किन्त्वे-तत्प्रश्नलिखितावस्थायां मनुस्मृतिसम्मतो भ्रातृपुत्रदौहित्राधिकारो दायभा-गादिग्रन्थाभिप्रेतो भवत्येव, धनिभ्रातृपुत्रदौहित्रस्यापि धनिभोग्यधनिदेयधनि-पितृपार्व्वणश्राद्धपिण्डदातृत्वेन धनिपारलौकिकोपकारकत्वात्, परम्परया धनिसपिण्डत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्य्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते ।

चतुर्थः सम्प्रदातैषाम्—इत्यादि मनु(९।१८६)वचनम् ॥१॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यास्तस्य तस्य धनं भवेद्—इति च मनु-वचनम् ॥२॥

तस्माद् यथा यथा मृतधनस्य तदुपयुक्तत्वं भवति तथा तथाधिकार-क्रमोऽनुसरणीयः—इति दायभाग(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

एवञ्च सर्व्वत्रोक्तरीत्या मृतधनस्य मृतार्थत्वमनुसन्धेयमुक्तक्रमेण—इति दायभाग(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

प्रतिसम्बन्धिनां चाधिकारार्थं वचनकल्पनागौरवात् तदर्ज्जित-धनस्य च तदुपकारतारतम्येन तादर्थ्यसम्पादनस्य न्याय्यत्वात्, उप-कारकत्वेनैव धनसम्बन्धो न्यायप्राप्तो मन्वादीनामभिमत इति निरवद्यविद्या-द्योतेन द्योतितोऽयमर्थो विद्वद्भिरादरणीयः—इति दायभाग(पृ० २१५ २१६) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयरसेन्दुमितदि-नसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(५४)—रोवकारि मिछिल आदालत देओानि जेला पुरनिया जेला मजकुरेर सदर आमिन आलार वैठके। सवाल वनामे पण्डित श्रीयुतलक्ष्मीनारायणन्यायालङ्कार वरावरेषु—

यदि कोनो व्यक्ति तेलि जाति आपन पैतृक विशयेर पर दखिलकार थाके, ओ ऐ व्यक्ति निःसन्तान मरे, ओ आपन मृत्युर पूर्व्वे दश कि वारह रोज पूर्व्वे पीड़ित हइया थाके, सेइ समय ताहार साक्षात् पितृव्यपत्नी, ये ताहार बाटीते सर्व्वदा थाकितो, ओ ताहार स्त्रीर सङ्गे गिया ओ अन्य अन्य ग्रामेर लोक ओ वन्धुवर्ग सकलेर सङ्गे ओ गुरु पुरोहित ओ गोस्त्रामीदिगेर सङ्गे एक वालकके सङ्गे निया गिया, ये वालक ताहार सगोत्रेर मध्ये छिल, अर्थात सगोत्रेर वहिर्भूत छिल ना, अन्य अन्य रैयति लोकके सङ्गे निया सेइ कर्त्ता व्यक्तिर निकट गिया डाकिले ये ओ अमुक, तुमि पोष्यपुत्र करिते चाहिछिले, एइ क्षणे लओ। किन्तु सेइ कर्त्ता व्यक्ति सेइ समय चेष्टारहित छिल, ओ ताहार दुइ तीनि वार डाकिले पर सेइ चेष्टा-रहित कर्त्ता व्यक्ति "हु" वलि उत्तर दिलेक, ओ ताहार पर ताहार ऐ पितृव्यपत्नी ताहार हाथ आपन हाथे धरिलो ओ ऐ वालकेर जनक पिता ऐ वालकेर हाथ धरिया ऐ कर्त्ता व्यक्तिर हाथे दिलेक, ओ ताहार एक किम्वा डेढ प्रहर परे किम्वा पओने दुइ प्रहरेर परे ऐ कर्त्ता व्यक्तिर मृत्यु हइल, ओ ताहार मृत्युर पर ताहार श्राद्धादि क्रिया ऐ पोष्य पुत्र पुत्रेर न्याय करिलेक, ओ मुद्दाआलेह ऐ समय मोजाहिम हइलो ना, ओ ताहार पर दुइ चारि मास पर्य्यन्त आपन ग्रहित्री मातार सङ्गे ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त धने दखिलकार ऐ पोष्य पुत्र छिल, ओ पाँच मासेर पर ऐ कर्त्ता व्यक्तिर स्त्रीर मृत्यु हय, ताहार पर मुद्दाआलेह, ये ओइ कर्त्ता व्यक्तिर पितृव्येर सन्तानेर मध्ये वटे, ऐ कर्त्ता व्यक्तिर त्यक्त धने दखिलकार हइल। एखन ओइ कर्त्ता व्यक्तिर पितृव्य-

पत्नी ऐ पोष्य पुत्र व्यक्तिर दिग हइते ओलि प्रकारे ओ आपन तरफ हइते उत्ताराधिकारित्व प्रकारे दावी करे, ओ ऐ पोष्य पुत्रेर वयस पाँच वत्सर हइते अधिक जखन हइयाछिल, तखन ऐ पोष्य पुत्रेर पोष्यपुत्रता हइलो, ओ ए कथा मुदइआर एजहार हइते वोध हय, ओ मुदाआलेह व्यक्तिर पिता आमार पितार सहोदर भ्राता छिल-ए प्रयुक्त ऐ कर्त्ता व्यक्तिर त्यक्त धनेर अधिकारि आमि, ओ मुदइर एजहारके एइ कथार द्वाराय वातिल करितेछे। अतएव नदियार चलित शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त धनेर अधिकारि कोन व्यक्ति हइवेक, ओ ए प्रकारेर पोष्यपुत्रता, जाहार जिकिर उपरे लिखागेल, सिद्ध वटे कि ना, ओ एइ सकल कथाके सम्यक विवेचना करिया जवाव लिखिवेन—इति तारिख ११ माह मार्च्च सन १८३२ इसवी ॥

उत्तरम्—

पञ्चवर्षादूर्द्ध्ववयस्कः सपिण्डपुत्रः यदा तज्जनकेन गुरुपुरोहितगोस्वामिज्ञातीनां सन्निधौ अपुत्रकप्रतिग्रहीतृहस्ते समर्पितः, ग्रहीत्रा च पूर्व्वं स्थिरीकृतस्तदानीं[1] स्वीकृतस्तदैव तस्य दत्तकत्वसिद्धिः। स्वस्थादिनियमस्तु दातुरेव, यतो स्वस्थार्त्तादिदत्तस्य पुनरादानमस्ति। न च शूद्रादीनां पुत्रेष्टिक्रियास्ति। पञ्चवर्षमध्ये दत्तकग्रहणं ब्रह्मवर्च्चसकामार्थिविप्रस्य, शूद्रादिसङ्करजातीनां तु विवाहकालपर्य्यन्तग्रहणाधिकारः। दत्तकग्रहणं पिण्डदानद्वारा स्वस्य पितॄणाञ्च मोक्षार्थम्। पिण्डदानक्रियादिकमप्यत्राधेन तेन कृतम्। अतो मृतधने दत्तकस्यैवाधिकारः[2] नत्वन्येषाम्-इति गौडदेशप्रचलितशास्त्रसम्मता व्यवस्था साधीयसी ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

यथाह याज्ञवल्क्यः--*दद्यान्माता पिता वा यं स पुत्रो दत्तको भवेद्*-इति ॥१॥

उत्पन्नमपि स्वत्वं सम्प्रदानव्यापारेण ममेदमिति ज्ञानेन यथेष्टव्यवहारार्हं क्रियत इति स्वीकारशब्दार्थः—इति दायभागः(पृ० १५)॥२॥

१. स्थिरिकृत०—व्यप०। २. दत्तकस्येवाधिकारः—व्यप०।

यदि पञ्चवर्षाभ्यन्तरे पुत्रं गृहीत्वानन्तरं पिता मृतः चूडादिकन्तु न कृतं तत्र तस्य पुत्रत्वं सिद्ध्यति, तथा न चाङ्गबाधे प्रधानस्य बाधः—इति विवादभङ्गार्णवः(२ विवा पृ० १७६ ख)॥३॥

कात्यायनः[1]-स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तम्-इत्यादि(कास्मृ० ५६६)॥४॥

पुत्रेष्टिमिति वर्णत्रयस्याधिकारापत्तेर्न पुत्रेष्टिपूर्व्वकचूडादिभिः पुत्रत्वं सम्पाद्यम्। शूद्रेण तदपि संस्कारमात्रादेर्वेति[2] सर्व्वमनवद्यम्।

ब्रह्मवर्च्चसकामस्य कार्य्यं विप्रस्य पञ्चमे, इति वचनेन तत्कामस्य पञ्चवर्षस्यैव उपनयनमुख्यकालत्वेन मूलत्वात् तथा। शूद्रस्य तु विवाहादिलाभः—इति दत्तकचन्द्रिका(पृ० २१।२२)॥५॥

अत्रिः—अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः।
पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्त्तनाय च॥—इति॥६॥

मनुः—न भ्रातरो न पितरः पुत्रा दायहराः पितुः।
तथा पिण्डदोऽशहरश्चैषां पूर्व्वाभावे परः परः॥—इति॥७॥

देवलः—सर्व्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः॥ दायहराः पूर्णांशहराः—इति दायतत्त्वम्॥८॥

मनुः—उपपन्नो गुणैः सर्व्वैः पुत्रो यस्य तु दत्रिमः।
स हरेतैव तद्रिक्थं सम्प्राप्तोऽप्यन्यगोत्रतः॥—इति(६।१४१)

औरसाभावे सर्व्वरिक्थग्रहणमुक्तवान्, तद्युक्तमौरसे सत्यर्द्धांशहरत्वम्—इति दत्तकमीमांसा (पृ० १०६)चेति॥९॥

शकाब्दाः १७५४॥ संवत् १८८९ सौरचैत्रस्य नवमदिवसीयव्यवस्था॥०॥०॥०॥—

श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितस्य

मोकाम कलिकातार सदर देओानी आदालतेर इङ्गरेजी सन १८३४ सालेर २ दिसम्वर मोतावेक वाङ्गला सन

---

१. नारदः—व्यप०। २. सङ्करमात्रादेव—व्यप०।

१२४१ सालेर १८ अग्रहायण मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुतउलियमवेराडिन साहेवेर वैठकेर रोवकारि—

वल्लवीकान्तचौधुरी वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी ओ नवकान्त चौधुरी।

छाएलेर उकिल मुनशी आब्वाछ आलि हाजिर आइल। ३२ टाका दामेर इष्टम्प कागजे छाएलेर छओाल गगरा परगनार तरफ मथुरापुरेर २॥ आडाइ मौजार दखल पाइवार, मोकर्द्दमार मः ३१७ टाकार दाविते खास आपिल मञ्जुरिर प्रार्थनाय उकिल मजकुरार नामेर एक केता ओकालतनामा ओ गौरनारायण-शर्म्मार नामेर एक केता मोक्तारनामा ओ सन हालेर ३० जुलाइ तारिखेर जेला पूरनिया जज साहेवेर एक केता फयछलार नकल ओ सन १८२३ सालेर ६ आपरेल तारिखेर जेला मजकुरेर सदर आमिन आलार एक केता फयछलार नकल ओ सन १८३३ सालेर २२ मार्च्च तारिखेर व्यवस्थार नकल एक केता ओ दोशरा तिन केता व्यवस्थार सहित गतो ५ नवम्वर गुजराइयाछिल, अद्य दृष्टे आइल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे शास्त्रेर प्रकरण ज्ञात हओा उचित वोध हइल। ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ छाएलेर दाखिल करा सन १८३३ सालेर २२ मार्च्च तारिखर नकल व्यवस्था एइ हुकुमे ये व्यवस्था मजकुर दिष्ट करिया लेखेन ये व्यवस्था मजकुर वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे हइयाछे कि ना, यदि ना हइयाथाके, ऐ व्यवस्था मजकुरेर लिखित प्रश्नेर जवाव वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे एइ रोवकारिर प्राप्तेर दिवस हइते एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण—एइ आदालतेर पण्डितेर हाओाला करा जाय इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडिनसाहेवधर्म्माधिकरण-

लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्वरमासीयद्विती-यदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुण-गजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितव्यवस्था वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण जातास्ति। तद्-व्यवस्थोपरिलिखितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशी व्यवस्था वङ्गदेशचलित-शास्त्रबहिर्भूतास्ति इत्यस्यानवगमादिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफिवरवरीमासीयसप्तमदिनस-म्बन्धिशनिवासरे मयेदमुत्तरं दत्तमिति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५५)—रुवकारि मिछिल आदालते देओानि सदर मोकाम कलिकाता वनेसस्त रावरट[1] हालडन राटरि साहेव हाकिम आदालत मजकुरा इं सन १८३५ साल तारिख १९ जानवरि मो० सन ११४१ साल ७ माघ सोमवार—

कमलाकान्तरायेर 'स्त्री' रामदुर्गा ओ सम्भुचन्द्र वनाम गङ्गाचरणसेन।

सायलानेर उकिल मुनशी होसन आलि ओ में मारङ्ग आगत्वरकुलाल साहेव ओ फरिकसानिर उकिल श्रीरामराय ओ तारकचन्द्रराय हाजिर हइल। एइ माहार १४ तारिखेर हुकुमानुसारे साएलानेर उकिल श्रीमतीर पुत्र नृसिंहसेन अन्ध थाकनेर ओजर उहादेर तरफ हइते पूर्व्वे उपस्थित हओनेर विशये एइ आदालतेर सावेक हाकिम मे कटवरट थरनेल सिलि साहे-वेर वैठकेर रुवकारि निसान देओा दृष्टी करा गेल। तत् द्वाराय वोध हइल जे प्रकृत साएलानेर तरफ हइते श्रीमतीर पुत्र अन्ध

---

१. राववट—व्यप०।

थाकनेर ओजर पूःर्व्व उपस्थित हइयाछिल। प्रकाश हइल जे कृष्णकिङ्कररायेर चारि पुत्र। ज्येष्ठ लक्ष्मीकान्तराय, द्वितीय कमलाकान्तराय, तृतीय जगमोहनराय, चतुर्थ सम्भुचन्द्रराय। पितार मरणेर पर चारि पुत्र पितार त्यज्य वस्तुते भोगि ओ अधिकारि छिल ताहादेर मध्ये प्रथम लक्ष्मीकान्तरायेर निःसन्तान मृत्यु हय, परे जगमोहनराय महेशचन्द्रराय नामे एक पुत्र ओ श्रीमती नामे एक कन्या राखिया फौत करे। ओ ऐ महेशचन्द्ररायेर फौतेर पर ताहार भग्नि श्रीमतीर गःर्भ हइते एक अन्ध पुत्र हय, आर सायलानेर तरफ हइते श्रीमतीर पुत्र अन्ध थाकनेर ओजर इहार पूःर्व्व उपस्थित हइयाछिल, तथा च पण्डितेर पर ए विशयेर कोन प्रश्न हय नाइ-जे शास्त्रानुसारे जन्मअन्ध व्यक्ति पैतृक धनाधिकारि हइते पारे कि ना। ए प्रयुक्त ओ जे हेतुक वोध हइल जे एइ आदालतेर पण्डितेर तरफ हइते एइ मकर्द्दमार पूःर्व्व जे व्यवस्था दाखिल हइयाछिल ताहाते एइ प्रश्न करा जाय-जे महेशचन्द्रराय आपन पितृअंशे अंशभोगि थाकिया आपन भग्नि श्रीमती ओ कमलाकान्तराय ओ सम्भुचन्द्रराय पितृःव्यदिगे राखिया निःसन्तान मृत्यु हइयाछे, आर ताहार स्त्री ताहार मृत कायार सहित सति हइयाछे। एमते महेश चन्द्ररायेर त्यज्य वस्तु ताहार भग्नि श्रीमती, जाहार एक्षणे पुत्र नावालग आछे ताहाके अर्शे, कि ताहार पितृःव्य कमलाकान्तराय ओ सम्भुचन्द्ररायके अर्शे। एइ प्रश्नेर उत्तर एइ चुम्बके लेखा जाय जे महेशचन्द्रेर भग्नि श्रीमती ओ ताहार सन्तानके अर्शे, कमलाकान्तराय ओ ओ शम्भुचन्द्ररायपितृःव्यरा अधिकारी हइवेक ना इति। आर ॰ काशीनाथेर स्त्री करुणामयी दिगर आपिलाण्टयान ओ॰ चन्द्रमालार स्वामी जयचन्द्रघोर रेष्पाडण्टेर ३२६ लम्वरेर मकर्द्दमार व्यवस्थाय इहार विपरीत लेखा जाय जे विरोधीय वस्तुर कर्त्तार अर्थात् कीर्त्तिनारायनेर अप्राप्तःव्यवहार पुत्रेर मरणेर

समय यदि ताहार पुत्र ना थाके, तवे ताहार पीतार दौहित्र यदि पितामह वर्त्तमान थाके, तवे पितामह, तद्भावे पितामही, तद्भावे पितृव्य, तद्भावे पितृव्यपुत्र, तद्भावे भ्रातृपौत्रगणके अर्शे। एकारण हुकुम हइल ये एइ रुवकारिर नकल पण्डितके अर्पन करा जाय जे पण्डित वाङ्गलादेशेर चलित शास्त्रानुसारे एइ विशयेर व्यवस्था जे यदि श्रीमतीर गर्भजात सन्तान मातृगर्भ हइते अन्ध ओ चक्षुरहित एवं ए पर्य्यन्त ऐ अन्धावस्थाते थाके, एमते महेशचन्द्रेर त्यज्य धनेर धनाधिकारि ऐ पुत्र हय कि ना ! यदि ना हय, तवे कोन व्यक्ति ताहार अधिकारि हइवेक, ओ इहार जओाव जे एइ मकर्द्दमा, ओ उपरेर लिखित लम्वरेर मकर्द्दमा एक प्रकार ओ ऐक्यभाव तथा च वङ्गदेशेर चलित एकशास्त्रानुजाइ, एकेर व्यवस्था अन्येर विपरीत कि कारण दाखिल हइल; एइ रुवकारिर प्राप्तेर पर पाँच दिवस मध्ये दाखिल करेण; ताहा दाखिल, ओ मोलाहजा हइले जे उचित हय हुकुम सादेर इहवेक इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावरटहालडनराटरीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्द प्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयाङ्केन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयफेवरवरीमासीयरसमितदिनसम्वन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि श्रीमतीगर्भजातः पुत्रो जन्मान्धोऽर्थाद् गर्भत एव चक्षुरहितः एतत्कालपर्य्यन्तमन्धावस्थायामेवास्ति तदा महेशचन्द्रत्यक्तधने स अन्धावस्थायामधिकारी न भवति । एवञ्च सति श्रीमतीपुत्रान्तरस्य महेशचन्द्रत्यक्तधनाधिकारिण उत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं[1] पूर्व्वलिखितैतद्विवादविषयनिविष्टासमद्दत्तव्यवस्थालिखितरीत्या श्रीमत्येवाधिकारिणी भवति । तस्याश्च

१. प्राक्काल० —व्यप० ।

धनाधिकारिपुत्रस्य पुत्राणां वोत्पत्तौ तस्याः पुत्रस्य पुत्राणां वोपरिलिखित-व्यवस्थालिखितरीत्या अधिकारः। महेशचन्द्रत्यक्तधने सम्भावितपुत्रत्वेन पूर्व्वलिखितैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थानुसारेण जाताधिकारायाः श्रीमत्या जीवन्त्या स्वत्वध्वंसस्य तद्गर्भजातपुत्रस्य महेशचन्द्रत्यक्तधनाधिकारिणः स्वत्वोत्पत्तेरेव जनकत्वाद्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादायक्रमसंग्रहदायतत्त्वविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

अनंशौ क्लीबपतितौ जात्यन्धवधिरौ तथा॥—इत्यादि दायभागादि-(पृ० १०१)ग्रन्थधृतमनु(९।२०१)वचनम्॥१॥

पतितस्तत्सुतः क्लीबः पङ्गुरुन्मत्तको जडः।

अन्धोऽचिकित्स्यरोगार्त्तो भर्त्तव्यास्ते निरंशकाः॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥२॥

पूर्व्वलिखितैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थालिखितानि पञ्चप्रमाणानीति॥५॥०॥

एवञ्च काशीनाथदत्तपत्नीकरुणामयीप्रभृत्यर्थिनीनां चन्द्रमालापतिजयचन्द्रघोषप्रत्यर्थिनौरसनगाभ्रगुणमिताङ्काङ्कितविवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थया सहैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थाया विरोधशङ्कापरीहारः। इशवीशब्दप्रतिपाद्येन्दुगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्वरमासीयद्वाविंशतितमदिवसीयश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरम्रलसाहेवाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिकृतोपरिलिखितरसपद्माभ्रगुणमिताङ्काङ्कितविवादसम्बन्धिविचारपत्रतदधोलिखितास्मद्दत्तव्यवस्थाभ्यामेव स्पष्टतम इति ज्ञात्वा पुनर्न लिखित इति निवेदनम्॥०॥०॥०॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेव्रवरीमासीयविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(५६) नं ३५८५ सदर—

रुवकारि आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकात्ता वैएटक श्रीयुत जारर्ज्जइष्टाकोएल साहेब कायेम मोकाम हाकिम। एइ आदालतेर सन १८३५ साल तारिख १८ फिवरेआरि मोतावेक सन १२४१ साल ता० ८ फाल्गुन वुधवार—

कानाइलाल मफलछ — आपीलाएट

गोरा ओ दखुं ओ गयरह — रेष्पाडएटान्

आपीलएटेर उकिलान् मुनशी दादार वक्स ओ सदासुकपण्डित हाजीर आशिलेन। रेष्पाडएटान् एयालासनामा जारि हओोते ओ ताहार रशीद लिखिया देओोते ए पर्य्यन्त खोद किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजीर हइल नाइ। एइ मोकर्द्दमा श्रीयुत तामस केमल रावरटसेन साहेव कायेम मोकाम हाकीमेर सन १८३४ सालेर १६ माह जुलाइ तारिखेर हुकुमानुसारे आमार वैठके रुवकार ओ प्रविनसन कोटेर नथीर सम्वलित आरजी प्रभृति कागजात ३५ लम्वर पर्य्यन्त पडागिया आपीलएटेर उकिलदिगेर सम्मति क्रमे एइ मोकर्द्दमार गतिक एइ प्रकार स्थीर हइल, जे विरोधीय वस्तु जानकीरामेर स्वोपार्जित वटे, ओ जानकीराम ओ शीताराम, दुइ सहोदर भ्राता ओ जानकीरामेर स्त्री वदनेर गर्भजात सन्तराम ओ साधुराम, दुइ सन्तान, ओ ऐ दुइ सन्तान आपन पिता अर्थात् जानकीरामेर सन्मुखे श्रीमत्या गोरा ओ श्रीमत्या दखु दुइ भार्य्या निःसन्तान वर्त्तमाना राखिया परलोक हय। ओ शीतारामेर एक पुत्र अर्थात् कानाइलाल फरियादी ए चेनकार आपीलाएट वर्त्तमान आछे। ओ जानकीराम मजकुर आपन तावत विषयेर तमलिकनामा आपन स्त्री श्रीमती वदनके लिखिया दिवाते श्रीमत्या मजकुरा ऐ प्राप्त वस्तुर उपर आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त भोगवाना थाकिया मृत्यु हइयाछे। ए दयने एइ मोकद्दमा चूडन्त हुकुम देओनेर पूर्व्वे ए विषय ए आदालतेर

पण्डितेर निकट जाना आवश्यक जे श्रीमत्यावदन मजकुरार मृत्युर पर शास्त्र प्रमाण उहार त्याज्यं वस्तुर ओयारिस ओ स्वत्वाधिकारि श्रीमत्या गोरा ओ दुखुं उहार पुत्रवधूगण हइवेक, कि शीतारामेर पुत्र कानाइलाल हइवेक। अतएव हुकुम हइल जे एइ रुवकारिर नकल एइ हुकुमे जे उपरकार लिखित सओयालेर जओव पश्चिम देशीय चलित शास्त्र प्रमाण एइ रुवकारिर नकल पाइवार पर एक दीवसेर मध्ये लिखिया पाठान एइ आदालतेर पण्डितेर निकट देओया जाय इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेव-धर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासी-याष्टेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीया-ङ्केन्दुमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तम्, तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतधनात् श्रीमत्या वदननाम्न्याः पुत्रवध्वोर्यावज्जीवं पतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्या-चरणोपयुक्तधनं विहायावशिष्टधने तत्पतिभ्रातृपुत्रस्याधिकारः—इति पश्चिम-देशचलितमनुमिताद्धरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयेन्दुपञ्चमित-दिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५९)—नं० २७१ सन १८३३ साल—

मा० कलिकातार सदर देओनि आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम व्राडिन साहेवेर वैठकेर सन १८३५ सालेर १७ फिव-

रेल मोतावेक वाङ्गला सन १२४१ सालेर ७ फाल्गुन मङ्गलवार दिवसेर रोवकारि—

विमलामयीदे०या आपिलाण्ट

श्रीमती अन्नपूर्णा ओ दिनाजपुरेर कालकटर साहेव रेष्पाडण्टान् आपोलाण्टेर उकिल मौलवि करम होछेन हाजीर आइल। सन १८३४ सालेर १९ दिजम्वरेर लिखित सदर वोर्डेर साहेवलोकेर एक केता चिठी प्रेरित पर ओ आनार नकल सम्वलित नः प्राप्त ओ अद्य हजुरे दरपेस हइया मोकर्दमार अनेक कागजसकलेर सहित द्रष्टे आइल। स्थित कागजसकल हइते वोध हइतेछे जे गौरीशङ्कररराय ओ शम्भुचन्द्रराय ओ ईशानचन्द्रराय तिन जन सहोदर भ्राता छिलेन। ओ सरकारेर दानानुसारे मोशाहेरा एक २ व्यक्तिर मुवलगे २८३ टाका हि० मोट मुः ८४९ टाका शालीयाना सरकार हइते मोकरर छिल, ओ ए दयने शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरार जन्य विरोध उपस्थित आछे। ए जन्य हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्व शास्त्रेर वेओरा शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरार पक्षे ज्ञात हओन उचित वोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित प्रश्नोत्तर नकल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पाँच दिवसेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय।

प्रश्न :—गौरीशङ्कररराय ओ शम्भुचन्द्रराय ओ ईशानचन्द्रराय तिन सहोदर भ्राता छिलेन। उहारदिगेर मध्ये गौरीशङ्कर आपन पत्नी रुद्राणीके राखिया ओ ईशानचन्द्र आपन स्त्री गौरमनिके राखिया ओ शम्भुचन्द्र आपन वनिता मन्दोदरि ओ आनन्दचन्द्र ओ नारायणचन्द्र ओ रामधन पुत्रगण ओ विमलामयीदे०या ओ अन्नपूर्णादे०या कन्यागण राखिया. ताहार पर रुद्रानी गौरीशङ्करेर स्त्री ओ तत्पश्चात् उक्त आनन्दचन्द्र ओ नारायणचन्द्र निःसन्तान, ओ ताहार पर उक्त मन्दोदरी एक

व्यक्तिर पर अन्य व्यक्तिर मृत्यु हय, ओ एक्षणे उक्त शम्भुचन्द्रेर पुत्र रामधन ओ कन्यागण अन्नपूर्णा अविरा ओ विमलामयीदेव्या जीवद्दशाय आछेन। एजन्य जिज्ञाशा करा जाइतेछे जे उक्त शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरा कि प्रकार उहार जीवित उत्तराधिकारिगणेर मध्ये वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे विभाग हइवेक इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुत-ओलियमवेराडीनसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयाद्रीन्दु१७-मितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयगजेन्दु-१८मितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति शम्भुचन्द्रस्य मासिकं यत्तन्मरणानन्तरं तत्पुत्रैस्त्रिभिरर्थाद् आनन्दचन्द्रनारायणचन्द्ररामधनैरुत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तत्र मासिके यदि आनन्दचन्द्रनारायणचन्द्रयोः पुत्रादिमातृपर्य्यन्तानां मध्ये कश्चिन्नास्ति, तदा शम्भुचन्द्रपुत्रस्य रामधनस्याधिकारः, शम्भुचन्द्रकन्ययोरन्नपूर्णादेवीविमलमयीदेव्योर्य्यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकधर्म्माद्याचरणोपयुक्तस्वस्वपतिपक्षीयधनाभावे पितृत्यक्तमासिकाद्यनुसारेण यावज्जीवं पितृकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने चाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

मृते भर्त्तर्य्यपुत्रायाः पतिपक्षः प्रभुः स्त्रियाः।
विनियोगात्मरक्षासु भरणे च स ईश्वरः॥

परिक्षीणे पतिकुले निर्म्मनुष्ये निराश्रये ।

तत्सपिण्डेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति ।।२।।०।।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयवेदपक्ष २४ मितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे प्रश्नपत्रसहितेयं व्यवस्था मया दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५८)—सओाल वरावर श्रीयुत पण्डित आदालत जेले जालालपुरः

प्रथमतः—

चलित शास्त्र मैथिली ओ दायभाग जातिर प्रति कि देशेर प्रति । यदि जातीर प्रति हय तवे कोन कोन जातीर प्रति मैथिली शास्त्र ओ कोन कोन जातीर प्रति दायभाग शास्त्र; ओ यदि देशेर प्रति हय तवे कोन दशेर प्रति मैथिली शास्त्र, ओ कोन देशेर प्रति दायभाग शास्त्र चलित हइवेक । ओ यदि कोन एक व्यक्ति ये देशे मैथिली शास्त्र चलित सेइ देशी आपन स्थान परित्याग करिया एइ वङ्गदेशे ये दायभाग शास्त्र चलित आछे वसति करिया मृत्यु हइयाछे, ताहार सन्तानादि चतुर्थ पुरुष पर्य्यन्त एइ देशे आछे । ताहारदिगेर मध्ये उत्तराधिकारित्व, ये शास्त्रेर विषय राखे, विवाद उपस्थित हइले, ताहार विचार कोन शास्त्र मते हय, ओ यदि ताहारदिगेर वर्त्तमान सन्तानादिर मध्ये विवाहादि ओ श्राद्धादि क्रिया मैथिली शास्त्र मत चलित थाके, तवे कोन शास्त्र मते, ओ यदि ताहारदिगेर ऐ सकल क्रिया दायभाग सम्मत चलित थाके, तवे ताहारदिगेर विवाहादि वस्तुर विचार कोन शास्त्र मत हइवेक इति—

द्वितीय—

गङ्गा नामे एक अविरा स्त्री। ताहार स्वामीर भ्रातष्पुत्र हेमञ्चलसिंह। ओ ताहार स्वामीर भ्रातष्पौत्र नारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय। इहाते ताहार त्यज्यं धनाधिकारि के हय—दुइ शास्त्रेर मत व्यवस्था प्रथक प्रथक लिखिवेन इति।

तृतीय—

हेमञ्चलसिंहेर एक नावालग पुत्र जञोहेरसिंह नामे आपन विमाता चौराशी नाम, तत् गर्भजातक अविवाहिता एक कन्या ओ वेलकुमारि नामे जञोयार सिंहेर एक सहोदरा भग्नी ओ नारायणसिंह नामे आपन पितार भ्रातष्पुत्र राखिया मृत्यु हय। इहाते जञोहेरसिंहेर तेय्य धनादि मैथलि शास्त्र मते काहाके ओ दायभागशास्त्र मते काहाके वर्त्ते। ओ यदि जञोहेरसिंह नारायणसिंहेर सहित एकान्नभुक्त थाकिया मृत्यु हइयाथाके, किम्बा ऐ नारायणसिंहेर प्रथक अन्नं मृत्यु हइयाथाके, एइ दुइ प्रकारे ऐ दुइ शास्त्र मते जञोहेरसिंहेर धनाधिकारि के हय। एवं आपनाके इहाओ ज्ञातो करा जाइतेछे ये ऐ धनाधि[1] ताहारदिगेर सकलेर पैतृक। इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था हय प्रति छहञोलेर निचे लिखिया ३ तिन दिवसेर मध्ये अथवा इहार पूर्व्वे एइ अदालते पाठाइवेन इति॥

श्रीदुर्गाशरणम्

समुदयप्रश्नेर सप्रमान उत्तर प्रश्नेर नीचे लिखन स्थानाभाव प्रयुक्त पृष्ठे उत्तर लिखितेछि—

प्रथम प्रश्नस्योत्तरम्—

अर्थात्[2] प्रथम सञोलेर उत्तरं लिख्यते। चलित मैथिलि शास्त्र एवं वङ्गदेशीय दायभाग शास्त्र मुख्य देशेर प्रति नहे। पारिभाषिक

---

१. धनादि०—इति साधियान् पाठः। २. अर्थात्—व्यप०।

देशेर प्रति, अर्थात देशस्थ लोकेर प्रति। मुख्य देश इहाके कहे। देशो नदी भूधरः कन्दरादिः। अतएव मुख्य देशेर प्रति नहे। शास्त्र जातिर प्रति वटे। किन्तु वङ्गदेशीय जीमूतवाहन कृत दायभाग शास्त्र वङ्गदेशीय सकलहिन्दुजातिर प्रति। मैथिलि शास्त्र मिताक्षरा मिथिलादेशवासिसकल हिन्दुजातिर प्रति। मिथिलादेशस्थ कोनो व्यक्ति स्वदेश त्याग करिया वङ्गदेशे क्रमे चतुःपुरुष वास करिया मृत्यु हइले, ताहार सन्तानादि यदि मिथिलार शास्त्रानुसारे विवाहादि क्रिया करे, तवे मिताक्षराशास्त्रानुसारे, यदि वङ्गदेशीय शास्त्रानुसारे विवाहादि क्रिया करे, तवे जीमूतवाहन कृत दायभाग शास्त्रानुसारे विरोधि वस्तुर विवाद भञ्जन अर्थात उत्तराधिकारिर निर्णय हइवेक। इहा सर्व्वदेशीय शास्त्रानुसारे यथाशास्त्र व्यवस्था इति—

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपण्डितस्य

द्वितीय प्रश्नस्योत्तरं लिख्यते—

गङ्गानाम्नी एक अविरा स्त्री। ताहार स्वामीर भ्रातुष्पुत्र हेमञ्चलसिंह एवं स्वामिर भ्रातष्पौत्र[1] नारायणसिंहके ओरिश राखिया मृत्यु हइले, ताहार धने अर्थात ताहार दाये ताहार स्वामिर भ्रातष्पुत्र हेमञ्चलसिंह अधिकारि हइवेक। ताहार स्वामिर भ्रातष्पुत्र[2] थाकिते भ्रातष्पौत्र अधिकारि हइवेक ना। इहा वङ्गदेश चलित जीमूतवाहन कृत दायभाग एवं मिथिलादेश प्रचलित मिताक्षरा शास्त्र सम्मत। यथाशास्त्र व्यवस्था उभय देशीय शास्त्र मते एक व्यवस्था प्रयुक्त पृथक लिखिलाम ना इति॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपण्डितस्य

तृतीयप्रश्नस्य उत्तरं लिख्यते—

हेमञ्चलसिंहेर एक नावालग पुत्र जश्योाहेरसिंह आपन विमाता चौराशी नाम्नी एवं तत्गर्भजा एक वैमात्रेया अविवाहिता

१. भ्रातुष्पौत्र—इति साधीयान् पाठः। २. भ्रातुष्पुत्र—इति साधीयान् पाठः।

भगिनी एवं वेलकुमारी नाम्नी एक सहोदरा भगिनी एवं पितार भ्रातस्पुत्र नारायणसिंह–एइ चारिके राखिया कि एकान्ने कि पृथगन्ने थाकिया मृत्यु हइले। ताहार पैतृक धने एवं स्वकृत धने सकल धनेइ अर्थात् ताहार सकल दाये ताहार पितार भ्रातस्पुत्र अर्थात पितामह सन्तान नारायणसिंह अधिकारि हइवेक। ताहार विमाता एवं वैमात्रेया भगिनी एवं सहोदरा भगिनी अधिकारिणी हइवेक ना। किन्तु विमाता चौराशी उभयदेशीय शास्त्र मते ग्रासाच्छादन पाइवेक। इहा एतद्देश प्रचलित जीमूतवाहन कृत दायभाग एवं मिथिलादेश प्रचलित मिताक्षरा-शास्त्र सम्मत। यथाशास्त्र व्यवस्था उभयदेशीय शास्त्रे एक व्यवस्था प्रयुक्त पृथक लिखिलाम ना। विशेष एइ—तत्तद्देशीय दायभाग मते अविवाहिता वैमात्रेया भागिनीर विवाहेर ये धन व्यय ताहा नारायण सिंह जओहेरसिंहेर स्थावरास्थावर वस्तुर अष्टमांशैकांश अर्थात् जओहेरसिंहेर धन अष्ट भाग करिया एक भाग दुइ आना दिवेक इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपण्डितस्य।

अत्र मैथिलशास्त्रमिताक्षरामते[1] *प्रमाणम्—*
पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः।
एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः॥—इत्यादि मिताक्षराधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्।

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति वचनञ्च।

पित्रादिपितामहपर्य्यन्ताभावमुपक्रम्य पितृव्यस्तत्पुत्राश्च क्रमेण धनभाजः। पितामहसन्तानाभावे प्रपितामही प्रपितामहस्तत्पुत्रास्तत्सूनवश्चेत्येवमासप्तमात् समानगोत्राणां सपिण्डानां धनग्रहणं वेदितव्यम्—इति मिताक्षरा (पृ० २२३) लिखनञ्च।

---

१. मैथिलि०—व्यप०।

भगिन्यश्चासंस्कृताः[1] *संस्कर्तव्याः*—इत्यादि मिताक्षरा(पृ० २०८) लिखनम् ।

भ्रातृभगिन्योः समविभागं कृत्वा तयोरेकांशं चतुर्द्धा विभज्य चतुर्थांशस्य एकांशं दत्त्वा शेषं गृह्णीयात्—इति मिताक्षराटीका(या)ञ्च (पृ० २०६) ।

दायभागमते प्रमाणम्—*पत्नी दुहितरश्चैव*—इत्यादि याज्ञवल्क्य-वचनम् ।

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति च वचनम् ।

असंस्कृतास्तु संस्कार्या भ्रातृभिः पूर्व्वसंस्कृतैः—इति याज्ञवल्क्य-वचनम् ।

भगिनीनां संस्कार्यतामाह, नाधिकारिताम्—इत्यादि दायभाग-(पृ०६६)लिखनञ्च ।

पुंधनाधिकारे भगिन्यधिकारस्यालिखनात् नाधिकारः, न दायमर्हति स्त्री—इत्यादि निषेधवचनञ्च ।

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।
नरकं पीडने चास्य तस्माद्यत्नेन तं भरेत् ॥—इति (दायभागग्रन्थधृत)-वचनम् ।

मात्रधिकारे गर्भधारणपोषणहेतुनिर्देशाद्विमातुर्नाधिकारः इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपण्डितस्य

लं० ९३५७

मृत हेमञ्चलसिंहेर स्त्री चौराशी वादी
मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह प्रतिवादी

कलिकातार सदर देमानि आदालतेर पण्डित स्थाने प्रश्नः एइ ये—

मजफरपुरजिलार अन्तःपाति पश्चिमदेशीय छत्रिवंशी हेमञ्चलसिंह चतुर्थ पञ्चम पुरुष जावत एतद्देशनिवासि हइया ए

---

१ ०संस्कृतां—व्यप० ।

देशस्थ पैतृक वित्त ओ अवर्त्तमान स्त्रीर गर्भजात अप्राप्तवयसीय पुत्र जओहेरसिंह ओ अविरा कन्या ओ द्वितीया स्त्री चौराशी वादि ओ ताहार गर्भजात हरकुमारी नामे एक अदत्ता कन्या वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय। ताहार चतुर्थ वर्षान्तरे ऐ जओहरसिंह अप्राप्त वयसे मृत्यु हय। एतादृश स्थले ऐ वादि चौराशी ये एक अदत्ता कन्या राखे उक्त वित्त प्राप्ती हइवेक, कि नारायणसिंह जओहेर सिंहेर पितृव्य पुत्रसत्वे ऐ वित्ताधिकारि हइवेक। यथा शास्त्र व्यवस्था लिखिवेन। इति सन १८३४ साल तारिख ४ जुन, मोतावक सन १२४१ साल तेरिख २३ ज्यैष्ठ ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रव्यवस्थापत्रविचारपत्राणि यानीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयगुणनेत्र-२३--मितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तमथचेशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बर मासीयद्वितीयदिवसीयमत्कृतनिवेदनपत्रानुसारेण प्रभुसमर्पिततन्निवेदनपत्रसहितविचारपत्रं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रवरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तम्, तेन ज्ञातमयं विवादो वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण निष्पन्न (इति)। तत्र कश्चिद्देशविषयकविरोधो वादिप्रतिवादिनोर्म्मध्ये नोपस्थितः। अत एवैतद्विवादविषये वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण व्यवस्थालिखने सन्देहो नास्ति। अतस्तत्पत्रजातमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसार्य्युत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति हेमञ्चलसिंहो यद्यविद्यमानपत्नीगर्भजातमप्राप्तव्यवहारं पुत्रं यमाहिरसिंहनामानमेकामवीरां दुहितरं द्वितीयपत्नीं चौरासीनाम्नीमर्थिनीं तद्‌गर्भजातामेकां हरकुमारीनाम्नीमदत्तां कन्यां विहाय मृतः स्यात्तदा हेमञ्चलसिंहत्यक्तधने तत्पुत्रस्य यमाहिरसिंहस्य अप्राप्तव्यवहारस्याधिकारः। तस्मिन् पुत्रादिपितृप्रपौत्रपर्य्यन्तरहिते[1] मृते सति तत्त्यक्तधने प्रथमतस्तत्पितृदौहित्रस्याधिकारः। किन्तु यमाहिरसिंह-

१. प्रदौत्र०—व्यप०।

पितृदौहित्रस्येदानीमजातत्वेन तदुत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं यमाहिरसिंहवैमात्रेयभगिन्या हरकुमारीनाम्न्या अविवाहिताया एव अधिकारः। तस्याः पुत्रेषु जातेषु तेषामेवाधिकारः। हेमञ्चलसिंहस्य मृतपत्नीगर्भजाताया अवीराया दुहितुर्य्यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तपतिपक्षीयधनाभावे हेमञ्चलसिंहत्यक्तधनान्तर्गततत्कुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने चाधिकारः। अर्थिन्याश्चौरासीनाम्न्या हेमञ्चलसिंहस्य द्वितीयपत्न्या अपि यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने तत्कन्याया हरकुमारीनाम्न्याश्चाप्राप्तव्यवहारकालपर्य्यन्तं तद्धनरक्षणादौ चाधिकारः। सत्स्वेव[1] हेमञ्चलसिंहस्य दौहित्रेषु स्वतो हेमञ्चलसिंहस्य तत्पितृपितामहयोश्च पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातृषु तेषां हेमञ्चलसिंहदौहित्राणामुत्पत्तिसम्भावनायामपि हेमञ्चलसिंहभ्रातृपुत्रस्य अर्थाद् यमाहिरसिंहपितृव्यपुत्रस्य नारायणसिंहस्य नाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्य्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते—इत्यादि मनुवचनम् ॥१॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति च मनुवचनम् ।२।

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः। दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वमङ्गादङ्गात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

---

१. सतस्विद—व्यप०।

अभावे बीजिनो माता तदभावे च पूर्व्वजः –इति व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥६॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥७॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयदशमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रव्यवस्थापत्रमत्कृतनिवेदनपत्रैर्विचारपत्रैश्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

श्रीदुर्गा

(५९)—अशेषगुणालंकृत नानाशास्त्राध्यापक श्रीयुत पीताम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य पण्डित आदालते देओानि जेला विरभूम सदन्तःकरणेषु —

यदि कोन विधवा स्त्रीलोक आपन तिन पुत्रेर सहित एक अन्ने थाकिते दुइ पुत्र मरे, आर ऐ एक पुत्र आपन मातार सहित एक अन्नें थाके, किम्वा प्रथक अन्ने थाके–एमत स्थले ऐ मृत दुइ पुत्रेर धनाधिकारि ताहारदेर माता कि भ्राता के हइवेक ?

पण्डितके उचित ये एइ सओालेर जओाव संस्कृत भाषा शब्दे एइ सओालेर पार्श्वे आपन दस्तखत महुरे लिखिया ५रोज मध्ये हजुरे पाठान इति—

श्रीदुर्गा शरणम्

प्रभुप्रेषितप्रश्नपत्रावलोकनेन यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणात्र प्रत्युत्तरं लिख्यते--

दौहित्रपर्य्यन्तरहितयोर्मृतधनिनोः स्थावरादिधने मातुरेवाधिकारित्वम्—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागादिग्रन्थसम्मतेति ॥

श्रीकाली जयति

श्रीपीताम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्येण ।

भाषा—

दौहित्रपर्य्यन्त विहिन मृत ये दुइ व्यक्ति, ताहारदेर स्थावरादि धने ताहारदेर मातार अधिकार हय, भ्रातार हय ना-इति वङ्गदेश चलित दायभाग प्रभृति ग्रन्थ सम्मता व्यवस्था इति । समाप्तिकेयं[1] व्यवस्थेति ॥

श्रीदुर्गा शरणम्

पितरि मृते ये भ्रातरोऽविभक्तास्तयोः पितृपर्य्यन्तोत्तराधिकारिरहितयोर्म्मध्यमकनिष्ठयोरुपरमे तद्धने माता अधिकारिणी । किन्तु तदानीं पैतृकेश्वरसेवारक्षणार्थमवश्यपोष्यवर्गपोषणार्थञ्च ज्येष्ठपुत्रेण यदृणादिकं कृतं तन्मात्रा पुत्रेण च परिशोध्य यदवशिष्टं धनं पश्चात् ताभ्यां विभजनीयम् । ऋणपरिशोधनानन्तरमेव विभागविधानात्—इति विदुषाम्परामर्शः ।

तस्य भाषा—

पितार मृत्युर पर तिन भ्राता वर्त्तमान, पितृ पर्य्यन्त उत्तराधिकारि रहित मध्यम एवं कनिष्ठेर परलोक हइले पर सेइ दुइ जनेर अंशे मातार रक्षणावेक्षणेर अधिकार हय । किन्तु ताहार पर पैतृकेश्वरसेवा रक्षार निमित्ते एवं अवश्यपोष्य कुटुम्बादि परिपालनेर कारण ये ऋणादि हय ताहा ज्येष्ठ भ्राता ओ माता दुइ जनके परिशोधन करिते हय। परिशोधनेर पर अवशिष्ट

१. समा० स्थेति-देवनागराक्षरेण लिखितम् ।

धन ये थाके, ताहा दुइ जने यथा योग्य वण्टन करिया लइवेक। किन्तु माता दानादि करिते पारेन्ना। स्मृतिशास्त्र मते ऋणादि परिशोधनेर पर विभाग विधान करियाछेन इति—

श्रीगोपाल(ो) जयति—
श्रीहरिरामशर्म्मणाम्।

श्रीनन्दगोपालः शरणम्—
श्रीहरगोविन्दन्यायालङ्कारस्य।

श्रीराम : शरणम्—
श्रीगुरुचरणशर्म्मणाम्।

श्रीराम : शरणम्—
श्रीत्रिलोचनशर्म्मणाम्।

श्रीराम : शरणम्—
श्रीकालीप्रसादशर्म्मणाम्।

श्रीराम : शरणम्—
श्रीरामधनशर्म्मणाम्।

———

लं० २४ शराशरि आपिल सन १८३१ मच्छिया—

रोवकारि आदालते देओयानि जेला विरभुम मेंहार दुइक पाटल साहेव एकटिन जज सन १८३४ मछिहा तारिख २६ सेतम्वर मोतावक सन १२४१ साल तारिख ११ आश्विन।

विलाशमनिदेव्या केलेमदार—मथुरानाथसिंह मोताओर—

एइ मकद्दमा शावेक जजसाहेवेर हुकुम अनुसारे एइ आदालतेर पण्डित पीताम्वरतर्कवागोश ये व्यवस्था दियाछेन प्रतिवादि मजकुर ताहाते एइ ओजारे राखे ये ऐ व्यवस्था शास्त्र मत नहे। शास्त्रेर अतिक्रम दोषरा पण्डितवर्गेर व्यवस्था, जाहा आमि लइयाछि, ताहा दोरस्त आछे। ताहाते मताओर मजकुर कएक जन पण्डितेर दस्तखति एक खान व्यवस्था दरपेष करिलेक। इहाते मोताओर मजकुरेर ओजोर निवारनेर निमित्त आर एइ दुइ व्यवस्थार दरस्ति नदरोस्ति जानिवार निमित्त सदर देओयानिर पण्डितवर्गेर स्थाने सत्य व्यवस्था तलव करोन आविश्यक हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ आदालतेर पण्डित पीताम्वरतर्कवागीशेर व्यवस्था आर मोतओर मजकुरेर दाखिल करा व्यवस्था एइ रोवकारिर नकलेर सम्वलित आर एइ रकम इंरोज

चीटी सदर देओयानिर आदालतेर हाकीमानेर हुजुरे पाठान जाय ये हाकिमान एइ पाठान दुइ व्यवस्था सदर पण्डितेर आगे एइ निमित्तक जानिवार अनुमति ये एइ दुइ व्यवस्थार मध्ये कोन सत्य ओ शास्त्र अनुसार, आर इहार एक कोन खेलाफ शास्त्र हय पाठाइया एवं पण्डितदिगेर स्थान हइते इहार सत्य व्यवस्था तलब करिया परे पण्डितमहाशयेरदिगेर सत्य व्यवस्था ओफे इफि, एइ पौछिले ताहा एइ आदालते पाठाइवेन इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरण-नियुक्तपण्डितसम्बन्धितद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतप्रश्नपत्रं व्यवस्थापत्रद्वयञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दु १८३४ मिताब्दीयदिशम्बरमासीय-प्रथमदिनसम्बन्धि चन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-नुसारेणोत्तरं लिख्यते—

वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतप्रश्नश्चाय-मेव। यदि काचिद् विधवा स्त्री स्वकीयैस्त्रिभिः पुत्रैः सहैकान्ने स्थिता, तदानीमेव द्वौ पुत्रौ मृतौ स्यातामेकः पुत्रः स्वमात्रा सहैकान्ने पृथगन्ने वा स्थितस्तदा मृतयोर्द्वयोः पुत्रयोर्द्धनाधिकारिणी माता भवति, किंवा[1] भ्राता भवतीति। तत्र तद्धर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन माता धनाधिकारिणी भवति, भ्राता न भवतीत्युत्तरं लिखितं तच्छास्त्रानुसारेण शुद्धमस्ति। अन्यैरनियुक्तपण्डितैश्च माता धनाधिकारिणी भवतीत्येवोत्तरं लिखितम्। अतएवैतद्विषये द्वयोर्व्यवस्थयोरैक्यमेवेति तद्विषये विचारस्यावश्यकता नास्ति, द्वयोरेव व्यवस्थयोरेतद्विषये वङ्गदेशचलितशास्त्रीयत्वात्। किन्त्व-नियुक्तैरन्यैः पण्डितैः स्वकीयव्यवस्थायामित्येवाधिकं प्रभुकृतप्रश्नात् लिखितम्। किन्तु तदानीं पैतृकेश्वरसेवारक्षणार्थमवश्यपोष्यवर्गपोषणार्थं च ज्येष्ठपुत्रेण यदृणादिकं कृतं तन्मात्रा पुत्रेण च परिशोध्य यदवशिष्टं धनं पश्चात्ताभ्यां विभजनीयमृणपरिशोधनानन्तरमेव विभागविधानादिति

१. किम्वा—व्यप०।

विदुषां परामर्श इति। तत्रच प्रभुक्तप्रश्नाशयत्रहिभूर्ततत्वेन विचारानर्हत्व-मेवेति। विचारार्हत्वेऽपि वा दायभागादिग्रन्थे चायमेव विचारस्तद्विषये कृतः। पूर्व्वस्वामिकृतैतादृशनैयायिकमृणमुत्तराधिकारिभिः स्वस्वोपयुक्तांशानुसारेणावश्यमेव परिशोध्यम्। तत्रापि विभागकर्त्तृभिरुत्तराधिकारिभिस्तादृशऋणपरिशोधनं विना विभागो न कर्त्तव्य इति न नियमः। किन्तु विभागकर्त्तृणां धनिकस्य चेच्छा चेत्तदा ऋणपरिशोधनानन्तरमेव विभागः। तेषामिच्छा चेद्विभागानन्तरमेव ऋणपरिशोधनं भवितुं शक्नोतीति॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः——इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥१॥

यच्छिष्टं पितृदायेभ्यो दत्त्वर्णं पैतृकं ततः।

भ्रातृभिस्तद्विभक्तव्यमृणी न स्याद् यथा पिता॥ इदं नारदवचनम् *पित्र्यर्णशोधनावश्यम्भावार्थं न विभागकालार्थम्।* अस्माच्च नारदवचना-*दयमर्थः सिद्ध्यति—यद् विभागकर्त्तृभिरुत्तमर्णानुमत्यैव पित्राद्यृणं विभजनीयं परिशोध्यं*[१] *वा*——इति दायभाग(पृ० २५) ग्रन्थलिखनञ्चेति॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां व्यवस्थापत्राभ्याञ्च सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(६०) श्रीसुब्रह्मण्यगुरुःशरणम्

चतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयसेप्तम्बरमासीयपञ्चदशदिवसे प्रत्यर्थि-

१. परिशोध्य वेति—व्यप०।

न्योर्विवादविषये प्रधानसदनमीनाख्यधर्म्माधिकारिप्रेषितप्रश्नसंवलितप्रतिरूपकपत्रमवलोक्य[1] यादृशश्चोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते--

मृतशटकोपदासत्यक्तधनप्राप्त्यर्थं विवदमानयोः अमुकदासाख्यार्थ्यमुकप्रत्यर्थिन्योर्म्मध्ये[2] यद्यपि अमुकाख्या शटकोपदासकन्या, तथाप्येतत्प्रतिरूपकपत्रलिखनानुसारेण सा पतिपुत्रविहीना[3] विधवेति[4] प्रतिभातीति कृत्वैतादृशमृतशटकोपदासत्यक्तधने[5] तद्धर्म्मभ्रात्रमुकदासस्याधिकारो न तु अमुकाख्यविधवायाः[6]। वैष्णवानां मध्ये केचन वानप्रस्थाः, केचन ब्रह्मचारिणो भवन्तीति कृत्वैतादृशमृतशटकोपदासाख्यः स योगी चेदपि[7] वानप्रस्थान्तर्भूत एवेति कृत्वा तत्त्यक्तधनं तद्धर्म्मभ्रात्रमुकदास एव प्राप्तुमर्हति, न तु अमुकाख्यविधवा—इति[8] शास्त्रसम्मता व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

वानप्रस्थयतिब्रह्मचारिणां धनहारिणः।

क्रमेणाचार्य्यसच्छिष्यधर्म्मभ्रात्रेकतीर्थिनः॥—इति मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३७)वचनम् ॥१॥

एवं वानप्रस्थधनं धर्म्मभ्रातृत्वेनानुमतोऽपरो वानप्रस्थ एकतीर्थनिवासी एकाश्रमनिवासी[10] वा गृह्णीयाद्—इति दायभाग(पृ० २१७)लिखनञ्चेति ॥२॥०॥

श्रीसुब्रह्मण्यगुरुः शरणम्

श्रीसखारामशास्त्रिणः

मोहर-पण्डित आदालत देमानि—

मुकाबिले बालाजीपंत मोहरीर मरमहाष्टनवीस ॥

---

१. धर्म्माधिकारीप्रेशितप्रतीरूप०—व्यप०।

२. वीवदमानयो अमुकदासाख्यार्थीअमुकप्रत्यर्थिन्यो०—व्यप०।

३. पती०—व्यप०। ४. वीधवेत्ति—व्यप०। ५. कृत्ने०—व्यप०।

६. वीध०—व्यप०। ७. संयोगिश्चेदपी—व्यप०। ८. वीधवेती—व्यप०।

९. मीता०—व्यप०। १०. ०नीवासी—एकाश्रमनीवासी—व्यप०।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रञ्च यदीश्वरीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दु १८३४ मिताब्दीयदीसम्बरमासीयमुनीन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितव्यवस्था धर्म्मशास्त्रसम्मता न भवति, कलौ वानप्रस्थाश्रमस्य निषेधादिति ।

ईशवीशब्दप्रविाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रव्यवस्थापत्राभ्यां सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६१) श्रीहरिःशरणम्

महामहिमश्रीयुतधर्म्माधिकरणाध्यक्षजजसाहेबमहाशयसमीपेषु उपरिलिखितप्रश्नपत्रस्योत्तरं लिख्यते—

अपुत्रस्य मृतजयकान्तरायस्य समस्तधने पञ्चमपुरुषीयज्ञातिसकुल्यदयानाथरायरामनाथरायमातृष्वस्रीयमथुरानाथघोषाणां[१] मध्ये धनिदेयमातामहपिण्डदातृत्वात् मातृष्वस्रीयमथुरानाथस्याधिकारो भवति—इति वङ्गदेशीयप्रचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थविदां विदां सम्मता व्यवस्था साधीयसीति ॥

अत्र प्रमाणानि—

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।
यो ह्यासन्नतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत् ॥१॥
अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् ।
अत ऊर्द्ध्वं सकुल्यः स्यादाचार्यः शिष्य एव वा ॥२॥

---

१. पुरुषीयज्ञातीसकुल्यदयानाथरायरामनाथरायमातृस्वस्रीयमथुरानाथघोषानां—व्य५० ।

त्रयाणामुदकं कार्य्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते ।
चतुर्थः सम्प्रदातैषां पञ्चमो नोपपद्यते ॥३॥

सपिण्डाभावे सकुल्यः—इति वृहस्पतिमनुबौधायनवचनानि ॥

तस्मात् तद्भोग्यपिण्डदातुरभावे तद्देयपिण्डदातुर्मातुलादेरधिकारो न्याय्य एव––इति दा० भा०(पृ० २१०)। एतेन वृद्धप्रपितामहात् प्रभृतयः पूर्व्वपुरुषा प्रतिनप्तुः प्रभृतयोऽधस्तनास्त्रयः[1] पुरुषाः एकपिण्ड-भोक्तृत्वाभावाद् विभक्तदायादाः सकुल्या इति आचक्ष्यते दा० भा० (पृ० ११)। तस्माद् यो यस्तत्कुलोत्पन्नोऽतद्गोत्रोऽपि[2] स्वदौहित्रपितृ-दौहित्रादिः अतत्कुलोत्पन्नो वा मातुलादिर्धनिनो मृतस्य मातृकुलगत-त्रैपुरुषिकपिण्डदातृतया एकपिण्डसम्बन्धेन सपिण्डस्तस्य[3] तस्याप्यधि-कारार्थं त्रयाणामितिवचनम् । आनन्तर्य्येण च विशेषार्थम् अनन्तर इति वचनं वर्णनीयम् । तेन मृतभोग्यमृतदेयपित्रादित्रयपिण्डदातुः पितृदौ-हित्रादेरभावे मृतदेयमातामहादिपिण्डदातृणां मातुलादीनामानन्तर्य्यक्रमे-णाधिकारिक्रमो बोद्धव्यः। एतत्पर्यन्ताभावे सकुल्यः––इति दायभाग (पृ० २१२।२१३)लिखनानि ।

मृतभोग्यपिण्डदात्रभावे बन्धुरिति मातामहमातुलादिः—इति दाय-तत्त्व(पृ० १६६)लिखनानि ।

ततः पितामहभ्रातृदौहित्रोऽधिकारी धनिभोग्यप्रपितामहपिण्डदातृ-त्वात् । तदभावे मातामहः तदभावे मातुलः तदभावे मातुलपुत्रः तद-भावे मातुलपौत्रः तथा तदभावे मातामहदौहित्रोऽधिकारी—इति दाय-क्रमसंग्रह(पृ० ६)लिखनानि च ।

दौहित्रान्तप्रपितामहसन्तानाभावे[4] मृतदेयमातामहादिपिण्डभोक्तृ-णां तद्दातृणां चासत्तिक्रमेण मातामहमातुलतत्पुत्रतत्पौत्रप्रमातामह-तत्पुत्रपौत्राणां पूर्व्वपूर्व्वाभावे[5] परपरोऽधिकारी । एवं तेषां दौहित्राणामपि

१. प्रभृत्यधस्तनाः—व्यप०। २ तदंगोत्रोपि—व्यप० ।
३. सापिण्ड—व्यप० । ४. दौहित्रात्तु प्र० –व्यप० ।
५. पुर्व्वापूर्व्वाभावे—व्यप० ।

मातामहवत् पितृतत्पितृपिण्डदानामधिकारः—इति विवादभङ्गार्णव (३६३ क) लिखनानि च इति।

शकाब्दाः १७५६ इं० १८३४ साल १८ जुन।

श्रीलक्ष्मीनारायणन्यायालङ्कारस्य सम्मता श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितस्य

———

नं० २११ इ० सन १८३४ साल—

रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता श्रीयुत मेष्टर हेनरि सिकिसपीएर साहेवेर वैठके। तारिख ३ मार्च्च इ० १८३५ साल मोतावके २१ फाल्गुन सन १२४१ साल वाङ्गला दिवस मङ्गलवार—

रामनाथराय ओ गयरह — आपीलाण्टगन
मथुरानाथ ओरफे श्रीकान्तराय — रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टगणेर उकिल मेष्टर निलवेञ्चमेन एडमेनष्टीन वेलि ओ रेष्पाडण्डेर उकिल मेष्टर जीमिष कोलवरुक सदरलेण्ड साहेव हाजीर आइल। इतः पूर्व्वं गतो सनेर २३ शेतम्वर तारिखे आपीलाण्टगणेर सदर आपीलेर छओयाल ओ तत्संमिभ्यारि कागजात अनुवोधन अनुसारे उक्त तारिखेर रोवकारिर लिखित प्रमाण एइ मोकर्द्दमा लम्बरे दाखिल हओयार हुकुम हय। एवं अपीलाण्टगण जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था दाखिल नाकरण प्रयुक्त एइ मोकर्द्दमार कागजात तलव हइयाछिल। तत्परे आपीलाण्टगणेर मध्ये रामनाथराय आपीलाण्टेर दरखास्त उहार पूर्व्वेर मोकरर करा उकिलगणेर परिवर्त्ते हालेर उकिल निलवेञ्चमेन एडमेनष्टीन वेलि साहेवेर नामे ओकालतनामा दाखिल करण विषये दाखिल हओया विधाय गतो सनेर १८ ओ २२ दिजम्वर तारिखे उपस्थित हइया मिछिलेर समिभ्यार

राखनेर हुकुम हय। जेला पुरनियार जज साहेवेर रिटरण ओ १ दिजम्वर मजकुरेर लिखित तथाकार रोवकारि सम्वलित पौहुच्छान मते अद्य आपीलाण्टगणेर सदर आपीलेर छओयाल ओ कागजात सम्वलित आमार वैठके दरपेस हइया अनुवोधने आइल। एइ मोकद्दमार विषये अन्य २ तदन्तेर पूर्व्वे एइ विषय वोध करा आविश्यक ये जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था जाहार दृष्टे जेलार जजसाहेव एइ मोकद्दमार इनफछालेर हुकुम दियाछेन यथार्थं ओ सत्व वटे कि ना—ए प्रयुक्त उक्त विषयेर वोध जन्य हुकुम हइल ये जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये पण्डित मजकुर उक्त विषयेर जओयाव दुइ सप्ताह मध्ये दाखिल करेण। ताहा पौहुछनेर पर उचित ये हुकुम ताहा छादेर हइवेक इति ॥–

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिस्पीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयतृतीयदिवसीयवि-चारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रञ्च यत्तदब्दीयतन्मा-सीयाष्टेन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितव्यवस्था वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण जातास्तीति।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयतृतीयदिनसम्ब-न्धिशुक्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रव्यवस्थापत्राभ्यां सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

------

(६२)—महामहिम श्रीयुत खोदावन्दान् न्यामत वरावरेषु—

व्यवस्थासकलेर तरजमा पारशी एवारते' ओ भाषाय तैयार हइया हजुरे दाखिल हइतेछे। ए प्रकार दस्तुर ए आदालते आछे। किन्तु सम्प्रति केह पारशीनवीश मुनशी आमार काछे नाइ, ये जाहार द्वाराय व्यवस्थासकल पारशी तरजमा कराइया हजुरे दाखिल करि, ओ इहार पूर्व्वे ए विषयेर वारम्वार हजुरे निवेदन कारियाछि। किन्तु ए कर्म्मे केह मुनशी नियुक्त हये नाइ। अतएव निवेदन करितेछि ये कोन एक जन मुनशीके एमत हुकुम हय व्यवस्थासकल तरजमा करेण, किम्वा यदि वाङ्गला एवारते ओ भाषाय व्यवस्थासकल तरजमा करिया दाखिल करिते हुकुम हय, तवे प्रस्तुत मते वाङ्गला भाषाय ओ एवारते' एक प्रकार तरजमा हइते पारे। ओ दुइ किता व्यवस्थार तरजमा वाङ्गला भाषाय ओ एवारते आमार काछे प्रस्तुत आछे। किन्तु हजुरेर हुकुम व्यतिरेके दाखिल करिते पारि ना। अतएव आरज करिलाम, जेमत हुकुम हय, खोदावन्दान मालिक, इहा आरज करिलाम इति। तारिख २३ आपरेल सन् १८३५ साल ईशवी।

प्रतिपाल्यतम श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य
निवेदनमेतदिति

---

(६३)—सओाल—

धनि विजि पुरूष काशीरामदासेर, कालीचरण ओ कीर्त्ति-नारायण ओ रघुनाथ ओ कान्तनारायण, चारि पुत्र वर्त्तमाने मृत्यु हय। तत् पर कालीचरणेर हरिनारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द तिन पुत्र ओ तिन सहोदर वर्त्तमाने मृत्यु हय। तदनन्तर कान्तनारायण अविवाहित समय ओ कीर्त्तिनारायणेर विवा-

१. एरारते—व्यप०।

हेर पर निःसन्तति ऐ रघुनाथ भ्राता ओ कालीचरणेर पुत्र हरिनारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द भ्रातष्पुत्र वर्त्तमाने मृत्यु हय। एवं कीर्त्तिनारायणेर स्त्रीरह मृत्यु हय। ओ पर ऐ रघुनाथ हरिनारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द आपन भ्रातष्पुत्र सहित कीर्तिनारायण ओ कान्तनारायणेर पैतृक ओ सकृत धने आपन निज अंश सहित अविभक्त क्रमे भोग करिया श्रीमती भैरवीदास्या नामक एक अदत्वा कन्या राखिया मृत्यु हन। से मते निवेदन कीर्तिनारायण ओ कान्तनारायण रघुनाथेर सहोदर ओ रामनारायण इत्यादिर खुल्लता छिलेन, भ्राता ओ भ्रातष्पुत्र वर्त्तमाने निःसन्तान मरण हओते रघुनाथ मजकुरेर कि पर्य्यन्त अंश पहुछिया हरिनारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्देर सहित भैरवीदास्यार कि प्रकारे कि पर्य्यन्त अंशताहार यथाशास्त्र व्यवस्था चाहि इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदोशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयज्ञानवरीमासीयखगुणमितदिनसम्बन्धिभृगुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति कान्तनारायणस्याकृतोद्वाहस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य माता यदि तन्मरणसमये विद्यमाना स्यात्, तदा तत्त्यक्तसमुदायधने तन्मातुरेवाधिकारः, तस्याञ्च मृतायां रघुनाथाख्यस्तत्सहोदरभ्राता विद्यमानश्चेत्तदा तत्त्यक्तसमुदायधने रघुनाथाख्यस्य तद्भ्रातुरेवाधिकारः। कीर्त्तिनारायणस्यापि निःसन्तानस्य मृतस्य पत्नी यदि विद्यमानायां कीर्त्तिनारायणस्य मातरि मृता स्यात्तदा कीर्त्तिनारायणत्यक्ततत्पत्नीसंक्रान्तसमुदायधने तन्मातुरेवाधिकारः। तस्याञ्च मृतायां यदि रघुनाथाख्यस्तद्भ्राता विद्यमान आसीत्तदा तस्याधिकारः। एवञ्च सत्येतत्पक्षे रघुनाथत्यक्तसमुदायधनं यत्तस्य स्वांशरूपं यच्च वा तेनोपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिकारित्वेन भ्रातृद्वयत्यक्तधनं प्राप्तम्, तस्मिन् समुदायधने तस्य पुत्रमारभ्य

पत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्यादत्तकन्याया भैरवीदास्या एवाधिकारः। हरिनारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानां तु त्रयाणां सोदरभ्रातॄणां स्वपितृत्यक्तसमुदायधने समानाधिकारः। यदि चोपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तपुत्रद्वयधना माता रघुनाथस्य मरणोत्तरमपि विद्यमाना आसीत्, तदा तस्या मातुर्म्मरणोत्तरं तत्संक्रान्तपुत्रद्वयधने मूलधनिनोः कान्तनारायणकीर्त्तिनारायणयोर्य्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेवाधिकारः। तत्र च तयोरुत्तराधिकारिणां मध्ये तयोः पुत्रमारभ्य भ्रातृपर्य्यन्ताभावेन तयोर्भ्रातृपुत्राणामर्थाद्धरिनारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानामेव समानाधिकारः। एवञ्च सत्येतत्पक्षे रघुनाथकन्याया भैरवीदास्याः केवलं रघुनाथयोग्यांशे रघुनाथत्यक्तधने अधिकारः। हरिनारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानान्तु स्वपितृयोग्यांशे कान्तनारायणकीर्त्तिनारायणयोः स्वपितृव्ययोर्योग्यांशे च समानाधिकारः। अत्र प्रश्नपत्रे कान्तनारायणकीर्त्तिनारायणयोर्म्माता तयोर्म्मरणसमये रघुनाथस्य मरणसमये वा विद्यमाना आसीन्न वेति लिखितं नास्ति। अतएव प्रकारद्वयेन व्यवस्था लिखितेति निवेदनम्----इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः––इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी रिक्थं गृह्णीयात्, तदभावे चोढा––इति दायभागादिग्रन्थधृतपराशरवचनम् ॥२॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥––इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥३॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो वोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयवसुपक्षमितदिन-

सम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

व्यवस्थार तरजमा वाङ्गला भाषाय—

हुजुरेर सोपरद्द करा रोवकारि ओ सओयाल जाहा इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर जानवरि मासेर ३० तारिखे दिवस शुक्रवारे आमि पाइया छिलाम ताहार विवेचना करिया ये मत वोध हइलो तदनुसारे जवाव लिखितेछि इति—

सओयालेर लिखित वृत्तान्तक्रमे अविवाहित कान्तनारायणेर पुत्र अवधि पितृपर्य्यन्त रहित हइया मृत्यु हइले ताहार मरण समये यदि ताहार माता वर्त्तमाना छिल, तवे ताहार त्यक्त सकल वस्तुते ताहार मातार अधिकार हइयाछिलो। आर ऐ मातार मृत्यु हइले ताहार मरण समये रघुनाथनामे कान्तनारायणेर सहोदर भ्राता यदि विद्यमान छिल, तवे ऐ मातृसंक्रान्त कान्तनारायणेर त्यक्त धने ताहार भ्राता रघुनाथेर अधिकार हइया छिलो। एवं कीर्तिनारायण निःसन्तान मृत्यु हइले ताहार पत्नीर यदि उहार माता वर्त्तमाना थाकिते मृत्यु हइया थाके तवे कीर्तिनारायणेर त्यक्त ताहार पत्नीसंक्रान्त समुदाय धने कीर्तिनारायणेर मातार अधिकार हइयाछिलो। ओ कीर्तिनारायणेर मातार मरण समये यदि रघुनाथ नामे कीर्त्तिनारायणेर भ्राता वर्त्तमाने छिल, तवे ऐ वस्तुते ताहार अधिकार हइयाछिलो। ए प्रकार हइले रघुनाथेर त्यक्त समुदाय धन, याहा ताहार अंश योग्य छिल, ओ ऐ व्यक्ति उपरेर लिखित प्रकारे दुइ भ्रातार त्यक्त धन उत्तराधिकारित्व प्रकारे पाइयाछिल,

ताहाते ताहार पुत्र-अवधि पत्नी पर्य्यन्त केह नाथाका प्रयुक्त ताहार अदत्ता कन्या भैरवीदासीर अधिकार हइवेक, ओ हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायण एइ तिन जनेर केवल आपन पितृ योग्य अंशे समान अधिकार हइवेक। यदि स्यात् कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायणेर माता ऐ दुइ पुत्रेर धन पाइया रघुनाथेर मृत्युर पर वर्त्तमाना छिल, एमत हय तवे ऐ माता मरिले ताहाते संक्रान्त ये ऐ दुइ पुत्रेर धन ताहाते कान्तनारायणेर ओ कीर्त्तिनारायणेर ये ओयारिश ताहारदिगेर अधिकार हय। ताहाते ऐ दुइ जनेर ओयारिशेर मध्ये पुत्र अवधि भ्रातृ पर्य्यन्त ना थाकाते भ्रातृपुत्र ये हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायण तिन जन ताहारदिगेर समान अधिकार हइवेक। ए प्रकार हइले ए पक्षेर रघुनाथेर कन्या ये भैरवीदासी ताहार केवल रघुनाथेर हिस्याते अधिकार हय, ओ हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायणेर आपन पितार हिस्याते, ओ कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायण ये दुइ पितृव्य ताहारदिगेर हिस्यातेओ समान अधिकार हइवेक इति। ओ सओयालेते कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायणेर माता ऐ दुइ पुत्रेर मृत्यु समये ओ रघुनाथेर मृत्यु समये वर्त्तमाना छिल कि ना—इहा किछु लेखा नाहि। ए जन्ये दुइ प्रकार लिखागेल इति।

ए व्यवस्था वाङ्गलार चलित मनु ओ दायभाग ओ ताहार टीका ओ दायतत्व ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादार्णवसेतु ओ विवादभङ्गार्णव-प्रभृति ग्रन्थानुसारिणीति ।।—

इहार प्रथम प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत याज्ञवल्क्य मुनिवचन। ताहार भाषा—पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र-रहित मृत व्यक्तिर धन प्रथमे पत्नी पाय, पत्नी ना थाकिले कन्या पाय, कन्या ना थाकिले दौहित्र पाय, दौहित्र ना थाकिले पिता पान, पिता ना थाकिले माता पान, माता ना थाकिले भ्राता पान, भ्राता ना थाकिले भ्रातुष्पुत्र प्रभृति पाय इति ॥१॥

द्वितीय प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत पराशरमुनिर वचन। ताहार भाषा—पुत्र पौत्र प्रपौत्र पत्नी पर्य्यन्त-रहित मृत व्यक्तिर धन प्रथमे अविवाहिता कन्या पाय, अविवाहिता कन्या ना थाकिले विवाहिता कन्या पाय इति ॥२॥

तृतीय प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत कात्यायनमुनिर वचन। ताहार भाषा—पुत्र पौत्र प्रपौत्र ना थाकिले पत्नी यदि भर्त्तार शय्या प्रतिपालन करेन अर्थात् व्यभिचारिणी ना हयेन तवे पतित्यक्त धन यावज्जीवन भोग करिवेन, अयथा व्यय करिवेन ना। पत्नी मरिले ऐ धन पतिर अन्य ये ओयारिष थाकिवेक ताहारा पाइवेक इति ॥३॥

चतुर्थ प्रमाण दायभागग्रन्थेर लिखित। ताहार भाषा—पत्नी पतिर त्यक्त धन यावज्जीवन अयथा व्यय ना करिया भोग करिवेन। ताहार पर पतिर अन्य ओयारिष पाइवेक। एइ नियम। याहा तृतीय प्रमाणे कात्यायनमुनिर वचने लिखा गेल ताहा केवल पत्नीर प्रति नहे, किन्तु स्त्रीमात्रेर प्रति। अर्थात् स्त्रीलोक येखाने अधिकारिणी हइवेक से सकल स्थाने ऐ नियम जाना जाइवेक इति ॥४॥

इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर आपरेल मासेर २८ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि हजुरेर सोपरद्द करा रोवकारि ओ सओयालेर सहित एइ व्यवस्था दाखिल करिलाम इति ॥—

———

(६४) सओाल—

यद्यपि कोनो अवीरा स्त्रीलोक आपन पतियोग्य अंश स्थावर अस्थावर वस्तुते अप्राप्त ओ योत्राहिन थाकिया तद्वस्तुप्राप्त्यर्थे आपन स्वामीर वहु ज्ञाति थाकितेओ जनेक ज्ञातिके एमत एकरार लिखिया दिया थाके ये ऐ जन नालिषेर द्वारा किम्वा अन्य कोनो रूपे ऐ अप्राप्त वस्तुते प्राप्त कराइते पारे, तवे ऐ वस्तुर अर्द्धेक अथवा ताहार किञ्चित् ऐ प्राप्तकारक जन-

आपन श्रम ओ खरचार्थे पाइवेक, एमत अवीरा स्त्रीलोकेर एरुप एकरार शास्त्र मत ग्राह्य कि ना, एवं अवीरा स्त्रीलोक आपन पति योग्य अंश वस्तु एरुप एकरारेर द्वारा अन्यके दिवार-क्षमता राखे कि ना। यदि राखे तवे ताहार वर्त्तमान पर्य्यन्त कि ताहार अवर्त्तमानेओ इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रादित्रयञ्च यदीशवीशव्दप्रतिपाद्येषुगुण-गजेन्दुमिताव्दीयफेवरवरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि काचिदवीरा स्त्री स्वपतियोग्यांशस्थावरास्थावरात्मकवस्तुनि धन-हीनतया आयत्तत्वसम्पादनाशक्ता सती तद्वस्तुप्राप्त्यर्थं स्वपतिज्ञात्यन्तर्गता-यैकस्मै कस्मैचिज् ज्ञातये एतन्नियमेन संवित्पत्रं लिखित्वा दत्तवती स्यात्तथा हि भवान् धर्म्माधिकरणाभियोगद्वारेण प्रकारान्तरेण वोपरिलिखिताप्राप्तवस्तुनः प्राप्तिं कारयितुं शक्नोति चेत्तदोपरिलिखितविवादास्पदीभूतस्थावरास्थावर-स्यार्द्धं यत्किञ्चिद्वा स्वीयपरिश्रमस्य व्ययस्य वा विनिमये प्राप्स्यति इति। तत्र यदि संवित्पत्रसम्प्रदानभूतज्ञातिविशेषेण धर्म्माधिकरणाभियोगद्वारेण प्रकारान्तरेण वा तादृशाप्राप्तवस्तुनः प्राप्तिं तस्याः कारितवान् स्यात् तदैता-दृश्या अवीरायाः स्त्रियास्तादृशनियमेन संवित्पत्रं ग्राह्यं भवितुमर्हति, नो चेन्न भवति। एवमवीरा स्त्री स्वपतियोग्यांशवस्तुन एतादृशसंवित्पत्रद्वारा अन्यस्मै दानक्षमतामप्युपरिलिखिततादृशनियमपूर्त्तौ रक्षति, नो चेन्न रक्षति। रक्षणपक्षे तस्या अवीराया मरणानन्तरमपि तद्रक्षणस्य समान-कार्य्यकारित्वाद्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादायतत्त्वदायक्रम-संग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्

अत एव वर्त्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम्। तत्राप्यशक्तौ विक्रय-णमपि—इति दायभागग्रन्थलिखितम् ॥१॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनञ्चेति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयवसुपक्षदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रतदतिरिक्तविचारपत्रादित्रयसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार तरजमा वाङ्गला भाषाय—

हजुरेर सोपरद्द करा सओयाल ओ ताहार सेओयाय रोवकारि प्रभृति तिन केता कागच याहा इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर फेवरवरी मासेर ३ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि पाइयाछिलाम ताहा विवेचना करिया येमत वोध हइलो तदनुसारे जवाव लिखितेछि इति—

यदि कोन अवीरा स्त्रीलोक आपन पतिर योग्यांश स्थावरास्थावर वस्तु ताहाते आपन अर्थ सामर्थ्य ना थाकाते दखल करिते अक्षम हइया ऐ वस्तु दखल पाइवार कारण आपन स्वामीर ज्ञातिर मध्ये एक जनके ए प्रकार नियमे एकरार लिखिया देय ये तुमि आदालते नालिषेर द्वाराय कि अन्य कोन प्रकारे उपरेर लिखित वेदखलि वस्तुते आमार दखल कराइते पारह तवे उपरेर लिखित स्थावर ओ अस्थावर—प्रभृति विरोधीय वस्तुर अर्द्धेक किम्वा किञ्चित् आपन परिश्रमेर ओ अर्थव्ययेर परीवर्त्तें पाइवा इति । ताहाते ऐ व्यक्ति यदि आदालते नालिशेर द्वाराय किम्वा अन्य कोनो प्रकारे ऐ वेदखलि वस्तुते ऐ अवीरा स्त्रीलोकेर दखल सम्पादन करिया थाके तवे ऐ प्रकार अवीरा

स्त्रीलोकेर ए प्रकार एकरार ग्राह्य हइते पारे, ओ यदि ऐ प्रकारे कोनो तफात् हइया थाके तवे ग्राह्य हइते पारे ना। आर एइ रूप अवीरा स्त्रीलोक आपन स्वामीर योग्यांश वस्तुर ए प्रकार एकरारेर द्वाराय अन्य व्यक्तिके दिवार क्षमता उपरेर लिखित ऐ प्रकार नियम समापन हइले राखे, ओ ऐ नियम समापन ना हइले राखे ना, ओ ए पक्षे क्षमता राखनेर प्रति कोनो काल नियम नहे, अर्थात् ऐ अवीरा स्त्रीलोक ये पर्य्यन्त जीवद्दशाय थाकिवेक से पर्य्यन्त ऐ क्षमता राखनेर ये फल ताहा उहार मृत्यु हइले ओ समान इति। एइ व्यवस्था वङ्गदेशेर चलित मनु ओ दायभाग ओ ताहार टीका ओ दायतत्व ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादार्णवसेतु ओ विवादभङ्गार्णव-प्रभृति ग्रन्थानुसारिणीति ॥

इहार प्रथम प्रमाण दायभागग्रन्थेर लिखित। ताहार भाषा— स्त्रीलोकेर खोरपोष प्रभृति अचल हइले आपन पतिर त्यक्त संक्रान्त वस्तुर वन्धक सिद्ध हइते पारे। ताहातेओ अचल हइले ऐ पतिर त्यक्त वस्तुर विक्रय सिद्ध हइते पारे इति ॥१॥

द्वितीय प्रमाण विवादभङ्गार्णव प्रभृति ग्रन्थ धृत नारदमुनिर वचन। ताहार भाषा–आपत्काल व्यतिरेके स्त्रीलोकेर करा सकल कर्म्म असिद्ध, विशेषतः घर, द्वरोजा ओ भूमि, इहार दान ओ वन्धक ओ विक्रय आपत्काल व्यतिरेके सिद्ध हइते पारे ना इति ॥२॥

तृतीय प्रमाण विवादभङ्गार्णव ग्रन्थ लिखित। ताहार भाषा– कोनो प्रयोजन सिद्ध हओयार निमित्ते कोनो नियमे ये किछु देय से प्रयोजन ऐ नियमे यदि सिद्ध ना हय तवे से देओया सिद्ध हइते पारे ना इति ॥३॥

इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर आपरेल मासेर २८ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि हजुरे र सोपरद करा सवाल ओ ताहार सेओयाय रोवकारि प्रभृति तिन केता कागच सहित एइ व्यवस्था दाखिल करिलाम इति ॥—

———

(६५) लं० २५८

सन १८३२ साल ईशवी

रोवकारि मिछिल आदालत देओयानि सदर मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत तामस किमिल रावटसेन साहेवेर वैठके तारिख २१ आपरेल सन १८३५ साल ईशवी मोतावेक तारिख ९ माह वैशाख सन १२४२ साल वाङ्गला रोज मङ्गलवार—

राजीवलोचनसतपति आपिलाण्ट—

वेचारामराय रेष्पाडण्ट—

जेला मेदिनीपुरेर आदालत देमानीर एक केता रिटरण ताहार तारिख २७ माह मार्च्च सन १८३५ साल ईशवी ओ एक केता रोवकारि सहित ओ गयरह कागजात रेष्पाडण्टेर असाक्षाते एखाने पहुचिया अद्य मोकद्दमार कागजात समभिव्याहारे आपिलाण्टेर उकिल मुनशी हसन आलि ओ खोद रेष्पाडण्टेर साक्षाते रोवकार हइलो ओ जिला मेदिनीपुरेर आदालतेर कागजात ओ तथाकार फयसला पर्य्यन्त पाठ करागेल। ओ उचित हइलो ये चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे ए विषय दरियाप्त करा ये जिला मेदिनीपुरेर आदालतेर पण्डितेर दाखिल करा व्यवस्थासकल मोतावेक शास्त्र मरओजे मुलुक वाङ्गला किम्वा उडिस्यार दोरस्त वटे कि ना, आवश्यक वोध हइया हुकुम हइलो ये दुइ केता व्यवस्था एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये व्यवस्थाजात मजकुर वङ्गदेशचलित शास्त्रानुसारे किम्वा उडिस्या देशेर चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना। ओ सिरिस्तादार ए विषयेर कैफियत् दाखिल करेण ये मुदइर दावी डिसमिस हइया दखल रेष्पाडण्टेर थाके ओ डिगरिर टाका वैविलरफार फिरिया पाइयाछे कि ना। यद्यपि पाइया थाके तवे सेह मकद्दमार लम्वर ओ फयसलार तारिख निशान दिया कैफियत दाखिल करेण। आर रेष्पाडण्टके

बुझिया देया जाय ये तुमि आइन्दा मङ्गलवारे हाजिर ना थाकिवा तवे तोमार अपेक्षा मुलतवी ना राखिया मकद्दमा फयशला करा जाइवेक। अतएव तोमाके ज्ञात करा गेल इति॥—

श्रीश्रीदुर्गा

नं० ३६—

अस्योत्तरम्—

भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद् दानोद्देश्येन तत्सुतेन वा प्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इति विद्वद्भिर्निरणायि। पैतृकस्थावरभूमेरप्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इत्यपि मिताक्षरामतम्॥

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरे तु स्वार्ज्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव।
स्थावरं द्विपदञ्चैव यद्यपि स्वयमर्ज्जितं॥
असम्भूय सुतान् सर्व्वान् न दानं न च विक्रयः॥—इत्यादि मिताक्षरालिखनम्॥

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

अस्य भाषा—

पुत्र-पौत्रादि-क्रमे भरणार्थ दत्त भूमि पाइया भोग मात्र करिते पारे। ग्रहीता किम्वा ताहार पुत्र अप्राप्तव्यवहार पुत्र सत्वे विक्रय करिते पारे ना। अपर मिताक्षरा मते पैतृक भूमि पुत्रादि थाकिते विक्रय करिते पारे ना इति। सन १८३२ साल ५ आपरेल॥—

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

नं० ३८

अस्योत्तरम्—

भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद्दानोद्देश्येन तत्सुतेन वा विक्रेतुं

न शक्यते इति व्यवस्था तु मिताक्षरादायभागदायतत्त्वप्रभृतिसर्वशास्त्र-सम्मता सर्वदेशसाधारणीति विद्वद्भिर्निरणायि ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

पैतृकतादृशनिर्व्यूढस्वत्ववद्भूमिमपि अप्राप्तव्यवहारपुत्रवान् विक्रेतुं न शक्नोति—इति तु व्यवस्था मिताक्षरामात्रसम्मता इति विद्वद्भिर्निरणायि ।

दायभागकृज्जीमूतवाहनमते तु पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्तां भूमिमपि अप्राप्तव्यवहारपुत्रवानपि विक्रेतुं शक्नोति, किन्तु विक्रेता प्रत्यवायी भवति—इति च विद्वद्भिर्निरणायि ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

तत्र प्रमाणानि—

दात्रभिसन्धिनिमित्तत्वात् स्वत्वस्य २४।१।४ यथा याज्ञवल्क्यः—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः ।

स्थावरस्य च सर्व्वस्य न पिता न पितामहः ॥

पितामहश्रुतेस्तद्धनविषयं वचनम् । तत्रापि सर्व्वस्येत्युपादानात् सर्व्वस्य कुटुम्बवर्त्तनहेतोर्दानादिनिषेधः ८।२।६ जीमूतवाहनदायभागग्रन्थकारः ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

अस्य भाषा—

पुत्र-पौत्रादि-क्रमे भरणार्थ दत्त भूमि पाइया भागमात्र करिते पारे। ग्रहीता किम्वा ताहार पुत्र अप्राप्तव्यवहारपुत्र सत्वे विक्रय करिते पारे ना। ए सर्व्वशास्त्रवित् पण्डितदेर निर्णय। इति जीमूतवाहनमतः ।

अप्राप्तव्यवहार पुत्र सत्त्वे पिता पैतृक कोन भूमि विक्रय करिते पारे ना—ए केवल मिताक्षरामत। दायभागमते पितृ-पितामहादि-सम्बन्ध-प्रयुक्त अंश रूपे प्राप्त भूमि अप्राप्तव्यवहार-पुत्र सत्वेओ विक्रय करिते पारे, किन्तु विक्रयकर्त्तार पाप हय इति। जीमूतवाहन दायभागग्रन्थकर्त्ता इति ।

ए देशेर मध्ये उत्कलमतावलम्बि उत्कल ब्राह्मण आर ताहार-दिगेर यजमान शिष्य उडिया सृष्टिकरण ओ क्षत्रिय, वैश्य ओ कान्यकुब्ज ब्राह्मण। इहारदिगेर मिताक्षरा मते व्यवस्था। राढीय ब्राह्मण ओ दक्षिण राढीय कायस्थ प्रभृतिर दायभाग मते व्यवस्था। ए विवादे विक्रय कर्त्ता कोन जाति ताहा लइया विचार करिते हय इति—

इति श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैर्निरणायि—

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुततामसक्रिमिलरावटसेनसाहेबधर्म्माधि-करणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयैकविंश-तितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेवं तत्समर्पितरसगुणाङ्कितव्यवस्था-पत्रं वसुगुणाङ्कितव्यवस्थापत्रञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयगुणपक्षमितदिनसम्ब-न्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितरसगुणाङ्कितव्यवस्थायां वसुगुणाङ्कितव्यवस्थायाञ्च प्रथमतो लिखितमस्ति भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद्दानोद्देश्येन तत्सुतेन वा अप्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इतीति। तत्र यदि दात्रा दानोद्देश्या-येयं भूस्त्वया पुत्रपौत्रादिक्रमेण भोक्तव्या, किन्त्वस्यां भूमौ मदीयं स्वत्वम-स्त्येवेति नियमेन भरणार्थं तद्भूमिर्दत्ता स्यात्तदा तद्व्यवस्थालिखितं तन्मतं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा शुद्धं भवतीति। एवं तत्तद्व्यवस्थायां पुनरपि लिखितमस्ति पैतृकभूमि-मप्राप्तव्यवहारपुत्रवान् विक्रेतुं शक्नोतीति। तत्रापि यद्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता पैतृकभूमिविक्रयसिद्धिसम्पादकशास्त्रीयावश्यकहेतुं विना स्वेच्छयैव तद्भूमि-र्विक्रीता स्यात्तदा तत्तद्व्यवस्थालिखितं तन्मतं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारे-णोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा शुद्धं भवतीति। एवं वसुगुणाङ्कित-

व्यवस्थायां पुनरपि लिखितमस्ति दायभागकृज्जीमूतवाहनमते तु पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्तां भूमिमप्राप्तव्यवहारपुत्रवानपि विक्रेतुं शक्नोति, किन्तु विक्रेता प्रत्यवायी भवतीति चेति। तत्रापि यद्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्तभूमिविक्रयसिद्धिसम्पादकशास्त्रीयावश्यकहेतुभिः कैश्चित्पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्ता भूमिर्विक्रीता स्यात्तदा तद्व्यवस्थालिखितं तन्मतं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा शुद्धं भवतीति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेण व्यवस्थापत्राभ्याञ्च सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६६)—नं० ३५० सदर—

रुवकारि मिछिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकाता वैठक श्रीयुत जावर्ज्ज इष्टाकोएल साहेव कायेम मोकाम हाकिम आदालत मजकुरा सन १८३५ साल तारिख १८ मे, मो० सन १२४२ साल तारिख ५ ज्येष्ठ।

मतिलाल कल्याणसिंह — आपीलएटान
ब्रजलाल ओ शीताराम ओ गयरह — रेष्पाडएटान्

आपीलएटेनेर उकिल मुनशी गोलाम आहमद ओ रेष्पाडएटानेर उकिल जिमिश कोडलवोरक सदरलेण्ड साहेव ओ मुनशी दादारवस्क खाँ हाजीर आशीलेन। एइ मोकर्द्दमा २६ आपरेल तारिखे आमार निकट रुवकार हइया ४९ नम्वर पर्य्यन्त कागजात पडागिया दिवावशान प्रयुक्त ओ ऐ माहार २८ तारिखे रेष्पा(ड)एटानेर उकिलेर हाजीर ना हओार जन्ये मुलतवि छिल, पुनराय अद्य रुवकार हइया वाकी कागजात पडागेल। जे हेतुक

मिछिलेर कागजात विवेचनार द्वाराय ओ मोकद्दमार गतिकेर दीष्टे एइ मोकद्दमार चूडन्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट हइते एइ विशय जिज्ञाशा करा आविश्यक ओ जरुर जे वेहार देशेर चलित शास्त्रेर द्वाराय पिता ओ पितामहेर एमत सार्द्धं दयमता आछे कि ना—ये आपन पुत्र ओ पौत्रेर विने अनुमतिते पैतृक स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे, ओ यद्यपि पुत्रेर परलोक हय, तवे पौत्रेर अनुमति आविश्यक राखे कि ना। ओ यद्यपि स्यात् तथाकार चलित शास्त्रेर द्वाराय ए प्रकार वस्तु हस्तान्तरे निषेध थाके, तवे एमत स्थले ऐ विक्री अशीर्द्धं करणेर हाकीमके कर्त्तव्य ओ आविश्यक वटे कि ना, एवं पैतृक वस्तु समुदय किम्वा ताहार मध्ये किञ्चित हस्तान्तर करणेर विषये शास्त्रेर मध्ये किछु विशेष पाओया जाय कि ना। आर एइ आदालतेर सेरेस्ता हइते एइ विशय ये इहार पूर्व्वे एइ आदालते शुभे वेहारेर मोतालकेर कोन मोकद्दम्मात एमत कोन फयछला ये पैतृक विशय हस्तान्तर करणे सिद्ध अथवा असिद्ध हइआ थाके जाना आविश्यक। अतएव हुकुम हइल ये निचेर लिखित मत प्रश्न एइ रुवकारिर नकलेर सम्वलित एइ रुवकारि पौछिवार तारिख हइते सप्ताह मेयाद मध्ये प्रत्युत्तर लिखिवार हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ओ एइ आदालतेर सेरेस्ता दारेर कर्त्तव्य ये तलवि कैफियत सेरेस्ता तल्लास ओ तहकीकात करिया गुजरान इति।

प्रथम प्रश्न :—

शुभे वेहारेर चलित शास्त्र द्वाराय पिता ओ पितामहेर एमत सार्द्धय ओ दय(म)ता आछे कि ना। ये—आपन पुत्र ओ पौत्रेर विने अनुमतिते पैतृक स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे।

द्वितीयप्रश्न :—

पुत्रेर परलोक हइले पौत्रेर अनुमति आविश्यक राखे कि ना—

तृतीयप्रश्न :—

यद्यपि तथाकार चलित शास्त्रेर द्वाराय एमत वस्तु हस्तान्तरेर विशये निषेध थाके, तवे एमत स्थले ऐ विक्री असिद्ध करिवार हाकिमके कर्त्तव्य ओ आविश्यक वटे कि ना इति।

चतुर्थप्रश्न :—

पैतृक वस्तु समुदाय अथवा ताहार किञ्चित् हस्तान्तर करिवार विशये शास्त्रे किछु विशेष पाओया जाय कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

वेहारदेशचलितशास्त्रानुसारेण पुत्रस्य पौत्रस्य वा अनुमतिं विना पैतृकस्थावरस्य हस्तान्तरकरणे पितुः पितामहस्य वा स्वेच्छया क्षमता नास्तीति। द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्य्यवसितमिति पृथङ् न लिखितमिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः।
स्थावरस्य तु सर्व्वस्य न पिता न पितामहः॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

वेहारदेशचलितशास्त्रानुसारेणैतादृशवस्तुनो हस्तान्तरविषये पितुः पितामहस्य वा स्वेच्छया निषेधे सति शास्त्रनिषिद्धविक्रयासिद्धिकरणं धर्म्माधिकरणाधिपतेः कर्त्तव्यमावश्यकञ्च भवतीति—

अत्र प्रमाणम्—

व्यवहारान् नृपः पश्येद्विद्वद्भिर्ब्राह्मणैः सह ।

धर्म्मशास्त्रानुसारेण–इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

पैतृकवस्तुसमुदायस्य यत्किञ्चिद्वस्तुनो वा हस्तान्तरकरणविषये शास्त्रे कश्चिद्विशेषोऽस्ति[1] । स च विशेषः प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणे लिखितः— इति वेहारदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणमेवेति ॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयनवमदिनसम्बन्धि-मङ्गलवासरे मया प्रश्नपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६७)—नं २२२ सन १८३३ साल—

मोकाम कलिकाता सदर देओआनि आदालतेर श्रीयुत ओलीयम व्राडिन साहेव ऐ आदालतेर हाकिमेर वैठकेर इ० सन १८३५ सालेर २८ मे मोतावक बाङ्गला सन १२४२ सालेर १५ ज्यैष्ठ वृहस्पतिवारेर रोवकारि ॥—

भोलानाथदास आपीलाण्ट

श्रीमतीसवित्रा ओ गोपालकृष्ण ओ गायरह रेष्पाडण्टान

आपीलाण्टेर उकिलमुनशी होछेन आलि ओ हाजिरा रेष्पाडण्ट श्रीमतीसावित्रार उकिल राधाकृष्ण ओ गोपालकृष्ण-सिंहेर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल। एइ मोकर्द्दमा

---

१. किञ्चिद—व्यप ० ।

एइ मासेर १९ तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य पुनराय दरपेस हइया ए आदालतेर पण्डितके हजुरे तलव करिया ये व्यवस्था कोटेर हाकिमेर तलवानुसारे पण्डित लिखियाछिलेन ताँहाके अर्पन करिया जिज्ञाशा करागेल ये एइ व्यवस्था दृष्ट करिया ताहार ये अर्थ यथार्थ हय वलेन। पण्डित दृष्ट ओ गभ्मोर करार पर कहिलेन ये प्रथम प्रश्नेर शेषेर प्रत्युत्तरेर विशयेर अर्थ एइ ये ये पुत्र आपन माताके मन्द कहे से पुत्र, ये पर्य्यन्त प्रायश्चित्त ना करे, उत्तराधिकारिहेतुते कोन एक सत्वे स्वत्वाधिकारि हइते पारे। ना जखन भोलानाथदास हलफ करिया कहियाछे ये ताहार विमाता व्यभिचारिणीर कर्म्मे इच्छुक हइया मानेर लाघव करियाछे, ओ व्यभिचारिणीर कर्म्मकरार हेतुते शास्त्रानुशारे जातीर व्यवहार हइते वाहिर हइयाछे, उपरेर लिखित विशय हाकीमेर तजविजे सावुद हय नाइ। एवं उक्त व्यवस्थार मध्ये ए विशयेर कोन विस्तारित ये एमत मन्द कहने कि प्रकार प्रायश्चित्त करिते हइवेक लेखा नाइ। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ ये ए विशयेर जओाव, ये विमातार पक्षे उपरेर लिखित विशय सम्वन्ध करणे ओ ताहा साव्यस्त ना हओने उहा वक्ता पुत्रेर पक्षे वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे कि प्रकार प्रायश्चित्त उचित, ओ ये प्रकार पापेर प्रायश्चित्तेर जन्य शास्त्रेर मध्ये किछु मेयाद निःधार्य्य आछे कि ना। यदि थाके, तवे ताहार प्रकाश हओनेर दिवस हइते कत दिवस मध्ये प्रायश्चित्त करिवेक—एइ रोवकारिर पाओार तारिख हइते तिन दिवस मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडीनसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमेइमासीयाष्टाविंशतितम-

दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयजुनमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

व्यभिचारदोषरहिताया विमातू राजसन्निधौ ज्ञानपूर्व्वकव्यभिचारदोषख्यापनात्यन्ताभ्यासजनितपापप्रशमनार्थं द्वादशवार्षिकं महाव्रतं कर्त्तव्यम्। तत्राशक्तौ साशीतिशतसंख्यकधेनुदानं तन्मूल्यस्य वा चत्वारिंशदधिकपञ्चशतकार्षापणस्य तत्तुल्यस्य सुवर्णस्य रजतस्य वा दानं कर्त्तव्यम्, दक्षिणा च गोशतं तन्मूल्यं वा कार्षापणशतं देयम्। एतत् प्रायश्चित्तं संवत्सरमध्य एव कर्त्तव्यम्। संवत्सरानन्तरमुपरिलिखितैतत्प्रायश्चित्तस्य द्विगुणं प्रायश्चित्तं कर्त्तव्यम्–इति मनुप्रायश्चित्तविवेकप्रायश्चित्ततत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

अनृतन्तु समुत्कर्षे राजगामि च पैशुनम्।

गुरोश्चालीकनिर्ब्बन्धः समानि ब्रह्महत्यया॥ इति मनु(११।५५)-वचनम्॥ १॥

अकामतो द्वादशवार्षिकं कर्त्तव्यम्, तदशक्तावशीत्युत्तरपयस्विधेनुशतं देयम्, तदशक्तौ चत्वारिंशत्पुराणोत्तरचूर्णीपञ्चशतमूल्यं हिरण्यादिकं देयम्, दक्षिणायां गोशतदानाशक्तौ चूर्णीशतमेकं देयम्—इति प्रायश्चित्तविवेक(पृ० ८८)ग्रन्थलिखनम्॥ २॥

स्मृतिसागरे देवलः—*कालातिरेके द्विगुणं प्रायश्चित्तं समाचरेदिति। कालातिरेके संवत्सरातिरेके संवत्सराभिशस्तस्य दुष्टस्य द्विगुणो दमः इति मनुवचनेन*—इति प्रायश्चित्ततत्त्व(पृ० ४७४)ग्रन्थलिखनञ्चेति॥३॥
॥०॥०॥०॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति॥–

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(६८)—नं १४ सन १८३४ साल खास आपिल—

रुवकारि मिछिल सदर देओानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर कायेम मोकाम हाकिम एडओयार्ड जान हारिंग्टन साहेवेर वैठके इ० सन १८३५ साल तारिख २९ मे मोतावक वाङ्गला सन १२४२ साल तारिख १६ ज्यैष्ठ दिवस शुक्रवस ? ॥—

रत्नाकरविपुइ ओ घुरिविपुइ आपिलाण्टान

साधुचरणाविविगञ्जन ओ गयरह रेष्पाडण्टान

आपिलाण्टानेर उकिल मुनशी दादारवक्स खाँ हाजिर आइल। रेष्पाडण्टान ताल्लपत्रे उडिया अक्षर ओ मज्जमुने एत्तेलानामार रशीद लिखिया दियाओ हाजीर हय नाइ। अद्य एइ मोकद्दमा एकतरफा सुरत आमार वैठके उपस्थित हइया मोकद्दमार कागजात मोनाहेजाय बोध हइल ये वादि अर्थात् आपीलाण्टान नेहालपुर जमिदारिर मध्ये रकम १५=) आना आपनारदिगेर पैतृक एजहारे दखल देलाइया पाइवार दाविते जेला कटकेर देओानि आदालते नालिस करे। प्रतिवादिगण आपनारदिगेर जओाव वादिदिगेर एजहार ओ दावि हइते अस्वीकार हइया गुजराइलेक। जेलार जजसाहेवेर तजविजे मुद्दइयानेर हवेक डिकरिर हुकुम सादेर हय, एवं सेइ डिकरि आपिलेर आदालते रद हय, ताहार पर खास आपील सुरत ए आदालते उपस्थित हय। एइ मोकद्दमार कागजात द्वारा प्रकाश ये जमिदारि मजकुरार मालिक मुद्दइयानेर प्रपितामह पद्मनाभ विविगञ्जनेर मृत्युर पर तिन पुरुश पर्य्यन्त मतओफा मजकुरेर हासील करा वस्तु प्रधान पुत्रेर नामे कालेक्टरि ओ गयरहते नामाङ्कित हय, ओ आमलि सन ११९५ साले पूर्व्व पुरुष मजकुरेर आसल ओयारिसानदिगेर मध्ये प्रथकान्न हइया स्थावर वस्तु हिस्या करिया नय। ए द्यने उभय विवादिर मध्ये एइ विवाद प्रकाश ये आपिलण्टान प्रकाश करे ये आसल पूर्व्व पुरुष

मजकुरेर सकल ओयारिसान जमिदार ओ हक्दारेर न्याय विवादेर वस्तुते दखिलकार स्थिल। प्रधान पुत्रेर नाम जारि थाकिते वेवाक जमिदारिर हक्दार ओ मालिक से नहे इति। उभयेर प्रपितामह पद्मनाभ विविगञ्जनेर सोपार्जित ओ त्यक्त सकल जमिदारि करार दिया रेष्पाडण्ट जाहेर करे ये मुद्दइयान आपिलाण्टान ऐ जमिदारिर हकीयत ओ कर्त्तृत्व ओ दखिलकारिर पक्षे किछूछु एलाका राखे ना, वरं आपीलाण्ट-दिगेर पिता मालगुजारिर उसुल तहशील कागज पत्र लिखित पडित करा एवं ऐ जमिदारिर पयरवि ओ मददगारि कर्म्मे नियुक्त थाकिया रेष्पाडण्टदिगेर स्थाने मोशाहेरा लइयाछे। अतएव प्रथम एइ विशय बोध करा आविश्यक हइल ये एत काल गतो होार परे ए द्वयने ऐ जमिदारिर परस्पर उत्तराधिकारि-दिगेर मध्ये विभाग हइते पारे कि ना। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रुवकारिर नकल कागजात सम्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर हाओोला करा जाय ये मोकद्दमार कागजात दृष्टे कटकेर चलित शास्त्रानुसारे एइ विशयेर व्यवस्था ये एतो काल गतो परे विरोधि जमिदारि पूर्व्वोक्त पूर्व्व पुरुषेर उत्तराधिकारिदिगेर सहित एद्वेने वण्टक हइते पारे कि ना—एक सप्ताह मध्ये लिखेन इति ॥०॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतएडओयार्डजानहारिएटीन-साहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासी-योनत्रिंशत्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितैतद्विवादवि-षयनिविष्टपारसीकलिपिजातञ्च यत्तदब्दीयजूनमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिबृहस्प-तिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते–

गते चैतावति काले इदानीमपि विवादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य

विभागस्तद्धनस्वाम्युत्तराधिकारिणां मध्ये भवितुं योग्यो भवति—इति कटक-देशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते निजे प्रेते तत्सुतमृक्थभागिनम् ।
कुर्व्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥
लभेतांशं स पित्र्यन्तु पितृव्यात्त्वापि तत्सुतात् ।
स एवांशस्तु सर्व्वेषां भ्रातॄणां न्यायतो भवेत् ॥

लभते तत्सुतो वापि—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायन-वचनम् ॥१॥०॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजूनमासीयाद्रिपक्षमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितैतद्विवादनिविष्टपत्रजातविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६९) श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलकसिन्दरजानकालविनसाहेवधर्म्मा-धिकरणकवेदाग्न्यष्टेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिविचारपत्र-संवलितैतन्मथुरादेव्यर्थिनीप्राणकृष्णकृष्णलालप्रत्यर्थिविवादनिविष्टपत्रजातं[1] यदेतदब्दीयैतन्मासीयषष्ठदिवसीयशनौ घटिकैकोत्तरयामद्वये मया प्राप्तं तद-वलोक्य यादृशबोधो जावस्तदनुसारेणोत्तरं दीयते—

एतद्विवादनिविष्टपत्रजातमवलोक्य कश्चिद्धर्म्मचन्द्रनामा पुरुषः सत्योरेव स्वपत्नीपुत्रपत्न्योः स्वविभक्तासंक्रान्तस्थावरास्थावरसकलधनस्य स्वदौहित्र-विहारीलालसम्प्रदानकं दानपत्रं विलिख्य स्वपत्नीपुत्रपत्नीदौहित्राँस्त्यक्त्वा[2] ममार । पुनस्तत्पत्नी देवापि स्वपतिदत्तधनस्य दानपत्रं तस्मा एव दौहित्राय

१. ०देव्यर्थिनि०—व्यप० । २. ०पुत्रपत्नि०—व्यप० ।

दत्त्वा पुत्रवधूं दौहित्रं च विहाय स्वर्लोकमगमदिति निश्चितम्मया। तत्रेत्थं-प्रकारके वृत्ते सा स्नुषा प्राप्तदानपत्रविहारीलालपुत्राभ्यां प्राणकृष्णकृष्ण-लालाभ्यां स्वश्वशुरधनं लब्धुमीहमाना विवदते। तत्रैवं विषये धर्म्मचन्द्र-तत्पत्नीदत्तदानपत्रमनुसृत्य तद्धनादर्थिनीमदत्त्वा प्रत्यर्थिनोः पितुः किञ्चित् प्राप्नोति न वा। अथ तद्दानपत्रमनुसृत्य नाप्नोति चेत्तदा धर्म्मचन्द्रस्य मातामहस्य धने विहारीलालस्य दौहित्रत्वेन किञ्चित् स्वत्वमंशो वा प्राप्तुमर्हति न वा। प्राप्नोति चेत्तत्पितुः कथं तत्स्नुषायाश्च श्रीगोपाल-पुत्रपत्न्याः कीदृग् (अंशः) इति प्रश्नः। तत्र तेन धर्म्मचन्द्रेण तद्दाना-वसरे तस्माद्धनात् स्वपत्न्यै पुत्रपत्न्यै च पृथक्त्वेन किञ्चिद्दत्त्वा तद्दानपत्रं दत्तमिति दानपत्रादिभ्यो प्रतीतेस्तद्दानमसिद्धं भवितुमर्हति, सर्वस्वदानादु-त्तराधिकारिसत्त्वे सर्वस्वदाननिषेधस्य सकलनिबन्धसिद्धत्वात्। तथा च तद्धनं धर्म्मचन्द्रस्यासीत्। अथ धर्म्मचन्द्रमरणात् तद्धनं तत्पत्न्या देवाया आसीत्, दौहित्रादिसत्त्वे विभक्तापुत्रमृतधने पत्न्यधिकारस्य सर्व्वर्षि-सम्मतत्वेन प्रसिद्धत्वात्। अथ धर्म्मचन्द्रमरणाद्देवाप्राप्तं तद्धनं देवाया[1] अपि दातुं न शक्यते पूर्व्वोक्तहेतोरत्रापि तुल्यत्वात्, विशिष्योत्तराधिकारि-सत्त्वे स्त्रियाः स्वापतेयस्थावरादिदाननिषेधाच्च। तथा च यद्यपि मिताक्षरादि-ग्रन्थेषु स्नुषाधिकारो न गणितो गणितश्च दौहित्राधिकारस्तथापि श्वश्र्वा देवाया मरणात्तद्धनं मथुरादेवी तत्स्नुषा प्राप्तुमर्हति[2], पत्न्योत्तराधिकारि-शून्यविभक्तमृतधने सत्स्वपि दुहित्रादिषूत्तराधिकारिषु स्नुषाधिकारस्य सर्व्वदे-शीयानादिसिद्धलोकव्यवहारसिद्धत्वात्। लोकव्यवहारस्यापि शास्त्रसम्मतत्वात्, लोकव्यवहारविरोधे प्रजाप्रक्षोभादिदोषाणां कीर्त्तनाच्च। परन्तु तया मथुरा-देव्या विवादास्पदीभूतं गृहत्रयं भाटकादिरूपेण भोगेन भोक्तव्यमेव, परं न तद्दानव्ययादिकं कुर्य्याद् आवश्यकं विना, उत्तराधिकारिसत्त्वे तन्निषेधात्। अथ यदि पूर्वोक्तदोषसद्भावेऽपि प्रभुणा अनादिसिद्धलोकव्यवहारो नाद्रि-यते[3] तदा देवाया मरणात् तद्विहारिण एव आसीत्, तस्य दौहित्रत्वेन प्रव-

---

१. देवायापि—व्यप०। २. मथुरादेवीं तत्स्नुषां प्राप्तमर्हति—व्यप०।
३. नादृयते—व्यप०।

लोत्तराधिकारित्वात् । तन्मरणात्तत्पुत्रयोः प्राणकृष्णकृष्णलालयोरासीत्, पितृधने पुत्राधिकारस्य निर्विवादसिद्धत्वात् । परञ्चास्मिन् पक्षे विहारीलाल-पुत्राभ्यां मथुराया भरणमवश्यमेव कर्त्तव्यम्, तस्या मूलधनिनः पुत्रवधूत्वात्, विहारीलालस्य च धर्मचन्द्रस्थानीयत्वादेतादृश्या भरणस्य लोकप्रसिद्धत्वात् । अर्थार्थिपित्रोर्विभागस्तु न सम्भवति मातुलेन तदा पुत्रयोर्विभागस्य शास्त्रलोकोभयविरुद्धत्वाद्-इत्येतद्देशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयविवादचिन्तामणिप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेयमिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्वकुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुतादृते ।
नान्वये सति सर्व्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् ॥ इति मिताक्षरादिसकलनिबन्धधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

गृह्णात्यदत्तं यो मोहाद् यश्चादेयं प्रयच्छति ।
दण्डनीयावुभावेतौ धर्मज्ञेन महीक्षिता ॥—इति विवादरत्नाकरे नारदवचः ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि सकलनिबन्धधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

भर्त्रा प्रीतेन यद्दत्तं स्त्रियै तस्मिन्मृतेऽपि तत् ।
सा यथाकाममश्नीयाद्दद्याद्वा स्थावरादृते ॥—इति मिताक्षराधृतवचनम् ॥४॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक्प्रवर्त्तिताः ।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥
जनापरक्तिर्भवति बलं कोशश्च नश्यति ।—इत्यादीनि वीरमित्रोदयादिधृतानि बृहस्पत्यादिवचांसि ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति तत्रैव कात्यायनवचनञ्चेति ॥६॥

यावत्यो विधवा नार्य्यो ज्येष्ठेन श्वशुरेण वा ।
गोत्रजेनापि चान्येन भर्त्तव्याच्छादनाशनैः ॥—इत्यपि तत्रैव नारद-वचनञ्च ॥७॥

एतदब्दीयदिशम्बरमासीयविंशतिदिवसीयशनौ दत्तेयं व्यवस्था मयेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

संशोधितमिदं व्यवस्थापत्रं पण्डितहरदयालमिश्रनागरीनवीसेनेति ॥

श्रीदुर्गा शरणम्

रोवकारि सिछिल आदालते देश्रोयानि सदर मोकाम एलाहाबाद मानएद्रकु हुनरि टरम्वर साहेव आदालत मजकुरेर हाकिमेर वैठके तारिख २० जानेर सन १८३५ साल इ० मोताबके तारिख ६ माघ सन १२४२ फछलि रोज मङ्गलवार ॥

मथुरा दलोइ — आंपीलाण्ट—
प्राणकृष्ण ओ कृष्णलाल, वेहारीलालेर पुत्र—रेष्पाडण्टान्—

आपीलण्टेर उकिल लाला लछमनसिंह ओ रेष्पाडण्टेर उकिल मिरजारङ्गीनवेग हाजीर हइल । एइ मकद्दमा सन १८३४ सालेर २३ दिजम्वर तारिखेर हुकुम अनुसारे प्रथक प्रथक तारिखे आमार वैठके रोवकार आर ऐ सकल तारिखेर रोवकारिसकलेर लिखित कागजात पडा जाइया मुलतवि छिल । अद्य पुनराय रोवकार हइया वोध हइल ये आपीलाण्ट सावेक मुदइया आपनार स्वामीर पिता धरमचाँदेर विषय तिन खान वाटीर दखल पाओनेर दावीते मुद्दाआलेहेमार नामे नालिस करे । मुद्दाआलेहेमार जवावेर खोलसा एइ ये मुदाआलेहेमार पिता वेहारिलालके ऐ वेहारिलालेर मातार पिता धरमचाँद आपनि वर्त्तमाने आठारो वत्सरेर मध्ये आपनि पुष्य पुत्र लइया उहार जन्म दिन

हइते प्रति पालन करिया आपनार काइम मोकाम करिया। पुष्य पुत्र करिया फरजन्दीनामा लिखाइयादेन, आर आपन नामेर खालीसा सरिफारनाम बादसाहेर हुजुर हइते मुद्दा-आलेहमार पिता बेहारिलालेर नामे लिखियादेय। ओ ताहार फौत परे मोछम्मात देओयानबिबि धरमचाँदेर स्त्री आदालतेर साहेबेर दस्तखति दस्तावेज लिखिया उहार हाओयाले करे, आर आपन विशय साबुत करणेर निमित्ते सन १८१२ सालेर १२ सेतम्बर तारिखेर लिखित धरमचाँदेर मोहरि फरजन्दीनामा दस्तावेज ओ सन १८१५ सालेर २३ नवम्बर तारिखेर लिखित धरमचाँदेर स्त्रीर लिखिया देओया दस्तावेज दरपेस करिलेक, आर एइ आदालतेर पण्डित सन १८३४ सालेर १ दिजम्बर तारिखेर हुकुम अनुसारे एक केता व्यवस्था एइ खोलासाय जे मिशिलेर कागजात हइते प्रकाश हय ना–ये धरमचाँद हेवानामा लिखन कालिन आपनार स्त्रीके किम्वा आपनार पुत्रवधूके किछु दिया थाके, तवे से हेवानामा ग्राह्य हइते पारे ना। आर हेवा अग्राह्य करण ऐ मालेर मालिक धरम-चाँद हय। ओ धरमचाँदेर फौत परे उहार स्त्री मालिक हय। आर ऐ मालेर हेवा उहार स्त्रीर करणेर क्षमता नाइ। आर यद्यपि मिताक्षरा पुथिते पुत्रवधूर हकियतेर शुमार लेखे नाइ, आर दौहित्रेर हकीयतेर शुमार लिखियाछे, तथापि मोछम्मात देओ-यानेर फौत परे ऐ मालेर अधिकार आपीलण्टेर हइवेक। यदि ये केह विशय विना सरिकि राखिया फौत करे, आर ताहार पुत्र ओ पौत्र ओ स्त्री ना थाके, आर कन्या ओ दौहित्र ओ गयरह ओयारिष थाके, तथापि ऐ माल पुत्रवधुर हकियते पौछन चीर काल हइते देशेर रछम आर रेओयाज सकल मुलुके न्याय्य आछे। आर ताहा शास्त्रेते ओ न्याय्य आछे, आर आपीलण्टेर दान विक्रि करणेर क्षमता नाइ। आर यदि रेओयाज अग्राह्य हय तवे देओयानेर फौत परे बेहारिलाल, जे दौहित्र ओयारिस

आछे, उहाके पौछिवेक दाखिल करिलेक इति। ए कारण एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था लिखनेर धाराय प्रकाश आछे ये मिताक्षरा पुथिते पुत्रेर स्त्रीर हक्किएतेर शुमार किछु लेखा नाइ, दौहित्रेर हकिएतेर शुमार लेखा आछे; ताहाते ओ ऐ रछम ओ रेओयाज चिरकालेर ओ शास्त्रेर पछिन्दो लिखीयाछे, आर मेघनाटनसाहेवेर तैयारि दायभागेर तरजमा केतावेते प्रकाश ये यदि कोन व्यक्तिर पुत्र पौत्र ना थाके ताहार विषयेर मालिक ताहार दौहित्र हइवेक, पुत्रवधु हइवेक ना, जाहार स्वामी आपन पितार सुमुखे मरे—ए निमित्त चुडन्त हुकुम छादेर करणेर पूर्व्व कलिकाता सदरेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलव करा आर एइ विषय जानिवार निमित्त ये एइ धारार मकद्दमाते रछम रओयाज अपेक्षा शास्त्र वलवान कि चिरो-कालेर देशेर रछम रओयाज ये प्रकार एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थाते लिखा आछे, ओ ताहा यदि शास्त्रेर वहिर्भूत हय तवे रेओयाज हओयार योग्य हइते पारे कि ना। मोनाछव वोध हइया हुकुम हइल ये मकद्दमा अद्य मुलतवि थाके, आर एइ रोवकारिर नकल एइ आदालते पण्डितेर व्यवस्था नकलेर सहित एइ आविश्यके ये एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था मोलाहेजार परे तलव करा व्यवस्था दाखिल करेण—एइ आदालतेर रेजष्टर साहेवेर चिठीर द्वाराय मोकाम कलिकातार सदरेर रेजष्टर साहेवेर निकट पाठान जाय इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुण-गजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

धर्म्मचन्द्रनामा कश्चित् पत्न्यां पुत्रपत्न्याञ्च विद्यमानायां स्वस्वत्वा-स्पदीभूतस्थावरास्थावरसमुदायधनं विहारीलालनाम्ने स्वदौहित्राय दत्त-

वान्[1]—इति प्रभुसमर्पितव्यवस्थापत्रेण ज्ञातम्। एवञ्च सति धर्म्मचन्द्रस्य धनं तत्पत्न्यास्तत्पुत्रपत्न्याश्च यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तं चेत्तदा तादृशधने तद्दानं सिद्ध्यति। धर्म्मचन्द्रस्य धनं यदि तत्पत्न्यास्तत्पुत्रपत्न्याश्च यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तं न भवति तदा तद्दानं न सिद्ध्यति। एवञ्च सति तद्दानस्यासिद्धत्वपक्षे धर्म्मचन्द्रत्यक्तधने तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या देवानाम्न्या एवाधिकार आसीत्। तस्याञ्च मृतायां तस्य धर्म्मचन्द्रस्य काचिद्दुहिता चेद्विद्यमाना तदा तस्या अधिकार आसीत्। तदभावे धर्म्मचन्द्रस्य दौहित्राणामेवाधिकारः। किन्त्वेवञ्चेदपि धर्म्मचन्द्रपुत्रवध्वा जीवति धर्म्मचन्द्राख्ये स्वपतिपितरि मृतपतिकाया यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्ते धर्म्मचन्द्रत्यक्तधनान्तर्गतधने अधिकारः। तत्र च धर्म्मचन्द्रपुत्रवध्वाः पतिपुत्रादिविहीनत्वेनानन्यगतिकाया धर्म्मचन्द्रत्यक्तधनमात्रोपजीविन्या धर्म्मचन्द्रदौहित्रैः सह विरोधे सति पृथक्त्वेन यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनग्रहणस्य आवश्यकतैव। तदतिरिक्तधन एव धर्म्मचन्द्रदौहित्राणामधिकारः। एवं च सति पश्चिमदेशीयैर्धर्म्मशास्त्रार्थविशारदैरन्यैर्वा धर्म्मशास्त्रार्थानुष्ठातृभिः शिष्टैः प्राचीनैर्जीवति पितरि मृतस्य पुत्रस्य पत्न्यां विद्यमानायां स्वदौहित्रेषु विद्यमानेष्वपि पुत्रवध्वा यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तमात्रमेव धनमस्तीति ज्ञात्वा यावज्जीवं पुत्रवध्वा एवाधिकारो न्याय्यः। दौहित्राश्चेत्तद्धनाधिकारिणस्तदा तेषां पुत्रवध्वा सह विरोधोऽस्तीत्यतस्तस्या यावज्जीवं ग्रासाच्छादनाद्यावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणमपि न निर्वहतीति विविच्य यावज्जीवं पुत्रवध्वा एव तद्धने अधिकारोऽस्त्विति व्यवहृतस्तन्मूलश्चेत् पुत्रवध्वा यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तश्वशुरत्यक्तधने तस्या अधिकारस्तदा धर्म्मशास्त्रीययुक्तिसिद्धस्यैतादृशव्यवहारस्य धर्म्मशास्त्राविरुद्धस्य

[1] दत्तमिति—व्यप०।

धर्म्मशास्त्रानुसारेण प्रचारयोग्यताया बलवत्त्वं भवितुं शक्नोति, अन्यथा प्रचारयोग्यताया बलवत्त्वं भवितुं न शक्नोतीति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥––

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥
एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ॥
स्वर्य्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

यावत्यो विधवाः साध्व्यो ज्येष्ठेन श्वशुरेण वा।
गोत्रजेनापि चान्येन भर्त्तव्याश्छादनाशनैः ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥४॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः।
युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनञ्चेति ॥५॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रं च यत्तदब्दीयफेबरवरीमासीयवसुपक्षमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं ताभ्यां सहिता प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तरमंगरेजीलिखनञ्च यत्तदब्दीयमैमासीयशरेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं ताभ्यां च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(७०) रोवकारि मिछिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपिएरसाहेवेर वैठके। तारिख १९ माइ इ० १८३५ साल मोताक्के ६ ज्यैष्ठ १२४२ साल वाङ्गला दिवस मङ्गलवार ॥—

रामकृष्णराय छायेल

छायेलेर उकिल सदासुखपण्डित ओ द्वितीय पक्ष कालीकिशोररायेर उकिल मुनशी होसन आलि हाजिर आइल। सन हालेर २३ आपरेल तारिखेर हुकुमानुसारे जेला मयमनसिंहेर देओयानी आदालतेर जजसाहेवेर रिटरण ओ इं० १८३५ सालेर ५ आपरेलेर लिखित तथाकार रोवकारि ओ साक्षीगणेर एजहार सम्वलिष्ट इं १८३४ सालेर २८ जानेओयारिर छादेर हओया एइ आदालतेर हुकुमेर प्रत्युत्तरे छओयालादि कागजसकलेर सहित अद्य दरपेष हइया पडागेल। रिटरणेर सम्वलित जजसाहेवेर प्रेरित साक्षीगणेर एजहारेर द्वाराय प्रकाश ये नारायणीदेव्या ओ जगदीश्वरीदेव्यार स्थाने रामनृसिंहराय डिगरिदारेर पाओना कर्ज टाका ताहार किछु जमीदारिर कर्म्म निर्व्वाह अर्थात् सरकारि मालगुजारि आदायेते ओ किञ्चित गोलकमनिर सावेक देना परिशोधे खरच हइयाछे। ओ कोन सन्देह प्रकाश हय ना ये कर्ज्जार टाका मजकुर उक्त देव्यादिगेर सेच्छा ओ वाञ्छा सिद्धिते निज लछरुपे खरच हइयाछे। ए जन्य उचित ये एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशयेर प्रत्युत्तर दुइ सप्ताह मेयादे तलव हय, ये उपरेर लिखनानुसारे उक्त देव्यादिगेर हिस्यार वस्तु, याहा इं १८३३ सालेर १२ जानेओरिर जेलार जजसाहेवेर रोवकारिर लिखित रफानामा ओ छोलेनामार द्वाराय उक्त देव्यादिगेर जीवद्दशापर्य्यन्त स्थैर्य्यता पाइयाछे, डिगरिदारेर हासील करा डिगरि परिशोध विक्रय हइते पारे कि ना। एवं एइ आदालतेर पण्डितेर उचित ये उपरेर लिखित छओयालेर प्रत्युत्तर लिखने गौरिप्रसादचौधुरि

वनाम जयमालाचौधुराणीर ८३५ लम्वरेर मोकर्द्दमार इं १८२७ सालेर ७ फिव्रुअोयारिर लिखित एइ आदालतेर व्यवस्था एवं खजे आवेटेक्रटीएव एस्तफानुछ[1] छाएलेर मोकर्द्दमार दरून इं १८३३ सालेर १९ दिजम्वरेर लिखित आपन दाखिल करा व्यवस्थार प्रति, जाहार प्रसङ्ग इं १८३४ सालेर १० फिव्रुअोयारिर आमार रोवकारिते लेखा आछे, अनुबोधन करेण। आर यदि स्यात् पूर्व्वेर ओ एइ चनकार व्यवस्था-सकलेते किछु अनऋक्य हय, उचित ये उक्त पण्डित ताहार विस्तारित हेतु लिखेन, एवं एइ विशयेरो प्रत्युत्तर लिखेन--ये यद्यपि स्यात् दे०यादिगेर हिस्या उद्दारदिगेर उभय ओ कालीकिशोररायेर छोलेनामार इष्टे, जाहार द्वाराय दे०यादिगेर हकीयत जीवद्दशा पर्य्यन्त स्थैर्य्यता पाइयाछे, विक्रय हइते ना पारे, ओ प्रकार देनादारदिगेर अर्थात् उक्त दे०यागणेर देनार सामुदाइक टाका, जाहा जमीदारिर मुनाफार जन्य खरच हइयाछे, निज खरचे व्यय हय नाइ, उक्त कालीकिशोरेर स्थाने तलव हइते पारे कि ना, आर से तलव एइ चने हइते पारे कि, उक्त दे०यादिगेर मृत्युर पर इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीखिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवोशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयनैमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयजुनमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रमुक्तविचारपत्रलिखितानुसारेण नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योरंशौ यौ तयोर्ज्जीवनपर्य्यन्तमीशवीशब्दप्रतिपाद्यरामगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरी-

१. खाजा अवयठ कटीयर इष्टफानुस—इति प्रश्नस्योत्तरभागे पाठः।

मासीयार्कमितदिवसीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्र-लिखितनिष्पत्तिपत्रसन्धिपत्राभ्यां स्थिरतां प्राप्तौ, जयपत्रकारयितॄणां व्यक्ति-विशेषाणां जयपत्रलिखितऋणपरिशोधनार्थं विक्रययोग्यौ भवितुं न शक्नुतः, राजस्वीकृतसन्धिपत्रे तद्विक्रयस्य निषेधात्। शास्त्रानुसारेण कालीकिशोररा-याभिधेयस्य दत्तकपुत्रस्याप्राप्तव्यवहारतायां तत्स्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनस्य राज्ञस्सर्व्वतोभावेन रक्षकत्वेन राजकरदानार्थमप्राप्तव्यवहारापाकरणीयमृणं शास्त्रानुसारेण केनचित् कर्त्तुमावश्यकं न भवति। एवमप्राप्तव्यवहारापाकर-णीयऋणपरिशोधनमपि तस्याप्राप्तव्यवहारतायां केनचिच्छास्त्रानुसारेण कर्त्तुमावश्यकं न भवति, शास्त्रे अप्राप्तव्यवहारतायामृणपरिशोधनस्य विशे-षतो निषेधात्, कालीकिशोररायाभिधेयस्य प्राप्तव्यवहारतायाञ्च तद्देयऋण-परिशोधनस्य राजकरदानस्य च तन्मात्रकर्त्तव्यत्वेन तदितरेषां तद्ग्रहीतृमा-तृपितामहीप्रभृतीनां कर्त्तव्यत्वाभावात्। एवं गौरीप्रसादचतुर्द्धरीणस्यार्थिनो जयमालाचतुर्द्धरीण्याः[1] प्रत्यर्थिन्याः पञ्चत्रिंशदधिकवसुशतपरिमिताङ्कितवि-वादनिविष्टे तद्धर्म्माधिकरणीयेशवीशब्दप्रतिपाद्याद्रिपक्षगजेन्दुमिताब्दीय-फेवरवरीमासीयसप्तमदिनलिखितव्यवस्थायाः ख्वाजाअवयटकटीयरइष्टफानु-सस्यार्थिनो विवादसम्बन्धिन्या ईशवीशब्दप्रतिपाद्याग्निगुणगजेन्दुमिताब्दीय-दिशम्वरमासीयाङ्केन्दुमितदिनलिखितास्मद्दत्तव्यवस्थया भिन्नविषयकत्वेना-नैक्यशङ्कैव नावतरति। तथाहि गौरीप्रसादचतुर्द्धरीणस्यार्थिनो विवाद-सम्बन्ध्युपरिलिखितव्यवस्थायामित्येव लिखितमस्ति—मृत्युञ्जयशर्म्मणः प्राप्तजयपत्रलिखितमृणं यदि शिवप्रसादस्यावश्यकश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदैहिकक्रि-यार्थं स्वभरणपोषणार्थं वा तन्मात्रा जयमालया कृतं स्यात्तत्परिशोधनं यदि स्वसंक्रान्ततदीयांशविक्रयं विना न भवति, तदा जयमालोपस्थापितवृत्ता-न्तस्य सत्यत्वे असत्यत्वे वा तदर्थमुपरिलिखितऋणपरिशोधनोपयुक्तस्य तदीयांशान्तर्गतस्य विक्रयो भवितुमर्हति, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा, जयमालया कृतस्य ऋणस्य परिशोधनार्थमिति। एतल्लिखनस्येदं बीजम्—शिवप्रसादचतुर्द्धरीणस्य त्यक्तधनं तस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्ताभावे तद्-ग्रहीतृमात्रा जयमालयोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तम्, अतएव जयमालाजीवनप-

१. जलमाला०-व्यप०।

र्य्यन्तमन्येन केनचिदुत्तराधिकारित्वेन धनिनः शिवप्रसादस्यावश्यकश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदैहिकक्रियाजातं जयमालाया भरणपोषणञ्च शास्त्रानुसारेण कर्त्तुं न शक्यते, केवलं जयमालयैव कर्त्तुं शक्यत इति खाजा अवयट कटीयर इष्ट्फानुसस्यार्थिनो विवादसम्बन्धिन्यां व्यवस्थायामित्येव लिखितमस्ति। यदि मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्य एतद्धर्म्माधिकरणार्थिनः पितुस्त्यक्तधने सन्धिपत्रानुसारेणैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो नारायणीदेव्याश्च जगदीश्वरीदेव्याश्च स्वत्वं निश्चितं स्यात्, एवं तदेव सन्धिपत्रं जिलाख्यावान्तरधर्म्माधकरणे सत्यं जातं स्यात्, एवं तेनैव सन्धिपत्रेण जगदीश्वरीदेवीमरणोत्तरं तदायत्तीभूतोंऽश एतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो भविष्यतीत्यवगम्यमानं स्यात्, तदा जगदीश्वरीदेवीदेयऋणपरिशोधनार्थं तज्जीवनपर्य्यन्तमुपस्वत्वभोगार्थं तत्पुत्रस्वत्वास्पदीभूततदायत्तीभूतोंशो विक्रययोग्यो भवितुं न शक्नोति, सन्धिपत्रतात्पर्य्यार्थधर्म्मशास्त्राभ्यां तथैव पर्य्यवसानादिति। एतल्लिखनस्येदं बीजम्—मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्य त्यक्तसमुदायधने उत्तराधिकारित्वेन कालीकिशोररायाभिधेयस्य तदीयदत्तकपुत्रस्य स्वत्वं शास्त्रानुसारेण जातम्, न तु जगदीश्वरीदेव्यास्तत्पत्न्या नारायणीदेव्यास्तन्मातुर्व्वेति। अथ च मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्यावश्यकश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदैहिकक्रियाजातं तत्पत्नीमातृप्रभृतीनां भरणपोषणञ्च तदीयऋणपरिशोधनं तद्देयराजकरदानं च तदीयदत्तकपुत्रेण कालीकिशोररायाभिधेयेनैव कर्त्तुमावश्यकं भवति, न तु तत्पत्न्या जगदीश्वरीदेव्या, तन्मात्रा नारायणीदेव्या वेति। यदि नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योरंशयोर्नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योः कालीकिशोररायाभिधेयस्य सन्धिपत्रानुसारेण नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्जीवनपर्य्यन्तमुपस्वत्वभोगोपयुक्तमात्रस्वत्वयोरुपरिलिखितानुसारेण विक्रययोग्ययोर्भवितुमशक्ययोरधमर्णयोर्नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्द्देयमृणमुद्राजातं कालीकिशोररायाभिधेयमूलधनिदत्तकपुत्रस्वत्वास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य वृद्ध्यर्थमेव व्ययितम्, नतु स्वस्वीयव्ययार्थंव्ययितमित्यवगम्यमानं भवति, तथाप्युपरिलिखितोत्तरदृष्ट्या सन्धिपत्रलिखितनियमजातविवेचनया च समुदायऋणयाचनं कालीकिशोररायाभिधेयस्यान्तिके इदानीं जगदीश्वरीदेवीनारायणीदेव्योर्म्मरणानन्तरं वा कदाचिदपि भवितुं न शक्नोति, सन्धिपत्रता-

त्पर्य्यार्थशास्त्राभ्यां तथैव पर्य्यवसानाद्--इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।।—

अत्र प्रमाणम्—

अराजके हि लोकेऽस्मिन् सर्व्वतो विद्रुते भयात् ।

रक्षार्थमस्य सर्व्वस्य राजानमसृजत् प्रभुः ।। इति मनु(७।३)-वचनम् ।। १ ।।

बालदायादिकमृक्थं तावद्राजानुपालयेत् ।

यावत् स स्यात् समावृत्तो यावच्चातीतशैशवः ।। इति मनु(८।२७) वचनम् ।।२।।

नाप्राप्तव्यवहारैश्च पितर्य्युपरते क्वचित् ।

काले तु विधिना देयं वसेयुर्नरकेऽन्यथा ।। इति विवादार्णवसेतु-(पृ० २८)विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ५५२।पृ० ६।६)-वचनम् ।।३।।

सर्व्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ।।४।।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ।।५।।

न स्त्री पतिपुत्रकृतं न स्त्रीकृतं पतिपुत्रौ—इति विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतविष्णुवचनञ्चेति ।।६।।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयेन्दुपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(७१)—मोकाम कलिकातार सदर देमानि आदालतेर सन् १८३५ सालेर १६ जुन मोतावक वाङ्गला सन १२४२ सालेर ३

आषाढ मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओली-यमब्राडिनसाहेवेर वैठकेर रोवकारि—

ल० २८६ सन १८३३ साल

वीरेन्द्रनारायणचौधुरि ओ गायरह आपीलाण्टान

श्रीमती सत्यभामादेव्या रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टदिगेर उकिल सदासुकपण्डित ओ रेष्पाडण्टेर उकिलेदिगेर मध्ये मुनशी आमिनद्दीन महम्मद हाजिर आइल। अद्य ए मोकद्दमा उपस्थित हइया जेलार ओ ए आदालतेर कागज-सकल पाठ करागेल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्व ए आदा-लतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलव करा उचित वोध हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित विशयसकलेर उत्तर पञ्चम दिवसेर मध्ये दाखिल करेण, ए आदालतेर पण्डितके अर्पन कराजाय।

प्रश्न—एक व्यक्ति हिन्दुर पाँच पुत्र छिल। ताहारदिगेर मध्ये दुइ पुत्र आपन २ पितार समिद्ये निःसन्तान लोकान्तर हय, ओ ताहार पर ऐ हिन्दु व्यक्तिर मृत्यु हय, ओ ताहार मृत्युर पर उहार वर्त्तमान तिन पुत्रगन आपन २ पितार तेज्य वस्तुर पर विभाग द्वाराय दखलीकार हयेन, ओ तिन भ्रातार मध्ये दुइ भ्रातार उत्तराधिकारिगण आपन २ पितार तेज्य विशयेर पर दखलीकार आछेन, ओ एक भ्राता एक स्त्री ओ एक कन्या राखिया लोकान्तर हय, ओ मृत व्यक्तिर स्त्री स्वामीर तेज्य विशयेर पर दखलीकार हइया आपन कन्यार विवाह देओनेर पर ऐ विशयसकल आपन कन्या ओ जामाताके हेवा करे, ओ ऐ कन्या ओ जामाता हेवार-द्वाराय ऐ विशयेर पर दखलीकार हयेन, ओ ताहारदिगेर नाम केलकटरि सेरेस्ताय दाखिल हय। ताहार पर उक्त कन्या आपन मातार समिद्ये एक पुत्र राखिया लोकान्तर हय, ओ उक्त पुत्र उत्तराधिकारि द्वाराय आपन मातार तेज्य वस्तुर पर दखिल ओ उहार नाम ताहार पितार अर्थात् उक्त कन्यार स्वामिर नाम

सम्वलित कालेकट्टरि सेरेस्ताय जारि हय। तत्परे उक्त पुत्र आपन पिता ओ मातामहिर समिन्दे लोकान्तर हय। ओ ऐ पुत्रेर मृत्युर पर उक्त पुत्रेर पिता ऐ सकल विशयेर पर हेवार-द्वाराय ओ उत्तराधिकारिरूपे दखिल हइया ताहा आपन द्वितीय स्त्रीके हेवा करिया ऐ स्त्रीर नाम कालेक्टरि सेरेस्ताय जारि करिया दियाछे। अतएव मृत व्यक्तिर स्त्री आपन कन्या ओ जामाताके ये हेवा करियाछे ताहा वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना, ओ मृत व्यक्तिर गोष्टीर पञ्चम पुरुशीय खुडततो भ्रातष्पुत्रगणेर दाओा ये ऐ मृत व्यक्तिर ओ ताहार स्त्रीर उत्तराधिकारिद्वाराय आछे, हेवार विशयेर संक्रान्ते ए हेतुते ओ ये उक्त भ्रातष्पुत्रगणेर पक्ष हइते हेवानामा लिखित पठित समये कोन एक आपत्य ना हइया थाके, तवे अर्शे कि ना इति॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडिनसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयरसेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयजुलाइमासीयमुनिमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य स्थावरादिधने जाताधिकारया पत्न्या यदि स्वानन्तरोत्तराधिकारिण्यै सम्भावितपुत्रायै स्वकन्यायै तत्पतये च स्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिधनं दत्तं स्यात् तदा तद्दानं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, पत्न्यनन्तरोत्तराधिकार्य्यनुमत्या पत्नीकृतस्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिधनदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वेन, पत्नीकृतस्वानन्तरोत्तराधिकार्य्युद्देश्यकदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वस्यार्थसिद्धत्वाद्, जामातुद्देश्यकदानस्यापि कन्यासम्प्रदानतायाः दात्र्या जामातुः पृथक्स्वत्वेच्छायामपि

ब्राह्मणजातीयजामातृुद्देश्यकदानस्यादृष्टार्थतायाश्च शास्त्रीयत्वात्, पत्न्याः स्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिधनस्यादृष्टार्थं दानक्षमताया अपि शास्त्रसिद्धत्वाच्च। एवं धनिनो मृतस्य पञ्चमपुरुषीयसगोत्रभ्रातृपुत्रैर्मृतस्य धनिनस्तत्पत्न्याश्चो-त्तराधिकारित्वेनाभियोगो दानविषयीभूतस्य वस्तुन उपरिलिखितोत्तरदृष्ट्या तेभ्यो भ्रातुष्पुत्रेभ्यः सकाशात्तद्दानपत्रलिखनसमये तद्दानविषयकप्रतिबन्ध-कताया असम्पादनदृष्ट्या च शास्त्रानुसारेण साकांक्षो भवितुं न शक्नोति, तद्दानसमये तेषां भ्रातृपुत्राणामप्रतिषेधरूपाया अनुमतेरपि तद्दानसिद्धि-सम्पादकहेत्वन्तर्गतायाः सत्त्वात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वा-दिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

एतान्यपि प्रमाणानि भर्त्ता यद्यनुमन्यते।

पुत्राः पत्युरभावे च राजा वा पतिपुत्रयोः ॥—इति नारदस्मृत्यादि-ग्रन्थधृतनारदवचनम्[१] ॥१॥

यद्दत्तं दुहितुः पत्ये स्त्रियमेव तदन्वियात्।

मृते जीवति वा पत्यौ तदपत्यमृते स्त्रियाः ॥ इति दायभाग (पृ० ७५)-ग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

दात्रभिसन्धिनिमित्तत्वात्स्वत्वस्य--इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

विष्णुं जामातरं मन्ये—इत्युद्वाहतत्त्वादिग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥४॥

मृते भर्त्तरि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता।
स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् स्वभर्त्रे सतिलाञ्जलीन् ॥
कुर्य्याच्चानुदिनं भक्त्या देवतानाञ्च पूजनम्।
विष्णोराराधनञ्चैव कुर्य्यान्नित्यमुपोषणम् ॥
दानानि विप्रमुख्येभ्यो दद्यात् पुण्यविवृद्धये।
उपवासांश्च विविधान् कुर्य्याच्छास्त्रोदिताञ्छुभे ॥
लोकान्तरस्थं भर्त्तारमात्मानञ्च वरानने।

१. वचनमिदं नोपलब्धम्।

तारयत्युभयं नारी नित्यं धर्म्मपरायणा ॥—इति दायभागादि(दाभा० पृ० १६४।१६५)ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥५॥

प्रार्थ्यमानोऽर्थिना यत्र यो ह्यर्थो नाभिघातितः ।

दानकालेऽथवा तूष्णीं स्थितः सोऽर्थोऽनुमोदितः ॥—इति प्रायश्चित्तविवेकादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥७॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(७२)—नं० २१६

रुवकारि मेछल आदालते देओयानी सदर मोकाम कलिकात्ता एजलाछे श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोएल साहेब हाकिम आदालत मजकुरा सन १८३५ साल ता० ६ जुलाइ मोताबेक सन १२४२ साल तारिख २२ आषाढ ।

गुरुप्रसादवसु आपिलाण्ट

महेन्द्रनारायणवसु रेष्पाडण्ट

आपिलाण्टेर उकिल मुनशी राधाकृष्ण ओ रेष्पाडण्टेर उकिल वंशीवदनमित्र हाजिर आसिल ओ मिछिलेर कागजात मोलाहेजा हइल । ये हेतुक एइ मोकद्दमार चुडन्त हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ विशय-ये कायस्थ जाति गङ्गानारायणनामक एक व्यक्तिर तिन पुत्र छिल, ताहार मध्ये एक पुत्रेर विवाहकालिन किञ्चित भूमि, ये पुत्रेर विवाह हइलो, ताहार शसुरेर स्थाने प्राप्त हइल, एवं तद्भूमिर

दानपत्र यत् द्वारा दान कृत हइलो, गङ्गानारायणेर नामे लिखित हइल, ए स्थले गङ्गानारायणेर परलोकानन्तर ऐ भूमि पूर्व्वोक्त व्यक्तिर तिन पुत्र समान अंश करिया लइवेक, किम्वा ऐ विवाहकर्त्ता व्यक्तिर, जाहार विवाहोपलक्षे ऐ भूमि प्राप्त हइल, सेइ व्यक्ति पाइवेक, जिज्ञाशा करा आवश्यक–ए प्रयुक्त हुकुम हइल ये एइ रुवकारिर नकल उपरेर लिखित प्रश्नसम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये पूर्व्वोक्त प्रश्नेर प्रत्युत्तर वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे एइ हुकुम पौछनेर तारिख अवधि पञ्चम दिवसेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयशरेन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति गङ्गानारायणस्य मरणानन्तरं विवादास्पदीभूतधने गङ्गानारायणस्य त्रयाणामेव पुत्राणां समानाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम् –

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्द्धनं पितुः—इति दायभागादिग्रन्थधृतदेवलवचनञ्चेति ॥२॥०॥०॥०॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयरसमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(७३)—मोनछफि डिगरि जारिर लम्बर १३४३३

रोत्रकारि आदालते देश्रोयानि जेला वर्द्धमान एजलास मे० जेमछ करटिछ साहेव काइम मोकाम जज सन १८३५ सछिया तारिख ४ आपरेल—

गोकुलचन्द्रमिश्र डिगिरिदार मतर्फा— वादि—

कार्तिकमोण्डल देयेनदार— प्रतिवादि—

दयाकुमारि श्रो सुन्दरकुमारि— श्रोजोरदार—

खन्दकार नाछेरद्दिन माहम्मद श्रो कृष्णधनमुखोपाध्याय दयाकुमारिर उकिल एज्जेत होशेन, सुन्दरकुमारिर उकिलेर मध्ये एक उकिल मिछिले हाजिर हइलो। परे मिछिलेर कागज मोलाहेजा हइया वोध हइलो जे एइ मकर्द्दमा ४।।~)।१ टाका श्रादाय कारण डिगरिदार मोतर्फार तरफ हइते किस्तिवन्दि जारिर दरखास्त गुजराण श्रो प्रतिवादिर जायदाद क्रोक हइले परे दयाकुमारि मजकुर सन १२४१ सालेर १६ ज्यैष्ठ तारिखे आपन मुकाविलाय एक केता दरखास्त एइ मजमुने एइ आदालते दाखिल करिलेक—ये उहार पुत्र गोकुलचन्द्रमिश्र फौत करियाछे, श्रो उहार समस्त विशय श्रो ठाकुरसेवा प्रभृति उहाके दान करियाछे, श्रो मोतर्फा मजकुरेर विशय दखलिकार, श्रो श्रोयारिष आपनि आछे, आर एइ मकर्द्दमार तजविजेर निष्पत्येर प्रार्थना करिलेक, आर सन १८३४ सालेर १४ जुन तारिखेर आपनार दरखास्तेर उपरेर लिखित हुकुम अनुसारे दानपत्रेर निचेर लिखित तिन जोन साक्षी हाजिर आनिया तिन जोन साक्षीर एजाहार, श्रो सन १२४१ सालेर २० वैशाख तारिखेर लिखित दानपत्र दाखिल हइले परे सुन्दरकुमारि एक केता दरखास्त उहार स्वामि गोकुलचन्द्रमिश्रेर फौत हश्रोया श्रो आपनि ऐ मोतर्फा मजकुरेर मालामालेर दखलिकार श्रो श्रोयारिष श्रो उहार स्वामी उहाके पुष्यपुत्र करणेर अनुमति देश्रोया, एवं सकल विसय उहाके मालिक करानो श्रो चावि छोडान प्रभृति आपन

जीवद्दशाय मातव्वंर लोकेर साक्ष्याते अर्पन करा, ओ दया-कुमारिर एजाहारि दानपत्र नितान्त मिथ्या—एइ सकल विर्त्तान्ते सन १८३४ सालेर ३० जुलाइ तारिखे दाखिल करिलेक। एइ मकर्द्दमा पूर्व्वे सन हालेर १० फेव्रवरि तारिखे रोवकार हइया ऐ तारिखेर लिखित रोवकारि अनुसारे दोषरा विषयेर कैफियात पुरुषोत्तमदासमोहोन्तेर स्थाने तलव हइया सुन्दरकुमारिर उकिलेर पर जे सकल लोकेर साक्षीते सुन्दरकुमा-रिर स्वामी गोकुलचन्द्रमिश्र आपन समस्त विशयेर मालिक सुन्दरकुमारिके करा ओ उहाके पुष्यपुत्र करणेर अनुमति देओया सावुद हइवेक-ऐ सकल लोकेर नामे इशमनविसि दाखिल करिते हुकुम हय। तदनुसारे सुन्दरकुमारिर उकिल सात जोन साक्षिर नामे इसमनविषि दाखिल करिले। साक्षिर पर सफिना जारि हइले परे परान आच(ा)र्य्य ओ रामचाँदराय ओ कार्त्तिकघोष ओ लक्ष्मी वेओया एइ चारि जन हाजिर हइले उहारदिगेर एजहार वाङ्गला अक्षर ओ एवारते आलाहिदा २ फर्द्दे नओया जाय इति। अद्य दयाकुमारि मजकुर एक केता दरखास्त एइ मजमुने जे मदन मजकुरेर वयेय[1] दश वारो वत्सर, ओ मदन मजकुर सुन्दरकुमारिर सहोदर भ्राता निमि-त्तेक शास्त्रानुसारे जज्ञ उपवित हइले परे पुष्यपुत्र लओनेर विधान हए ना, ओ उहार पितार फौत परे उहार पितार गोत्रेते विधान हइते पारे ना; ओ सुन्दरकुमारिर एक केता दरखास्त एइ विर्त्तान्त ये मृत समय कोनो दान सिद्धि हये ना। आर स्वामिर अनुमति क्रमे आपन सहोदर मदनठाकुरके पुष्यपुत्र करियाछे-एइ सकल अन्य २ वित्तान्त दाखिल करिलेक इति। एइ मकर्द्दमाय एइ प्रकार व्यवस्था तलक आविस्वक जे यदि केहो आपन वर्त्तमान थाकिते मृत्यु समय ज्ञान पूर्व्वक परकालेर पुन्येर निमित्त आपन गुरुर साक्षेते आपन माताके दान करोनेर

१. वयेस—इति साधीयान् पाठः।

एकरार लिखित पण्डितेर द्वाराय हउक किम्वा ताहार वाक्याव-द्वाराय हउक, दान करिया फौत करे। ए प्रकार दान शास्त्रेर विधान कि ना, ओ गुरुर एजहार कोन विशयेते शिष्येर पक्षे काफि हय कि ना, आर कोन एक पुत्र दश कि द्वादश वत्सर वयक्रम हओयाते ओ ताहार यज्ञोपवित हइलेओ पितार फौत परे आपन पितार गोत्रेते ऐ पुत्रेर भगिनपुत्र मजकुरके आपन मातार अनुमतिते पुष्यपुत्र लइते पारे कि ना। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल डिगरि जारिर नथिर सम्वलित इङ्गरेजी चीठीर द्वाराय सदर देओयानि आदालतेर हाकिमेर हुजुरे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय–ये उपरेर लिखित वृत्तान्तेर सओयालेर जवाव शास्त्रानुसारे ऐ आदालतेर पण्डितेर स्थाने लइया एइ आदालते प्रेरण करिते आज्ञा हय इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजात-मङ्गरेजीलिखनञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीय-शरेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जात-स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदानं दातुः पत्न्या यावज्जीवं दातृकुलो-चितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्ते दातृस्व-त्वास्पदीभूतधने शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति। एवं गुरुवाक्यं शिष्यं प्रति विषयविशेषे प्रबलप्रमाणं भवत्येव। एवमेकमात्रपुत्रस्य कस्यचित् तमेकं पुत्रं दशवर्षवयस्कं द्वादशवर्षवयस्कं वा जनकगोत्रेण जनकमरणानन्तर-मुपवीतं तद्भगिनी स्वमातुरनुमतिमात्रेण दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहीतुं न शक्नोति–इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ-धृतबृहस्पतिवचनम् ॥२॥

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृत-नारदवचनम् ॥३॥

अत्र भयादिरुगन्वितान्ताः[1] पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः–इति तत्तद्ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं श्रावितं[2] धर्म्मकारणात् ।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥–इति तत्तद्ग्रन्थ-धृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः–इति दत्तक-मीमांसादिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥६॥

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतकालिकापुराणव-चनञ्चेति ॥७॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयगुणेन्दुमितदि-नसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रैतद्विवादविषयनिविष्ट-पत्रजाताङ्गरेजीलिखनैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(७)—प्रश्न :—

संन्यासीदासनाम्नः कस्यचिद्धनिनो द्वितीयस्त्रीजात एकः पुत्रो वर्त्तते, एका द्वितीया स्त्री वर्त्तते, एका पुत्रवधूर्वर्त्तते । इदानीं मृतसंन्यासीदासस्य स्थावरादिधने एतेषां मध्ये कस्याधिकारः—इति धर्मशास्त्रानुसारेण व्यवस्था लेखनीया ॥

अस्योत्तरम्— उक्तप्रश्नानुसारेण—

संन्यासीदासस्य द्वितीया स्त्री एवं द्वितीयास्त्रीजातनाबालकपुत्रः एवं प्रथमास्त्रीजातप्रथमपुत्रवधूषु सत्सु मृतसंन्यासीदासस्य स्थावरादिधने द्वितीय-

१. क्रोधादि०–इति मूले पाठः २. भावितम्–इति कास्मृ० पाठः ।

स्त्रीजातनावालकपुत्रस्यैवाधिकार एव, न तु प्रथमास्त्रीजातपुत्रवध्वोरिति-विदुषां परामर्शः ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

पितर्य्यूर्द्ध्वंगते पुत्रा विभजेयुर्द्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते ॥—इति दायभागधृत-नारदवचनम् ॥ अपरम् —

ऊर्द्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पैतृकं रिक्थमनीशास्ते हि जीवतोः ॥—इति दायभागधृत-मनुवचनम् ॥०॥

श्री दुर्गा

सन्यासीदासेर दुइ स्त्री। प्रथमा स्त्रीते एक पुत्र हय, परे द्वितीया स्त्रीते एक पुत्र हय, ऐ पुत्र नावालक। प्रथमा स्त्रीते ये पुत्र हय ताहार विवाह हइयाछे[1]। इतो मध्ये ऐ सन्यासी-दास नगर कलिकाता सिम्रुलिया मध्ये ४ काटा भूमि आपन नामे क्रम[2] करिया आपनि वर्त्तमान थाकिते प्रथमा स्त्रीर ओ प्रथम पुत्रेर काल हय। परे ऐ संन्यासीदासेर द्वितीय स्त्री एवं ऐ नावालक पुत्रः एवं मृतपुत्रेर वधू- एइ तिन व्यक्तिके राखिया सन्यासीदास परलोक प्राप्त हय। एइ स्थाने उक्त भूमीर बाटी आछे। ताहाते ऐ तिन व्यक्ति वर्त्तमान आछेन। ऐ सन्यासी-दासेर विषय काहार प्राप्त हइवेक- यथाशास्त्र व्यवस्था दिते आज्ञा हय इति।

उत्तर :—

सन्यासीदासेर द्वितीया स्त्रीजात नावालक पुत्रः, एवं द्वितीया स्त्री प्रथमा स्त्रीजात मृतपुत्रवधू- इहादिगेर मध्ये संन्यासीदासेर स्थावरादि धनेते द्वितीयस्त्रीजात नावालक पुत्रेर हइवेक इति, इहार प्रमाण —

१. हइया हइयाछे—व्यप० २. क्रय इति साधीयान् पाठः

पितार मरण हइले पितार धने पुत्रेर स्वत्व हय, पुत्र ना थाकिले पौत्र, प्रपौत्र, तदभावे, स्त्री तदभावे कन्या, तदभावे दौहित्र, तदभावे पिता, तदभावे माता, तदभावे भ्राता, तदभावे भ्रातृ-पुत्रादि, पुत्रवधूर अधिकार कखन हय ना इति ॥—॥०॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितव्यवस्थोपरिलिखितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतसन्न्यासिदासत्यक्तधने तस्य द्वितीयपत्नीगर्भजातो प्राप्तव्यवहारः पुत्रोऽधिकारी भवति, तदभावात् सन्न्यासिदासस्य द्वितीयपत्नी जीवति पितरि मृतस्य पुत्रस्य पत्नी च यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनादिभागिनी भवति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्र इति । प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पत्नीति च । तदभावे दुहिता—इत्यादि दायभागटीकालिखनम् ॥१॥

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

नरकं पीडने चास्य तस्माद् यत्नेन तं भरेत् ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतमनुवचनम्[१] ॥२॥

भरणं चास्य कुर्व्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात्—इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितव्यवस्थाभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१० मनुस्मृतौ न दृष्टं वचनमिदम् ।

श्री श्रीदुर्गाशरणम्

(७५)—रोवकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिसपिएर साहेबेर वैठके। तारिख १३ जुलाइ इङ्गरेजी सन १८३५ साल मोतावके वाङ्गला सन १२४२ साल तारिख ३० आषाढ दिवस सोमवार ॥—

कुशाइचन्द्रकविराज आपीलाण्ट

मोछम्मात जयमनी ओ कृष्णमनि ओ कृष्णमनीर मृत्युर पर मोछम्मात जयमनी ओ जयमनीर मृत्युर पर नृसिंहराय—रेष्पाडण्ट।

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी हयदर आलि ओ रेष्पाडण्टेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल हाजीर आइल। जेला विरभूमेर देओयाणी आदालतेर जजसाहेवेर रिटरण इ० सन १८३५ सालेर २५ मार्चेर लिखित तथाकार रोवकारी सम्वलित ओयारिष सावुदेर लओयाजिमा कागजात सम्वलिष्ठ मोकद्दमार कागजातेर सामिल अद्य दरपेस हइया, ऐ सनेर २ जुनेर रोवकारि समिभ्यार पडागेल। हुकुम हइल जे एइ मोकद्दमार रेष्पाडण्टीते नृसिंहरायेर नाम लेखा जाय। परे अन्य,२ कागजात अनुवोधने वोध हइलो जे इं सन १८३१सालेर १०सेतम्वर तारिखे एइ मोकद्दमार कागजात व्यवस्था तलवेते एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान गियाछिल, आर ताहार उत्तरे तहकिक हय जे मोछम्मात जयमनी ओ कृष्णमनीके भैरव कविराजेर जोवानि हेवा उचित वटे; किन्तु प्रीविंकाउसीयान कोर्टेर डिगरिर पर, जाहार द्वाराय जेलार फयछला उक्त मोछम्मातदिगेर हक्के वहाल थाके, उक्त मोछम्मात कृष्णमणीर मृत्यु हय, आर मोछम्मात जयमणी जोवाणी हेवार वुनियादे उहार हिस्याते दाविदार हय, एवं एइ आदालतेर पण्डित जिज्ञाशा मते ए प्रकार हेवा सत्व लिखेन। इं सन १८३३ सालेर १३ माइ ताहार सत्व तावत

हक्किकेर हुकुम जेलार जजशाहेवेर नामे छादेर हय। ताहार उत्तरे जजसाहेव ऐ सनेर २६ दिशम्बरेर लिखित रोवकारी तहक्किकेर लओयाजिमा सम्वलिष्ट एइ आदालते पाठान। किन्तु मोछम्मात जयमणीर मृत्यु हओया जन्य जे इति मध्ये हइयाछे, उक्त मोछम्मातेर ओयारिष हाजीरेर जन्य इस्तहार जारि हओया प्रयुक्त मोकर्द्दमार तजविज स्थकिद छिल, अद्य तहक्किकेर कागजात ओ गयरह ओ साक्षीगणेर एजहार अनुवोधनेते जयमणीके मोछम्मात कृष्णमणीर जोवानि हेवा सत्वताय पौछिल। किन्तु एइ मोकद्दमार डिगरि हाशील करा ओ एकान्न प्रयुक्त नितान्त अनुमान हय जे ए प्रकार हेवा यदि स्यात् हइयाथाके, तवे उक्त तहक्किकेर द्वाराय सामुदाइक विवादीय वस्तु मोछम्मात जयमणीर हक्के पौछे। किन्तु उक्त मोछम्मातेर मृत्यु जन्य उक्त मोछम्मातेर ओयारिशेर जन्य एइ मोकर्द्दमार विवाद पुनराय हइल। एइ प्रकारे जे उभय विवादिर पूर्व्व पुरुष मोनहरकविराजेर दौहित्रेर पुत्र सुरते विवादीय वस्तुते आपीलाण्ट हक राखे, कि नृसिंहदेव, जे आपनाके मोछम्मात जयमनीर स्वामीर द्वितीय पक्षेर स्त्रीर पुत्र अर्थात् उक्त मोछम्मातेर स्वपत्निपुत्र करार देय, ओयारिष हइवेक। ए प्रयुक्त ए विशयेर प्रकाश जन्य हुकुम हइल जे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट कागज पाठान जाय एइ हुकुमे जे उपरेर लिखित विशयसकलेते अनुधापन करिया उहार उत्तर दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन, आर से पर्य्यन्त हुकुम हओया स्थकिद थाके इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयगुणेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेतद्विवादनिविष्टपत्रजातञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयाद्रिपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति जयमनीमरणोत्तरं विवादास्पदीभूततत्त्यक्तसौदायिकस्त्रीधने तस्याः प्रपितामहदौहित्रपुत्रसपत्नीपुत्रयोस्समवाये सपत्नीपुत्रस्याधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

दौहित्रपर्य्यन्तानन्तरमेव सपत्नीपुत्रः—इत्यादि दायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयनवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रैतद्विवादनिविष्टपत्रजातैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

३५६ ल० सदर—

(७६) रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिसपीयेरसाहेबेर बैठके। तारिख २२ जुलाइ इङ्गरेजी सन १८३५ साल मोतावके ७ श्रावण वाङ्गला सन १२४२ साल दिवस वुधवार।

शिटवरतसिंह — आपीलाण्ट
मोछम्मात कुडा ओ गयरह — रेष्पाडण्टान्

आपीलाण्टेर उकिलगणेर मध्ये मुनशी गोलाम आहम्मद ओ मोछम्मात कुडा ओ मोहाएलसिंह दुइ जन रेष्पाडण्टानेर उकिल सदासुख पण्डित हाजीर आइल, आर रद्यालाल रेष्पाडण्ट क्रोटेर इयालामनामा एवं एइ आदालतेर एतलानामा जारि हओयातेओ हाजीर नाहि। एइ आदालतेर काएम मोकाम हाकीम एडओयार्ड जान हारण्टीं साहेबेर इं सन १८३५ सालेर

१७ मार्चेर लिखित हुकुमानुसारे एइ मोकर्द्दमार कागजात आमार वैठके दरपेष हइया उक्त तारिखेर हाकिम मौछफेर लिखित रोवकारिर राय ओ प्रथम आदालत सदर आमिनेर तजविजेर वावतेर कागजात इस्तक नालिशी आरजि ओ तथाकार फयछला पर्य्यन्त ओ द्वितीय आदालतेर वावत जज आपीलेर कागजात इस्तक मौजेवात ओ तथाकार फयछला ओ कोर्ट आजिमावादे दाखिल हओया मौजेवातेर न्याय खास आपीलेर दरखास्त ओ कोट मजकुरेर हाकिम जिमिस हारण्टीं साहेव ओ खास कमीसनर वावतो आलियाट साहेवेर इ० १८२९ सालेर २२ आपरेल ओ इ० १८३३ सालेर १५ आपरेल तारिखेर लिखित खास आपील मञ्जुरिर विशयेर राय आर ताहार नामञ्जुरिर विषये उक्त कोटेर हाकिम छेजलि तामष कटवरट साहेवेर इ० सन १८३२ सालेर ६ जुलाइ तारिखेर लिखित राय ओ एइ आदालतेर दाखिल हओया मौजेवातेर जओंयाव सामुदाइक पडान गेल। यदि स्यात्––प्रकाश ये एइ मोकर्द्दमा जेलार आदालते तथाकार पण्डितेर व्यवस्था मते फयछेल हय, आर मेष्टर वारडो आलियाट साहेव खास आपीलेर मञ्जुरिर रोवकारिते उक्त व्यवस्थार सत्वतार प्रति सन्देह आनेन। ए जन्य चुडन्त हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशयेर वोधकरण ये जेलार पण्डितेर व्यवस्था शास्त्रानुसार उचित वटे कि ना। कर्त्तव्यत्व दृष्टे हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल पण्डितेर नामेर दुइ केता सओयाल ओ पण्डितेर पत्र हइते ताहार उत्तरेर नकल सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठाइया हुकुम देओया जाय जे उक्त पण्डित उपरेर लिखित विशयेर उत्तर दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन, एवं एइ विशय ये यदि स्यात् विवादीय वस्तु साधारण थाकाय किम्वा साधारण ना थकाय व्यवस्थार कोन तफात हइवेक कि ना॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयद्वाविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नद्वयं तत्पण्डितदत्तोत्तरद्वयञ्च यत्तदब्दीयागस्तिमासीयषष्ठदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

विवादास्पदीभूतधनमसाधारणं चेत्तदा जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्था पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारिणी भवति। विवादास्पदीभूतधनं साधारणं चेत्तदोपरिलिखितव्यवस्था पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारिणी न भवति।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयनवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नद्वयतत्पण्डितदत्तोत्तरद्वयेन सहितेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

यदि[1] कश्चिदनपत्यः पत्नीं विहाय मृतस्तर्हि तद्धने तत्पत्न्यधिकारिणी, *अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि*—इति विष्णुवचनात्, *अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता,* पत्न्येव दद्यात्तत्पिण्डं कृत्स्नमंशं लभेत च इति वृद्धमनुवचनाच्च ॥ मिताक्षरादायभागादिमहाग्रन्थानुसारेणेयं व्यवस्थेति—

वदति[2] त्रिपाठिश्रीबोधकृष्णशर्म्मा।

---

(७७) सदर देमानि आदालतेर पण्डित प्रति प्रश्नः—
छुथरे जातिर पात्रर नख काटीले ओ विवाहेर समय ताहार-

---

१. व्यवस्थेयं द्विर्लिखिता। २. वदतित्रीपाठिश्रीबोधकृष्णशर्म्मा।

दिगेर माथाते सूत्र धरिले नापीतदिगेर जातिर पर किछु आघात हए कि ना। उचित ये तुमि यथाशास्त्र प्रश्नेर निचे ताहार उत्तर लिखह। इति सन १८३५ तारिख २७ माइ मोतावेक सन १२४२ तारिख १४ ज्यैष्ठ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अस्मद्दृष्टशास्त्रे विशेषत एतद्विषयकविधिनिषेधाविदानीं नोपलब्धौ, अतएव छुथर इति प्रसिद्धजातीयपादनखवपने विवाहसमये तज्जातीयशिरसि छत्रधारणे[१] च नापितजातीयानां जातिव्याघातस्तद्देशे व्यवहृतश्चेत्तदा तत्तत्कर्म्मकरणे नापितजातीयानां जातिव्याघातः शास्त्रतो भवत्येव। तद्देशे एवं व्यवहारो न चेत्तदैवं शास्त्रतो न भवति—इति वङ्गदेशचलितमन्वादिधर्म्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत्॥ इति मनुवचनम्॥ १॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(९८)

ल० : २२५ सदर
ल : ६४२३, क्रोट ढाका
मो० कलिकातार सदर देओानि आदालतेर इं : सन १८३५

१. छत्र—इति साधीयान् पाठः।

सालेर ५ आगष्ट मोतावेक वाङ्गला सन १२४२ सालेर २१ श्रावण बुधवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलीयम ब्राडीन साहेवेर वैठकेर रोवकारि--

ईशानचन्द्रदास ओ गायरह आपीलाण्टान

प्राणकृष्णदास रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टदिगेर उकिलगणेर मध्ये एक व्यक्ति तारकचन्द्र-राय ओ सदासुखपण्डित ओ मुनशी राधाकृष्ण, रेष्पाडण्टेर उकिलगण हाजीर आइलेन. ओ श्रीरामराय आपीलाण्टदिगेर द्वितीय उकिल ओ मुनशो होछेनआली रेष्पाडण्टेर तृतीय उकिल हजुरे हाजीर नाइ। ए मोकद्दमा ए आदालतेर सावेक काएम मोकाम हाकिम एदयने हाकिम जार्ज्ज इष्टाकओएल साहेवेर सन हालेर १५ आपरेल तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य आमार वैठके उपस्थित हइया. जेलार आदालतेर फयशला ओ अन्न २ दोषरा कागजात हाकिम मौसुफेर ऐ तारिखेर रोवकारिर विस्तारित लिखित रायेर सम्वलित पाठ करागेल। कोन हुकुम देओनेर पूर्व्वे निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओा उचित वोध हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर एइ रोवका-रिर नकल पाओार दिवसावधि पञ्चम दिवसेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अपन कराजाय।

प्रश्न :—यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति हिन्दु, ये ताहार मोट विषय कोन तालुकेर केवल छय आनाछिल, ताहार मध्ये चारि आना आपन वर्त्तमान स्त्रीके ओ दुइ आना आपन द्वितीय मृत स्त्रीर गर्भजाता कन्याके हेवा करे, ओ ऐ कन्या आपन स्वामीर मृत्युर पर दश वत्सर वयक्रमे आपन विमातार समिच्चे लोकान्त हय तवे वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे ऐ कन्यार तेज्य विशयेर उत्तराधिकारि ताहार विमाता किम्वा ताहार स्वामीर पिता हइवेक इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रोलियमवेराडीनसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयपञ्चमदिवसीय-विचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयपञ्चमदिवसीयषष्ठ-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति तत्कन्यात्यक्तधने श्वशुरोऽधिकारी भवति । इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्

ततः श्वशुरः —इति दायभागटीका(पृ० २१८)लिखनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्वरमासीयवेदेन्दुमितदि-नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

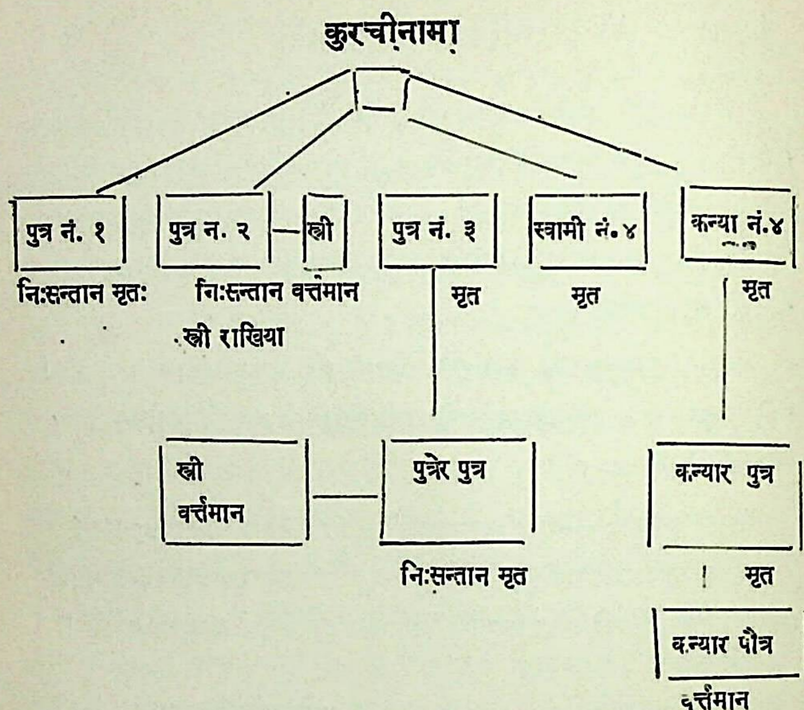
---

(७९) कोन व्यक्तिर द्वितीय ओ तृतीय पुत्र आपन २ श्रमेर द्वारा कयेक ग्राम लाभ करिल। ताहार पर द्वितीय पुत्र निःसन्तान एक स्त्री राखिया मरिल। तृतीय पुत्रेर पुत्रओ निःसन्तान एक स्त्री राखिया मरिल, एवं ऐ स्त्री एखन पर्य्यन्त निःसन्तान वर्त्तमान आछे। इहाते जिज्ञासा करा जाय–१ प्रथम सओयाल–एइ ये ऐ द्वितीय पुत्रेर विधवा स्त्री एवं तृतीय पुत्रेर पुत्रवधू ऐ कयेक ग्रामे अधिकार थाके कि ना, यदि थाके तवे कि पर्य्यन्त थाके—

२ द्वितीय सओयाल–एइ ये द्वितीय ओ तृतीय पुत्रेर भगिनीर पौत्रेर ऐ कयेक ग्रामे अधिकार थाके कि ना ॥

एइ व्यवस्था वारानस देसेर चलित शास्त्रानुसारे देओया जाय इति ॥

कुरचीनामा



श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितवङ्गदेशीयोत्तरप्रश्नपत्रं वंशावलीपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयाकतूवरमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्म्मध्ये साधारणाः स्थिताः, एवं द्वितीयपुत्रो विद्यमाने च भ्रातृपुत्रे मृतः स्यात्तदा मृतस्य पितृव्यस्य पत्न्या यावज्जीवं स्वपतिविभवोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने अधिकारः। यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्म्मध्ये साधारणा न स्थिताः, अथवा साधारणा अपि विभक्ता आसन्, एवं स एव द्वितीयः पुत्रो जीवति भ्रातृपुत्रे च मृतः स्यात्तदा मृतस्य

पितृव्यस्यासाधारणस्वत्वास्पदीभूतधने विभक्तधने वा तत्पत्न्या एव यावज्जीवमधिकारः। यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्म्मध्ये साधारणाः स्थिताः, अथ च स एव द्वितीयः पुत्रो मृते च भ्रातृपुत्रे मृतः स्यात्तदा द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्ज्जित-ग्रामसमुदायेषु द्वितीयपुत्रस्यैव साधारण्यप्रतियोगिनोऽसाधारणस्वत्वोत्पत्ते-स्तत्पत्न्या एव विवादास्पदीभूतसमुदायग्रामेषु यावज्जीवमधिकारः एवं। तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि विद्यमाने पितरि मृतः स्यात्तदा तस्य पितृधने असाधारणस्वत्वानुत्पत्तेस्तत्पत्न्या अपि तद्धने नाधिकारः, किन्तु यावज्जीवं स्वपतिविभवोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने अधिकारः। तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि मृते पितरि पितृव्ये च जीवति मृतः स्यादेवं द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्रयोर्म्मध्ये साधारणाः स्थितास्तदा मृतस्य तृतीयपुत्रपुत्रस्य पत्न्या यावज्जीवं स्वपतिविभवोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचर-णोपयुक्तधनेऽधिकारः। तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि मृते पितरि पितृव्ये च जीवति मृतः स्यादेवं द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्ज्जिता ग्रामा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्रयोर्म्मध्ये साधारणा न स्थिताः, अथवा साधारणा अपि विभक्ता जातास्तदा मृतस्य तृतीयपुत्रपुत्रस्यासाधारणस्वत्वास्पदीभूतधने विभक्तधने वा तत्पत्न्या एव यावज्जीवमधिकारः। यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्रा-भ्यामुपार्ज्जिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्म्मध्ये साधारणाः स्थिताः, अथ च तृतीयपुत्रस्य पुत्रो मृते पितरि पितृव्ये च मृते मृतः स्यात्तदा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्राभ्यामुपार्ज्जितग्रामसमुदायेषु तृतीयपुत्रपुत्रस्यैव साधारण्यप्रतियो-गिनोऽसाधारणस्वत्वोत्पत्तेस्तत्पत्न्या एव विवादास्पदीभूतसमुदायग्रामेषु[1] यावज्जीवमधिकार इति।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः॥
एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः।

१. °समदायं°—व्यप०।

स्वर्य्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः ॥ इति मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्य्यातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितम्—इति मिताक्षरा(पृ० २२१)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

स्वर्य्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।
अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥ इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥४॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम् -

द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्रयोस्त्यक्तधने तयोर्भगिनीपौत्रस्याधिकारप्रतिपादकशास्त्राभावाद्राजप्रसादं विना नाधिकारः—इति वाराणसीप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।।—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयदशमदिन-सम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रवंशावलीपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(८०) श्रीगणेशाय नमः । अवधूराय-धूरीराय-सरनामराया भ्रातरः सहोदरा आसन् । तेषां मध्ये अवधूरायनाम्नान्यदायादोपार्जितग्रामः परहस्तगतो निजप्रयत्नेन स्वभोग्ये आनीतः । स ग्रामः पूर्व्वोपार्ज्जितादन्यः । यदा अवधूरायेण ग्रामार्थं वादिना सह विवाद आरब्धस्तदा धूररायेण तद्भ्रात्रा न स्वीकृतः, उक्तं च नाहं विवादं करिष्यामीति, स्वांशोऽपि न गृहीतः । तदनन्तरं ग्रामविभागावसरे अवताररायोऽवधूरायात्मजः हरिगोविन्दरायो

धूरीरायात्मजः सर्व्वजितरायस्मरनामरायात्मजः तेषां मध्ये हरिगोविन्द-रायेण भागो न स्वीकृतः, उक्तं मत्पित्रा भागो न गृहीतस्तस्मादहमपि न ग्रहीष्यामीति। ग्रामविभागावसरे रामजतनरायप्रभृतय उत्पन्ना आसन्, परश्चातीववालकाः हरिगोविन्दरायात्मजाः। साम्प्रतं हरिगोविन्दरायात्मजा रामजतनप्रभृतयो भागमर्थयन्ते। ते पितृतिरस्कारेण पूर्व्वं पित्रा भागो न स्वीकृतः, अतो भागार्हा न भवन्ति वा भवन्तीति प्रश्ने--

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितसंस्कृतप्रश्नपत्रं पारशीकप्रश्नपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्ये-षुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते-

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतग्रामस्येदानीं विभागमर्थयन्तो हरिगोविन्दरायात्मजा रामजतनरायप्रभृतयो विभागार्हा न भवन्त्येव। अन्य-दायादोपार्ज्जितग्रामे यथा पितृपितामहाभ्यां द्वाभ्यां विक्रयेण तयोर्द्वयोः स्वत्व-नाशे न पौत्राणां स्वत्वनाशो भवति, तथा पितृपितामहयोः स्वांशग्रहणोपेक्षा-मूलकस्वत्वनाशेनाप्रासव्यवहाराणां पौत्राणां विभागमर्थयतामपि स्वत्वनाशः शास्त्रविवेचनया भवितुं शक्नोत्येव इतिपश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीर-मित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति।—

अत्र प्रमाणम्—

संविभागक्रयप्राप्तं पित्र्यं लब्धं च राजतः।
स्थावरं सिद्धिमाप्नोति भुक्त्या हानिमुपेक्षये॥ इति वीरमित्रोदयादि-(पृ० २०३)ग्रन्थधृतवृहस्पति(पृ० ७३)वचनम्॥१॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयार्कमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितसंस्कृतप्रश्नपत्रपारशीकप्रश्नपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(८१) प्रश्नः—

यथाशास्त्रानुसारे पण्डितेर प्रति जिज्ञास्य हइयाछे—

१ दफा—

यद्यपि एक व्यक्ति धर्म्माकाङ्क्षी हइया तीर्थयात्रा करिया २० वत्सरेर मध्ये आपन वासस्थाने पुनरावित्ति ना हइया सर्व्वदा अज्ञात थाके, ताहाते एइ जिज्ञास्य ये ऐ संवाद रहित व्यक्तिर जीवनावशेष विवेचित हय कि ना।

आर ऐ व्यक्तिर समुदाय वस्तु दान ग्रहीता व्यक्तिसकले ऐ अज्ञातसंवादी अर्थात् अनुद्दिश्य व्यक्तिर तीर्थयात्रार पूर्व्वकृत उइल प्रमाण प्राप्त वस्तु ऐ लिपिर निर्द्धारित मते आपन २ अंश विभाग करिया लइते पारे कि ना, येमन एक मृत व्यक्तिर इष्टेटेर न्याय--

२ दफा—

एवं ऐ व्यक्ति आपन वासस्थाने २० वतसरेर मध्ये किम्वा परे पुनरावित्ति हइले उहार निज वस्तुसकलेर मालिकत्व रहित हइया अनधिकारि हइवे कि ना—इहाइ पण्डितेर व्यवस्थार अविश्यक हइयाछे, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तरञ्च यत्तदब्दीयसितम्बरमासीयदशमदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति प्रस्थानदिनमारभ्य विंशतिवर्षपर्य्यन्तं संवादरहितस्य मरणावधारणं शास्त्रतो भवति। एवञ्च सति तदीय-[1]

१ तत्वीयसमुदाय० —व्यप० ।

समुदायधनं तत्कृत-उइलशब्दप्रतिपाद्यलिपिनिर्द्धारितस्वस्वांशानुसारेण दान-ग्रहीतारो मृतस्य कस्यचित् त्यक्तधने तदुत्तराधिकारिन्यायेन विभज्य ग्रहीतुं शास्त्रतः शक्नुवन्तीति।

अत्र प्रमाणम्—

गतस्य न भवेद् वार्त्ता यावद् द्वादशवार्षिकी।

प्रेतावधारणं तस्य कर्त्तव्यं सुतबान्धवैः॥—इति तिथितत्त्वादि(पृ० २०) ग्रन्थधृतयमवचनम्॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम्॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

स एव प्रस्थितो व्यक्तिविशेषो यदि विंशतिसंवत्सरमध्ये तत्परतो वा पुनरागच्छति तदा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितानुमितप्रस्थितमरणावधारणप्रयुक्त-स्वत्वनाशस्तस्य स्वकीयधने न भवति। प्रस्थानेन सम्भावितस्वत्वनाशस्य प्रस्थितागमनेन बाधितत्वात्। किन्तु प्रथमप्रश्ने दानोल्लेखो लिखितः। तत्र दाने यद्ययं नियमो दातुर्यद्यहं जीवामि न जीवामि वोभयथैव दान-ग्रहीतृणां तद्धनं भविष्यति तदैतादृशदानेन दातुः स्वत्वत्यागेन स्वामित्व-राहित्यं शास्त्रीयमेव। यदि तद्दाने अयं नियमो यद्यहं जीवामि तदा तद्धनं ममैवास्ति, यदि न जीवामि तदा दानग्रहीतृणां भविष्यति, तदा दातुर्जीवन-दशायां दातुः स्वत्व(ा)त्यागेन स्वामित्वराहित्यं न भवति—इति वङ्गदेश-चलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति।

अत्र ओइल-शब्दप्रतिपाद्यलिपिमदृष्ट्वा प्रश्नयोराशयः सम्यङ् न ज्ञातोऽत एवैवमुत्तरं लिखितमिति निवेदनम्॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितद्वितीयप्रमाणम्॥ १॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिख-नञ्चेति॥२॥

ईशावीशब्दप्रतिपाद्ये षुगुणगजेन्दुमितान्दीयदिशम्बरमासीयमुनीन्दुमित-

दिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितोपरिलिखितविच रपत्रद्वय-प्रश्नपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८९)—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता। आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपियेर साहेवेर बैठके तारिख ६ आगष्ट इं सन १८३५ साल मोतावके २२ श्रावण सन १२४२ साल वाङ्गला दिवस वृहस्पतिवार।—

वैठल छाएल—

छाएलेर पक्षेर एक केता ओकालतनामा मुनशी आब्दोछ आलि दाखिल करिया हाजीर आइल। इतः पूर्व्वे इं सन १८३५ सालेर २० जुलाइ तारिखे ओलिएम वेराडीन साहेवेर ऐ सनेर १६ जुनेर छादेर हओया हुकुम मोतावक छाएलेर छओयाल तत्समिभ्यारि कागजात उपस्थित हइया छाएलेर गरहाजीरि प्रजुक्त मुलतवि छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइल। एइ आदालतेर हाकीमान ओलिएम वेराडीन साहेव ओ डेविड इस्मीट साहेवेर २ जानेओयारि ओ १६ जुनेर छादेर हओया रायेर सहित पडागेल। यदि स्यात ऐइ छओयाल छरछरि आपील मञ्जुरिर प्रार्थनाय वटे, इं सन १८१४ सालेर २६ कानुनेर ३ दफार २ धारार लिखित प्रकरणसकल ताहार मञ्जुरिर जन्य प्रकाश नाइ, ये तद्दृष्टे मञ्जुरिर योग्य हय, आर जज साहेवेर फयछलार उपर, जाहा रेजष्टर साहेवेर फयछलार पर हय, ताहार खास आपील प्रचलित कानन मते मञ्जुर हइते पारे ना। ए प्रजुक्त आमार राय ओलिएम वेराडीन साहेवेर १६ जुनेर लिखित राएर सहित एइ प्रकारे अक्य हय—ये ताहार मञ्जुरिर हुकुम

छादेर हइते पारे ना। किन्तु यदि स्यात् एइ आदालतेर तावेर कोन आदालते नितान्त आइनेर वहिर्भूत कोन हुकुम छादेर हय, आर से मोकद्दमा खास आपील मञ्जुरिर योग्य ना हय, ताहार दोरस्त करा ए आदालत हइते उचित। तद्दृष्टे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशय जिज्ञाशा उचित जे छाएल ओ अन्य २ मुर्द्दाआलेहमेर गोलामीर विशयेर मोकद्दमा शास्त्र मतो तहकिक हइया निष्पत्य हइयाछे, कि ना। परे हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल डेविड इष्मीट साहेव हाकीमेर तलव मते, ये कागज पौछियाछे, ताहा सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये उक्त पण्डित उपरेर विशयेर जओयाव लिखेन। यदि स्यात् जजसाहेवेर फयछलाय तजविजेर कोन व्यतिक्रम प्रकाश हय तवे ताहार शोधन करार जन्य हुकुम छादेर हइते पारे, आर यदि पण्डितेर जओयावेर द्वाराय व्यतिक्रम प्रकाश ना हय, ए आदालतेर हस्तार्पनेर कोन कारण हइते पारिवेक ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवोशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयषष्ठदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यत्तदब्दीयतन्मासीयरसपक्षमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

एतद्धर्माधिकरणार्थिनस्तदितरप्रत्यर्थिनां च दासत्वविषयकविवादनिष्पत्तिःशास्त्रानुसारेण जातास्ति-इति मन्वादिशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति।

अत्र प्रमाणम् —

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः-इत्यादि नारदवचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयशिवमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रैः तद्विवादविषयनिविष्ट-

पत्रजातैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

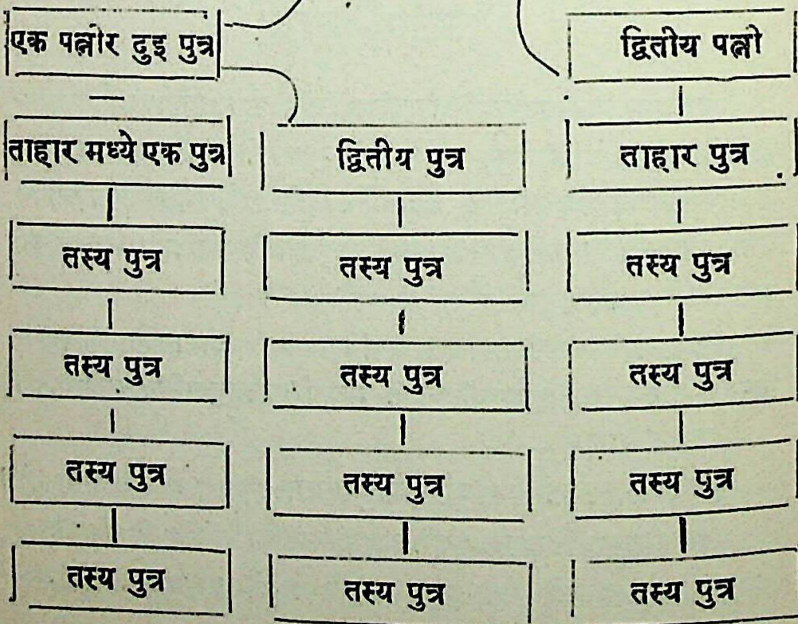
श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८३) श्रीदुर्गा शरणम्

सवालेर तरजमा—

यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दु आपन वृद्ध प्रपितामहेर सहोदर भ्रातार पौत्रेर वंश ओ आपन वृद्ध प्रपितामहेर वैमात्रेय भ्रातार पौत्रेर वंश एइ दुइ व्यक्ति ओयारिश राखिया मरियाछे, ए प्रकारे शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त धन, अस्थावर हउक, किम्वा स्थावर हउक, बिभक्त हउक, किम्वा अविभक्त हउक, उभयेर वंशके अर्शिवेक, किम्वा मृत व्यक्तिर वृद्धप्रपितामहेर सहोदर भ्रातार पौत्रेर वंश, ये अव्यवहित सम्पर्की वटे, केवल सेइ पाइवेक इति ।



श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषु-गुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतधनिवृद्धप्रपितामहसहोदरभ्रातृपौत्रवंशमृतधनिवृद्धप्रपितामहवैमात्रेयभ्रातृपौत्रवंशयोर्म्मध्ये मृतधनिवृद्धप्रपितामहसहोदरभ्रातृपौत्रवंशस्यैव मृतधनित्यक्तविवादास्पदीभूतधने मृतधनिसन्निकृष्टसपिण्डत्वेनाधिकारः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्----

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्-इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(८४) रुवकारि मिछिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोयेल साहेवेर वैठके। सन १८३५ तारिख ११ डिसेम्वर मोतावक्के सन १२४२ वाङ्गला तारिख २७ अग्रहान रोज शनिवार ॥

४८४ लम्वर सदर---

जगन्नाथवसु — आपीलाण्ट

रामकानाइवसु — रेष्पाडेण्ट

आपीलाण्टेर उकिल सिवनारायनचट्टोपाध्याय उपस्थित हइल। रेष्पाडेण्ट स्वततः वा उकिलतः उपस्थित नाइ। मकर्द्दमा तरतिव नम्बर मते वर्त्तमान वत्सरेर १ डिसेम्बर तारिखे आमार वैठके रुवकार हइया कतक कागजात दृष्टिर परे ऐ दिवसेर रुवकारिर लिखित हेतुते मोलतवि छिल, अद्य पुनराय रुवकार हइया हिसावेर विषये आपीलाण्टेर उकिलेर कथार आभाष विवेचनाय उचित हइल ये मिछिलेर सम्वलिष्ट २ दुइ खाता एइ आदालतेर खाजाञ्चीर जिम्बा करा जाय। जे से रामकानाइवसुर खातार लिखित अङ्कसकल, जाहा तारिणीचरणवसु ओ जगन्नाथदासेर नामे लिखित आछे, जगन्नाथदासेर खातार अङ्कसकलेर सहित, जाहा रामकानाइवसुर नामे लिखित आछे, मोकावेला अर्थात् ऐक्य करिया समान अथवा न्यूनातिरेक, जाहा प्रकाश हय, ताहार कैफियत दाखिल करे। एवं जे हेतु प्रकाश आछे जे फरियादी रामकानाइवसु पिता ओ एइ मकर्द्दमार एक जना आसामी तारिणीचरणवसु उहार पुत्र एवं फरियादिर निकट एइ मकर्द्दमार दाविर टाका कर्ज लओन आसामिर सहित अर्थात पिता पुत्रेर एक स्थान वास ओ एकान्नभूक्तेर समय प्रकाश आछे। अतएव आदालतेर पण्डितेर स्थाने ए विषयेर प्रश्न, जेमत प्रकार विषये पिता कर्त्रिक पुत्रेर प्रति कर्ज्जा टाका प्राप्ति जन्य नालिश ए प्रदेशेर चलित शास्त्र मते वैध एवं जथार्थ वटे कि ना, आविश्यक। अतएव हुकुम हइल जे एइ रुवकारिर नकल एइ विषयेर उत्तर लिखनेर इङ्गिते जे यदि स्यात् पुत्र पितार स्थाने एकेत्र वास ओ एकान्नभूक्त अवस्थाय टाका कर्ज नय, ताहा प्राप्ति जन्य पुत्रेर प्रति पितार नालिस वैध ओ यथार्थ वटे कि ना-एइ आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय, एवं मकर्द्दमार मिछिलेर सम्वलिष्ट खाता आदालतेर खाजाञ्चीर जिम्बा हय-जे से उपरेर लिखित मत कैफियत १ एक सप्ताहेर मध्ये गोजराय इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइष्ट्राकोएलसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयशिवमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयमुनीन्दुमितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥–

यदि पितापुत्रयोरेकपाकेन वसतोर्म्मध्ये पुत्रः पितुः सकाशाद् ऋणं गृह्णाति तदा तत्प्राप्त्यर्थं पुत्रं प्रति पितुरभियोगः शास्त्रविहितो न भवति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

भ्रातॄणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि ।

प्रातिभाव्यमृणं साक्ष्यमविभक्ते न तत्स्मृतम् —इति विवादभङ्गार्णवादि(१ विवा० १५२ क ,ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २।५२)वचनम् ।।१।।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयफिवरवरीमासीयदिङ्मितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(८५) मोकाम कलिकातार सदर देओानि आदालतेर इं० सन १८३५ सालेर १६ दिजम्वर मोतावेक वाङ्गला सन १२४२ सालेर २ पौष वुधवार दिवशेर श्रीयुत ओलीयम व्राडिन साहेवेर वैठकेर रोवकारि—

भिन्ननारायणसिंह वनामे तिलकधारिसिंह ओ भिन्नधारिसिंह ओ गायरह ।

छायेलेर उकिल मुनशी ओलीउल्ला हाजिर आइल । पञ्चाश

टाका मूल्येर इष्टाम्पेर पर छायेलेर दरखास्त मौजे भजापट्टीर अर्द्धेक ओ मौजे नओरङ्गावादेर मोछल्लमेर चारि आना ओ मौजे नोमा औ मौजे दिखि ओ गायरहर मोट सोल आनार वारो आना हिश्यार दखल पाइवार ओ हकीयतेर तजविजेर ओ कालेकट्टरिर केतावे नाम लेखाइवार मोकर्द्दमाय जमा रुलेर तिन गुण ओ वयमेन्यादिर टाका मुवलगे एक हाजार दुइ सत शात्तशष्टी टाका साढे दश आनार संख्याय खास आपिल मञ्जुर हओनेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेर नामेर उकालतनामा ओ सन १८३३ सालेर ८ जुलाइ तारिखेर लिखित तेरहोत जेलार सदर आमिनेर तजविज करा एक केता डिगरिर नकल ओ सन १८३५ सालेर २० आगष्ट तारिखेर ऐ जेलार जजसाहेवेर एक केता फयशलार नकल ओ सन १८१६ सालेर ३० जुलाएर लेखा जेला मजकुरेर रेजष्टर साहेवेर एक केता फयसालार नकल ओ सन १८१६ सालेर २३ जुलाइयेर प्रकाश हओा तेरहोत जेलार आदालतेर पण्डितेर एक केता व्यवस्थार नकल सम्वलित, ये एइ मासेर प्रथम दिवसे दाखिल हइयाछिल, अद्य दरपेष हइया दृष्टे आइल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्व शास्त्रेर विवरण ज्ञात हओा उचित वोध हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर नकल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्चम दिवसेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय ।

प्रश्नः—यद्यपि स्यात् तेरहोत जेला निवासीय दुइ व्यक्ति हिन्दु पैतृक विशयेर पर साधारणे दखलीकार ओ उहारा देनादार, एवं उभयेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण थाके, आर एमन कोन विशय उहादिगेर ना थाके जे ताहा हइते उहादिगेर देनार टाका परिशोध हइते पारे ओ उहारा अनुपाये पैतृक विशय अप्राप्त-व्यवहार पुत्रगण थाकितेओ आपन २ महाजनेर देना परिशोधार्थे[१]

१—परिशोधार्थं-व्यप० ।

विक्रय अथवा तमलीक करे, तवे ऐ विक्रय ओ तमलीक पश्चिम-देशीय चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडीनसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेशवोशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्वरमासीयरसेन्दुमित-दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयवेदपक्षमित-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रति-पाद्यं च शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरा-प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ —

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेषु पौत्रेषु चानुज्ञानादावसमर्थेषु भ्रातृषु वा तथाविधेष्वविभक्तेष्वपि सर्व्वकुटुम्बव्यापिन्यामापदि तत्पोषणे चावश्य-कर्त्तव्येषु च पित्रादिश्राद्धादिषु स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमेकोऽपि समर्थः कुर्य्याद्—इति मिताक्षरा(पृ० २००)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयफित्रवरीमासीयैकादश-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८६) प्रथम प्रश्नः—

यदि कोनो व्यक्ति दुइ स्त्री राखिया लोकान्तर हय, आर ताहार ज्येष्ठा स्त्री अवीरा, कनिष्ठा स्त्रीर गर्भजातक कन्यार एक पुत्र अर्थात् मृता व्यक्तिर दौहित्र सन्तान थाके, तवे एतद्देशीय चलित शास्त्रसम्मत उत्तराधिकारि के हइते पारे ?

द्वितीय प्रश्नः—

यद्यपि एतद्देशीय चलित शास्त्रानुसारे दौहित्र सन्तान उत्तराधिकारि हय, तवे ऐ ज्येष्ठा अवीरा स्त्रीर जीवनावधि भरण-पोषणार्थेर कि हइते पारे। सन १८३५ साल तारिख २७ जुलाइ मो० सन १२४२साल तारिख १२श्रावण।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुण-गजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयशिवनेत्रमितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य धनिनो द्वे पत्न्यौ जीवन्त्यौ चेत्तदा द्वयोः पत्न्योरेव मृतस्य धनिनस्त्यक्तस्थावरास्थावरसमुदायधने यावज्जीवं समानाधिकारः। तयोर्द्वयोः पत्न्योर्म्मध्ये एका चेज्जीवन्ती, तदा केवलं तस्या जीवन्त्या एव यावज्जीवं मृतधनित्यक्तसमुदायधनेऽधिकारः। जीवन्त्योर्द्वयोः पत्न्योर्जीवन्त्यां वैकस्यां पत्न्यां मृतधनिदुहितुर्दौहित्रस्य वा मृतधनित्यक्त-धने नाधिकारः इति।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैवपर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्— इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनम्॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयगजेन्दुमित-दिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८७)—मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर इ० सन १८३५ सालेर १४ जुलाइ मोतावक वाङ्गला सन १२४२ सालेर ३१आषाढ मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम ब्राडीन साहेवेर वैठकेर रोवकारि—

गोलोकनारायणराय छाएल

छाएलेर उकिल सदासुखपण्डित हाजीर आइल। छाएलेर छओोलात ओ ताहार सम्वलित कागजात, जे ए आदालतेर सावेक हाकिम रिचार्ड ओआलपोल साहेवेर वैठकेर मोतालक छिल, अद्य आमार वैठके दरपेष हइया पाठ करा गेल। कोन हुकुम देओनेर पूर्व्व निचेर लिखित विषयेर प्रत्युतर ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओा उचित वोध हइल, ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्च दिवसेर मध्ये लेखेन-ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय। एइ हेतु जे श्रीमती तारिणी किछु टाका मृत कालीप्रसादरायेर पुत्रगण श्यामसुन्दर देओ प्रभृतिर स्थाने कर्ज्ज लय, ओ शेष ताहा परिशोध ना हओने ऐ श्यामसुन्दर प्रभृति आदालतेर डिगरि ऐ श्रीमतीतारिणीदेव्यार नामे हाशील करिया चारि पाच वत्सर पर्य्यन्त, जे ऐ श्रीमती जीवद्दशाय छिल, ताहा जारि ना करिया उहार मृत्युर पर डिगरि जारिर दरखास्त छाएलेर नामे जे उत्तराधिकारि हेतुते मोट परगने भओोलेर नय आनार मध्ये तिन आना ऐ श्रीमतीर तेज्य अंशेर पर दखलीकार हइयाछिल, जेलार आदालते गुजराय, ओ छाएल आपत्य करे जे ऐ श्रीमतीर स्वकीय ऋनेर टाकार जओ व देओन आमार पर नाइ। ए जन्य जिज्ञाशा करा जाइते-छे जे वङ्गदेशीय चलितशास्त्रानुसारे ऐ श्रीमतीर देना परिशोध करा छाएलके उचित हय कि ना—इति।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवे-

देन्दुमितदिवसीयविचारपत्रं तत्प्रतिरूपसहितं च तदब्दीयागस्तिमासीय-दिङ्मितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया व्यवस्थालिखनार्थं प्राप्तम्। किन्तु तद्विचारपत्रान्मृततारिणीदेवीत्यक्तं धनं तस्याः स्त्रीधनमासीत्, तत्पति-पुत्रादिपरित्यक्तं वा तत्संक्रान्तमासीदिति, किं वा तारिणीदेव्या एतद्दानं किमर्थं कृतमिति, तारिणीदेव्या सहैतद्धर्माधिकरणार्थिनः कः सम्बन्धः इति च त्रितयं ज्ञातुं न शक्यते। तत्त्रितयज्ञानं विना प्रभोराज्ञापितव्यवस्था भवितुं न शक्नोतीति। अतो निवेदयामि। यथा आज्ञा तथा कर्तव्यमिति निवेदनमिति।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयगुणपक्षमित-दिनसम्बन्धिबुधवासरे मयैतन्निवेदनं कृतमिति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रतिपाल्यतमश्रीवैद्यनाथमिश्रस्य निवेदनमिति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडीनसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवेदेन्दुमितदि-वसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयागस्तमासीयदङ्मित-दिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे तत्प्रभुधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरस-गुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रवरीमासीयवसुमितदिवसीयविचारपत्रान्तरं यत्तद-ब्दीयतन्मासीयवेदपक्षमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे च मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते––

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सतीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दु-मिताब्दीयफेब्रवरीमासीयवसुमितदिवसीयप्रभुकृतविचारपत्रदृष्ट्या च तारि-णीदेवीकृतदानपरिशोधनमर्थिना शास्त्रानुसारेण कर्त्तुमुचितं न भवति–इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्ररवरीमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुकृताज्ञानुसारेण निवेद्यते—

प्रभुसमर्पितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवेदेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रं तदब्दीयागस्तिमासीयदिङ्मितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे यद्यपि मया प्राप्तम्, किन्तु कर्म्मबाहुल्यवशात्तत्समये तदन्तर्गतप्रश्नाशयो नावगतो यदैतस्योत्तरं लेखनीयं तदैवैतस्य प्रश्नस्यार्थोऽपि सम्यग्ज्ञातव्य[1] इत्येव मनसि निधाय प्रभुसन्निधौ निवेदनं न कृतम्। एतस्मिन्नेवावसरे श्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिभिराज्ञप्तं निवेदनलिखनार्थमेकमाज्ञापत्रमीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयेन्दुगुणमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे प्राप्तम्, तदनन्तरं तन्निवेदनलिखनमत्कर्त्तव्येतरेतरकार्य्यसमुदायव्यग्रेण प्रभुसमर्पितप्रश्नस्य प्रश्नान्तरजातस्य वा तत्पूर्व्वमपि प्राप्तस्योत्तरलिखने श्रीश्रीश्वरपूजार्थं धर्म्माधिकरणावकाशात् पूर्व्वमवकाशलेशोऽपि न प्राप्तः। अनन्तरं चेषुगुणमितदिनपरिमितो धर्म्माधिकरणस्यावकाशोपि श्रीश्रीश्वरपूजार्थमुपस्थितः। अत एव श्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिभिराज्ञप्तं तन्निवेदनपत्रं लिखित्वेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे दत्तम्। तदनन्तरं च यद्यत्प्रश्नजातं प्रभुसमर्पितप्रश्नात् पूर्व्वं परतो वा प्राप्तं तस्य तस्योत्तरलिखनप्रवृत्तेनापि यस्य व्यवस्थाजातस्य मत्कर्त्तव्येतरेतरकार्य्यस्य वा

---

१. सम्यक् ज्ञातव्यः—व्यप०।

श्रीमतां प्रभूणामेतद्धर्म्माधिकरणाधिपतीनामवान्तरधर्म्माधिकरणपतीनां वा आज्ञावशात् शीघ्रता जाता, तद्व्यवस्थाजातं प्रथमतो लिखित्वा दत्तम्, तत्तत् कर्म्मं च कृतम्। अनन्तरं प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरलिखनप्रवृत्तेनापि यद्विषयत्रयं प्रभुसन्निधौ निवेदितं तस्य त्रितयस्य ज्ञानं प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरलिखने अत्यावश्यकं जातम्। तस्य त्रितयस्य ज्ञानं विना प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरं दातुमशक्तेनागत्य प्रभुसन्निधौ निवेदितमिति निवेदनमिति॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितमिदं निवेदनपत्रं दत्तमिति।

श्रीर्जयतितराम्

प्रतिपाल्यतमश्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा शरणम्

(८८)—जिला कटकेर दिमानि आदालतेर सदर आमिन आलार वैठकेर सवाल। मोकाम कलिकातार सदर दिमानि आदालतेर पण्डितानेर प्रति। प्रथम सवाल एइ ये, क्रय ओ विक्रय प्रभृति मोकद्दिमार विषयेते शास्त्रेर आज्ञासकल हिन्दुजातीर मध्ये वाङ्गला ओ ओडिस्या ओ वेहार ओ तैलङ्ग ओ महाराष्ट्र देशेर एक प्रकार वटे, कि पृथक पृथक् इति।—

द्वितीय सवाल एइ ये, हिन्दुजातीर मध्ये क्रय ओ विक्रयेर स्थले क्रेता ओ विक्रेतार स्वीकार कराते क्रय विक्रय सिद्ध हय, कि मूल्येर समस्त टाका दिले सिद्ध हय, कि किञ्चित मूल्य दिले ओ निलेओ सिद्ध हय इति।—

तृतीय सओाल एइ ये, यद्यपि कोनो व्यक्ति हिन्दु जाति आपन स्त्री ओ अप्राप्त व्यवहार पुत्र विद्यमान थाकिते पैतृक कोनो स्थावर किम्वा स्वोपार्ज्जित कोनो स्थावर काहारो निकट विक्रय करे, तवे ए प्रकार विक्रय शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना इति।—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुण-गजेन्दुमिताब्दीयाकतूवरमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

हिन्दुजातीयक्रयविक्रयप्रभृतिविवादविषयकशास्त्राज्ञा वङ्गदेशे उत्कल-देशे वेहारदेशे त्रैलिङ्गदेशे महाराष्ट्रदेशे च क्वचित् क्वचित् स्थलविशेषे एकाप्यस्तीति ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

क्रयविक्रयस्थले समस्तमूल्यग्रहणपूर्व्वकक्रेतृविक्रेत्रोः स्वीकारेण विक्र-यस्य सिद्धिर्भवति । किञ्चिन्मूल्यग्रहणेन विक्रयस्य सिद्धिर्न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

मत्तोन्मत्तेन विक्रीतं हीनमूलं भयेन वा ।
अस्वतन्त्रेण मूढेन त्याज्यं तस्य पुनर्भवेत् ॥—इति वीरमित्रोदयादि-(पृ० ४४१)ग्रन्थधृतवृहस्पति(पृ० १५५)वचनम् ॥१॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचित् पत्न्यां विद्यमानायामप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेष्वपि विद्यमानेषु क्रमागतं स्वोपार्जितं वा स्थावरं शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थव्यतिरेकेण विक्रीतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थाव्यतिरेकेण[1] विक्रीतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति—इति कटकप्रदेशचलितमनु-मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः ।
स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥—इति मिताक्षरा प्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

---

१. कार्य्यार्थव्यतिरेकेण—व्यप० ।

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्तिं ते ऽप्यभिकांक्षन्ति न दानं न च विक्रयः ॥—इति मिताक्षरादि-
(पृ॰ २००)ग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

अप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेषु पौत्रेषु चानुज्ञानादावसमर्थेषु भ्रातृषु वा तथा-विधेष्वविभक्तेष्वपि सर्व्वकुटुम्बव्यापिन्यामापदि तत्पोषणे चावश्यकर्त्तव्येषु पित्रादिश्राद्धादिषु स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमेकोऽपि समर्थः कुर्य्याद्—इति मिताक्षरा(पृ॰ २००)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासोयदिङ्मितदिन-सम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्—
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(८९) मोकाम कलिकातार सदर देओानि आदालतेर इङ्गरेजी सन १८३६ सालेर ७ जानेर मोता(ब)के वाङ्गला सन १२४२ सालेर २४ पौष वृहस्पतिवार दिवशेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम ब्राडीन साहेवेर रोवकारि ।—

काशीचन्द्रमुस्तोफि छायेल—

छाएलेर उकिल शिवनारायणचट्टोपाध्याय हाजीर आइल । सन १८३५ सालेर १९ दिशम्बरेर लिखित हुगलि जेलार आदा-लतेर एक केता रिटरण तथाकार एक केता रोवकारि ओ ओछि-नामार नकल ओ गयरह ऐ रिटरणेर सम्वलित सन मजकुरेर ३१ आगष्टेर प्रकाशित ए आदालतेर हुकुमेर जओावे प्राप्त ओ अद्य दरपेष हइया छायेलेर छओाल ओ गरह ऐ छओालेर संक्रान्तेर कागजसकलेर सहित ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्य-वस्था दृष्टे आइल । ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित हइयाछे जे यद्दि एक व्यक्ति अविरा कन्यार स्वामि-कुलेर स्वामिर भ्रातार न्याय प्रभृति जे ताहा हइते ऐ अवीरा स्त्रीर धर्म्म ओ लज्जा

मानेर रक्षणावेक्षण हइते पारे थाके, तवे आपन स्वामीर गृहे अवीरा स्त्रीर जाओन कर्त्तव्य वटे, ओ यद्यपि ऐ प्रकार ना थाके, ओ ऐ कन्यार पितृकुलेर पिता ओ भ्राता प्रभृति थाके जे ताहा-देर हइते ऐ कन्यार धर्म्म प्रभृति लज्जा मानेर रक्षणावेक्षण हइते पारे, तवे ताहा त्याग करिया कन्या मजकुरार आपन स्वामिर गृहे जाओन आविश्यक राखे ना; वरं स्वामिकुलेर एक व्यक्ति पुरुस रक्षणावेक्षणेर उपयुक्त ना थाकार सम्भवे ऐ स्त्रीर रक्षणा-पेक्षण ऐ स्त्रीर पितृकुलेर मनुष्यदिगेर पर उचित वटे। किन्तु व्य-वस्था मजकुरा श्रीमती कमलकुमारिर स्वामि मृत रमेशचन्द्रेर लिखिया देओ। ओछिनामा दिष्ट व्यतिरेक लिखित हइयाछे। ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ प्राप्त ओछिनामा एइ हुकुमे जे नकल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्चदिवसेर मध्ये वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे लेखेन जे ओछिनामा मज-कुरार दिष्टे अप्राप्तव्यवहारा श्रीमतीकमलकुमारी स्वामीर ग्रहे आपन शाशुडिर निकट थाकन आविश्यक वटे, अथवा ताहार पितार निकट थाकिते पारे—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति।

श्रीकृष्णः शरणम्

परमपूजनीयश्रीमतीपद्माकुमारीदासी माता ठाकुराणी श्रीचर-णाम्बुजेषु।

लिखितं श्रीरमेशचन्द्रदत्तकस्य ओछियतनामापत्रमिदम्। कार्य्यनञ्चागे[१] आमि सारिरिक पीडाय अत्यन्त पीडित, एवं जीवन संशय वोध हइतेछे। अतएव एदयने आमार होष वाहाल आछे, आपन स्त्री श्रीमतीकमलकुमारीदासीके पुष्यपुत्र लओनेर अनुमति पत्र लिखिया दिया आमार पैतृक ओ सोपार्जित मनकुला ओ गएर मनकुला दोरोवस्त विषयेर

१.—कार्य्यं च। आगे-इति साधीयान् पाठः।

एवं आमार ऐ स्त्रीर ओ ताहार लओ़ा ऐ पुष्यपुत्रेर रक्षणा ओ हेफाजत कारण आपनाके ओछि मकरर करिया लिखिया दितेछि—जे आपने मालिक निचेर तपसील सकल कर्म्म करिवेन।

१ दफा। दोरवस्त एमलाक मनकुला ओ गयेर मनकुला, जे किछु आमार दखले आछे ओ जाहा आमार सरिकानेर निकट हइते वुझ समुझ करिया लइते वक्री आछे,—ताहा वुझ समुझ करिया लइया तावत विषये दखिलकार थाकिया हेफाजत कारवेण, एवं देना ओ पाओना जाहा आछे ताहा वुझ समुझ करिया दिवेन ओ लइवेन ॥—

२ दफा। नित्य-नैमित्तिक क्रिया-कलाप ओ संसारेर खरच-पत्र अर्थात परिवारेर भरण पोषणादि समय मत करिवेन ॥—

३ दफा। आमार स्त्री ओ आमार अनुमत्यानुसारे यथाशास्त्र जे पुष्यपुत्र लइवेक, ऐ पुष्यपुत्रेर एवं आमार ऐ स्त्रीर रक्षणा-पक्षन आपने करिवेन। जावत ऐ पुष्यपुत्र वयेष-प्राप्त ना हय तावत समुदाय विशय ओछि सुरत आपनकार दखलकवजे थाकिवेक। ऐ पुष्यपुत्र वयेष-प्राप्त हइले आपने ताहाके समजाइया दिवेन। यद्यपि पुष्यपुत्रेर वयेस-प्राप्त हओनेर मध्ये आपने कोन पीडाय अथवा अन्य कोन कारणे जीवन संशय वुझेन, तवे आपन परिवर्त्ते अन्य काहाके खातिर्जमा मते ओछि मकरर कारिवार एक्तेयार आपनकार थाकिल ॥—

दाफा। आमार पैतृक ओ सोपार्जित कालेकट्टरि मालगुजारि समपर्कीय ओ पत्तनि ओ दरपत्तनि तालुकात जे आछे, ताहाते आमार एलागाएत खरच-पत्रेर वाहुल्यताय ओ अन्य देना परिशोधे सन हालेर सदर मालगुजारि आदायेर अनेक असंस्थान आछे। आपने ऐ तालुकातेर मध्ये कोना एक अथवा ततोधिक तालुक पत्तन करिया दरपत्तन दिया ताहार पन वाहाय ऐ असंस्थान मालगुजारिर सरवराह करिया विषय रक्षा करिवेन। इति सन १२३७ साल तारिख ६ कार्त्तिक—

इशादी

श्रीरामदत्त	श्रीवैद्यनाथमित्र
सां० देवानन्दपुर ।	सां० हाजीपुर पं० चौमुहा ।
श्रीगोविन्दपाल	श्रीपाँचकडिघोष
सां० देवानन्दपुर ।	सां० गटु ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रोलियमवेराडीनसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयमुनिमित-दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितासीयन्नामाख्यं पत्रं च यत्तदब्दीयफेवरवरीमासीयशिवमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितासीयन्नामाख्यपत्रदृष्ट्या अप्राप्तव्यवहारायाः श्रीमत्याः कमलकुमार्य्याः पतिगृहे श्वश्रूसन्निधानस्थितेः शास्त्रानुसारेणावश्यकता नास्ति स्त्रीत्वेन स्वतोऽस्वतन्त्रायाः स्त्र्यन्तररक्षकत्वस्याशास्त्रीयत्वेन तस्य पितृसन्निध(ा)ने स्थितिर्भवितुमर्हति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने ।

रक्षन्ति स्थाविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥—इति मनु(९।३)-वचनम् ॥१॥

भर्त्ता रक्षति यौवन इत्यादि प्रायिकम्, अभर्तृपुत्रायाः सन्निहितायाः पित्रादिभिरपि रक्षणात्—इति कुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीग्रन्थ(पृ० २४६)लिखनम् ॥२॥

मृते भर्त्तर्य्यपुत्रायाः पतिपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ।
विनियोगात्मरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥

परिक्षीणे पतिकुले निर्म्मनुष्ये निराश्रये ।

तत्सपिण्डेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ।।—इति दायभागादि-(पृ० १७३।१७४)ग्रन्थधृतनारद(१३।२८-२९)वचनञ्चेति ।।३।।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेल मासीयेषुमितदिन-सम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रासीयन्नामाख्यपत्राभ्यां प्रहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९०)—रुवकारि मिछिल मोकाम कलिकाता सदर देओयानी आदालतेर सन १८३६ सालेर मार्च्च मासेर स्याष्टादस दिवस बुधवारे डिवड इसमिट साहेव-कायेम मोकाम हाकिमेर वैठके ।।—

जगतचन्द्रअधिकारि— साएल

साएलेर उकिल निलमनिवन्द्योपाध्याय हाजीर हइल । सन १८३५ सालेर दिजम्वर दशम दिवसेर जिला वर्द्धमानेर जज साहेवेर ओ जिलार पण्डितेर व्यवस्थानुसारे सायेलेर एवं मधूसूदनवडाल प्रतिवादिर पूर्व्वपुरुषेर स्थापित ओ प्रकाश करा श्रीश्रीश्वरठाकुर-ठाकुराणी सूद्रजाति सेवकेर दिगेर वाटिते लइया जाइवार अनुमतिते मकद्दमा निष्पत्य करियाछेन, ए कारण साएल ताहाते असम्मत हइया श्रीमन्दिर हइते ठाकुर-ठाकुराणी अन्यन्तरे लइया जाओया रहित हुकुम छादेर हओनेर प्रार्थनाय आपन सओाल आर उकिलेर नामेर ओकालतनामा ओ सन १८३५ सालेर दिजम्वरमासेर दशमदिवसेर ऐ जिला आदालतेर रुय-कारिर नकल ओ साएलेर सन १८३२ सालेर आगष्टमासेर सप्तदशदिवसेर हुकुम देओया दरखास्तर नकल आर सन १८३५ सालेर जानेओरि मासेर चतुर्द्दश दिवसेर हुकुम देओया मधुसूदन

वडाल प्रतिवादिर दरखास्तर नकल आर ओ जिला आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल सम्वलित एइ मासेर पञ्चम दिवसे सेरेस्ताय दाखिल हइयाछिल, अद्य तारिखे दरपेस हइया पडा-गेल इति। जिला मजकुरेर जज साहेवेर गतो सनेर दिजम्वर मासेर दशम दिवसेर रुवकारि द्वाराय प्रकाश हइल जे जिलार पण्डित सदर आमिनेर काछारिते उभय विवादीर जे सकल साक्षी गुजरियाछे तदनुसारे उभय विवादीर पूर्व्व पुरुसेर रीति अनुसारे ठाकुर-ठाकुराणीजीउके ताहारदिगेर शूद्रजाति सेवकेर वाटीते लइया जाओया प्रमाण हइयाछे। एवं ओ पण्डित सदर आमिनेर व्यवस्था द्वाराते ओ ठाकुर-ठाकुराणीजिउर शूद्रसेवकेर दिगेर वाटीते गमने देवत्त हानि हओया किछु वोध हय ना। ये हेतु एक वार तथाय गमन करियाछिलेन, ए कारण साएलेर प्रति किछु हुकुम छादेर करार पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर द्वाराय एइ व्यवस्था तलव करा उचित हइल जे यदि ब्राह्मणेर प्रकाशीत ठाकुर ओ ठाकुराणीजिउ एक वार शूद्रजाति सेवकेर दिगेर वाटीते गमन करिया थाकेन, तवे पुनराय पूर्व्वेर रीति अनुसारे ठाकुर-ठाकुराणी शूद्रसेवकेरदिगेर वाटीते गमन करिते पारेन कि ना। एवं यदि गमन करेन ताहाते ताँहार-दिगेर देवत्तर किछु हानि हय कि ना। एमते हुकुम हइल जे ए आदालतेर पण्डित वङ्गदेशेर चलित शास्त्रानुसारे उपरेर लिखित वित्तान्तेर व्यवस्था पञ्च दिवसेर मध्ये दाखिल करेण। व्यवस्था दाखिल करा पर्य्यन्त सओयाल स्थकिद थाकिल इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतडिविडइशमिटसाहेव-धर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासी-यरसेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीय-

द्विपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

ब्राह्मणजातिप्रकाशितदेवताविग्रहाभ्यामेकवारं केनचिन्निमित्तेन शूद्रजातिसेवकस्य गृहे गतं चेत्तदनुसारेण पुनरपि तन्निमित्तवशाच्छूद्रजातिसेवकस्य गृहे ताभ्यां विग्रहाभ्यां गन्तुं शक्यते। तद्धेतुवशाच्छूद्रजातिसेवकगृहगमनेन चैतादृशविग्रहयोर्देवत्वहानिर्न भवति–इति वङ्गदेशचलितमन्वादिधर्म्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्म्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत्॥ इति मनुवचनम् ॥१॥
देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्त्तिताः।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥ इति बृहस्पतिवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयाङ्कमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(९१)—तरजमा सवालात—

जिला तिरहुतेर कायेम मोकाम सदर आमीन आला सैयद अवदुल ओ आहिद खान वहादुरेर वैठकेर सवाल सदर दिमानी आदालतेर पण्डितानेर प्रति ओ वाराणसेर पाठशालार पण्डितानेर प्रति—

मदारीलालेर उत्तराधिकारि रामभञ्जनसिंह आपीलाण्ट ओ तालेवरसिंह रष्पाडण्टेर मोकद्दिमाते मैथिल देशेर चलित

शास्त्रानुसारे ओ वाराणस देशेर चलित शास्त्रानुसारे ओ नदियार चलित शास्त्रानुसारे यवाव लिखेन—इति।

प्रथम सवाल—एइ ये मैथिलदेशेर चलित शास्त्रानुसारे विभागेर अर्थ कि—इति।

द्वितीय सवाल—एइ ये मैथिलदेशर चलित शास्त्रानुसारे साधारण्य कय प्रकार वटे—इति।

तृतीय सवाल—एइ ये ए प्रकार कोन साधारण्य आछे, ये हिन्दुजातिर सन्तानहीन कन्यासकलेर अधिकार पितार मृत्युर पर पितामहेर सपिण्ड विद्यमान थाकिते पितृपितामहेर त्यक्त धने हय कि ना इति।

चतुर्थ संवाल—एइ ये यद्यपि कोनो व्यक्ति आपन पितामहेर पौत्रसकलेर सहित विवाद उपस्थित करिया आपन अंशेर डिगरि आदालत हइते पाइया ओइ डिगरी अनुसारे दखिलकार हइया आपन जीवन पर्य्यन्त पृथक् पृथक् असूल तहसील करिया मरियाथाके, तवे एमत विषयेर विभाग वला याइवेक कि ना इति।

पञ्चम सवाल - एइ ये यद्यपि कोनो व्यक्ति हिन्दु आपन पितामहेरपौत्र सकलेर सहित पृथगन्व ओ कारोवार ओ दान ओ ग्रहण ओ आय ओ व्यय पृथक् पृथक् करिया ओ पितामहेर त्यक्त किञ्चित भूमि अविभक्त राखितो, ओ ओइ भ्रातासकल आपन आपन अंशेर परिमित असूल तहसील पृथक् पृथक् करितेछिलेन—ए प्रकारे ओइ पितामहेर त्यक्त स्थावर विभक्त जाना जाइवेक कि, अविभक्त जाना जाइवेक। ओ ए प्रकार साधारण्य कन्यार अनधिकारेर कारण हइते पारे कि ना इति।

षष्ठ सवाल—एइ ये यद्यपि पितामहेर पौत्रसकलेर मध्ये क्रमागत स्थावर विभक्त ना हइया थाके, ओ ओइ स्थावरेर उपस्वत्व अंशीसकल आपन आपन अंशेर अनुसारे पृथक पृथक असूल ओ तहसील करिते थाकेन—तवे ए प्रकारे ओइ स्थावर विभक्तेर मध्ये गणना हइवेक कि ना, ओ ओइ स्थावर विभक्त-

पदेर अर्थ हइवेक कि ना, ओ ओइ स्थावर विभक्त पदेर अर्थेर मध्ये गणित हइवेक कि, अविभक्त पदेर अर्थेर मध्ये गणित हइवेक इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमताब्दीयसितस्वरमासीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिभृगुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तत्तदेकदेशे प्रादेशिकस्वत्वव्यवस्थापनं मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण विभाग इति ।

अत्र प्रमाणम्—

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तत्तदेकदेशेषु व्यवस्थापनम्— इति मिताक्षरा(पृ० १९७)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

विभागशब्दस्त्वनेकस्वाम्यानां द्रव्यसमुदायविषयाणां तत्तदेकदेशे व्यवस्थापने शक्तः—इति वीरमित्रोदयादि(वी॰ मि॰ पृ० ५२२)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

एकदेशोपात्तस्यैव गोभूहिरण्यादावुत्पन्नस्य स्वत्वस्य विनिगमनाप्रमाणाभावेन वैशेषिकव्यवहारानर्हतया अव्यवस्थितस्य गुटिकापातादिना व्यञ्जनं विभागः—इति दायभाग(पृ० ८)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारण्यमनेकविधमस्ति । तत् सर्वमधोलिखितवचनजातेष्वेव स्पष्टमिति ॥

अत्र प्रमाणम्—

दानग्रहणपशवन्नगृहक्षेत्रपरिग्रहाः ।
विभक्तानां पृथग् ज्ञेयाः पाकधर्मागमव्ययाः ॥— इति विवादरत्नाकर(पृ० ६०६)विवादचिन्तामणि(पृ० २५३)विवादचन्द्र(पृ० ८७) मिताक्षरावीरमित्रोदय(पृ० ७१६)दायभाग(पृ० २३०)दायतत्त्व(पृ०

१७९)विवादार्णवसेतु(पृ० ८३)विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारद(नाम· सं० पृ० १५६) वचनम् ॥१॥

साक्षित्वं प्रातिभाव्यं च दानं ग्रहणमेव च।

विभक्ता भ्रातरः कुर्य्युर्नाविभक्ताः कथञ्चन ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-नारद(नामस० पृ० १५६)वचनम् ॥२॥

येषामेताः क्रिया लोके प्रवर्त्तन्ते स्वरिक्थतः।

विभक्तानवगच्छेयुर्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारद-(नामस० पृ० १५७)वचनम् ॥३॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मृते पितरि विद्यमानेषु पितामहसपिण्डेषु पितृपितामहत्यक्तधने येन साधारण्येन सन्तानरहितदुहितॄणामधिकारो न भवति, तत्साधारण्यञ्च भ्रातॄणां पितृव्यभ्रातृपुत्रादीनां वा सपिण्डानां परस्परमविभक्तधनाना-मेकपाकेन वसतामेकत्र पितृदेवद्विजार्च्चनमायव्ययादिकमपि कुर्वतां परस्पर-मृणप्रातिभाव्यसाक्ष्यादिकमप्य(पा)कुर्व्वतां[1] तत्तत्कर्म्मजातमेवेति।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति।

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

चतुर्थप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशं धनं विभक्तमध्ये गणितं भवितुं शक्नोतीति।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

पञ्चमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतत्प्रश्नलिखितपितामहत्यक्तं स्थावरं धनं विभक्तमध्ये गणितं भवितुं शक्नोति, एतादृशसाधारण्यञ्च कन्यान-धिकारप्रयोजकं भवितुं न शक्नोतीति।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति॥

१. °मप्यकुर्व्वताम्—व्यप०।

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

षष्ठप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशं स्थावरं विभक्तमध्ये गणितं भविष्यति, एतादृशं स्थावरं विभक्तपदवाच्यं भविष्यत्येतादृशं स्थावरं विभक्तपदार्थान्तर्गतञ्च भवति ॥—इति मिथिलादेशचलितमनुविवादरत्नाकरविवादचिन्तामणिकल्पतरुपारिजातविवादचन्द्रप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी वाराणसीप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी नदियाप्रदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१०१ लं जारि—

(९२)—जेला चव्विस परगनार मोतालक चौकि नवावगञ्जेर मोनछफी काछारि हइते सदर देमानि आदालतेर श्रीयुत पण्डितेर निकट व्यवस्थाकारण सओल पाठान जाय ।

श्रीमतीपार्व्वतीदासी साकिन नैहाटी प० हाविलीसहर—
डिगरिदार

श्रीमतीठाकुराणीदासी ओ रामनारायणमित्र— देनदार

कालीप्रसादमित्र ओ वेनिमाधवमित्र ओ मधुसूदनमित्र—

नावालगदिगेर माता श्रीमतीकरुणामयीदासी—मोजाहेम ।

गोविन्दचन्द्रमित्र सा० नैहाटी प० कलिकाता—
दोषरा मोजाहेम

दा० २७३॥।.॥ टाका माय खरचा—

यद्यपि कमललोचनदे आपन स्थावर ओ अस्थावर विषये ओ आपन स्त्री श्रीमतीठाकुराणीदासी ओ दुइ कन्या श्रीमती-करुणामयीदासी ओ आनन्दमयीके राखिया परलोक हय आर करुणामयीदासीर गर्भजातक सन्तान श्रीयुतमधुसूदनमित्र ओ वेनिमाधवमित्र ओ कालीदासमित्र नावालग वर्त्तमान थाके— एमत दशाय ऐ करुणामयीर माता श्रीमतीठाकुराणी कमललोचन-देर स्त्री ऐ करुणामयीर स्वामी रामनारायनमित्रेर सम्वलित कमललोचन मजकुरेर खरिदा ब्रह्मोत्तर ॥१ जमि वन्धकेर द्वाराय टाका कर्ज्ज लइया थाके, आर डिगरि हओनेर पर डिगरि जारिर द्वाराय अविनामार लिखित जमि ऐ कमललोचनेर त्यागी वस्तु क्रोक हइया थाके, तवे कमललोचनदेर दौहित्र लोक थाकिते ताहार त्यागी वस्तु ऐ ठाकुराणीदासी ओ रामनारायण मजकुरेर देनाय विक्री हइते पारे कि ना। यदि ठाकुराणी मजकुरा ऐ टाका आपन निज खरच किम्वा आपन स्वामीर गयातीर्थे पिण्डदान किम्वा आपन द्वितीय कन्यार विवाहेर कारण लइया थाके—एमत तृतीय हेतुते कमललोचन मजकुरेर त्यागी वस्तु हइते ठाकुराणीदासीर देना परिशोध हइते पारे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दु-मिताब्दीयदिशम्बरमासीयगुणपक्षमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य मूलधनिनः कमललोचनदेनाम्नो दौहित्रेषु विद्यमानेषु कमललोचनत्यक्तधने पत्नीत्वेन जाताधिकारया ठाकुराणीदास्या मृतधनिपत्न्या प्रश्नलिखिततदृणं यदि शास्त्रीयावश्यक-कार्य्यार्थव्यतिरेकेणार्थात् स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा कृतं स्यात्तदा तदृण-परिशोधनार्थं कमललोचनत्यक्तधनस्य विक्रयो भवितुं न शक्नोति; यदि

च ठाकुराणीदासी तदेव ऋणं शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थमर्थात् स्वकीयभरण-पोषणाद्यर्थं स्वपत्युः श्राद्धाद्यर्थं द्वितीयकन्याविवाहाद्यर्थं वा कृतवती स्यात्तदा कमललोचनत्यक्तधनात् ठाकुराणीदासीकृतर्णपरिशोधनं भवितुं शक्नोति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

भर्त्तुरौर्ध्वदेहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतमिति । वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपीति च—दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

कन्या वैवाहिकञ्चैव प्रेतकार्य्येषु यत् कृतम् ।

एतत् सर्व्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥ इति व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ५४३।पृ० ६८)वचनञ्चेति ॥४॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयशिवमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(९३)—नं० ६७० सदर—

इ० सन १८३६ सालेर १९ मार्च मो० वा० सन १२४२ सालेर ८ चैत्र शनिवारेर श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोएल साहेव विचाराद्ध्यक्षेर आधिपत्येर मोकाम कलिकातार सदर देओयानी आदालतेर मिछिलेर रुवकारि—

राणीजयदुर्गा आपीलाण्ट—
राणीकृष्णमणी रेष्पाडण्ट—

आपीलाण्टेर उकिल वर्ग सदासुखपण्डित ओ वंशीवदन मित्र ओ रामना(रा)यण उपस्थित हइल। रेष्पाडेण्ट एयानामनामा ओ एस्तहारनामा जारि हओनेओ स्वततः वा उकिलतः उपस्थित हइल ना। अद्य एइ मकर्द्दमा संख्यार शृङ्खलामते आमार आधिपत्ये समग्र हइया मिछिलेर कागजसकल पठित हइल। अवधारित हइल ये मोद्दाइया अर्थात् वादी उभयेर स्वीकृत विमलादास्यार स्वोपार्ज्जित सामुदाइक अर्द्धेक मौजे राणी ग्रामेर अर्द्धेक अर्थात उक्त मौजेर।) चारि आना अंश पाओनेर दावि उपस्थित करे। मोर्द्दालेहा अर्थात् प्रतिवादी राणीजयदुर्गा विमलादास्या कत्रिक विक्रयेर आपत्य उत्थापन करिलेक। जेलार सदर आमीन सेइ विक्रयके अवीरा स्त्रीर पक्ष हइते अशीद्ध विवेचना करिया वादीके डिक्री देन। ऐ डिक्री आपीले जेला रङ्गपुरेर जजसाहेवेर अग्रे अङ्गिकार पत्र विक्रीर न्याय साव्यस्थ ना हओनेर वोधे स्थिरतर रहिल, एवं विषय हस्तान्तर हओन सिद्ध वाक्येर विशेष हओनेर निमित्त आपील खास ग्राह्य हइल। अतएव उपरोक्त विक्रयपत्र साव्यस्थ कि असाव्यस्थ—अनुसन्धाने साक्षिगणेर उक्तिसकल दृष्टी करणेर पूर्व्वेइ उचित हइल जे आदालतेर पण्डितके जिज्ञाशा जाय जे। विधवा स्त्री, जाहार सन्तान सन्तत्यादि जीवद्दषाय नाइ, एवं स्वहस्ते विषय उपार्ज्जन करे, से विषय हस्तान्तर करणेर क्षमता राखे कि ना। हुकुम हइल जे एइ रुवकारिर नकल एइ आज्ञाय जे आदालतेर पण्डित लिखित प्रश्नेर उत्तर २ दुइ सप्ताहेर मध्ये दाखिल करेण आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय—इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतबार्ज्जइष्टाकोएलसाहेवधर्म्माधिकरण-

लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयाङ्केन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्तदब्दीयतन्मासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥–

मृतसन्तानया विधवया स्त्रिया यदि स्वयमेव धनमुपार्ज्जितं स्यात्तदा तस्या विधवायास्तद्धनहस्तान्तरकरणक्षमतास्त्येव–इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्त्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादि(पृ० ७६)ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ९०६।पृ० ११०)वचनम् ॥१॥

पतिमरणोत्तरं च विधवाया न कश्चित् स्वामी, किन्तु भरणादिकर्त्ता गुरुरेव श्वशुरादिः, अतस्तदानीमर्ज्जिते स्वातन्त्र्यमेव—इति विवादभङ्गार्णव(२, पृ० ३९४ क)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९४) सर्व्वशास्त्राध्यापक पण्डित आदालत देओानि सदर मोकाम कलिकाता सतचरित्रेषु—

प्रथम प्रश्नमिदम्—

यद्यपि कोन स्त्रीलोक किछु दिव्यादि राखिया निःसन्तान मृत्यु हय। ततपरे ताहार त्यज्य धनेर उपर ताहार स्वामीर पितामहेर सधवा एक कन्या एवं ऐ कन्यार एक दत्तक पुत्र एवं ऐ मृता स्त्रीर स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातुपौत्र राधागोविन्दनामक एक जना आर ऐ मृता स्त्रीर स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातुपुत्रवधु श्रीमतीलक्ष्मीप्रियानाम्नी एक जना एवं तस्य दत्तकपुत्र गोविन्दकीशोर

नामक दाविदार हय; तवे यथाशास्त्र ऐ सकल दाविदारानेर मध्ये कोन व्यक्ति ऐ मृतार त्यज्य धनाधिकारि हइवेक, एवं दत्तक पुत्रेर माता वर्त्तमान थाकिले दत्तक पुत्रके धन पौछिते पारे कि ना— एहार यथाशास्त्र उत्तर लिखिवा। परन्तु दुइ किता वंशावली-पत्रिर नकल तोमार ज्ञातार्थे प्रश्नपत्र सम्वलित पाठान जाइतेछे इति। १ माहे मार्च्च सन १८३६ इङ्गरेजी मतावक सन १२४२ वा० तारिख १९ माहे फाल्गुन ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं वंशावलीपत्रद्वयं च यदीशवीशब्द-प्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गल-वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति हरिश्चन्द्ररायत्यक्ततत्पत्नीसंक्रान्त-धने मृतायाः स्त्रियाः पत्युः पितामहस्य सधवाकन्याया दत्तकपुत्रस्यार्थान्मृतधनिहरिश्चन्द्ररायपितामहदौहित्रस्यैवाधिकारः—इति; एवं दत्तकपुत्रस्य मातरि विद्यमानायामपि दत्तकपुत्रस्यैवाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनु-दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥१॥

पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्तिक्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पितृव्यपौत्राभावे पितामहदौहित्रस्याधिकारः—इति दायभागटीका-(पृ० २१८)दायक्रमसंग्रह(पृ० ८)प्रभृतिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजूनमासीयाङ्कमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारवंशावलीपत्राभ्याञ्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥ —

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(६५) यदि कश्चिन्निरपत्यो ब्राह्मणः स्वभार्य्यां समीपवर्त्तिनः सपिण्डांश्च त्यक्त्वा मृतस्तदा तत्समीपवर्त्तिनि सपिण्डे विद्यमाने लब्धपतिधना तत्पत्नो स्वभर्त्तुः स्थावरधनं पत्रकरणपूर्व्वकं कस्मैचिद्दत्तवती चेत्, तत्स्त्रीकृतं दानमप्रामाणिकम्।

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि।
विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः॥—इति विवादचन्द्रग्रन्थस्थकृतनिवृत्तिप्रकरणधृतार्षवचनादिति॥—

सही—कल्याणमिश्रपण्डित
आदालत दिमानी जिले तिरहुत वकलम
रामनाथमिश्र पण्डित।

शरीरार्द्धं स्मृता जाया पुण्यापुण्यफले समा।
यस्य नोपरता भार्य्या देहार्द्धं तस्य जीवति।
जीवत्यर्द्धशरीरेऽर्थं कथमन्यः समाप्नुयात्॥
अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता।
स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि॥

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः॥—इति दायभागविवादचन्द्रस्थकात्यायनबृहस्पति(पृ० २११) वचनादिति॥—

सही—कल्याणमिश्र पण्डित आदालत दिवानी
जिले तिरहुत वकलम
रामनाथमिश्रपण्डित।

नं० ३५९ सदर—

इ० सन १८३६ सालेर १७ मे मोतावक सन १२४३ सालेर ५ ज्यैष्ठी मङ्गलवारेर प्रकाश्य मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर मिछिलेर रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोयेल साहेबेर नेसस्ते—

गम्भिरराय, ताहार मृत्युर पर विजयराय ओ गायरह—

आपीलाण्टान
मोछमात धनेश्वरी ओ गयेरह — रेष्पानडेण्टान

आपीलाण्टानेर उकिल वजरङ्गीलाल ओ रेष्पानडाण्टानेर उकिल मुनशी दादारवक्स हाजीर हइल। एइ मोकर्दमा अद्य तरतिव नम्बर मते आमार नेसस्ते रोवकार हइया मिछिलेर कागजात पठीत हइल। ताहार मध्ये ये जेला तिरोहतेर आदालतेर पण्डितेर दुइ व्यवस्था मोलाहेजा हइल। यदि स्यात् उक्त दुइ व्यवस्थार मध्ये रेजेष्टर साहेवेर सओयाल ओ जजसाहेवेर सओयालेर मध्ये विभिन्नतार प्रति दृष्टीते आमार निकट कोनो प्रभेद प्रकाश नाइ। किन्तु जे हेतुक प्रकाश आछे—जे एइ मकर्दमार खाश आपील लिखित व्यवस्थासकलेर लेहाजे मन्जुर हइयाछे, ए जन्य ए आदालतेर पण्डितके उक्त व्यवस्थासकलेर लिखित जओयावेर यथार्थता तिरहुतेर चलित शास्त्र अर्थात् मैथिल अनुसारे जिज्ञासा जन्य ताहा समर्पन उचित विवेचना हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल मोकर्दमार नथिर ग्रन्थितो आसल दुइ व्यवस्था समेत एइ आदालतेर पण्डितेर निटक पाठान जाय। एइ हुकुम, ये उक्त पण्डित दुइ व्यवस्था दृष्टेर पर एइ विषयेर जओयाव जे लिखित व्यवस्थासकल तिरहुत जेलार चलित शास्त्र अनुसारे यथार्थ वटे कि ना—एक सप्ताह मेयाद मध्ये दाखिल करेन इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयमुनीन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपरत्रमेवं तत्समर्पिततोरभुक्तिजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थाद्वयं च यत्तदब्दीयतन्मासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥—

प्रभुसमर्पितव्यवस्थाद्वयोस्तात्पर्य्यार्थस्त्वयमेव—कस्यचिदनपत्यस्य मृतस्य ब्राह्मणस्य पत्न्याः स्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिधनस्य पतिसपिण्डेषु विद्यमानेष्वन्यस्मै हस्तान्तरकरणे क्षमता नास्ति, किन्तु यावज्जीवं भोगाधिकार इति। तत्प्रभुसमर्पितव्यवस्थाद्वयोपरिलिखितप्रश्नद्वयलिखितवृत्तान्ते सति मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति, प्रभुसमर्पितव्यवस्थाभ्यां तद्वयवस्थाद्वयोपरिलिखितप्रश्नाभ्यां चैतद्विवादे पत्न्याः स्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिधनस्य हस्तान्तरकरणक्षमताबोधकशास्त्रीयावश्यकहेत्वनवगमादिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राभ्यां व्यवस्थापत्राभ्यां च निवेदनपत्रेण च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९६)—९३ ल० सदर—

इ० सन १८३६ सालेर ६ एफरेल मोतावक सन १२४२ सालेर २६ चैत्र तारिख वुधवारेर प्रकाश्य मोकाम कलिकातार सदर देओयाणी आदालतेर रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोयेल साहेवेर एजलागे—

रामनाथसिंह— आपीलाण्ट—

राजारूपसिंह ओ राधेकृष्ण— रेष्पाडेण्टान—

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी दादारवक्स ओ रेष्पाडेण्टानेर उकिल मुनशी अलीउल्ला उपस्थित हइलो। एइ मोकर्द्दमा अद्य तरतिव नम्वर मते आमार नेसस्ते रोवकार हइया मिछिलेर कागजसकल विवेचनाय जाना गेलो जे मुद्दइआन अर्थात रेष्पाडेण्टान राजरूपसिंह ओ राधेकृष्णदे नओयान परगनार दत्तेट ओ गयरहे मौजाहायेर पर हक्-सफा सुरते दखल करणेर दाविते

विक्रेता धुरमनसिंह ओ खरिदार रामनाथसिंहेर नामे जेला साहाबादेर देओयाणी आदालते नालिस करिलेक। जेलार जज साहेवेर तजविजे आदालतेर मौलविर स्थाने फतओया अर्थात् व्यवस्था लइया सफा अनुसारे विरोधीय वस्तुर प्रति मुदाइआनेर दावि यथार्थ हओनेर विशय डिक्री करिलेन ओ सेइ डिक्री द्वितीय निष्पत्य स्थाने एलाका आजिमाबादेर प्रोविनशीयन कोर्टे वहाल करिल, जे वर्त्तमान आपीलाण्ट ताहाते नाराज हइया ए आदालते आपील खास उपस्थित करिलेक। सन १८३३ सालेर २३ जुलाइ तारिखेर रोवकारि मते एइ आदालतेर हाकिम रावट हालडन राटरि साहेवेर नेसस्त हइते मन्जुर हइलो। जे हेतुक प्रकाश जे आपील खास मञ्जुरिर कारण—ये जाहार उभय पक्ष हिन्दुजाति, से मकद्दमा तजविज हओया शरा अर्थात् जवनीय धर्म्मशास्त्रेर अधिकारिके जिज्ञास्यमते। अतएव अन्य विषयसकल तजविजेर पूर्व्वे आदालतेर पण्डितके ब्याओरा जिज्ञाशा उचित। यथा उभय पक्षेर उकिल प्रकाश करिलेक जे यदि जजसाहेवेर फयशालार लिखित सओ-यालसकलेर जओयाव वेहारदेशेर चलित शास्त्रानुसारे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओया जाय लभ्यजनक हइवेक। अतएव हुकुम हइलो जे एइ आदालतेर पण्डित निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव दुइ सप्ताहेर मध्ये दाखिल करेण, ओ रोवकारिर नकल वाङ्गला तरजमार सहित आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय ॥—

१ प्रथम सओयाल—

देओट तालुकेर हिस्यादार धूरमलसिंह विक्रेता, वावु रामनाथसिंह खरिदार, राजरूपसिंह ओ राधेकृष्णसिंह हक-सफा तलविर ओजरदार, आर मौराशी तालुक मजकुरार हिस्यादारान, एवं चतुर्थ पट्टी, जाहाते विक्रेता वेसरिक आछे, ताहारो हिस्या-दार राजरूपसिंह ओ राधेकृष्ण ओजरदारेर दाओट तालुकेर

४५

मध्ये अन्य एक मौजार खरिदार उक्त वावुरामनाथसिँह। यदि-स्यात् विक्रेता आपन अंश वावुरामनाथसिंहेर निकट विक्री करे, उपरेर लिखितेर प्रति विवेचनाय राजरूपसिंह ओ राधेकृष्णेर हक-सफा अर्शे कि ना ॥—

२ द्वितीय सओयाल—

धूरमलसिंह विक्रेता वावु रामनाथसिंह खरिदारके सन १२३५ फछलीर लेखा एक केता बयनामा मवलगे तिन सत टाकार क्रये दे(य), ओ वायनार तारिख हइते एक मासेर मध्ये कवाला लिखिया दिवार ओ तत्कालीन पानेर वाकि मवलगे एक हाजार पञ्चाश टाका लइवार एकरारे लिखिया देय। इति मध्ये राजरूप-सिंह ओ राधेकृष्ण एक मास गतो हओनेर पूर्व्वे अर्थात् सन १८२८ सालेर १९ मै तारिखे तिन सत टाका उपस्थित करिया तलवे लओया सुरत अर्थात् तत्परता चेष्टा करिलेक, फलितार्थं आदालते दाखिल करिलेक। ए प्रकार विषय एमत् आनामत हक-शफा रक्षा करणार्थे फलदायक हय कि ना ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयविचारपत्रा-न्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिशनिवा-सरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितप्रथमप्रश्नलिखितविवेचनया धर्म्मशास्त्रानुसारेण राजरूप-सिंहराधेकृष्णयोर्हकशफाशब्दप्रतिपाद्यं भवितुं न शक्नोतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

व्यवहारान् नृपः पश्येद्विद्वद्भिः ब्राह्मणैः सह ।

धर्म्मशास्त्रानुसारेण—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१) वचनम् ॥१॥

यद्येकजाता बहवः पृथग्धर्म्माः पृथक्क्रियाः ।
पृथक्कर्म्मगुणोपेता न तत्कार्य्येषु सम्मताः ॥२॥
स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति वीरमित्रोदयादि-ग्रन्थधृतनारदवचनद्वयम् ॥३॥—

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितद्वितीयप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति एतादृशमूल्यस्थापनं इकसफाशब्दप्रतिपाद्यस्य रक्षणार्थं धर्म्मशास्त्रानुसारेण फलदायकं न भवति—इति वेहारदेशचलितमनुमितात्तरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ॥३॥—

यद्यपि महानिर्व्वाणतन्त्रग्रन्थे इकसफाशब्दप्रतिपाद्यविषये उपरि-लिखितव्यवस्थाया विरुद्धमपि लिखितमस्ति, किन्तु महानिर्व्वाणतन्त्रग्रन्थो धर्म्मशास्त्रान्तर्गतो न भवति। अत एव तद्ग्रन्थानुसारेण व्यवस्था न लिखिता इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्वाविंशतितम-दिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९७)—लम्वर—११६

मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डित समीपे प्रश्न एइ –

कालीकान्तवल	आपीलाण्ट
पार्व्वतीदास्या	रेष्पाडण्ट

यदि कोन व्यक्ति तिन पुत्र ओ एक स्त्री राखिया मृत्यु हय, ओ ताहार स्त्री ओ पुत्र दिगेर अनैक्यताभाव अर्शे, तवे एतद्देशीय

चलित शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर स्त्री पुत्रदिगेर समक्षे पतिर वित्तेर अंश पुत्रदिगेर समांस मते पाइते पारे कि ना। यदि पुत्रदिगेर समांसे वित्तांसि ना हय, तवे कि परिमाणे वित्तांसि हय—एहार उत्तर लिखिवेन इति। १८३६ ता-८ फेब्ररओरी मोतावेक वङ्गला सन १२४२ तारिख २७ माघ ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चिद्व्यक्तिविशेषस्त्रीन् पुत्रानेकां पत्नीं च विहाय मृतः स्यात्, अथ च मृतस्य पत्न्या सह मृतस्य पुत्राणामर्थान्मातृपुत्राणां मध्ये पुत्रकृतपितृधनविभागद्वारेणानैक्ये सति अर्थात् त्रिभिः पुत्रैर्म्मात्रे भागमदत्त्वा पितृधनं समांशेन विभज्यते, तदा मातापि पुत्रसमांशं ग्रहीतुमर्हति, पुत्रकृतपितृत्यक्तधनविभागोपक्रमं विनैव मात्रा स्वेच्छयैव विभागं कृत्वा पतित्यक्तधनांशयाचनेन अनैक्ये सति माता विद्यमानेषु पुत्रेषु पतित्यक्तधनांशं पुत्रांशं समांशानुसारेण प्राप्तुं नार्हति, किन्तु यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तधनावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य चाधिकारिणी भवति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितरि चोपरते सोदरभ्रातृभिर्विभागे क्रियमाणे मात्रे पुत्रसमांशो दातव्यः—इतिदायभाग(पृ० ६७)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम्
नरकं पीडने चास्य तस्माद् यत्नेन तं भरेत् ॥ इति दायभागादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥२॥

पिता माता गुरुर्भार्य्या प्रजा दीनाः समाश्रिताः ।

अभ्यागतोऽतिथिश्चैव पोष्यवर्ग उदाहृतः ॥ इति दायभागटीका(पृ० ३४)धृतमनुवचनञ्चेति¹ ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयगुणेन्दुमित-दिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां इङ्गरेजीपत्राभ्यां च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९८) नं० २०२ सन १८३३ ।—

मोकाम कलिकातार सदर देओयानी आदालतेर मिछिलेर रुवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोयेल साहेवेर नेसस्ते इंराजी सन १८३६ सालेर १६ आपरेल मोतावक वाङ्गला सन १२४३ सालेर ५ वैशाख शनिवार प्रकाश्य—

शिवनारायणचौधुरि	आपीलाण्ट
राधाप्यारीदासी ओ गयरह	रेष्पाण्डेण्टान
राधामोहनमित्र	जेलार मोजाहेम
मधुसूदनदास	एइ आदालतेर छायेल

आपीलाण्टेर उकिलवर्ग जेमेष कोलब्रोक सदरलेण्ड साहेव ओ सदासुखपण्डित ओ रेष्पाण्डेण्टानेर उकिल ताराचाँदवन्द्योपाध्याय ओ राधामोहनमित्रेर उकिल गौरहरिवन्द्योपाध्याय ओ मधुसूदनदासेर उकिल शिवनारायणचट्टोपाध्याय उपस्थित हइल। एइ मकद्दमा अपरिमित तारिखे आमार नेसस्ते रुवकार हइया मिछिलेर कागजसकल पठित हइल। वोध हइल जे मोद्दई आपीलाण्ट लाट राधानगर आपन खरिदा पत्तनिर हकियते

---

१. मनुस्मृतौ नोपलभ्यते।

দখল পাওনের দাবিতে বয়নামার লিখিত মূল্য ও তালুকের উপস্বত্ত্ব মবলেগ ৭০৫১ টাকার তায়দাদে রাধাপ্যারিদাসী ও কৃষ্ণদাসদত্ত্ব ও তিলকরামদত্ত্ব আসামীয়ানের নামে হুগলিজেলার দেওয়ানি আদালতে এই এজহারে নালিশ করে যে রামগোপালদত্ত্ব ওহার ভ্রাতৃগণ তিলকরামদত্ত্ব ও রঘুনাথদত্ত্বের সহিত অন্ন প্রথক হওনের পরে সন ১২২১ সালে আপন উপার্জ্জন হইতে নাট রাধানগর তালুক পত্তনী সুরতে খরিদ করিয়া দখিল ও কাবেজ হইয়া লোকান্তর হয়। তাহার মৃত্যুর পর তাহার বনিতা রাধাপ্যারীদাসী আপন স্বামীর জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা তিলকরামদত্ত ও পোষ্য পুত্র ও দৌহিত্র কৃষ্ণরামদত্ত্বের সরবরাহকারির দ্বারা দখিলকার হইয়া সদর জমিদারের জমিদারি সেরেস্তায় আপন নামে দাখিল করাইয়া নাম জারির লিপি হাসিল করিয়া স্বামির ঋণ পরিশোধ ও মালগুজারির বাকি নিমিত্ত উক্ত তালুকের সামুদাইক হকুক সন ১২৩৮ সালের ২৩ ফাল্গুণ তারিখে মবলগে পাঁচ হাজার টাকা পনে ফরিয়াদির হস্তে বিক্রয় করিয়া, তাহার বয়নামা সাক্ষিগণের সাইদীতে ও রেজেষ্টরী নিশানীতে লিখিয়া দিয়া, খারিজ ও দাখিল করাইয়া ফরিয়াদিকে ও দখীলকার করার পরে উক্তা রাধাপ্যারি অন্য প্রতিবাদিগণের কুপরামর্শে ফরিয়াদির হস্তে বিক্রয় করা অস্বীকার সম্বলিত ফৌজদারিতে দরখাস্ত গোজরায় ও উক্তা রাধাপ্যারী ও তিলকরামদত্ত্ব ও রঘুনাথদত্ত্বের পত্তনী দাবি সুরতে ও জগমোহনমিশ্রের ওয়ারিশ রাধামোহনমিশ্রের উক্ত নাটের চারি আনা রকমে দরপত্তনীদারি পদে দখল থাকনের হুকুম ও লম্বরি নালিসের অনুমতি ফরিয়াদির প্রতি ছাদের করায়। আসামীয়ান তাহার জওয়াবে পষ্ট অস্বীকারী হইয়া বিরোধীয় তালুক যে রাধাপ্যারীর স্বামী রামগোপালদত্ত্বের সোপার্জ্জিত ও তাহার ভ্রাতৃবর্গের সহিত প্রথকান্নে থাকা মুনকীর, বরং এ কাল পর্য্যন্ত তাহারদিগের তাবত কারবার সাধারণে ও এজমালীতে থাকা প্রকাশ

करे, एवं फरियादिर दरपेश करा कवाला जाल ओ कित्रिम करार दिया शास्त्र मते उक्ता राधाप्यारिर कन्या ओ दौहित्र वर्त्तमाने दान ओ विक्रय अशीध्य बयान करे। जेलार जज-साहेब जुरिरदिगेर राय, ए विषयेर विशेष तहकीकाते जे विरोधीय तालुक रामगोपाल दर्त्तेर स्वोपार्ज्जित कि तिन सरिकेर अंश आछे, लइया आपन रायेर ऐक्यताय तदानुसारे सन १२३४ सालेर ३ मार्च्चे तारिखे लिखित फयसलार कारणसकले फरियादिर दावी डिषमिष करिलेन। एइ प्रकारे जे फरियादी, यदि राधाप्यारिदास्यार हिस्यार प्रति कोन दावि राखे. प्रथक नालिश उत्थापन करणेर क्षमता आछे। मोदइ ताहाते नाराज हइया एइ आदालते आपिल करियाछे—जे हेतुक आमार निकट राधामोहनमिश्रेर मोजाहेमो सओयालेर प्रति, जे आपनाके विरोधीय तालुकेर चतुर्थांशेर दरपत्तर्नीदार करार देय, एइ विवेचनाय जे से ए मकर्द्दमार आसामियानेर मध्ये नहे। केवल दरपत्तर्नीदार मात्र, कोन हुकुम छादेर करा आविश्वक नाइ, ओ मधुसूदनदासेर अर्पित दरखास्तेर प्रति ओ जे से आपन खरिद करिया ए आदालते दाखिल करियाछे, कोन हुकुम उपयुक्त वोध हय ना। जखन ए मकर्द्दमा निष्पत्य हइवेक एवं विरोधीय वस्तु, आपीलाण्ट किम्वा रेष्पाण्डेण्ट, जाहार हक, हइवेक, ताहार पर दावि उपस्थित करा व्यतिरेके उहार दखलेर हुकुम हइते पारे ना। अतएव ताहा परित्याग करिया ए मकर्द्दमार आसल अवस्थार प्रति मोहनलालखाँ आपीलाण्टेर मकर्द्दमार प्रसङ्ग जाहा राणी सिरोमणी रेष्पाण्डेण्टेर नामे सन १८१२ सालेर ३१ आगष्ट तारिखे एइ आदालत हइते निष्पत्य पाइयाछे। एवं आमार अनुमाने ताहार लिखित हेतुसकल जावदीय उत्तराधिकारी जाहारा हस्तान्तरेर समय जीवतमान थाके ताहारदिगेर सम्मति ओ अनुमति भिन्य स्वामीर त्याग्यर्य सामुदाइक विषय हस्तान्तर करणेर विषये अशीद्ध वोध हय। अनुष्ठान करा गेल। ताहाते

आपीलएण्टेर उकिल कहिलेक जे आमि अनुमान करि से मकर्द्दमा दान विषयक, ताहाते पण्डितवर्गेर लिखित जे व्यवस्था ताहा एइ विक्री विषयक, मकर्द्दमार सहित कोन सम्पर्क नाइ। ए जन्य ए विषय शास्त्रवेत्ताके जिज्ञाशा करा उचित बोध हइल। अर्थात् एइ आदालतेर पण्डितके जिज्ञाशा करा जाय जे से उपरेर लिखित फयसला दृष्टी करणेर परे सकल उत्तराधिकारि, जाहारा विक्रयपत्र लेखा हइवार समय जीवद्दशाय छिल, ताहारदिगेर अनुमति भिन्न टाकार परिवर्त्ते स्वामीर त्याज्यं सामुदाइक भूम्यादि विक्रयेर प्रति विधवा स्त्रीर क्षमता विषये शास्त्रेर आज्ञा वयान करे, ओ ए विषये स्वामिर ऋण थाकुक वा ना थाकुक कोन प्रभेद आछे कि ना; एवं यदि स्यात् स्वामीर त्याज्यं सामुदाइक भूम्यादि विक्रय करिते ना पारे, तवे तन्मध्ये कि परिमान विक्रय करिवार क्षमता राखे—पष्ट करे। अतएव हुकुम हइल जे मकर्द्दमा अद्य मोलतवी थाके, एवं उपरेर लिखित विषयसकलेर जिज्ञाशा करेण। एइ रुवकारिर नकल एइ आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेवधर्म्माधिकरण—लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयरसेन्दुमित-दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयमेइमासीयशिवमित-दिनसम्बन्धिबुधवासरे तत्समर्पितरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयमुनि-मितदिवसीयविचारपत्रान्तरञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धि-बुधवासरे च मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण प्रभु-समर्पितविचारपत्रलिखितजयपत्रावलोकनेन चोत्तरं लिख्यते—

विक्रयपत्रलिखनकालीनविद्यमानोत्तराधिकारिसमुदायानुमतिमन्तरेण राजतमुद्राविनिमये पत्न्याः स्वसंक्रान्तसमस्तपतिस्थावरादिधनस्य विक्रयकरण-

क्षमता शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थमर्थात् पतिकृतर्णपरिशोधनार्थं पत्यौर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं पतिकुटुम्बभरणार्थं स्वभरणपोषणाद्यर्थं चास्त्येव। पत्नी शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थव्यतिरिक्तस्वेच्छया स्वमरणानन्तरं विद्यमानपत्युत्तराधिकारिस्वत्वनाशकविक्रयकरणक्षमतां न रक्षतीत्येवात्र विशेषः। एवञ्च सति पतित्यक्तस्थावरादिधनान्तर्गतेन यावता धनेन पतिकृतर्णपरिशोधनस्योपरिलिखितावश्यककार्य्यान्तरस्य वा निर्व्वाहो भवति विधवायास्तत्परिमितपतित्यक्तस्थावरादिधनस्य विक्रयकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वमेव। यदि च पतित्यक्तस्थावरादिसमुदायधनस्य विक्रयमन्तरेण पत्नीकर्त्तव्यशास्त्रीयावश्यककार्य्यजातस्य तदन्तर्गतस्य कस्यचिदपि कार्य्यस्य वा निर्व्वाहो भवितुं न शक्यते, तदा तत्तत्कार्य्यस्य निर्व्वाहार्थं पत्न्याः पतित्यक्तस्थावरादिसमुदायधनस्य विक्रयकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वमेव—इति वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

ऋक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

मर्त्तुकामेन वा भर्त्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया।
अप्रपन्नापि सा दाप्या धनं यद्याश्रितं स्त्रिया॥ इति विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

भर्त्त्रा जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्त्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्व्वीत—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥३॥

भर्त्तुरौर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतमिते। वर्त्तनाशक्ताबाधानमप्यनुमतम्। तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि च—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयइन्दुपक्षमित-

दिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

(६६) एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयगुणपक्षमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रं तत्समर्पितैतद्धर्म्माधिकरणीयैतद्विवादविषयनिविष्टव्यवस्थापत्रं तीरभुक्तिजिलाख्यधर्म्माधिकरणीयव्यवस्थात्रयं च यत्तदब्दीयतन्मासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

पूर्व्वसमर्पितव्यवस्थाद्वयमीशवीशब्दप्रतिपाद्याङ्कपक्षगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयदिङ्मितदिनलिखिततीरभुक्तिजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिजजपदाभिषिक्तसाहेवाज्ञप्तप्रश्नोत्तरव्यवस्था च। एतासु ति(सृ)षु व्यवस्थासु तज्जिलाख्यधर्म्माधिकरणाधिपतिजजपदाभिषिक्तसाहेवाज्ञप्तप्रश्नोत्तरव्यवस्था मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारिणी न भवति, पत्नीकृतपतित्यक्तस्थावरादिधनविषयकदानसिद्धिसम्पादकशास्त्रीयावश्यकहेतोस्तद्व्यवस्थापत्रलिखितप्रश्नतद्व्यवस्थाभ्यामप्राप्तत्वात्। पूर्व्वसमर्पितव्यवस्थाद्वयं चार्थादीशवीशब्दप्रतिपाद्याङ्केन्दुगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयशिववक्त्रेन्दुमितदिवसीयतीरभुक्तिजिलाख्यधर्म्माधिकरणाधिपतिराजिस्तरपदाभिषिक्तसाहेवाज्ञप्तप्रश्नोत्तरव्यवस्था तदब्दीयतन्मासीयेषुपक्षमितदिनलिखिततत्प्रभुकृतप्रश्नोत्तरव्यवस्था च तत्तद्व्यवस्थापत्रलिखितप्रश्नद्वयलिखितावस्थायां मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारिणी भवति इत्येतद्विषयिणी व्यवस्था चैतदब्दीयजुनमासीयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे दत्तास्तीति ॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयमुनिपक्षमित-

दिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसंमर्पितविचारपत्रेण चतुर्भिर्व्यवस्थापत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

अत्र प्रमाणम्—

पश्यन्नन्यस्य ददतः क्षितिं यो न निवारयेत् ।

स्वामी सतापि लेख्येन पुनस्तान्न समाप्नुयात् ॥ इति वृहस्पति(पृ० ७५)वचनादिति—

सही -रामनाथमिश्र, पण्डित अदालत दिवानी जिले—तिरहुत ॥

श्रीश्रीदुर्गा

(१००) – लं० ५६४ –

मोतफरका सन १८३६ इ०—

रोवकारि मिछिल आदालत देओनि सदर मोकाम कलिकाता श्रीयुत डेविड इशमितसाहेव कायेम-मोकाम हाकिम आदालय मजकुरार वैठके। तारिख १८ जून सन १८३६ इ० मोतावक ६ आषाढ सन १२४३ वाङ्गला रोज शनिवार ॥—

मोछमात रूकमन— शाएला—

साएलार उकिल तारकचन्द्रराय हाजिर हइलो, गत रोजेर हुकुमानुसारे जिला भागलपुरेर जजसाहेवेर गत २८ माइ माहार लिखित रोवकारि ओ रिटरण जाहा एइ आदालतेर हाल सनेर २४ मार्च्च माहार लिखित रोवकारिर जवावे एइ मकद्दमार कागजात ओ ताहार इंजेरि तरजमा सम्वलित पौछियाछिल, अद्य साएलार सओाल ओ गयरह कागजात सहित उपस्थित हइया विवेचना हइल। जे हेतुक साएलार सओाल प्रति नातक

হুকুম হইবার পূর্ব্বে এই আদালতের পণ্ডিতের স্থানে এই রূপ ব্যবস্থা জে কোন এক দ্যপ্ন বেক্তির এক বিমাতা ও স্ত্রী থাকিলে শাস্ত্র মতে দ্যপ্ন বেক্তির বিমাতা ঐ দ্যপ্ন পুত্রের সরির ও বিশয় রক্ষা করণের স্বত্ব রাখিবেক, অথবা তাহার পত্নী রক্ষক হইবেক-তলব করা আবিশ্যক। এমতে হুকুম হইল জে প্রথমত এই আদালতের পণ্ডিত উপরের লিখিত বিবরণের ব্যবস্থা ৪ চারি দিবসের মধ্যে দাখিল করেণ। তৎপরে জে হুকুম উপযুক্ত প্রকাশ পাইবেক ইতি ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतडेविडइशमितसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयगजेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

धर्म्माधिकरणाधिपतिविवेचनया विक्षिप्तसुद्धत्तरस्वस्य विक्षिप्तस्वत्वास्पदीभूतशरीरधनयोः संरक्षणकरणयोग्यतायाश्च निश्चयो विक्षिप्तविमातृपत्न्योर्म्मध्ये यस्यां भवति तस्या एव विक्षिप्तस्वत्वास्पदीभूतशरीरधनयोः संरक्षणकर्त्तृत्वं शास्त्रानुमतं भवति—इति मन्वादिधर्म्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्ज्जितम् ।
न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु प्रोषितानां तथैव च ॥—इति कात्यायनवचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयाङ्कमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति। —

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१०१)—पण्डितेर पर सओाल—

श्रीरामराममुखोपाध्याय नामे एक जन छिल। ताहार चारि पुत्र। ज्येष्ठ श्रीरामलोचनमुखोपाध्याय, द्वितीय श्रीराममोहनमुखोपाध्याय, तृतीय श्रीरामतनुमुखोपाध्याय, चतुर्थ श्रीताराचाँदमुखोपाध्याय। ताहार मध्ये राममोहनमुखोपाध्याय निःसन्तान फौत करियाछे। आर बाकी तिन जनार ओयारिस वर्त्तमान आछे। ऐ रामराममुखोपाध्याय आपन ब्रह्मोत्तर देड विघा जमि वागान आपन एक कन्या करुणामयीदेवीके दान करे। ताहार दानपत्र एक केता सन ११७४ सालेर २५ वैशाख तारिखेर लिखित दाखिल हइयाछे। ऐ दानपत्रेर शाइद हय नाइ। अतएव जिज्ञास्य एइ ऐ दानपत्रे दानदत्तार ओयारिसान अर्थात ताहार पुत्रसकल सत्ते यदि दान हइया थाके, आर ऐ दानदत्तार पुत्रेरा सेइ दानपत्रे यदि साक्षि ना हइया थाके, आर दानदात्तार अयारिशानेर अनुमति व्यतिरेके ऐ दान यदि हइया थाके, तवे एमत दान सिद्ध हय कि ना—यथाशास्त्र इहार व्यवस्था, जाहा हये, लिखिवेन इति। सन १८३६ साल तारिख १२मे ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दात्रुत्तराधिकारिणां विद्यमानतायां दानं यदि वास्तवं जातं स्याद्, एवं तद्दानपत्रे दातृपुत्राः साक्षिणो नैव जाताः स्युः, दात्रुत्तराधिकारिणामनुमतिमन्तरेण तद्दानं जातं स्यात्, तत्र तद्दानविषयीभूतं धनं दात्रवश्यभर्त्तव्यकुटुम्बभरणोपयुक्तातिरिक्तश्चेत्तदा तद्दानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, तद्दानविषयीभूतं धनं दात्रवश्यभर्त्तव्यकुटुम्बभरणोपयुक्तातिरिक्तं न चेत्तर्हि तद्दानं न सिद्ध्यति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१॥

पण्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात्प्रत्युपकारतः ।

स्त्रीशुल्कानुग्रहार्थं च दत्तं दानविदो विदुः ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारद-(नामसं० पृ० ६०)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयमुनिमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्—
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(१०२)—महामहिम श्रीयुत अध्यापक महाशय वरावरेषु—निवेदन ।

प्रथम प्रश्न :—

एक व्यक्ति धनि आपन स्वोपार्जित तथा पित्रुपार्जित स्थावरास्थावर माय इमारतादि भद्रासन वाटी वागान पुष्करणी तथा व्रह्मोत्तर जमि आपन भोग-दखले कायेम थाकिया ओयारिस चारि पुत्र । ताहार ज्येष्ठ प्राप्त-वयस, मध्यमदीगर नावालगके ऐ सकल वस्तुते भोग-दखले राखिया सन १९०२ साले लोकान्त हयेन । ताहाते ऐ ज्येष्ठ सहोदर ऐ सकल वस्तुर उपस्वत्व तथा किञ्चित २ आपन उपार्ज्जन-द्वारा ऐ संसार भरण-पोषन आन्दाज १७ वतसर करियाछेन । ताहार मध्ये जमिदारलोक तथा इजारादारलोक कोन २ जमि आटक करियाछिल, ताहाते ऐ एकान्नवृत्ति ऐ ज्येष्ठ सहोदर ए जमिर दलिल[1] ओ भोग सप्रमाण देखाइया आपन परिश्रमेर द्वारा ऐ जमिर फसल छाड करिया खालास

१. दखल-इति साधीयान् पाठः ।

करियाछेन। अतएव ए दयने ऐ जमिर किरूप अंश हइवेक्,
शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय ॥—

द्वितीय प्रश्न :—

ऐ चारि सहोदरेर मध्ये तृतीय भ्राता आपन वनिता ओयारिष राखिया ऐ रूप एकान्नवृत्ति थाकिया लोकान्त हयेन। ऐ मृत व्यक्तिर वनिता ओ तिन सहोदर एकान्नवृत्ति थाकिया ताहार मध्ये मध्यम विदेशस्थ हइया आपन चाकुरि द्वारा प्रतिपालन नित्य नैमित्तिक क्रिया आन्दाज २० वत्सर करियाछेन, आर पैतृक भद्रासन वाटी भग्न हइयाछिल, ताहाते अनेक टाका खरच-पत्र-पूर्व्वक उत्तम करियाछेन। ए दयने ऐ वाटीर किरूप अंश हइते पारिवेक, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय ॥—

तृतीय प्रश्न :—

एसकल ब्रह्मोत्तर जमिर मध्ये कोनो जमि जमिदार आटक करियाछिल। ताहाते मध्यम ओ कनिष्ठ सहोदर विदेसस्थ प्रजुक्त ज्येष्ठ सहोदर आदालते आपन नाम जारि करिया साधारणेर धन व्यय करिया ऐ जमिर नालिस करिया खालास करियाछेन। ए दयने ऐ डिगरि जमिर किरूप अंश हइवेक व्यवस्था लिखिते आज्ञा हइवेक ॥—

चतुर्थ प्रश्न :—

ऐसकल सहोदरेर मध्ये मध्यम सहोदर संसार प्रतिपालन करिया आसिते छिलेन। अकुज्ञान मते किछु टाका कर्ज्ज हइयाछे। अतएव ए दयने ऐ संसार भरण-पोषणेर देना ऐ व्यक्ति परिशोध करिवेक, कि ऋण परिशोद हइया अंश हइवेक, ताहार शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय, निवेदनमिति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयाभ्रपद्ममितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोकस्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम् —

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतां भूमिं समं चतुर्द्धा विभाज्यैकैको भागश्चतुर्णां भ्रातॄणां भवतीति ।।--

अत्र प्रमाणम्—

विभजेरन् सुताः पित्रोरूर्द्ध्वमृक्थमृणं समम्--इति दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ।।१।।

पितेव पालयेत् पौत्रान् ज्येष्ठो भ्रातॄन् यवीयसः ।

पुत्रवच्चापि वर्त्तेरन् ज्येष्ठे भ्रातरि धर्म्मतः ।।--इति मनुवचनम् ।।२।।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्--

द्वितीयप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतभद्रासनवाट्याः समं भागचतुष्टयं कृत्वा एको भागो ज्येष्ठस्य, एको भागो मध्यमस्यैको भागो मृतस्य भ्रातुः पत्न्याः, एको भागः कनिष्ठस्येति ।।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणद्वयम् ।।२।।

बिभृयाद्वेच्छतः सर्व्वान् ज्येष्ठो भ्राता यथा पिता ।

भ्राता शक्तः कनिष्ठो वा शक्त्यपेक्षा कुले स्थितिः ।। इति दायभागादि(पृ० ६२)ग्रन्थधृतनारद(नभसं० १३।५)वचनम् ।।३।।

पत्नी दुहितरश्चैव---इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ।।४।।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्--

तत्तद्ब्रह्मत्रभूमीनाम्मध्ये काचिद्भूमिः सराजकरस्थावराधिपतिप्रतिबद्धा सती ज्येष्ठसहोदरेण साधारणधनव्ययेनाभियोगेन च स्वायत्तीकृता स्यात्, तदा तस्यां भूमौ द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितानां चतुर्णां समानांश एव भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणचतुष्टयमेवेति ।।४।।

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

चतुर्णां सोदरभ्रातॄणां मध्ये मध्यमसहोदरेणाशक्त्या यदृणं भ्रातृचतुष्टयसाधारणकुटुम्बभरणार्थं कृतं स्यात्, तदृणं सर्व्वैरेवांशिभिः स्वस्वांशानुसारेण परिशोधनीयम्–इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितृव्यभ्रातृपुत्रस्त्रीदासशिष्यानुजीविभिः ।
यद् गृहीतं कुटुम्बार्थे तद्गृही दातुमर्हति—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ(१ विवा० १६५ ख)धृतबृहस्पति(पृ० ११८)वचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयाक्तूवरमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

कलिकातार सदर देंओनि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल, एइ ये—यद्यपि ए-वी-नामे दुइ जन सहोदर भ्राता छिलो। ताहार मध्ये ए-नामे एक पुत्र राखिया वीनामे द्वितीय भ्राता विद्यमान थाकिते मृत्यु हय। एवं वी-नामे द्वितीय भ्राता एक पत्नी एवं कयेक कन्याके राखिया एवं आपन स्वोपार्ज्जित ओ असाधारण धन राखिया आपन भ्रातृपुत्र अर्थात् ए-नामक आपन भ्रातार पुत्र विद्यमान थाकिते मृत्यु हय। अतएव जिज्ञाशा करा जाइतेछे जे ओइ वी-त्यक्त धन ओइ वीर स्त्रीके किम्वा कन्याके किम्वा भ्रातुष्पुत्रके अर्शिवेक-इहार व्यवस्था वारानशीर चलित शास्त्रानुसारे लिखेन इति।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितअङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्य-मुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य प्रभुप्रेषितगुरुचरणवसुकिरानीशब्दप्रतिपाद्यमुखोच्च-रितशब्दार्थविवेचनया च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति वीनामक-व्यक्तिविशेषत्यक्तधने तत्पत्न्याः, पत्न्यभावे दुहितॄणां चाधिकारः—इति वाराणसीप्रदेशचलित-मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)-वचनम् ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थ(मिता० पृ० २२७)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयरसमितदिन-सम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रसहि-तेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१०३)—२३६ सन १८३४ ई—

ई सन१८३६सालेर२४डिसम्बर मोतावेक वाङ्गला सन १२४३ सालेर ११पौष तारिखेर सदर देओयानी आदालतेर मिछिलेर रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत उइग्रमसनी साहेबेर वैठके—

मोछम्मातसूर्य्यकुङ्वर आपीलाएट
कारुसिंह ओ गयरह रेष्पाडेण्टान

आपीलाण्टानेर तरफ एइ मकद्दमार हामफालेव ई सन१८३५

सालेर १४६लम्बरेर मकर्द्दमार उकिल चारलेस जेमेस कोलब्रोक सदरलेण्ड साहेव ओ मुनशी महम्मद हानिफ ओ एइ मकर्द्दमार रेष्पाडण्टानेर उकिल चारलेस फ्रेञ्च साहेव ओ वलवन्तसिंह सक्कार ओ नम्वर मजकुरेर मकर्द्दमार रेष्पाडण्टानेर तरफ उकिलान तारकचन्द्र ओ श्रीरामराय उपस्थित हइल ओ एइ मकर्द्दमार आपीलाण्टेर उकिलान सदासुखपण्डित ओ मुनशी दादारवक्स पीडित ओजरे उपस्थित नाइ। एइ मकर्द्दमा वर्त्तमान मासेर २२ तारिखे तरतीव नम्वरमते आमार बैठके रोवकार हइया ३३ नम्वर-पर्य्यन्त कागजात दृष्टीपरे दिवा अवसान प्रयुक्त मोलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया मिछिलेर दाखिल हओया व्यवस्था सकल पठित हइल। जे-हेतुक आमार निकटे निचेर लिखितमते आदालतेर पण्डितके जिज्ञाशा आविश्यक-एजन्य हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे आदालतेर पण्डित निचेर लिखित सओयालेर जवाव २ दुइ दिवस मेयादे दाखिल करेण-आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय ओ आदालतेर पण्डितेर निकट हइते जवाव आसा पर्य्यन्त मकर्द्दमा मोलतवि थाके॥—

यदि स्यात् त्रिहुत-जेला निवासी हिन्दुजाति कोन एक व्यक्ति दुइ स्त्री राखिया लोकान्तर हय एवं उक्त व्यक्तिर मृत्युर परे ऐ दुइ स्त्री आपनार दिगेर स्वामीर त्यार्ज्ज विषये अधिकारिणी थाकिया प्रत्येक स्त्री आपन आपन गर्भेर एक एक कन्या राखिया मृता हय एवं ऐ उभय कन्यार मध्ये एक जन एक पुत्र राखिया मरे, अपरा एक पुत्र-प्रसूता हइया उक्त पुत्रेर सहित जीवित। ओ वर्त्तमाना थाके—ए विधाय मृत व्यक्तिर त्यर्ज्ज वस्तु जे कन्या मरियाछे ताहार पुत्रे कि जे कन्या एक पुत्रेर (सहित) वर्त्तमाना आछे ताहाते अर्शिवेक; किम्वा कि। एवं यद्यपि मृत व्यक्तिर ज्ञातिगण, जाहार दिगेर सम्पर्क ऐ मृतेर सहित तिन किम्वा चरि पुरुषेर दुर हय, वर्त्तमान थाके—ए मृत व्यक्तिर

त्याज्यं वस्तुते ताहार दिगेर प्राप्यता ओ यथार्थतार प्रति शास्त्रेर आज्ञा कि आछे–ए विषयेर उत्तर मैथिलशास्त्र जाहा त्रिहुत प्रदेशेर चलित तदनुसारे लेखेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतडइग्रममनीसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयवेदपक्षमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयरसपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य स्थावरादिधने जाताधिकारिण्योर्द्वनिपत्न्योरुपरमे विद्यमानपुत्राया दुहितुरेवाधिकारः ; दुहित्रभावे दौहित्राधिकारः इति कल्पतरुमदनपारिजातविवादरत्नाकर-स्मृतिसार-ग्रन्थेषु लिखितः । किन्तु विवादचिन्तामणिविवादचन्द्र-ग्रन्थेषु न लिखितः इति तृतीयपुरुषीयसपिण्डानां चतुर्थपुरुषीयसपिण्डानां वा अधिकारप्रतिपादकमिथिलादेशचलितशास्त्राणामर्थादधोलिखितग्रन्थजातानां परस्परं विरुद्धमाज्ञाजातमधोलिखितप्रमाणजातेष्वेव स्पष्टीकृतं विस्तरभयाद् व्यवस्थायां न लिखितम्-इति निवेदनम्-इति मिथिलादेशचलितमनुविवादचिन्तामणि-विवादरत्नाकर–विवादचन्द्र-कल्पतरु–मदनपारिजातस्मृतिसारप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

विष्णुः—*अपुत्रस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे दौहित्रगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि*इति ।

दुहितृदौहित्रानन्तरं पुनः बृहस्पतिः—*तदभावे भ्रातरस्तु भ्रातृपुत्राः सनाभयः ।*

सकुल्याः बान्धवाः शिष्याः श्रोत्रियाश्च धनाहकाः ॥–इति कल्पतरु-ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाक् । यदाह विष्णुः—

अपुत्रपौत्रसन्ताने दौहित्रा धनमाप्नुयुः ।

पूर्व्वेषान्तु स्वधाकारे पौत्रा दौहित्र[1]का मताः ।

अयमर्थो याज्ञवल्क्येनापि दुहितरश्चैव इत्यत्रैवकारेण द्योतितः । दौहित्रस्याप्यभावे पितरौ धनभाजौ—इति मदनपारिजातग्रन्थलिखनम् ॥२॥

दुहितृदौहित्रानन्तरं बृहस्पतिः

तदभावे भ्रातरस्तु भ्रातृ-पुत्राः सनाभयः ।
सकुल्या बान्धवाः शिष्याः-श्रोत्रियाश्च धनार्हकाः ॥—इति विवाद-रत्नाकर(पृ० ५१५)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥

एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः - इत्यादि विवादचिन्तामणि-(पृ० २८०)विवादरत्नाकर(पृ० ५६४)विवादचन्द्र(पृ० ८०)प्रभृति-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५) वचनम् ॥४॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृ-गामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि—इत्यादि विवादचिन्तामणि-(पृ० २३५)विवादचन्द्र(पृ० ८१)विवादरत्नाकर(पृ० ५६५)प्रभृति-ग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥५॥

स्वपुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रस्तदभावे साध्वी भार्य्या तदभावे दुहिता तदभावे माता तदभावे पिता तदभावे भ्राता तदभावे तत्पुत्रस्तद-भावे आसन्नसपिण्डस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसपिण्डस्तदभावे आसन्न-सकुल्यस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसकुल्यः—इत्यादि विवादचिन्तामणि-(पृ० २४३)ग्रन्थलिखनम् ॥६॥

बृहस्पतिः
यथा पितृधने स्वाम्यं तस्याः सत्स्वपि बन्धुषु ।
तथैव तत्सुतोपीष्टे मातृमातामहे धने ॥

१. ०पौत्रदौहित्रकाःसमाः—इतिधर्मकोषस्थःपाठः ।

मनुः—
दौहित्रो ह्यखिलम् ऋक्थमपुत्रस्य पितुर्हरेत् ।।
स एव दद्यात् द्वौ पिण्डौ पित्रे मातामहाय च ।।

एतद्द्वयं मात्राद्यभावे पत्नीदुहितरः—इत्यादि क्रमानुरोधात्—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३६)ग्रन्थलिखनञ्चेति ।।७।।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयगजमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

तरजमा सवाल—

(१०४)—अलिफ ओ वे दुइ भ्राता छिलो। ताहार मध्ये कनिष्ठ भ्राता अर्थात वे पित्रादि-क्रमागत धनोपघातव्यतिरेके किछु धनोपार्जन करिलेक। ताहाते ज्येष्ठ भ्राता अर्थात अलिफेर किछुइ स्वत्व छिलोना। वरं आपन जीवद्दशा-पर्य्यन्त अलिफ किछुइ अंश ऐ धनेर पाय नाइ ओ एक पुत्र राखिया मृत्यु हइलो। ताहार पर कनिष्ठ भ्राता आपन स्त्री ओ कन्या-सकलके राखिया मृत्यु हइलो, एवं उक्त व्यक्ति, पुत्र किम्वा पौत्र किम्वा प्रपौत्र किछुइ राखे ना। अतएव प्रश्न करा जाइतेछे जे उपरे ये प्रकार लिखा गेलो ताहाते ऐ कनिष्ठ भ्रातार त्यक्त धने ताहार स्त्रीके अर्शिवेक किम्वा ताहार स्त्रीके ना अर्शिया ताहार ज्येष्ठ भ्रातार पुत्रके अर्शिते पारिवेक इति ।।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितपारशीशब्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रमंगरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयगजमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।।—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति वे-नामकव्यक्तिविशेषत्यक्तधने तत्पत्न्याः पत्न्यभावे दुहितॄणां चाधिकारः—इति वाराणसीप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-(२।१३५)वचनम् ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थ(मिता० पृ० २१७)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रुवरीमासीयगुणपक्षमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितपारशीशब्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१०५)—मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर इं सन १८३६ सालेर १९ मे मोतावेक वाङ्गला सन १२४२ सालेर ७ ज्यैष्ठ वृहस्पतिवार दिवसेर श्रीयुत ओलियेम ब्राडिनसाहेवेर वैठकेर रोवकारि—

भेकनारायणसिंह— वनाम—

तिलकधारिसिंह ओ भेकनारायणसिंह ओ गयरह छापलेर उकिलदिगेर मध्ये एक व्यक्ति मुनशी दादारवक्स ओ द्वितीय पक्ष सदाशिवसिंह ओ भनकसिंह ओ तिलकधारिसिंह खोद ओ मृत रङ्गलालसिंह ओ अमृतलालसिंहेर अप्राप्त-व्यवहार पुत्रगण ठाकुरसिंह ओ कालुसिंह ओ भुवनसिंहेर ओलिर उकिल मुनशी हाछेन आलि हाजिर आइलेन। द्वितीय पक्षेर छओयाल कयेक विषयेर सम्बलित उहारदिगेर उकिलेर नामेर एक केता ओकाल-

লতনামা ও লালা কাশীপ্রসাদের নামের মোক্তারনামা সহিত জে এই মাসের ১২ তারিখে দাখিল হইয়াছিল অদ্য দরপেস হইয়া ছাএলের খাস আপীলের ছওোল ও গায়রহ ঐ ছওোলের এলাকার কাগজসকলের সহিত ও ছাএল জে সকল কাগজ সন হালের ১৪ আপরেলের দরপেস হও। আপন ছওোলের সম্বলিত গুজরাইয়া ছিল, দিষ্টে আইল। পরে দ্বিতীয়পক্ষের উকিল গোপালচন্দ্র ও গায়রহ আপিলাণ্টান, বাবু কুঙরসিংহ রেষ্পাণ্ডণ্টের ২৯০৫ নঃ মোকদ্দমার সন ১৮৩০ সালের ৩ আপরেল তারিখের এনফছালি রোবকারির নকল এক কেতা দাখিল করিলেক, পাঠ করা গেল। তদপরে ছাএলের দাখিল করা মোতিলাল ও কল্যানসিংহ আপীলাণ্টান্ ব্রজলাল ও গায়রহ রেষ্পাণ্ডণ্টদিগের মোকদ্দমার সন ১৮৩৫ সালের ১ জুলাএর এ আদালতের হাকিম শ্রীযুত জার্জ ইষ্টাকোএল সাহেবের বৈঠকের রোবকারির নকল দিষ্ট করিয়া ঐ মোকদ্দমার মিছিল সেরেস্তা হইতে তলব করিয়া মোকদ্দমা মজকুরের দাখিল হও। এ আদালতের পণ্ডিতের ব্যবস্থা দিষ্ট করিয়া বোধ হইলো জে এ আদালতের পণ্ডিত বৈদ্যনাথমিশ্র যে ব্যবস্থা এ মিছিলে দাখিল করিয়াছেন তাহা ঐ মোতিলাল ও কল্যাণসিংহদিগের মোকদ্দমার দাখিল হও। উহার ব্যবস্থার বিপরীত। আর যদ্যপি স্যাত এ মোকদ্দমার ও মোতিলাল ও গায়রহের মকদ্দমার প্রশ্নসকলের লিখিত শব্দসকল জাহেরা অন্যথা হইয়াথাকে। কিন্তু এ দুই মোকদ্দমার প্রশ্নসকলের মর্ম্ম একই আকার রাখে এজন্য আমার নিকট এ মোকদ্দমা দ্বিতীয় বার বিবেচনার জোগ্য, ও এ মোকদ্দমার আপিল খাস মঞ্জুরির জোগ্যবোধ হইয়া হুকুম হইল জে ছাএল এক মাস সংখ্যার মধ্যে খাস আপিলের বক্রী সরতসকল আমলে আনে আর কাগজাত মোর ওোব করিবার[1] জন্য এ আদালতের কায়েম মোকাম হাকিম শ্রীযুত ডেওোট ইষসিট সাহেবের হজুরে পাঠান জায়, আর এই

১—রোব

रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे ए मोकद्दमा ओ मोतिलाल ओ गायरहेर मोकद्दमार प्रश्नसकलेर मर्म्म ओ अभिप्राय एक दुइ वाते ओ दुइ मोकद्दमार वैपरित्य व्यवस्थासकल देओनेर कारण कि, नकल-रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडीनसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयाङ्केन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयजुनमासीयगजेन्दुमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितैतद्विवादविषयकप्रश्नस्त्वयमेव। यदि तोरभुक्तिजिलाख्यावान्तरदेशनिवासिनौ द्वौ हिन्दुजातीयौ स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरधनं साधारण्येन भुञ्जानौ ऋणग्रस्तावप्राप्तव्यवहारपुत्रवन्तौ च स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरभिन्नऋणपरिशोधनोपयुक्तधनरहितावशक्त्या ऋणपरिशोधनार्थमप्राप्तव्यवहारस्य स्वस्वपुत्रस्य विद्यमानतायामपि स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरधनस्य विक्रयणं तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च कृतवन्तौ स्याताम्, तदैतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति न वेति। अनेन ऋणपरिशोधनस्योपायान्तररहिताभ्यां स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयतमलिकशब्दप्रतिपाद्यकर्तृभ्यां हिन्दूजातीयाभ्यां तदृणपरिशोधनरूपस्यातीवावश्यकस्य कर्म्मणः सम्पत्त्यर्थमप्राप्तव्यवहारपुत्रवद्भ्यां पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयणं तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च कृतमिति निश्चितम् इति। एतादृशावश्यककार्य्यार्थं दासकृतस्यापि धनिपित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य तमलिकशब्दप्रतिपाद्यस्य च सिद्धेः शास्त्रीयत्वेन ऋणपरिशोधनोपयुक्तधनान्तररहितेन ऋणग्रस्तेन पित्रा कृतस्य तदृणपरिशोधनार्थमप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य विद्यमानतायां पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य तमलिकशब्दप्रतिपाद्यस्य च सिद्धेः शास्त्रीयत्वस्य

निस्सन्दिग्धतया अर्थसिद्धत्वात्। सर्वत्रैव शास्त्रे विशेषतो लिखितमस्ति आवश्यककार्य्यार्थं पितृकृतं पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयणं तमलिक-शब्दप्रतिपाद्यं च शास्त्रीयमेव भवति। अतएव प्रभुकृतैतद्विवादविषयको-परिलिखितार्थप्रतिपादकप्रश्नस्योत्तरव्यवस्थायां प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखित-वृत्तान्ते सत्येतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च शास्त्रानुसारेण सिद्ध्य-तीति मया लिखितमिति। मतिलाल-कल्याणसिंहार्थिकब्रजलाल-सीताराम-प्रभृतिप्रत्यर्थिकविवादविषयकश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्धर्म्मा-धिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नानाम्मध्ये प्रथमप्रश्नस्त्वयमेव। वेहारदेशचलितशास्त्रानुसारेण पितुः पितामहस्य वा पुत्रस्य पौत्रस्य वा अ-नुमतिं विना पित्रादिक्रमागतस्थावरधनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतास्ति न वेति। पुत्रस्य मरणानन्तरं पौत्रानुमतेरावश्यकतास्ति न वेति द्वितीयः। यदि च पित्रादिक्रमागतस्थावरधनस्य तद्देशचलितशास्त्रानुसारेण विक्रयस्य निषेध-स्तदा धर्म्माधिकरणाधिपतिभिस्तद्विक्रयस्य परावर्त्तनं कर्तुमावश्यकं भवति-न वेति तृतीयः। पित्रादिक्रमागतवस्तुसमुदायस्य यत्किञ्चिद्वस्तुनो वा हस्ता-न्तरकरणविषये शास्त्रे किञ्चिद्विशेषः प्राप्तुं शक्यते न वेति चतुर्थः। एतेषां चतुर्णां श्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृत-विचारपत्रलिखितानां प्रश्नानां मध्ये कुत्राप्येतादृशं पदं नास्ति येनैत-द्विक्रयस्यावश्यककार्य्यार्थताया बोधो भवितुं शक्नोति। अतएवैतैश्चतुर्भिः प्रश्नैः पित्रादिक्रमागतं स्थावरधनमावश्यककार्य्यार्थमन्तरेणार्थात् स्वेच्छयैव पित्रा हस्तान्तरं कृतमित्येव निश्चितं भवति। अतएव मया तत्रोत्तरं लिखितं पितुः पितामहस्य वा पुत्रानुमतिं विना पौत्रानुमतिं विना वा पित्रादिक्रमा-गतस्थावरधनविक्रयस्य स्वेच्छया क्षमता वेहारदेशचलितशास्त्रानुसारेण नास्तीति। अनेनावश्यककार्य्यार्थं पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य क्षमता सामान्यतः पुत्रानुमतिमन्तरेण पौत्रानुमतिमन्तरेण वा पितुः पिता-महस्य वास्त्येवेति। अस्य स्पष्टत्वेन शास्त्रानुसारेण अनुमतिदानानर्हाप्राप्त-व्यवहारपुत्रानुमतिमन्तरेण ऋणपरिशोधनरूपातीवावश्यककार्य्यार्थे तद्द-परिशोधनोपयुक्तधनान्तररहितस्य पितुः क्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य क्षमता शास्त्रानुसारेण स्पष्टतरैव। श्रीयुतजार्जइष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्धर्म्मा-

धिकरणाधिपतिकृतोपरिलिखितविवादविषयकविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नाशयानां प्रभुकृतैतद्विवादविषयका[1]वश्यककार्यार्थविक्रयतमलिकशब्दप्रतिपाद्यप्रतिपादकप्रश्नाशयस्य च भेदः स्पष्टतर एव। तद्व्याख्यानस्यावश्यकता नास्ति। अप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य विद्यमानतायां तदनुमतिमन्तरेणावश्यककार्य्यार्थं पित्रा कृतस्य क्रमागतस्थावरधनविषयकहस्तान्तरस्य सिद्धिविषयिणी पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थाप्येतद्धर्म्माधिकरणे पूर्व्वं जाता। तदनुसारेण तद्विवादनिष्पत्तिरप्येतद्धर्म्माधिकरणे जातास्तीति निवेदनमिति।

इशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिमंगलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेदमुत्तरं दत्तमिति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

श्रीकृष्णः सहाय

(१०६)—पण्डितेर पर सओाल—

काशीनाथचौधुरिनामे एक व्यक्ति फौत करियाछे। ताहार सपिण्ड ज्ञाति अर्थात् तिन पुरुषीया ज्ञाति केह ओयारिस नाइ। एइ स्थले ऐ काशीनाथेर मातुल रामजयसिमलाइ ओयारिस हइते पारे कि नाँ ऐ मोतओफार पञ्चम-पुरुषान्त ज्ञाति ऐ काशीनाथ मोतओफार ओयारिस अर्थात् उत्तराधिकारि हइते पारे बाङ्गलादेशेर चलन शास्त्रानुसारे इहार जे व्यवस्था ताहा ऐ सओयालेर दक्षिणपार्श्वे लिखिवेन। इति सन१८३६तां१९ आगष्ट मो० सन १२४३ तां ५ भाद्र॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितस्वरमासीयमुनीन्दुमितदिनस-

१. °विषयक आवश्यक—व्यप०

सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य काशीनाथचतुर्द्धरीणस्य त्यक्तधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य मातामहपर्य्यन्तानाम्मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तन्मातुलस्य रामजयशिमलाइनाम्न एवाधिकारः—इति वङ्गदेशचलित-मनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गा-र्णवप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि उपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-(२।१३५)वचनम् ॥१॥

प्रपितामहसन्तानस्य दौहित्रान्तस्य मृतभोग्यपिण्डदातुरभावे मृत-देयमातामहादिपिण्डदानेन पिण्डानन्तर्य्यान्मातुलादिग्रहणार्थं 'बन्धु-पदं' प्रयुक्तवान् याज्ञवल्क्यः। मनुना तु पिण्डदानानन्तर्य्यवचनेनैव दर्शितं मृतदेयमातामहादिपिण्डत्रयस्य मातुलादिभिर्दीयमानत्वान् मातु-लाद्यर्थत्वं धनस्य धनद्वारेण तस्यापि पिण्डदातृत्वात्—इति दायभाग-(पृ० २०६)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

तदभावे मातामहस्तदभावे मातुल—इत्यादि दायक्रम संग्रहग्रन्थ-लिखनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयरसमितदिन-सम्बन्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यपत्राभ्यां विचारपत्राभ्यां च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथशर्मणः

---

(१०७)—मोकाम कलिकातार सदर देओानि आदालतेर पण्डितेर पर सओालः फरियादि श्रीरघुनाथराय ओ श्री राधा-नाथराय ओ श्रीगोपीनाथराय सा० कपिलेश्वर परगणे उखडा

आसामी कुँदपाडा साकीनेर श्रीसमशेर खाँ वनामे जमि दखल पाओवत नालिस करे ऐ मोकद्दमार एक व्यवस्था लओा आविश्वक हइल। विवरण एइ—फरियादियान जे जमिन्दखलेर प्राथँनाय नालिस करे ऐ जमि पूर्व्व षष्ठीदास सिद्धान्तेर छिल। ऐ षष्ठीदास एक पुत्र जगन्नाथपञ्चानन आर दौहित्र फरिया-दियानेर पिता भवानीशंकररायके राखिया लोकान्तर हयेन। आर ऐ जगन्नाथ आपन जीवतमान पर्य्यन्त आपन पितार विषयेते भोगवान थाकिया अपुत्रक आपन स्त्री यशोदादेव्या ओ भवानीशंकररायके राखिया लोकान्तर हयेन। यदि ऐ अवीरा यशोदादेव्या सन १२१८ साले आपन स्वामिर ऋणपरिशोद अर्थे ऐ विरोधीय जमी आसामिके विक्रय करिया थाके आर सेइ विक्रयानुसारे ऐ जमिते आसामि भोगवान थाके आर ए काल पर्य्यन्त फरियादियानेर पिता ए विषयेर कोन आपत्तं ना करिया थाके, तवे शास्त्रानुसारे ऐ विषय सिद्ध हय कि ना। आर फरि-यादियानेर दावि ऐ विषयेर पर अर्शे कि ना—इहार व्यवस्था वाङ्गलार चलन शास्त्रानुसारे जे हय एइ सओालेर दक्षिण पार्शे लिखिवेन। इति सन १८३६ साल १९ शेतम्बर॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्वरमासीयग्रहेन्दुमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशत्रोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अवीरया यशोदादेव्या यदि स्वसंक्रान्तपतिस्थावरधनस्य विक्रयस्स्वपतिकृतर्णपरिशोधनार्थमेव वास्तवं कृतः स्यात्तदैतादृशविक्रयश्शास्त्रानुसारेण सिध्यति एवं तद्विक्रयस्य सिद्धौ सत्यामर्थिनां चाभियोगस्तद्विषये शास्त्रीयो न भवतीत्यर्थसिद्धमेव-—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

ऋक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इतिविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादि-(१ विवा १७६ ख) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।५१)वचनम् ॥१॥

मर्तुकामेन वा भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया।

अप्रपन्नापि सा दाप्या धनंयद्याश्रितं स्त्रिया॥—इति तत्तद्ग्रन्थ(पृ०६०) (१ विवा २०६)धृतकात्यायन(कास्मृ० ५४७।पृ० ६६)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयार्कमितदिनसन्निधिशुक्रवासरे मया प्राप्तसमर्पितप्रश्नपत्रेण विचारपत्राभ्यामङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योत्तरपत्रेण च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१०८)—लं १४७ सन १८३५ साल मो० कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर इं० सन १८३७ सालेर २ मार्च्च मोतावेक वाङ्गला सन १२४३ सालेर २० फाल्गुन बृहस्पतिवार दिवशेर श्रीयुतओलीयमव्राडीनसाहेव ऐ आदालतेर हाकिमेर वैठकेर रोवकारि—

श्रीमतितओकफलकुङर— आपीलाण्ट

श्रीमतिनन्दकुङर ओ गैरह— रेष्पाडण्टान

आपीलाण्टेर उकिल लाला वस्ति ओ रेष्पाडण्टानेर उकिलगण मुनसि हुछन आली ओ जेमेछ कुलवरूक छदरलएलाण्ड साहेव जे छदरलएलाण्डसाहेवेर नामेर, ओकालतनामा अद्य गुजरियाछे हाजीर आइलेन ए आदालतेर हाकिम श्रीयुतओकरेममनिसाहेवेर गत २१ फिव्ररिओयारिर हुकुमानुसारे ए मकद्दमा गतकल्प आमार वैठके रूवकार ओ गत कल्येर रूवकारिर विस्तारित लिखित कागजसकल पाठ हइया स्थकित छिल। अद्य पुनराय रूवकार हइया सदर आमीन अलार ओ जजसाहेव मकद्दमार

चक्री कागजसकल ओ ए आदालतेर कागजसकल प्रसंसीय हाकिमेर गत २१ फिब्ररिओयारिर रोवकारिर लिखित राएर सम्वलित पाठ करा गेल। परे आपीलाण्टेर उकील सन १२०७ फसलिर ११ कार्तिकेर लिखित श्रीमति सुगन्धाकुङरेर लिखिया देया हेवानामार नक्ल एक केता दुइ टाका सूल्येर फिरिस्तिर द्वाराय लम्वरे दाखिल करिलेक दृष्टे आइल वोध हइलो जे भोलासिंहनामक श्रीमतिसुगन्धानामक एक स्त्री ओ श्रीमतिनन्दकुङर ओ वदनकुङर दुइ कन्या व्यतित द्वितीय उत्तराधिकारि राखितो ना, ओ उक्त भोलासिंह आपन निज दखील ओ वण्टकि पैत्रीक विशय आपन स्त्रीर सन्मतिते आपन कन्यार दिगेरके जवानि हेवा करिया हेवा नामा लिखिया देओार जन्य आपन स्त्री श्रीमतिसुगन्धाके अनुमति करियाछे तदनुसारे श्रीमतीशुगन्धा उहार स्वामि भोलासिंहेर मृत्युर पर आपन स्वामिर अनुमत्यनुसारे आपन जामातागण अर्थात मित्रजितसिंह ओरफे वुलाकिसिंह उक्त नन्दकुङरेर स्वामि ओ केनरसिंह उक्त वदनकुङरेर स्वामिर नामे हेवानामा लिखिया दियाछे ओ तदनुसारे मित्रजितसिंह ओ केनरसिंह श्रीमतीसुगन्धार सम्मतिते कालेक्टरि सेरस्ताय आपन-आपन नाम दाखिल करिया अनेक दिवस हेवा करा विषयेर पर दखिल ओ कावेज आछे। ओ शास्त्रेर वृत्तान्त ज्ञात हओो एइ विषय जे भोलासिंहेर एमत क्षमता जे आपन निज दखलि मौरुशी विषयेर अंश जे अनेक दिवस वण्टक हइयाछे आपन कन्यागन ओ जामातागणके आपन स्त्रीर सन्मतिते हेवा करिते पारे कि ना, आर ए प्रकार हेवा मैथिल देशीय चलित शास्त्रानुसारे ग्राह्य ओ सिद्ध वटे कि ना। उचित वोध हइल ए जन्य हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे उपरेर लिखित विषयेर प्रत्युत्तर एइ रोवकारिर नकल प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन ओ आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति—

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडीनसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्चमासीयद्वितीयदिव-सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयमुनिपक्षमितदि-नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति भोलासिंहनामा कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पित्रादिक्रमागतस्वायत्तीभूतविभक्तविषयस्य स्वपत्नीसम्मत्या स्वकन्याभ्यो जामातृभ्यो दानं कर्त्तुं शक्नोति। एतादृशदानं च मिथिला-देशचलितशास्त्रानुसारेण सिध्यति—इति मिथिलादेशचलितमनुविवाद-चिन्तामणिविवादचन्द्रविवादरत्नाकरकल्पतरुमदनपारिजातस्मृतिसारप्रभृति-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनु(५।१५२)वचनम् ॥१॥

पण्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात् प्रत्युपकारतः।

स्त्रीशुल्कानुग्रहार्थं च दत्तं[1] सप्तविधं विदुः॥—इति कल्पतरुविवाद-रत्नाकर(पृ० १३३)प्रभृतिग्रन्थधृतनारद(ना० सं० पृ० ६०)-वचनम्।२॥

तान्येव तु प्रमाणानि भर्ता यद्यनुमन्यते—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थधृत-नारदवचनम् ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयनखमितदिनस-म्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(१०९)—प्रश्न वनाम पण्डित आदालते सदर देओानि—

१, दत्तं दानविदो विदुः—इति धको. पाठः।

यद्यपि कोन वैश्विर कुलाचारे एमत रित थाके ये अवीरा स्त्री ओ कन्या ओ दौहित्रेर नाम जमिदारिते जारि हइवेक नाइ, आर यद्यपि उभय विवादिर पूर्व पुरुषादगेर आपसे ऐमत एकरार लेखा पडा हइया, ऐ रित चलित थाके, तवे पुनराय शास्त्रानुसारे व्यवस्थार आविश्यक हय कि ना। यद्यपि आविश्यक हय, तवे अवीरा स्त्रीर नाम ताहार स्वामीर त्यक्त वस्तुते जारि हइते पारे कि ना—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे एइ प्रश्नेर पार्श्वे लिखिवेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं चाङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योत्तरपत्रमाज्ञापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयदिङ्मितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कस्यचिद् वंशे अवीरापत्नीकन्यादौहित्राणां नामनिर्द्देशः सराजकरस्थावरविषये न भवतीति व्यवहारो वादिप्रतिवादिनोः पूर्व्वपुरुषाणां परस्परसंवित्पत्रेण प्रचलितः स्यात् तदा कुलाचारविरुद्धव्यवस्थाया एतद्विषये आवश्यकता नास्ति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं परिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयबाणपक्षमितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योत्तरपत्राभ्यां विचारपत्राभ्याञ्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

— ——

(১১০)—রোবকারি মিছিল সদর দেওয়ানী আদালত মোকাম কলিকাতা। উক্ত আদালতের কাএম মোকাম হাকিম শ্রীযুত ফ্রাণশীষ করুণ ইষমীত সাহেবের বৈঠকে। তারিখ ৪ মার্চ্চ ইঙ্গরেজী সন ১৮৩৭ সাল মোতাবক ২২ ফাল্গুন সন ১২৪৩ সাল বাঙ্গলা দিবস শনিবার—

পঞ্চানন্দদাস বনাম রাধাচন্দ্রবাছ

ছাএলের উকিল মুনশীআমীনদ্দিনমহম্মদ হাজীর আইল। ৩২ টাকা কিম্মতের কাগজের উপর ছাএলের খাস আপীলের ছওয়াল জেলা মেদনিপুরের আভীশশন জজসাহেবের কৃত সন ১৮৩৬ সালের ২৬ শেতম্বরের ফয়ছলার হুকুমের নারাজীতে, জাহা তথাকার সদর আমীনআলার সন ১৮৩৫ সালের ৪ শেতম্বরের লিখিত ফয়ছলার বহালিতে ছাদের হইয়াছে, মৌজে গোশমদার দখল পাওয়ার মোকদ্দমায় সবলগে ৫২৩৯১১ টাকার তায়েদাদে খাষ আপীল মঞ্জুরির উমেদে উকিল মজকুরের নামের এক কেতা ওকালতনামা সম্বলিত ও খোশালচন্দ্রসিংহ ও বিনদকীশোর ঘোষের নামের এক কেতা মোক্তারনামা ও জেলার দেওয়ানি আদালতের উপরের লিখিত তারিখের দুই কেতা ফয়ছলার নকল আভিশশন জজ সাহেব ও সদর আমীন আলার তজবিজী, জাহা গতো ফিব্ররেল মাহার ৮ তারিখে দাখিল হইয়াছিল, অদ্য উপস্থিত হইয়া পড়া গেল। দ্বিতীয় হুকুম ছাদের হওনের পূর্ব্বে এই বিষয়ের সওয়াল করা জে এক ব্যক্তি হিন্দুজাতী বসতির বাটী ত্যাগ করিয়া অন্য বন্ধু হইতে তফাত হইয়া উদাসিন ও তীর্থবাশী হয়, আর তাহার অন্য বন্ধু হইতে তফাত হওয়া মুদ্দত বিষ বৎসর গতো হয়, আর ঐ সময়ে কিছু মিলকিয়ত খরিদ করিয়া ভোগবান থাকিয়া দিপনদেই নামে এক জন স্ত্রিলোককে ওয়ারিস রাখিয়া মরে। এ প্রকারে উদাসিন ব্যক্তির ওয়ারিস শাস্ত্রানুজাই উক্ত মোসম্মাত হইবেক, কি গ্রহস্থ-ধর্ম্মস্থ আত্যবন্ধু। আর যদি স্যাত্ শাস্ত্র মতে উদাসীন ব্যক্তির ওয়ারিস উক্ত মোছম্মাত হয়,

ओ प्रकारे उक्त मोछम्मातेर उदासीन व्यक्तिर त्याज्यं वस्तुर दखल करा ओ विक्रयेर क्षेमता आछे कि ना एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल छओयाल प्रभृति कागज सम्वलित एइ हुकुमे जे पण्डित मोछक उपरेर चाओया प्रश्नेर उत्तर एक सप्ताह मध्ये लिखेन-पाठान जाय, आर से पर्य्यन्त हुकुम छादेर हओया मुलतवि थाके इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतफ्रानसीसकरुणइसमित-साहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमा-र्च्चमासीयवेदमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितैतद्-विवादविषयनिविष्टलिखितादिकं च यत्तदब्दीयतन्मासीयनखमितदिनसम्ब-न्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति धनिनो मृतस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रा-भावे सति मृतधनित्यक्तधने तत्पत्न्या दीपनदेइनाम्न्या एवाधिकारः, तस्याश्च मृतपतित्यक्तधनस्यायत्तीकरणक्षमता शास्त्रसिद्धैव, एवं हस्तान्तर-करणक्षमता तु शास्त्रीयावश्यककार्यार्थमन्तरेण नास्ति-इति धर्म्मशास्त्रा-नुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥—इति कात्यायन-वचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयप्रथमदिनसम्ब-

न्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेणैतद्विवादविषयनिविष्टलिखित-जातैश्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१११) तरजमा रोवकारि—

नकल रोवकारि आदालत दिमानि जिला चाटीग्राम हेनरी-मोरसाहेव कायेम मोकाम जजेर वैठके तारिख ८माइ अक्तूवर सन १८३६ आठारह सय छत्तिस ईशवी—

प्रतापनारायणचक्रवर्त्ती, साकिम दुर्गापुर डिगरिदार, परमानन्द चक्रवर्त्ती ओ रामधन ओ रामलोचन ओ प्रतापनारायण ओ उमाकान्त ओ लक्ष्मीनारायण ओ रामकीशोर ओ रामशरण ओ रामकान्त ओ शिवप्रसादठाकुर ओ राममोहन ओ द्वितीय रामलोचन ओ रामप्रसाद ओ द्वितीय परमानन्द ओ काशीनाथ ओ वेचन ओ रामदास ओ विजयनाथ ब्राह्मणसकल साकिमान दुर्गापुर ओ उत्तरदुर्गापुर ओ मुरालीपुर ओ गोपालपुर ओ मिठारा ओ मटमारिया तरफसानियान्—

मोकद्दिमा इजराय डिगरी समाज—

हेजुरेर हुकुमानुसारे एइ मोकद्दिमा मौलवी अवदुल मजीद खाँ वाहादुर सदर आमीन आलार निकटे दरपेश हइयाछिलो। गत अगस्ति मासेर २० तारिखे ऐ सदर आमिन आला डिगरी-दारेर सहित तरफसानीसकलके एकत्र वसिया आहार करिते आज्ञा दिलेन, ओ लक्ष्मीनारायणचक्रवर्त्ति तरफसानी ऐ सदर आमिनआलार हुकुमेर नाराजीते एक केता दरखास्त अपिल सरसरीर वावति गत सितम्वर मासेर ७ तारिखे गुजराइलेक, ओ मूएजहार करिलेक ये इहार ळ्वं ए आदालत हइते सदर दिमानी

आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लइवार कारण आज्ञा हइयाछिलो, तरफसानीसकल ऐ डिगरि जारि हओयाते खालास पाइयाछे। ऐ आज्ञार वहिर्भूत ऐ सदर आमिन आला ऐ डिगरि जारिर समये तरफसानीसकलके ऐ डिगरिदारेर वाटीते आहार करिते हुकुम दिया तरफसानीसकलेर जातिर प्रति शत्रुता करितेछे, ओ सन १८३६ सालेर २०सितम्वर तारिखे लक्ष्मीनारायणठाकुर ओ रामधन ओ कमलाकान्त ओ प्रताप ओ भञ्जन ओ रामलोचन ओ वैद्यनाथठाकुर-गणेर उकिल सेख अहमदुल्लाहेर साक्षाते सरसरी आपीलेर सवाल ओ सदर आमीन आला मौसुफेर सन १८३६ सालेर २० अगस्ति तारिखेर रोवकारिर नकल दृष्टे आइलो। वोध हइलो ये उभय विवादिर एइ प्रकार विवाद वटे ये सदर दिमानी आदालतेर हुकुम एइ प्रकार आसियाछे। ये आदालतेर पण्डितेर स्थान हइते व्यवस्था लइया एइ डिगरि एजराय करा जाइवेक। अतएव आदालतेर पण्डित व्यवस्था दाखिल करियाछे–ये शास्त्रानुसारे एइ डिगरी यथार्थ वटे। ताहाते मुद्दाआलेहगण विरोध करिया एइ प्रकार आपत्ति करे ये एइ आदालतेर पण्डित ये व्यवस्था दियाछे से व्यवस्था चाटग्रामेर व्यहेरालोकेर प्रति वटे। ऐ प्रकार रसम रवाज व्यहेरालोकेर रवाजेर वरखेलाफ वटे, ओ तरफसानीगण निजामपूरेर वटे, ओ तरफसानीदिगेर उकिल प्रकाश करिलेक ये चाटग्रामेर लोक निजामपुरेर व्यहेरासकलेर सङ्गे सकल कर्म्मे आहार व्यवहार करे नाइ इति। ओ ऐ सदर आमीन आलार स्थान हइते आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल तलव करार आज्ञा ओ ऐ व्यवस्थार नकल सदर दिमानी आदालतेर प्रवल प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठाइवार हुकुम ओ सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलव करा एइ प्रकार जे एइ डिगरी निजामपुरेर दस्तुर माताविक किम्वा चाटग्रामेर दस्तुर मोतावक जारि हइवेक—हुकुम दिवा गेलो, ओ उभय विवादि निजामपुरेर

সামাজের বটেন, ও সদর দিমানী আদালত হইতে জবাব আসা পর্য্যন্ত এই ডিগরী জারি মকুফের হুকুম সাদর হইলো ইতি। ও অদ্য আদালতের পণ্ডিতের ব্যবস্থার নকল সদর আমীন আলার স্থান হইতে এ আদালতে পৌছিলো। অতএব হুকুম হইলো যে আদালতের পণ্ডিতের ব্যবস্থার নকল যাহা ঐ সদর আমীন আলার স্থান হইতে আসিয়াছে এই রোবকারি সহিত ও অঙ্গরেজী চিঠীর সম্বলিত সদর দিমানী আদালতের প্রবলপ্রতাপ হাকিমানের হজুরে পাঠান যায়। সবাল এই যে, উভয় বিবাদি নিজামপুরের বাসিন্দা বটেন, ও জাতি ব্রাহ্মণ বটেন, ও ব্যহেরাসকলের পুরোহিত বটেন, ও নেজামপুরের ব্যহেরার যজন-পূজন করাতে মুদইকে মুদাআলেহ ব্রাহ্মণসকল, জাতি হইতে বহির্ভূত করিয়াছিলো। তাহাতে মুদৈ পণ্ডিত সদর আমীনের আদালতে নালিস করিয়া আপন হক্ক কে ডিগরী হাসিল করিয়াছিলো। ও ঐ ডিগরী আপিল আদালতে অর্থাত জজসাহেবের নিকট বহাল থাকিলো। ঐ ডিগরী জারী হওয়ার সময়ে রসম-রবাজের তকরার দরপেশ হইয়া সবাল সদর দিমানী আদালত পর্য্যন্ত গুজরিয়াছিলো। ও ঐ সদর দিমানী আদালতে হাকিমান হুকুম দিয়াছেন—যে এই ডিগরী পণ্ডিতের ব্যবস্থানুসারে জারী করো। ও পণ্ডিত আদালতি এই প্রকার ব্যবস্থা দাখিল করিলেক—যে এই ডিগরী যাথার্থ, ও মুদাআলেহসকলকে মুদৈর সহিত একত্র আহার ব্যবহার করা আবশ্যক, ও এজরায ডিগরী আমলে আইলো। ও ঐ হুকুম ও ঐ ব্যবস্থাতে মুদাআলেহ তকরার করে। ও মুদাআলেহসকলের উজুর এই প্রকার বটে—যে ঐ মুদাআলেহদিগের সহিত নিজামপুরের বেহারাদিগের জযন--পূজনের বিষয়ে নিজামপুরের বেহারাদিগের সঙ্গে এই মোকদ্দিমা উপস্থিত হইয়া নিজামপুরের বেহারারা এই এজহার করে যে আমরা নিজামপুরের বেহারা বটী, আমারদিগের রসম রবাজ চাটিগ্রামের বেহারাদিগের ও ব্রাহ্মণসকলের

प्राचीन रसम-रवाज हइते भिन्न प्रकार वटे, ओ ऐ आदालतेर पण्डितेर' व्यवस्था चाटग्रामेर वेहारादिगेर रसम-रवाजेर विषये वटे इति। ए कारण सवाल करा जाइतेछे कि यद्यपि नेजामपुरेर वासिन्दा लोकेर रसम-रवाज हइते भिन्न प्रकार रसम-रवाज ये सकल लोकेर रसम-रवाजेर विषयेर एइ व्यवस्था आछे, हय एइ व्यवस्था शास्त्रानुसारे यथार्थ वटे कि ना। वास्तव सवाल एइ आछे-ये यद्यपि एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था शास्त्रानुसारे यथार्थ हय, तवे यदि नेजामपुरेर वासिन्दा ब्राह्मणसकल ओ वेहारासकलेर रसम-रवाजेर विपरीत हय, तवे नेजामपुरे जारी हइते पारिवेक कि ना। आर यद्यपि कोनो देशे पुरोहित-यजमानेर मध्ये पूर्व्व हइते पुरुषानुक्रमे ये रसम-रवाज जारी थाके, यद्यपि ऐ रसम-रवाज जारी हओर तारिखेर निश्चय ना थाके, एइ प्रकार रसम-रवाज नितान्त चलित नाइ, वरं चलनेर विरुद्ध वटे। तथापि प्राचीन रसम-रवाज, जाहा ओहादिगेर शास्त्रेर न्याय चलित वटे, ऐ रसम-रवाज ऐ नेजामपुरेर वासिन्दालोकेर वटे कि ना। ऐ सदर दिमानी आदालतेर प्रवलप्रताप हाकिमान अनुग्रह पूर्व्वक एइ विषयेर व्यवस्था सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर स्थाने लइया एइ आदालते प्रेरण करेण इति। अद्य सन १८३६ साल ईशवी तारिख २८ माह नवम्वर डिगरीदारेर उकिल रामसुन्दरदत्त आरज करिलेक ये डिगरीदारेर मोक्तार रामकुमार हजुरे ए विषय आरज करिवार कारण हाजीर छिलो ये मुद्दाआलेहसकल वेहारा जाति वटे, ओ गुलाम ओ लौडी आपन आपन घरे मेत्तइसकल यजन-पूजन जलाञ्जलि करितेछे। नथीर सामिल साक्षिदिगेर एजहारेर द्वाराय ए विषय निश्चित ओ ए कथा रोवकारिते लिखा जाय इति। उकिलेर प्रार्थना मते रोवकारि लेखा गेलो, किन्तु ए विषय सवालेर सहित सम्पर्क

१. पण्डितेर पण्डितेर-व्यप०।

রাখে না। এ বিষয় এক তজবিজের স্থান বটে। সবাল যে প্রকার লেখা গেলো সেই যথার্থ বটে-এ বিষয়ের যবাব আসিবার পরে দুই ব্যবস্থা দৃষ্টি করিয়া ও কাগজাত ও উভয় বিবাদীর সবাল ও যবাব মোলাহিজা করিয়া ডিগরী জারী বিষয়ের উচিত হুকুম দেয়া জাইবেক ইতি ।।—

শ্রীদুর্গা শরণম্—

শ্রীযুক্তজানলুইষজজসাহেবমহাশয়প্রেরিতান্যেতানি বিবাদপত্রাদীন্যবলোক্যাত্র ব্যবস্থা লিখ্যতে—অত্রার্থী এতদ্দেশীয়বেহারানামশূদ্রবিশেষগৃহকৃতযজনপূজনাদিব্যাপারঃ প্রত্যর্থিভিরব্যবহার্য্যো নৈব ভবেদিতি বিদুষাং পরামর্শঃ। এতদ্দেশীয়বেহারানামশূদ্রবিশেষানীতজলপানস্য এতদ্দেশীয়প্রধানব্রাহ্মণশূদ্রাদিভিঃ ক্রিয়মাণত্বাদ্ বিশেষতোঽত্রার্থিবৎ প্রত্যর্থিনামপি কেষাঞ্চিৎ তাদৃশবেহারানামশূদ্রবিশেষাণাং যজনপূজনাদিব্যাপারকরণেঽপি অব্যবহার্য্যত্বাভাবস্য সাক্ষিভির্নিরুক্তত্বাদ্, "যেষু স্থানেষু যচ্ছৌচং ধর্ম্মাচারশ্চ যাদৃশঃ, তত্র তন্নাবমন্যেত ধর্ম্মস্তত্রৈব তাদৃশঃ"—ইতি শুদ্ধিতত্ত্বধৃতবচনে দেশবিশেষীয়পারম্পর্য্যক্রমাগতযাদৃশধর্ম্মাচারস্তাদৃশস্যাভিমতত্ত্বজ্ঞাপনাচ্চেতি।

অস্যার্থঃ—

শ্রীযুত জান লুইষ জজ সাহেব মহাশয় কর্ত্তৃক প্রেরিত এসকল কাগজ পত্র অবলোকন করিয়া এ বিষয়ে ব্যবস্থা লেখা যাইতেছে। যে এ ডিক্রীদার এতদ্দেশীয় বেহারা শূদ্রের গৃহে যজন-পূজনাদি ব্যাপার করাতে আসামি-কর্ত্তৃক অব্যবহার্য্য হইতে পারে না। কারণ এতদ্দেশীয় বেহারা শূদ্রেদের[1] জলাচরণাদি ব্যবহার এতদ্দেশীয় প্রধান ব্রাহ্মণ ও শূদ্রাদিসকলে করিয়া আসিতেছে, এবং বিশেষত এই ফৈরাদির মত কোন আসামি বেহারা শূদ্রের যজন পূজন করাতেও তাহার ব্যবহার্য্যত্ব সাক্ষি কর্ত্তৃক কথিত আছে, এবং যে স্থানে যাদৃশ শৌচ ও যাদৃশ ধর্ম্মাচার, সে স্থানে তাহা অবমত হইবে না, তাহাই প্রচলিত হইবে-এই শুদ্ধিতত্ত্ব ধৃত বচনেতে

১. শূদ্রেদের-ব্যয়০।

पूर्वापर यादृश धर्म्माचार रूप व्यवहार ये देशेर येमन चलिया आसितेछे, ताहार अभिमतत्व ज्ञापन करियाछेन-बोध हइल इत्यादि। इं सन १८३५ तारिख १ आप्रेल—

श्रीअखिलचन्द्रन्यायरत्नशर्म्मणाम्

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयगुणेन्दुमित-दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तर लिख्यते। —

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति चट्टग्रामप्रदेशीयजिलाख्या-वान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्था नेजामपुरप्रदेशवासिना-मर्थिप्रत्यर्थिनां ब्राह्मणानां प्रचलितव्यवहारानुसारिणी चेत्तदैव नेजामपुर-प्रदेशवासिनावर्थिप्रत्यर्थिनौ ब्राह्मणौ प्रति शास्त्रसिद्धा भवितुमर्हति, नेजामपुरप्रदेशवासिनामर्थिप्रत्यर्थिनां ब्राह्मणानां कथञ्चिदपि प्रचलित-व्यवहारविरुद्धतया ज्ञातुं शक्यते चेत्तदा नेजामपुरप्रदेशवासिनावर्थिप्रत्य-र्थिनौ ब्राह्मणौ प्रति शास्त्रतः प्रचलितुं नार्हति ; एवं कस्मिंश्चिद्देशे पुरोहित-यजमानयोर्द्वयोः पूर्व्वपुरुषपारम्पर्य्यक्रमेण कश्चिद्व्यवहारोऽनिश्चितप्रचारदि-वसोऽपि यदि तेषां तादृशप्राचीनव्यवहारः शास्त्रसाम्येन प्रचलितः स्यात्तदा तादृशव्यवहारो नेजामपुरप्रदेशवासिनामर्थिप्रत्यर्थिनां ब्राह्मणानां शास्त्रतः समीचीनो भवत्येव—इति नेजामपुरप्रदेशचलितमनुस्मृतियाज्ञवल्क्यस्मृति-वृहस्पतिस्मृतिशुद्धितत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्य-वस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्म्मं परिपालयेत् ॥ इति मनु-वचनम् ॥१॥

यस्मिन्देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः॥—इति याज्ञवल्क्यस्मृति-प्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

देशजातिकुलानां च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्तिताः

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥—इति बृहस्पतिस्मृति-प्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥३॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः।

युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते॥—इति बृहस्पतिस्मृति-व्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाप्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥४॥

येषु स्थानेषु यच्छौचं धर्म्माचारश्च यादृशः।

तत्र तन्नावमन्येत धर्म्मस्तत्रैव तादृशः॥ —इति शुद्धितत्त्व (पृ० २७५)-प्रभृतिग्रन्थधृतमरीचिवचनम् ॥५॥

देशानुशिष्टं कुलधर्म्ममग्र्यं सगोत्रधर्म्मं नहि संत्यजेच्च—इति शुद्धितत्त्व(पृ० २७६)प्रभृतिग्रन्थधृतवामनपुराणवचनञ्चेति ॥६॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्य्यान्तरव्यग्रतया चैतद्व्यवस्थायाः काठिन्यतरत्वेन चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयमुनीन्दुमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितव्यवस्थापत्रविचारपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(११२)—मो० कलिकातार सदर देश्रोानि आदालतेर इ० सन १८३७ सालेर १५ फिवरेल मोतावेक वाङ्गला सन १२४३ सालेर ५ फाल्गुन वुधवार दिवसेर श्रीयुत ओलियम ब्राडिन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर रुवकारि—

सिउछहाय ओ कुञ्जवेहारीलाल—

वनाम

मोछम्मातान् मच्चणविवि ओ गैरह—

छापलानेर उकिल तारकचन्द्रराय, फरिकछानिर उकिलगण मुनशी दादारवक्स ओ श्रीरामराय हाजीर आइलेन। छापलानेर खास आपीलेर छओाल ओ ऐ छओालेर सम्पर्कीय कागजसकल, जे सन १८३६ सालेर २१ दिजम्बर तारिखे दरपेष एवं छापलान दरवारिलालेर पुत्रगण हओार विषये दरवारिलालेर एकरारेर निदर्शन दाखिल करणेर हुकुम छापलानेर उकिलेर प्रति प्रकाश हइया स्थकित छिल, अद्य पुनराय दरपेस हइया सन १८२१ सालेर ८ जानेर तारिखेर हुकुम हओा वैजनाथ छहायेर दरखास्तेर नकल ओ सन १८२० सालेर ६ आपरेल तारिखेर लिखित जेला भागलपुरेर देश्रोानि आदालतेर नकल रुवकारि ओ सन १८१३ सालेर १४ शेतम्बर तारिखेर लखित ऐ जेलार आदालतेर फयछलार नकल सम्वलित, जे सन १८३६ सालेर २१ दिजम्वर तारिखेर हुकुमानुसारे छापलानेर उकिल दाखिल करियाछिल, दृष्टे आइल। छापलान कहेन जे उहारा दरवारिलालेर पुत्रगण एवं उत्तराधिकारिगण वटेन, ओ फरिकछानि ऐ दरवारिलालेर आपन भ्रातष्पुत्र। वैजनाथछहायेर उत्राधिकारिगण जे कहेन छायेलान दरवारिलालेर ढेमनितायफादार स्त्रीर गर्भे जन्मियाछे, ओ एइ हयने उक्त दरवारिलालेर विवाहिता स्त्रीर गर्भजात कन्या श्रीमती मल्लार तेज्य

विषयेर जन्य उभय विवादिर विवाद उपस्थित आछे। ए जन्य कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे ए मोकद्दमार शास्त्रेर वृत्तान्त ज्ञात हओा उचित वोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित प्रश्नोत्तर नकल रुवकारि प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताह मध्ये लेखेन ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति—

प्रश्न :—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति हिन्दुर अविवाहिता स्त्री अर्थात् उहार ढेर्मनि हइते सन्तान उत्पत्ति हइयाथाके, आर ऐ व्यक्ति कोन एक आदालते आपनाके ऐ पुत्रेर पिता एवं ओजी दर्शाइया नालिस करे, तवे उक्त पुत्र ऐ व्यक्तिर मृत्युर पर ऐ व्यक्तिर उपरेर प्रसङ्ग करा एकरारेर हष्टे ऐ व्यक्तिर आपन भ्रातष्पुत्र उत्तराधिकारिगण थाकितेओ ऐ व्यक्तिर विषयेर हक्‌दार पश्चिम ओ वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रोलियमवेराडोनसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेव्ररवरोमासीयवाणेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तगतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदंग्रायमार्च्चमासीयशिवनेत्रेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतधनिव्यक्तिविशेषो यदि ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यो वा स्यात्तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधने अविवाहितस्त्रीगर्भजातस्य पुत्रस्य नाधिकारः, किन्तु धनिनो मृतस्योत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागिता भवति। यदि च मृतधनिव्यक्तिविशेषः शूद्रजातीयस्तदापि यदि धनिनो मृतस्य विवाहितस्त्रीगर्भजातकन्यादौहित्राणां मध्ये कश्चिन्नास्ति, तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधने अविवाहितस्त्रीगर्भजातस्य पुत्रस्य मृतधनिभ्रातृपुत्रस्य विद्यमानताया-

मधिकारः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

जातोऽपि दास्यां शूद्रेण कामतोंऽशहरो भवेत् ।
मृते पितरि कुर्य्युस्तं भ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ॥
अभ्रातृको हरेत् सर्व्वं दुहितृणां सुताहते ।—इति मिताक्षरादायभागप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य वचनम् ॥१॥

शूद्रेण दास्यां समुत्पन्नः पुत्रः कामतः पितुरिच्छया भागं लभते । पितुरूर्द्ध्वन्तु यदि परिणीता पुत्राः सन्ति, तदा ते भ्रातरस्तं दासीपुत्रमर्द्धभागिकं कुर्य्युः, स्वभागादर्द्धं दद्यु रित्यर्थः । अथ परिणीतापुत्रा न सन्ति तदा कृत्स्नं धनं दासीपुत्रो गृह्णीयात् । यदि परिणीतादुहितरस्तत्पुत्रा वा न सन्ति तत्सद्भावे त्वर्द्धभागिक एव दासीपुत्रः । अत्र च शूद्रग्रहणाद् द्विजातिना दास्यामुत्पन्नः पितुरिच्छयाप्यंशं न लभते, नाप्यर्द्धं दूरत एव कृत्स्नं किन्त्वनुकूलश्चेज्जीवनमात्रं लभते—इति मिताक्षरा(पृ० २१६)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

शूद्रस्य पुनरपरिणीतदास्यादिशूद्रापुत्रः पितुरनुमत्या पुत्रान्तरतुल्यांशहरः—इति दायभाग(पृ० १४३)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्य्यान्तरव्यग्रतया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जातः इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रनिवेदनपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

तरजमा सओाल—

(११३)—जिला साहाबादेर सदर आमिन आला सैयद मनौअर अलि मोकाम गाटर मुनिसिफेर आपिल लम्बर ३:५—

नरकुसिंह मुद्दाआलेह आपीलाण्ट वनाम मेघसिंह ओ अत्तरसिंह रेस्पाण्डण्टान्—

मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सवाल। एइ ये, यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दुजाति आपन मौरुशी धन हइते किञ्चित आपन पुत्र ओ भ्रातृष्पुत्र विद्यमान थाकिते भगिनीपुत्र ओ पितृष्वसृपुत्रेर प्रतिपालनेर हेतु ऐ व्यक्तिके दान करिया एवं अशी करिया ताहार दस्तावेज, जाहार नकल एइ सवालसकलेर सङ्गे आछे लिखिया दिया थाके। तवे ए प्रकार दस्तावेज शास्त्रानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ ओ दानग्रहीतासकलेर स्वत्वेर प्रति गुणदायक हइवेक कि ना, एवं दानकर्त्ता अर्थात् अंशीकारकसकलेर जीवद्दशाय दानकर्त्तासकलेर पुत्रपौत्रादिर प्रतिवन्धकता ताहाते अर्शिते पारिवेक कि ना इति ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यात्तरपत्रं दस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रमाज्ञापत्रं च यदीशवोशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशवोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रं तत्पत्रलिखितनियमजातदृष्टिविवेचनाभ्यां शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, एवं दानग्रहीतॄणां स्वत्वे प्रमाणं भवति। दानकर्त्तॄणां विद्यमानतायां तेषां पुत्रपौत्रादीनां तद्विषये प्रतिबन्धकता न सम्भवति—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पण्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात् प्रत्युपकारतः।
स्त्रीशुल्कानुग्रहार्थञ्च दत्तं दानविदो विदुः॥—इति मिताक्षरा(पृ० २४५)वीरमित्रोदय(पृ० ३६७)प्रभृतिग्रन्थधृतनारद(नमसं० पृ० ६०) वचनम् ॥२॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्य्यान्तरव्यग्रतया रोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रैः प्रभुयाचितनिवेदनेन च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्री श्रीदुर्गा

(११४)—नं० २३९ इं सन १८३५ साल—

रोबकारि मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालत उक्त आदालतेर कायेम मोकाम हाकिम श्रीयुत फ्राणशीष करुण इषमित साहेबेर वैठके—तारिख २२ माह जुन इङ्गरेजी सन १८३७ साल मोताबक वाङ्गला सन १२४४ साल तारिख १० आषाढ दिवस वृहस्पतिवार।

दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अछि आलमचन्द्रधर—
आपीलाण्ट—

विजयगोविन्दवडाल ओ गयरह— रेष्पाडण्टान—

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ हाजीर रेष्पाडण्ट विजयगोविन्दवडालेर उकिल जिमिष कोलवरुक

सदरलेण्ड साहेव हाजीर आइल। गतो कल्य एइ मोकद्दमा आमार वैठके उपस्थित। प्रथम आदालत सहर मुरशीदावादेर कागज सकल आर एइ आदालतेर दाखिल हओया मौजेवात ओ जओयाव प्रभृति साम्यक कागज एवं अन्य २ दलिलसकल जाहा गतो कल्य उभये दाखिल करियाछिल, पडा हइया दिवा-वसान प्रजुक्त मुलतवि छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइल। रेष्पाडण्टेर उकिल भैरवचन्द्रन्यायवागीशेर एककेता व्यवस्था ओ रामतनुशर्म्मान्यायवागीशेर एक केता व्यवस्था ओ वेदकण्ठ-शर्म्मार एक केता व्यवस्था ओ शिवनाथशिरोमणिर एक केता व्यवस्था, एकुने चारि केता, ताहार चारि केता तरजमा सम्वलित आर दुइ फर्द्द फिरिस्ति ८ आठ तङ्का किम्मतेर दाखिल करिलेक। वोध हइल जे आपीलाण्ट मुद्दइ एक आना अष्ट गोण्डा दुइ कडा दुइ क्रान्ती जमिदारि प्रभृतिर दखल पाओनेर दाविते मवलगे ६५७० ॥६॥ टाकार तायदादे विजयगोविन्दवडाल प्रभृती मोर्द्दाआलेहेर नामे सहर मुरशीदावादेर आदालते नालिस करे। तथाकार जज साहेव आपन तजविज कालिन ताँहार आपन फयशलार लिखित हेतुते एइ मोकर्द्दमार व्यवस्था तलवे तिन फर्द्द सओयाल सहर मुरशीदावाद ओ जेला नदिया ओ जेला विरभूमेर देओयानी आदालतेर पण्डितदिगेर नामे पाठान तिन जेलार पण्डितदिगेर व्यवस्थासकल सानन्दमयीदासीर तृतीय पुत्र, जे उक्त सानन्दमयीर भ्राता महानन्ददत्त ओ तस्य वनितार मृत्युर पर जन्मियाछे, सत्व ना राखा विवरणे पोंछिले पर उक्त व्यवस्थासकल एवं जजसाहेव मोछफेर फयसलार लिखित अन्य २ व्यवस्था अनुजाइ इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर २१ जुलाइ तारिखे मुद्दइ आपीलाण्टेर दावि डिसमिस हय। मुद्दइ आपीलाण्ट ताहार असम्मतिते आपीलेर द्वाराय एइ आदालते उपस्थित आने, आर ताहा इङ्गरेजी सन १८३६ सालेर ३१ मार्च्चेर हओया एइ आदालतेर रोवकारिर लिखित हेतुते

श्रीयुत रावरट हाल डन राटरि साहेव हाकिमेर वैठके द्वितीय विवेचना ओ गौरेर जोन्य वोध हय इति—

जे हेतुक कोन हुकुम प्रकाश करणेर पूर्व्वे निचेर लिखित मतो तिन सओयाल एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञाश्य उचित। प्रथमत, एइ जे मुरशीदावाद मोतालगेर जङ्गीपुर साकिनेर कृत्तीचन्द्रदत्त आपन पुत्रगण महानन्ददत्त ओ परमानन्ददत्त ओ कन्यागण आनन्दमयीदासी ओ सानन्दमयीदासी ओ पुरणानन्दमयीदासी ओ जमीदारि डिहिगणकर प्रभृति विषय राखिया देह त्याग करे। ताहार मृत्यर पर महानन्ददत्त ओ परमानन्ददत्त दुइ पुत्र आपन २ पितृ-वस्तुर पर दखलीकार थाकिया उक्त परमानन्ददत्तेर विवाह ना करिया मृत्यु हय। ताहार मृत्युर पर महानन्ददत्त आपन पितार तावत वस्तुर पर दखलिकार हइया आपन वनिता द्रवमयीदासीके ओयारिस राखिया निःसन्तान परलोक प्राप्त हय। ताहार मृत्युर पर द्रवमयी उहार आपन स्वामीर स्थावरादि विषयेर पर दखलिकार हइया स्वामीर भग्नीगण आनन्दमयी ओ सानन्दमयी ओ आनन्दमयीर गर्भजात पाँच पुत्र ओ सानन्दमयीर गर्भजात दुइ पुत्र ओ उक्त मृत महानन्ददत्तेर अवीरा भग्नी पूरणानन्दमयीर सन्मुखे मृत्यु हय। ततपरे आनन्दमयीर स्वामी देह त्याग करे. आर सानन्दमयीदासीर गर्भे तृतीय आर एक पुत्र जन्मे। परे जे पुत्र महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता द्रवमयीदासीर मृत्युर पर मृत महानन्ददत्तेर भग्नी सानन्दमयीदासीर गर्भे जन्मियाछे, से पुत्र शास्त्रानुजाइ महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता द्रवमयीर स्थावरादि धन हइते द्वितीय भ्रातागणेर तुल्यांश पाइते पारे कि ना। आर यदि इहार पर सानन्दमयीदासीर गर्भे पुनर्व्वार पुत्र जन्मे, से पुत्र महानन्ददत्त ओ तस्य वनितार स्थावरादि वस्तु हइते उहारदिगेर तुल्यांश पाओनेर सत्वाधिकारि हइते पारे कि ना। द्वितीय, सुवे उडिस्या ओ वाङ्गलार शास्त्र ओ व्यवहार प्रथम

सओयालेर लिखित विषये ऐक्य आछे, किम्बा किछु अनैक्य। तृतीय, ये हेतुक आनन्दमयीर पाच पुत्र ओ सानन्दमयीर दुइ पुत्र, साम्यक सात जन, आपन २ मातुल मृत महानन्ददत्तेर मृत्युर पर रित मते आदालते नालिस करिया आपन २ सत्वे डिगरि हासिल करिया तदानुजाइ सात जना आपन २ अंशेर पर आदालतेर हुकुमेर द्वाराय सरकारेर ताहुते नाम जारिते भोगवान हइया थाके। ए विषय अष्टम पुत्रेर, जे महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता द्रवमयीदासीर मृत्युर पर जन्मियाछे, ताहार सत्वेर अन्यथार कोन हेतु हइते पारे, कि ना। ए प्रयुक्त हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ मोकर्द्दमार फयसलार सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय जे उपरेर लिखित तिन सओयालेर उत्तर एइ हुकुम पौछार दिवस हइते तिन दिवसेर मध्ये लिखिया दाखिल करेण, आर अद्य एइ मोकर्द्दमा स्थकित थाके इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतफ्रानशीशकरुणइशमितसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्विपक्षमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितजयपत्रं च यत्तदब्दीयतन्मासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतमहानन्ददत्तस्य भगिन्याः सानन्दमयीदास्या गर्भतो महानन्ददत्तस्य तत्पत्न्या द्रवमयीदास्याश्च मरणानन्तरं जनितो जनिष्यमाणपुत्रश्च महानन्ददत्तस्य तत्पत्न्या द्रवमयीदास्याश्च त्यक्तस्थावरप्रभृतिधनतोऽधोलिखितप्रथमप्रमाणेन भ्रात्रन्तरतुल्यांशभागी भवितुं शक्नोति। किन्तु अधोलिखितद्वितीयतृतीयप्रमाणाभ्यां भ्रात्रन्तरतुल्यांशभागी भवितुं न शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः।
वृत्तिञ्च तेऽभिकांक्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वम्—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥२॥

क्रमागतजीवनोपाय एव वृत्तिशब्देनोच्यते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि उत्कलदेशे प्राधान्येन प्रचलितग्रन्थः शम्भुकरवाजपेयी विद्याकरवाजपेयी च। तयोर्वारंवारमन्वेषणेऽप्यद्यापि तौ ग्रन्थौ न प्राप्तौ। तावद्दृष्ट्वा ताभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रस्यैक्यमनैक्यं वेति निश्चयो न जातः। किन्तु उत्कलदेशे मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थानुसारेणापि व्यवस्था भवति। अत एवोत्कलदेशे चलितशास्त्रव्यवहाराभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रव्यवहारयोः प्रथमप्रश्नलिखितविषयभेदोऽस्त्येवेति—

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तृतीयप्रश्नलिखितविषयो महानन्ददत्तस्य तत्पत्न्या द्रवमयीदास्याश्चोपरमानन्तरं जनितस्याष्टमपुत्रस्य स्वत्वस्यान्यथाकारको भवितुमर्हति, यतः शास्त्रानुसारेण राजाज्ञया च व्यक्तीभूतप्रादेशिकस्वत्वास्पदीभूततत्तद्भ्रात्रंशे महानन्ददत्तस्य तत्पत्न्या द्रवमयीदास्याश्चोपरमानन्तरं जनितस्य पूर्व्वधनस्वामिमृतमहानन्ददत्तपितृदौहित्रस्य स्वत्वं भवितुं नार्हति-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

सकृदंशो निपतति सकृत् कन्या प्रदीयते।
सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत्॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

अस्वतन्त्राः प्रजाः सर्वाः स्वतन्त्रः पृथिवीपतिः--इति व्यवहार-तत्त्व(पृ० ६४)विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थधृतनारद(ना-सं० २६।पृ०२६)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयद्विपक्षमित-दिनसम्बधिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रादिसहितेयं व्यवस्था दत्तेति--

श्रीर्ज्जयतितराम्—
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

(११५)—तरजमा सवाल—

यद्यपि रामगोपालमित्र नामे एक व्यक्ति कायस्थ जाति गुडवा तालुका जमीदारी. खरिद करिया ताहाते दखिलकार छिलो। उहार पत्नीर गर्भे तीनि पुत्र। प्रथम महतापराम, द्वितीय गुलावराम, तृतीय मानिकराम जन्मियाछिलो। ताहार मध्ये ऐ महतापराम ओ मानिकराम केवल आपन आपन स्त्रीके उत्तराधि-कारिणी राखिया आपन पिता रामगोपालमित्रेर साक्षाते निस्स-न्तान मरियाछे। ओ ऐ मृत दुइ भ्रातार स्त्रीगण ए क्षण पर्य्यन्त विद्यमाना आछेन। इहार पर गुलावराम द्वितीय पुत्र ओ आपन पितार साक्षाते आपन चारि जन पुत्रके अर्थात अनूपराम ओ दुर्ल्लभराम ओ मुकुन्दराम ओ माधवरामके राखिया मृत्यु हय। ओ रामगोपालेर मृत्युर पर ऐ गुलावरामेर पुत्रगणेर नाम समस्त जमिदारीते दाखिल हइया लेखा गेलो। ताहार पर गुलावरामेर प्रथम पुत्र अनूपराम ओ तृतीय पुत्र मुकुन्दराम केवल आपन आपन स्त्रीके राखिया क्रमे परलोक प्राप्त हइलेन, ओ द्वितीय पुत्र ऐ दुर्ल्लभराम आपन कनिष्ठ भ्राता माधवराम ओ अनूप-

रामेर स्त्री ओ मुकुन्दरामेर स्त्रीर सहित साधारणे ओ एकान्ते ऐ जमीदारीते दखिलकार थाकिया एक स्त्री ओ अविवाहिता एक कन्या ओ आपन कनिष्ठ भ्राता माधवरामके राखिया परलोक गमन करिलेक। ताहार पर ऐ अविवाहिता कन्यार विवाह ऐ कन्यार पनेर टाका व्यय करिया किम्वा ऐ जमीदारीर उपस्वत्वेर द्वाराय माधवरामेर कर्त्तृत्व थाकिते हइलो। ताहार पर ऐ महता-परामेर स्त्री ओ मानिकरामेर स्त्री ओ अनूपरामेर स्त्री ओ मुकुन्द-रामेर स्त्री ऐ जमीदारीर उपस्वत्व हइते आपन आपन खोरोपोसेर उपयुक्त धन लइवार नियम करिया कलकटरीते ऐ जमीदारीर नादावी विषयेर दरखास्त गुजराइया ऐ जमीदारीर दावी हइते निरास हइलेन। ए दयणे ओइ मृत दुर्ल्लभरामेर स्त्री ओइ माधव-रामेर अंश आठ आना जमीदारी ओ चारि आना जमीदारी ओइ चारि जना अवीरा स्त्रीगणेर खोरोपोषेर जन्ये मिनहा दिया वाकि चारि आना जमीदारीर हिस्या आपन स्वामीर अंश करार दिया, आपन स्वत्वेर एजहारे ओ आपन मृत्युर पर आपन कन्यार स्वत्वेर एजहारे आदालते नालिस करियाछे–ए प्रकारे वङ्गदेशेर चलित शास्त्रानुसारे मृत दुर्ल्लभरामेर स्त्री ओइ जमीदारीर चारि आना अंशेर स्वत्वाधिकारिणी वटे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाज्ञापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयवेदपक्षमितदि-नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितविषये मूलधनिनो रामगोपालमित्रस्य मरणानन्तरं विद्यमानानान्तत्पौत्राणामर्थाद् गुलावरामस्य धनिद्वितीयपुत्रस्य पुत्राणाम-नूपरामदुर्ल्लभराममुकुन्दराममाधवरामाणां मूलधनिनो रामगोपालमित्रस्य

त्यक्तस्थावरादिसमुदायधने पौत्रत्वेन समानाधिकारे जाते सति तेषाम्मध्ये दुर्ल्लभरामस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरमे तद्योग्यांशे अर्थाद्रामगोपालमित्रस्य दुर्ल्लभरामप्रपितामहस्य त्यक्तचतुर्थांशे दुर्ल्लभरामपत्न्या एवाधिकारः—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।।—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ।।१।।

प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्र इति । प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पत्नी च ।—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ।।२।।

सदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्यजातव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति । ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयैकादशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभिः सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्म्मितसत्प्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण च सदरदिमानीधर्म्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपारशीकलिपितत्प्रश्नप्रतिरूपैश्च सहिता दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण
मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

———

श्रीदुर्गा

(११६)—प्रश्न वनाम पण्डित आदालते सदर देओयानि—एइ ये, रामप्रयादेव्या आपन स्वामी ओ पुत्रेर लोकान्तरेर पर आपन पुत्रवधूर समिद्व्याय आपन स्वामिर पूर्व्व पुरुषेर विषयेर मध्ये किञ्चित भूमि अर्थात ऐ विरधीय वस्तु आपीलाएट

सावेक मुद्दइर पितार सहित आपन भग्नीर गर्भजात कन्या श्रीमतिदेव्यार विवाह देओन कालिन कुलमर्य्यादा सरवे आपीलाण्टेर पिताके दान करिते पारे कि ना। यद्यपि करिते पारे, तवे तन्निमित्त शास्त्र सम्मत पुत्रवधूर सम्मतिर आविश्यक आछे कि ना—इहार उत्तर यथाशास्त्र एइ प्रश्नेर पार्श्वे लिखिवेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं निवेदनपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाज्ञापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरैलमासीयवेदपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितविषये श्रीमतीदेव्या विवाहसमये कौलिकमर्य्यादार्थं विवादास्पदीभूतकिञ्चिद्भूमिदानं रामप्रियादेव्याऽवश्यकर्त्तव्यं चेत्तदा रामप्रियादेवीपुत्रवधूसम्मत्या रामप्रियादेवीकृतदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुमर्हति। तद्दानसिद्धौ रामप्रियादेव्याः पुत्रवध्वा अनुमतिरप्यावश्यकी। यदि च श्रीमतीदेव्या विवाहसमये कौलिकमर्य्यादार्थं विवादास्पदीभूतकिञ्चिद्भूमिदानं रामप्रियादेव्याऽवश्यकर्त्तव्यं नासीत्तदा रामप्रियादेव्याः पुत्रवध्वा अनुमतावपि रामप्रियादेवीकृतदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुन्नार्हति–इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति–

अत्र प्रमाणम्—

भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद् वा कर्म्म करोति मृतभर्त्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्व्वीत– इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम्॥१॥

स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहारोऽपि तथा– इति तद्ग्रन्थलिखनम्॥२॥

मृते भर्त्तरि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्य्यव्रते स्थिता।
स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् स्वभर्त्रे सलिलाञ्जलीन्॥

कुर्य्याच्चानुदिनं भक्त्या देवतानाञ्च पूजनम् ।
विष्णोराराधनञ्चैव कुर्य्यान्नित्यमुपोषणम् ॥
दानानि विप्रमुख्येभ्यो दद्यात् पुण्यविवृद्धये[1] ।
उपवासांश्च विविधान् कुर्य्याच्छास्त्रोदिताञ्छुभे ।—इति दायभागादिग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥३॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इतिदायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥४॥

सदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्य्यजातव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनम् इति । ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयैकादशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिनिवेदनपत्रैर्विचारपत्राभ्याञ्च सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्म्मिततत्प्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण च सदरदिमानीधर्म्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपवङ्गदेशीयलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपैश्च सहिता दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

———

श्रीश्रीदुर्गा

(११७) प्रश्नः—

यदि कोन अंशनामाय जीवतमान वेक्तीर अवर्त्तमान वेक्तीर

---

१. ०मुख्योऽन्यो दद्यात् पुण्यविवृद्धय–व्यप० ।

सहित अंश हओयार कथा लेखा थाके, से अंशनामा शास्त्रानुसारे ग्राह्य हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं विभागपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाज्ञापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयाङ्कमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्मिंश्चिद्विभागपत्रे विद्यमानव्यक्तिविशेषस्याविद्यमानव्यक्तिविशेषेण सहितांशभवनं लिखितं स्यात्तदा तद्विभागपत्रं स्वतोऽविद्यमानव्यक्तिविशेषस्यांशप्राप्तितात्पर्य्येण ग्राह्यं भवितुन्नार्हति, अविद्यमानव्यक्तिविशेषस्य स्वतोंऽशग्राहकत्वाभावात्; किन्त्वविद्यमानव्यक्तिविशेषोत्तराधिकारिणामंशप्राप्तितात्पर्य्येण ग्राह्यं भवितुमर्हति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

सदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्य्यजातव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने विलम्बो जात इति निवेदनमिति—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्वरमासीयबाणपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविभागपत्रविचारपत्रद्वयाङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभिः प्रभुयाचितनिवेदनपत्रपारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्राभ्यां च सहितेयं व्यवस्था एतद्धर्म्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रवङ्गदेशीयलिपिनिर्म्मितप्रश्नपत्रपारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रैः सहिता दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

———

(११८)—नं० ३२१ सन १८३५ सालेर—

रुबकारि मिछिल आदालते सदर देओयानि मोकाम कलिकाता। बैठक जान रास हेचिसन साहेब उक्त आदालतेर काएम मोकाम हाकिम सन १८३७ साल ता० ६ सेतम्बर मोताबेक सन १२४४ साल तारिख २२ भाद्र दिवस बुधवार—

सिउस्वहायसिंह ओ गयरह— आपीलाण्टान—

चेताकुङर ओ ओमेदकुङर— रेष्पाडेण्डान्—

आपीलाण्टेर उकिलगण मुनशी होसनआलि ओ जिमिसचारलेस कांलबरक सदरलेण्डसाहेब ओ मिरकबिर होसन ओ काजि पेगाम्बर वक्स मोक्तारगण ओ हाजिर रेष्पाडेण्डर उकिल मुनशी गोलाम आहम्मद हाजिर आसिल। गतो आगष्ट माहार १० तारिखे ए मकद्दमा आमार बैठके पेस हइया सकल कागज पत्र पडा जाइया मुलतवि छिल, अद्य पुनराय पेस हयाते बोध हइल जे एइ आदालतेर फयछला अनुसारे केहरसिंहेर हिस्या ताहार कन्या ज्ञानकुङरेते अर्शे, आर केहरसिंहेर द्वितीय कन्यार पुत्र तोतासिंह, जे ज्ञानकुङरेर मृत्युर पर सत्व राखितो, ज्ञानकुङरेर साद्याते मृत हय, आर ताहार पर ज्ञानकुङर आपन कन्या उमेदकुङरके राखिया मरे। आर ए दयने उक्त तोतासिंहेर पुत्र सिउस्वहायसिंह आर तोतांकुङरेर भ्रावा नाथुसिंहेर पुत्र नरेन्द्रनारायण ओ गयरह, जे तोतासिंह आपन मातार साद्याते फौत करियाछिल, आसल मालिक केहरसिंहेर वस्तुर उत्तराधिकारि सुरते ऐ हिस्यार दावि राखे। ए कारण चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे एइ मकद्दमाते शास्त्रेर हुकुम ज्ञातो हओया एइ विषयेते, जे विवादीय हिस्याते उभयेर मध्ये के स्वत्व राखे, उचित हइया हुकुम हइल जे एइ रुबकारिर नकल एइ हुकुमे जे विवादीय हिस्यार प्रति दृष्टी आर दाविदारानेरदिगेर प्रति दृष्टी जे ताहारदिगेर प्रसङ्ग उपरे लेखा गेल (विचार) करियालेखेन जे पश्चिम प्रचलित शास्त्र अनुसारे केहरसिंहेर हिस्या,

जाहा ज्ञानकुङरेते पौछियाछिल, ज्ञानकुङरेर मृत्युर पर ताहार कन्याके किम्वा केहरसिंहेर दौहित्रगण नाथुसिंहेर पुत्रगणके ओ तोतासिंहेर पुत्रके पौछिवेक—एइ आदालतेर पण्डितके समार्पन करा जाय इति —

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतजानरासहेचिसनसाहेब-धर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बर-मासीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासी-यगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितविषये ज्ञानकोमराख्यासंक्रान्तकेहरसिंह-त्यक्तांशे ज्ञानकोमराख्याया उपरमानन्तरं तत्कन्यायाः स्वत्वं मिताक्षरा-बालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीकाप्रभृतिग्रन्थानुसारेण भवितुमर्हति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षराबालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीकाप्रभृतिग्रन्थानुसा-रिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम् ।

आधिवेदनिकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्त्तितम्॥—इति मिताक्षरा-वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पित्रा मात्रा पत्या भ्रात्रा च तद्दत्तं यच्च विवाहकाले अग्नावधि-कृत्य मातुलादिभिर्दत्तम् । आधिवेदनिकमधिवेदननिमित्तमधिविन्नस्त्रियै दद्यादिति वक्ष्यमाणम् । आद्यशब्देन ऋक्थक्रयसंविभागपरिग्रहाधिगम-प्राप्तमेतत्स्त्रीधनं मन्वादिभिरुक्तम् । स्त्रीधनशब्दश्च यौगिको न पारिभा-षिकः, योगसम्भवे परिभाषाया अयुक्तत्वाद्—इति मिताक्षरा-ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यथा मातृधनग्रहणे दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रादिक्रमस्तथा पितृ-धने पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्रदौहित्र्यादिक्रमस्य प्रत्यासत्तितार-

तस्येन न्यायप्राप्तत्वात् स्त्रीधनं दुहितॄणामप्रत्तानामप्रतिष्ठितानाञ्चेति गौतमवचनस्य पितृधनेऽपि समानत्वादित्यनुपदमेवोक्तवता विज्ञानेश्वरेण सूचितत्वात् तत्सम्मतमपीदमिति—इति बालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीका-रूपग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(११९) ल० २६३ सन १८३३ साल—

रोवकारि मिछिल आदालत सदर देओानी मोकाम कलिकाता तारिख २१ सेप्तम्बर सन १८३७ साल मोतावके ६ आश्विन सन १२४४ बाङ्गला श्रीयुत चारलिस हारिडिङ्ग साहेव काएम मोकाम हाकिमेर वैठके—

वल्लभिकान्तचौधुरि अपीलाएड

नवकान्तचौधुरि— रेष्पाडएड

आपीलाएडेर उकिल मुनशी आवास आलि ओ रेष्पाडएडेर उकिलान मुनशी वंशीवदनमित्र ओ रामप्राणराय हाजिर आशीलेन। अद्य एइ मकद्दमा तरतिव मोतावेक आमार वैठके दरपेश हइया आदौ ओ द्वितीय ओ एइ विचारस्थानेर तावत कागजात पडा गेलो। यदि स्यात एइ मकद्दमाय रेष्पाडएडेर पुष्य-पुत्र राखनेर विशये जेता ओ एइ आदालतेर पण्डितलोकेर निकट जिज्ञाशा गियाछिल, ताहाते पण्डितान् आपन २ जओाव पुष्य पुत्र सिद्धि हओनेर विशये लिखियाछेन। विशेसत एइ मकद्दमार हुकुम हओनेर पूर्व्वे सन्देह भञ्जनार्थे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट कएक विशय जिज्ञाशा आविश्यक हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने समार्पन करा जाय जे निचेर लिखित प्रश्नसकलेर जओाव वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे काछारि वन्देर पर एक सप्ताहेर

मध्ये दाखिल करेण। प्रथम, एइ जे, यदि कोन पीडित व्यक्ति पीडाते अज्ञान हइया रय, आर ततकालिन कोन एक व्यक्ति एक वालकके लइया ऐ पीडित व्यक्तिके कहे जे तुमि पुष्य पुत्र लइवा, आर से समय ऐ पीडित व्यक्तिर मुखे हइते हाँ शब्द निर्गतो हय, तवे शास्त्रानुसारे एइ प्रकार पुष्य पुत्र सिद्धि हइते पारे कि ना। द्वितीय एइ जे, पुष्य पुत्रेर विशये शास्त्रानुसारे वयेशेर किछु निरपन आछे कि ना। यदि निरपन थाके, तवे सेइ निरपन जावदीय हिन्दु जातीर निमित्तें, कि हिन्दुर मध्ये सकल जातीर विभिन्न्य वटे–विस्तार करिया लिखेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतचारलिसहारिंडिंगसाहेव-धर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितस्वर-मासीयेन्दुपक्षमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयनव-स्वरमासीयेन्दुपक्षमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

रोगाभिभूतस्याज्ञानावस्थायां केनचिदेकं बालकमादाय तमेव रोगाभि-भूतव्यक्तिविशेषमुद्दिश्य त्वं दत्तकपुत्रं ग्रहीष्यसीत्युक्तौ रोगाभिभूतव्यक्ति-विशेषमुखतो हाँ इति शब्दप्रयोगे सत्येवंभूतदत्तकपुत्रश्शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, दत्तकपुत्रतासिद्धिसम्पादकशास्त्रीयनियमजातनिष्पत्तेः प्रथम-प्रश्नलिखितविषयतो ज्ञातुमशक्यतया तन्नियमजातनिष्पत्तिमन्तरेण दत्तक-पुत्रतासिद्धेश्शास्त्रीयत्वस्य भवितुमशक्यत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाहूय राजनि निवेद्य निवेशनस्य मध्ये व्याहृतिभिर्हुत्वा अदूरबान्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृह्णीयात्—इति दत्तक-मीमांसा(पृ० १०२)प्र(भृ)तिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यजातीयानामुपनयनप्राक्कालपर्य्यन्तं शूद्रजातीयानान्तु विवाहप्राक्कालपर्य्यन्तं दत्तकपुत्रता शास्त्रीया भवति—इति वङ्गदेशचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते ॥—इति दत्तकमीमांसाप्रभृतिग्रन्थधृतवचनम् ॥१॥

एवञ्च *चूडाद्या* इत्येतद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिणा द्विजातीनामुपनयनलाभः, *शूद्रस्य तु विवाहलाभः*—इति दत्तकचन्द्रिकाग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयगुणपक्षमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था मया दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१२०)—तरजमा रोवकारि—

लम्वर ६१३१ । रोवकारी मिसिल आदालत दिमानी सदर मोकाम इलाहावादे तारिख २५ माह अपरेल सन १८३७ ईशवी मोताविक ५ माह वैशाख सन १२४४ फसली, रोज मङ्गलवार ओलियम मनकटन् साहेव काएम मोकाम हाकिम आदालत मजकुरार वैठके इति—

मोसम्मात लछुमना ओ ठाकुर— आपीलाएटान्

वेचनलालेर मृत्युर पर ताहार पुत्र मुकुन्दलाल—रष्पाडएट आपीलाएटेर ओकीलगण शेख महम्मद सफी ओ लाला-

मथुरादास ओ रष्पाडण्टेर ओकीलगण मौलवी इनामुल्लाह ओ लाला रामचन्द्र हाजीर हइलेन। ओलियम फिलमेकडीक साहेब हाकिमेर सन हालेर फिवरवरी मासेर तेइसा तारिखेर हुकुमानुसारे ए मोकद्दिमा अद्य आमार वैठके रोवकार हइया जिलार दुइ आदालतेर कागजात ओ वाराणसेर कोर्ट आपील आदालतेर कागजात ओ ए मोकद्दिमार तजविज-सानीर कागजात ओ ओइ हाकिमेर राय सम्वलित सन हालेर फेवरवरी मासेर तेइसा तारिखेर लिखित ओइ हाकिमेर रोवकारिर लिखित विस्तीर्ण हेतुसकल ओ सन १८२३ ईशवीर अपरैल मासेर दशइ १० तारिखेर रजिस्तर साहेवेर फैसलार सम्पर्कीय फौजदारी आदालतेर कागजात ओ भजनलाल मद्दे ओ मोसम्मात लछुमना मुद्दाआलेहेर मोकद्दिमार कागजात ओ जज आपीलेर ओइ मोकद्दिमार सन १८२४ ईसवीर जुन मासेर १४ चौदही तारिखेर फैसलार सम्पर्कीय कागजात पढा गेलो। अतएव ए मोकद्दिमाते कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर निकट हइते व्यवस्था तलव करा आविश्यक्र वोध हइया हुकुम हइलो ये नीचेर लिखित विस्तीर्ण सवाल ये प्रकार एइ रोवकारीते लिखा आछें सेइ प्रकारे लिखिया एइ रोवकारीर नकल सम्वलित ओ ऐ आदालतेर रजिस्तर साहेवेर चिठीर सहित कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर रजिस्तर साहेवेर निकट पाठानो जाय ये कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर रजिस्तर साहेव कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर पण्डित हइते ओइ सवालेर जवाव लइया ए आदालते पठाएन इति। सवाल एइ ये, यद्यपि दुइ भ्राता ताम्बुलि जाति पैतृक स्थावर धन विभागेर पर आपन आपन अंशेते दखिलकार छिलेन, ओ ओइ दुइ भ्रातार मध्ये एक जन एक स्त्री ओ एक अविवाहिता कन्या राखिया मृत्यु हइया थाके, ओ ओइ स्त्री आपन कन्यार विवाह कराइया थाके। ताहार पर ओइ कन्यार मृत्यु हय। ताहार पर ओइ मृत भ्रातार स्त्री आपन

पतिर विभक्त धने दखिलकार छिलो, द्वितीय पति करे। ए प्रकारे जिज्ञासा करा जाइतेछे ये मृत व्यक्तिर पत्नीर द्वितीय पति करण शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना। यद्यपि सिद्ध हय तवे आपन प्रथम पतिर स्थावर धन याहा ओइ स्त्रीर दखले आछे ताहा पाइवेक, किम्वा ओइ स्त्रीर दखली स्थावर धन ओइ स्त्रीर प्रथम पतिर भ्राताके अर्शिवेक। ओ यद्यपि ए विषयेर खुलासा शास्त्रे ना पाओया जाय तवे देशाचार ओ जात्याचार प्रमाण जाना जाइवेक कि ना। ओ एइ सवालेर यवाव वाराणस देशेर चलित शास्त्रानुसारे लेखेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाज्ञापत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तस्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ताम्बुलिकजातीययोर्द्वयोर्भ्रात्रोः पैतृकस्थावरधनस्य विभागानन्तरं स्वस्वांशे आयत्तत्वं सम्पादितवतोरेकस्य पत्नीमेकामविवाहितां कन्यामेकां विहाय मृतस्य पत्नी स्वकन्याविवाहं कारितवती स्यात्, पश्चात् सा विवाहिता कन्या परलोकं जगाम, तदनन्तरं च मृतस्य भ्रातुः पत्नी स्वपतिरयक्तविभक्तधने आयत्तत्वं सम्पाद्य पत्यन्तरं कृतवती चेत्तत्पत्यन्तर करणं यद्यपि साध्वीस्त्रीणां शास्त्रसिद्धं न. भवति। किन्तु साध्वीभिन्नानामपि स्त्रीणां कतिचित्प्रभेदाः शास्त्रे उक्ताः। तेषाम्प्रभेदानां तृतीयस्वैरिणीस्त्रीलक्षणं मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थेषु स्पष्टतया लिखितम्। तद्दृष्ट्या वाराणसीप्रभृतिदेशे ताम्बुलिकजातीयस्त्रीणां पत्युपरमानन्तरं पत्यन्तरकरणं व्यवहृतं चेत्तदैतद्विवादसम्बन्धिन्या मृतस्य भ्रातुः पत्न्याः शास्त्रानुसारेण तृतीयस्वैरिण्याः पत्यन्तरकरणं तज्जातीयव्यवहारानुसारेण सिद्धं भवितु शक्नोति। एवमुपरिलिखितप्रकारेण तस्याः स्त्रियाः पत्यन्तरकरणस्य सिद्धौ सत्यामुत्तराधिकारित्वेन स्वायत्तीभूतप्रथमपतित्यक्तधने यावज्जीवं तस्या एवाधिकारस्तस्या जीवन्त्यान्तत्प्रथमपतिभ्रातुर्नाधिकारः, उत्तराधिकारित्वेन स्वस्वोत्पत्त्यनन्तरं

केनचिद्दोषेण तत्स्वत्वनाशस्य शास्त्रानुसारेण भवितुमशक्यत्वात्–इति वाराणसीप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते ।
सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् ॥—इति मनु(६।४७) वचनम् ॥१॥

न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिद् भर्त्तोपदिश्यते ॥—इति मिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

मृते भर्त्तरि तु प्राप्तान् देवरादीनपास्य या ।
उपगच्छेत् परं कामात् सा तृतीया प्रकीर्त्तिता ॥—इति उपरिलिखितग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० ५० । पृ० १७६)वचनम् ॥३॥

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥–इति मनुवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा–इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्–इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥६॥

एतेषां विभागात् प्रागेव दोषभाक्त्वेनांशित्वम्, न पुनर्विभागोत्तरमपि दत्तविभागापहरणम्, प्रमाणाभावात्–इति वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥७॥

कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्य्यजातव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनम् । इति ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रांगरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभ्यां सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण कलि-

कातारव्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्म्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूप-रक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रवि-चारपत्रप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण
मुकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

---

(१२१)—तरजमा रोवकारी—

रोवकारी आदालत दिमानी जिला फतेहपूर जाननेयावलि-सरेवाज साहेव जजेर वैठके। तारिख २ जुन सन १८३७ ईशवी। गङ्गापुत्रदिगेर ओ जमुनापुत्रदिगेर वृत्ति क्रमागत धन वटे कि यजमानेदिगेर एमत क्षमता आछे ये आपन आपन इच्छा मते याहाके तुष्ट हइया दिते चाहेन ताहाके दिते पारेन – ए विषय सदर दिमानी आदालतेर पण्डित हइते ज्ञात हओया आवश्यक वोध हइथा हुकुम हइलो ये एइ रोवकारीर नकल अङ्गरेजी चिठीर सहित मोकाम एलाहावादेर सदर दिमानी आदालतेर प्रवल-प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय, ये उपरेर लिखित ओइ पण्डितेर निकट हइते ए विषय ज्ञात हइया ए आदालते अनुग्रह-पूर्व्वक प्रेरण करेण इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रसूचीपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाज्ञापत्रञ्च यदी-शवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयरसमितदिनसम्ब-न्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

गङ्गापुत्राणां यमुनापुत्राणां च वृत्तिः प्राचीनपुरोहितानां तेषां क्रमागता भवितुमर्हति प्राचीनपुरोहितान्तान् पौरोहित्यकर्म्मानधिकारप्रयोजकशास्त्रीय-दोषमन्तरेण यजमानाः परित्यज्य स्वस्वेच्छया पुरोहितान्तरं कर्त्तुं न शक्नुवन्ति इति-पश्चिमदेशचलितमनुमितात्तराबीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

ऋत्विजं यस्त्यजेद्याज्यो याज्यं चर्त्विक् त्यजेद्यदि ।

शक्तं कर्म्मण्यदुष्टं च तयोर्द्दण्डः शतं शतम् ॥—इति वीरमित्रोदय(पृ० ३८३)प्रभृतिग्रन्थधृतमनु(८।३८८)वचनम् ॥१॥

कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धि-स्वकर्त्तव्यकार्य्यव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्था-दाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति । ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिसूचीपत्रैः सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदन-पत्रेण कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्म्माधिकरणे एतद्व्य-वस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपत्रपारशीकलिपिनिर्म्मितव्य-वस्थाप्रतिरूपविचारपत्रप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दत्ता इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाबिला श्रीवैद्यनाथमिश्र—३

श्रीश्रीहरिः

(१२२)— न० २५२ सन १८३५ सालेर—

रूबकारि मिछिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलि-

কাতা বৈঠক জান রাস হেচিসন সাহেব, উক্ত আদালতের কাএম মোকাম হাকিম। সন ১৮৩৭ সাল তারিখ ৬ সেতম্বর মোতাবকে সন ১২৪৪ সাল তারিখ ২২ ভাদ্র বুধবার—

সিউস্বহায়শাহুর মৃত্যুর পর তাহার পুত্র গোপাললালের ওয়ালি—

বদামুকুন্দর আপীলাণ্ট

বুনিয়াদিসিংহ রেস্পাডেণ্ট

গতো মার্চ্চ মাহার ২৮ তারিখে এই মকদ্দমা আমার বৈটকে পেস হইয়া সকল কাগজ-পত্র পড়া জাইয়া রানী কৃষ্ণমনী আপী-লাণ্ট ও রাজা উদঅন্তসিংহ রেষ্পাডেণ্ড এই মকর্দমার এই আদালতের ফয়ছেলা মোনাহেজা করণের কারণ আর মৃত আপী-লণ্টের উত্তরাধিকারির হাজিরের নিমিত্তে ইস্তাহার জারি করণের কারণ মুলতবি ছিল। অদ্য পেসকারের জ্ঞাত করান মতে জে মৃত আপিলণ্টের উত্তরাধিকারির সাবুদের বাবত রিটরন কামেল পৌছিয়া মৃত আপিলাণ্টের জাএগায় গোপাললালের অলি মোছম্মাত বাদামুকুন্দরের নাম লেখা গিয়াছে; আর তাহার তরফ হইতে মুনসি হোসন আলির নামে ও জিমিস চারলেস কোলবরক সদরলেণ্ট সাহেবের নামে ওকালতনামা দাখিল হইয়াছে। উক্ত উকিলগণের হাজিরিতে আর রেষ্পাডেণ্ডর গরহাজিরিতে জে এয়ালামনামা জারিতে রসিদ লিখিয়া দেওয়াতেও উকিলের দ্বারায় কিম্বা খোদ হাজির নাই। পুনরায় পেস হইবায় বোধ হইল জে কাজিয়ার গ্রাম-সকল পূর্ব্ব হইতে ৭০০০ টাকা আগামিতে ইস্তক সন ১২২৩ নাগাদ সন ১২২৯ ফসলি সাতবত সরমিয়াদে আপীলণ্টের পিতার ইজারা ছিল, আর ঐ আশামির টাকা আদাএর ও-য়াদা ইজারার অর্ন্তসনের অন্তে ছিল। যদি স্যাত তাহা ওয়াদা মতে আদায় না হয়, তবে ঐ টাকা আদায় পর্য্যন্ত ইজারা বাহাল থাকিবেক। ইহার পরে বুনিয়াদিসিংহ রেষ্পাডেণ্ডর ও প্রতাব সিংহের পিতা খড়গনারায়ণ ৪৩০০ টাকা তমসুকসকলের দ্বারায় উক্ত ইজারাদারের নিকট হইতে লইয়া ১২২৫ সালে কাজিয়ার গ্রাম

सकल आर दोसरा ग्रामसकल आर रेष्पाडेण्ट आर प्रतापसिंह नावालग पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया फौत करे। ताहार पर तमसुकेर टाका तलब तागादाय खडगनारायणेर वनिता मतिकुङर नावालगदिगेर माता काजियार ग्रामसकल १२००१ टाकाते वयवेल उफा[1] राखिया किम्मतेर टाका हइते आशामिर टाका आर तमसुकेर टाका मिनाह दिया वाकि टाका आपनि लय। यदि स्यात्, रेष्पाडेण्ट प्रकाश करितेछे जे मतिकुङर वयवेल ओफार द्वाराय काजियार ग्रामसकल हस्तान्तर करणेर क्षेमता राखे ना, आर इजारार आगामि टाका आदाएर ओयादा इजारार अन्त सने, न चेत ताहा आदाय पर्य्यन्त इजारा वाहालेर शरत छिल। आर इजारा वाहालेते रेष्पाडेण्डर विषये स्थर्य्य वेतितो कोन खेति छिल ना। किन्तु चुडान्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे शास्त्रेर हुकुम जाना एइ विषएते जे मतिकुङरेर निकट हइते तमसुकेर टाका तलब करा आर तमसुक ओ गयरहेर टाका आदाय कारण काजियार ग्रामसकल हस्तान्तर करणेर मतिकुङरेर क्षेमता छिल कि ना. उचित हइतेछे। ए कारण हुकुम हइल जे एइ रूबकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित प्रश्नेर उत्तर पश्चिम देशीय प्रचलित शास्त्र अनुसारे रूबकारि पौंछिवार तारिख हइते एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन, एइ आदालतेर पण्डितके समार्पन करा जाय।

प्रथम, एइ जे, खडगनारायणेर लिखित तमसुक ओ गयरहेर टाका मतिकुङरेर निकट हइते तलब करा उचित छिल, कि ना।

द्वितीय, एइ ये, यदि स्यात् नावालगगणेर अलि मतिकुङरेर निकट हइते तमसुक ओ गरहेरय टाका तलब करा उचित हय, तवे उहार इजारार विषय परिवर्त्त कारियार ग्रामसकल वयवेल ओफा राखिया तमसुकेर टाका आर आशामि टाका किम्मतेर टाका हइते मिनाह करणेर क्षेमता छिल कि ना इति—

---

[1] ओफा इति अतः परः पाठः॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतजानरासहेचिसनसाहेवध-र्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमा-सीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नजातप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मा-सीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम् —

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखतविषये खडगनारायणलिखितर्णलेख्यप्रभृति राजतमुद्रायाचनकरणं मतिकोमराख्यासन्निधौ शास्त्रानुसारेणोचितन्नासीत्। पुत्रेषु विद्यमानेषु पितृऋणापाकरणस्य[1] प्रथमतः पुत्रैरेवकर्त्तुमुचितत्वात्। द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्य्यवसितमिति पृथङ्न लिखितमिति निवे-दनम्—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्था-नुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

ऋणमात्मीयवत् पित्र्यं पुत्रैर्देयं विभावितम्—इति मिताक्षरा(पृ० १५२)प्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० ११७ वचनम् ॥१॥

तत्र क्रमोऽप्ययमेव-पित्रभावे पुत्रः—इति मिताक्षरा(पृ० १५२)ग्रन्थ-लिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिवाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयरसमितदि-नसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

श्रीदुर्गा

(१२३)—१०० ल० जारि—

जेला चव्विस परगणार मतालक चौकि नवावगञ्जेर मोन-

---

१. पित्रर्णापाकरण०—व्यप० ।

छफी काछारि हइते सदर देओानि आदालतेर श्रीयुत पण्डितेर निकट व्यवस्थार कारण सओाल एइ—

गुरुप्रशादराय—१ डिगरिदारान्
इन्द्रनारायणराय—१
सा. काठालिया—
परगणे कलिकाता।
श्रीमतीगुणमयीदासी देनादार—
सा. सुकचर प० ऐ—

दावि २१७१९ टाका—
मा० जारिर खरचा—

यद्यपि देनादार श्रीमत्या गुणमयीदासीर स्वामी रघुनाथ-वल्लभ स्थावर ओ अस्थावर दिव्यादि एवं श्रीराखालवल्लभ नामक अप्राप्तवयेष एक नावालक पुत्र एवं स्त्री दासी मजकुराके राखिया लोकान्त हय। ऐ रघुनाथ मजकुरेर लोकान्तेर पर तस्य वनिता अर्थात दासी देनादार मजकुरा अप्रओल जन्य ऐ नावालग पुत्रर प्रतिपालनार्थे ऐ डीगरिदारानेर निकट सुखा तामाकु कर्ज्ज लइया व्यवसा करिया ऐ नावालगेर प्रतिपालने खरच करे। ऐ तामाकुरेर किम्मत परिशोद ना हओाते डिगरिदार मजकुरान नालिषेर द्वाराय डिगरि हासिल करिया ऐ डिगरि जारि करिया ऐ रघुनाथ, मतोओफार जायदाद।४ दाफा जाहा ऐ नावालगेर हक ताहा क्रोक कराइयाछे। अतएव शास्त्रानुसारे नावालग राखालवल्लभेर पिता ओँ रघुनाथ वल्लभ मतओफार जायदाद श्रीमतीगुणमयीदासीर देना परिशोधार्थे विक्रय हइते पारे कि—इहार व्यवस्था इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेजीलिपिमाज्ञापत्रं च यदीशवी-शब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयबाणेन्दुमितदिनसम्बन्धिचं -

न्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य याद्दशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितविषये गुणमयीदासीकृताप्राप्तव्यवहारपुत्रप्रतिपालनार्थंर्ण-परिशोधनार्थं रघुनाथवल्लभत्यक्तस्य तदप्राप्तव्यवहारस्वत्वास्पदीभूतधनस्य विक्रयो रघुनाथवल्लभपुत्रस्य प्राप्तव्यवहारतायां शास्त्रानुसारेण युक्तो भवितुमर्हति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बार्थेऽध्यधीनोऽपि व्यवहारं यमाचरेत् ।
स्वदेशे वा विदेशे वा तं ज्यायान्न विचालयेत् ॥-इति मनु(८।१६७)-वचनम् ॥१॥

नाप्राप्तव्यवहारैश्च पितर्य्युपरते क्वचित् ।
काले तु विधिना देयं वसेयुर्नरकेऽन्यथा ॥—इति विवादभङ्गार्णव-प्रभृतिग्रन्थधृत(कात्यायन, कास्मृ० ५५२।पृ०६६)वचनञ्चेति[१] ॥२॥

सदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्य्यजातव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति । ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयार्कमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिप्रभुयाचितनिवेदनपत्रैः सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रसदरदिमानीधर्म्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रप्रश्नप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोक्ताविला श्रीवैद्यनाथमिश्रेण—३

———

१. नारदवचनमिति व्यप० ।

(१२४)—सञ्ओयाल—

यद्यपि कोन एक व्यक्ति हिन्दु आपन जातीय धर्म्म हइते जात्यन्तर हइया अन्य धर्म्मावलम्वीय हय, आर ताहार स्त्री आपन जातीय हिन्दु धर्म्म अवलम्वी थाकिया आपन ऐ स्वामीर निकट जाइते अशन्मतो हय, तवे हिन्दुदिगेर शास्त्रानुसारे ऐ स्त्री आपन जात्यन्तरीय स्वामी हइते विच्छेद हइया आपन पितृ कि भ्रातृ आलये थाकिते पारे, किम्वा विचारकर्त्ता हाकिम आपन क्षमताय ऐ स्त्रीके ताहार ऐ जात्यन्तरीय स्वामीके अर्पन करिते पारेन—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे जाहा हय, एइ प्रश्नेर प्रति उत्तर लिखेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाज्ञापत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयरसमितदिनस-म्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधोजातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितविषये हिन्दूजातीया काचित् स्त्री स्वजातीयधर्म्मनिरता सती स्वजातीयधर्म्मच्युतजात्यन्तरधर्म्मानुष्ठातृपतिसन्निधौ गन्तुमसम्मता चेत्तदा स्वजातीयधर्म्मच्युतजात्यन्तरधर्म्मानुष्ठातृपतिविरहिता एव पितुर्भ्रातु-र्वा गृहे स्थातुं शक्नोति, एवं राज्ञापि शास्त्रानुसारेण स्वजातीयधर्म्मच्युतजात्य-न्तरव्यवहर्तृपतिसन्निधौ[1] स्थापयितुं योग्या न भवति-इति मनुदायभागविवा-दभङ्गार्णवमितक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

नष्टः प्रव्रजितः क्लीबः पतितो राजकिल्विषी ।
लोकान्तरगतो वापि परित्याज्यः पतिः स्त्रियाः ॥ इति विवाद-भङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

दम्पत्योः परस्परधर्म्मव्यतिक्रमे सत्यन्यतरज्ञाने दण्डेनापि स्वधर्म्मव्यव-

१. व्यवहृत०-व्यप०

स्थापनं राज्ञा कर्तव्यम्-इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लूकभट्ट(पृ० ३४५-३४६) व्याख्यानम् ॥२॥

प्रत्यक्षेण कर्णपरम्परया वा विदिते तयोः परस्पराभिचारे दण्डादिना दम्पती निजधर्म्ममार्गे राज्ञा स्थापनीयौ–इति मिताक्षरा(पृ० २८८)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

सदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्य्यजातव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति । ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयाङ्केन्दुमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिप्रभुयाचितनिवेदनपत्रैः सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रसदरदिमानीधर्म्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र—२

---

(१२५)—न० १६३ सन १८३६ साल—

रोवकारि मिछिल सदर देओानि आदालते मोकाम कलिकाता तारिख २८ नवम्बर सन १८३७ साल मोतावके १४ अग्रहायण सन ११४४ वाङ्गला रोज मङ्गलवार श्रीयुत चारलिस हारडिङ्ग शाहेव काएम मोकाम हाकिमेर वैठके—

वल्लविकान्तचौधरि— आपीलाण्ट—
नवकान्तचौधरि— रेष्पाडण्ट—

रेष्पाडण्डेर उकिल मुनशी वंशीवदनमित्र ओ रामप्राणराय हाजिर आशीलेन, ओ आपिलाण्डेर उकिल मुनशी आब्वास आलि

दरबारे हाजिर नाइ। एइ मकद्दमा सन हालेर २१ सेप्तम्बर तारिखे आमार वैठके दरपेस हइया मिछिलेर कागजसकल दृष्ट करणेर पर तारिख मजकुरेर रोवकारीर लिखितानुसारे कएक प्रश्न एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञास्य हइया स्थकित छिल। परे अद्य रोवकार हइया पण्डितेर दाखिल करा एइ मासेर २३ तारिखेर लिखित व्यवस्था दृष्टे आइल। ताहाते एइ मकद्दमार खास आपील मञ्जुरेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डित एइ आदालतेर सोओोलेर जओावे जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थाय रेष्पाडण्डेर पुष्य पुत्र सिद्धिर विषये जेलार पण्डितेर व्यवस्था जथार्थ लिखियाछेन। आर पण्डित मौछुफेर हालेर दाखिल करा व्यवस्थार द्वाराय जेलार आदालतेर व्यवस्थार अनक्वी वोध हइतेछे। अतएव हुकुम हइल जे पुनराय शावेक व्यवस्था ओ एइ आदालतेर पण्डितेर हालेर व्यवस्था ओ जेला आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल एइ रोवकारिर नकल सम्वलित एक सप्ताह मेयादे पण्डितेर स्थाने समार्पन करा जाय जे आपन सावेक व्यवस्था ओ हालेर व्यवस्था ओ जेला आदालतेर व्यवस्थार मजमुनेर प्रति विचक्षण विवेचना करिया रेष्पाडण्डेर पुष्य पुत्रेर विषये जाहा यथार्थ हय विवरण करिया लेखेन, एइ आदालतेर पण्डितेर कैफियत दाखिल करा पर्य्यन्त एइ मकद्दमा स्थकित थाके इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतचारलिषहारडिंगसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्वरमासीयगजपक्षमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितमद्दत्तप्राचीनार्व्वाचीनव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रं जिज्ञाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रं च यत्तदब्दीयदिशम्वरमासीयमुनिमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण निवेद्यते—

प्रभुकृतेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्वरमासीयैक-विंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नजातलिखितविषये तत्प्रश्नजातानां मया तदब्दीयनवम्वरमासस्य गुणपक्ष मितदिनलिखितव्यवस्था शास्त्रानुसारेण प्रमाणं भवति। जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखित-व्यवस्थोपरिलिखितप्रश्नलिखितविषयस्य श्रीमत्प्रभुसन्निधौ सत्यत्वं चेत्तदा जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्था प्रमाणीकर्त्तुं योग्या भवति, यतः प्रभुकृतेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीय-सितम्वरमासीयैकविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नजातैर्जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थोपरिलिखितप्रश्नस्य भेदः स्पष्टतर एवेति निवेदनमिति––

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्वरमासीयगुणपक्ष-मितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रमद्दत्तप्राचीनार्व्वाचीनव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रंजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखित-व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपारशीकलिपिनिर्म्मितैतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार सूची

---

* सूचीपत्र एतन्नास्ति

इं० १८३१ साल

---

* त्रिंशदधिकशततमव्यवस्थामारभ्य ग्रन्थान्तं यावद्व्यवस्थासूची मूलकोषे नास्ति ।

इं० सन १८३२ साल

एकान्ने थाकिया ज्येष्ठ भ्राता दोकान करे। ए प्रकारे कनिष्ठ भ्राता ऐ दोकानेर किछु हिस्यार हकदार हइते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था ॥ ४७६–४८०

१५६—गोशाञिचन्द्रकविराज आपिलाएट
मोछम्मांत जयमणि जीवतमान ओ कृष्णमणि मोतओफात रेष्पाडएटान
कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि एवं दानेर दुइ बुनियादे दरपेश करे। दुइ मतेइ डिगिरि हय। ततपरे दोशराके हेवा करिया मृत्यु हय। एमत हेवा सिद्ध हइते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था ॥ ४८०–४८२

१६०—लक्ष्मीप्रिया आपिलाएट
भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गैरह— रेष्पडएटान
उत्तराधिकारिर एवं श्वेत कुष्ठ थाकिते उत्तराधिकारित्व इइते पारे कि ना, इत्यादिर व्यवस्था ॥ ४८३–४८६

१६१—दुलारसिंह ओ गैरह आपिलाएटान
राणी पद्मावती ओ गैरह रेष्पडएटान
रङ्गलालेर पुत्रावधि प्रपितामह पुत्र अर्थात गरिवदासेर पुत्र पर्य्यन्त ना थाकिले रङ्गलालेर प्रपितामह गरिवदासेर पौत्र दुलारसिंह प्रभृतिर उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ४८६–४६०

१६२—मसम्मांत लक्ष्मीप्रिया आपिलाएट
भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गैरह रेष्पाडएटान
उत्तराधिकारिर व्यवस्था ४६१–४६२

———

———

१६२—वल्लविकान्तचौधुरि वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी ओ नवकान्तचौधुरि कोन व्यक्ति मुमुर्षु व्यक्तिके कहिले तुमि पोष्यपुत्र ग्रहण करह। ऐ व्यक्ति हुँ वलि उत्तर दिलेक। एमत पोष्यपुत्र सिद्ध हय—ये पण्डित लिखियाछेन, ताहा वटे, कि ना—ताहार जवाव व्यवस्था ॥ ५८४–५८८

१६३—एक व्यक्ति भग्नीर जन्मान्ध पुत्र एवं पितृव्यगणके राखिया निःसन्तान मृत्यु हय–ताहार उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥

५८८–५९१

१६४—कनाइलालमफलेछ आपिलाण्ट

गोरा ओ दुर्खु ओ गैरह रेष्पाडण्टान

कोन व्यक्ति स्त्री दुइ पुत्रवधू ओ पतिर भ्रातष्पुत्रके राखिया मृत्यु हय, ताहार पश्चिम देश चलित शास्त्र मते उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ५९२–५९३

१६५—विमलामयी देव्या आपिलाण्ट

श्रीमतीअन्नपूर्णा ओ दिनाजपुरेर कलेकटर साहेव रेष्पाडण्टान

शम्भुचन्द्रेर मोसाहेराय ताहार तीनि पुत्रेर अधिकार हइया दुइ-पुत्रेर मृत्यु हय, ऐ दुइ पुत्रेर मोसाहेरार अंश शम्भुचन्द्रेर पुत्र पाइवेक, कि शम्भुचन्द्रेर कन्यागण पाइवेक–ताहार व्यवस्था ॥

५९३-५९६

१९६—मृत हेमअचलसिंहेर स्त्री चौराशी वादी

मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह प्रतिवादी

पश्चिमदेशीय छत्रि पञ्चम पुरुष पर्य्यन्त एतद्देशे वास करिया पुत्र ओ अवीरा कन्या ओ द्वितीया स्त्री ओ ताहार अदत्ता कन्या वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय, तत परे ऐ पुत्रेर मृत्यु हय–इहार

१ वतसरेर व्यप.

पुत्र एवं द्वितीया स्त्री वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय, एइ तिन व्यक्तिर मध्ये के उत्तराधिकारी हइवेक—ताहार व्यवस्था ॥

२३१—राणीजयदुर्गा आपिलाएट

राणीकृष्णमनी रेष्पाडएट

कोन अवीरा स्त्री स्वहस्ते विषय उपार्ज्जन करे। से विषय ऐ स्त्रीर हस्तान्तर करणेर क्षमता राखे कि ना—ताहार व्यवस्था॥ ६६८–७००

२३२—कोन अवीरा स्त्री पितामहेर सधवा कन्या एवं ऐ कन्यार दत्तक पुत्र एवं स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातार पौत्र एवं स्वामिर प्रपितामहेर भ्रातार पुत्रवधू एवं ऐ पुत्रवधूर दत्तक पुत्र वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय। शास्त्रानुसारे ऐ व्यक्तिर धनाधिकारि के हइवेक—ताहार व्यवस्था॥ ७००–७०१

२३३—गम्भिरराय, ताहार मृत्युर पर विजयराय ओ गायरह आपिलाएटान,

मोछम्मात धनेश्वरी ओ गयरह रेष्पाडएटान

स्त्री उत्तराधिकारिणी हइया सापिण्ड विद्यमाने हस्तान्तर करिते पारे कि ना—ऐ विषयेर पण्डितेरा ये दुइ व्यवस्था दियाछेन, त्रिहुत जिलार चलित शास्त्र मते यथार्थ वटे कि ना—ताहार व्यवस्था॥ ७०२–७०४

२३४—रामनाथसिंह आपिलाएट

राजरूपसिंह ओ राधेकृष्ण रेष्पाडएटान

हक सफा विषयेर व्यवस्था॥ ७०४–७०७

२३५—कालीकान्तवल आपिलाएट

पार्व्वतीदास्या रेष्पाडएट

यदि कोन व्यक्तिरा पितृ अवर्त्तमाने मातार सहित अनैक्य हय, तवे माता पुत्रेरदिगेर समानांश पाइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था॥ ७०७–७०६

२३६—शिवनारायणचौधुरि आपिलाएट

राधाप्यारीदासी ओ गयरह रेष्पाडएटान

राधामोहनमित्र जेलार मोजाहेम

वर्त्तमान आछे। एवं तिन किम्वा चारि पुरुषेर ज्ञाति आछे। इहार के उत्तराधिकारि इइवेक–ताहार व्यवस्था ॥ ७२२–७२६

२४२—कोन व्यक्ति पितृधनोपघात व्यतिरेक धनोपार्ज्जन करिया स्त्री ओ कन्यागण ओ भ्रातष्पुत्र राखिया मृत्यु हय, से धने वारानस देशेर चलित शास्त्र मते काहार अधिकार हइवेक—ताहार व्यवस्था ॥ ७२६–७२७

२४३—भेकनारायणसिंह वनाम तिलकधारिसिंह ओ भेकधारिसिंह ओ गयरह

मोतिलाल ओ गयरहेर मकर्द्दमार प्रश्नसकलेर मर्म्म ओ अभिप्राय एक वैपरीत्य व्यवस्था देओनेर कारण कि—ताहार प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥ ७२७–७३१

२४४—एक व्यक्ति मातुल एवं पञ्चम पुरुषीय ज्ञाति राखिया मृत्यु हय। इहार उत्तराधिकारि मातुल हइवेक कि ना–ताहार व्यवस्था ॥ ७३१–७३२

२४५—कोन अवीरा स्त्री आपन स्वामीर पितृदौहित्र विद्यमाने स्वामीर ऋण परिशोधार्थें विक्रय करे। ताहा सिद्ध हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७३२–७३४

२४६—श्रीमतितओकूलकुङर आपिलाएट
श्रीमतिनन्दकुङर ओ गैरह रेष्पाडएटान

भोलासिंह नामक एक व्यक्ति आपन स्त्रीर सन्मति क्रमे कन्यार दिगेर ओ जामातादिगेर नामे हेवा करे। ताहा मैथिल देशेर चलित शास्त्रानुसारे (सिद्ध हइते) पारे कि ना–ताहार व्यवस्था ॥ ७३४–७३६

२४७—कोन व्यक्तिर कुलचारे एमत रित थाके ये अवीरा स्त्री ओ कन्या ओ दौहित्रेर नाम जमिदारिते जारि हइवेक ना। एमत एकरार थाके, तवे पुनराय शास्त्रानुज्ञा आवश्यक हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७३६–७३७

२४८—पञ्चाननदास वनाम राधाचन्द्र वाछ

कोन व्यक्ति तीर्थवासि हइया किछु मिलकियत खरिद करिया भोगवान थाकिया स्त्रीके राखिया मृत्यु हय। शास्त्रानुसारे उत्तराधिकारि ग्रहस्थधर्म्मेर आत्मबन्धु हइवेक, कि ऐ स्त्री दखलिकार हइया दान विक्री करिते पारिवेक—ताहार व्यवस्था॥ ७३८—७४०

२४९—प्रतापनारायणचक्रवर्त्ति डिगरिदार
परमानन्दचक्रवर्त्ति ओ गैरह तरफसानियान
निजामपुरेर ब्राह्मण वहेरादिगेर जयन पूजन विषये जिलार पण्डित ये व्यवस्था दियाछेन ताहा यथार्थ वटे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था॥ ७४०—७४६

२५०—सिउछहाय ओ कुञ्जवेहारिलाल वनाम मोछुम्मातान मह्वाणविवि ओ गै(रह)

कोन व्यक्ति अविवाहिता स्त्रीर सन्तान हइयाथाके। ऐ सन्तानेर पिता वलिया आदालते अलि दर्शाइया नालिष करिया थाके, तवे उहार उत्तराधिकारि ऐ सन्तान हइवेक कि भ्रातष्पुत्र हइवेक—इहार उत्तराधिकारिर व्यवस्था॥ ७४७—७४९

२५१—नरकुसिंह मुद्दाआलेह आपिलाण्ट
वनाम
मेघासिंह ओ अच्चरसिंह रष्पाडण्टान
एक व्यक्ति पुत्र ओ भ्रातष्पुत्र विद्यमाने मौरशी धन हइते किञ्चित भगिनीर पुत्रके ओ पितृश्वसृ-पुत्रके दान, एवं अशी करिया दियाथाके, ए प्रकार दस्तावेज यथार्थ वटे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था॥ ७५०—७५१

२५२—दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अछि आलम—
चन्द्रधर आपिलाण्ट
विजयगोविन्दवडाल ओ गयरह रेष्पाडण्टान
पितृ-दौहित्रेरा अधिकारि हइया विभाग करिया लइले पुनराय

———

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
४	२०	मनुवचनञ्चेति	मनुवचनञ्चेति
५	१५	दाखिल	दखिल
६	५	घन	घनं
६	६	देवोयानि	देश्रोयानि
६	११	अदालतेर	आदालतेर
६	२०	दरखाश्त	दरखास्त
११	८	-पटी	-पट्टी
११	८	शतरञ्ची	सतरञ्ची
११	२२	जो	जे
१४	१८	आपीलाएटेर	आपीलाण्डेर
१५	१	शास्त्रमते	शास्त्र मत
१५	१५	एतद्धर्म्मधि०	एतद्धर्म्माधि०
१६	५	प्रभारोज्ञा०	प्रभोराज्ञा०
१६	८	ज्ञताम्	ज्ञातम्
२५	२२	निबन्धनुमु०	निबन्धनमुप०
२५	२२	मुकावल्या	मुक्तावल्यां
२६	११	सस्काराणाममन्त्नतः	संस्काराणामन्त्रतः
२६	१५	मुद्द्धत	मुर्द्धत
३२	२	उदर्ध्वं	ऊर्द्ध्वं
४६	४	भोजाक	भोजोक
५४	६	भ्रातृपर्य्यान्ता०	भ्रातृपर्य्यन्ता०
६१	६	माहार	माहार लिखित
६४	१३	गर्ब्भजातित्वेन	गर्ब्भजातत्वेन
६७	फुटनोट	रत्नेतचंतन्तु०	रत्नेचं तत्तद्०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
७१	८	राधावन्धव	राधावल्लभ
७१	१८	१७२२	१७३१२
७१	२५	सखवाह	सरवराह
७२	४	पाडा	पाट्टा
७२	७	से	से व्यक्ति
७२	८	राखे ना	राखे कि ना
७२	१६	भूम्युत्सर्ज॰	भूम्युत्सर्ज॰
७२	२०	देवस्वभूम्यादे॰	॰भूम्यादे॰
७६	१६	दाखिलकार	दखिलकार
८०	२१	व्यवस्ता	व्यवस्था
१०१	१०	श्रोर्ज॰	श्रोर्ज॰
१०४	८	साहेवेर	साहेवेर हुजुर
१०४	१३		देन
१०४	१४	यदि	यः
१०४	१६	मेकनटन	मेकनाटन
१२१	१४	व्यवस्थार	व्यवहार
१२१	२१	करायाय	कराकाय
१२१	२२	शास्त्रेर	शास्त्रेर आज्ञा
१२२	२१	वाप्युपधि	वाप्युपाधि
१२६	२२	ततत्कन्याया	तत्कन्याया
१३०	२२	लिखित्वात्	लिखितत्वात्
१३३	१०	प्रतिष्ठितानां	अप्रतिष्ठितानां
१४०	१४	भातणां	भ्रातृणां
१४१	१४	दाखिले	दाखिल
१४१	२२	घन	घन इहते
१४३	१४	रामकलिर	रामकालीर
१४३	१५	इवसालि	इवसालि

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
१४३	२१	सउ टाकार	सश्रो टाकार
१४४	१४	कारिष्यामिती०	करिष्यामीति०
१४४	१२	राज्ञ०	रज्ञ०
१४८	२	इइ	दुइ
१५०	१७	कुमाय्यभात्रे	कुमार्य्यभावे
१५४	१६	व्यक्त	व्यक्ति
१५७	१५	१८१८	१८२८
१५६	११	स्वत्वाकी	स्वत्त्र वाकी
१६२	८	१८१८	१८२८
१६६	१३	अच्छादनेर	आच्छादनेर
१७०	१२	यावज्जीव	यावज्जीवं
१७२	१३	अजिमावादेर	आजिमावादेर
१७४	१६	०स्यशांहरणे	०स्यांशहरणे
१८८	२०	मार्न्चे	मार्न्चे
१८६	६	चौधरिरी	चौधरि
२०३	१७	कोठ	कोटे
२२०	२२	सराजका	सराजकरा
२२२	३	क्रारिया	करिया
२२३	२४	समानजातीयथोः	समानजातीययोः
२२५	१४	करग्रहरण०	करग्रहण०
२२७	२३	० व्ययाथ	० व्ययार्थ
२३७	१०	पितुर्य्युपरते	पितर्य्युपरते
२३८	३	०तर्कालङ्कार०	०तर्कालङ्कार०
२३८	१६	प्रश्नेर	प्रश्नेर
२४४	१०	व्यवहारिकै०	व्यावहारिकै०
२५२	३	सद्मन्धे	सम्मन्धे
२५५	३	सव्व०	सर्व्व०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
२५५	१६	८७	८३
२६२	४	नैजामङ्गिनेर	नैजामद्दिनेर
२७८	२	व्यतिरिक्तो उत्तरा०	व्यतिरिक्तोत्तरा०
२६७	६	एत्ते	एते
२६७	१८	याज्ञवक्ल्य:	याज्ञवल्क्य:
३०२	५	०प्रत्यींथ०	०प्रत्यर्थि०
३०४	३	गन्थकारैर्वा	ग्रन्थकारैर्वा
३०४	२६	पितुरच्छयैव	पितुरिच्छयैव
३०५	२	काङ्क्षान्ति	काङ्क्षन्ति
३०५	१६	निरुढो	निरूढो
३०५	२५	मरणपातित्यादि	मरणपातीत्यादि
३०६	६	लिखितैतदद्वीय	लिखितैतदब्दीय
३१६	४	त्रिंशत्सहस्त्रो०	त्रिशंत्सहस्रो०
३२४	७	०घिकार:	०धिकार:
३२६	१६	०प्रपौत्र पर्य्यन्त०	०प्रपौत्रपर्यन्त०
३२७	२४	०ब्ददीय०	०ब्दीय०
३३७	६	आयत्ति०	आपत्ति०
३६५	७	यदेतब्दीय	यदेतदब्दीय०
३६५	१५	भ्राता भ्रा०	भ्रात्रा भ्रातृ०
३६८	१	संहादि०	संग्रहादि०
३७५	६	तद्ग्राहकाणां	तदग्राहकाणां
३७६	५	शङ्खवचनस्यैक०	शङ्खवचनस्यैक०
३७६	१५	दद्य:	दद्यु:
३७७	८	वचनेम्यो	वचनेभ्यो
३७८	३	निजादंशांदत्वांशं	निजादंशाद्दत्त्वांशं
३७८	१६	वैयर्थ्या०	वैयर्थ्या०
३७६	१	विषययव्वस्था०	विषयव्यवस्था०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
३८१	१३	पितर्य्यंपरते	पितर्य्युपरते
३८२	६	०यौग०	०योग०
३८६	१८	वर्षसहस्त्रै०	वर्षसहस्रै
३६१	१०	०याग्ये	०योग्ये
४१८	६	एतद्धर्म्माघिकरणा०	एतद्धर्म्माधिकरणा०
४५२	२४	विवारयिष्यन्तीति	निवारयिष्यन्तीति
४५५	६	ग्रिन्थ०	ग्रन्थ०
४६६	२३	सर्द्दियुप०	साद्ध्युप०
५४६	२१	दानकयादेः	दानक्रयादेः
५५३	२५	तच्छुस्त्रसम्मतं	तच्छास्त्रसम्मतं
५५७	७	दीपचन्द्रभागिनी	दीपचन्द्रभगिनी
५५७	१४	,,	,,
५६०	१७	बाह्मणै०	ब्राह्मणै०
५६०	२५	प्राबल्येण	प्राबल्येन
५६६	१६	दायभागदि०	दायभागादि०
६१२	१५	लिखितेशब्द	लिखितेशवीशब्द०
६६८	१२	भर्त्त०	भर्त्तु०
७१३	१६	भर्त्त्रा	भर्त्रा
७१३	२६	भर्त्त्रा	भर्त्रा
७२४	२६	धनाहकाः	धनार्हकाः
७३४	४	भर्त्त्रा	भर्त्रा
७७४	८	ऋर्णा०	ऋणा०
७७४	१८	०प्रतिवाद्य०	०प्रतिपाद्य०

—※—